है। अब यहां मेरे लिए बचा ही क्या है? अब मैं किसके लिए ज़िंदा रहूं? अब मैं किससे प्यार करूं?"

"तुम्हें हम लोगों से प्यार नहीं है क्या?" मैंने झिड़की के अंदाज़ में बड़ी मुश्किल से अपने आंसू रोकते हुए पूछा।

"भगवान जानता है कि मुझे तुम लोगों से कितना प्यार है, मेरे लाड़लो, लेकिन मैंने कभी किसी से उतना प्यार नहीं किया है जितना मुझे उनसे था, और वैसा प्यार मैं किसी से कर भी नहीं सकती।"

वह इससे ज़्यादा कुछ नहीं कह पायी और मुंह फेरकर ज़ोर-ज़ोर से सिसकने लगी।

मैं अब सोने के बारे में सोच भी नहीं रहा था; हम दोनों एक-दूसरे के सामने चुप बैठे रो रहे थे।

फ़ोका कोठरी में आया; हम लोगों की हालत देखकर और शायद यह सोचकर कि हम लोगों की बातों में विघ्न न पड़े, उसने डरी-डरी नज़रों से चुपचाप हम लोगों को देखा और दरवाज़े पर ही रुक गया।

"कुछ चाहिये, फ़ोका?" नताल्या साविश्ना ने अपनी आंखें पोंछते हुए पूछा।

"कूत्या* के लिए डेढ़ पौंड किशमिश, चार पौंड शकर और तीन पौंड चावल।"

"अच्छा, अभी देती हूं," नताल्या साविश्ना ने जल्दी से एक चुटकी नसवार चढ़ाते हुए कहा और वह तेज़ क़दम बढ़ाती हुई एक संदूक़ की तरफ़ गयी। जब वह अपना काम करने लगी, जिसे वह बेहद महत्वपूर्ण मानती थी, तो हमारी बातचीत से उत्पन्न होनेवाली व्यथा के अंतिम चिन्ह भी ग़ायब हो गये।

"चार पौंड का क्या करोगे?" वह शकर निकालकर तराज़ू पर तौलते हुए बड़बड़ायी। "साढ़े तीन काफ़ी होगी।"

---

* रूसी में मातम करनेवालों को खिलाया जानेवाला किशमिश, शहद मिला चावल का दलिया। – अनु०

और यह कहकर उसने तराजू पर से कई वट्टे हटा लिये।

"मेरी तो समझ में ही नहीं आता, मैंने अभी कल ही तो आठ पौंड चावल दिये हैं, फिर मांगते हैं! बुरा न मानना, फ़ोका, लेकिन मैं तुम्हें और चावल नहीं दे सकती। वह वान्का बहुत खुश है कि सारे घर में उथल-पुथल मची हुई है: वह समझता है कि कोई देखेगा ही नहीं। नहीं, मैं अपने मालिक की जायदाद के मामले में किसी के भी साथ कोई रिआयत नहीं करती। आठ पौंड! भला किसी ने सुना है आज तक ऐसा!"

"किया क्या जाये? वह कहता है कि सब खत्म हो गया।"

"अच्छा, तो ले जाओ, यह रहे! ले जाने दो उसे!"

जिस तरह प्यार-भरे भावावेग के साथ वह मुझसे बातें कर रही थी उससे इस वकने-झकने और टुच्चे क़िस्म के हिसाब-किताब में उसके परिवर्तन पर मुझे आश्चर्य हुआ। बाद में इसके बारे में सोचने पर मेरी समझ में आया कि उसकी आत्मा में जो कुछ भी हो रहा था उसके बावजूद उसने अपने अंदर इतना मानसिक संतुलन बाक़ी रखा था कि वह अपने कामकाज में लगी रह सके, और उसकी आदत उसे अपने प्रतिदिन के कामों की ओर खींच ले जाती थी। उसकी व्यथा इतनी गहरी और इतनी सच्ची थी कि उसे यह जताने की कोई ज़रूरत ही नहीं थी कि वह छोटी-मोटी बातों की ओर ध्यान नहीं दे सकती, न ही वह इस बात को समझ सकती थी कि इस तरह की बात किसी को सूझ भी सकती है।

मिथ्याभिमान एक ऐसी भावना है जिसका सच्ची व्यथा से कोई मेल नहीं है, फिर भी वह बहुत-से लोगों के स्वभाव में इतनी बुरी तरह गुंथा रहता है कि गहरी से गहरी विपत्ति भी उसे शायद ही कभी दूर कर पाती हो। शोक की परिस्थिति में मिथ्याभिमान का प्रदर्शन उदास या दुःखी या दृढ़ लगने की इच्छा के रूप में होता है; लेकिन ये तुच्छ इच्छाएं, जिन्हें हम मानने को तैयार नहीं होते, पर जो शायद ही कभी हमारा पीछा छोड़ती हों, गहरे से गहरे संकट में भी नहीं, हमारे शोक को उसकी प्रबलता, उसकी गरिमा और उसके खरेपन से वंचित कर देती हैं। लेकिन नताल्या साविश्ना को अपने दुःख से इतनी गहरी चोट पहुंची थी कि उसके मन में कोई इच्छा

बाक़ी ही नहीं रह गयी थी और वह केवल आदत की वजह से जिये जा रही थी।

फ़ोका ने जो सामान मांगा था वह उसे देकर, और उसे पादरियों के भोज के लिए केक ज़रूर बनाने की याद दिलाकर, उसने उसे चलता किया, और अपना मोज़ा उठाकर फिर मेरे पास आकर बैठ गयी।

बातचीत का रुख़ फिर उसी पहलेवाले विषय की ओर मुड़ गया, और एक बार फिर हम दोनों साथ मिलकर रोने लगे।

नताल्या साविश्ना के साथ इस तरह की बातचीत रोज़ होती रही; उसके मूक आंसू और शांत श्रद्धा-भरे शब्दों से मुझे शांति और सांत्वना मिलती थी।

लेकिन आखिरकार हम लोगों को एक-दूसरे से अलग होना पड़ा। जनाज़े के तीन दिन बाद सारा घर मास्को चला गया; मेरे भाग्य में उसे फिर देखना नहीं बदा था।

नानी को यह हृदय-विदारक समाचार हमारे पहुंचने पर ही मिला और उन्हें बेहद दुःख हुआ। हम लोगों को उन्हें देखने नहीं दिया जाता था क्योंकि वह हफ़्ते भर से बेहोश पड़ी थीं, और डाक्टर को उनकी जान का ख़तरा था, इसलिए और भी कि वह न सिर्फ़ कोई दवा नहीं खाती थीं, बल्कि वह किसी से बात भी नहीं करती थीं, सोती भी नहीं थीं और कुछ भी खाती-पीती नहीं थीं। कभी-कभी अपने कमरे में आराम-कुर्सी पर बैठे-बैठे वह अचानक हंस पड़ती थीं, फिर आंसुओं के बिना सिसकने लगती थीं और उन्हें दौरा पड़ने लगता था और वह चीख़-चीख़कर डरावनी या ऊटपटांग बातें बकने लगती थीं। अपने जीवन में उन्हें यह पहला असली सदमा हुआ था, और इसकी वजह से वह घोर निराशा में डूब गयी थीं। वह अपनी इस विपदा के लिए किसी को दोष देने की ज़रूरत महसूस करती थीं, और वह भयानक बातें कहने लगती थीं, बेहद जोश के साथ किसी को घूंसा दिखा-दिखाकर धमकाने लगती थीं, अपनी कुर्सी से उछल पड़ती थीं, लंबे-लंबे डग भरकर कमरे में इधर से उधर टहलने लगती थीं, और फिर बेहोश होकर गिर पड़ती थीं।

एक बार मैं उनके कमरे में चला गया। वह हमेशा की तरह अपनी आराम-कुर्सी पर बैठी थीं और देखने में बिल्कुल शांत लग रही थीं; फिर भी उनकी नज़र ने मुझे चौंका दिया। उनकी आंखें बिल्कुल पूरी तरह खुली हुई थीं, लेकिन शून्य और अस्थिर दृष्टि से घूर रही थीं; वह मुझ पर नज़रें गड़ाये थीं, लेकिन प्रकटतः मुझे देख नहीं रही थीं। उनके होंटों पर मंद मुस्कराहट आयी और उन्होंने दिल को छू लेनेवाली कोमलता से भरे हुए स्वर में कहा, "यहां आओ, मेरे कलेजे के टुकड़े, यहां आओ, मेरे फ़रिश्ते।" मैं समझा कि वह मुझसे कह रही हैं और मैं उनके और पास चला गया; लेकिन उन्होंने मेरी तरफ़ देखा भी नहीं। "अरे, काश तुम्हें मालूम होता कि मैंने कैसी-कैसी पीड़ाएं सही हैं, बेटी, और मुझे तुम्हारे आने की कितनी ख़ुशी है!" तब मेरी समझ में आया कि वह अपनी कल्पना में मां को देख रही थीं, और मैं ठिठक गया। "मुझे बताया गया कि तुम मर गयी हो," वह त्योरियां चढ़ाकर कहती रहीं। "क्या बकवास है! क्या तुम मुझसे पहले मर सकती हो?" और यह कहकर वह दीवानों की तरह भयानक ठहाका मारकर हंस पड़ीं।

जो लोग गहरी मुहब्बत करना जानते हैं वे बहुत बड़ा दुःख भी झेल सकते हैं; फिर भी प्यार करने की यही ज़रूरत उनके दर्द को कम कर देती है और उनके घाव भर देती है। यही वजह है कि मनुष्य का नैतिक स्वभाव उसके शारीरिक स्वभाव से अधिक टिकाऊ होता है और दुःख किसी को कभी जान से नहीं मारता।

एक सप्ताह बाद नानी रोने लगीं और उनकी हालत सुधरती गयी।

होश-हवास ठीक होने के बाद उन्हें सबसे पहले हम लोगों का ख़्याल आया, और हम लोगों के प्रति उनका प्रेम बढ़ गया। हम उनकी आराम-कुर्सी के पास ही रहे; वह चुपके-चुपके रो रही थीं, मां की बातें कर रही थीं और बड़े स्नेह से हमें दुलार रही थीं।

नानी की व्यथा को देखकर किसी को यह नहीं लग सकता था कि वह उसे बढ़ा-चढ़ा रही हैं, और उस व्यथा की अभिव्यक्तियां दिल की गहराइयों को छू लेती थीं; फिर भी न जाने क्यों मुझे नताल्या साविश्ना के साथ ज़्यादा हमदर्दी थी, और आज तक मेरा पक्का

विश्वास है कि मां के प्रति किसी का भी प्रेम और किसी का भी शोक-प्रदर्शन उतना शुद्ध और उतना हार्दिक नहीं था जितना कि उस सीधी-सादी स्नेहमयी औरत का था।

मां के मरने के साथ ही मेरे बचपन के सुख के दिन भी खत्म हो गये और एक नया दौर शुरू हुआ – किशोरावस्था का दौर ; लेकिन चूंकि नताल्या साविश्ना के बारे में, जिससे मैं फिर कभी नहीं मिला, और जिसने मेरे जीवन पर और मेरी संवेदनशीलता के विकास पर इतना प्रबल और इतना हितकर प्रभाव डाला, मेरी स्मृतियों का संबंध पहले दौर के साथ है इसलिए मैं उसके और उसकी मृत्यु के बारे में कुछ शब्द और कहूंगा।

जैसा कि मुझे बाद में गांव में रहनेवालों ने बताया, हम लोगों के चले आने के बाद कोई काम न होने की वजह से उसका वक़्त काटे नहीं कटता था। हालांकि सारे संदूक़ अभी तक उसी की निगरानी में थे, और वह लगातार उनमें कुछ खखोलती थी, कुछ चीज़ें एक संदूक़ से दूसरे में रखती थी, कपड़े निकालकर धूप में फैलाती रहती थी और फिर उन्हें तह करके संदूक़ों में बंद कर देती थी, फिर भी गांव की उस हवेली में, जिसकी बचपन से ही उसे आदत पड़ चुकी थी, जब मालिक लोग रहते थे उस समय के शोर-गुल और चहल-पहल का अभाव उसे खलता था। व्यथा, उसके जीवन के ढर्रे में परिवर्तन, जिम्मेदारियों का न होना – इन सब बातों ने बड़ी तेज़ी से उसमें बूढ़ों की एक बीमारी को उभार दिया, जिसकी प्रवृत्ति उसमें पहले से थी। मां के मरने के साल ही भर बाद उसे जलंधर हो गया और वह बिस्तर से लग गयी।

मैं समझता हूं कि नताल्या साविश्ना के लिए जीना तो मुश्किल था ही, मरना और भी मुश्किल था – पेत्रोव्स्कोये के उस बड़े-से खाली घर में, जहां उसका न कोई रिश्तेदार था न दोस्त। उस घर में हर आदमी नताल्या साविश्ना से प्यार करता था और उसकी इज़्ज़त करता था, लेकिन उसने दोस्ती किसी के साथ नहीं की थी और इस बात पर उसे गर्व था। उसका ख़्याल था कि उस जैसे आदमी के लिए, जिसके जिम्मे पूरी गृहस्थी की देखभाल हो और जिस पर मालिक पूरी तरह भरोसा करता हो और जिसकी रखवाली में हर प्रकार की

संपत्ति से भरे हुए कितने ही संदूक़ हों, किसी के भी साथ दोस्ती का अनिवार्य परिणाम यह होगा कि उसे पक्षपात करना पड़ेगा और अक्षम्य एहसान करने पड़ेंगे। इसीलिए, या शायद इसलिए कि बाक़ी नौकरों के साथ उसका वास्ता नहीं था, वह सबसे अलग-थलग रहती थी और कहती थी कि उस घर में कोई उसका सगा नहीं था, और अपने मालिक की जायदाद के मामले में वह किसी के भी साथ कोई रिआयत नहीं करती थी।

भरपूर श्रद्धा से प्रार्थना करते समय अपनी हर भावना ईश्वर को बताकर वह सांत्वना खोजती थी और उसी में उसे सांत्वना मिलती थी; फिर भी कभी-कभी कमज़ोरी के उन क्षणों में, जिनका शिकार हम सभी लोग हो जाते हैं, जब आदमी को सबसे ज़्यादा राहत अपने आंसुओं और किसी प्राणी की सहानुभूति से मिलती है, वह अपने छोटे-से कुत्ते का बिस्तर पर लिटा लेती थी (वह उसके हाथ चाटता था, और अपनी पीली आंखें उस पर जमाये उसे देखता रहता था), उससे बातें करती थी, और उसे थपथपाकर चुपके-चुपके रोती थी। जब कुत्ता दर्द-भरी आवाज़ निकालने लगता था तो वह उसे शांत कराने की कोशिश करती थी और कहती थी, "बस, बस! मैं जानती हूं, तुम्हें बताने की ज़रूरत नहीं है, कि मैं जल्दी ही मरनेवाली हूं।"

मरने से महीना-भर पहले उसने अपने संदूक़ में से कुछ सफ़ेद सूती कपड़ा, कुछ सफ़ेद मलमल और गुलाबी फ़ीता निकाला; अपनी नौकरानी की मदद से उसने अपने लिए एक सफ़ेद पोशाक और टोपी बनायी और छोटी-से-छोटी चीज़ तक अपने कफ़न-दफ़न का सारा ज़रूरी सामान तैयार करके रख दिया। उसने अपने मालिक के भी सारे संदूक़ों का सब सामान निकालकर उसकी फ़ेहरिस्त तैयार की और सारा सामान स्टीवर्ड के सिपुर्द कर दिया; फिर उसने दो रेशमी पोशाकें, एक पुरानी शाल, जो नानी ने कभी उसे दी थी, नाना की कारचोबी फ़ौजी वर्दी, जो उसे उपहार में दे दी गयी थी, अपने संदूक़ से निकाली। उसकी देखभाल की बदौलत उस वर्दी की कशीदाकारी और उस पर टंके हुए फ़ीते बिल्कुल नये जैसे लगते थे, और उसके कपड़े को कीड़े छू तक नहीं पाये थे।

मरने से पहले उसने इच्छा व्यक्त की कि उन दो रेशमी पोशाकों में से गुलाबीवाली पोशाक ड्रेसिंग-गाऊन या जैकेट बनाने के लिए वोलोद्या को दे दी जाये, और दूसरी, कत्थई चारखानेवाली, उसी काम के लिए मुझे दे दी जाये और शाल ल्यूबा को। फ़ौजी वर्दी उसने हम दोनों में से उसके लिए रखवा दी जो पहले अफ़सर बने। अपनी बाक़ी सारी जायदाद और सारा पैसा, सिर्फ़ चालीस रूबल छोड़कर जो उसने अपने कफ़न-दफ़न और जनाज़े की दावत के लिए अलग रख दिये थे, उसने अपने भाई के नाम कर दिया। उसका भाई, जिसे बहुत पहले कृषि-दासता से छुटकारा मिल गया था, किसी दूर के सूबे में बहुत बदचलनी की ज़िंदगी बसर करता था; इसलिए अपनी ज़िंदगी में नताल्या साविश्ना का उसके साथ किसी तरह का कोई संपर्क नहीं रहा था।

जब नताल्या साविश्ना का भाई अपना उत्तराधिकार लेने के लिए आया और मालूम यह हुआ कि मरनेवाली की कुल जायदाद पच्चीस रूबल के नोटों तक सीमित थी तो उसे विश्वास नहीं हुआ और उसने कहा कि ऐसा हो ही नहीं सकता कि वह बुढ़िया जो साठ साल तक ऐसे धनी परिवार में रही थी और जिसके ज़िम्मे उस परिवार की सारी गृहस्थी थी, जो हमेशा बेहद कंजूसी की ज़िंदगी बसर करती थी और एक-एक टुकड़े के लिए जान देने को तैयार रहती थी, अपने पीछे कुछ भी न छोड़ गयी हो। फिर भी दरअसल बात ऐसी ही थी।

नताल्या साविश्ना ने दो महीने तक अपनी बीमारी की मुसीबत झेली, और सच्चे ईसाइयों जैसे धीरज के साथ अपनी पीड़ा सहन की: वह न बड़बड़ायी, न उसने शिकायत की, बल्कि लगातार भगवान का नाम लेती रही, जैसी कि उसकी आदत थी। आख़िरी सांस लेने से घंटा-भर पहले उसने आख़िरी रस्में अदा करायीं।

उसने घर के सभी नौकरों से माफ़ी मांगी कि अगर उसने उन्हें कोई नुक़सान पहुंचाया हो तो वे माफ़ कर दें, और अपने पुरोहित फ़ॉदर वसीली से अनुरोध किया कि वह हम सबसे कह दें कि हम लोगों की कृपा के लिए आभार प्रकट करने को उसके पास शब्द नहीं थे, और हम लोगों से प्रार्थना की कि अगर अपनी नादानी में उसने

किसी को कोई कष्ट पहुंचाया हो तो वह उसे क्षमा कर दे, "लेकिन मैंने कभी चोरी नहीं की, और मैं कह सकती हूं कि मैंने अपने मालिकों को कभी एक तिनके का भी धोखा नहीं दिया।" अपने इसी एक गुण को वह मूल्यवान मानती थी।

जो ढीली पोशाक और टोपी उसने अपने लिये तैयार की थी वही पहने हुए, तकियों पर टिकी हुई वह अंतिम क्षण तक पुरोहित से बातें करती रही। उसे याद आया कि उसने ग़रीबों के लिए कुछ नहीं छोड़ा था; उसने पादरी को दस रूबल दिये कि अपनी यजमानी के ग़रीबों में बंटवा दे; फिर उसने अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया, पीछे टिककर लेट गयी, आख़िरी बार आह भरी, और बहुत उल्लसित स्वर में ईश्वर का नाम लिया।

इस जीवन से विदा होते समय उसके मन में कोई पश्चात्ताप नहीं था, उसे मौत से डर नहीं लगा बल्कि उसने उसे एक वरदान की तरह स्वीकार किया। यह बात कही तो अकसर जाती है, लेकिन कितने कम उदाहरणों में यह सच होती है! नताल्या साविश्ना मौत से डरे बिना ही मर सकती थी, क्योंकि वह अपनी आस्था पर दृढ़ रहकर और धर्मग्रंथ में बताये गये नियमों का पालन करके मरी। शुद्ध, निःस्वार्थ प्रेम और आत्म-त्याग ही उसका सारा जीवन था।

काश उसके जीवन के सिद्धांत अधिक उच्च होते, अगर उसने अपना जीवन अधिक ऊंचे उद्देश्यों के लिए अर्पित कर दिया होता! क्या यह शुद्ध आत्मा इन कमियों की वजह से कम प्रेम और प्रशंसा के योग्य रह गयी है?

उसने इस ज़िंदगी में सबसे अच्छा और सबसे शानदार कारनामा कर दिखाया: वह किसी पश्चात्ताप और भय के बिना परलोक सिधार गयी।

उसकी इच्छा के अनुसार उसे मां की क़ब्र के पास बने हुए छोटे गिरजाघर से थोड़ी ही दूर पर दफ़न कर दिया गया। छोटी-सी क़ब्र के चारों ओर, जिसके नीचे वह दफ़न है और जिस पर बिच्छू-बूटी और बर्दोक के पौधे उगे हुए हैं, लोहे का काला जंगला लगा हुआ है; गिरजाघर से उस जंगले तक जाकर श्रद्धा से जमीन पर माथा टेकना मैं कभी नहीं भूलता।

कभी-कभी मैं गिरजाघर और उस काले जंगले के बीच आधे रास्ते में रुककर चुपचाप खड़ा हो जाता हूं। मेरे मन में दुःखद स्मृतियां उभरने लगती हैं। मेरे मन में विचार उठता है: क्या नियति ने इन दो प्राणियों के साथ मेरा संबंध केवल इसलिए जोड़ा था कि मैं जीवन-भर उनका शोक मनाऊं?...

किशोरावस्था

अध्याय १

अखंड यात्रा

पेत्रोव्स्कोयेवाले घर की बरसाती के सामने फिर दो गाड़ियां लगायी गयी हैं: एक बग्घी है जिसमें मीमी, कात्या, ल्यूबा और नौकरानी बैठ गये हैं और हम लोगों का कारिंदा याकोव ख़ुद कोचवान के पास बैठा है; दूसरी गाड़ी ब्रीच्का है जिसमें मुझे और वोलोद्या को अर्दली वसीली के साथ जाना है, जिसे लगान की अदायगी के बदले हाल ही में फिर ख़िदमतगार रख लिया गया है।

पापा, जो हम लोगों के कुछ दिन बाद मास्को आनेवाले हैं, हैट लगाये बिना बरसाती में खड़े हैं और बग्घी और ब्रीच्का की खिड़कियों पर सलीब का निशान बना रहे हैं।

"ईसा तुम्हारी रक्षा करें! अच्छा, अब जाओ!" याकोव और कोचवान (हम लोग अपनी ही गाड़ियों में यात्रा कर रहे हैं) अपनी टोपियां उतारकर सामने सलीब का निशान बनाते हैं। "भगवान हमारी रक्षा करे! चल, टिक-टिक!" बग्घी और ब्रीच्का ऊबड़-खाबड़ सड़क पर हचकोले खाने लगती हैं और बड़ी सड़क के दोनों ओर के बर्च के पेड़ हमारे पास से होकर एक-एक करके गुज़रने लगते हैं। मैं बिल्कुल उदास नहीं हूं; मेरी कल्पना की दृष्टि वह नहीं देख रही है जो मैं पीछे छोड़कर जा रहा हूं, बल्कि वह देख रही है जो मेरे सामने आनेवाला है। इस क्षण तक जो पीड़ाजनक स्मृतियां मेरे दिमाग़ में भरी रही हैं उनसे संबंधित चीज़ें जैसे-जैसे दूर हटती जा रही हैं, वैसे-वैसे उन स्मृतियों की शक्ति भी कम होती जा रही है, और उनकी जगह यह लाजवाब चेतना लेती जा रही है कि जीवन शक्ति, ताज़गी और आशा से भरपूर है।

11-915

मैंने शायद ही कभी इतने—मैं मस्ती-भरे तो नहीं कहूंगा क्योंकि मस्ती का शिकार होने का विचार आते ही मेरा अंतःकरण मुझे कचोटने लगता है—बल्कि मैं कहूंगा इतने खुशगवार, इतने सुखद दिन नहीं बिताये होंगे जितने कि वे चार दिन थे जिनके दौरान हम यात्रा करते रहे। अब मेरी आंखों को मां के कमरे का वह बंद दरवाजा नहीं दिखायी देता, जिसके सामने से गुज़रते समय कभी ऐसा नहीं होता था कि मैं सिहर न उठता हूं ; न वह बंद पियानो, जिसे खोलना तो दूर रहा कोई उसकी ओर एक तरह के डर के बिना देखने की हिम्मत भी नहीं कर सकता था ; न वे मातमी लिबास (हम सब लोगों ने सादे सफ़री कपड़े पहन रखे थे), न उनमें से कोई चीज़ जो मुझे मेरी उस क्षति की स्पष्ट याद दिलाकर जिसकी कमी को कभी पूरा नहीं किया जा सकता था, मुझे जीवन के उल्लास के हर प्रदर्शन से दूर रहने पर मजबूर कर देती है कि मैं किसी तरह कहीं उनकी याद का अपमान न कर दूं। बल्कि इसके विपरीत नयी और नयनाभिराम जगहें और चीज़ें मेरा ध्यान आकर्षित करती हैं, और बसंती प्रकृति मेरे मन में वर्तमान के प्रति संतोष की हर्षप्रद भावना और भविष्य के प्रति आशा जागृत करती है।

सवेरे, बहुत तड़के, बेरहम वसीली, जो ज़रूरत से ज़्यादा जोश दिखाता है, जैसा कि लोग नयी स्थितियों में पड़कर अकसर करते हैं, कंबल खींचकर एलान करता है कि चल पड़ने का वक़्त हो गया है और हर चीज़ तैयार है। अपनी सवेरे की चैन की नींद को पंद्रह मिनट के लिए भी बढ़ाने को चाहे जितना कंबल लपेटकर लेटो, चाहे जितना गुस्सा करो, चाहे जितनी तरकीबें करो लेकिन वसीली की दृढ़ मुद्रा से साफ़ पता चलता है कि वह कोई रिआयत करनेवाला नहीं है और अगर जरूरी हुआ तो बीस बार कंबल खींचने को तैयार है ; इसलिए इसके अलावा कोई चारा ही नहीं रह जाता कि जल्दी से उछल खड़े हो और भागकर आंगन में जाओ और मुंह-हाथ धो डालो।

बाहरवाले कमरे में समोवार खौल रहा है, और कोचवान मितका उसे फूंक-फूंककर लाल अंगारे की तरह दहकाये दे रहा है। दरवाज़े के बाहर ऐसी नमी और कुहरा है, जैसे ताज़े गोबर में से भाप निकल रही हो ; सुबह का सूरज पूर्वी आकाश पर और अहाते में चारों ओर

वने हुए वड़े-वड़े सायवानों की फूस की छतों पर अपनी चमकदार और खिली हुई रोशनी विखेर रहा है जो ओस की वजह से चमक रही हैं। उन सायवानों में हम नांदों के सामने वंधे हुए अपने घोड़ों को देख सकते हैं, और उनकी चवाने की आवाज़ सुन सकते हैं। एक झबरा काला कुत्ता, जो भोर पहर से पहले तक खाद के ढेर पर सिकुड़ा हुआ लेटा था, अलसाये हुए ढंग से अंगड़ाई लेता है, फिर धीमी चाल से दौड़ता हुआ और सारी देर अपनी दुम को हिलाता हुआ अहाते को पार करता है। हड़बड़ायी हुई गृहिणी चूं-चूं करता हुआ फाटक खोलती है, किसी सोच में डूवी हुई गायों को सड़क पर हांक देती है, जहां से पशुओं के गल्लों के पैरों की चाप, गायों के रंभाने और भेड़ों के मिमियाने की आवाजें पहले से ही सुनायी दे रही हैं, और वह अपनी उनींदी पड़ोसिन से दो-चार वातें कर लेती है। फ़िलिप, जिसने अपनी आस्तीनें उलट रखी हैं, गहरे कुएं में से चमकदार छपछपाते हुए पानी की वाल्टियां निकालकर वलूत की लकड़ी की नांद में डाल रहा है जिसके आस-पास वत्तखों ने पानी से भरे हुए एक गड्ढे में सवेरे की अपनी पहली डुवकी लगाना शुरू भी कर दिया है; और मैं फ़िलिप के ख़ूवसूरत चेहरे, उसकी घनी दाढ़ी, और कोई भी मेहनत का काम करते वक़्त उसकी नंगी मज़बूत वांहों पर उभर आनेवाली नसों और मांस-पेशियों को देखकर खुश हो रहा हूं।

वीच की दीवार के उस ओर से जहां मीमी और लड़कियां सोयी थीं, जिस दीवार के पार हम लोग रात को वातें कर रहे थे, चलने-फिरने की आवाजें सुनायी दे रही हैं। उनकी नौकरानी माशा न जाने क्या-क्या चीज़ें लेकर, जिन्हें वह अपनी पोशाक की आड़ में हमारी जिज्ञासा-भरी दृष्टि से छिपाने की कोशिश करती है, वार-वार अंदर-वाहर आ-जा रही है; आखिरकार वह दरवाज़ा खोलती है और हम लोगों से आकर चाय पी लेने को कहती है।

वसीली फ़ालतू जोश दिखाते हुए लगातार भागकर कमरे में जाता है और कभी कोई चीज़ वाहर निकाल लाता है और कभी कोई और चीज़, हम लोगों की तरफ़ देखकर आंख मारता है और मार्या इवानोव्ना को जल्दी से जल्दी चल पड़ने के लिए राज़ी करने की भरपूर कोशिश करता है। घोड़े गाड़ियों में जोत दिये गये हैं और वे थोड़ी-थोड़ी देर

वाद माज़ में लगी हुई घंटियां बजाकर अपनी अधीरता प्रकट करते हैं ; बक्स, संदूक़, संदूक़चियां और सूटकेस सब एक बार फिर बंद करके रखे जा चुके हैं और हम लोग अपनी-अपनी जगहों पर जा बैठते हैं। लेकिन हर बार हम देखते हैं कि ब्रीच्का के अंदर बैठने की जगह कम है और सामान इतना भरा हुआ है कि न यह समझ में आता है कि आख़िर पिछले दिन वह सारा सामान कैसे रखा हुआ था और न यह कि हम लोग बैठें तो कैसे। ब्रीच्का में मेरी जगह के नीचे अख़रोट की लकड़ी का तिकोने ढक्कनवाला चाय का जो एक डिब्बा रखा है उस पर मुझे ख़ास तौर पर ताव आ रहा है। लेकिन वसीली का कहना है कि वह हिल-डुलकर ठीक हो जायेगा और मुझे मजबूर होकर उसकी बात मान लेनी पड़ती है।

पूरब में छाये हुए घने सफ़ेद बादलों के पीछे से सूरज अभी निकला है और चारों ओर का इलाक़ा सुखप्रद उल्लसित रोशनी से चमक उठा है। मेरे चारों ओर हर चीज़ बेहद ख़ूबसूरत है और मैं बेहद शांत हूं और मेरे मन पर कोई बोझ नहीं है। ... सामने सूखी खूंटियों से भरे हुए खेतों और ओस से चमकती हुई हरी-हरी घास के बीच से चौड़ी और बंधनमुक्त सड़क बल खाती चली जा रही है। जहां-तहां सड़क के किनारे बेद का कोई उदास पेड़, या छोटी-छोटी हरी-भरी पत्तियों-वाला अल्पवयस्क बर्च-वृक्ष बड़ी सड़क की धूल-भरी लीकों पर अपनी लंबी-लंबी निश्चल छायाएं डाल रहे हैं। पहियों और घोड़ों की घंटियों की एकरस आवाज़ सड़क के आस-पास मंडलाते हुए चंडूलों के गीत को दबा नहीं पा रही है। कीड़ों के खाये हुए कपड़े और धूल की गंध और हमारी घोड़ागाड़ी से चिपकी हुई एक तरह की खट्टी-खट्टी गंध प्रभात की सुगंध में खो गयी है ; और मैं अपने मन में एक हर्षमय बेचैनी, कुछ करने की इच्छा महसूस करता हूं, जो सच्चे आनंद का संकेत है।

रात को जहां हम लोग ठहरे थे वहां मैं प्रार्थना नहीं कर पाया था ; लेकिन चूंकि मैंने कई बार देखा है कि जिस दिन किसी वजह से मैं इस चर्या का पालन करना भूल जाता हूं उस दिन मेरा कोई न कोई अनिष्ट हो जाता है, इसलिए मैं अपनी इस चूक को ठीक करने की कोशिश करता हूं। मैं अपनी टोपी उतार लेता हूं और ब्रीच्का के कोने की तरफ़ मुंह करके प्रार्थना के शब्द दोहराता हूं और कोट के

अंदर हाथ डालकर सीने पर सलीब का निशान बनाता हूं ताकि कोई देखने न पाये, फिर भी हज़ारों चीज़ें मेरा ध्यान भटकाती हैं, और अपनी बदहवासी में मैं प्रार्थना के वही शब्द कई बार दोहरा डालता हूं।

सड़क के किनारे-किनारे बल खाकर जाती हुई पटरी पर धीरे-धीरे चलती हुई कुछ आकृतियां दिखायी देती हैं: ये तीर्थयात्री हैं। उनके सिर पर मैले रूमाल बंधे हुए हैं; उनकी पीठ पर बर्च की छाल की धज्जियों के बंडल हैं; उनके पांवों पर गंदी, फटी-पुरानी पट्टियां लिपटी हुई हैं और उन्होंने छाल के जूते पहन रखे हैं। अपनी लाठियां एक साथ झुलाते हुए और हम लोगों की ओर प्रायः बिल्कुल ही न देखते हुए वे धीरे-धीरे एक क़तार में आगे बढ़ रही हैं। मैं सोचने लगता हूं: वे कहां जा रही हैं और क्यों? क्या उनका सफ़र बहुत लंबा है? और सड़क पर उनकी जो दुबली-पतली परछाइयां पड़ रही हैं क्या वे शीघ्र ही उनके रास्ते पर पड़नेवाली बेद वृक्ष की छाया के साथ मिलकर एक हो जायेंगी? इतने में चार बदली के घोड़ों के साथ एक गाड़ी तेज़ी से हमारी ओर आती हुई दिखायी देती है। दो ही सेकंड बाद वे चेहरे जो दो अर्शीन * की दूरी पर बड़ी जिज्ञासा से मुस्कराते हुए हमें देख रहे थे, हमारे पास से होकर आगे निकल गये हैं; विश्वास नहीं होता कि ये चेहरे बिल्कुल अजनबी लोगों के थे और यह कि शायद मैं अब उन्हें कभी नहीं देख पाऊंगा।

इसके बाद पसीने से तर झबरे घोड़ों की एक जोड़ी, जिनके लगाम लगी हुई है, सरपट भागती हुई सड़क के किनारे से निकल जाती है; उनकी जोतों को बम के पट्टों के साथ गांठ बांधकर जोड़ दिया गया है; उनके पीछे बदली के घोड़ों की निगरानी करनेवाला लड़का उदास धुन का गाना गाता हुआ घोड़े पर सवार चला जा रहा है; उसकी मेमने के ऊन की टोपी एक ओर को झुकी हुई है, बड़े-बड़े बूटों में उसकी लंबी-लंबी टांगें घोड़े के दोनों तरफ़ झूल रही हैं; घोड़े पर दूगा ** कसा हुआ है। उसके चेहरे और उसके रवैये से ऐसी काहिली और लापरवाही टपक रही है कि मुझे ऐसा लगता है कि बदली के

---

* अर्शीन – पुरानी रूसी माप, जो ०,७ मीटर के बराबर है। – अनु०

** दूगा – घोड़े के साज़ का एक हिस्सा। – अनु०

घोड़ों का साईस होने, घोड़ों को उनके थान पर पहुंचा देने और उदास गाने गाते रहने से बढ़कर कोई सुख नहीं है। उधर, खड्ड के पार, बहुत दूर पर हरी छतवाला गांव का गिरजाघर चमकीले नीले आसमान की पृष्ठभूमि पर सबसे अलग-थलग दिखायी पड़ रहा है; और वह रहा एक छोटा-सा गांव, किसी भद्रजन के घर की लाल छत और हरा-भरा बाग़। उस घर में कौन रहता है? क्या उस घर में बच्चे होंगे, मां-बाप और मास्टर साहब? क्यों न हम लोग अपनी गाड़ियां लेकर वहां तक जायें और उसके मालिक से जान-पहचान पैदा करें? और यह आ रहा है मोटी-मोटी टांगोंवाले तीन-तीन तगड़े घोड़ों से खींची जानेवाली भारी-भरकम गाड़ियों का क़ाफ़िला, जिसे निकल जाने की जगह देने के लिए हमें मजबूर होकर सड़क पर से नीचे उतर जाना पड़ता है। "क्या ले जा रहे हो?" वसीली पहले गाड़ीवान से पूछता है, जो उस पटरे पर से, जिस पर वह बैठा हुआ है, अपने बड़े-बड़े पांव नीचे लटकाये शून्य दृष्टि से हमें घूरता रहता है, अपनी चाबुक फटकारता है और हम लोगों से इतनी दूर जाकर ही जवाब में कुछ कहता है कि हमें कुछ सुनायी न दे। "क्या माल है तुम्हारे पास?" वसीली दूसरी गाड़ी की ओर मुड़कर पूछता है, जिसके घिरे हुए सामनेवाले हिस्से में एक और गाड़ीवाला मूंज की नयी चटाई ओढ़े लेटा है। सुनहरे बालों और लाल चेहरेवाला एक सिर क्षण-भर के लिए मूंज की चटाई के नीचे से निकलता है; वह हम लोगों पर तिरस्कार-भरी उदासीनता की एक दृष्टि डालता है और फिर चटाई के नीचे ग़ायब हो जाता है; और मेरे मन में यह विचार आता है कि इन गाड़ीवानों को यह तो क़तई नहीं मालूम होगा कि हम लोग कौन हैं और हम कहां जा रहे हैं।...

मैं अपने विभिन्न अवलोकनों में इतना खोया हुआ हूं कि डेढ़ घंटे तक वेर्स्तों के पत्थरों पर खुदे हुए टेढ़े-मेढ़े अंकों की ओर मेरा ध्यान ही नहीं जाता। लेकिन अब सूरज की तेज़ धूप से मेरी खोपड़ी और पीठ जलने लगी हैं सड़क ज़्यादा धूल-भरी हो गयी है, चाय का डिब्बा मुझे बहुत तकलीफ़ दे रहा है और मैं कई बार पहलू बदल-बदलकर बैठ चुका हूं। मुझे गर्मी लगने लगी है और उलझन हो रही है, और मैं ऊबने लगा हूं। मेरा सारा ध्यान वेर्स्तों के पत्थरों और उन पर अंकित

अक्षरों की ओर खिंच जाता है। मैं अपने मन में तरह-तरह से हिसाब लगाता हूं कि अगली मंज़िल तक पहुंचने में हमें कितना वक़्त लगेगा। "बारह वेर्स्ता छत्तीस की तिहाई होते हैं और लिपेत्स तक की दूरी इकतालीस है; इसलिए क्या हम लोगों ने तिहाई से थोड़ा-सा कम सफ़र पूरा कर लिया है?" वग़ैरह-वग़ैरह।

"वसीली," उसे कोचवान के पास की सीट पर ऊंघते देखकर मैं पुकारकर कहता हूं, "मुझे अपनी जगह बैठ जाने दे, बड़ा अच्छा है तू।"

वसीली राज़ी हो जाता है; हम अपनी जगहें बदल लेते हैं। वह फ़ौरन ख़र्राटे लेने लगता है और इस तरह हाथ-पांव फैला लेता है कि ब्रीच्का में किसी और के लिए कोई जगह ही नहीं रह जाती है। अपनी नयी जगह से मेरी आंखों के सामने अत्यंत रोचक दृश्य आता है—हमारे चारों घोड़े, नेरूचिंस्काया, डीकन, बायीं ओरवाली घोड़ी और अत्तार, जिनमें से सभी की सारी ख़ूबियां और ख़राबियां मैं अच्छी तरह जानता हूं।

"आज डीकन को बायीं तरफ़ जोतने के बजाय दायीं तरफ़ क्यों जोता है, फ़िलिप?" मैं कुछ झिझकते हुए पूछता हूं।

"डीकन?"

"और नेरूचिंस्काया बिल्कुल ज़ोर नहीं लगा रही है," मैं कहता हूं।

"डीकन को बायीं तरफ़ नहीं जोता जा सकता," फ़िलिप मेरी आख़िरी बात की ओर कोई ध्यान न देते हुए कहता है। "वह उस काम के लायक़ घोड़ा नहीं है; वहां तो किसी ऐसे घोड़े की ज़रूरत होती है जो—मेरा मतलब है, असली घोड़े की, और डीकन वैसा नहीं है।"

और यह कहकर फ़िलिप दाहिनी ओर आगे झुकता है और अपनी पूरी ताक़त से रास खींचकर वह अजीब ढंग से नीचे की तरफ़ से बेचारे डीकन की दुम और टांगों पर चाबुक मारने लगता है; और इस बात के बावजूद कि डीकन एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रहा है, यहां तक कि ब्रीच्का झोंका खाने लगती है, फ़िलिप अपनी तरकीब पर अमल करना उस वक़्त तक बंद नहीं करता जब तक कि वह ख़ुद सुस्ताने की और अपनी हैट एक तरफ़ झुका लेने की ज़रूरत नहीं महसूस करने लगता, हालांकि पहले वह उसके सिर पर बिल्कुल ठीक से जमी हुई थी। इस

अनुकूल अवसर का लाभ उठाकर मैं फ़िलिप की खुशामद करता हूं कि वह मुझे गाड़ी हांकने दे। फ़िलिप पहले मुझे एक रास देता है फिर दूसरी; और आख़िरकार चाबुक और छः की छः रासें मेरे हाथ में दे दी जाती हैं और मैं बेहद खुश हो जाता हूं। मैं छोटी-से-छोटी हर बात में फ़िलिप की नक़ल करने की कोशिश करता हूं और उससे पूछता हूं कि मैं ठीक तो चला रहा हूं न, लेकिन वह आम तौर पर असंतुष्ट है: वह कहता है कि एक घोड़ा बहुत ज़्यादा खींच रहा है और दूसरा बिल्कुल नहीं खींच रहा है, और वह झुककर सारी रासें मेरे हाथ से ले लेता है। गर्मी बढ़ती जा रही है। छोटे-छोटे बादलों के गाले साबुन के बुलबुलों की तरह फूलकर बड़े होते जा रहे हैं, एक-दूसरे में मिलते जा रहे हैं और उनमें कुछ-कुछ सुरमई रंग आता जा रहा है। बग्घी की खिड़की में से एक बोतल और पैकेट लिये हुए एक हाथ बाहर निकलता है। वसीली कमाल की चुस्ती से अपनी जगह से नीचे कूद पड़ता है, और हम लोगों को पनीर के केक और क्वास* लाकर देता है।

एक खड़ी ढलान पर पहुंचकर हम सब लोग गाड़ियों पर से उतर जाते हैं और दौड़ लगाते हैं, जबकि वसीली और याकोव पहियों को रोक लगाते हैं और बग्घी को दोनों तरफ़ से इस तरह अपने हाथों से सहारा देते हैं मानो अगर वह उलटने लगे तो वे उसे रोक ही तो लेंगे। फिर मीमी की इजाज़त से वोलोद्या या मैं बारी-बारी से जाकर बग्घी में बैठते हैं और ल्यूबा या कात्या जाकर ब्रीच्का में बैठती हैं। इन परिवर्तनों से लड़कियां बहुत खुश होती हैं क्योंकि वे समझती हैं, और ठीक ही समझती हैं कि ब्रीच्का में ज़्यादा मज़ा आता है। कभी-कभी जब गर्मी बहुत बढ़ जाती है और हम लोग किसी जंगल से गुज़र रहे होते हैं, तो हम बग्घी के पीछे रह जाते हैं, हरी-हरी टहनियां तोड़ लेते हैं, और ब्रीच्का में कुंज-सा बना लेते हैं। यह चलता-फिरता कुंज बग्घी से आगे निकल जाता है और ल्यूबा अत्यंत कर्णभेदी स्वर में चीख़ पड़ती है; जब भी किसी मौक़े पर वह बहुत खुश होती है तो वह इस तरह चीख़ने से कभी नहीं चूकती।

लेकिन यह तो वह गांव आ गया जहां हमें खाना खाकर आराम

---

* रोटी को खट्टा करके बनाया जानेवाला स्फूर्तिदायक रूसी पेय। – अनु०

करना है। हमें गांव की, धुएं की, तारकोल की और सिंकती हुई रोटियों की महक मिलने लगी है। हमें लोगों के बोलने की, क़दमों की और पहियों की आवाजें सुनायी देने लगी हैं, घोड़ों की घंटियां अब उस तरह नहीं बज रही हैं जैसे वे खुले खेतों में बजती थीं; हम दोनों ओर छोटे-छोटे बंगलों के बीच से गुज़र रहे हैं, जिन पर फूस के छप्पर पड़े हुए हैं, जिनकी बरसातियों के लकड़ी के खंभों पर नक़्क़ाशी है, और जिनकी छोटी-छोटी खिड़कियों पर लाल और हरी झिलमिलियां पड़ी हुई हैं, जिनके बीच से जिज्ञासावश किसी औरत का चेहरा बाहर झांक लेता है। सिर्फ़ ढीले-ढाले झबले पहने छोटे-छोटे किसान लड़के और लड़कियां आंखें फाड़े और आश्चर्य से अपने हाथ फैलाये जहां के तहां गड़े खड़े हैं, या अपने छोटे-छोटे नंगे पांवों से धूल में रास्ता बनाते हुए चुपके-चुपके आगे बढ़ते हैं और फ़िलिप की धमकियों के बावजूद गाड़ियों के पीछे रखे हुए संदूक़ों पर चढ़ने की कोशिश करते हैं। हर तरफ़ से सरायों के अधपके बालोंवाले मालिक भागकर गाड़ियों की तरफ़ आते हैं और लुभानेवाले शब्दों और मुद्राओं का सहारा लेकर मुसाफ़िरों को एक-दूसरे से छीनने की कोशिश करते हैं। यह लो! फाटक चूं-चूं की आवाज़ करता हुआ खुलता है, कमानी जाकर फाटक के खंभों में अटक जाती हैं और हम अहाते में प्रवेश करते हैं। चार घंटे का आराम और आज़ादी!

अध्याय २

तूफ़ान

सूरज पश्चिम की ओर ढल रहा था और उसकी तपती हुई तिरछी किरनों से मेरी गर्दन पर और गालों पर असह्य जलन हो रही थी। ब्रीच्का' के तचते हुए पाश्वों को छूना असंभव था। धूल का घना गुबार सड़क पर से उठकर हवा में छा गया था। उसे वहां से उड़ा ले जाने के लिए तनिक-सी भी हवा नहीं चल रही थी। बग्घी का ऊंचा धूल से अटा ढांचा हमारे सामने हमेशा एक ही दूरी पर झूमता हुआ चल

रहा था, और जब कोचवान चाबुक फटकारता था तो अकसर हमें बग्घी के ऊपर से वह चाबुक, कोचवान की हैट और याकोव की टोपी दिखायी दे जाती थी। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि आखिर मैं करूं क्या: किसी भी चीज़ से मेरा मन नहीं बहल रहा था – न मेरे बग़ल में ऊंघते हुए वोलोद्या के धूल से मैले चेहरे से, न फ़िलिप की पीठ की हरकतों से, न अपनी गाड़ी की लंबी तिरछी परछाईं से जो ठीक हमारे पीछे-पीछे चली आ रही थी। मेरा सारा ध्यान दूर दिखायी पड़ रहे वेर्स्ता के पत्थरों पर और उन बादलों पर केंद्रित था, जो पहले तो सारे आसमान पर बिखरे हुए थे, लेकिन अब एक जगह सिमटकर उन्होंने ख़तरनाक रूप धारण कर लिया था। बीच-बीच में कहीं दूर बादल गरज भी रहे थे। बाक़ी सब बातों से बढ़कर इस अंतिम परिस्थिति ने जल्दी पड़ाव डालने की जगह पहुंच जाने की मेरी अधीरता बढ़ा दी। बिजली की कड़क के साथ आंधीपानी का तूफ़ान मेरे मन में भय और उदासी की एक अकथनीय उत्पीड़क संवेदना पैदा कर रहा था।

सबसे क़रीब का गांव अभी दस वेर्स्ता दूर था, लेकिन वह गहरी ऊदी घटा, जो न जाने कहां से उठी थी क्योंकि कहीं हवा का नाम भी नहीं था, बड़ी तेज़ी से हमारी ओर बढ़ती आ रही थी। सूरज ने, जो अभी तक बादलों में छिपा नहीं था, उन बादलों के भयावह पिंड को और वहां से क्षितिज तक फैली हुई स्लेटी लकीरों को आलोकित कर दिया था। बीच-बीच में कहीं दूर बिजली चमक उठती थी और घुटी-घुटी-सी गरज सुनायी देती थी, जो सारे आकाश में बिखरे हुए खंडित गर्जनों में मिलकर धीरे-धीरे तेज़ होती जा रही थी। वसीली ने कोचवान की सीट पर खड़े होकर ब्रीच्का का हुड चढ़ा दिया। कोचवानों ने अपने कोट पहन लिये; हर बार जब बिजली कड़कती थी तो वे हैट उतारकर अपने सीनों पर सलीब का निशान बनाते थे। घोड़े अपने कान खड़े कर रहे थे, और अपने नथुने इस तरह फुला रहे थे मानो उस ताज़ा हवा को सूंघ रहे हों जो पास आते हुए तूफ़ान के बादल से आ रही थी, और ब्रीच्का धूल-भरी सड़क पर पहले से ज़्यादा तेज़ी से भागी चली जा रही थी। मेरे मन में एक विचित्र भावना छा गयी। मुझे अपनी नसों में धमकते हुए ख़ून का आभास हो रहा था। थोड़ी ही देर में सूरज पर बादलों का पतला परदा पड़ गया; उसने अंतिम बार झांककर

देखा, दहकते हुए क्षितिज पर रोशनी की आखिरी चमक डाली और ग़ायब हो गया। सारी दृश्यावली सहसा बदल गयी और उस पर उदासी छा गयी। ऐस्पेन के वृक्षों का झुरमुट कांप उठा; पत्तियों में सफ़ेद-सुरमई रंग का पुट पैदा हो गया और ऊदे बादलों की पृष्ठभूमि पर वे और उजागर हो उठीं — और सरसराने और फड़फड़ाने लगीं, लंबे-लंबे बर्च-वृक्षों की फुनगियां झूमने लगीं और सूखी घास के गुच्छे चक्कर काटते हुए सड़क पर इधर-उधर उड़ने लगे। सफ़ेद पोटेवाली अबाबीलें तेज़ी से ब्रीच्का के चारों ओर मंडलाती हुई और घोड़ों के सीनों के ठीक नीचे से इस तरह झपटकर उड़ने लगीं मानो वे हमें रोकना चाहती हों; हवा के थपेड़ों से उलझे हुए परोंवाले कौए हवा में बग़ल की तरफ़ उड़ रहे थे; चमड़े के उस एप्रन के सिरे, जो हमने अपने ऊपर बांध लिया था, फड़फड़ाकर ऊपर उड़े जा रहे थे, तेज़ हवा के भीगे-भीगे झोंकों को अंदर आने दे रहे थे, और गाड़ी से फट-फट करते हुए टकरा रहे थे। ऐसा लग रहा था कि बिजली ब्रीच्का के अंदर ही चमक रही है; जब बिजली चमकती तो हमारी आंखें चकाचौंध हो जातीं, और एक क्षण को चोटियों की तरह गुंधी हुई किनारीवाला सुरमई रंग का कपड़ा और कोने में दुबकी हुई वोलोद्या की आकृति आलोकित हो उठती। उसी क्षण हमारे सिर के ठीक ऊपर घनगरज की आवाज़ सुनायी देती और ऐसा लगता कि वह निरंतर तेज़ होती जा रही है और एक विशाल सर्पिल चक्कर की तरह निरंतर अधिकाधिक विस्तृत होती जा रही है और धीरे-धीरे फूलती जा रही है, यहां तक कि वह कान के परदे फाड़ देनेवाले धमाके के साथ फट जाती, जिसे सुनकर हम सिहर उठते और विवश होकर दम साध लेते। दैवी कोप! इस प्रचलित धारणा में कितनी काव्यमयता है!

पहिये और तेज़ी से घूमने लगते हैं। वसीली की और फ़िलिप की पीठों को देखकर, जो बार-बार रासों को झटका देता रहता है, मुझे साफ़ लग रहा था कि वे भी डर रहे हैं। ब्रीच्का पहाड़ी की ढलान पर तेज़ी से लुढ़कती हुई नीचे की ओर जाती है और लकड़ी के पुल पर से घड़घड़ाती हुई गुज़रती है। मैं डर के मारे हिलता-डुलता तक नहीं और मुझे हर क्षण गाड़ी के गिरने से चूर-चूर हो जाने का खटका लगा रहता है।

पर अकेले बैठे अपनी कोई प्रिय पुस्तक पढ़ रहे हैं। कभी-कभी तो मैं ऐसे क्षण उनके पास पहुंच जाता था जब वह पढ़ नहीं रहे होते थे, बल्कि वहां सिर्फ़ बैठे होते थे, उनकी ऐनक उनकी नाक के सिरे पर टिकी होती थी, उनकी अधमुंदी नीली आंखें विचित्र भाव से सामने एकटक देखती रहती थीं और उनके होंटों पर उदास मुस्कराहट खेलती रहती थी। उनकी सांस की नपी-तुली आवाज़ और शिकारियोंवाली घड़ी की टिक्-टिक् के अलावा कमरा बिल्कुल शांत रहता था।

अक्सर वह मुझे नहीं देख पाते थे, और मैं दरवाज़े पर खड़ा सोचता रहता था, "हाय, बेचारा बूढ़ा! हम लोग तो बहुत-से हैं और हम साथ खेल-कूदकर खुश हो सकते हैं—लेकिन वह तो बिल्कुल अकेले हैं और उनके साथ कोई भी प्यार का बर्ताव करनेवाला नहीं है। वह सच ही कहते हैं कि वह अनाथ हैं और उनकी ज़िंदगी की कहानी भी बेहद दर्द-भरी है! मुझे याद है कि उन्होंने उसे निकोलाई को सुनाया था: किसी की ऐसी हालत होना भयानक बात है!" और मुझे उन पर इतना तरस आता कि मैं उनके पास जाकर उनका हाथ पकड़ लेता और कहता, "Lieber* कार्ल इवानिच!" मेरा यह कहना उन्हें ज़रूर अच्छा लगता होगा, क्योंकि वह हमेशा मुझे दुलार करते थे, और साफ़ मालूम होता था कि बात ने उनके दिल को छू लिया था।

एक और दीवार पर नक़्शे टंगे हुए थे, जो लगभग सभी फटे हुए थे, लेकिन कार्ल इवानिच ने बड़ी निपुणता से अपने हाथ से उनकी मरम्मत की थी। तीसरी दीवार पर, जिसके बीच में नीचे जाने का दरवाज़ा था, एक ओर दो रूलर टंगे थे: एक तो बुरी तरह कटा-फटा था—वह हम लोगों का था, दूसरा—नया —उनका अपना निजी रूलर था और वह सीधी लकीरें खींचने से ज़्यादा हमें "सीधा करने" के लिए इस्तेमाल किया जाता था। दरवाज़े के दूसरी ओर एक ब्लैकबोर्ड था जिस पर हमारे प्रमुख कुकृत्य गोल दायरों मे और छोटे-मोटे अपराध क्रॉस के निशानों से इंगित किये जाते थे। बोर्ड के बायीं तरफ़ वह कोना था जहां सज़ा मिलने पर हमें घुटनों के बल बैठना पड़ता था।

कितनी अच्छी तरह याद है मुझे वह कोना! मुझे वह डैम्पर

---

* प्यारे। (जर्मन)

और गरम हवा आने के लिए उसमें बना हुआ सूराख़ याद है, और वह शोर भी जो उसको घुमाने पर पैदा होता था। उस कोने में खड़े-खड़े मेरे घुटने और मेरी पीठ दुखने लगती थी, और मैं सोचता था: "कार्ल इवानिच मेरे बारे में बिल्कुल भूल गये हैं, वह तो मज़े में अपनी गद्देदार आराम-कुर्सी पर चैन से बैठे अपनी हाइड्रोस्टेटिक्स की किताब पढ़ रहे हैं, लेकिन यहां मेरा क्या हाल है?" और फिर उन्हें अपने अस्तित्व की याद दिलाने के लिए मैं धीरे से डैम्पर खोलता और बंद करता था, या दीवार पर से थोड़ा-सा पलस्तर उतार लेता था; लेकिन अगर अचानक बहुत बड़ा टुकड़ा शोर करता हुआ नीचे गिर पड़ता था तो उसका डर ही पूरी सज़ा से बदतर होता था। मैं गर्दन घुमाकर कनखियों से कार्ल इवानिच को देखता था, लेकिन वह किताब हाथ में लिये ऐसे बैठे रहते थे जैसे उन्होंने कुछ देखा ही न हो।

कमरे के बीच में एक मेज़ रखी थी, जिस पर फटा हुआ काला मोमजामा मढ़ा हुआ था, जिसमें से कई जगह चाक़ू से कटी हुई मेज़ की कगर दिखायी देती थी। मेज़ के चारों ओर कई बिना रंग किये हुए स्टूल रखे थे जो बहुत अरसे से इस्तेमाल होते-होते घिसकर चिकने हो गये थे। आख़िरी दीवार की सारी जगह तीन खिड़कियों ने घेर रखी थी। ये खिड़कियां सड़क पर खुलती थीं, जिसके हर गड्ढे, हर कंकर और हर लीक से मैं न जाने कब से परिचित था और वे मुझे बेहद प्रिय थे; सड़क के दूसरी तरफ़ तराशकर संवारे गये लाइम-वृक्षों की क़तारों के बीच एक रास्ता था, जिसमें से एक चारदीवारी का टट्टर झांकता था। छायादार वृक्षों के पार एक घास का मैदान था जिसके एक तरफ़ एक खत्ती थी और दूसरी तरफ़ जंगल था; दूरी पर जंगल में चौकीदार की छोटी-सी झोपड़ी दिखायी देती थी। दाहिनी तरफ़वाली खिड़की से उस छत का एक हिस्सा दिखायी देता था जहां बड़े लोग आम तौर पर खाना खाने से पहले बैठते थे। जब कार्ल इवानिच डिक्टेशन का पेज ठीक कर रहे होते थे उसके दौरान उस तरफ़ देखने पर मेरी नज़र अम्मा के काले बालोंवाले सिर और किसी की पीठ पर पड़ती थी, और लोगों के बातें करने और हंसने की हल्की-हल्की आवाज सुनायी पड़ती थी; और बड़ी झुंझलाहट होती थी कि मैं वहां नहीं हो सकता था, और मैं सोचता था: "आख़िर

कब मैं इतना बड़ा हो जाऊंगा और पढ़ना-लिखना बंद कर दूंगा और इन बातों से पीछा छुड़ाकर हमेशा उन लोगों के साथ बैठ सकूंगा जिनसे मुझे प्यार है?" झुंझलाहट व्यथा में बदल जाती, और दिमाग़ में तरह-तरह के विचित्र विचार भर जाते यहां तक कि ग़ल्तियों के लिए कार्ल इवानिच की डांट-फटकार भी सुनायी नहीं पड़ती थी।

कार्ल इवानिच ने अपना ड्रेसिंग-गाऊन उतारा, अपना नीला टेल-कोट पहना, जिसके कंधों पर उभार और सिलवटें थीं, आईने के सामने खड़े होकर अपनी टाई ठीक की, और अम्मा को सलाम करने के लिए हम लोगों को लेकर नीचे चल दिये।

अध्याय २

MAMAN

अम्मा बैठक में बैठी चाय उंडेल रही थीं: एक हाथ में उन्होंने चायदानी पकड़ रखी थी और दूसरे में समोवार की टोंटी, जिसमें से पानी चायदानी के ऊपर से बहकर ट्रे में गिर रहा था। हालांकि वह लगातार उधर ही घूर रही थीं लेकिन उन्होंने न इस बात को देखा और न हमारे प्रवेश करने को।

जब हम अपने किसी प्रियजन के नाक-नक्शे को याद करने की कोशिश करते हैं तो अतीत की इतनी बहुत-सी स्मृतियां उभरने लगती हैं कि वे नाक-नक्शे इन स्मृतियों के पार ऐसे धुंधले-धुंधले दिखायी देते हैं जैसे हम उन्हें आंसुओं के पार देख रहे हों। ये कल्पना के आंसू होते हैं। जब मैं याद करने की कोशिश करता हूं कि उस वक्त मेरी मां कैसी थीं, तो मेरी नजरों के सामने बस उनकी भूरी आंखें आती हैं, जिनसे हमेशा प्यार और नेकी टपकती थी, उनकी गर्दन पर जहां छोटे-छोटे घुंघराले बाल उगे थे उसके ठीक नीचेवाला तिल, उनका सफ़ेद कढ़ा हुआ कॉलर, उनका दुबला-पतला कोमल हाथ, जिससे वह कितनी ही बार मुझे सहलाती थीं और जिसे मैं कितनी ही बार चूमता था; लेकिन उनकी समूची आकृति मेरी पकड़ में नहीं आती।

सोफ़े के बायीं तरफ़ बड़ा-सा पुराना इंगलिस्तानी पियानो रखा

था ; मेरी सांवली वहन ल्यूवा उसके सामने वैठी स्पष्टत: वहुत कोशिश करके क्लेमेंती की संगीत रचनाएं वजा रही थी ; अभी-अभी ठंडे पानी से धोये जाने की वजह से उसकी छोटी-छोटी उंगलियां गुलावी हो गयी थीं। वह ग्यारह साल की थी ; वह लिनेन की एक ऊंची-सी पोशाक और उसके साथ सफ़ेद लैस की गोट लगी हुई पतलून पहने थी, और वह एक साथ पूरा सरगम नहीं वजा सकती थी। उसके वग़ल में आधा मुंह फेरे मार्या इवानोव्ना गुलावी फ़ीतोंवाली टोपी और नीली जैकेट पहने वैठी थीं, उनका क्रोध से तमतमाया हुआ चेहरा कार्ल इवानिच के अंदर आते ही और भी कठोर हो गया। उन्होंने झल्लाकर उन्हें देखा और उनके झुककर अभिवादन करने का कोई जवाव दिये विना अपने पांव से ताल देते हुए गिनतियां गिनती रहीं: "Un, deux, trois, un, deux, trois,"* – पहले से ज़्यादा ज़ोर से और ज़्यादा आदेशपूर्वक।

कार्ल इवानिच इस वात की ओर तनिक भी ध्यान दिये विना मेरी मां के पास चले गये और हमेशा की तरह उन्होंने जर्मन में उनका अभिवादन किया। चौंककर उन्होंने अपना सिर इस तरह हिलाया मानो अपने पीड़ाजनक विचारों को दूर भगा रही हों, अपना हाथ कार्ल इवानिच की ओर वढ़ाया, और जव वह उनका हाथ चूमने के लिए झुके तो उन्होंने उनकी झुर्रीदार कनपटी को चूम लिया।

"Ich danke, lieber** कार्ल इवानिच," वह वोलीं। और जर्मन में ही वोलना जारी रखते हुए उन्होंने पूछा:

"वच्चों को नींद ठीक से आयी?"

कार्ल इवानिच एक कान से वहरे थे, और इस वक़्त पियानो के शोर की वजह से उन्होंने कुछ नहीं सुना। वह एक हाथ मेज़ पर टिकाकर और एक पांव पर खड़े होकर सोफ़े के और पास झुक आये, और होंटों पर ऐसी मुस्कराहट लाकर जो उस वक़्त मुझे सुसंस्कृति की पराकाष्ठा मालूम होती थी उन्होंने अपनी टोपी उठायी और कहा:

---

* एक, दो, तीन, एक, दो, तीन। (फ़्रांसीसी)

** शुक्रिया, प्यारे। (जर्मन)

"क्या आप मुझे क्षमा करेंगी, नताल्या निकोलायेव्ना?"

जुकाम हो जाने के डर से कार्ल इवानिच अपनी लाल टोपी कभी नहीं उतारते थे, लेकिन हर वार ड्राइंग-रूम में प्रवेश करने पर वह उसे पहने रहने की इजाजत मांगते थे।

"पहने रहिये, कार्ल इवानिच।... मैं आपसे पूछ रही थी कि बच्चों को नींद तो ठीक से आयी?" अम्मा ने उनके और पास आकर ऊंचे स्वर में वोलते हुए कहा।

लेकिन इस बार भी उन्होंने कुछ नहीं सुना और अपनी गंजी चांद पर अपनी लाल टोपी लगाये खड़े रहे और हमेशा से ज़्यादा खुश-मिज़ाजी मे मुस्कराते रहे।

"ज़रा रुक जाओ, मीमी," अम्मा ने मुस्कराकर मार्या इवानोव्ना से कहा, "हमें कुछ सुनायी नहीं देता।"

अम्मा का चेहरा सुंदर तो था ही, लेकिन जब वह मुस्कराती थी तब वह और भी प्यारा लगने लगता था, और उनके चारों ओर की हर चीज़ में उसकी वजह से जान पड जाती थी। जीवन की कठिन घड़ियों में अगर उस मुस्कान की एक झलक भी मुझे मिल पाती तो मुझे कभी पता ही न चलता कि व्यथा किसे कहते हैं। मुझे तो ऐसा लगता है कि जिसे सुंदरता कहते हैं वह केवल मुस्कराहट में होती है: अगर मुस्कराहट किसी चेहरे के आकर्पण को वढ़ा देती है तो वह चेहरा सुंदर है; अगर मुस्कराहट से उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता तो वह चेहरा सपाट है; अगर मुस्कराहट से चेहरा विगड़ जाये तो वह चेहरा कुरूप है।

अम्मा ने मेरा सिर अपने दोनों हाथों में पकड़ लिया, और उसे पीछे झुकाकर मुझे ग़ौर से देखा और वोलीं:

"बेटे, तुम आज सवेरे रोये थे?"

मैंने कोई जवाव नहीं दिया। उन्होंने मेरी आंखों पर प्यार किया और जर्मन में पूछा:

"क्यों रोये थे तुम?"

वह जब मित्रतापूर्ण ढंग से हम लोगों से वोलती थीं तो हमें हमेशा जर्मन में संवोधित करती थीं, जो उन्हें अच्छी तरह आती थी।

"मैं सोते में रोया था, अम्मा," मैंने अपना मनगढ़ंत सपना पूरे

ब्योरे के साथ याद करते हुए कहा, और उस विचार से अनायास ही मैं कांप उठा।

कार्ल इवानिच ने मेरे शब्दों की पुष्टि की लेकिन सपने के बारे में कुछ नहीं कहा। मौसम के बारे में थोड़ी-बहुत बातें करने के बाद, जिस बातचीत में मीमी ने भी हिस्सा लिया था, अम्मा ने कुछ चहेते नौकरों के लिए ट्रे में शकर के छः डले रख दिये और अपने कशीदाकारी के अड्डे के पास चली गयी जो खिड़की के पास रखा हुआ था।

"बच्चो, अब अपने बाप के पास जाओ, और उनसे कह देना कि खलिहान जाने से पहले मेरे पास ज़रूर होते जायें।"

संगीत, गिनती और ग़ुस्से-भरी नज़रों का सिलसिला फिर शुरू हो गया, और हम पापा के पास चले गये। उस कमरे में से होकर, जो दादा के ज़माने से बटलरों की पैंट्री कहलाता था, हमने पापा के पढ़ने के कमरे में प्रवेश किया।

अध्याय ३

पापा

वह अपनी मेज़ के पास खड़े कुछ लिफ़ाफ़ों, काग़ज़ों और नोटों की गड्डियों की तरफ़ इशारा करते हुए अपने कारिंदे याकोव मिखाइलोव से उत्तेजित होकर बातें कर रहे थे, जो दरवाज़े और बैरोमीटर के बीच अपनी हमेशावाली जगह खड़ा था, और हाथ पीछे किये अपनी उंगलियां इधर-उधर चला रहा था।

पापा का ग़ुस्सा जितना बढ़ता जाता था उसकी उंगलियां भी उतनी ही ज़्यादा तेज़ी से चलने लगती थीं, और इसके विपरीत जब पापा बोलना बंद कर देते थे तो उंगलियां भी चलना बंद कर देती थीं; लेकिन जब याकोव ख़ुद बोलने लगता था तो उसकी उंगलियां सबसे अधिक उद्विग्नता व्यक्त करती थीं, और निर्द्वंद्व इधर उधर उछलने-कूदने लगती थीं। मुझे ऐसा लगता था कि याकोव के गुप्त विचारों का अनुमान उसकी उंगलियों की हरकत से लगाया जा सकता था। दूसरी ओर, उसका चेहरा हमेशा शांत रहता था — उसने

प्रतिष्ठा का भाव व्यक्त होता था और साथ ही तावेदारी का भी, मानो कह रहा हो: वात तो मेरी ही ठीक है, लेकिन जो हुक्म!

हम लोगों को देखकर पापा ने बस इतना कहा:

"एक मिनट रुको।"

और अपने सिर से हम लोगों को दरवाज़ा बंद कर देने का इशारा किया।

"रहम ख़ुदा का! आज तुम्हें हो क्या गया है, याकोव?" वह अपना कंधा बिचकाते हुए, जो उनकी आदत थी, कारिंदे को संबोधित करके कहते रहे, "यह लिफ़ाफ़ा जिसमें आठ सौ रूबल हैं..."

याकोव ने गिनतारा अपनी ओर खींचकर उस पर गोलियां सरकाकर आठ सौ रूवल गिने, किसी अनिश्चित बिंदु पर अपनी एकाग्र दृष्टि केंद्रित की, और यह सुनने की प्रतीक्षा करने लगा कि अब वह आगे क्या कहते हैं।

"...मेरे चले जाने के बाद खेतीबारी के ख़र्च के लिए है। समझ में आया? चक्की से तुम्हें एक हज़ार रूबल मिलेंगे... ठीक है न? आठ हज़ार का क़र्ज़ ख़ज़ाने से मिलेगा; भूसे से, जिसके, तुम्हारे अपने हिसाव के मुताबिक़, तुम सात हज़ार पूड* बेच सकते हो– मान लो, पैंतालीस कोपेक के भाव से, तुम्हें तीन हज़ार मिलेंगे; अब कुल मिलाकर तुम्हारे पास कितना पैसा हो गया? बारह हज़ार... ठीक है न?"

"बिल्कुल ठीक है, साहब," याकोव ने कहा।

लेकिन तेज़ी से चलती हुई उसकी उंगलियों को देखकर मुझे लगा कि वह खंडन करने जा ही रहा था कि इतने में पापा बीच में बोल पड़े:

"तो अब इस पैसे में से तुम दस हज़ार रूबल कौंसिल को भेज देना, पेत्रोव्स्कोये के लिए। दफ़्तर में जो पैसा है," पापा बोलते रहे (याकोव ने बारह हज़ार हटा दिये और इक्कीस हज़ार गिन दिये), "वह तुम मेरे पास ले आना, और आज की तारीख़ से ख़र्चे की मद में डाल देना।" (याकोव ने अपना गिनतारा फिर हिलाया और उसे

---

* एक पूड सोलह किलोग्राम के बराबर होता है। –अनु०

उलट दिया, शायद इस तरह यह इंगित करते हुए कि इक्कीस हज़ार भी इसी तरह उड़ जायेगा।) "पैसों का यह लिफ़ाफ़ा तुम मेरी तरफ़ से इस पर लिखे हुए पते पर पहुंचा देना।"

मैं मेज़ के पास ही खड़ा था, और लिफ़ाफ़े पर जो कुछ लिखा था उस पर मैंने एक सरसरी-सी नज़र डाली। उस पर लिखा था: "कार्ल इवानिच मायर।"

पापा की नज़र इस बात पर ज़रूर पड़ी होगी कि मैंने वह चीज़ देख ली थी जिसे मुझे नहीं देखना चाहिये था, क्योंकि उन्होंने मेरे कंधे पर अपना हाथ रखा और हल्के-से इशारे से यह ज़ाहिर कर दिया कि मैं मेज़ के पास से हट जाऊं। मैं जान न सका कि वह दुलार था या फटकार थी, लेकिन, उसका मतलब कुछ भी रहा हो, मैंने अपने कंधे पर रखे हुए बड़े-से गठीले हाथ को चूम लिया।

"अच्छी बात है, हुज़ूर," याकोव ने कहा। "और ख़बारोव्का-वाले पैसे के बारे में आपका क्या हुक्म है?"

ख़बारोव्का अम्मा के एक गांव का नाम था।

"उसे दफ़्तर में रहने देना, और किसी भी हालत में मेरी इजाज़त के बिना उसे इस्तेमाल न करना।"

याकोव कुछ क्षण चुप रहा, फिर उसकी उंगलियां अचानक ज़्यादा तेज़ी से चलने लगीं, और आज्ञाकारी मूढ़ता की उस मुद्रा की जगह, जिससे वह अभी तक अपने मालिक के आदेश सुन रहा था, अपने चेहरे पर चालाकी और कुशाग्रता का वह भाव लाकर, जो उसके स्वभाव के अनुकूल था, उसने गिनतारा अपनी ओर खींचा और बोलने लगा।

"प्योत्र अलेक्सांद्रोविच, हुज़ूर, मुझे यह इत्तिला देने की इजाज़त दीजिये कि आप बेशक जैसा चाहें करें, पर कौंसिल के पैसों का भुगतान वक़्त से करना नामुमकिन है। आपने कहा है," वह एक-एक शब्द को तोल-तोलकर बोलता रहा, "कि हमें क़र्ज़ों से, चक्की से और भूसे से पैसे मिलेंगे..." इन मदों का उल्लेख करते समय वह गिनतारे पर उन रक़मों को दिखाता भी गया। "मुझे डर है कि हिसाब लगाने में हम शायद थोड़ी-सी चूक कर गये हैं," उसने कुछ देर रुककर पापा को विचारमग्न दृष्टि से देखते हुए कहा।

"क्यों?"

"देखिये, हुजूर: चक्की के बारे में – चक्कीवाला मेरे पास दो बार मोहलत मांगने आ चुका है, और वह क़सम खाकर कहता है कि उसके पास पैसा नहीं है... इस वक़्त भी वह यहां मौजूद है। क्या आप उससे खुद बात कर लेंगे?"

"कहता क्या है वह?" सिर के एक झटके से यह जताते हुए कि वह चक्कीवाले से बात नहीं करना चाहते, पापा ने पूछा।

"वही पुराना क़िस्सा। वह कहता है कि कोई काम नहीं हुआ, उसके पास जो थोड़ा-बहुत पैसा था वह बंधे पर खर्च हो गया। हुजूर, अगर हम उसे निकाल दें तो और फिर क्या उससे हमें कोई फ़ायदा होगा? अब रही क़र्ज़ों की बात, जैसा कि आपने फ़रमाया है, मैं समझता हूं कि मैं पहले ही बता चुका हूं कि हमारी रक़म वहां डूबी हुई है और वह बहुत जल्दी हमारे हाथ लगनेवाली नहीं है। अभी कुछ दिन हुए मैंने इस मामले के बारे में एक पर्चे के साथ एक बोरा आटा शहर इवान अफ़ानासिच के पास भिजवाया था, उसने जवाब दिया कि प्योत्र अलेक्सांद्रोविच की खिदमत करके उसे बड़ी खुशी होती, लेकिन यह मामला उसके हाथ में नहीं है, और आपको अपनी रक़म का भुगतान दो महीने से कम में मिलना मुश्किल ही है। आपने भूसे के बारे में फ़रमाया है, मान लीजिये हमने उसे तीन हज़ार का बेच भी लिया..."

उसने अपने गिनतारे पर तीन हज़ार अलग किये और एक क्षण चुप रहकर पहले गिनतारे को देखा और फिर पापा की आंखों में आंखें डालकर देखा मानो कह रहा हो: "आप खुद देख लीजिये यह कितनी छोटी रक़म है। इसके अलावा अगर हमने उसे अभी बेचा तो हम घाटे पर बेचेंगे, जैसा कि आप खुद जानते हैं..."

बिल्कुल साफ़ लग रहा था कि उसके पास दलीलों का बहुत बड़ा खज़ाना था; शायद यही वजह रही होगी कि पापा ने उसकी बात बीच में ही काट दी।

"मैंने जो बंदोबस्त किया है उसमें मैं कोई हेर-फेर नहीं करूंगा," उन्होंने कहा, "लेकिन अगर यह पैसा मिलने में सचमुच कोई देर हो तो मजबूरी है, जितने की ज़रूरत हो उतना खबारोव्कावाले पैसे में से ले लेना।"

"जी, हुजूर।"

याकोव के चेहरे की मुद्रा से और उसकी उंगलियों से साफ़ जाहिर था कि इस आख़िरी आदेश से उसे अत्यधिक संतोष मिला था।

याकोव कृषि-दास था, और बहुत लगन से काम करनेवाला और वफ़ादार आदमी था; सभी अच्छे कारिंदों की तरह वह अपने मालिक के पैसों के मामले में बेहद किफ़ायतशार था और इस बात के बारे में कि कौन-सी चीज़ उसके मालिक के हित में है उसके दिमाग़ में बेहद अजीव-अजीव विचार थे। वह हमेशा इसकी फ़िक्र में रहता था कि मालकिन की जायदाद की क़ुर्बानी देकर अपने मालिक की जायदाद बढ़ाता रहे, और वह यह साबित करने की कोशिश करता था कि यह जरूरी था कि मेरी मां की ज़मीन की सारी आमदनी पेत्रोव्स्कोये की जायदाद में लगायी जाये (जिस गांव में कि हम लोग रहते थे)। इस क्षण वह विजयी अनुभव कर रहा था क्योंकि उसकी बात मान ली गयी थी।

पापा ने हम लोगों को संबोधित करके कहा कि अब वक़्त आ गया था कि हम लोग अपनी काहिली छोड़ दें, अब हम बच्चे नहीं रह गये थे और हमें पूरी तरह जी लगाकर पढ़ाई शुरू कर देनी चाहिये।

"तुम लोगों को शायद मालूम हो चुका होगा कि आज रात मैं मास्को जा रहा हूं और मैं तुम लोगों को अपने साथ ले जाऊंगा," उन्होंने कहा। "तुम लोग अपनी नानी के साथ रहोगे, और तुम्हारी मां लड़कियों के साथ यहां रहेंगी। और तुम्हें जानना चाहिये कि उन्हें बस एक बात से तसल्ली होगी – यह सुनकर कि तुम लोग ठीक से पढ़ रहे हो, और यह कि तुम्हारे पढ़ानेवाले तुमसे खुश हैं।"

हालांकि पिछले कई दिनों से जो तैयारियां हो रही थीं उनसे हमें कोई असाधारण बात होने की उम्मीद तो थी, लेकिन यह खबर सुनकर हमें धक्का-सा लगा। वोलोद्या का मुंह लाल हो गया और उसने कांपते हुए स्वर में मां का संदेश दोहराया। "तो मेरा सपना इस बात की भविष्यवाणी था!" मैंने सोचा। "भगवान न करे कि इससे बुरी कोई बात हो!"

मुझे मां की वजह से बेहद दुःख था, और साथ ही मुझे यह सोचकर खुशी भी हो रही थी कि हम बड़े हो गये थे। "अगर हम आज रात

जा रहे हैं, तो आज पढ़ाई तो यक़ीनन नहीं होगी। यह तो बड़ी अच्छी बात है," मैंने सोचा। "लेकिन मुझे कार्ल इवानिच की वजह से बड़ा दुःख है। उन्हें यक़ीनन बर्खास्त कर दिया जायेगा। इसीलिए वह लिफ़ाफ़ा उनके लिए तैयार किया गया था... नहीं, इससे अच्छा तो यह होगा कि हम लोग हमेशा पढ़ते रहें, और यहां से न जायें, और मां से अलग न हों, और बेचारे कार्ल इवानिच की भावनाओं को ठेस न पहुंचायें। वैसे भी वह अभागे हैं।"

ऐसे विचार बिजली की तरह कौंधते हुए मेरे दिमाग़ से गुज़र रहे थे; मैं निश्चल खड़ा अपने जूते के काले रिबनों को घूर रहा था। कार्ल इवानिच से बैरोमीटर का पारा नीचे गिरने के बारे में कुछ शब्द कहने के बाद और याकोव को यह आदेश देने के बाद कि वह कुत्तों को खाना न दे ताकि खाना खाने के बाद वह कम-उम्र शिकारी कुत्तों को जाने से पहले एक बार आज़मा ले, पापा ने मेरी आशाओं के विपरीत हम लोगों को पढ़ने के लिए भेज दिया, लेकिन हमारी तसल्ली के लिए हमें शिकार पर ले जाने का वादा भी कर लिया।

ऊपर जाते वक़्त रास्ते में मैं भागकर छत पर चला गया। पापा की सबसे चहेती ग्रेहाउंड कुतिया मील्का दरवाज़े के पास धूप में लेटी आंखें झपका रही थी।

"मील्का, मेरी प्यारी," मैंने उसे थपथपाते हुए और उसकी नाक चूमते हुए कहा, "हम लोग आज जा रहे हैं; विदा! अब हम एक-दूसरे से कभी नहीं मिलेंगे।"

भावनाओं के आवेग से मेरे आंसू बह निकले।

अध्याय ४

पढ़ाई

कार्ल इवानिच बहुत उखड़े-उखड़े थे। उनकी चढ़ी हुई त्योरियों से, जिस तरह उन्होंने अपना कोट कपड़ों की अल्मारी में फेंका उससे, जिस तरह गुस्से से उन्होंने कमरबंद बांधा उससे, और संवाद की पुस्तक

में यह इंगित करने के लिए कि कौन-सा हिस्सा हमें याद करना है उन्होंने अपने नाखून से जो गहरा निशान लगाया उससे यह बात साफ़ ज़ाहिर थी। वोलोद्या मन लगाकर पढ़ रहा था; लेकिन मैं इतना परेशान था कि मुझसे कुछ करते ही नहीं बन पड़ रहा था। मैं बड़ी देर तक बेवक़ूफ़ों की तरह संवाद की पुस्तक को घूरता रहा, लेकिन सन्निकट विच्छेद के विचार से मेरी आंखों में जो आंसू भर आये थे उनकी वजह से मैं पढ़ न सका; जब वह हिस्सा कार्ल इवानिच को सुनाने का वक़्त आया, जो आंखें कसकर बंद किये हुए सुन रहे थे (जो एक बुरा संकेत था), तो ठीक उस जगह पर पहुंचकर जहां एक आदमी कहता है, "Wo kommen Sie her?"* और दूसरा जवाब देता है, "Ich komme vom Kaffe-Hause,"** मैं अपने आंसुओं को न रोक सका और सिसकियों की वजह से मैं यह न कह सका, "Haben Sie die Zeitung nicht gelesen?"*** जब लिखने की बारी आयी तो मैंने काग़ज़ पर अपने आंसू टपकाकर ऐसे धब्बे डाल दिये कि ऐसा लग रहा था कि जैसे मैं लपेटने के काग़ज़ पर पानी से लिख रहा था। कार्ल इवानिच नाराज़ हो गये, उन्होंने मुझे कोने में घुटने के बल बिठा दिया, एलान कर दिया कि यह सब मेरी ज़िद थी, कठपुतली का तमाशा था (यह बात कहने का उन्हें बहुत शौक़ था), मुझे रूलर से धमकाया और मांग की कि मैं उनसे माफ़ी मांगूं, हालांकि आंसुओं की वजह से मेरे मुंह से एक शब्द नहीं निकल रहा था; आख़िरकार उन्होंने महसूस किया होगा कि वह अन्याय कर रहे थे, क्योंकि वह निकोलाई के कमरे में चले गये और हमारा दरवाजा धड़ से बंद कर दिया।

निकोलाई के कमरे की बातचीत पढ़ाई के कमरे में सुनायी देती थी।

"सुना तुमने, निकोलाई, बच्चे मास्को जा रहे हैं?" कार्ल इवानिच ने अंदर प्रवेश करते ही कहा।

---

* तुम कहां से आये हो? (जर्मन)

** मैं कॉफ़ी-हाउस से आया हूं। (जर्मन)

*** क्या तुमने अख़बार नहीं देखा है? (जर्मन)

"हां, सुना तो है," निकोलाई ने आदरसूचक स्वर में जवाब दिया।

उसने उठने की कोशिश की होगी, क्योंकि कार्ल इवानिच ने कहा, "नहीं, बैठे रहो, निकोलाई!" और फिर उन्होंने दरवाजा बंद कर दिया। मैं कोने में से निकल आया और उनकी बातें सुनने के लिए दबे पांव दरवाज़े के पास पहुंच गया।

"लोगों के साथ चाहे जितनी भलाई करो, उनके साथ तुम्हें चाहे जितना लगाव हो, लेकिन ऐसा लगता है, निकोलाई, कि उनसे यह उम्मीद करना बेकार है कि वे तुम्हारा एहसान मानेंगे," कार्ल इवानिच ने भावावेग से कहा।

निकोलाई ने, जो खिड़की के पास बैठा जूते सी रहा था, सह-मति में सिर हिला दिया।

"मैं इस घर में बारह साल रहा हूं, और मैं भगवान को साक्षी करके कह सकता हूं, निकोलाई," कार्ल इवानिच अपनी आंखें और अपनी नसवार की डिबिया छत की ओर उठाकर कहते रहे, "कि मैंने उन्हें प्यार किया है, और अगर मेरे बच्चे होते तो उनसे भी ज़्यादा मैंने इन लड़कों में दिलचस्पी ली है। तुम्हें याद होगा, निकोलाई, जब वोलोद्या को बुख़ार आया था, तो कैसे मैं हर वक़्त उसके पलंग के पास बैठा रहता था, और नौ दिन तक मैंने पलक तक नहीं झप-कायी थी। हां! तब मैं 'अच्छे, प्यारे कार्ल इवानिच' था; उस वक़्त मेरी जरूरत थी। लेकिन अब," उसने कटुता से मुस्कराकर कहा, "अब 'बच्चे बड़े हो गये हैं: उन्हें पूरी तरह जी लगाकर पढ़ना चाहिये'। जैसे वे यहां तो पढ़ते थे ही नहीं, निकोलाई!"

"पूछो, और कैसे पढ़ा जाता है," निकोलाई ने अपना सूआ नीचे रखकर दोनों हाथों से धागा खींचते हुए कहा।

"हां, अब मेरी जरूरत नहीं रही, मुझे चलता कर दिया जाना चाहिये; लेकिन उनके वादे क्या हुए? कहां गयी उनकी एहसानमंदी? नताल्या निकोलायेव्ना के लिए मेरे दिल में बड़ी मुहब्बत और बड़ी इज्जत है, निकोलाई," उन्होंने अपने सीने पर हाथ रखकर कहा। "लेकिन वह हैं क्या?.. इस घर में उनकी मर्जी की इतनी भी हैसियत नहीं है!" और यह कहकर उन्होंने बड़े अभिव्यक्तिपूर्ण ढंग से फ़र्श

पर चमड़े की एक कतरन फेंक दी। "मैं जानता हूं यह किसकी हरकत है, और मेरी ज़रूरत अब क्यों नहीं रह गयी; क्योंकि मैं कुछ लोगों की तरह चापलूसी और लल्लो-चप्पो नहीं करता, मुझे हमेशा हर आदमी से सच बोलने की आदत रही है," उन्होंने बड़े गर्व से कहा। "उनका फ़ैसला भगवान करे! मुझसे छुटकारा पाकर वे बहुत अमीर नहीं हो जायेंगे; और भगवान ने चाहा तो मैं अपनी रोज़ी तो कमा ही लूंगा... है कि नहीं, निकोलाई?"

निकोलाई ने अपना सिर उठाकर कार्ल इवानिच की ओर देखा, मानो स्वयं आश्वस्त हो जाना चाहता हो कि वह सचमुच अपनी रोज़ी कमा सकेंगे या नहीं; लेकिन उसने कहा कुछ नहीं।

कार्ल इवानिच ने इसी अंदाज में और बहुत कुछ कहा। उन्होंने कहा कि अमुक जनरल के घर में, जहां वह पहले रहते थे उनकी सेवा को कहीं ज़्यादा सराहा गया था (यह सुनकर मुझे बहुत दुःख हुआ), उन्होंने सैक्सनी की, अपने मां-बाप की, अपने दोस्त Schönheit दर्ज़ी की, और इसी तरह बहुत-सी बातों की चर्चा की।

उनके दुःख में मुझे उनसे हमदर्दी थी, और इस बात से मुझे बहुत तकलीफ़ थी कि पापा और कार्ल इवानिच, जिन्हें मैं लगभग बराबर-बराबर चाहता था, एक-दूसरे को समझते नहीं थे। मैं फिर अपने कोने में वापस चला गया, एड़ियों के सहारे सिकुड़कर बैठ गया, और सोचने लगा कि मैं क्या करूं कि वे दोनों एक-दूसरे को समझने लगें।

थोड़ी ही देर बाद कार्ल इवानिच पढ़ाई के कमरे में वापस आ गये और उन्होंने मुझे उठ खड़े होने और डिक्टेशन लिखने के लिए अपनी कॉपी तैयार करने को कहा। जब सब कुछ तैयार हो गया तो वह शान से आराम-कुर्सी पर बैठ गये और ऐसी आवाज़ में, जो कहीं बहुत गहराई से निकलती हुई लग रही थी, उन्होंने लिखाना शुरू किया: "Von al-len Lei-den schaf-ten die grau-sam ste ist... haben sie geschrieben?"* यह कहकर वह रुके, धीरे-धीरे एक चुटकी नसवार सुड़की और नये जोश के साथ बोलना शुरू किया: "Die grausamste

---

* सारे नैतिक अवगुणों में सबसे घृणास्पद है... इतना लिख लिया तुमने? (जर्मन)

ist die Un-dank-bar-keit... Ein grosses U".* अंतिम शब्द लिखकर मैंने उनकी ओर नज़र उठाकर देखा, इस उम्मीद से कि वह कुछ और लिखायेंगे।

"Punctum,"** उन्होंने ऐसी मुस्कराहट के साथ कहा जो मुश्किल से ही दिखायी देती थी, और मुझे इशारा किया कि मैं अपनी कापी उन्हें दे दूं।

उन्होंने अपने अंतरतम की भावनाओं को व्यक्त करनेवाली इस सूक्ति को स्वर के विभिन्न उतार-चढ़ावों के साथ और बेहद संतोष प्राप्त करते हुए कई बार पढ़ा; फिर वह हमें इतिहास का एक सबक़ याद करने को कहकर ख़ुद खिड़की के पास बैठ गये। उनका चेहरा अब उतना उदास नहीं था जितना पहले था; उससे एक ऐसे आदमी की ख़ुशी व्यक्त हो रही थी जिसने अपने साथ किये गये अपकार का उचित बदला ले लिया हो।

पौन बज गया था; लेकिन कार्ल इवानिच का कोई इरादा हम लोगों को छोड़ने का नहीं मालूम हो रहा था; इसके बजाय वह हमें नये सबक़ देते रहे। भूख के साथ-साथ उसी हद तक कुछ भी न करने की इच्छा भी बढ़ती जा रही थी। बेहद बेचैनी से मैंने उन सब संकेतों की ओर ध्यान दिया जिनसे पता चलता था कि खाने का समय निकट आ रहा है। पहले प्लेटें धोने के लिए अपना झाड़न लिये हुए एक औरत आयी, फिर बर्तनों के क़मरे से बर्तनों की खड़खड़, मेज़ खिसकाने और कुर्सियां रखने की आवाज़ सुनायी दी; फिर मीमी बाग़ से ल्यूबा और कात्या को (कात्या मीमी की बारह-वर्षीया बेटी थी) साथ लेकर आयी; लेकिन ख़ानसामां फ़ोका कहीं दिखायी नहीं पड़ रहा था, जो हमेशा आकर एलान करता था कि खाना तैयार है। तभी हम लोग कार्ल इवानिच की ओर कोई ध्यान दिये बिना अपनी किताबें अलग फेंककर नीचे भाग जा सकते थे।

अब सीढ़ियों पर क़दमों की आहट सुनायी दे रही थी, लेकिन वह फ़ोका नहीं था। मुझे उसके क़दमों की आहट बिल्कुल याद थी और

---

* सबसे घृणास्पद है कृ-तघ्न-ता ... यह बड़े अक्षर से। (जर्मन)

** विराम। (लैटिन)

मैं उसके जूतों की चर्र-मर्र हमेशा पहचान सकता था। दरवा
खुला और एक आकृति जिससे मैं बिल्कुल अपरिचित था, साम
आयी।

अध्याय ५

रमता जोगी

लंबे, पीले, चेचक के दागवाले चेहरे, लंबे-लंबे सफ़ेद बालों औ
कुछ-कुछ लाल रंग की छिदरी दाढ़ीवाला लगभग पचास साल का एव
आदमी कमरे में आया। वह इतना लंबा था कि दरवाज़े से गुज़रने
के लिए उसे न केवल अपना सिर बल्कि पूरा शरीर झुकाना पड़ता था।
वह एक फटा-पुराना लिबास पहने था जो देखने में लम्बे कोट जैसा
भी लगता था और चोग़े जैसा भी; अपने हाथ में वह एक बड़ी-
सी लाठी लिये हुए था। कमरे में घुसते ही उसने लाठी फ़र्श पर अपने
पूरे ज़ोर से पटकी, फिर मुंह बेहद चौड़ा खोलकर और त्योरियों पर
बल डालकर वह विकराल और अस्वाभाविक ढंग से हंसा। वह एक
आंख से अंधा था और उस आंख की सफ़ेद पुतली लगातार इधर-
उधर फुदकती रहती थी जिसकी वजह से उसके कुरूप चेहरे पर और
भी घृणास्पद भाव आ जाता था।

"अहा! आख़िर मिल गये!" वह चिल्लाया और छोटे-छोटे
क़दम उठाकर दौड़ते हुए वोलोद्या के पास पहुंचा। उसने उसका सिर
पकड़ लिया और बड़े ध्यान से उसकी चांद की जांच करने लगा।
फिर बिल्कुल गंभीर मुद्रा बनाये हुए वह उसके पास से हट आया,
मेज़ के पास तक गया और मोमजामे के नीचे फूंक मारने लगा और
उसके ऊपर सलीब का निशान बनाने लगा। "ओ-ओह, कितनी दुःख
की बात है! ओ-ओह, कैसी अफ़सोस की बात है! उड़ जायेंगे!"
उसने भाव-विह्वल होकर वोलोद्या को घूरते हुए आंसुओं से कांपती
आवाज़ में कहा, और आंसुओं को, जो सचमुच टपक रहे थे, वह
अपनी आस्तीन से पोंछने लगा।

उसका स्वर कर्कश और खुरदुरा था, उसकी हर गति में जल्द-

बाज़ी और झटका था, उसकी बातें अर्थहीन और बेसिर-पैर की थी, (वह सर्वनामों का प्रयोग कभी नही करता था,) लेकिन उसकी आवाज़ के उतार-चढ़ाव इतने मर्मस्पर्शी थे और उसके पीले चेहरे पर कभी-कभी सचमुच ऐसी व्यथा का भाव आ जाता था कि उसकी बातें सुनकर दया, भय और करुणा की मिली-जुली भावना को दबा सकना असम्भव हो जाता था।

यह था रमता जोगी ग्रीशा।

वह कहा से आया था? उसके मां-बाप कौन थे? किस चीज़ ने उसे तीर्थयात्री का जीवन अपनाने पर मजबूर कर दिया था। यह सब किसी को नही मालूम था। मुझे बस इतना मालूम था कि पंद्रह साल की उम्र मे उसे बौड़म समझा जाता था, कि वह सर्दी-गर्मी नंगे पाव घूमता रहता था, मठों के चक्कर लगाता था, जो कोई उसे पसंद आ जाता था उसे छोटी-छोटी देव-प्रतिमाएं देता था और ऐसे रहस्यमय शब्द बोलता रहता था जिन्हें कुछ लोग भविष्यवाणी समझते थे, कि किसी ने भी उसे कभी किसी दूसरे रूप में नहीं जाना था; कि वह कभी-कभी नानी के यहां जाता रहता था, और यह कि कुछ लोगों का कहना था कि वह धनी मां-बाप का अभागा बेटा था और शुद्ध हृदयवाला पुण्यात्मा था; जबकि दूसरों का कहना था कि वह बस एक निठल्ला किसान था।

आखिरकार वक्त का पाबंद फ़ोका आया जिसका बहुत देर से इतजार था और हम लोग नीचे चले गये। ग्रीशा, जो अभी तक मिसकिया ले रहा था और अपनी बकवास कर रहा था, हम लोगों के पीछे-पीछे आ रहा था और सीढ़ियों के हर जीने को अपनी लाठी से ठोंकता हुआ चल रहा था। पापा और मां धीमे स्वर में बातें करते हुए हाथ में हाथ डाले ड्राइंग-रूम में टहल रहे थे। मार्या इवानोव्ना सोफे से समकोण बनाती हुई बराबर दूरी पर रखी आराम-कुर्सियों मे से एक पर मूर्ति की तरह बैठी थीं और पास बैठी हुई लड़कियों को कठोर पर धीमे स्वर में उपदेश दे रही थीं। कार्ल इवानिच के कमरे मे प्रवेश करने पर उन्होंने नजर उठाकर उनकी ओर देखा, लेकिन फ़ौरन ही मुंह फेर लिया और उनके चेहरे पर एक ऐसा भाव आया जिसका अर्थ यह लगाया जा सकता था: आप की तरफ़ मैं

ध्यान भी नहीं देती, कार्ल इवानिच। लड़कियों की आंखों से साफ़ मालूम हो रहा था कि वे हमें कोई बेहद महत्वपूर्ण ख़बर जल्दी से जल्दी सुनाने को बेचैन थीं; लेकिन उछलकर हम लोगों के पास आ जाना मीमी के नियमों का उल्लंघन होता। ज़रूरी था कि पहले हम उनके पास जाकर कहें, "Bonjour,* मीमी!" और झुकें; तब जाकर बातचीत शुरू करने की इजाज़त थी।

मीमी भी कैसी असह्य जीव थी! उनके सामने किसी चीज़ के बारे में बात करना नामुमकिन था: वह हर चीज़ को बेजा समझती थीं। इसके अलावा वह हरदम हम लोगों के पीछे पड़ी रहतीं, "Parlez donc français,"** और सो भी मानो द्वेष के कारण, ठीक उस वक़्त जब हम रूसी में बोलना चाहते थे; या खाते वक़्त – जहां आपको कोई चीज़ पसंद आयी, और आपका जी चाहा कि आपको उस चीज़ को निर्विघ्न खाने दिया जाये, बस वहीं लाज़िमी तौर पर, "Mangez donc avec du pain." या "Comment ce que vous tenez votre fourchette?"*** – "उनसे मतलब?" आप सोचने लगते थे। "वह अपनी लड़कियों को पढ़ायें जाकर – हमारी देखभाल करने को कार्ल इवानिच हैं।" कार्ल इवानिच की घृणा में मैं पूरी तरह उनके साथ था।

जब बड़े लोग खाने के कमरे में चले गये तो कात्या ने मेरी जैकेट पकड़कर कान में कहा, "मां से कहो हमें भी शिकार पर ले चलें।"

"अच्छा, कोशिश करेंगे।"

ग्रीशा ने भी डाइनिंग-रूम में खाना खाया, लेकिन अलग एक छोटी मेज़ पर; उसने अपनी प्लेट पर से नज़रें नहीं उठायी, डरावनी सूरतें बनाता रहा, बीच-बीच में आहें भरता रहा, और मानो अपने आप बुड़बुड़ाता रहा, "बड़े दुःख की बात है... उड़ गयी... फ़ाख़्ता उड़कर आसमान पर चली जायेगी ... अरे, क़ब्र पर पत्थर लगा है!" इत्यादि-इत्यादि।

---

* दिन के समय अभिवादन करने का फ़्रांसीसी शब्द। – अनु०

** मेहरबानी करके फ़्रांसीसी बोलो। (फ़्रांसीसी)

*** रोटी से खाओ", "तुमने कांटा कैसे पकड़ रखा है?" (फ़्रांसीसी)

मां सुबह से बहुत परेशान थीं; ग्रीशा की उपस्थिति, उसकी बातों और उसकी हरकतों से उनकी यह परेशानी स्पष्टतः और बढ़ गयी थी।

"अरे, हां, मैं आपसे एक बात के लिए कहना तो भूल ही गयी," उन्होंने सूप की प्लेट पापा की ओर बढ़ाते हुए कहा।

"क्या बात?"

"अपने भयानक कुत्तों को बंद करवा दीजिये; उन्होंने बेचारे ग्रीशा को काट ही लिया होता, जब वह आंगन पार करके आ रहा था। और वे बच्चों पर भी झपट सकते हैं।"

अपनी चर्चा सुनकर ग्रीशा मेज़ की तरफ़ मुड़ा, अपने लिबास की फटी हुई धज्जियां दिखाने लगा और खाना चबाते-चबाते बोलने लगा:

"चाहा कि काट-काटकर मार डालें ... भगवान ने ऐसा करने नहीं दिया। ... किसी पर कुत्ते छोड़ देना पाप है! बड़ा पाप है! मारो नहीं, मारने से क्या? भगवान क्षमा कर देगा। ... वे दिन नहीं रहे।"

"क्या कह रहा है वह?" पापा ने कठोर दृष्टि से और बड़े ग़ौर से उसे घूरते हुए पूछा। "मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आता।"

"अच्छा, मेरी समझ में तो आता है," मां ने जवाब दिया, "उसने पहले मुझे बताया था कि किसी शिकारी ने जान-बूझकर उस पर कुत्ते छोड़ दिये थे, जैसा कि उसका कहना है, 'चाहा कि काट-काटकर मार डालें, पर भगवान ने ऐसा करने नहीं दिया' और वह आपसे विनती कर रहा है कि आप उस आदमी को इसके लिए सज़ा न दें।"

"ओह! यह बात है!" पापा ने कहा। "उसे कैसे मालूम कि मैं शिकारी को सजा देना चाहता हूं? तुम जानती हो कि मुझे इस तरह के लोग बहुत ज्यादा पसंद नहीं हैं," उन्होंने फ़्रांसीसी में जोड़ दिया, "और यह तो ख़ास तौर पर मुझे पसंद नहीं है, और चाहिये यह कि ..."

"अरे, ऐसा न कहिये," मां ने मानो भयभीत होकर उनकी बात बीच में ही काट दी। "आपको क्या मालूम?"

"मैं समझता हूं कि मुझे इस तरह के लोगों के तौर-तरीक़े अच्छी

तरह जान लेने का काफ़ी मौक़ा मिला है: इस तरह के काफ़ी लोग तुम्हारे पास आते हैं। वे सब एक जैसे होते हैं। हर एक का वही क़िस्सा होता है।..."

साफ़ ज़ाहिर था कि इस बात के बारे में मां की राय बिल्कुल ही अलग थी, लेकिन वह खंडन करने को तैयार नहीं थी।

"मुझे एक पैटिस दे दीजिये," वह बोली। "क्या अच्छी बनी हैं आज?"

"मुझे बड़ी झुंझलाहट होती है," पापा अपने हाथ में एक पैटिस लेकर कहते रहे, लेकिन वह उसे मां के हाथ की पहुंच से दूर ही रखे रहे, "मुझे झुंझलाहट होती है यह देखकर कि अच्छे भले पढ़े-लिखे और समझदार लोग उनके जाल में फंस जाते हैं।"

और यह कहकर उन्होंने अपना कांटा मेज पर मारा।

"मैंने आपसे एक पैटिस देने को कहा था," मां ने अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए दोहराया।

"और वे अच्छा ही करते हैं," पापा ने हाथ और दूर हटाते हुए अपनी बात जारी रखी, "कि ऐसे लोगों को गिरफ़्तार कर लेते हैं। ये लोग बस इतना ही कर सकते हैं कि कुछ औरतों के नाज़ुक मिज़ाज को और भी परेशान कर देते हैं," इतना और जोड़कर वह मुस्कराये क्योंकि उन्होंने देखा कि मां को यह बातचीत बहुत बुरी लग रही थी, और पैटिस उन्हें दे दी।

"मुझे इस मामले में एक ही बात कहनी है: यह यक़ीन करना मुश्किल है कि वह आदमी, जो साठ साल का होने के बावजूद सर्दी-गर्मी नंगे पांव घूमता है और अपने कपड़ों के नीचे दो पूड वजन की ज़ंजीरें पहनता है जिन्हें वह कभी उतारता नहीं, और जो कितनी ही बार आराम की ज़िंदगी बिताने का सुझाव ठुकरा चुका है – यह यक़ीन करना मुश्किल है कि ऐसा आदमी यह सब कुछ सिर्फ़ काहिली की वजह से करता होगा। जहां तक भविष्यवाणी करने का सवाल है," उन्होंने कुछ देर रुकने के बाद लंबी सांस लेकर फिर कहा, "je suis payée pour y croire*; शायद मैं आपको बता चुकी हूं

---

* मैं उन पर अकारण ही विश्वास नहीं रखती। (फ़्रांसीसी)

मां सुबह से बहुत परेशान थीं; ग्रीशा की उपस्थिति, उसकी बातों और उसकी हरकतों से उनकी यह परेशानी स्पष्टतः और बढ़ गयी थी।

"अरे, हां, मैं आपसे एक बात के लिए कहना तो भूल ही गयी," उन्होंने सूप की प्लेट पापा की ओर बढ़ाते हुए कहा।

"क्या बात?"

"अपने भयानक कुत्तों को बंद करवा दीजिये; उन्होंने बेचारे ग्रीशा को काट ही लिया होता, जब वह आंगन पार करके आ रहा था। और वे बच्चों पर भी झपट सकते हैं।"

अपनी चर्चा सुनकर ग्रीशा मेज़ की तरफ़ मुड़ा, अपने लिबास की फटी हुई धज्जियां दिखाने लगा और खाना चबाते-चबाते बोलने लगा:

"चाहा कि काट-काटकर मार डालें ... भगवान ने ऐसा करने नहीं दिया। ... किसी पर कुत्ते छोड़ देना पाप है! बड़ा पाप है! मारो नहीं, मारने से क्या? भगवान क्षमा कर देगा। ... वे दिन नहीं रहे।"

"क्या कह रहा है वह?" पापा ने कठोर दृष्टि से और बड़े ग़ौर से उसे घूरते हुए पूछा। "मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आता।"

"अच्छा, मेरी समझ में तो आता है," मां ने जवाब दिया, "उसने पहले मुझे बताया था कि किसी शिकारी ने जान-बूझकर उस पर कुत्ते छोड़ दिये थे, जैसा कि उसका कहना है, 'चाहा कि काट-काटकर मार डालें, पर भगवान ने ऐसा करने नहीं दिया' और वह आपसे विनती कर रहा है कि आप उस आदमी को इसके लिए सज़ा न दें।"

"ओह! यह बात है!" पापा ने कहा। "उसे कैसे मालूम कि मैं शिकारी को सज़ा देना चाहता हूं? तुम जानती हो कि मुझे इस तरह के लोग बहुत ज़्यादा पसंद नहीं हैं," उन्होंने फ़्रांसीसी में जोड़ दिया, "और यह तो ख़ास तौर पर मुझे पसंद नहीं है, और चाहिये यह कि ..."

"अरे, ऐसा न कहिये," मां ने मानो भयभीत होकर उनकी बात बीच में ही काट दी। "आपको क्या मालूम?"

"मैं समझता हूं कि मुझे इस तरह के लोगों के तौर-तरीक़े अच्छी

तरह जान लेने का काफ़ी मौक़ा मिला है: इस तरह के काफ़ी लोग तुम्हारे पास आते हैं। वे सब एक जैसे होते हैं। हर एक का वही क़िस्सा होता है।..."

साफ़ ज़ाहिर था कि इस बात के बारे में मां की राय बिल्कुल ही अलग थी, लेकिन वह खंडन करने को तैयार नहीं थी।

"मुझे एक पैटिस दे दीजिये," वह बोलीं। "क्या अच्छी बनी हैं आज?"

"मुझे बड़ी झुंझलाहट होती है," पापा अपने हाथ में एक पैटिस लेकर कहते रहे, लेकिन वह उसे मां के हाथ की पहुंच से दूर ही रखे रहे, "मुझे झुंझलाहट होती है यह देखकर कि अच्छे भले पढ़े-लिखे और समझदार लोग उनके जाल में फंस जाते हैं।"

और यह कहकर उन्होंने अपना कांटा मेज़ पर मारा।

"मैंने आपसे एक पैटिस देने को कहा था," मां ने अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए दोहराया।

"और वे अच्छा ही करते हैं," पापा ने हाथ और दूर हटाते हुए अपनी बात जारी रखी, "कि ऐसे लोगों को गिरफ़्तार कर लेते हैं। ये लोग बस इतना ही कर सकते हैं कि कुछ औरतों के नाजुक मिज़ाज को और भी परेशान कर देते हैं," इतना और जोड़कर वह मुस्कराये क्योंकि उन्होंने देखा कि मां को यह बातचीत बहुत बुरी लग रही थी, और पैटिस उन्हें दे दी।

"मुझे इस मामले में एक ही बात कहनी है: यह यक़ीन करना मुश्किल है कि वह आदमी, जो साठ साल का होने के बावजूद सर्दी-गर्मी नंगे पांव घूमता है और अपने कपड़ों के नीचे दो पूड वज़न की ज़ंजीरें पहनता है जिन्हें वह कभी उतारता नहीं, और जो कितनी ही बार आराम की ज़िंदगी बिताने का सुझाव ठुकरा चुका है – यह यक़ीन करना मुश्किल है कि ऐसा आदमी यह सब कुछ सिर्फ़ काहिली की वजह से करता होगा। जहां तक भविष्यवाणी करने का सवाल है," उन्होंने कुछ देर रुकने के बाद लंबी सांस लेकर फिर कहा, "je suis payée pour y croire*; शायद मैं आपको बता चुकी हूं

---

* मैं उन पर अकारण ही विश्वास नहीं रखती। (फ़्रांसीसी)

कि किर्यूशा ने किस तरह पापा के मरने का ठीक दिन और वक़्त तक वता दिया था।"

"ओह डियर, यह क्या जुल्म कर दिया तुमने मेरे साथ!" पापा ने मुस्कराते हुए और उस तरफ़ जिधर मीमी बैठी थीं अपने मुंह पर हाथ रखते हुए कहा। (जब भी वह ऐसा करते थे तो मैं किसी बहुत मज़ेदार बात की उम्मीद में कान लगाकर बड़े ध्यान से सुनता था।) "तुमने मुझे उसके पैरों की याद क्यों दिला दी? मैंने उनकी ओर देख लिया और अब मैं कुछ खा नहीं सकूंगा।"

खाना लगभग ख़त्म हो रहा था। ल्यूवा और कात्या लगातार हम लोगों की ओर देखकर आंखें मार रही थीं, अपनी कुर्सियों पर कसमसा रही थीं और बेहद बेचैनी का सबूत दे रही थीं। आंख मारने का मतलब यह था, "तुम लोग उनसे हम लोगों को शिकार पर ले चलने को कहते क्यों नहीं?" मैंने वोलोद्या को कुहनी से टहोका दिया, वोलोद्या ने मुझे टहोका दिया, और आख़िरकार साहस बटोरने में सफल हो गया: शुरू में डरी हुई आवाज़ में लेकिन बाद में काफ़ी दृढ़ता से और ज़ोर से उसने समझाया कि हम लोग चूंकि उस दिन जानेवाले थे इसलिए हम चाहते थे कि लड़कियों को भी हमारे साथ बग्घी में शिकार पर ले चला जाये। बड़े लोगों के बीच थोड़े-से सलाह-मशविरे के बाद यह सवाल हम लोगों के पक्ष में तै कर दिया गया, और इसमे भी ज़्यादा ख़ुशी की बात यह थी कि अम्मा ने कहा कि वह भी चलेंगी।

अध्याय ६

शिकार की तैयारियां

मुख्य भोजन के बाद कुछ मीठा खाने के दौरान याकोव को बुलवाया गया और गाड़ी, कुत्तों और सवारी के घोड़ों के बारे मे आदेश दिये गये – हर बात अच्छी तरह पूरे ब्योरे के साथ समझा दी गयी, और हर घोड़ा नाम ले-लेकर बता दिया गया। वोलोद्या का घोड़ा लंगड़ा था: पापा ने उसके लिए एक शिकारी घोड़ा कसने

का आदेश दिया। ये शब्द "शिकारी घोड़ा" मां के कानों को हमेशा बहुत विचित्र लगते थे; उन्हें ऐसा लगता था कि वह जंगली जानवर जैसा होगा, और वह यक़ीनन वोलोद्या को लेकर भाग जायेगा और उसे मार डालेगा। पापा और वोलोद्या के तमाम आश्वासनों के बावजूद – वोलोद्या डटकर कहता था कि उसमें कोई हर्ज नहीं था, उसे घोड़े का भड़ककर भागना बहुत अच्छा लगता था – बेचारी मां यही कहती रहतीं कि पूरे सफ़र के दौरान उनकी जान निकली रहेगी।

खाना ख़त्म हो गया; बड़े लोग कॉफ़ी पीने लाइब्रेरी में चले गये, और हम लोग खड़खड़ाती हुई पीली पत्तियों से ढके रास्तों पर अपने पांव घसीटते और इन बातों पर चर्चा करते बाग़ में भाग गये कि वोलोद्या शिकारी घोड़े पर सवार होगा, कितनी बुरी बात है कि ल्यूबा उतना तेज़ नहीं भाग सकती थी जितना कात्या भागती थी, ग्रीशा की ज़ंजीरें देखने में कितना मज़ा आयेगा, इत्यादि। हम लोगों के बिछुड़ने के बारे में एक शब्द भी नहीं कहा गया। हमारी बातों में बग्घी के आने से विघ्न पड़ गया, जिसकी कमानियों पर एक-एक नौकर-लड़का बैठा था। बग्घी के पीछे कुत्तों को लिये हुए हंकवा करनेवाले आये, और उनके बाद वोलोद्यावाले घोड़े पर बैठा हुआ और मेरे बूढ़े मरियल घोड़े की रास पकड़े हुए आया कोचवान इग्नात। पहले इन सब दिलचस्प चीज़ों को देखने के लिए हम भागकर जंगले के पास आये और फिर चिल्लाते हुए और अपने पांव पटकते हुए कपड़े बदलने ऊपर भाग गये; हमारी कोशिश थी कि जहां तक हो सके शिकारियों जैसे लगनेवाले कपड़े ही पहनें। इसकी एक ख़ास तरकीब यह थी कि पतलूनों के पायंचों को अपने बूट जूतों में खोंस लें। क्षण-भर भी समय नष्ट किये बिना हम काम में जुट गये और उसे जल्दी से जल्दी ख़त्म करने की कोशिश की ताकि घोड़ों और कुत्तों को देखकर अपनी आंखें सेंकने के लिए और हंकवा करनेवालों से बात करने बाहर भागकर बरसाती में पहुंच जायें।

उस दिन बड़ी गर्मी थी और सवेरे से क्षितिज पर अजीब-अजीब शक्लों के सफ़ेद बादल मंडलाते रहे थे; बाद में हल्की-सी हवा चलने की वजह से वे नज़दीक आते गये यहां तक कि जगह-जगह वे सूरज को भी ढक लेने लगे। पर इस बात के बावजूद कि ये बादल न केवल

बहुत काले थे और बार-बार आ रहे थे, इतना साफ़ था कि वे घिरकर तूफ़ान का रूप नहीं धारण कर पायेंगे और हमारे आख़िरी दिन के आनंद में विघ्न नहीं डालने पायेंगे। शाम होते-होते ये बादल फिर बिखरने लगे: कुछ का रंग फीका पड़ गया, वे लंबे हो गये और क्षितिज की ओर भाग गये; कुछ दूसरे बादल, जो बिल्कुल हमारे सिर पर थे, मछली के सफ़ेद पारदर्शी सुफ़नों जैसे हो गये; सिर्फ़ एक बड़ा-सा काला बादल पूरब में बड़ी देर तक मंडलाता रहा। कार्ल इवानिच को हमेशा मालूम रहता था कि किस क़िस्म का बादल कहां जाता था; उन्होंने एलान कर दिया कि यह बादल मास्लोव्का जायेगा, बारिश नहीं होगी, और मौसम अच्छा रहेगा।

बूढ़ा होने के बावजूद फ़ोका बड़ी फुर्ती से नीचे उतरा, ऊंची आवाज़ में बोला, "बग्घी ले आओ," और जिस जगह बग्घी लाकर लगायी जानी थी और चौखट के बीचोंबीच अपने दोनों पांव एक-दूसरे से दूर मज़बूती से जमाकर उस आदमी के अंदाज़ से खड़ा हो गया जिसे उसके काम की याद दिलाने की ज़रूरत नहीं पड़ती। उसके बाद महिलाएं आयीं, और थोड़ी देर इस बात पर बहस करने के बाद कि कौन किधर बैठेगा और कौन किसे पकड़कर बैठेगा (हालांकि मुझे इसकी कोई ज़रूरत ही नहीं मालूम पड़ती थी कि कोई किसी को पकड़कर बैठे), वे बैठ गयीं, उन्होंने अपनी नाज़ुक छतरियां खोल लीं और गाड़ी चल दी। जब बग्घी चली तो मां ने शिकारी घोड़े की तरफ़ इशारा करके कोचवान से कांपती हुई आवाज़ में पूछा:

"व्लादीमिर पेत्रोविच के लिए क्या यही घोड़ा है?"

और जब कोचवान ने हामी भरी, तो उन्होंने सिर्फ़ अपना हाथ हिलाया और मुंह फेर लिया। मैं बहुत अधीर था: मैं अपने घोड़े पर सवार हो गया, उसके दोनों कानों के बीच से सीधे सामने देखने लगा और आंगन में तरह-तरह से चक्कर लगाता रहा।

"ज़रा ध्यान रखना, कहीं कुत्तों को न कुचल देना," एक हंकवा करनेवाले ने कहा।

"फ़िक्र न करो – मैं घोड़े पर पहले भी बैठ चुका हूं," मैंने गर्व से जवाब दिया।

वोलोद्या शिकारी घोड़े पर सवार हो गया; अपने दृढ़ स्वभाव के बावजूद वह थोड़ा-सा कांप गया, और घोड़े को कई बार थपथपाकर उसने पूछा:

"यह सीधा तो है न?"

घोड़े पर बैठा हुआ वह बहुत सुंदर लगता था—बिल्कुल बड़े आदमी जैसा। उसकी जांघें घोड़े की काठी पर इतनी अच्छी तरह जमकर बैठती थीं कि मुझे उससे ईर्ष्या होती थी—खास तौर पर इसलिए कि जहां तक मैं अपनी परछाईं से अंदाजा लगा सकता था, मैं देखने में उतना अच्छा नहीं लगता था।

फिर हमें सीढ़ियों पर पापा के क़दमों की आहट सुनायी दी; शिकारी कुत्तों का एक रखवाला अपने बीगलों को भगाकर लाया; हंकवा करनेवालों ने अपने ग्रेहाउंड कुत्तों को आवाज़ दी और अपने-अपने घोड़ों पर सवार होने लगे। साईस पापा के घोड़े को सीढ़ियों के पास लाया; पापा के कुत्ते, जो भांति-भांति की रोचक मुद्राओं में इधर-उधर लेटे हुए थे, उछलकर खड़े हो गये और दौड़कर पापा के पास जा पहुंचे। उनके पीछे मील्का निकल आयी अपना कांच के मनकों का पट्टा पहने हुए, जो बड़ी मस्त धुन में झनझना रहा था। जब वह बाहर निकलती थी तो हमेशा दूसरे कुत्तों से दुआ-सलाम करती थी: कुछ कुत्तों के साथ खेलती थी, कुछ को सूंघती थी और उन पर गुर्राती थी, कुछ दूसरे कुत्तों की वह किलनियां नोचने की कोशिश करती थी।

पापा अपने घोड़े पर सवार हुए और हम लोग चल पड़े।

अध्याय ७

शिकार

शिकारी कुत्तों का मुख्य रखवाला, जिसका नाम तुर्का था, सबसे आगे अपने गहरे सुरमई रंग के मुड़ी हुई नाकवाले घोड़े पर सवार चला जा रहा था; वह बालदार टोपी पहने था, अपने कंधे पर बड़ा-सा भोंपू लटकाये था, और पेटी में चाक़ू बांधे था। उस आदमी के

भयानक और उदासी-भरे रंग-रूप को देखकर यह लग सकता था कि वह शिकार पर नहीं बल्कि किसी ख़ून-ख़राबेवाली लड़ाई पर जा रहा है। उसके घोड़े के ठीक पीछे एक दूसरे से बंधे बीगल कुत्ते भागे आ रहे थे और उनके रंगा-रंग गोल बन गये थे। उस अभागे कुत्ते को देखकर बड़ी दया आती थी जिसके मन में दूसरों से पिछड़ जाने की बात समा जाती थी। उसे अपनी डोरी से बंधे हुए दूसरे कुत्ते को भी अपने साथ घसीट लाना पड़ता था, और जैसे ही वह ऐसा करने में सफल होता था वैसे ही पीछे घोड़े पर आते हुए कुत्ते के रखवालों में से एक उस पर अपना चाबुक फटकारता था और कहता था, "वापस जाओ अपने झुंड में!" जब हम फाटक से बाहर निकले तो पापा हम लोगों को और नौकरों को सड़क पर चलने का आदेश देकर ख़ुद अपना घोड़ा रई के खेत में मोड़ ले गये।

फ़सल की कटाई पूरे ज़ोर से चल रही थी। नज़र की हद से भी आगे तक फैला हुआ चमकदार पीला-पीला खेत एक तरफ़ बस बहुत ऊंचे नीले-नीले जंगल पर आकर ख़त्म हो गया था, जो उस वक़्त कोई बहुत दूर का और रहस्यमय स्थान लगता था, जिसके पीछे जाकर दुनिया ख़त्म हो जाती थी, या कोई ग़ैर-आबाद इलाक़ा शुरू हो जाता था। पूरे खेत में हर जगह अनाज के पूले और लोग दिखायी दे रहे थे। जहां-तहां किसी लीक में, जहां फ़सल कट चुकी थी, रई की डोलती हुई बालियों के बीच किसी फ़सल काटनेवाली की झुकी हुई कमर दिखायी दे जाती थी जो उसी समय उन बालियों को अपनी उंगलियों में पकड़ लेती थी, या कोई दूसरी औरत छाया में रखे हुए अपने बच्चे के पालने पर झुकी होती थी, या खेत की खूंटियों के ऊपर, जिनके बीच-बीच में फूल उगे हुए थे, अनाज के पूले बिखेरती होती थी। और आगे सिर्फ़ क़मीज़ें पहने हुए किसान गाड़ियों पर खड़े अनाज के पूले लाद रहे थे और सूखे, तपते हुए खेतों पर धूल के बादल उड़ा रहे थे। ऊंचे बूट पहने और बनात का ढीला कोट कंधों पर डाले गांव के मुखिया ने, जो गिनती करनेवाली लकड़ियां अपने हाथ में लिये था, पापा को दूर से देखते ही अपनी मेमने के ऊन की टोपी उतार ली, अंगोछे से अपना लाल सिर और दाढ़ी पोंछी, और औरतों पर चिल्लाने लगा। जिस हल्के कत्थई रंग के घोड़े पर पापा

सवारी कर रहे थे, वह बहुत हल्की-फुल्की मस्ती-भरी रफ़्तार से दुलकी चाल चल रहा था, बीच-बीच में वह अपना सिर नीचे झुकाकर रास को खींच लेता था, और अपनी घनी पूंछ से भुनगों और मक्खियों को उड़ाता जाता था जो नदीदों की तरह उससे चिपकी हुई थीं। दो ग्रेहाउंड कुत्ते, जिनकी तनी हुई दुमें दरांतियों की तरह मुड़ी हुई थीं घोड़े के पीछे-पीछे बड़ी सफ़ाई से खेत की ऊंची-ऊंची खूंटियों को फलांगते हुए चल रहे थे; मील्का आगे-आगे दौड़ रही थी, और उसने किसी तर माल की उम्मीद में अपना सिर पीछे मोड़ रखा था। आवाज़ों की गुनगुनाहट, घोड़ों की टापों की धप-धप और गाड़ियों का शोर, बटेरों की मस्त सीटी जैसी आवाज़, हवा में निश्चल झुंडों में लटके हुए कीड़ों की भनभनाहट, नागदमनी, भूसे और घोड़ों के पसीने की गंध, खेत की हल्के पीले रंग की खूंटियों पर, दूर जंगल के नीलेपन पर और हल्के कासनी बादलों पर तपते हुए सूरज से पड़ने-वाले तरह-तरह के रंग और छायाएं, हवा में तैरते हुए या खेत की खूंटियों पर तने हुए मकड़ी के जाले के सफ़ेद तार – यह सब कुछ मैं देख रहा था, सुन रहा था और महसूस कर रहा था।

जब हम कलीनोवो के जंगल के पास पहुंचे तो हमने देखा कि बग्घी वहां पहले ही पहुंच चुकी थी, और हमारी तमाम उम्मीदों से परे एक और गाड़ी भी जिस पर खानसामां बैठा हुआ था। भूसे के नीचे से एक समोवार झांक रहा था, एक टब में आइसक्रीम, और तरह-तरह की दूसरी आकर्षक टोकरियां और झाबे। इन संकेतों का मतलब लगाने में कोई ग़लती नहीं हो सकती थी: हम लोग खुले मैदान में चाय पीने और आइसक्रीम और फल खाने जा रहे थे। गाड़ी देखते ही हम खुशी से चिल्ला उठे, क्योंकि जंगल में घास पर बैठकर यानी एक ऐसी जगह जहां पहले किसी ने चाय न पी हो, चाय पीना बड़ी आलीशान बात समझी जाती थी।

तुर्का इस छोटी-सी बनी तक आया, वहां आकर रुक गया, उसने छोटी से छोटी हर बात के बारे में पापा की हिदायतें बड़े ध्यान से सुनीं कि किस जगह सबको हंकवा करना है और कहां से झपट पड़ना है (हालांकि उसने कभी इन हिदायतों पर अमल नहीं किया, और जैसा उसका जी चाहा वैसा ही किया), कुत्तों को खोल दिया, बड़े

आराम से धीरे-धीरे उनके तस्मों को अपने काठी से बांधा, अपने घोड़े पर सवार हुआ और अल्पवयस्क बर्च-वृक्षों के पीछे ग़ायब हो गया। शिकारी कुत्तों ने सबसे पहले छोड़ दिये जाने पर अपनी ख़ुशी अपनी दुमें हिलाकर अभिव्यक्त की, फिर अपने शरीर को झंझोड़ा और सिर्फ़ इसके बाद ही ज़मीन को सूंघते और दुम हिलाते हुए अलग-अलग दिशाओं में भाग पड़े।

"तुम्हारे पास रूमाल है?" पापा ने पूछा।

मैंने जेब से एक रूमाल निकालकर उन्हें दिखाया।

"अच्छा, इसे इस भूरे कुत्ते के बांध दो।"

"जिरान के?" मैंने बड़े जानकार आदमी की तरह पूछा।

"हां, और सड़क-सड़क भागकर जाओ। छोटी-सी चरागाह के पास पहुंचकर रुक जाना और अपने चारों ओर नज़र डालकर देखना: ख़रगोश लिये बिना मेरे पास वापस न आना।"

मैंने अपना रूमाल जिरान की झबरी गर्दन में बांध दिया, और निर्दिष्ट स्थान की ओर सरपट भागा। पापा हंस पड़े और उन्होंने पीछे से पुकारकर मुझसे कहा:

"जल्दी करो, जल्दी करो, नहीं तो मौक़ा चूक जाओगे।"

जिरान बीच-बीच में ठिठककर खड़ा हो जाता था और अपने कान खड़े करके शिकार की आहट लेने लगता था। मैं पूरी ताक़त लगाकर उसे खींच रहा था, लेकिन मैं उसे टस से मस न कर सका जब तक मैंने उसे ललकारते हुए चिल्लाकर यह नहीं कहा, "लुहे! ले-लुहे!" यह सुनते ही वह इतने जोर से झपटा कि मेरे लिए उसे संभालना मुश्किल हो गया और अपनी मंज़िल तक पहुंचने से पहले मैं कई बार गिरा। एक ऊंचे-से बलूत के पेड़ की जड़ के पास छायादार और समतल जगह चुनकर मैं घास पर लेट गया, जिरान को अपने बग़ल में लिटा लिया, और राह देखने लगा। जैसा कि ऐसे मौक़ों पर हमेशा होता है मेरी कल्पना वास्तविकता से कहीं आगे निकल गयी थी: उस वक़्त जबकि पहले कुत्ते के मुंह से अभी आवाज़ निकलना शुरू ही हुई थी, अपनी कल्पना की उड़ान में मैं तीसरे ख़रगोश का पीछा कर रहा था। जंगल में तुर्का की हांक ज़्यादा ज़ोर से और ज़्यादा साफ़ गूंज रही थी; एक बीगल कुत्ते ने कूं-कूं करना शुरू किया और यही आवाज बार-बार सुनायी

देने लगी। उससे भी गहरी एक आवाज़ आकर उसमें मिल गयी— फिर तीसरी और फिर चौथी आवाज।... ये आवाज़ें बार-बार डूब जाती थीं और फिर उभरकर एक-दूसरे पर छा जाती थीं। धीरे-धीरे ये आवाज़ें लगातार तेज़ होती गयीं यहां तक कि आखिरकार उन सबने मिलकर भूंकने की एक अनवरत आवाज़ का रूप धारण कर लिया।

अपनी जगह लेटे-लेटे ही मेरा शरीर अकड़ने लगा। जंगल के छोर पर अपनी नज़रें गड़ाकर मैं बेवक़ूफ़ों की तरह मुस्कराने लगा; मेरे पसीना बह रहा था, और ठोड़ी पर से बहकर नीचे जाती हुई पसीने की बूंदें हालांकि मुझे गुदगुदा रही थीं लेकिन मैंने उन्हें पोंछा नही। मुझे ऐसा लग रहा था जैसे इस क्षण से अधिक निर्णायक और कुछ भी नहीं हो सकता। प्रत्याशा की इस मनोदशा में इतना तनाव था कि वह बहुत देर नहीं बनी रह सकती थी। शिकारी कुत्तों के भूंकने की आवाज़ कभी जंगल के छोर के पास ही सुनायी दे जाती, कभी मुझसे पीछे हट जाती; खरगोश का कहीं नाम नहीं था। मैंने चारों ओर नज़र डाली। जिरान का भी यही हाल था: पहले तो वह झटका देता था और कूं-कूं करता था, लेकिन फिर मेरे घुटने पर अपनी नाक रखकर मेरे बग़ल में लेट गया और चुप हो गया।

बलूत के जिस पेड़ के नीचे मैं बैठा था उसकी खुली हुई जड़ों के आस-पास तपी हुई मटमैली सूखी धरती पर बलूत की सूखी पत्तियों, बांजफलों, काई जमी हुई सूखी टहनियों, फीके हरे रंग की काई और घास की पतली-पतली हरी पत्तियों के बीच असंख्य चींटियों के झुंड थे। वे अपने लिए बनायी हुई लीक पर एक-दूसरे के पीछे जल्दी-जल्दी जा रही थीं, कुछ भारी बोझ से लदी हुई और कुछ ऐसी जिन पर कोई भी बोझ नहीं था। मैंने एक पतली-सी टहनी उठाकर उनका रास्ता रोक दिया। यह देखकर बड़ा मजा आ रहा था कि किस तरह उनमें से कुछ चींटियां तो खतरे की तनिक भी परवाह न करके या तो उसके नीचे से रेंगकर या फिर उसके ऊपर चढ़कर पार चली गयीं, जबकि कुछ चींटियां, खास तौर पर वे जिनके ऊपर बोझ लदे थे, चकरायी हुई लग रही थीं और उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें: वे रुक जाती थीं और उस बाधा से कतराकर निकल

जाने का कोई रास्ता खोजती थीं, या पीछे मुड़ जाती थीं, या पतली-सी टहनी के सहारे रेंगकर शायद मेरे कोट की आस्तीन में घुस जाने के इरादे से मेरे हाथ पर चढ़ आती थीं। बड़े मोहक ढंग से मेरे सामने उड़ती हुई पीले पंखोंवाली एक तितली ने इन रोचक अवलोकनों की ओर से मेरा ध्यान हटा लिया। मैंने अपना ध्यान उस तितली की ओर मोड़ा ही था कि वह उड़कर मुझसे कोई दो क़दम दूर चली गयी और जंगली सफ़ेद वनमेथी के लगभग बिल्कुल मुरझाये हुए फूल पर चक्कर काटकर उस पर बैठ गयी। मालूम नहीं वह धूप खा रही थी या इस जंगली पौधे का रस चूस रही थी, लेकिन इतना स्पष्ट था कि वह भरपूर आनंद ले रही थी। थोड़ी-थोड़ी देर बाद अपने पंख फड़फड़ाकर वह फूल से और कसकर चिपट जाती थी, और आख़िरकार बिल्कुल निश्चल हो गयी। अपना सिर दोनों हथेलियों पर टिकाकर मैं उसे बहुत मगन होकर देखने लगा।

अचानक जिरान जोर से भूंकने लगा और उसने इतने ज़ोर का झटका दिया कि मैं गिरते-गिरते बचा। मैंने मुड़कर देखा। जंगल के छोर पर एक ख़रगोश फुदकता हुआ जा रहा था; उसका एक कान नीचे लटक रहा था और एक कान ऊपर उठा हुआ था। मेरे भेजे की ओर ख़ून दौड़ने लगा, और एक क्षण के लिए सब कुछ भूलकर मैं दीवानों की तरह चिल्लाया, कुत्ते को मैंने छोड़ दिया और उसके पीछे भागने लगा। लेकिन अगले ही क्षण मुझे ऐसा करने पर पछतावा हुआ – ख़रगोश अपने पिछले पैरों पर बैठ गया, फिर उसने छलांग लगायी और आंखों से ओझल हो गया।

लेकिन उस वक़्त तो मेरी जान ही निकल गयी जब शिकारी कुत्तों के पीछे-पीछे, जो भूंकते हुए भागकर जंगल के छोर की तरफ़ आ गये थे, एक झाड़ी की आड़ से तुर्का निकलकर सामने आया! उसने मेरी ग़लती देख ली थी (जो यह थी कि मैंने इंतजार नहीं किया), और बड़े तिरस्कार से मुझ पर एक नजर डालकर उसने कहा, "उफ़, छोटे मालिक!" उसने बस इतना ही कहा, लेकिन कोई सुनता कि उसने यह बात किस ढंग से कही थी। इससे तो कहीं अच्छा होता कि वह मुझे भी ख़रगोश की तरह अपने घोड़े के ज़ीन के बग़ल में लटका लेता।

मैं घोर निराशा में डूबा बड़ी देर तक उसी जगह खड़ा रहा। मैंने कुत्ते को नहीं बुलाया, और बस अपनी जांघें पीट-पीटकर बार-बार यही कहता रहा :

"हाय, हाय, यह क्या किया मैंने!"

मैंने वहां से दूर बीगल कुत्तों को खरगोश का पीछा करते सुना ; मैंने सुना कि जंगल के दूसरी ओर हंकवा करनेवाले 'लुहे-लुहे' चिल्लाने लगे और कुत्तों ने ख़रगोश को धर दबोचा, और तुर्का को अपना लंबा भोंपू बजाकर कुत्तों को बुलाते हुए मैंने सुना. फिर भी मैं उस जगह से टस से मस नहीं हुआ।...

अध्याय ८

खेल

शिकार ख़त्म हुआ। अल्पवयस्क बर्च-वृक्षों की छाया में क़ालीन बिछाया गया और साथ आये हुए सारे लोग वहां जमा हो गये। हरी-भरी घास को अपने चारों ओर रौंदते हुए ख़ानसामां गाव्रीलो प्लेटें पोंछ रहा था और टोकरियों में से पत्तों में लिपटे हुए आड़ू और आलू-बुख़ारे निकालकर रख रहा था। अल्पवयस्क बर्च-वृक्षों की हरी-हरी डालों के बीच से सूरज चमक रहा था और क़ालीन के बेल-बूटों पर, मेरे पांवों पर और गाव्रीलो की पसीने से तर चांद तक पर गोल कांपती छायाएं बिखेर रहा था। पत्तियों के बीच से ताज़गी देनेवाली ठंडी हवा के झोंके फड़फड़ाते हुए गुज़र रहे थे, और मेरे बालों को और मेरे तमतमाये हुए चेहरे को गुदगुदा रहे थे।

जब हम लोग आइसक्रीम और तरह-तरह के फल खाकर ख़त्म कर चुके तो फिर कोई वजह नहीं रह गयी कि हम वहीं क़ालीन पर जमे रहें ; और सूरज की तिरछी लेकिन अभी तक गरम किरनों के बावजूद हम उठकर खेलने चले गये।

"अच्छा, तो अब क्या खेलें?" ल्यूबा ने धूप में आंखें झपकाते हुए और घास पर कूदते हुए कहा। "आओ, राबिंसन खेलें!"

"नहीं, वह बहुत उबानेवाला खेल है," वोलोद्या ने आलस से

घास पर लोट लगाते हुए और एक पत्ती चबाते हुए कहा, "हमेशा हम राबिंसन ही खेलते हैं। अगर कुछ खेलना ही है तो आओ एक कुंज बनायें।"

साफ़ मालूम हो रहा था कि वोलोद्या रोब झाड़ रहा था: शायद उसे इस बात पर बड़ा अभिमान था कि उसने शिकारी घोड़े पर सवारी की थी, और वह बन रहा था कि वह बहुत थक गया था; या शायद उसमें समझ-बूझ इतनी ज़्यादा हो चुकी थी और कल्पना इतनी कम रह गयी थी कि वह राबिंसन के खेल का आनंद ले ही नहीं सकता था। इस खेल में *Robinson Suisse* * के विभिन्न दृश्यों का अभिनय करना पड़ता था, जो हमने अभी कुछ ही समय पहले पढ़ा था।

"अरे, मेहरबानी करके... बस हमारी ख़ातिर!" लड़कियों ने आग्रह किया। "तुम चार्ल्स बन जाना, या अर्नेस्ट, या बाप – जो तुम्हारा जी चाहे," कात्या ने कोट की आस्तीन पकड़कर उसे ज़मीन पर से उठाने की कोशिश करते हुए कहा।

"सचमुच मेरा जी नहीं चाह रहा है: बहुत ऊबा देनेवाला खेल है!" वोलोद्या ने अंगड़ाई लेकर आत्म-संतुष्ट ढंग से मुस्कराते हुए कहा।

"अगर कोई खेलना ही नहीं चाहता तो इससे अच्छा तो घर पर ही रहते," ल्यूबा ने डबडबायी हुई आंखों से एलान किया।

वह रोने में बड़ी तेज थी।

"अच्छा, तो आओ; मगर रोना नहीं। मैं रोना बर्दाश्त नहीं कर सकता!"

वोलोद्या के इस उपकार करने से हम लोगों को कोई ख़ास संतोष नहीं हुआ; उल्टे, उसकी उकतायी हुई, अलसायी हुई मुद्रा से खेल का सारा आकर्षण ख़त्म हो गया। जब हम लोग ज़मीन पर बैठ गये और यह कल्पना करके कि हम लोग मछलियां पकड़ने जा रहे थे अपनी पूरी ताक़त लगाकर चप्पू चलाने का अभिनय करने लगे तो वोलोद्या हाथ बांधे बैठा रहा, जो बिल्कुल मछुहरों जैसी मुद्रा नहीं

---

* स्विस राबिन 'स्विस राबिंसन' डैनियल डीफ़ो के सुप्रसिद्ध उपन्यास 'राबिंसन क्रूसो' की भोंडी नकल थी। – अनु०

और आगे तो हम जरा भी नहीं बढ पायेंगे। मजबूरन मैं उससे सहमत हो गया। जब मैं शिकार पर जाने का अभिनय करने लगा और अपने कंधे पर एक लाठी रखकर जंगल की ओर चला तो वोलोद्या अपने हाथ सिर के नीचे रखकर चित लेट गया और मुझसे बोला कि मैं मान लूं कि वह भी जा रहा है। उसकी इस तरह की बातों और हरकतों की वजह से खेल के प्रति हमारा सारा जोश ठंडा पड़ गया, और हमारा सारा मज़ा किरकिरा हो गया, इसलिए और भी कि हम यह सोचने पर मजबूर थे कि वोलोद्या की ही बात ठीक थी।

मैं ख़ुद जानता था कि अपनी लाठी से चिड़िया को मार गिराना तो दूर रहा, उस पर गोली चलाना भी नामुमकिन था। यह तो बस खेल था। इस तरह तर्क करके तो कुर्सियों पर सवारी भी नहीं की जा सकती थी; लेकिन मैंने सोचा कि वोलोद्या को ख़ुद यह अच्छी तरह याद है कि किस तरह जाड़े की लंबी शामों को हम एक आराम-कुर्सी पर कपड़ा उढ़ाकर उसको बग्घी बना लेते थे, उस पर एक आदमी कोचवान बनकर सवार हो जाता था, दूसरा अर्दली बनकर, लड़कियां बीच में बैठ जाती थीं, तीन कुर्सियां जोड़कर तीन घोड़े बना लिये जाते थे और हम लोग सफ़र पर निकल पड़ते थे। रास्ते में हमें कितने रोमांचकारी अनुभव होते थे! जाड़े की शामें कैसे हंसते-खेलते तेज़ी से कट जाती थीं!... अगर असलियत के चक्कर में रहें तो कभी कोई खेल हो ही न पाये। और अगर खेल न हों तो फिर बचे ही क्या?...

अध्याय ९

पहली मुहब्बत ही जैसी

ल्यूबा ने पेड़ से कोई अमरीकी फल तोड़ने का नाटक करते हु एक पत्ता तोड़ लिया जिस पर बड़ी-सी सूंड़ी चिपकी थी; उसने सहमक उसे ज़मीन पर फेंक दिया और दोनों हाथ उठाकर इस तरह पी

उछली जैसे डर रही हो कि उसमें से कोई चीज़ बाहर छलक आयेगी। खेल रुक गया और हम सभी अपने सिर एक-दूसरे से सटाये हुए ज़मीन पर लेटकर इस अजूबे को देखने लगे।

मैं कात्या के कंधे के ऊपर से देख रहा था, जो उस कीड़े के रास्ते में एक पत्ता रखकर उसे उस पर उठाने की कोशिश कर रही थी।

मैंने कई बार देखा था कि बहुत-सी लड़कियों की आदत थी कि जब उनकी गहरी काट के गलेवाली फ़ाकें नीचे सरक जाती थीं तो उन्हें फिर ठीक जगह पर लाने के लिए वे अपने कंधों को हल्का-सा झटका देती थीं। मुझे याद है कि उनकी इस हरकत पर मीमी हमेशा नाराज़ होकर कहती थीं, "C'est un geste de femme de chambre."* कीड़े पर झुके-झुके कात्या ने हरकत की, और उसी वक़्त हवा के झोंके से रूमाल उसकी गोरी-गोरी गर्दन पर से उड़ गया। उसका छोटा-सा कंधा मेरे होंटों से दो अंगुल की दूरी पर था। मैं अब कीड़े को नहीं देख रहा था: मैं टकटकी बांधे कात्या के कंधे को घूर रहा था, और अचानक मैंने सारी ताक़त लगाकर उसे चूम लिया। वह पीछे मुड़ी नहीं, लेकिन मैंने देखा कि उसकी गर्दन और उसके कान तक लाल हो गये थे। वोलोद्या ने अपना सिर उठाये बिना ही तिरस्कार से कहा:

"क्या नजाकत है!"

लेकिन मेरी आंखें छलछला आयी थीं।

मैं कात्या पर से अपनी नज़रें हटा नहीं पा रहा था। मैं उसके कोमल ताजगी-भरे चेहरे का बहुत दिनों से आदी हो चुका था, और मैं उसे हमेशा प्यार करता था। लेकिन अब मैं उसे ज़्यादा ध्यान से देखने लगा था और वह मुझे पहले से भी अच्छी लगने लगी थी। जब हम लौटकर बड़े लोगों के पास गये तो हमें पापा की यह घोषणा सुनकर बेहद खुशी हुई कि मां के अनुरोध पर हम लोगों की रवानगी अगले दिन के लिए टाल दी गयी थी।

हम लोग बग्घी के साथ-साथ घोड़ों पर सवार घर की ओर चल पड़े। वोलोद्या और मैं अपनी घुड़सवारी और दिलेरी का प्रदर्शन करने

---

* ऐसी हरकत तो नौकरानियां करती हैं। (फ़्रांसीसी)

में एक-दूसरे से होड़ कर रहे थे। मेरी परछाईं पहले से लंबी थी, और उससे अंदाज़ा लगाने पर मैं कल्पना करने लगा कि देखने में मैं बहुत अच्छा घुड़सवार लग रहा था; लेकिन एक घटना की वजह से मेरी आत्म-संतोष की यह भावना शीघ्र ही नष्ट हो गयी। गाड़ी में बैठे हुए तमाम लोगों को पूरी तरह मंत्रमुग्ध कर देने की इच्छा से मैं थोड़ा-सा पीछे रह गया, फिर चाबुक और एड़ लगाकर मैंने अपने घोड़े को सरपट भगाया, सहज और शालीन मुद्रा अपना ली और गाड़ी में जिस तरफ़ कात्या बैठी थी उधर से मैं अपना घोड़ा आंधी की तरह भगाता हुआ आगे निकलना चाहता था। मैं बस यही फ़ैसला नहीं कर सका कि उनके पास से चुपचाप घोड़ा सरपट भगाते हुए गुज़र जाना बेहतर होगा या उनके पास से होकर गुज़रते हुए चिल्लाना। लेकिन वह बदमाश घोड़ा बग्घी के घोड़ों के बराबर पहुंचते ही मेरी सारी कोशिशों के बावजूद इस तरह अचानक ठिठककर खड़ा हो गया कि मैं ज़ीन पर से उछलकर उसकी गर्दन से जा लगा और उसकी पीठ पर से नीचे गिरते-गिरते बचा।

अध्याय १०

पापा किस तरह के आदमी थे?

वह पिछली शताब्दी के आदमी थे, और उनका चरित्र उदारता, व्यवहार-कुशलता, आत्म-विश्वास, शिष्टता और भोग-विलास का मिश्रण था, जो उस ज़माने के सभी नौजवानों के चरित्र में समान रूप से पाये जानेवाले गुण थे। वह वर्तमान पीढ़ी को तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे, और उनका यह दृष्टिकोण जहां उनके सहज अभिमान का नतीजा था वहीं उसी हद तक इसका कारण उनकी यह खीझ भी थी कि हम लोगों के ज़माने में उनका न तो उतना प्रभाव रह गया था और न ही उन्हें उतनी सफलताएं मिल पाती थीं जितनी उन्हें अपने ज़माने में मिलती थीं। ज़िंदगी में उन्हें दो ही चीज़ों का जुनून था: ताश और औरतें। अपनी ज़िंदगी के दौरान उन्होंने ताश में लाखों जीते थे और सभी वर्गों की असंख्य औरतों के साथ उनका संसर्ग रहा था।

लंबा रोबदार डीलडौल, छोटे-छोटे क़दमों से चलने का एक विचित्र अंदाज़, कंधे झटकने की आदत, हरदम मुस्कराती हुई छोटी-छोटी आंखें, बड़ी-सी आगे को मुड़ी हुई नाक, बेडौल-से होंट जो कुछ बेतुके ढंग से भिंचे होने के बावजूद देखने में भले लगते थे, ज़बान में कुछ तुतलाहट, और गंजा सिर – जबसे मुझे उनकी याद है यही मेरे पापा का चेहरा-मोहरा था, वह चेहरा-मोहरा जिसके बल पर उन्होंने न केवल à bonnes fortunes* होने की ख्याति प्राप्त कर ली थी, जो कि वह सचमुच थे, बल्कि साथ ही यह भी था कि कोई भी आदमी ऐसा नहीं था जो उन्हें पसंद न करता हो – हर वर्ग और हर हैसियत के लोग, और ख़ास तौर पर वे जिन्हें वह अच्छा लगना चाहते थे।

किसी भी आदमी के साथ संबंधों में उनका ही पलड़ा हमेशा भारी रहता था। हालांकि वह सबसे ऊंचे समाज के आदमी कभी नहीं रहे, लेकिन उन क्षेत्रों में उनका उठना-बैठना हमेशा रहा, और वह सभी का सम्मान प्राप्त करने में सफल रहे। उन्हें स्वाभिमान और आत्म-विश्वास की वह ठीक-ठीक मात्रा मालूम थी जो दूसरों को अपमान पहुंचाये बिना उन्हें दुनिया की नज़रों में ऊंचा उठा सकती थी। उनमें मौलिकता थी, हालांकि वह इसका सहारा कभी-कभी ही लेते थे – अपनी कुलीनता या धनाढ्यता की कमी को पूरा करने के लिए। दुनिया की कोई भी चीज़ उनको चमत्कृत नहीं कर सकती थी: वह कैसे ही शानदार माहौल में क्यों न हों, लगता यही था कि वह जन्म से उसके आदी हैं। परेशानियों और गड़बड़ियों से भरे हुए ज़िंदगी के अंधकारमय पक्ष को दूसरों से छिपाने और स्वयं अपनी नज़रों से भी दूर रखने की उनकी क्षमता पर बरबस ईर्ष्या होती थी। सुख-सुविधा की सभी चीजों के वह सच्चे पारखी थे, और उनका भरपूर लाभ उठाना जानते थे। उन्हें अपने उन शानदार संबंधों पर गर्व था जिनमें से कुछ तो उन्होंने मेरी मां से शादी करके बनाये थे और कुछ अपने नौजवानी के साथियों की बदौलत, जिनसे वह मन ही मन कुछ कुढ़ते भी थे, क्योंकि वे सभी तरक़्क़ी करके ऊंचे-ऊंचे पदों पर पहुंच गये थे और वह गारद के सेवा-निवृत्त लेफ़्टिनेंट ही रह गये। सभी भूतपूर्व अफ़सरों

---

* किस्मत का धनी। (फ़्रांसीसी)

की तरह उन्हें भी फ़ैशनेबुल ढंग से कपड़े पहनना नहीं आता था ; फिर भी उनकी पोशाक मौलिक और सजीली होती थी। उनके कपड़े हमेशा बहुत ढीले और हल्के होते थे, उनकी कमीज़ें हमेशा सबसे बढ़िया क्वालिटी की होती थीं, उनके बड़े-बड़े कफ़ और कॉलर पीछे की ओर उलटे रहते थे।... सच तो यह है कि वह जो कुछ भी पहनते थे वह उनके लंबे, गठीले डीलडौल, उनके गंजे सिर और उनकी शांत आत्म-विश्वासी चाल-ढाल पर फबता था। वह बहुत संवेदनशील थे, यहां तक कि बहुत जल्दी उनकी आंखों में आंसू आ जाते थे। अकसर जोर-ज़ोर से कोई किताब पढ़ते वक़्त जब वह किसी करुण प्रसंग पर पहुंचते थे तो उनकी आवाज़ कांपने लगती थी और सहज ही उनकी आंखें डबडबा आती थीं; और वह झुंझलाकर किताब रख देते थे। उन्हें संगीत से प्रेम था, और वह स्वयं पियानो बजाकर उसके साथ अपने मित्र अ०... के रचे हुए प्रेम-गीत, बंजारों के गीत और कुछ ऑपेरा की धुनें गाया करते थे; लेकिन गंभीर संगीत उन्हें पसंद नहीं था, और वह जनमत की अवहेलना करते हुए साफ़-साफ़ कहते थे कि बी-थोवेन के सोनाटा सुनकर उन्हें नींद आने लगती थी और उकताहट होती थी। उनका स्वभाव उन लोगों जैसा था जिनके सत्कर्मों के लिए जन-साधारण का होना अनिवार्य था। और वह उसी चीज़ की क़द्र या इज़्ज़त करते थे जिसकी क़द्र या इज़्ज़त सारी दुनिया करती हो। यह कहना कठिन है कि उनकी कोई नैतिक आस्थाएं थीं भी कि नहीं। उनका जीवन हर तरह के आवेगों और आवेशों से इतना भरा हुआ था कि उसमें नैतिक आस्थाओं के बारे में सोचने के लिए कोई समय ही नहीं था, और वह अपने जीवन में इतने सुखी थे कि उन्हें ऐसा करने की कोई ज़रूरत ही समझ में नहीं आती थी।

जैसे-जैसे उम्र बीतती गयी वैसे-वैसे जीवन के प्रति उन्होंने एक बंधा हुआ दृष्टिकोण और एक कठोर आचरण-पद्धति अपना ली, जो उनके निजी अनुभव पर ही आधारित थी। जिन कामों से और ज़िंदगी के जिस ढर्रे से उन्हें सुख और आनंद मिलता था उन्हें वह अच्छा समझते थे और वह यक़ीन करते थे कि हर आदमी उन्हीं तौर-तरीक़ों को अनिवार्य रूप से अपनायेगा। उनका बोलने का ढंग बहुत ज़ोरदार था और मुझे लगता है कि इस गुण की वजह से उनके सिद्धांतों का लची-

लापन बढ़ गया था : उन्हें यह कमाल हासिल था कि उसी हरकत को चाहें तो बहुत उम्दा मज़ाक़ साबित कर दें और चाहें तो सरासर दुष्टता।

अध्याय ११

पढ़ने के कमरे और बैठकख़ाने में

हम लोग घर पहुंचे तो अंधेरा हो चुका था। मां पियानो बजाने लगीं, और हम सब बच्चे काग़ज़, पेंसिलें और रंग लाकर गोल मेज़ के चारों ओर तस्वीरें बनाने बैठ गये। मेरे पास सिर्फ़ नीला रंग था, फिर भी मैंने शिकार की तस्वीर बनाने का बीड़ा उठा लिया। मैंने नीले घोड़े पर सवार एक नीले लड़के और कुछ नीले-नीले कुत्तों की जीती-जागती तस्वीर बनायी, लेकिन मुझे पक्का भरोसा नहीं था कि ख़रगोश नीला बनाया जा सकता है या नहीं, इसलिए पापा से पूछने मैं भागा-भागा लाइब्रेरी में गया। पापा पढ़ रहे थे और मेरे सवाल का कि नीले ख़रगोश होते हैं कहीं, उन्होंने सिर उठाये बिना ही जवाब दिया, "हां, बेटा, होते हैं।" मैंने गोल मेज़ पर वापस जाकर एक नीला ख़रगोश बना दिया, फिर मुझे ज़रूरत इस बात की पड़ी कि नीले ख़रगोश को बदलकर झाड़ी बना दूं। झाड़ी से भी मेरा जी ख़ुश नहीं हुआ; इसलिए मैंने उसे पेड़, और फिर पेड़ को भूसे का ढेर, और भूसे के ढेर को बादल बना दिया; आख़िरकार मेरा पूरा काग़ज़ नीले रंग से ऐसा गिचपिच हो गया कि मैंने झुंझलाकर उसे फाड़ डाला, और झपकी लेने के लिए बड़ी-सी आराम-कुर्सी पर जा बैठा।

मां फ़ील्ड का दूसरा कंसर्टो बजा रही थीं, जो उन्हें किसी ज़माने में संगीत सिखा चुके थे। मैं सपना देख रहा था, और मेरी कल्पना में हल्की चमकदार और पारदर्शी स्मृतियां उभर रही थीं। फिर वह बीथोवेन का 'सोनाटा पैथेटीक' बजाने लगीं, और मेरी स्मृतियां निराशा-पूर्ण और उदास हो गयीं। मां चूंकि ये दो संगीत-रचनाएं अकसर बजाती थीं, इसलिए मुझे अच्छी तरह याद है कि वे मेरे मन में क्या भावनाएं जागृत करती थीं। वे स्मृतियों जैसी थीं – लेकिन किस चीज़ की, यह

ुझे नहीं मालूम। बिल्कुल ऐसा लग रहा था कि मुझे कोई ऐसी चीज़
ाद आ रही थी जो कभी हुई ही नहीं थी।

मेरे सामने पढ़ने के कमरे का दरवाज़ा था; मैंने याकोव को और
ाफ़्तान पहने लंबी-लंबी दाढ़ियोंवाले कुछ लोगों को अंदर जाते देखा।
ुनके अंदर जाते ही दरवाज़ा बंद हो गया। "अब कारोबार शुरू हो
या!" मैंने सोचा। मुझे ऐसा लगता था कि उस पढ़ने के कमरे में
ो कारोबार किया जाता था उससे ज़्यादा महत्वपूर्ण इस दुनिया में
ौर कोई चीज़ थी ही नहीं; मेरे इस विचार की पुष्टि इस बात में
ोती थी कि पढ़ने के कमरे के दरवाज़े के पास सभी लोग हमेशा दबे
ांव आते थे और वे दबे स्वर में बात करते थे; वहां से पापा के ज़ोर
ा बोलने की आवाज़ और सिगार की ख़ुशबू आ रही थी, जिसके
ाक में पहुंचते ही मैं खिल उठता था, न जाने क्यों। आराम-कुर्सी
र ऊंघते हुए नौकरों के कमरे में जूतों के चरमराने की जानी-पहचानी
ावाज़ मेरे कान में पड़ी। चेहरे पर दृढ़ संकल्प की मुद्रा लिये कार्ल
ावानिच अपने हाथ में कुछ काग़ज़ संभाले दबे पांव दरवाज़े के पास
ाये और बहुत धीमे से उन्होंने दरवाज़ा खटखटाया। उन्हें अंदर बुला
लिया गया और दरवाज़ा फिर धड़ से बंद कर दिया गया।

"बस, कोई मुसीबत न खड़ी हो जाये," मैंने सोचा। "कार्ल
इवानिच नाराज़ हैं; वह कुछ भी कर बैठने पर उतारू हैं।"

और मैं फिर ऊंघ गया।

लेकिन कोई मुसीबत नहीं आयी। घंटे भर बाद जूतों के चरमराने
की वही आवाज़ सुनकर मेरी आंख खुल गयी। कार्ल इवानिच रूमाल
ा आंसू पोंछते हुए, जो मैंने उनके गालों पर देखे, पढ़ने के कमरे से
ाहर निकले और अपने आप कुछ बुड़बुड़ाते हुए सीढ़ियां चढ़कर ऊपर
ले गये। पापा उनके पीछे-पीछे बाहर निकले और ड्राइंग-रूम में चले
ये।

"जानती हो मैंने अभी-अभी क्या करने का फ़ैसला किया है?"
उन्होंने मां के कंधे पर हाथ रखते हुए बहुत ख़ुश होकर कहा।

"क्या फ़ैसला किया है, माई डियर?"

"बच्चों के साथ मैं कार्ल इवानिच को भी ले जाऊंगा। घोड़ा-
ाड़ी में उसके लिए जगह तो है ही। बच्चे उससे हिल गये हैं और

लगता है कि उसे भी उनसे बहुत गहरा लगाव है ; साल में सात सौ रूबल कोई बहुत ज़्यादा नहीं है, et puis au fond c'est un très bon diable."* मेरी समझ में नहीं आया कि पापा कार्ल इवानिच के बारे में इतनी अशिष्टता से बातें क्यों कर रहे थे।

"मैं बहुत खुश हूं," मां ने कहा, "बच्चों की वजह से भी और खुद उसकी वजह से भी: बूढ़ा नेक है।"

"काश तुमने देखा होता कि जब मैंने उससे कहा कि वह पांच सौ रूबल भेंट समझकर रख ले तो बात उसके दिल को किस तरह लग गयी थी! लेकिन सबसे मज़ेदार तो यह हिसाब है जो उसने मुझे अभी दिया है। देखने लायक़ चीज़ है," उन्होंने मुस्कराते हुए कहा और कार्ल इवानिच की लिखाई में एक सूची मां को दे दी: "पढ़कर मज़ा आता है।"

उस सूची में ये चीज़ें दर्ज थीं:

बच्चों के लिए मछली पकड़ने का दो कंटियां – सत्तर कोपेक।

उपहार का वास्ते डिब्बा बनाने का रंगीन काग़ज़, गोट के लिए सुनहरा पन्नी, दाब और गोंद – छः रूबल पचपन कोपेक।

एक किताब और एक कमान, बच्चे लोग का वास्ते उपहार – आठ रूबल सोलह कोपेक।

निकोलाई का वास्ते पतलून – चार रूबल।

एक सोने का घड़ी जो प्योत्र अलेक्सांद्रोविच ने मुझे १८... में मास्को में देना को वादा किया था – एक सौ चालीस रूबल।

अलावा तनख़्वाह कार्ल मायर को वाजिबुलअदा कुल रक़म – एक सौ उनसठ रूबल उन्नासी कोपेक।

अगर कोई उस सूची को पढ़ता, जिसमें कार्ल इवानिच ने न सिर्फ़ उस रक़म के भुगतान की मांग की थी जो उसने उपहारों पर ख़र्च की थी बल्कि उस उपहार की रक़म भी मांगी थी जो उसे देने का वादा किया गया था, तो वह यही सोचता कि कार्ल इवानिच घोर लालची, कठोर हृदय, स्वार्थी आदमी था – और किसी के लिए भी ऐसा सोचना बहुत बड़ी भूल होती।

जब वह अपने हाथ में यह सूची और अपने दिमाग़ में एक रटा-रटाया तैयार भाषण लेकर पढ़ने के कमरे में घुसा उस वक़्त उसका

---

* इसके अलावा कमबख़्त दिल का बुरा नहीं है। (फ़्रांसीसी)

इरादा था कि उसे हमारे घर में जो कुछ सहना पड़ा था वह सब पापा के सामने साफ़-साफ़ खोलकर रख देगा ; लेकिन जब उन्होंने उस करुण स्वर में और आवाज़ के उन मर्मस्पर्शी उतार-चढ़ावों के साथ बोलना शुरू किया जो वह हम लोगों को बोल-बोलकर कुछ लिखाते समय अपनाते थे, तो अपने भाषण का खुद उनके ऊपर इतना गहरा असर हुआ कि जिस वक़्त वह उस जगह पर पहुंचे जहां उन्हें कहना था, "मुझे बच्चों से अलग होने का बेहद दुःख होने के बावजूद," तो वह भाषण से भटक गये, उनकी आवाज़ कांपने लगी, और वह जेब से अपना चार-खानेवाला रूमाल निकालने पर मजबूर हो गये।

"जी हां, प्योत्र अलेक्सांद्रोविच," उन्होंने रुंधे हुए गले से कहा (यह अंश उस भाषण में नहीं था जो उन्होंने तैयार किया था). "मुझे बच्चों की ऐसी आदत हो गयी है कि मेरी समझ में नहीं आता कि उनके बग़ैर मैं करूंगा क्या। मुझे बिना तनख़्वाह के रहने दीजिये," उन्होंने एक हाथ से आंसू पोंछते हुए और दूसरे से बिल पेश करते हुए कहा।

इस बात को जानते हुए कि कार्ल इवानिच दिल के कितने नेक हैं मैं इतना तो दावे के साथ कह सकता हूं कि यह बात उन्होंने सच्चे दिल से कही थी ; लेकिन उस हिसाब का मेल उन्होंने अपनी बातों के साथ कैसे मिलाया यह अब तक मेरे लिए एक रहस्य बना हुआ है।

"अगर इस बात का आपको बेहद दुःख है, तो आपसे अलग होने का मुझे तो और भी दुःख होगा," पापा ने उसका कंधा थपकते हुए कहा। "मैंने अपना फ़ैसला बदल दिया है।"

रात के खाने से कुछ पहले ग्रीशा कमरे में आया। जिस क्षण से वह घर आया था तभी से वह लगातार आहें भर रहा था और रो रहा था ; और जो लोग भविष्यवाणी करने की उसकी शक्ति पर विश्वास करते थे उनकी राय में यह इस बात का निश्चित संकेत था कि हम लोगों का कोई अनिष्ट होनेवाला था। आखिरकार वह हम लोगों से यह कहकर विदा हुआ कि वह अगले दिन सवेरे चले जाने का इरादा रखता है। मैंने आंख मारकर वोलोद्या को इशारा किया और कमरे से बाहर निकल गया।

"क्या बात है?"

"ग्रीशा की ज़ंजीरें देखना चाहते हो तुम लोग तो आओ मर्दाने हिस्से में, ऊपर चलो। ग्रीशा दूसरे कमरे में सोता है। काठ-कवाड़ की कोठरी में से हमें सब कुछ दिखायी देगा।"

"वाह-वाह! यहीं रुको: मैं लड़कियों को बुला लाऊं।"

लड़कियां भागकर वाहर निकल आयीं और हम लोग ऊपर चले गये। कुछ देर इस पर वहस करने के वाद कि सवसे पहले कौन जाये, हम लोग काठ-कवाड़ की अंधेरी कोठरी में घुस गये और वैठकर इंतज़ार करने लगे।

अध्याय १२

ग्रीशा

हम सव लोग अंधेरे में भय महसूस कर रहे थे; हम दवे-सिकुड़े एक-दूसरे से सटकर चुपचाप वैठे थे। ग्रीशा लगभग उसी समय विना किसी आहट के अपने कमरे में आया। एक हाथ में उसने अपनी लाठी पकड़ रखी थी और दूसरे में वह पीतल के शमादान में लगी हुई चर्वी की मोमवत्ती लिये था। हम लोगों ने दम साध लिया।

"प्रभु यीशु मसीह! प्रभु की परमपवित्र मां मरियम! पिता, पुत्र और पवित्र प्रेतात्मा!..." वह वार-वार इन्हीं शब्दों को दोहरा रहा था, आवाज़ में वैसे उतार-चढ़ाव लाकर और शब्दों के ऐसे लघु रूप वनाकर जैसा कि वे लोग ही कर सकते हैं जो इन शब्दों को वहुधा दोहराते हैं।

प्रार्थना करते हुए ही उसने अपनी लाठी एक कोने में रख दी, अपने विस्तर पर नज़र डाली और कपड़े उतारने लगा। उसने अपनी पुरानी काली पेटी खोली, फिर नानकीन का अपना फटा-पुराना लवादा उतारकर उसे वड़ी सावधानी से तह किया और एक कुर्सी की पीठ पर टांग दिया; इस वक़्त उसके चेहरे पर हड़वड़ाहट और वौड़मपन का वह भाव नहीं था जो हमेशा रहता था। इसके विपरीत वह शांतचित्त, उदास, और कुछ हद तक भव्य भी लग रहा था। अपनी हर गति-विधि में वह सतर्क और गंभीर लग रहा था।

नीचे के कपड़े पहने हुए वह धीरे से अपने पलंग पर बैठ गय उसके ऊपर चारों ओर सलीव का निशान वनाया और स्पष्टतः वह ज़ोर लगाकर (क्योंकि उसके माथे पर वल थे) उसने अपनी क़मी के नीचे ज़ंजीरों को ठीक किया। कुछ देर वहां वैठे रहने और क जगह से फटा हुआ अपना नीचे का कपड़ा वड़ी सावधानी से जांच के वाद वह उठा, एक प्रार्थना पढ़ते हुए उसने मोमवत्ती को कोने रखी हुई वेदी के स्तर तक उठाया जिसमें कई मूर्तियां रखी थीं, अप सामने सलीव का निशान वनाया और मोमवत्ती को उल्टा कर दिया वह चटचटाकर वुझ गयी।

जंगल की ओर खुलनेवाली खिड़की में से लगभग पूरा चांद झांक रहा था। उसकी मद्धिम रुपहली रोशनी उस वावले के लंवे गोरे शरीर के एक पक्ष पर पड़ रही थी; दूसरा पक्ष गहरी परछाई में था, जो फ़र्श और दीवारों पर पड़ती हुई खिड़की के चौखटे की परछाइयों के साथ घुल-मिलकर विल्कुल ऊपर छत तक चली गयी थी। नीचे अहाते में चौकीदार की खट-खट सुनायी दे रही थी।

अपनी वड़ी-वड़ी वांहें सीने पर वांधे हुए ग्रीशा सिर झुकाये चुपचाप मूर्तियों के सामने खड़ा लगातार गहरी-गहरी आहें भरता रहा; फिर वह कुछ कठिनाई से घुटनों के वल वैठ गया और प्रार्थना करने लगा।

शुरू में तो उसने केवल कुछ शव्दों के उच्चारण पर ज़ोर देते हुए धीमे स्वर में चिर-परिचित प्रार्थनाओं का ही पाठ किया; फिर उसने उन्हें दोहराया, लेकिन इस वार अधिक ऊंचे स्वर में और ज़्यादा जानदार ढंग से। फिर वह अपने शव्दों का प्रयोग करने लगा, वह स्पष्टतः अपनी भावनाओं को स्लाव भाषा में व्यक्त करने का प्रयास कर रहा था। उसके शव्द अटपटे लेकिन मर्मस्पर्शी थे। उसने अपने सभी हितैषियों के लिए (जो भी उसे शरण देता था उसे वह यही कहता था) प्रार्थना की, जिनमें मां और हम लोग भी शामिल थे; उसने अपने लिए प्रार्थना की, ईश्वर से विनती की कि वह उसके भयंकर पापों को क्षमा कर दे और वोला, "हे भगवान, मेरे शत्रुओं को क्षमा कर दे!" वह कराहकर उठता और उन्हीं शव्दों को वार-वार दोहराते हुए फिर ज़मीन पर गिर पड़ता और फिर उठता, हालांकि ज़ंजीरों का वोझ

बहुत था, जिनके फ़र्श से टकराने पर ऐसी आवाज़ निकलती थी जैसे रेती से कोई चीज़ घिसी जा रही हो।

वोलोद्या ने मेरे पांव पर ज़ोर से चुटकी काटी, लेकिन मैंने मुड़कर देखा भी नहीं: मैंने बस पांव को उस जगह एक हाथ से सहलाया और बालोचित कौतुक, करुणा और श्रद्धा से ग्रीशा के एक-एक शब्द को बड़े ध्यान से सुनता रहा और उसकी एक-एक भाव-भंगिमा को देखता रहा।

काठ-कबाड़ की कोठरी में घुसते समय मैंने जिस हंसी-दिल्लगी की आशा की थी उसके बजाय मैं महसूस कर रहा था कि मेरा दिल कांप रहा है और डूबा जा रहा है।

ग्रीशा बड़ी देर तक धार्मिक उत्कर्ष की इस अवस्था में रहा और अपने मन से प्रार्थना के शब्द गढ़ता रहा। उसने या तो लगातार कई बार दोहराया, "प्रभु, दया करो!" लेकिन हर बार एक नये भाव से और शब्दों पर नये ढंग से ज़ोर देते हुए। या, "क्षमा करो, प्रभु, मुझे ज्ञान दो कि मैं क्या करूं, मुझे बताओ कि मैं क्या करूं, प्रभु!" वह इस ढंग से कहता मानो उसे तुरंत इन शब्दों का उत्तर मिल जाने की आशा हो; कभी-कभी केवल उसका व्यथित विलाप सुनायी देता।... थोड़ी देर बाद वह अपने घुटने के बल उठ खड़ा हुआ और सीने पर दोनों हाथ बांधकर चुप हो गया।

तनिक भी आवाज़ किये बिना मैंने दरवाज़े में से अपना सिर अंदर बढ़ाया और देखकर स्तब्ध रह गया। ग्रीशा बिल्कुल हिल-डुल नहीं रहा था; गहरी आहें उसके सीने से निकल रही थीं; उसकी अंधी आंख की धुंधली पुतली पर अटका हुआ एक आंसू चांदनी में चमक रहा था।

"जैसा तू चाहेगा वैसा ही होगा!" अचानक वह ऐसे भाव से चिल्लाया जिसे वर्णन नहीं किया जा सकता, माथे के बल फ़र्श पर गिर पड़ा और बच्चों की तरह सिसक-सिसककर रोने लगा।

तब से बहुत समय बीत चुका है; अतीत की बहुत-सी स्मृतियों का मेरे लिए कोई महत्व नहीं रह गया है, और वे स्वप्नों की तरह धूमिल और अस्पष्ट पड़ गयी हैं; रमता जोगी ग्रीशा भी न जाने कब का अपनी अंतिम तीर्थयात्रा पूरी कर चुका है; लेकिन मुझमें उसने जो

भावना जागृत की, वह मेरी स्मृति से कभी नहीं मिट सकती।

धन्य हो, महान ईसा-भक्त ग्रीशा! तुम्हारी आस्था इतनी दृढ़ थी कि तुम ईश्वर के सान्निध्य को अनुभव कर सकते थे; तुम्हारा प्रेम इतना अगाध था कि तुम्हारे होंटों से शब्द अपने आप ही प्रवाहित होते रहते थे – तुम अपनी तर्क-बुद्धि से उन्हें परखते नहीं थे।... और कितने अच्छे ढंग से तुमने उसकी महानता का गौरव-गान किया जब कोई शब्द न मिलने पर तुम जमीन पर गिर पड़े और फूट-फूटकर रोने लगे!

जिस भावातिरेक से मैं ग्रीशा की बातें सुन रहा था वह बहुत देर तक बना नही रह सकता था, सबसे पहले तो इसलिए कि मेरी जिज्ञासा तुष्ट हो गयी थी, और दूसरे इसलिए कि एक ही स्थिति में बैठे-बैठे मेरी टांगें अकड़ गयी थीं, और मैं उस आम खुसुर-पुसुर और हलचल में शामिल हो जाना चाहता था जो मेरे पीछे अंधेरे में सुनायी दे रही थी। किसी ने मेरा हाथ पकड़कर फुसफुसाकर कहा, "किसका हाथ है यह?" घुप अंधेरा था लेकिन स्पर्श से और मेरे बग़ल में ही सुनायी दे रहे कानाफूसी के स्वर से मैं जान गया कि वह कात्या थी।

बिल्कुल अनजाने ही मैंने उसकी बांह पकड़ ली, जो सिर्फ़ कुहनी तक आस्तीन से ढकी हुई थी, और उसे अपने होंटों तक ले आया। कात्या चकरा गयी होगी, क्योंकि उसने झटककर अपना हाथ छुड़ा लिया और ऐसा करने में वह कमरे में रखी हुई एक टूटी कुर्सी से जा टकरायी। ग्रीशा ने प्रार्थना करते हुए मुड़कर देखा और कमरे के चारों कोनों पर सलीब का निशान बनाने लगा। हम आपस में काफ़ी ऊंचे स्वर में खुसुर-पुसुर करते हुए कोठरी में से शोर मचाते हुए भागे।

अध्याय १२

नताल्या साविश्ना

पिछली शताब्दी के लगभग मध्य में खबारोव्का गांव के आंगनों में नतशिया नाम की एक छोटी-सी लड़की दौड़ती-भागती रहती थी; उसके कपड़े हमेशा फटे-पुराने रहते थे और वह नंगे पांव होती थी,

लेकिन गदबदे शरीर और गुलाबी गालोंवाली यह लड़की हमेंशा मस्त रहती थी। मेरे नाना ने उसे ऊपर की मंज़िल पर पहुंचा दिया था ; मतलब यह कि उसके बाप साव्वा की सेवाओं से ख़ुश होकर, जो कृषि-दास था और क्लेरिनेट बजाता था, और उसके अनुरोध पर नतशिया को नानी की एक नौकरानी बना दिया था। नौकरानी की हैसियत मे नतशिया अपने मृदुल स्वभाव और अपने उत्साह के कारण सबसे बढ़-चढ़कर मानी जाने लगी थी ; जब मां का जन्म हुआ और एक धाय की ज़रूरत पड़ी तो यह काम नतशिया को सौंपा गया ; और अपने इस नये काम में अपनी मेहनत, निष्ठा और अपनी नवजात मालकिन से लगन के कारण उसने प्रशंसा भी प्राप्त की और उसे पुरस्कार भी बहुत मिले। लेकिन मुस्तैद नौजवान ख़ानसामां फ़ोका ने, जिसे अपने काम के सिलसिले में नतशिया से मिलने का अकसर मौक़ा मिलता था, अपने पाउडर लगे हुए बालों और बकलसदार जुर्राबों से उसके भोले-भाले प्यार-भरे हृदय को अपने वश में कर लिया। अपने प्रेम से साहस पाकर वह स्वयं मेरे नाना के पास गयी और फ़ोका से विवाह करने की इजाज़त मांगी। नाना ने उसकी इस प्रार्थना को कृतघ्नता ठहराया ; उन्होंने उसे उनकी आंखों के सामने से दूर हो जाने को कहा और सज़ा के तौर पर उस बेचारी लड़की को स्तेपी में अपने एक गांव में गायें चराने के लिए भेज दिया। लेकिन छः महीने बाद ही, जब कोई उसकी जगह लेने लायक़ न मिल सका, तो नतशिया को फिर अपने काम पर वापस बुला लिया गया। वापस आकर वह मेरे नाना के पास गयी, उनके पांवों पर गिर पड़ी और उनसे गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की कि वह उस पर पहले की तरह ही अपनी दयादृष्टि और अपनी कृपा बनाये रखें, और उसकी नादानी की हरकत को भुला दें, और उसने वचन दिया कि ऐसी भूल उससे फिर कभी न होगी। और उसने अपना यह वचन निभाया।

उस दिन से लड़की नतशिया न रहकर आदर भाव से नताल्या साविश्ना पुकारी जाने लगी और टोपी पहनने लगी। उसने अपने प्यार का सारा ख़ज़ाना अपनी नन्ही मालकिन पर लुटा दिया।

बाद में जब उसकी जगह एक गवर्नेस ने ले ली, तो उसे घर-गृहस्थी की रखवाली का काम दे दिया गया और सारे कपड़े-लत्ते और

खाने-पीने का सारा सामान उसकी निगरानी में सौंप दिया गया। उसने अपनी ये नयी ज़िम्मेदारियां भी वैसी ही लगन और उत्साह के साथ निभायीं। उसने अपना जीवन बस अपने मालिक की संपत्ति की रक्षा के लिए अर्पित कर दिया था; उसे हर तरफ़ फ़ज़ूलखर्ची, बर्बादी और लूट दिखायी देती थी और वह इन सब बातों को रोकना अपना कर्त्तव्य समझती थी।

जब मां की शादी हुई, तो नताल्या साविश्ना को उसकी बीस साल की सेवाओं और परिवार के प्रति उसकी लगन के लिए पुरस्कार देने की इच्छा से उन्होंने उसे अपने पास बुलाया, और बहुत ही सुखद शब्दों में अपना प्यार और आभार प्रकट करते हुए उसे एक सरकारी दस्तावेज़ दिया जिसमें नताल्या साविश्ना को एक स्वतंत्र स्त्री घोषित किया गया था; * और साथ ही यह भी कहा कि वह हमारे घर में चाहे काम करे या न करे उसे ३०० रूबल सालाना की पेंशन मिलेगी। नताल्या साविश्ना यह सब कुछ चुपचाप सुनती रही; फिर दस्तावेज़ अपने हाथों में लेकर उसने उसे बहुत गुस्से से देखा, मुंह ही मुंह में कुछ बुड़बुड़ायी और अपने पीछे दरवाजा ज़ोर से बंद करके तेज़ी से कमरे के बाहर निकल गयी। उसके इस विचित्र आचरण से चकित होकर मां कुछ देर बाद नताल्या साविश्ना की कोठरी में गयीं। उन्होंने देखा कि वह अपने संदूक़ पर बैठी थी, उसकी आंखों से आंसुओं की धारा बह रही थी, वह अपना रूमाल अपनी उंगलियों में मसल रही थी और अपनी आज़ादी के दस्तावेज़ की छोटी-छोटी चिंदियों को एकटक देखे जा रही थी जो उसके सामने फ़र्श पर बिखरी हुई थीं।

"बात क्या है, मेरी अच्छी नताल्या साविश्ना?" मां ने उसका हाथ अपना हाथों में लेकर पूछा।

"कुछ भी नहीं, मालकिन," उसने जवाब दिया। "मैं शायद आपको बुरी लगने लगी हूं, इसी वजह से आप मुझे इस घर से निकाले दे रही हैं।... अच्छी बात है, मैं चली जाऊंगी।"

उसने अपना हाथ खींच लिया और बड़ी कोशिश से आंसू रोककर वह कमरे से बाहर निकल जाने को ही थी कि मां ने उसे रोककर अपने

---

* यह घटना कृषि-दासता के ज़माने की है। —अनु०

सीने से लगा लिया और दोनों बड़ी देर तक एकसाथ रोती रहीं।

जब तक की मुझे याद है तबसे मुझे नताल्या साविश्ना की, उसके प्यार और उसके नरमी के व्यवहार की भी याद है; लेकिन अब जाकर मैं उन सब चीजों का असली मूल्य समझ पाया हूं – उस वक्त यह बात कभी मेरे दिमाग़ में आयी ही नहीं थी कि वह बूढ़ी औरत कैसी अनोखी और कैसी लाजवाब है। इतना ही नहीं कि वह कभी अपने बारे में कुछ कहती नहीं थी, बल्कि ऐसा लगता था कि वह अपने बारे में कभी सोचती भी नहीं थी: प्यार और आत्म-बलिदान ही उसका सारा जीवन था। हम लोगों के प्रति उसके कोमल, निःस्वार्थ प्रेम का मैं इतना आदी हो गया था कि मैं कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था कि इसके अलावा भी कोई बात हो सकती है; कभी उसका रत्ती-भर भी आभार नहीं माना और कभी क्षण भर के लिए भी रुककर अपने आपमें यह नहीं पूछा कि वह सुखी, संतुष्ट है या नहीं।

अकसर, किसी न किसी बहाने मैं अपनी पढ़ाई छोड़कर उसकी कोठरी में भाग जाता था और उसकी उपस्थिति में तनिक भी उलझन महसूस किये बिना ज़ोर-ज़ोर से बोलकर कल्पनाओं के ताने-बाने बुनने लगता था। वह हमेशा किसी न किसी चीज़ में व्यस्त रहती थी: या तो किसी के लिए मोज़ा बुनती होती थी, या उसकी कोठरी में जो ढेरों संदूक़ रखे थे उनमें से किसी चीज़ को खखोलती रहती थी, या कपड़ों का हिसाब मिलाती रहती थी, और अपना काम करते हुए मेरी सारी बकवास भी सुनती रहती थी, "कि जब मैं बड़ा जनरल बन जाऊंगा तो एक बहुत ख़ूबसूरत लड़की से शादी करूंगा, एक कत्थई घोड़ा ख़रीदूंगा, बिल्लूर का एक घर बनवाऊंगा, और कार्ल इवानिच के सारे रिश्तेदारों को सैक्सनी से बुलवाऊंगा," वग़ैरह-वग़ैरह; वह कहती, "ज़रूर, बेटा, ज़रूर।" आम तौर पर जब मैं चलने के लिए उठता तो वह एक नीला संदूक़चा खोलती, जिसके ढक्कन के अंदर की ओर – जैसा कि मुझे अब याद आता है – एक हुसार की तस्वीर, एक पोमेड के डिब्बे से काटी हुई तस्वीर, और एक वोलोद्या की बनायी हुई ड्राइंग चिपकी थी, और उसमें से एक अगरबत्ती निकालकर सुलगाती और उसे घुमा-घुमाकर कहती:

"वेटा, यह वावा आदम के ज़माने की अगरवत्ती है। जव तुम्हारे स्वर्गीय नाना – भगवान उनकी आत्मा को शांति दे! – तुर्कों के खिलाफ़ लड़ने गये थे तो वहां से लौटने पर साथ लाये थे। यह आखिरी टुकड़ा वचा है," वह आह भरकर कहती।

नताल्या साविश्ना की कोठरी में जो संदूक़ भरे हुए थे उनमें दुनिया की कोई ऐसी चीज़ नहीं थी जो न हो। जव भी किसी चीज़ की ज़रूरत पड़ती तो घर में लोग कहते, "चलो, नताल्या साविश्ना से पूछें"; और, सच तो यह है कि थोड़ी देर खखोलने के वाद वह हमेशा ज़रूरत की चीज़ खोज निकालती। "अच्छा ही हुआ कि मैंने छिपाकर रख ली थी," वह कहती। उन संदूक़ों में हज़ारों ऐसी चीज़ें थीं जिनके वारे में उसे छोड़कर घर में न तो किसी को कुछ मालूम था और न ही किसी को उनमें से किसी चीज की कोई परवाह थी।

एक वार मुझे उस पर वहुत ग़ुस्सा आया। हुआ यह कि खाना खाते वक़्त अपने लिए थोड़ा-सा क्वास उंडेलते हुए सुराही मेरे हाथ से छूट गयी और मेज़पोश पर धव्वा पड़ गया।

"वुलाओ नताल्या साविश्ना को, दिखाओ उसे कि उसके लाड़ले ने क्या किया है," मां ने कहा।

नताल्या साविश्ना आयी, और मैंने जो छीछालेदर की थी उसे देखकर उसने अपना सिर हिलाया; फिर मां ने उसके कान में कुछ कहा और वह उंगली हिलाकर मुझे धमकाते हुए वाहर चली गयी।

खाना खाकर मैं वहुत खुश-खुश उछलता-कूदता वड़े कमरे की ओर जा रहा था कि इतने में नताल्या साविश्ना दरवाज़े के पीछे से अचानक हाथ में मेज़पोश लिये हुए निकली, उसने मुझे पकड़ लिया और मेरे लाख हाथ-पांव पटकने के वावजूद वह कपड़े का गीला हिस्सा मेरे चेहरे पर रगड़ने लगी और उपदेश देते हुए कहने लगी, "अव कभी मेज़-पोश गंदा न करना, अव कभी मेज़पोश गंदा न करना!" मुझे इतना वुरा लगा कि मैं ग़ुस्से के मारे रो पड़ा।

"यह मजाल कैसे हुई उसकी, जो सिर्फ़ नौकरानी नतशिया ही है, कि उसने गीला मेज़पोश मेरे मुंह पर मारा, मुझे 'तू' कहा, जैसे मैं कोई नौकर छोकरा हूं!" मैंने कमरे में इधर से उधर टहलते

हुए और आंसू पीते हुए मन ही मन कहा। "कैसी बेहूदा बात है!"

जैसे ही उसने देखा कि मैं रो रहा हूं वह मुझे उसी तरह इधर से उधर टहलता छोड़कर भाग गयी ; मैं सोच रहा था कि बदतमीज़ नताल्या ने मेरा जो अपमान किया था उसका बदला कैसे लिया जाये।

कुछ ही मिनट बाद नताल्या साविश्ना लौट आयी, बहुत डरते-डरते वह मेरे पास आयी और मेरा ग़ुस्सा शांत करने की कोशिश करने लगी।

"अच्छा, अब रोना ख़तम कीजिये, छोटे मालिक। मुझे माफ़ कर दीजिये, मैं तो नासमझ बुढ़िया हूं ही... क़सूर मेरा ही है... मेरे राजा बेटे, मुझे माफ़ कर देंगे न? यह लीजिये, यह आपके लिये है।"

अपने रूमाल के नीचे से उसने लाल काग़ज़ में लिपटा हुआ एक पैकेट निकाला, जिसमें दो रेवड़ियां थीं और एक अंजीर, और कांपते हाथों से उसने वह पैकेट मेरी ओर बढ़ा दिया। मैं उस नेक बुढ़िया से आंखें नहीं मिला सका ; मैंने मुंह फेर लिया, उसका उपहार ले लिया और मेरे आंसू फिर बह चले – इस बार ग़ुस्से के मारे नहीं, बल्कि प्यार और लज्जा के मारे।

अध्याय १४

विदाई

जिस दिन की घटनाओं का मैंने वर्णन किया है उसके अगले दिन लगभग बारह बजे ब्रीच्का* और बग्घी दरवाज़े पर खड़ी थीं। निकोलाई सफ़र के लिए तैयार था – मतलब यह कि उसने पतलून के पायंचे अपने बूट में खोंस रखे थे, और अपने पुराने कोट पर कसकर पेटी बांध रखी थी। वह ब्रीच्का में खड़ा सीट के नीचे ओवरकोट और तकिये ठूंस रहा था ; जब उनका ढेर उसे बहुत ऊंचा लगने लगता

* पिछली शताब्दी में रूस में प्रचलित एक विशेष प्रकार की घोड़ागाड़ी। – अनु०

तो वह ख़ुद गद्दों पर खड़ा हो जाता और उन्हें दवाने के लिए उन पर कूदने लगता।

"भगवान के लिए, निकोलाई द्मित्रिच, मालिक का वक्सा भी यहीं कहीं रख लो न," पापा के नौकर ने वग्घी से वाहर की ओर झुककर हांपते हुए कहा। "ज़्यादा जगह नहीं घेरेगा।"

"तुम्हें पहले कहना चाहिए था, मिख़ेई इवानिच," निकोलाई ने जल्दी से और गुस्से से जवाव दिया और अपना पूरा ज़ोर लगाकर एक पार्सल व्रीच्का के फ़र्श पर फेंक दिया। "हे भगवान, मेरा सिर वैसे ही चकरा रहा है और तुम आ गये अपना वक्सा लेकर!" उसने टोपी थोड़ी-सी उठाकर धूप में झुलसे हुए अपने माथे पर से पसीने की वड़ी-वड़ी बूंदें पोंछते हुए कहा।

कोट, काफ़्तान, कमीज़ें पहने हुए नंगे-सिर नौकर और धारीदार रूमाल वांधे, मामूली कपड़े पहने, गोद में वच्चे लिये हुए औरतें, और नंगे-पांव वच्चे वरसाती के आस-पास खड़े गाड़ियों को घूर रहे थे और आपस में वातें कर रहे थे। झुकी हुई कमरवाले एक वूढ़े कोचवान ने, जो जाड़े की टोपी लगाये था और वनात का लंवा कोट पहने था, वग्घी का वम अपने हाथ में पकड़ रखा था; उसने वड़े ध्यान से उसे जांचा और वहुत सोच में डूवे रहकर यह परखा कि वह कैसा काम कर रहा है। दूसरा कोचवान अच्छी सूरत-शक्ल का नौजवान आदमी था, वह वग़ल में लाल रंग के मोटे सूती कपड़े की कलियों-वाली लंवी-सी सफ़ेद कमीज़ पहने था और सिर पर उसने काले मेमने के ऊन की टोपी लगा रखी थी जिसे वह अपने सुनहरे घुंघराले वालों को खुजाते हुए पहले एक कान पर झुकाता था और फिर दूसरे कान पर; उसने अपना कोट कोचवान की सीट पर रख दिया, घोड़ों की रास भी वहीं फेंक दी, और अपनी वटी हुई चावुक फटकारता हुआ कभी अपने वूट जूतों को घूरने लगा और कभी उन कोचवानों को जो व्रीच्का में तेल दे रहे थे। उनमें से एक जोर लगाकर पहिया उठा रहा था; दूसरा पहिये के ऊपर झुककर वड़ी सावधानी से धुरे में तेल दे रहा था, और अंत में नीचे से पहिये के घेरे पर भी उसने तेल पोत दिया ताकि उसके कपड़े में जितना तेल था वह वेकार न जाये। वाड़े के पास हर रंग के वहुत थके हुए वदली के घोड़े अपनी दुमों से

मक्खियां उड़ा रहे थे। उनमें से कुछ अपने झबरे सजे हुए पैर बारी-बारी से आगे बढ़ा रहे थे, आंखें मूंदे ऊंघ रहे थे; कुछ दूसरे चुपचाप खड़े-खड़े उकताकर एक-दूसरे से रगड़ खा रहे थे या बरसाती के बग़ल में उगी हुई फ़र्न की पत्तियां और डंठलें खूंट रहे थे। कुछ ग्रेहाउंड कुत्ते धूप में लेटे थे; कुछ और कुत्ते गाड़ियों के नीचे छांव में टहल रहे थे और धुरियों के चारों ओर लगी हुई चर्बी चाट रहे थे। पूरे वातावरण में गर्द छायी हुई थी; क्षितिज कुछ-कुछ सुरमई बैंगनी रंग का था, लेकिन आसमान पर बादल का छोटा-सा धब्बा तक नहीं था। तेज़ पछुवां हवा सड़क पर और खेतों में धूल के बगूले उठा रही थी, बाग़ में ऊंचे-ऊंचे लिंडेन और बर्च के पेड़ों की फुनगियों को झुका रही थी और सूखी पीली पत्तियों को उड़ाकर दूर ले जा रही थी। मैं खिड़की के पास बैठा बड़ी अधीरता से इन सब तैयारियों के पूरे होने की राह देख रहा था।

जब सब लोग आख़िरी बार कुछ मिनट साथ बिताने के लिए ड्राइंग-रूम मे गोल मेज़ के चारों ओर जमा हो गये, तब मेरी समझ में यह बात नहीं आयी थी कि हमारे सामने एक कष्टदायक क्षण आनेवाला है। मेरे दिमाग़ में बहुत ही मामूली इधर-उधर के विचार घूम रहे थे। मैं यह अटकल लगाने की कोशिश कर रहा था कि कौन-सा कोचवान बग्घी चलायेगा और कौन-सा ब्रीच्का, कौन-कौन पापा के साथ जायेगा और कौन-कौन कार्ल इवानिच के साथ, और यह कि ये लोग मुझे एक बड़े-से स्कार्फ़ और एक लंबे-से रूई-भरे कोट में लपेटकर गठरी क्यों बनाना चाहते हैं?

"क्या मैं ऐसा नाज़ुक हूं? मैं जम तो जाऊंगा नहीं। यह सब कुछ जितनी जल्दी ख़त्म हो जाये उतना ही अच्छा है! मैं तो बस गाड़ी में बैठकर चल पड़ना चाहता हूं।"

नताल्या साविश्ना हाथ में फ़ेहरिस्त संभाले अंदर आयी और उसने मां से पूछा, "बच्चों के कपड़ों की फ़ेहरिस्त मैं किसे दे दूं?" रोते-रोते उसकी आंखें सूज गयी थीं।

"निकोलाई को दे दो और आकर बच्चों से विदा हो लो।"

बूढ़ी औरत ने कुछ कहने की कोशिश की, लेकिन वह अचानक रुक गयी, उसने अपना चेहरा रूमाल से ढक लिया और हाथ हिलाती हुई कमरे से बाहर चली गयी। उसे इस तरह हाथ हिलाते देखकर

मेरा दिल कुछ कुढ़ने लगा; लेकिन यात्रा पर चल पड़ने की उत्कंठा उस भावना से अधिक प्रबल थी, और मैं उदासीन भाव से मां के साथ पापा की बातचीत सुनता रहा। वे ऐसी चीज़ों के बारे में बातें कर रहे थे जिनमें, साफ़ लग रहा था, दोनों में से किसी को भी कोई दिलचस्पी नहीं थी: घर के लिए क्या-क्या ख़रीदना ज़रूरी है; प्रिंसेस सोफ़ी और मादाम जूली से क्या कहना होगा; और सफ़र कैसा रहेगा।

फ़ोका आया और चौखट पर खड़े-खड़े उसने घोषणा की, "गाड़ियां तैयार हैं।" यह बात उसने बहुत कुछ उसी स्वर में कही जैसे वह एलान करता था, "खाना मेज़ पर लग गया।" मैंने देखा कि यह घोषणा सुनकर मां सिहर उठीं और उनका रंग पीला पड़ गया मानो वह इसकी उम्मीद न कर रही हों।

फ़ोका से कमरे के सारे दरवाज़े बंद कर देने को कहा गया।* मुझे यह बात बहुत अजीब लगी, "मानो हम सब लोग किसी से छिप रहे हों।"

जब सब लोग बैठ गये तो फ़ोका भी एक कुर्सी के किनारे पर बैठ गया; लेकिन वह अभी बैठा ही था कि एक दरवाज़े के चूं-चूं करने की आवाज़ आयी और सबने मुड़कर देखा। नताल्या साविश्ना जल्दी से अंदर आयी और अपनी नज़रें ऊपर उठाये बिना दरवाज़े के पास उसी कुर्सी पर बैठ गयी जिस पर फ़ोका बैठा था। मुझे ऐसा लगता है कि फ़ोका का नंगा सिर और झुर्रियोंदार भावशून्य चेहरा और सहृदय बूढ़ी औरत की झुकी हुई आकृति और टोपी के नीचे से झांकते हुए उसके सफ़ेद बाल मेरी आंखों के सामने अब भी घूम रहे हैं। वे दोनों एक ही कुर्सी पर एक-दूसरे से सटकर दबे-सिकुड़े बैठे थे और दोनों ही अटपटा महसूस कर रहे थे।

इन सब बातों से मुझे कोई सरोकार नहीं था और मैं बेचैन हो रहा था। दरवाज़े बंद करके हम लोग वहां जो दस सेकंड तक बैठे वे मुझे घंटे भर के बराबर लग रहे थे। आख़िरकार हम लोग उठे,

---

* एक पुराना रूसी रिवाज: लंबी यात्रा पर निकलने से पहले सब लोग सारे दरवाज़े बंद करके थोड़ी देर साथ बैठते हैं। – अनु०

हमने अपने सीनों पर सलीब का निशान बनाया और विदा होने लगे। पापा ने मां को गले लगाकर कई बार चूमा।

"बस बहुत हो गया, माई डियर," पापा ने कहा। "हम लोग हमेशा के लिए तो नहीं अलग हो रहे हैं।"

"फिर भी मन उदास तो होता ही है!" मां ने रुंधी हुई कांपती आवाज़ में कहा।

वह आवाज़ सुनते ही और उनके कांपते हुए होंटों और उनकी आंसू-भरी आंखों को देखते ही मैं सब कुछ भूल गया, और इतना उदास, दुःखी और सहमा हुआ महसूस करने लगा कि उन्हें विदा करने के बजाय मेरा जी चाह रहा था कि मैं वहां से भाग जाऊं। उसी क्षण यह बात मेरी समझ में आयी कि जब उन्होंने पापा को गले लगाया था उसी वक़्त शायद उन्होंने हम लोगों से भी विदा ले ली थी।

उन्होंने वोलोद्या को इतनी बार प्यार किया और इतनी बार उसके ऊपर सलीब का निशान बनाया कि मैं यह सोचकर कि अब वह मेरी ओर मुड़ेंगी एक क़दम आगे बढ़ आया। लेकिन वह उसे आशीर्वाद देती रहीं और सीने से चिपटाती रहीं। आख़िरकार मैं उनके गले से लग गया और उनसे चिपटकर बेतहाशा फूट-फूटकर रोता रहा और अपना दुःख भुला नहीं सका।

जब हम गाड़ी में बैठने के लिए बाहर निकले तो हमें विदा करने को छोटे कमरे में सारे नौकरों ने हमें घेर लिया। उनका बार-बार यह कहना कि "मालिक, ज़रा अपना हाथ हमें भी दीजियेगा," हमारे कंधों पर जोरदार आवाज़ के साथ उनके प्यार, उनके सिर से आती हुई चर्बी की बू ने मेरे मन में गहरी झुंझलाहट पैदा कर दी। इसी भावना के प्रभाव के कारण हुआ यह कि जब नताल्या साविश्ना ने आंसुओं में नहाये चेहरे से मुझे विदा किया तो मैंने बड़ी रुखाई से बस उसकी टोपी को चूम लिया।

बड़ी विचित्र बात है कि उन सभी नौकरों के चेहरे मुझे अभी तक दिखायी देते हैं, और मैं उनकी हूबहू तस्वीर एक-एक ब्योरे के साथ बना सकता हूं; लेकिन मां की सूरत और उनकी मुद्रा मेरे दिमाग़ से बिल्कुल ग़ायब हो गयी है: शायद इसलिए कि उस पूरे दौरान में मैं एक बार भी उन्हें देखने का साहस नहीं जुटा पाया था। मुझे उस

समय ऐसा लग रहा था कि अगर मैंने ऐसा किया तो उनकी व्यथा और मेरी व्यथा बढ़कर असह्यता की सीमा को भी पार कर जायेगी।

मैं दूसरों से आगे भागकर बग्घी तक पहुंच गया और पीछेवाली सीट पर बैठ गया। चूंकि बग्घी की छतरी चढ़ी हुई थी इसलिए मुझे कुछ दिखायी नहीं दे रहा था, लेकिन मेरा मन मुझसे कह रहा था कि मां अभी वहीं होंगी।

"उन्हें एक बार और देख लूं या नहीं?... अच्छा, बस आख़िरी बार!" मैंने मन ही मन कहा और बरसाती की ओर बग्घी से अपना सिर निकाला। उसी समय मां भी इसी इरादे से गाड़ी के दूसरी तरफ़ आ गयीं और उन्होंने मेरा नाम लेकर पुकारा। अपने पीछे उनकी आवाज सुनकर मैं पीछे मुड़ा, लेकिन मैं ऐसे झटके से मुड़ा था कि हम दोनों के सिर टकरा गये। वह बहुत उदास भाव से मुस्करायीं और आख़िरी बार उन्होंने बड़ी देर तक बड़े स्नेह से मुझे प्यार किया।

गाड़ी जब कई गज़ आगे निकल गयी तब कहीं जाकर मुझे उनको देखने का साहस हुआ। उनके सिर पर बंधा हुआ आसमानी रूमाल हवा से ऊपर उड़ गया था। सिर झुकाये और अपना मुंह दोनों हाथों से ढांपे वह सीढ़ियां चढ़ रही थीं। फ़ोका उन्हें सहारा दे रहा था।

पापा मेरे बग़ल में चुपचाप बैठे थे। मेरे आंसू उमड़े पड़ रहे थे और गला इतनी बुरी तरह रुंध गया था कि मुझे डर था कि मेरा दम घुट जायेगा।... बड़ी सड़क पर पहुंचने पर हमें एक सफ़ेद रूमाल दिखायी दिया जिसे कोई बाल्कनी पर खड़ा हवा में हिला रहा था। मैंने अपना रूमाल हिलाया और ऐसा करने से मेरा मन कुछ शांत हुआ। मैं रोता रहा, और यह सोचकर मुझे ख़ुशी और तसल्ली हो रही थी कि मेरे आंसू मेरे हृदय की कोमलता का प्रमाण हैं।

कोई एक वेर्स्ता चलने के बाद मैं संभला और मैंने अपना ध्यान अपनी आंखों के सबसे निकट की चीज़ पर केंद्रित किया – बग्घी के मेरी तरफ़वाले भागते हुए चितकबरे घोड़े के पुट पर। मैं देख रहा था कि वह जानवर कैसे अपनी दुम फटकारता था, किस तरह वह एक के बाद दूसरी टांग रखकर चलता था, किस तरह जब साईस की बटी हुई चाबुक उसकी पीठ पर पड़ती थी तो उसकी टांगें एक साथ उठने लगती थीं। मैं देख रहा था कि किस तरह उसका साज़

उसकी पीठ पर इधर-उधर उछल रहा था, और साज़ पर लगे हुए छल्ले भी ; मैं बड़ी देर तक एकटक देखता रहा, यहां तक कि दुम के पास कहीं-कहीं साज के तस्मों पर झाग दिखायी देने लगा। मैं अपने चारों ओर देखने लगा – पकी हुई रई के लहलहाते खेतों को, गहरे रंग की मिट्टीवाले जाड़े की बोआई के खेतों को जिन पर कहीं-कहीं हल लिये हुए कोई किसान या अपने बछेड़े को साथ लेकर चलती हुई कोई घोड़ी दिखायी दे जाती थी, मैं मील के पत्थरों को देख रहा था, मैंने बग़ल से गाड़ी में कोचवान के बैठने की जगह की ओर भी देखा कि कौन-सा कोचवान हमारी गाड़ी चला रहा था ; मेरे चेहरे पर आंसू अभी तक सूखे नहीं थे, लेकिन मेरे विचार मां से बहुत दूर भटक चुके थे जिन्हें मैं शायद हमेशा के लिए छोड़ आया था। लेकिन हर याद के साथ मैं उनके बारे में सोचने लगता था। मुझे अचानक उस कुकुरमुत्ते की याद आयी जो मुझे एक दिन पहले बर्च-वृक्षों के बीच से होकर जानेवाली सड़क पर मिला था और मुझे याद आया कि ल्यूबा और कात्या में इस बात पर झगड़ा हुआ था कि उसे कौन तोड़े, और मुझे यह भी याद आया कि हम लोगों से बिछुड़ने पर वे कैसे फूट-फूटकर रोयी थीं।

उनसे, नताल्या साविश्ना से, और बर्च-वृक्षों के बीचवाली सड़क से और फ़ोका से बिछुड़कर मैं कितना उदास महसूस कर रहा था! और यहां तक कि दिल की खोटी मीमी से भी बिछुड़ने का मुझे दुःख था सबसे अलग होकर मन भारी हो गया। और बेचारी मां? मेरी आंखों में आंसू फिर भर आये, लेकिन बहुत देर तक के लिए नहीं।

अध्याय १५

बचपन

हर्षमय, उल्लासमय बचपन, वह आनंद-भरा समय जो कभी वापस नहीं लाया जा सकता! यह कैसे हो सकता है कि मैं उससे प्यार न करूं या उसकी सुखद स्मृतियों को अपने हृदय में संजोये न रहूं? ये स्मृतियां मेरी आत्मा को नयी स्फूर्ति प्रदान करती हैं और उसे ऊंचा

उठाती हैं, वे मेरे लिए उल्लास का एक अक्षय स्रोत हैं।

भाग-दौड़ से थककर मैं अपनी ऊंची कुर्सी पर चाय की मेज के सामने बैठा हूं; काफ़ी देर हो चुकी है: मैं अपना दूध और शकर का प्याला न जाने कब का पीकर ख़त्म कर चुका हूं; हालांकि नींद से मेरी आंखें बंद हुई जा रही हैं, लेकिन मैं अपनी जगह से हिलता नहीं – मैं बैठा सुनता रहता हूं। और कैसे न सुनूं मैं, मां किसी से बातें कर रही हैं, और उनके बोलने की आवाज़ में बड़ी मिठास है। वह आवाज़ ही मेरे हृदय के लिए न जाने कितने महत्व की है! नींद के कारण धुंधलायी हुई आंखों से मैं उनके चेहरे को एकटक देख रहा हूं, और यकायक वह छोटी हो जाती है, इतनी छोटी – उनका चेहरा छोटे-से बटन से बड़ा नहीं रह जाता, फिर भी वह मुझे उतना ही साफ़ दिखायी दे रहा है। मैं देखता हूं कि मुझ पर उनकी नज़र पड़ी और वह मुस्करायीं। उन्हें इतना छोटा देखना मुझे बहुत अच्छा लगता है। मैं अपनी पलकें एक-दूसरे के और पास ले आता हूं, और वह उन लड़कों से बड़ी नहीं रह जातीं जो आंख की पुतली में दिखायी देते हैं; लेकिन मैं हिल जाता हूं और भ्रम नष्ट हो जाता है। मैं अपनी आंखें सिकोड़कर, उन्हें घुमा-फिराकर हर तरह से उस भ्रम का फिर से निर्माण करने की कोशिश करता हूं, लेकिन व्यर्थ।

मैं उठकर एक आराम-कुर्सी पर चढ़ जाता हूं और आराम से लेट जाता हूं।

"तुम फिर सो जाओगे, बेटे," मां कहती हैं; "जाओ, ऊपर जाकर सोओ।"

"मैं सोना नहीं चाहता, मां," मैं जवाब देता हूं और मेरा दिमाग़ धुंधले-धुंधले मीठे सपनों से भर उठता है; बचपन की स्वस्थ नींद मेरी पलकों को मूंद देती है, और एक क्षण में मेरी चेतना ग़ायब हो जाती है, और मैं तब तक सोता रहता हूं जब तक कि मुझे जगाया नहीं जाता। सपनों में मैं महसूस करता हूं कि किसी का कोमल हाथ मुझे छू रहा है; मैं उसके स्पर्श से ही उस हाथ को पहचान लेता हूं और सोते-सोते ही मैं उसे पकड़ लेता हूं और बड़े प्यार से, बेहद प्यार से अपने होंटों तक लाकर चूम लेता हूं।

सब लोग जा चुके हैं; ड्राइंग-रूम में बस एक मोमबत्ती जल रही

है। मां ने कहा है कि वह खुद मुझे जगा देंगी; जिस आराम-कुर्सी पर मैं सो रहा हूं उस पर वही आकर बैठ गयी हैं और अपने लाजवाब मुलायम हाथ से मेरे बालों को सहला रही हैं, और मेरे कानों में उनकी प्यारी-प्यारी जानी-पहचानी आवाज़ गूंज रही है:

"उठ जाओ, राजे बेटे: सोने का वक़्त हो गया।"

किसी की उदासीन दृष्टि के कारण वह अटपटा महसूस नहीं करतीं: अपना सारा प्यार-दुलार मेरे ऊपर लुटा देने में वह लजातीं नहीं। मैं हिलता नहीं हूं और बड़े भावावेग से उनका हाथ चूम लेता हूं।

"उठ जाओ, मेरे लाड़ले।"

वह अपना दूसरा हाथ मेरी गर्दन में डाल लेती हैं, और उनकी पतली-पतली उंगलियां मुझे गुदगुदाने लगती हैं। कमरे में सन्नाटा है और लगभग बिल्कुल घुप अंधेरा है; गुदगुदी की वजह से और कच्ची नींद से जगा दिये जाने की वजह से मैं कुछ बेचैन हूं; मां मेरे पास बैठी हैं, वह मुझे छूती हैं, और मुझे उनकी सुगंध-सुवास का और उनकी आवाज़ का आभास हो रहा है। मैं उछलकर अपनी बांहें उनके गले में डाल देता हूं, अपना सिर उनके सीने से सटा लेता हूं और आह भरकर कहता हूं:

"मां, मेरी अच्छी-अच्छी, प्यारी-प्यारी मां, मैं तुमसे कितना प्यार करता हूं!"

उनके होंटों पर उनकी वही उदास मंत्रमुग्ध कर लेनेवाली मुस्कराहट खिल उठती है; वह मेरा सिर अपने दोनों हाथों में लेती हैं और मेरा माथा चूमकर उसे अपने घुटनों पर टिका लेती हैं।

"तो तुम मुझे बहुत प्यार करते हो?" वह एक क्षण के लिए चुप हो जाती हैं, फिर कहती हैं, "तुम मुझसे हमेशा प्यार करना, मुझे कभी भुलाना नहीं। जब तुम्हारी मां नहीं रह जायेगी तब तुम उसे भूलोगे तो नहीं? तुम उसे भूल तो नहीं जाओगे, बेटे?"

वह मुझे और भी अधिक स्नेह से चूम लेती हैं।

"नहीं, नहीं, ऐसा न कहो, मां, मेरी सबसे प्यारी मां!" मैं उनके घुटनों को चूम-चूमकर रो पड़ता हूं और मेरी आंखों से आंसुओं की धारा बह निकलती है—प्यार और हर्षातिरेक के आंसू।

उसके बाद ऊपर अपने कमरे में जाकर अपना छोटा-सा रूई-

भरा ड्रेसिंग-गाऊन पहने अपनी मूर्तियों के सामने खड़े होकर मैं कितनी श्रद्धा अनुभव करता था जब इन शब्दों को दोहराता था: "हे प्रभु, पापा और मां पर कृपादृष्टि रखना!" अपनी प्यारी मां के साथ मेरे बचकाने होंटों ने सबसे पहले जिन प्रार्थनाओं को तुतला-तुतलाकर बोलना सीखा था उन्हें दोहराते समय मां के प्रति मेरा प्यार और ईश्वर के प्रति मेरा प्यार किसी विचित्र ढंग से मिलकर एक ही भावना का रूप धारण कर लेते थे।

प्रार्थना कर चुकने के बाद छोटे-से कंबल में घुसकर मेरे मन पर कोई बोझ नहीं रह जाता और वह उल्लास से भर उठता है; एक के बाद दूसरा स्वप्न दिखायी देता है, लेकिन ये सब स्वप्न किस चीज़ के बारे में हैं? वे धुंधले-से हैं, लेकिन वे शुद्ध प्रेम और उज्ज्वल भविष्य की आशा से भरपूर हैं। और तब मुझे कार्ल इवानिच और उनके दुर्भाग्य की याद आती है—मैं जितने लोगों को जानता हूं उनमें केवल वही दुःखी हैं—और मुझे उन पर इतना तरस आता है, दिल में उनके प्रति इतना प्यार उमड़ता है कि मेरी आंखों में आंसू भर जाते हैं और मैं मन ही मन कहता हूं, "भगवान, उन्हें सुख दो, मुझे उनकी सहायता करने की, उनके दुःख का बोझ हल्का करने की शक्ति दो; मैं उनके लिए सब कुछ न्योछावर कर देने को तैयार हूं।" इसके बाद मैं अपना सबसे प्रिय खिलौना—चीनी मिट्टी का कुत्ता या खरगोश—गर्म मुलायम तकिये के एक कोने में रख देता हूं, और मुझे यह सोचकर खुशी होती है कि उसे वहां कितनी गर्मी और कितना आराम मिल रहा होगा। मैं फिर प्रार्थना करता हूं कि भगवान सबको सुख दे, कि सभी संतुष्ट रहें, और यह कि कल मौसम टहलने के लिए अच्छा रहे। मैं करवट बदल लेता हूं; मेरे विचार और सपने आपस में मिलकर गड्ड-मड्ड हो जाते हैं, और मैं चुपचाप शांत भाव से सो जाता हूं, मेरा चेहरा अभी तक आंसुओं से भीगा हुआ है।

बचपन में हममें जो ताज़गी थी, जो मस्ती और बेफ़िक्री थी, प्यार की जो ज़रूरत थी, आस्था में जो दृढ़ता थी क्या वह फिर कभी लौटकर आयेगी? उससे अच्छा कौन-सा वक़्त हो सकता है जब दो सबसे बड़े गुण—भोली मस्ती और प्यार की बेहद प्यास—जीवन के एकमात्र आवेग हों?

6-915

कहां गयीं तीव्र भावना से उद्दीप्त वे प्रार्थनाएं? कहां गया वह सबसे अच्छा उपहार, भावना के वे निष्कलंक आंसू? सांत्वना देने-वाला फ़रिश्ता आता था और मुस्कराकर उन आंसुओं को पोंछ देता था और बचपन की शुद्ध कल्पना में मीठे सपने घोल देता था।

क्या जीवन ने मेरे हृदय पर इतना भारी बोझ लाद दिया है कि उन आंसुओं ने, हर्षोन्माद के उन आवेगों ने मेरा साथ हमेशा के लिए छोड़ दिया है? क्या केवल स्मृतियां ही हमेशा साथ रहती हैं?

अध्याय १६

कविताएं

मास्को पहुंचने के लगभग एक महीने बाद मैं नानी के घर में ऊपर बड़ी मेज़ पर बैठा लिख रहा था; मेज़ के दूसरी तरफ़ ड्राइंग-मास्टर साहब बैठे एक पगड़ीवाले तुर्क के चेहरे की पेंसिल से बनायी गयी तस्वीर की नोक-पलक ठीक कर रहे थे। वोलोद्या मास्टर साहब के पीछे खड़ा गर्दन बढ़ा-बढ़ाकर उनके कंधे के ऊपर से देख रहा था। यह चेहरा पेंसिल से बनाया हुआ वोलोद्या का पहला रेखाचित्र था, और वह उसी दिन नानी को भेंट किया जाना था, क्योंकि वह उनके इष्ट संत का दिन था।

"यहां पर आप थोड़ी-सी शेडिंग और कर दें तो क्या अच्छा नहीं रहेगा?" वोलोद्या ने पंजों के बल उचककर तुर्क की गर्दन की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

"नहीं, कोई ज़रूरत नहीं है," मास्टर साहब ने अपनी पेंसिल और ड्राइंग का क़लम डिब्बे में रखते हुए कहा। "बस, इस वक़्त जितनी है वैसी ही बिल्कुल ठीक है, और अब इसमें कुछ और करने की ज़रूरत नहीं है। अच्छा, और तुम, निकोलेंका," उन्होंने अपनी जगह से उठते हुए और तुर्क की तस्वीर को कनखियों से देखते हुए कहा, "तुम अपना भेद हम लोगों को नहीं बताओगे? तुम अपनी

नानी को क्या देनेवाले हो? मैं समझता हूं कि एक और चेहरे की ऐसी तस्वीर सबसे अच्छी भेंट रहेगी। अच्छा, अब मैं चलता हूं," उन्होंने कहा, और अपनी हैट लेकर चले गये।

उस वक़्त मैं भी सोच रहा था कि मैं जो कुछ करने की कोशिश कर रहा था उसके मुक़ाबले में चेहरे की तस्वीर ही ज्यादा अच्छी रहेगी। जब हमें बताया गया था कि नानी के इष्ट संत का दिन जल्दी ही आनेवाला है, और यह कि हम लोगों को उस मौक़े के लिए अपने-अपने उपहार तैयार रखने चाहिये तो मुझे एक कविता लिखने का विचार सूझा था; मैंने फ़ौरन आठ पंक्तियां तैयार भी कर ली थीं और मुझे उम्मीद थी कि बाक़ी जल्दी ही मेरे दिमाग़ में आ जायेंगी। मुझे सचमुच नहीं मालूम कि यह विचार, जो एक बच्चे के लिए इतना विचित्र था, मेरे दिमाग़ में आया कैसे था. लेकिन मुझे इतना याद है कि इस विचार से मैं ख़ुश बहुत हुआ था, और मुझे यह भी याद है कि इसके बारे में जब भी मुझसे कोई सवाल पूछा जाता था तो मैं यही जवाब देता था कि मैं नानी को उपहार दूंगा ज़रूर लेकिन मैं किसी को बताऊंगा नहीं कि वह उपहार क्या है।

मेरी सारी उम्मीदों के ख़िलाफ़ और अपनी सारी कोशिश के बावजूद मैं उन आठ पंक्तियों से अधिक कुछ न लिख सका जो मैंने दिमाग़ में कविता का विचार उठते ही बना डाली थीं। मैं अपनी किताबों की कविताएं पढ़ने लगा, लेकिन मुझे न ख़ित्रियेव से कोई मदद मिली न देर्जाविन से। बल्कि बात इसकी उल्टी ही हुई, उन्हें पढ़कर मुझे अपनी अक्षमता का और भी पक्का विश्वास होता गया। यह जानते हुए कि कार्ल इवानिच को कविताएं नक़ल करने का शौक़ था मैं चोरी से उनके काग़ज़ों को खखोलने लगा और मुझे उनमें जर्मन कविताओं के अलावा एक रूसी कविता भी मिली, जो उनकी अपनी ही रचना रही होगी:

मादाम ल० के नाम,
पेत्रोव्स्कोये, १८२८, जून ३

मैंने पास रहना
या दूर रहना
मेरे को भूलना नई जाना तुम।

जब मैंने नई रह जाना इस दुनिया में
तब भी इतना याद रखने का
मैं बहुत प्यार किया है तुमको।

कार्ल मायर

पत्र लिखने के महीन काग़ज़ के एक टुकड़े पर गोल-गोल अक्षरों की सुंदर लिखाई में नक़ल की हुई इस कविता से मैं उस मर्मस्पर्शी भावना की वजह से बहुत खुश हुआ जिससे वह ओत-प्रोत थी; मैंने फ़ौरन उसे रट लिया, और अपनी कविता के लिये उसी को नमूना बनाने का फ़ैसला किया। इसके बाद तो प्रगति बड़ी तेज़ी से हुई। नामदिवस तक बधाई के मेरे बारह छंद तैयार थे, और मैं पढ़ाई के कमरे में बैठकर उन्हें चिकने काग़ज़ पर नक़ल करने लगा।

दो काग़ज़ तो थोड़ी ही देर में ख़राब हो गये... इसलिए नहीं कि मैं अपनी कविता की पंक्तियों में कोई परिवर्तन करना चाहता था – मुझे तो वे उत्तम कोटि की लगती थीं; लेकिन तीसरी पंक्ति के बाद से उनका अंतिम छोर ऊपर की ओर अधिकाधिक मुड़ता जा रहा था, यहां तक कि दूर से भी यह बात साफ़ दिखायी देती थी कि वह पूरी चीज़ टेढ़ी-मेढ़ी लिखी हुई है और दो कौड़ी की नहीं है।

तीसरा काग़ज़ भी उन दोनों की तरह ही टेढ़ा-मेढ़ा लिखा गया; लेकिन मैं अपने मन में ठान चुका था कि अब और ज़्यादा नक़ल नहीं करूंगा। अपनी कविता में मैंने नानी को बधाई दी थी, उनके लिए वर्षों लंबे स्वस्थ जीवन की कामना की थी, और कविता इस तरह समाप्त की थी:

जिससे आपको सुख पहुंचे, हम हर काम करेंगे हां ऐसा,
हम भी आपसे प्यार करेंगे बिल्कुल अपनी प्यारी मां जैसा।

कविता तो मुझे बहुत अच्छी लगती थी लेकिन उसकी अंतिम पंक्ति मेरे कानों में न जाने क्यों खटकती थी।

"हम भी तुमसे प्यार करेंगे, बिल्कुल अपनी...प्यारी... मां... जैसा," मैं मन ही मन इस पंक्ति को दोहराता रहा। "मैं 'मां जैसा' की जगह कौन-सा तुक इस्तेमाल करूं? 'जहां जैसा'... 'धुआं

जैसा'... ख़ैर, कोई बात नहीं है। बहरहाल, कार्ल इवानिच की कविता से तो अच्छी ही है।"

सो मैंने अंतिम पंक्ति भी नक़ल की। फिर मैंने अपने सोने के कमरे में हाथ हिला-हिलाकर बड़े भावपूर्ण ढंग से अपनी पूरी रचना ऊंचे स्वर में पढ़ी। पंक्तियों में न कोई लय थी न छंद, लेकिन मैं उन्हें पढ़ते समय कहीं अटका नहीं, लेकिन अंतिम पंक्ति मुझे और भी ज़ोर से और अरुचिकर ढंग से खटकी। मैं पलंग पर बैठकर सोचने लगा।

"मैंने यह क्यों लिखा कि 'बिल्कुल अपनी प्यारी मां जैसा'? वह तो यहां हैं नहीं, और उनकी चर्चा करने की वैसे ही कोई ज़रूरत नहीं थी। मैं नानी को प्यार करता हूं, यह सच है, मैं उनकी इज़्ज़त करता हूं, फिर भी वह मेरी मां तो नहीं हैं। मैंने वह क्यों लिखा? मैंने झूठ क्यों लिखा? बेशक यह कविता है, फिर भी मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये था।"

उसी वक़्त दर्ज़ी हमारे नये कोट लेकर अंदर आया।

"बस, जाने भी दो!" मैंने अपनी कविता को तकिये के नीचे घुसेड़ते हुए झुंझलाकर कहा और अपने मास्को के कपड़े पहनकर देखने के लिए भागा।

सचमुच, मास्को के बहुत ही अच्छे कपड़े थे। दालचीनी जैसे हल्के बादामी रंग का ऊंचा कोट, जिसमें पीतल के बटन लगे हुए थे, बिल्कुल मेरी नाप का बना हुआ था, वैसा नहीं जैसा कि गांव में बनाते थे—कई साल तक बढ़ने की गुंजाइश रखकर। काली पतलून भी कसी हुई थी; उसमें से मांस-पेशियां इतनी अच्छी तरह दिखायी देती थीं और वे जूतों को इतनी अच्छी तरह ढक लेती थी कि देखते ही बनता था।

"आख़िरकार, मेरे पास असली फ़ीतोंवाली पतलून हो गयी!" अपनी टांगों का चारों ओर से मुआइना करने के बाद मैंने ख़ुशी से फूले न समाते हुए कहा। हालांकि नये कपड़े बहुत कसे थे और आरामदेह नहीं थे लेकिन मैं उस बात को सबसे छिपाता रहा और उसकी उल्टी ही बात कहता रहा कि मुझे उनमें बेहद आराम मिलता है, और यह कि अगर उनमें कोई ख़राबी थी तो यही कि वे कुछ ज़्यादा ही ढीले थे।

उसके बाद मैं बड़ी देर तक आईने के सामने खड़े होकर ढेरों क्रीम लगे हुए अपने बालों पर ब्रश फेरता रहा, लेकिन लाख कोशिश करने पर भी मैं अपने सिर के ऊपर खड़े हुए बालों के गुच्छे को दबा न सका; यह देखने के लिए कि वे मेरा हुक्म मानेंगे कि नहीं जैसे ही मैं उन्हें ब्रश से दबाना बंद कर देता था वैसे ही वे फिर उठ खड़े होते थे और हर दिशा में फैल जाते थे, जिसकी वजह से मेरी सूरत देखकर हंसी आने लगती थी।

कार्ल इवानिच दूसरे कमरे में कपड़े बदल रहे थे और उनका नीला टेल-कोट और नीचे पहनने के कपड़े पढ़ाई का कमरा पार करके उनके पास ले जाये गये थे। मैंने नीचे जाने की सीढ़ियों पर खुलनेवाले दरवाज़े पर नानी की एक नौकरानी की आवाज़ सुनी। मैं यह देखने बाहर निकला कि उसे क्या चाहिए। वह अपने हाथ में क़मीज़ का कड़ा कलफ़दार सामना लिये हुए थी, जो कि वह, उसने मुझे बताया, कार्ल इवानिच के लिए लायी थी और जिसे समय पर तैयार करने के लिए वह रात भर नहीं सोयी थी। मैंने उसे पहुंचा देने का जिम्मा ले लिया और पूछा कि क्या नानी सोकर उठ गयी थीं।

"जी हां, सरकार! वह तो कॉफ़ी भी पी चुकीं, और पादरी साहब आ गये है। कैसे सजीले नौजवान लग रहे हैं आप!" उसने कनखियों से मेरे नये सूट को देखते हुए मुस्कराकर कहा।

उसकी बात सुनकर मैं झेंप गया। मैं अपने एक पांव पर घूमा और चुटकी बजाकर छलांग लगा गया। मैं चाहता था कि वह इस बात को जान ले कि अभी तक वह अच्छी तरह नहीं समझ पायी थी कि मैं असल में कितना शानदार हूं।

जब मैं कमीज़ का सामना कार्ल इवानिच के पास ले गया तो मैंने देखा कि अब उन्हें उसकी ज़रूरत नहीं रह गयी थी; उन्होंने उसकी जगह दूसरा पहन लिया था और मेज़ पर रखे हुए छोटे-से आईने पर झुककर वह अपनी टाई की बहुत ही बढ़िया गांठ दोनों हाथों से पकड़े हुए थे और उसके फंदे में अपनी सफ़ाचट ठोड़ी ऊपर-नीचे हिलाकर इस बात का पक्का आश्वासन कर रहे थे कि वह ठीक से फ़िट हो गयी है। हमारे कपड़ों पर हर तरफ़ हाथ फेरकर उनकी सिलवटें दूर करने और निकोलाई से अपने कपड़ों के सिलसिले में ऐसा

ही करवाने के बाद वह हमको लेकर नानी के पास गये। अब मुझे यह याद करके हंसी आती है कि जब हम लोग सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे तो हम तीनों क्रीम से कैसा महक रहे थे।

कार्ल इवानिच अपने हाथ का बनाया हुआ एक छोटा-सा उपहार का डिब्बा लिये हुए थे, वोलोद्या के पास उसकी तस्वीर थी और मेरे पास अपनी कविता; हर एक की ज़बान की नोक पर बधाई के वे शब्द थे जिन्हें कहकर वह अपना उपहार भेंट करनेवाला था। कार्ल इवानिच के ड्राइंग-रूम का दरवाज़ा खोलते वक़्त पादरी साहब अपना चोग़ा पहन रहे थे और संस्कार के समय पढ़े जानेवाले मंत्रों के पहले शब्द गूंज रहे थे।

नानी ड्राइंग-रूम में पहुंच चुकी थीं; वह एक कुर्सी की पीठ पर हाथ रखे दीवार के पास खड़ी थीं और सिर झुकाये बड़ी तन्मयता से प्रार्थना कर रही थीं; उनके बग़ल में पापा खड़े थे। वह हम लोगों की तरफ़ मुड़े और यह देखकर मुस्करा दिये कि हम लोग अपने-अपने उपहार जल्दी से पीठ के पीछे छिपाये ले रहे थे और इस कोशिश में कि कोई हमें देख न ले हम कमरे के अंदर क़दम रखते ही ठिठक गये थे। हम लोगों ने अचानक पहुंचकर अप्रत्याशित ढंग से अपने उपहार देने की जो योजना बनायी थी उसका सारा मज़ा किरकिरा हो गया।

जब जाकर सलीब को चूमने का वक़्त आया तो अचानक मुझ पर शरमाने का ऐसा ज़बर्दस्त दौरा पड़ा कि मेरे हाथ-पांव फूल गये, और यह महसूस करके कि मैं अपना उपहार भेंट करने का साहस कभी नहीं बटोर पाऊंगा मैं कार्ल इवानिच के पीछे छिप गया; कार्ल इवानिच ने बेहतरीन चुने हुए शब्दों में नानी को बधाई देने के बाद अपना डिब्बा दाहिने हाथ से बायें हाथ में लिया और उसे नानी को दे दिया और वोलोद्या को रास्ता देने के लिए कुछ क़दम पीछे हटकर खड़े हो गये। नानी उस डिब्बे को देखकर, जिसकी हर कगर पर सुनहरी पट्टियां चिपकी हुई थीं, बहुत ख़ुश नज़र आ रही थीं और अपना आभार प्रकट करने के लिए उन्होंने कार्ल इवानिच को स्नेहपूर्वक देखा और मुस्करा दीं। हालांकि यह साफ़ लग रहा था कि उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि डिब्बा कहां रखें, और शायद इसीलिए उन्होंने

पापा से इस बात पर ध्यान देने को कहा कि वह कितनी कारीगरी से बनाया गया था।

अपनी जिज्ञासा की तुष्टि करके पापा ने डिब्बा पादरी को थमा दिया जो इस मामूली-सी चीज़ को देखकर बेहद ख़ुश हुआ: वह अपना सिर हिला-हिलाकर कभी उस डिब्बे को कौतुहल से देखता था और कभी उस कलाकार को जिसने इतनी ख़ूबसूरत चीज़ बनायी थी। वोलोद्या ने अपनी बनायी हुई तुर्क की तस्वीर पेश की और उसे भी चारों ओर से ढेरों प्रशंसा मिली। अब मेरी बारी थी: नानी उत्साह-वर्धक मुस्कराहट के साथ मेरी ओर मुड़ीं।

जो लोग लजीलेपन का शिकार रह चुके हैं वे जानते हैं कि यह एक ऐसी भावना है जो जितना समय बीतता जाता है उतनी ही बढ़ती जाती है, और संकल्प उतना ही कम होता जाता है; कहने का मतलब यह कि यह संवेदना जितनी ही अधिक देर तक रहती है उतनी ही अजेय होती जाती है और आदमी के मन में दृढ़ निश्चय उतना ही घटता जाता है।

जब कार्ल इवानिच और वोलोद्या अपने-अपने उपहार भेंट कर चुके तो मेरा रहा-सहा साहस और संकल्प भी जाता रहा और मेरा संकोच अपने शिखर पर पहुंच गया: मैं महसूस कर रहा था कि ख़ून लगातार मेरे दिल से भेजे की ओर दौड़ रहा है, बारी-बारी से मेरा रंग पीला पड़ जाता था या चेहरा तमतमा उठता था और मेरी नाक पर और माथे पर पसीने की बड़ी-बड़ी बूंदें छलक आयी थीं। मेरे कान तप रहे थे, अपने पूरे शरीर में मैं सिहरन और ठंडा पसीना निकलता हुआ महसूस कर रहा था, मैं उसी जगह जमा खड़ा रहा, कभी एक पांव पर बोझ डालकर खड़ा हो जाता कभी दूसरे पांव पर।

"अच्छा, निकोलेंका, लाओ दिखाओ तो तुम क्या लाये हो–डिब्बा या तस्वीर," पापा ने कहा। अब तो कोई चारा ही नहीं था: कांपते हाथ से मैंने वह तुड़ा-मुड़ा भाग्य का निर्णय करनेवाला प्रशस्ति-पत्र उन्हें दे दिया; लेकिन मेरे गले से आवाज़ बिल्कुल नहीं निकली, और मैं नानी के सामने चुपचाप खड़ा रहा। मैं इस विचार को भी सहन नहीं कर पा रहा था कि उस तस्वीर के बजाय जिसकी मुझसे उम्मीद की जाती थी, अब मेरी दो कौड़ी की पंक्तियां पढ़ी जायेंगी,

जिनमें वे शब्द भी शामिल होंगे कि 'बिल्कुल अपनी प्यारी मां जैसा', जिससे साफ़-साफ़ साबित हो जायेगा कि मुझे अपनी मां से कभी प्यार नहीं था और मैं उन्हें भूल चुका था। मैं अपनी उस समय की पीड़ा को कैसे बयान करूं जब नानी ने मेरी कविता को ज़ोर-ज़ोर से पढ़ना शुरू किया और जब मेरी लिखाई न पढ़ सकने के कारण वह एक पंक्ति के बीच में रुकीं और पापा की ओर मुस्कराकर देखा तो मुझे उस समय ऐसा लगा कि वह बड़े व्यंग से मुस्करा रही हैं, जब वह शब्दों का उच्चारण उस तरह नहीं करती थीं जैसा कि मैं चाहता था, और जब अपनी कमज़ोर नजर की वजह से उन्होंने काग़ज़ पूरा पढ़ने से पहले ही उसे पापा को दे दिया और उनसे उसे दुबारा शुरू से पढ़ने का अनुरोध किया? मुझे ऐसा लगा कि उन्होंने ऐसा इसलिए किया था कि उन्हें ऐसी बेवक़ूफ़ी की और टेढ़ी-मेढ़ी लिखी हुई कविता पढ़ने में कोई दिलचस्पी नहीं थी, इसके अलावा वह चाहती थीं कि पापा वह अंतिम पंक्ति ख़ुद पढ़कर देख लें जिससे बिल्कुल साफ़ साबित होता था कि मेरे हृदय में कोई भावना नहीं थी। मैं डर रहा था कि वह उस कविता को मेरी नाक पर दे मारेंगे और कहेंगे, "यह ले, बदमाश लड़के, अपनी मां को भूल जाने का मज़ा!" लेकिन इस तरह की कोई बात नहीं हुई; बल्कि उल्टे, जब पूरी कविता पढ़ दी गयी तो नानी ने कहा, "बहुत ख़ूबसूरत!" और मेरा माथा चूम लिया।

नानी जिस आराम-कुर्सी पर हमेशा बैठती थीं उसके साथ एक मेज़ जुड़ी रहती थी; उसी मेज़ पर हमारे डिब्बे, तस्वीर और कविता के काग़ज़ को कैंब्रिक के दो रूमालों और नसवार की एक डिबिया के बग़ल में रख दिया गया जिस पर मां की तस्वीर बनी थी।

"प्रिंसेस वार्वारा इल्यीनिचना," नानी की गाड़ी के साथ चलनेवाले दो भारी-भरकम अर्दलियों में से एक ने आकर सूचना दी।

नानी विचारमग्न होकर नसवार की डिबिया के कछुए के बने ढक्कन में जड़े हुए चित्र को देखती रहीं और उन्होंने कोई जवाब नहीं दिया।

"सरकार उनसे मिलेंगी?" अर्दली ने फिर पूछा।

प्रिंसेस कोर्नाकोवा

"अंदर ले आओ", नानी ने अपनी आराम-कुर्सी पर ठीक से बैठते हुए कहा।

प्रिंसेस कोई पैंतालीस साल की, छोटे डील-डौल की, दुबली-पतली, सूखी हुई और पीले रंग के मुंहवाली महिला थीं, उनकी कंजी अरुचिकर आंखों का देखने का ढंग स्नेह के उस अस्वाभाविक भाव से तनिक भी मेल नहीं खाता था जो उनके होंटों पर हरदम मौजूद रहता था। चौड़ी कगरवाली उनकी मख़मल की टोपी के नीचे, जिस पर शुतुरमुर्ग का एक पर सजावट के लिए लगा हुआ था, लाल रंग के उनके छिदरे बाल साफ़ दिखायी देते थे; उनके चेहरे के बीमारों जैसे पीले रंग के मुक़ाबले उनकी भवें और पलकें और भी छिदरी और लाल दिखायी देती थीं। फिर भी, इन तमाम बातों के बावजूद, उनके उन्मुक्त आचरण, उनके छोटे-छोटे हाथों और उनके चेहरे-मोहरे के एक ख़ास क़िस्म के रूखेपन की वजह से उनकी आम चाल-ढाल में एक तरह का रईसाना अंदाज़ और चुस्ती पैदा हो गयी थी।

प्रिंसेस बातें बहुत करती थीं और अपने बातूनीपन के अनुसार वह उस वर्ग के लोगों में से थीं जो हमेशा इस तरह बोलते हैं जैसे उनकी बात का खंडन किया जा रहा हो, हालांकि कोई एक शब्द भी नहीं कहता: बारी-बारी से वह अपनी आवाज़ ऊंची उठाती थीं और फिर उसे धीरे-धीरे नीचे उतार लाती थीं, और फिर नये जोश से बोलने लगती थीं, साथ ही वहां पर मौजूद सभी लोगों पर नज़र डालती थीं, चाहे उन्होंने बातचीत में कोई भी हिस्सा न लिया हो, जैसे उनका समर्थन प्राप्त करने की कोशिश कर रही हों।

हालांकि प्रिंसेस ने नानी का हाथ चूमा और उन्हें लगातार ma bonne tante* कहती रहीं, लेकिन मैं साफ़ देख रहा था कि नानी उनसे खुश नहीं थीं: यह समझाने के लिए कि प्रिंस मिखाइलो बहुत

---

* मेरी अच्छी मौसी। (फ़्रांसीसी)

चाहते हुए भी नानी को बधाई देने खुद क्यों नहीं आ सके थे प्रिंसेस के बहानों को सुनते हुए नानी अपनी भवें अजीब तरह से फड़का रही थीं और प्रिंसेस जो कुछ फ़्रांसीसी में कहती थी उसका जवाब वह रूसी में देती थीं।

"अरे नहीं, माई डियर, आपने मेरा इतना भी ख़्याल रखा इसके लिए मैं बहुत एहसान मानती हूं आपका," नानी ने अनोखे ढंग से शब्दों को खींच-खींचकर कहा, "और जहां तक प्रिंस मिख़ाइलो के न आने का सवाल है, तो वह कोई ऐसी बात नहीं है। वह हमेशा किसी न किसी काम में बुरी तरह उलझे ही रहते हैं; और फिर, मुझ जैसी बुढ़िया से आकर मिलने से उन्हें क्या ख़ुशी हो सकती है?"

और प्रिंसेस को बात काटने का अवसर दिये बिना ही उन्होंने कहना जारी रखा:

"आपके बच्चे कैसे हैं, डियर?"

"भगवान की कृपा से, ma tante सब ठीक चल रहे हैं, और पढ़ रहे हैं और शरारत भी बहुत करते हैं, ख़ास तौर पर एत्येन। वह सबसे बड़ा है और इतना नटखट हो गया है कि हमारी समझ में नहीं आता कि उसका किया क्या जाये; लेकिन वह होशियार है– un qarçon, qui promet.* ज़रा सोचिये, mon cousin.**" उन्होंने अब पापा की ओर मुड़कर अपनी बात जारी रखी क्योंकि नानी को प्रिंसेस के बच्चों में कोई दिलचस्पी नहीं थी और इसके बजाय वह अपने ही नातियों के बारे में डींग मारना ज़्यादा पसंद करतीं; और इसीलिए उन्होंने डिब्बे पर से मेरी कविता बड़ी सावधानी से उठाकर काग़ज़ की तह खोलना शुरू कर दिया था।–"ज़रा सोचिये, mon cousin, अभी उस दिन उसने क्या किया।..."

और प्रिंसेस पापा की ओर झुककर बड़े जोश से कोई क़िस्सा सुनाने लगीं। जब वह अपना क़िस्सा ख़त्म कर चुकीं, जिसे मैंने नहीं सुना था, तो वह बहुत ज़ोर से हंसीं और सवालिया नज़रों से पापा की ओर देखकर बोलीं:

---

* बड़ा होनहार लड़का है। (फ़्रांसीसी)

** भाई साहब। (फ़्रांसीसी)

"क्या ख़्याल है आपका, mon cousin? इस बात पर उसकी कसकर पिटाई होनी चाहिए थी, लेकिन उसकी शरारत इतनी सूझ-बूझ की और मज़ेदार थी कि, mon cousin, मैंने उसे माफ़ कर दिया।"

और अपनी नज़रें नानी पर गड़ाकर प्रिंसेस कुछ बोले बिना मुस्करा-ती रहीं।

"क्या आप अपने बच्चों को मारती भी हैं, माई डियर", नानी ने अपनी भवें बड़े अर्थपूर्ण ढंग से चढ़ाकर और "मारती" शब्द पर विशेष ज़ोर देकर पूछा।

"अरे, ma bonne tante," प्रिंसेस ने जल्दी से पापा पर एक नज़र डालकर बड़े मीठे स्वर में कहा, "मैं इस मामले के बारे में आपकी राय जानती हूं; बुरा न मानियेगा लेकिन इस मामले में मेरी राय आपकी राय से अलग है: मैंने इस सवाल के बारे में जो कुछ भी सोचा और पढ़ा है, दूसरों से जो भी सलाह ली है उसके बावजूद, अपने तजुर्बे से मुझे पक्का यक़ीन हो गया है कि बच्चों के दिल में डर पैदा करके उन्हें क़ाबू में रखा जाना चाहिए। बच्चे को किसी लायक़ बनाने के लिए डर बहुत ज़रूरी है... है न यही बात, mon cousin? अब, je vous demande un peu,* बच्चे क्या डंडे से ज़्यादा किसी चीज़ से डरते हैं?"

यह कहकर उन्होंने हम लोगों की ओर सवालिया नज़रों से देखा, और मैं मानता हूं कि उस वक़्त मैं कुछ सिटपिटा गया था।

"आप कुछ भी कहें, बारह साल का लड़का, या वह चौदह साल का भी हो, होता तो बच्चा ही है। अलबत्ता, लड़की की बात दूसरी होती है।"

"मेरी ख़ुशनसीबी है," मैंने मन ही मन सोचा, "कि मैं इनका बेटा नहीं हूं।"

"हां, यह सब तो बिल्कुल ठीक है, माई डियर," नानी ने मेरी कविता का काग़ज़ तह करके उसे डिब्बे के नीचे रखते हुए कहा, मानो ये सब बातें कह चुकने के बाद वह प्रिंसेस को इस लायक़ नहीं

---

* मैं आपसे यह पूछती हूं। (फ़्रांसीसी)

समझती थीं कि उन्हें ऐसी रचना सुनायी जाये, "यह सब तो बहुत ख़ूब है, लेकिन ज़रा मुझे यह तो बताइये कि इसके बाद अपने बच्चों में कोमल भावनाओं की उम्मीद कैसे कर सकती हैं आप?"

और यह मानकर कि इस तर्क का कोई जवाब हो ही नहीं सकता उन्होंने बातचीत का सिलसिला यहीं पर ख़त्म कर देने के लिए इतना और जोड़ दिया:

"लेकिन इस सवाल के बारे में हर आदमी को अपनी राय रखने का हक़ है।"

प्रिंसेस ने कोई जवाब नहीं दिया, बल्कि बड़े अनुग्रह के भाव से मुस्करा दीं, मानो यह जता रही हों कि जिस औरत की वह बहुत ज़्यादा इज़्ज़त करती हैं उसकी इस तरह की विचित्र हठधर्मियों को माफ़ भी कर देती हैं।

"मेहरबानी करके अपने बच्चों से मेरा परिचय तो करा दीजिये," उन्होंने एक नज़र हम लोगों पर डालकर बड़ी प्रसन्न मुद्रा से मुस्कराते हुए कहा।

हम उठ खड़े हुए और टकटकी बांधे प्रिंसेस की सूरत देखते रहे, लेकिन हमारी समझ में बिल्कुल नहीं आ रहा था कि यह बताने के लिए हम क्या करें कि परिचय तो हो चुका है।

"प्रिंसेस का हाथ चूमो," पापा ने कहा।

"तुम लोग अपनी बूढ़ी मौसी से प्यार करोगे न?" उन्होंने वोलोद्या के बालों को चूमते हुए कहा, "मैं तुम्हारी बहुत दूर के रिश्ते की मौसी हूं लेकिन मैं दोस्ती के रिश्तों की क़द्र ख़ून के रिश्तों से ज़्यादा करती हूं," उन्होंने ख़ास तौर पर नानी को लक्ष्य बनाकर इतना और जोड़ दिया; लेकिन नानी अभी तक उनसे नाराज़ थीं, इसलिए उन्होंने जवाब दिया:

"अरे, माई डियर, इन रिश्तों की क़द्र करता ही कौन है आज-कल?"

"यह लड़का आगे चलकर बहुत होशियार निकलेगा," पापा ने वोलोद्या की तरफ़ इशारा करके कहा, "और यह कवि है," पापा ने अपनी बात बढ़ाते हुए कहा; ठीक उसी वक़्त मैं प्रिंसेस का छोटा-सा सूखा हाथ चूम रहा था और बहुत-ही स्पष्ट कल्पना कर रहा था

कि उस हाथ में एक छड़ी है और उस छड़ी के नीचे एक बेंच है, वग़ैरह, वग़ैरह।

"कौन?" प्रिंसेस ने मेरा हाथ थामे-थामे पूछा।

"यह छोटावाला जिसके सिर पर बालों का गुच्छा उठा हुआ है," पापा ने बहुत प्रसन्न होकर मुस्कराते हुए कहा।

"मेरे बालों के गुच्छे से उन्हें क्या?... क्या बात करने को और कुछ नहीं है?" मैंने सोचा और एक कोने में खिसक गया।

सुंदरता के बारे में मेरे विचार बेहद अजीब थे। मैं तो कार्ल इवानिच को दुनिया का सबसे ख़ूबसूरत आदमी समझता था; लेकिन इतना मैं अच्छी तरह जानता था कि मैं सूरत-शक्ल का अच्छा नहीं था, और इस बात के बारे में मेरी राय ज़रा भी ग़लत नहीं थी: इसलिए मेरे चेहरे-मोहरे की ओर किसी भी तरह का इशारा मुझे बहुत बुरा लगता था।

मुझे अच्छी तरह याद है कि एक बार जब मैं छ: साल का था तो खाने के वक़्त सब लोग मेरी सूरत-शक्ल के बारे चर्चा कर रहे थे और मां मेरे चेहरे में कोई ख़ूबसूरती खोज निकालने की कोशिश कर रही थीं: उन्होंने कहा था कि मेरी आंखों से बड़ी समझदारी टपकती है और मेरी मुस्कराहट बड़ी लुभावनी है, लेकिन आख़िरकार पापा की दलीलों और आंखों की गवाही के आगे हार मानकर उन्होंने स्वीकार कर लिया था कि मेरा चेहरा बहुत बदसूरत था; फिर जब मैं उन्हें खाने के लिए धन्यवाद देने लगा तो उन्होंने मेरा गाल थपथपाकर कहा था:

"याद रखना, बेटा, कि तुम्हारी सूरत-शक्ल के लिए कोई तुमसे प्यार नहीं करेगा। इसलिए तुम्हें नेक और होशियार बनने की कोशिश करनी होगी, करोगे न?"

इन शब्दों से मुझे न सिर्फ़ इस बात का पक्का यक़ीन हो गया कि मैं ख़ूबसूरत नहीं था, बल्कि मुझे इस बात का भी यक़ीन हो गया कि आगे चलकर मैं ज़रूर नेक और होशियार बनूंगा।

लेकिन अकसर मेरे सामने घोर निराशा के क्षण भी आते थे: मैं सोचा करता था कि मेरी जैसी चौड़ी नाक, मोटे होंटों और छोटी-छोटी और भूरी आंखोंवाले आदमी को इस दुनिया में कोई सुख नहीं

मिल सकता; मैंने भगवान से प्रार्थना की कि वह चमत्कार करे – मुझे सुंदर बना दे, और जो कुछ मेरे पास इस समय है, या जो कुछ आगे चलकर होगा, वह सब मैं उस सुंदर चेहरे के बदले दे देने को तैयार था।

अध्याय १८

प्रिंस इवान इवानिच

जब प्रिंसेस कविता सुन चुकीं और उसके रचयिता पर प्रशंसा की बौछार कर चुकीं तब नानी के रवैये में भी कुछ नरमी आयी, वह उनसे फ्रांसीसी में बातें करने लगीं, उनको आप* और माई डियर कहना बंद कर दिया और उन्हें शाम को सभी बच्चों के साथ फिर आने का निमंत्रण दिया जिसके लिए प्रिंसेस फ़ौरन राज़ी हो गयीं; थोड़ी देर और रुकने के बाद वह विदा हो गयीं।

उस दिन इतने लोग बधाइयां देने आये कि सुबह से दोपहर तक प्रवेश-द्वार के पास अहाते में बहुत-सी गाड़ियां खड़ी रहीं।

"Bonjour, chère cousine," एक मेहमान ने कमरे में प्रवेश करते ही नानी का हाथ चूमते हुए कहा।

वह कोई सत्तर साल के, ऊंचे क़द के आदमी थे जिन्होंने कंधों पर बड़े-बड़े झब्बोंवाली फ़ौजी वर्दी पहन रखी थी जिसके कॉलर के नीचे से एक बड़ी-सी सफ़ेद सलीब झांक रही थी और उनके चेहरे का भाव शांत और निष्कपट था। उनके आचरण की उन्मुक्तता और सादगी देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। इस बात के बावजूद कि सिर्फ़ उनकी गुद्दी पर हल्के-हल्के बालों की एक कमान-सी बाक़ी रह गयी थी और उनके ऊपरी होंट के धंसाव से अंदर दांत न होने का पता चलता था, उनका चेहरा अभी तक काफ़ी ख़ूबसूरत था।

---

* मतलब यह कि वह उनको 'तुम' कहने लगी। – अनु०

पिछली शताब्दी के अंत में प्रिंस इवान इवानिच ने अपने उदार चरित्र, अपनी सुंदर आकृति, अपने सराहनीय साहस, अपने प्रतिष्ठित और प्रभावशाली स्वजनों और खास तौर पर अपनी अच्छी क़िस्मत के बल पर बिल्कुल नौजवानी में ही जीवन में अपने लिए एक शानदार स्थान बना लिया था। वह फ़ौज की नौकरी में रहे और उनकी सारी महत्वाकांक्षाएं इतनी तेज़ी से पूरी तरह संतुष्ट हो गयीं कि उनके लिए उस दिशा में चाहने के लिए कुछ बचा ही नहीं। नौजवानी से ही उनका आचरण इस तरह का रहा मानो संसार में वह प्रतिष्ठित पद पाना उनके भाग्य में लिखा था, जिस पर सौभाग्य से वह अंत में पहुंच भी गये। इसलिए अपने शानदार और कुछ हद तक दंभपूर्ण जीवन में हालांकि उन्हें कुछ वैसी असफलताओं और निराशाओं का भी सामना करना पड़ा जैसी कि सभी लोगों के सामने आती हैं, लेकिन उन्होंने अपने शांत स्वभाव और उच्च विचारों को, धर्म और नैतिकता के बारे में अपने अडिग सिद्धांतों को कभी नहीं छोड़ा, और उन्हें सभी क्षेत्रों में जो सम्मान मिला वह उनके शानदार पद की वजह से उतना नहीं था जितना कि उनकी दृढ़ता और सिद्धांतनिष्ठता की वजह से। वह कोई खास प्रखर बुद्धि के आदमी नहीं थे; लेकिन अपनी हैसियत की बदौलत चूंकि वह ज़िंदगी की सारी बेकार की दौड़-धूप को उपेक्षा की दृष्टि से देख सकते थे, इसलिए उनके विचार बहुत उच्च स्तर के हो गये थे। वह स्वभाव से ही दयावान और संवेदनशील थे, लेकिन अपने आचरण से वह कठोर और कुछ दंभी मालूम पड़ते थे। इसकी वजह यह थी कि ऐसे पद पर होने के कारण वह बहुत-से लोगों का भला कर सकते थे, और अपने कठोर रवैये से अपना बचाव करना चाहते थे कि उनके पास लगातार फ़रियादें और प्रार्थनाएं लेकर आनेवा-लों का तांता न बंधा रहे, जो सिर्फ़ उनके असर का फ़ायदा उठाना चाहते थे। लेकिन बहुत ऊंचे समाज के आदमी की अनुग्रहपूर्ण शिष्टता की वजह से उनकी इस कठोरता में कुछ नरमी आ गयी थी। वह बहुत सुसंस्कृत और पढ़े-लिखे आदमी थे; लेकिन नौजवानी में – यानी पिछली शताब्दी के अंत तक – उन्होंने जो कुछ हासिल कर लिया था उसके बाद उनके संस्कारों का विकास रुक गया था। अठारहवीं शताब्दी के दौरान फ़्रांस में दर्शनशास्त्र और वाक्-चातुर्य के विषय पर जो कुछ

भी महत्वपूर्ण लिखा गया था वह सब उन्होंने पढ़ डाला था; फ़्रांसीसी साहित्य की सभी श्रेष्ठतम रचनाओं से वह भली भांति परिचित थे और रसीन, कोर्नेल, बुअलो, मोलियेर, मोंटेन और फ़ेनेलोन की रचनाओं के कितने ही अंश मुंह-ज़बानी सुना सकते थे और बड़े शौक़ से सुनाते भी थे; उन्हें पौराणिक साहित्य का बहुत अच्छा ज्ञान था और महाकाव्यों की प्राचीन अमर कृतियों के फ़्रांसीसी अनुवाद पढ़कर वह बहुत लाभान्वित हुए थे; उन्होंने सेगूर से इतिहास का काफ़ी अच्छा ज्ञान प्राप्त किया था; लेकिन अंकगणित से आगे उन्हें गणित का कुछ भी ज्ञान नहीं था, न भौतिकी का और न आधुनिक साहित्य का: गेटे, शिलर या बायरन के बारे में वह बड़ी शिष्टता से चुप्पी साधे रह सकते थे या कुछ घिसी-पिटी बातें कह सकते थे लेकिन उन्होंने इन लेखकों को कभी पढ़ा नहीं था। फ़्रांसीसी और प्राचीन साहित्य की इस शिक्षा के बावजूद, जिस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करनेवाले अब बहुत ही थोड़े लोग बचे हैं, उनका बातचीत करने का ढंग बहुत सादा था, और उनकी यही सादगी कुछ बातों के बारे में उनके अज्ञान को छिपा लेती थी, और इसके साथ ही उनके आचरण में सहिष्णुता और अनुग्रह को उजागर करती थी। उन्हें हर तरह के सनकीपन से नफ़रत थी, क्योंकि वह इसे भद्दे लोगों का हथकंडा कहते थे। वह कहीं भी रहें, लोगों के बीच उठना-बैठना उनके लिए ज़रूरी था; वह मास्को में हों या विदेश में, उनके घर के दरवाजे हमेशा मेहमानों के लिए खुले रहते थे, और कुछ ख़ास-ख़ास मौक़ों पर तो वह सारे शहर का स्वागत करते थे। समाज में उनकी हैसियत ऐसी थी कि जिसे उनका निमंत्रण मिल जाता था उसके लिए हर ड्राइंग-रूम के दरवाज़े खुल जाते थे, और कितनी ही नौजवान और ख़ूबसूरत औरतें अपने गुलाबी गाल ख़ुशी-ख़ुशी उनके सामने कर देती थीं और वह प्रकटत: पितृत्व की भावना से उन्हें चूम लेते थे; और कितने ही अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रतिष्ठित लोग प्रिंस के मिलनेवालों में शामिल होकर अपने को धन्य समझते थे।

अब प्रिंस के आस-पास नानी जैसे बहुत ही थोड़े-से लोग बचे थे, जो समाज के उसी वृत्त के, उसी उम्र के, वैसी ही शिक्षा पाये हुए और वैसे ही विचार रखनेवाले लोग हों; और इसीलिए वह नानी

के साथ अपनी पुरानी दोस्ती की खास तौर पर क़द्र करते थे और हमेशा उन्हें बेहद सम्मान देते थे।

मैं टकटकी बांधे प्रिंस को देखते न थकता था। हर आदमी उनके साथ जिस इज़्ज़त से पेश आता था, उनके कंधों पर लगे हुए बड़े-बड़े झब्बे, उन्हें देखते ही नानी ने जिस तरह के विशेष हर्ष का प्रदर्शन किया था, और यह बात कि अकेले वही ऐसे थे जो नानी से डरते नहीं थे, उनके साथ बिना किसी झिझक के पेश आते थे, और उन्हें ma cousine तक कहने की हिम्मत करते थे – इन सब बातों ने मेरे हृदय में उनके प्रति अगर अधिक नहीं तो कम से कम उतनी ही श्रद्धा तो पैदा की ही जितनी मैं अपनी नानी के प्रति रखता था। जब नानी ने उन्हें मेरी कविता दिखायी तो उन्होंने मुझे अपने पास बुलाया और बोले:

"कौन कह सकता है, ma cousine, आगे चलकर यह शायद देर्जाविन जैसा कवि बन जाये?"

यह कहकर उन्होंने मेरे गाल पर इतने ज़ोर से चुटकी काटी कि अगर मैं रो नहीं पड़ा तो उसकी वजह सिर्फ़ यह थी कि सौभाग्यवश मेरे दिमाग़ में यह बात आयी कि इसे मज़ाक़ समझकर टाल दूं।

मेहमान चले गये। पापा और वोलोद्या भी बाहर चले गये। प्रिंस, नानी और मैं ड्राइंग-रूम में रह गये।

"हमारी प्यारी नताल्या निकोलायेव्ना क्यों नहीं आयीं?" प्रिंस इवान इवानिच ने कुछ क्षण चुप रहने के बाद अचानक पूछा।

"Ah! mon cher,"* नानी ने अपना हाथ उनकी वर्दी की आस्तीन पर रखकर अपनी आवाज़ नीची करते हुए कहा, "अगर उसे इतनी आज़ादी होती कि जैसा उसका जी चाहे वैसा ही करे तो वह ज़रूर आती। वह लिखती है कि Pierre ने उससे भी साथ चलने को कहा था, लेकिन उसने इसलिए मना कर दिया था कि इस साल उनकी कोई आमदनी नहीं हुई थी; और वह लिखती है; 'इसके अलावा, कोई वजह नहीं है कि मैं पूरे घर-बार को लेकर इस साल मास्को चली आऊं। ल्यूबा अभी बहुत छोटी है; और जहां तक लड़कों

---

* आह! मेरे दोस्त। (फ़ांसीसी)

का सवाल है, जो आपके साथ रहेंगे, तो यहां मेरे साथ उनके रहने से मुझे जितना संतोष रहता उससे अधिक संतोष इस हालत में है।' यह सब कुछ बहुत अच्छा है!" नानी ऐसे स्वर में कहती रहीं जिससे साफ़ पता चलता था कि वह इसे अच्छा बिल्कुल नहीं समझती थीं। "लड़कों को तो यहां बहुत पहले भेज दिया जाना चाहिए था ताकि वे कुछ सीख सकें और समाज में उठने-बैठने के आदी हो जायें; वहां गांव में उन्हें सभ्यता और शिष्टाचार की शिक्षा दी भी कैसे जा सकती थी?... अरे, बड़ावाला तो अब कुछ ही दिन में तेरह साल का हो जायेगा, और दूसरा ग्यारह का।... आपने देखा होगा, mon cousin, कि वे यहां बिल्कुल जंगली लगते हैं... उन्हें यह तक नहीं आता कि कमरे में किस तरह घुसा जाता है।"

"लेकिन मेरी समझ में नहीं आता," प्रिंस ने जवाब दिया, "आखिर यह पैसे की तंगी की शिकायत हमेशा क्यों रहती है? इसकी अच्छी ख़ासी ज़मीन-जायदाद है और नताशा का गांव ख़बारोव्का, जहां किसी ज़माने में मैं नाटकों में तुम्हारे साथ अभिनय किया करता था, उसे तो मैं अपने हाथ की रेखाओं की तरह जानता हूं। वह तो बहुत ही बढ़िया जायदाद है! और उससे हमेशा अच्छी ख़ासी आमदनी होनी चाहिए।"

"अपने सच्चे दोस्त के नाते मैं तुम्हें बताती हूं," नानी ने बड़े उदास भाव से उनकी बात के बीच में कहा, "मुझे ऐसा लगता है कि ये सारे बहाने सिर्फ़ इसलिए गढ़े गये हैं कि इसे यहां अकेले रहने का, क्लबों में गुलछर्रे उड़ाने का, दावतों में जाने का और भगवान जाने क्या-क्या करने का मौक़ा मिल सके। और वह किसी तरह का शक नहीं करती। तुम तो जानते ही हो कि वह कैसी फ़रिश्ता है; वह इस पर पूरी तरह भरोसा करती है। इसने उसको यक़ीन दिला दिया कि बच्चों को साथ लेकर मास्को आना और उसे उस बेवक़ूफ़ गवर्नेस के साथ गांव में छोड़ आना ज़रूरी है, और उसने यक़ीन कर लिया; अगर यह उससे कह देता कि बच्चों की कोड़े से पिटाई करना ज़रूरी है जैसा कि प्रिंसेस वार्वारा इल्यीनिचना करती हैं, तो वह शायद इस बात पर भी यक़ीन कर लेती," नानी ने भरपूर तिरस्कार की भावना के साथ अपनी कुर्सी पर पहलू बदलते हुए कहा। "हां, मेरे दोस्त,"

नानी ने एक क्षण के लिए रुककर और उनकी आंख में जो आंसू छलक आया था उसे पोंछने के लिए अपने दो रूमालों में से एक लेकर अपनी बात जारी रखी, "मैं अकसर सोचती हूं कि यह न तो उसकी क़द्र कर सकता है और न उसको समझ सकता है, और यह कि इसके लिए उसके दिल में जो नेकी और प्यार है उसके बावजूद, और अपने दुःख को छिपाने की उसकी तमाम कोशिशों के बावजूद – मैं इस बात को अच्छी तरह जानती हूं – वह इसके साथ सुखी नहीं रह सकती; और, मेरी बात याद रखना, अगर यह न ..."

नानी ने रूमाल से अपना मुंह ढक लिया।

"Eh, ma bonne amie"* प्रिंस ने झिड़कते हुए कहा, "मैं देख रहा हूं कि तुम अभी तक पहले जैसी ही नासमझ हो। हमेशा किसी मनगढ़ंत मुसीबत के बारे में सोच-सोचकर दुःखी होती रहती हो। शरम आना चाहिये तुम्हें। मैं इसे बहुत अरसे से जानता हूं, और मैं जानता हूं कि वह नेक, ध्यान रखनेवाला और बहुत अच्छा शौहर है, और सबसे बड़ी बात यह है कि बेहद उदार आदमी है, un parfait honnête homme."**

अनजाने ही एक ऐसी बातचीत सुन लेने के बाद, जिसको मुझे नहीं सुनना चाहिए था, मैं अत्यंत उद्विग्न होकर पंजों के बल चलता हुआ कमरे से बाहर निकल आया।

अध्याय १९

ईविन-बंधु

"वोलोद्या! वोलोद्या! ईविन!" खिड़की में से ऊदबिलाव की खाल के कॉलरवाले नीले ओवरकोट पहने हुए तीन लड़कों को देखते ही मैं चिल्लाया; वे सामनेवाली पटरी पर से सड़क पार करके हमारे

---

* अरे, मेरी अच्छी दोस्त। (फ़्रांसीसी)

** बिल्कुल शरीफ़ आदमी। (फ़्रांसीसी)

घर की तरफ़ आ रहे थे और उनके आगे-आगे उनके बने-ठने मास्टर साहब थे।

ईविन-बंधु हमारे रिश्तेदार थे और लगभग हमारी ही उम्र के थे; मास्को आने के बाद जल्दी ही उनसे हमारी जान-पहचान हो गयी थी और अब हम गहरे दोस्त बन गये थे।

दूसरा बेटा सेर्योजा सांवले रंग का घुंघराले बालोंवाला लड़का था, जिसकी छोटी-सी सख़्त नाक ऊपर को उठी हुई थी; उसके लाल होंटों पर ताज़गी थी और वे उसके सफ़ेद और कुछ बाहर निकले हुए ऊपर के दांतों पर शायद ही कभी बंद होते थे; उसकी आंखें गहरे नीले रंग की थीं और उसके चेहरे पर हरदम बेहद चुस्ती का भाव रहता था। वह कभी मुस्कराता नहीं था, या तो बहुत गंभीर बना रहता, या बहुत खुलकर गूंजती हुई हंसी हंसता था जिसे देखकर दूसरा भी अनायास ही हंस पड़ता था। उसको पहली बार देखते ही मैं उसकी असाधारण सुंदरता पर मुग्ध हो गया। मैं बरबस उसकी ओर खिंचने लगा। उसे देख भर लेने से मैं काफ़ी ख़ुश हो जाता था; और कुछ समय तक मेरी सारी आत्मा इसी एक इच्छा में उलझी रहती थी। अगर उसे देखे बिना तीन-चार दिन बीत जाते थे तो मैं इतना सुस्त और उदास महसूस करने लगता था कि रो पड़ने को जी चाहता था। सोते-जागते मैं बस उसी के सपने देखता रहता था: जब मैं सोने के लिए लेटता था तो मेरी यही तमन्ना रहती थी कि सपने में उसे देखूं; जब मैं आंखें मूंदता था तो उसे अपने सामने पाता था, और उस दृश्य को अधिकतम उल्लास के साथ अपने मन में संजो लेता था। यह भावना मेरे लिए इतनी बहुमूल्य थी कि मैं अपना यह भेद किसी को बता नहीं सकता था। साफ़ दिखायी देता था कि वह मेरे बजाय वोलोद्या के साथ खेलना और उससे बात करना ज़्यादा पसंद करता था, शायद इसलिए कि मेरी बेचैन आंखों को हमेशा अपने ऊपर गड़ा देखकर उसे उलझन होती थी, या शायद बस इसलिए कि उसे मुझसे कोई सहानुभूति नहीं थी। फिर भी मैं संतुष्ट था, कुछ नहीं चाहता था, कुछ नहीं मांगता था, और उसके लिए सब कुछ निछावर कर देने को तैयार था। वह मेरे अंदर तीव्र अनुराग की जो भावना प्रेरित करता था उसके अतिरिक्त उसकी उपस्थिति मेरे अंदर उतनी ही प्रबल एक और

भावना उत्पन्न करती थी—यह भय कि किसी बात से कहीं उसे ठेस न पहुंचे, कोई बात उसे बुरी न लग जाये, या कहीं वह मुझसे नाराज़ न हो जाये। उसके प्रति मैं अपने मन में जितना प्रेम अनुभव करता था उतना ही भय भी अनुभव करता था, शायद इसलिए कि उसके चेहरे पर दबंगपन का भाव था, या इसलिए कि ख़ुद अपनी सूरत से नफ़रत होने की वजह से मैं दूसरों में सुंदरता की बेहद क़द्र करता था, या सबसे अधिक संभावना इस बात की है कि यह प्रेम का एक अकाट्य प्रमाण था। सेर्योजा ने जब पहली बार मुझसे बात की तो इस अप्रत्याशित आनंद की अनुभूति से मैं अपने होश-हवास इतनी बुरी तरह खो बैठा कि पहले तो मेरा रंग उड़ गया, फिर मेरा चेहरा तमतमा उठा, और मैं कोई जवाब न दे सका। उसकी एक बुरी आदत थी कि सोचते वक़्त वह किसी चीज़ पर नज़र गड़ाकर लगातार पलकें झपकाता रहता था, और अपनी नाक और भवें एक साथ फड़काता रहता था। सभी लोगों की राय थी कि यह आदत बहुत ही भद्दी थी, लेकिन मैं इसे इतना आकर्षक समझता था कि अनजाने ही मैंने ख़ुद उसे अपना लिया। हमारी पहली जान-पहचान के कुछ ही दिन बाद नानी ने पूछा कि क्या मेरी आंखों में दर्द होता है कि मैं उन्हें उल्लू की तरह झपकाता रहता हूं। मैंने उससे कभी प्यार का कोई शब्द नहीं कहा था लेकिन वह जानता था कि मैं किस हद तक उसके वश में हूं और बचपन के हमारे आपसी संबंधों में अनजाने ही लेकिन बड़े क्रूर ढंग से वह इस बात को इस्तेमाल करता था। जहां तक मेरा सवाल था, मैं तो इस बात के लिए तड़पता था कि अपना जी उसके सामने उंडेल दूं लेकिन मैं उससे इतना डरता था कि साफ़-साफ़ हर बात उसे बता देने की हिम्मत भी नहीं कर सकता था; मैं यह जताने की कोशिश करता था कि मुझे बिल्कुल परवाह नहीं है, और उसकी हर बात मैं चुपचाप मान लेता था। कभी-कभी उसका प्रभाव मुझे बहुत उत्पीड़क और असह्य मालूम होता था; लेकिन उससे बच निकलना मेरे बस के बाहर था।

निःस्वार्थ और अगाध प्रेम की उस ताज़गी-भरी सुंदर भावना के बारे में सोचकर मैं अब भी उदास हो जाता हूं जो अभिव्यक्ति या बदले में प्यार पाये बिना ही मर गयी।

इसकी क्या वजह है कि जब मैं बच्चा था तब मैं बड़ों जैसा बनने

की कोशिश करता था, और जब मैं बच्चा नहीं रह गया तो अकसर मेरा जी फिर से बच्चा बन जाने को चाहता था। कितनी ही बार ऐसा हुआ कि सेर्योजा के साथ अपने संबंधों में बच्चे जैसा न लगने की इस इच्छा ने उस भावना को रोक दिया जो उमड़ पड़ने को तैयार थी, और मुझे मक्कारी करने पर मजबूर किया! न सिर्फ़ यह कि मैंने कभी उसे चूमने की हिम्मत नहीं की, हालांकि अकसर ऐसा करने को मेरा बहुत जी चाहता था, कभी उसका हाथ नहीं पकड़ा, कभी उससे यह नहीं कहा कि उसे देखकर मुझे बहुत खुशी हुई, बल्कि मेरी तो उसे सेर्योजा कहने की भी हिम्मत नहीं पड़ती थी, और मैं बड़ी पाबंदी से उसे औपचारिक ढंग से सेर्गेई ही कहता था। भावुकता की हर अभिव्यक्ति को बचकानापन समझा जाता था और भावनाओं को इस प्रकार प्रदर्शित करने से केवल यह सिद्ध होता था कि वह आदमी अभी तक छोटा-सा लड़का है। उन कटु परीक्षाओं से अभी तक न गुज़रने के कारण, जिनके फलस्वरूप प्रौढ़ लोग अपने पारस्परिक व्यवहार में सतर्कता और निर्ममता बरतते हैं, हम लोगों ने केवल बड़े लोगों की नक़ल करने की विचित्र इच्छा से अपने आपको कोमल, बालोचित नेह की शुद्ध अनुभूति के आनंद से वंचित कर लिया था।

मैं नौकरों के कमरे में ही ईविन-बंधुओं से मिला, उनसे साहब-लामत की, और फिर सीधे भागकर नानी के पास जा पहुंचा: मैंने नके आने की सूचना इस तरह खुश होकर दी मानो यह खबर सुनकर ह गद्गद् हो जायेंगी। फिर अपनी नज़र सेर्योजा पर जमाये रहकर सके एक-एक गतिक्रम को ध्यान से देखते हुए मैं उसके पीछे-पीछे इंग-रूम में गया। जब नानी उससे कह रही थीं कि वह बहुत बड़ा गया था और उसे वेधती हुई नज़रों से देख रही थीं, तो मैं भय र आशा की वह मिली-जुली संवेदना अनुभव कर रहा था जो कोई चित्रकार अपनी कृति के बारे में किसी ऐसे पारखी का फ़ैसला ने की प्रतीक्षा में अनुभव करता होगा जिसकी वह बहुत इज़्ज़त ता है।

ईविन-बंधुओं के नौजवान मास्टर साहब Herr Frost नानी की ज़त से हम लोगों को साथ लेकर सामनेवाले बाग़ में गये और हरी बेंच पर बैठ गये; उन्होंने अपनी टांगें बड़े रोब से मिलाकर

उनके बीच पीतल की मूठवाला एक बेंत रख लिया, और ऐसे आदमी की मुद्रा से सिगार पीने लगे जिसे अपने आचरण से भरपूर संतोष हो।

Herr Frost जर्मन थे, लेकिन वह हमारे नेक कार्ल इवानिच से बहुत ही अलग ढंग के जर्मन थे। पहली बात तो यह कि वह रूसी बिल्कुल ठीक बोलते थे, फ़्रांसीसी भी बोलते थे, बुरे उच्चारण से ही सही, और आम तौर पर उनकी यह ख्याति थी, खास तौर पर औरतों के बीच, कि वह बहुत विद्वान आदमी हैं; दूसरी बात यह कि उन्होंने लाल मूंछ रख छोड़ी थी, काले साटन के अपने गुलूबंद में, जिसके दोनों सिरे उनकी गेलिस में घुसे रहते थे, वह बड़ी-सी चुन्नी जड़ी हुई पिन लगाते थे, आसमानी रंग की भड़कीली पतलून पहनते थे जिसके पायंचों के नीचे कसने के लिए तस्मे लगे रहते थे; तीसरी बात यह कि वह नौजवान थे, उनका चेहरा-मोहरा सुंदर, आत्म-संतुष्ट दिखायी देता था, और उनकी भरी-भरी टांगें बहुत ही शानदार थीं। साफ़ ज़ाहिर था कि उन्हें अपनी इस आख़िरी ख़ूबी पर ख़ास तौर पर बहुत गर्व था: वह समझते थे कि जो भी औरत उन टांगों को देख लेगी वह उन पर लट्टू हो जायेगी, और शायद इसीलिए वह टांगों की ज़्यादा से ज़्यादा नुमाइश करने की कोशिश करते थे और चाहे बैठे हों या खड़े वह अपनी पिंडलियां हमेशा चलाते रहते थे। वह उस क़िस्म के रूसी जर्मन थे जो मस्त रहना चाहते हैं और हर वक़्त औरतों को रिझाने के फेर में रहते हैं।

बाग़ में हम लोग बहुत मगन थे। हमारा डाकुओं का खेल इससे अधिक सफल हो ही नहीं सकता था, लेकिन एक बात की वजह से सब कुछ लगभग चौपट होकर रह गया। सेर्योजा डाकू बना था: भागकर मुसाफ़िरों का पीछा करते-करते वह लड़खड़ा गया और उसका घुटना एक पेड़ से जाकर इतने ज़ोर से टकराया कि मैं तो समझा कि वह टूट गया होगा। इस बात के बावजूद कि मैं सिपाही था और मेरा काम था कि मैं उसे पकड़ लूं, लेकिन मैंने उसके पास जाकर बड़ी हमदर्दी से पूछा कि उसे दर्द तो नहीं हो रहा है। सेर्योजा मुझसे नाराज़ हो गया: वह मुट्ठियां भींचकर और पांव पटककर ऐसी आवाज़ में चिल्लाया, जिससे साफ़ पता चलता था कि उसे बहुत दर्द हो रहा था:

"आख़िर यह है क्या? तुम सारा खेल तबाह कर रहे हो! चलो,

पकड़ो न मुझे! आखिर मुझे पकड़ते क्यों नहीं?" वोलोद्या और बड़े ईविन को, जो मुसाफ़िर बने हुए थे और सड़क पर भागे चले जा रहे थे, कनखियों से देखते हुए उसने कई बार दोहराया; और अचानक वह ज़ोर से चीखा और खिलखिलाकर हंसता हुआ उनके पीछे भागा।

मैं बयान नहीं कर सकता कि उसकी इस बहादुरी से मैं कितना प्रभावित और मुग्ध हुआ। बेहद दर्द होने के बावजूद यही नहीं कि वह रो नहीं पड़ा, बल्कि उसने यह तक नहीं ज़ाहिर होने दिया कि उसे दर्द हो रहा है, और एक क्षण के लिए भी उसने खेल को अपने ध्यान से नहीं उतारा।

इसके कुछ देर बाद जब इलेंका ग्रैप भी हमारे साथ शामिल हो गया और हम लोग खाने के वक़्त तक खेलने के लिए ऊपर चले गये तो सेर्योजा ने एक बार फिर मुझे अपने सराहनीय साहस और चरित्र की दृढ़ता से चकित कर दिया।

इलेंका ग्रैप एक ग़रीब परदेसी का बेटा था जो किसी ज़माने में हमारे नाना के यहां रह चुका था; वह किसी बात के लिए उनका एहसानमंद था, और अब इसे अपना अनिवार्य कर्तव्य समझने लगा था कि अपने बेटे को हम लोगों के पास अकसर भेज दिया करे। अगर वह यह समझता हो कि हमारी जान-पहचान से उसके बेटे को कोई सम्मान या संतोष मिल सकेगा तो यह उसकी सरासर भूल थी, क्योंकि हम लोग न सिर्फ़ इलेंका के साथ कोई दोस्ती नहीं करते थे बल्कि हम लोग उसकी ओर ध्यान ही तब देते थे जब हमें उसका मज़ाक़ उड़ाना होता था। इलेंका ग्रैप तेरह साल का लंबा-सा दुबला-पतला लड़का था, जिसका चेहरा फीके रंग का चिड़ियों जैसा था और उसके चेहरे पर खुशमिज़ाजी और दब्बूपन का भाव रहता था। उसके कपड़े बहुत बुरे होते थे, लेकिन उसके बालों में हमेशा इतनी ढेरों क्रीम चुपड़ी रहती थी कि हम लोगों को विश्वास था कि जिस दिन धूप निकलती होगी उस दिन ग्रैप के बालों की क्रीम पिघल-पिघलकर बहती हुई उसके कोट के अंदर पहुंच जाती होगी। अब जब मैं उसे याद करता हूं तो मुझे लगता है कि वह बहुत ही उपकारी, नेक और कोमल स्वभाव का था; लेकिन उस समय वह मुझे तिरस्करणीय जीव लगता

था, जिस पर तरस खाना या जिसके बारे में सोचना भी ज़रूरी नहीं था।

डाकुओं का खेल खतम हो जाने के बाद हम लोग ऊपर जाकर ऊधम मचाने लगे और एक-दूसरे को नटों के तरह-तरह के करतब दिखाने लगे। इलेंका हमें आश्चर्य-भरी डरी-डरी मुस्कराहट के साथ देखता रहा और जब हम लोगों ने सुझाव रखा कि वह भी अपने करतब दिखाये तो उसने यह कहकर इंकार कर दिया कि उसके शरीर में इतना बल नहीं था। सेर्योजा बेहद आकर्षक लग रहा था। उसने अपनी जैकेट उतार दी थी। उसके गाल दहक रहे थे और उसकी आंखों से अंगारे जैसे निकल रहे थे; वह लगातार हंस रहा था और तरह-तरह के नये करतब सोच निकालता था: वह तीन कुर्सियां एक क़तार में रखकर उन्हें फलांग जाता था, एक साथ कई क़लाबाज़ियां खा जाता था, तातिश्चेव के फ़्रांसीसी-रूसी शब्दकोश के कई खंडों को कमरे के बीच में चबूतरे की तरह रखकर वह उस पर सिर टिकाकर उल्टा खड़ा हो जाता था और इसके साथ ही अपनी टांगों से ऐसे-ऐसे तमाशे दिखाता था कि हम लोग अपनी हंसी नही रोक पाते थे। यह आख़िरी करतब दिखाने के बाद वह एक क्षण तक कुछ सोचता रहा और आदत के अनुसार अपनी पलकें झपकाता रहा, और फिर बहुत गंभीर मुद्रा बनाकर इलेंका के पास गया: "अच्छा, आप यह करके दिखाइये; सचमुच कोई ख़ास मुश्किल काम नहीं है।" यह देखकर कि सबका ध्यान उसी की ओर है ग्रैप का चेहरा लाल हो गया और उसने अत्यंत क्षीण स्वर में कहा कि वह नहीं कर पायेगा।

"आख़िर यह बात क्या है? यह कुछ करना क्यों नहीं चाहता? लड़की कहीं का... इसे सिर के बल खड़ा होना ही पड़ेगा!"

और यह कहकर सेर्योजा ने उसका हाथ पकड़ लिया।

"हां, हां, झटपट सिर के बल खड़े तो हो जाओ!" हम सब लोग इलेंका को घेरकर चिल्लाये, जो उस वक़्त बहुत सहमा हुआ लग रहा था और उसका रंग पीला पड़ गया था। हम उसकी बांहें पकड़कर उसे शब्दकोश के पास खींच ले गये।

"मुझे छोड़ दीजिये, मैं ख़ुद जाऊंगा! मेरी जैकेट फाड़ डालेंगे आप लोग!" वह अभागा हम लोगों के चंगुल में फंसा हुआ चिल्लाया।

लेकिन उसकी यह निराशा-भरी चीख़-पुकार सुनकर हम लोगों का जोश और बढ़ गया और हंसी के मारे हमारा पेट फूलने लगा; उसकी हरी जैकेट की हर सीवन उधड़ती जा रही थी।

वोलोद्या और सबसे बड़े ईविन ने उसका सिर झुकाकर शब्दकोश पर रख दिया, सेर्योजा ने और मैंने उस बेचारे लड़के की पतली-पतली टांगें पकड़ लीं, जिन्हें वह चारों दिशाओं में झिटक रहा था, उसकी पतलून के पायंचे घुटनों तक चढ़ा दिये और ठट्ठा मारकर हंसते हुए उसकी टांगें ऊपर हवा में उठा दीं; सबसे छोटा ईविन उसके धड़ को सधाये रखने की कोशिश कर रहा था।

अचानक हमारे शोर-गुलवाले ठट्ठे दब गये और हम सब लोग चुप हो गये; कमरे में ऐसा सन्नाटा छा गया कि बस ग्रैप के सांस लेने की आवाज़ सुनायी दे रही थी। उस क्षण मुझे पूरी तरह यक़ीन नहीं था कि यह कोई हंसने की या मजा लेने की बात थी।

"वाह! तुम तो बड़े अच्छे लड़के हो," सेर्योजा ने कहा।

इलेंका चुप था, और अपने को छुड़ाने की कोशिश में वह अपनी टांगें चारों ओर झिटक रहा था। जान की बाज़ी लगाकर लड़ने के ऐसे ही एक क्षण में उसने सेर्योजा की आंख में अपनी एड़ी इतने ज़ोर से मारी कि दर्द से तड़पकर सेर्योजा ने उसकी टांग छोड़ दी और अपनी आंख हाथ से दबाकर, जिसमें से अनायास ही आंसुओं की धारा बहने लगी थी, इलेंका को पूरी ताक़त से धक्का दिया। इलेंका, जिसे अब हम लोगों ने कोई सहारा नहीं दे रखा था, धम से फ़र्श पर गिरा और सिसकियों के बीच वह बस इतना कह पाया:

"आप सब लोग मुझे इतना क्यों सताते हैं?"

बेचारे इलेंका का आंसुओं से भीगा हुआ चेहरा, उसके बिखरे हुए बाल, घुटनों तक चढ़ी हुई उसकी पतलून देखकर, जिसके नीचे से उसके लंबे मैले मोज़े दिखायी दे रहे थे, हम लोग सारा हंसी-मज़ाक़ भूल गये और चुपचाप खड़े मुस्कराने की कोशिश करते रहे।

सबसे पहले सेर्योजा अपनी स्वाभाविक स्थिति में वापस आ गया।

"पिनपिनहां, रुअंटा कहीं का!" सेर्योजा ने उसे ज़रा-सा पैर से छूते हुए कहा, "मज़ाक़ नहीं बर्दाश्त कर सकते! बस बहुत हो चुका। उठ जाइये।"

"आप... तू बहुत दुष्ट और नीच लड़का है!" इलेंका ने ग़ुस्से से कहा और मुंह फेरकर ज़ोर-ज़ोर से सिसकने लगा।

"क्या! पहले मुझे लात मारी और अब मुझे गाली दे रहा है!" सेर्योजा ने चिल्लाकर कहा और शब्दकोश उठाकर उस बेचारे लड़के के सिर पर बड़े ज़ोर से फेंका, जिसने अपनी रक्षा करने के बारे में सोचा तक नहीं, बस अपना सिर हाथों से ढक लिया।

"यह लो! और लो! अगर यह मज़ाक़ भी नहीं समझ सकता तो इसे अकेला पड़ा रहने दो। ...चलो, हम लोग नीचे चलें," सेर्योजा ने बनावटी हंसी हंसते हुए कहा।

मैं बड़ी हमदर्दी से एकटक उस बेचारे को देख रहा था, जो शब्दकोश के खंडों के बीच अपना मुंह छिपाये फ़र्श पर पड़ा था और इस तरह रो रहा था कि लगता था कि वह उन सिसकियों की वजह से मर जायेगा जो उसके सारे शरीर को झंझोड़े दे रही थीं।

"अरे, सेर्गेई!" मैंने उससे कहा, "तुमने ऐसा क्यों किया?"

"यह भी अच्छी कही! मैं तो नहीं रोया था, या रोया था, जब मेरा घुटना आज इतनी बुरी तरह कट गया था कि हड्डी तक दिखायी देने लगी थी।"

"हां, यह तो सच है," मैंने सोचा, "इलेंका सरासर रुअंटा है। सेर्योजा सचमुच बहादुर है!"

मुझे यह अंदाज़ा नहीं था कि वह बेचारा लड़का दर्द की वजह से उतना नहीं रो रहा था जितना कि यह सोच-सोचकर कि पांच लड़के, जिन्हें शायद वह पसंद करता था, बिना किसी वजह के ही, उससे नफ़रत करने और उसे सताने के लिए मिलकर एक हो गये थे।

सच तो यह है कि मैं अपने आपको भी नहीं समझा सकता कि मेरे आचरण में इतनी क्रूरता क्यों आ गयी। मैं उसके पास गया क्यों नहीं, मैंने उसकी रक्षा क्यों नहीं की, मैंने उसे तसल्ली क्यों नहीं दी? दया की मेरी उस भावना को क्या हो गया था जिसकी वजह से अपने घोंसले से नीचे गिरे हुए कौए के बच्चे को देखकर या घर के बाहर निकाले जानेवाले कुत्ते के बच्चे को देखकर, या बावर्ची को सूप बनाने के लिए मुर्ग़ी को ले जाता देखकर मैं फूट-फूटकर रो पड़ता था?

क्या सेर्योजा के प्रति मेरे प्रेम और उसकी नजरों में उतना ही

शानदार लगने की इच्छा ने, जैसा वह खुद था, मेरी इस सुंदर भावना को दबा दिया था? अगर ऐसा था तो वह प्रेम और वह इच्छा ऐसे वांछनीय गुण नहीं थे जिन पर कोई ईर्ष्या करे। बचपन की मेरी स्मृतियों के पृष्ठों में यही एकमात्र कलंक हैं।

अध्याय २०

हमारे यहां मेहमान आये

बर्तनों के कमरे में ग़ैर-मामूली चहल-पहल और हर तरफ़ रोशनियों की जगमगाहट को देखते हुए, जो ड्राइंग-रूम और हॉल की मेरी हमेशा की जानी-पहचानी चीज़ों को एक नयी और उत्सवमयी आभा प्रदान कर देती थी, और ख़ास तौर पर इस बात से कि प्रिंस इवान इवानिच ने अपने यहां के गाने-बजानेवालों को हमारे यहां भेज दिया था, साफ़ ज़ाहिर था कि उस रात बहुत-से मेहमान आनेवाले थे।

हर गुज़रनेवाली गाड़ी की आवाज़ सुनकर मैं भागा-भागा खिड़की के पास जाता, अपनी हथेलियां मुंह और कांच के बीच रखता और अधीरता-भरी जिज्ञासा से सड़क की ओर देखने लगता। शुरू में तो अंधेरे की वजह से खिड़की में से कुछ भी दिखायी न देता, फिर धीरे-धीरे अंधेरे को चीरकर, सड़क के पार वह जानी-पहचानी दुकान दिखायी देने लगी जिसके बग़ल में लालटेन लगी हुई थी; उससे और आगे वह बड़ा-सा घर दिखायी देता जिसकी नीचेवाली मंज़िल की दो खिड़कियों में रोशनी हो रही थी; सड़क के बीच में दो मुसाफ़िरों को बिठाते हुए कोई खचड़ा घोड़ागाड़ी या पैदल की रफ़्तार से घर वापस जाती हुई कोई बग्घी दिखायी दे जाती। आखिरकार एक घोड़ागाड़ी आकर हमारी बरसाती के पास रुकी, और इस पूरे यक़ीन के साथ कि ईविन-बंधु आये होंगे, जिन्होंने जल्दी आने का वादा किया था, मैं ड्राइंग-रूम से लगे हुए छोटे कमरे में ही उनसे मिलने के लिए नीचे भागा। ईविन-बंधुओं के बजाय दरवाज़ा खोलनेवाले वर्दीधारी अर्दली के पीछे दो महिलाएं दिखायी दीं: उनमें से एक लंबे क़द की थीं और बर्फ़िस्तानी

लोमड़ी की खाल के कॉलरवाला नीला लबादा पहने थीं; दूसरी, जो छोटे क़द की थी, सिर से पांव तक एक हरी शॉल में लिपटी हुई थी, जिसके निचले छोर पर बस फ़र के बूट जूते पहने हुए उसके छोटे-छोटे पांव ही दिखायी दे रहे थे। बाहरवाले छोटे कमरे में मेरी उपस्थिति की ओर ध्यान न देते हुए – हालांकि मैंने सोचा कि झुककर उनका अभिवादन करना मेरे लिए ज़रूरी है – छोटीवाली चलकर बड़ीवाली के पास तक गयी और उनके सामने जाकर खड़ी हो गयी। बड़ीवाली ने छोटीवाली के सिर पर बंधा हुआ रूमाल खोला, उसके लबादे का बटन खोला, और जब वर्दीधारी अर्दली ने ये सब चीज़ें संभाल लीं और उसके छोटे-छोटे फ़र के बूट उतारे तो इन सब आवरणों के अंदर से कोई बारह साल की एक छोटी-सी सुंदर लड़की निकली, जिसने गहरी काट के गलेवाली सफ़ेद मलमल की ऊंची फ़्राक, ढीला-ढाला पायचों के निचले सिरों पर झालर लगा हुआ सफ़ेद पतलून, और नन्हे-नन्हे काले जूते पहन रखे थे। उसकी पतली-सी गोरी-गोरी गर्दन पर काला मख़मली फीता बंधा हुआ था; सिर पर गहरे कत्थई रंग के घने घुघराले बाल थे जो उसके सुंदर चेहरे पर बेहद भले लगते थे और उसके गोरे-गोरे कंधों पर इतने आकर्षक ढंग से बिखरे हुए थे कि अगर खुद कार्ल इवानिच भी मुझसे कहते कि वे इस तरह घुंघराले इसलिए हो गये थे कि उन्हें सवेरे से अख़बार के छोटे-छोटे टुकड़ों में ऐंठ-मरोड़कर रखा गया था और दहकते हुए चिमटों से दबाया गया था, तब भी मैं यक़ीन न करता। ऐसा लगता था कि वे घुंघराले बाल जन्म से ही उसके सिर पर थे।

उसके चेहरे की एक विलक्षण विशेषता थी उसकी बेहद बड़ी-बड़ी, उभरी हुई, अधमुंदी आंखें, जिनके विपरीत उसके मुंह का इतना छोटा होना कुछ विचित्र तो अवश्य लगता था पर रुचिकर भी लगता था। उसके होंठ कसकर बंद थे, और आंखों में ऐसी गंभीरता दिखायी देती थी कि उसके चेहरे की मुद्रा में कोई मुस्कराहट की उम्मीद नहीं कर सकता था, और इस वजह से यह मुस्कराहट हमेशा और भी मोहक होती थी।

इस कोशिश में कि मैं देखा न जाऊं, मैं चुपके से हॉल में खिसक गया और इधर से उधर टहल-टहलकर यह जताने लगा कि मैं बड़ी

गहराई से कुछ सोच रहा हूं और मुझे मेहमानों के आने का पता भी नहीं चला है। जब वे लोग कमरे के बीच में पहुंच गये तो मैंने झुककर उनका अभिवादन किया और उन्हें सूचना दी कि नानी ड्राइंग-रूम में हैं। मादाम वलाख़ीना ने बड़े अनुग्रह से सिर हिलाकर मेरे अभिवादन का जवाब दिया; उनका चेहरा मुझे बहुत अच्छा लगा, खास तौर पर इसलिए कि वह मुझे उनकी बेटी सोनेच्का के चेहरे से बहुत मिलता-जुलता दिखायी दिया।

ऐसा लग रहा था कि नानी सोनेच्का को देखकर बहुत खुश हुई थीं: उन्होंने उसे अपने पास बुलाया, माथे पर पड़ी हुई एक घुंघराली लट को ठीक किया और उसके चेहरे को ध्यान से देखते हुए कहा, "Quelle charmante enfant!* सोनेच्का मुस्करा दी और इतने आकर्षक ढंग से लजायी कि उसे देखकर मैं भी शरमा गया।

"मेरी बच्ची, मैं समझती हूं कि यहां तुम्हारा जी नहीं घबरायेगा," नानी ने उसकी ठोड़ी पकड़कर उसका छोटा-सा मुखड़ा ऊपर उठाकर कहा। "जाओ, जाकर मौज करो और जी भरकर नाचो। तो एक महिला और दो सज्जन आ चुके हैं," उन्होंने मादाम वलाख़ीना की ओर मुड़ते हुए और मुझे अपने हाथ से छूते हुए इतना और जोड़ दिया।

हम लोगों को इस तरह एक-दूसरे के साथ जोड़ दिया जाना मुझे इतना अच्छा लगा कि मैं फिर शरमा गया।

यह महसूस करते हुए कि मेरा शर्मीलापन बढ़ता जा रहा था और एक और घोड़ागाड़ी के पहियों की आवाज़ सुनकर मैं वहां से चला आया। बाहरवाले छोटे कमरे में मैंने प्रिंसेस कोर्नाकोवा को उनके बेटे और बेशुमार बेटियों के साथ देखा। सारी बेटियां बिल्कुल एक जैसी थीं – वे बिल्कुल प्रिंसेस से मिलती-जुलती थीं और बदसूरत थीं: उनमें से एक भी इस लायक़ नहीं थी कि उसकी तरफ़ देखा जाये। अपने लबादे उतारते हुए वे सभी एक साथ महीन स्वरों में बातें कर रही थीं, नख़रे कर रही थीं और किसी बात पर हंस रही थीं – शायद इस बात पर कि वे इतनी बहुत-सी थीं।

---

* कैसी सुंदर बच्ची है! (फ़्रांसीसी)

एत्येन लंबे क़द का मांसल शरीरवाला पंद्रह साल का लड़का था, जिसके चेहरे का रंग बिल्कुल फीका था और उसकी धंसी हुई आंखों के नीचे नीले-नीले धव्वे थे; उम्र को देखते हुए उसके हाथ-पांव जरूरत से ज़्यादा बड़े थे; वह बेढंगा था, उसकी ऊंची-नीची आवाज कानों को बुरी लगती थी, लेकिन वह अपने आपसे बहुत संतुष्ट माल्म होता था, और मेरी राय में वह ठीक उस तरह का लड़का था जिसकी क़मची से पिटाई होती है।

कुछ देर तक हम लोग आमने-सामने कुछ कहे बिना खड़े रहे और एक-दूसरे को बड़े ध्यान से देखते रहे। फिर हम एक-दूसरे को चूमने के प्रकट उद्देश्य से कुछ क़रीब आ गये लेकिन एक-दूसरे की आंखों में देखने के बाद न जाने क्यों हमने अपना इरादा बदल दिया। जब उसकी सारी बहनों की पोशाकें हमारे पास से सरसराती हुई गुज़र गयीं तो मैंने बातचीत का सिलसिला शुरू करने के लिए कहा कि घोड़ागाड़ी में उन सब लोगों को तो क्या आराम मिला होगा।

"मालूम नहीं," उसने लापरवाही से जवाब दिया, "क्योंकि मैं तो कभी गाड़ी के अंदर बैठता नहीं; वहां बैठने से मुझे मतली होती है और मां इस बात को जानती हैं। शाम को जब भी हम लोग कहीं जाते है तो मैं हमेशा कोचवान के पास बैठता हूं। वहां ज़्यादा मजा आता है, हर चीज़ दिखायी देती है, फ़िलिप मुझे घोड़ा हांकने देता है और कभी-कभी मैं चाबुक भी संभाल लेता हूं। कभी-कभी चाबुक पास से गुज़रते हुए किसी राहगीर को भी लग जाती है," उसने बड़े भावपूर्ण ढंग से अपनी बात बढ़ाते हुए कहा, "बेहद मज़ा आता है!"

"सरकार," अर्दली ने बाहरवाले छोटे कमरे में आकर कहा, "फ़िलिप पूछ रहा है कि आपने चाबुक कहां रख दी?"

"क्यों, मैंने उसी को तो दे दी थी।"

"वह तो कहता है कि आपने नहीं दी।"

"तो फिर मैंने लालटेन पर लटका दी होगी।"

"फ़िलिप कहता है कि लालटेन पर भी नहीं है; शायद वह आपसे खो गयी और अब तो आपके शौक़ के लिए फ़िलिप को अपनी गांठ से पैसे देने पड़ेंगे," अर्दली ने कहा, उसका गुस्सा बढ़ता जा रहा था।

अर्दली, जो देखने में बाइज़्ज़त लेकिन उदास स्वभाव का आदमी लगता था, फ़िलिप की तरफ़ मालूम होता था, और उसने हर हालत में इस मामले की जांच करा ही देने की ठान ली थी। बड़ी व्यवहार-कुशलता का परिचय देते हुए मैं अनायास ही वहां से हट गया मानो मैंने कुछ सुना ही न हो। लेकिन जो नौकर-चाकर वहां मौजूद थे उनका रवैया दूसरा ही था: अनुमोदन के भाव से उस बूढ़े नौकर को देखते हुए वे और पास आ गये।

"अच्छी बात है, खो दी, तो क्या हुआ?" एत्येन ने और आगे कोई सफ़ाई देने से कतराते हुए कहा। "मैं उसे चाबुक की क़ीमत चुका दूंगा। अच्छा तमाशा है!" उसने मेरी तरफ़ बढ़ते हुए और मुझे ड्राइंग-रूम की ओर ले जाते हुए इतना और जोड़ दिया।

"माफ़ कीजियेगा, सरकार, आप चुकायेंगे कहां से? जैसा आप चुकायेंगे वैसा तो मैं जानता हूं: आठ महीने से आप मार्या वसील्येव्ना के बीस कोपेक चुका रहे हैं, और मेरे साथ भी दो साल से यही हो रहा है, और पेत्रूश्का के..."

"ज़बान बंद करो!" छोटे प्रिंस गुस्से से लाल-पीले होकर चिल्लाये। "मैं तुम्हें बताऊंगा इसका नतीजा।"

"आप बतायेंगे, बड़े आये बतानेवाले!" अर्दली ने कहा। "आपको शरम आनी चाहिये, सरकार," जब हम लोग ड्राइंग-रूम में प्रवेश कर रहे थे तो उसने अर्थपूर्ण स्वर में कहा और लबादे लेकर चल दिया।

"ठीक है, ठीक है!" हम लोगों के पीछे से बाहरवाले छोटे कमरे में किसी की अनुमोदन करती हुई आवाज़ सुनायी दी।

नानी का एक विशेष गुण यह था कि किसी के बारे में अपनी राय ज़ाहिर करने के लिए जब उनका जी चाहता था तो वह मध्यम पुरुष के सर्वनाम के एकवचन और बहुवचन रूपों का इस्तेमाल खास तरह से ज़ोर देकर करती थीं। हालांकि वह 'आप' और 'तुम' का प्रयोग उनके सामान्यत: स्वीकृत प्रचलन के बिल्कुल विपरीत करती थीं, उनकी बात में इन शब्दों का अर्थ बिल्कुल ही दूसरा हो जाता था। जब किशोर प्रिंस उनके पास पहुंचा तो उन्होंने उससे कुछ शब्द उसे 'आप' कहकर संबोधित करते हुए और उसे ऐसे तिरस्कार के भाव से देखते हुए कहे कि अगर मैं उसकी जगह होता तो बिल्कुल हक्का-

बक्का रह जाना। लेकिन साफ़ लग रहा था कि एत्येन उस सांचे का बना हुआ लड़का नहीं था: इतना ही नहीं कि उसने स्वागत में कहे गये नानी के इन शब्दों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, बल्कि स्वयं उनकी ओर ही कोई ध्यान नहीं दिया, और वहां पर उपस्थित सभी लोगों को शिष्टता से न सही, बड़ी बेतकल्लुफ़ी से सलाम किया।

मेरा सारा ध्यान सोनेच्का पर केंद्रित था। मुझे याद है कि जब वोलोद्या, एत्येन और मैं कमरे के एक ऐसे हिस्से में खड़े आपस में बातें कर रहे थे, जहां से हम सोनेच्का को देख सकते थे और वह हमें देख सकती थी और हमारी बातें सुन सकती थी, तो मैं बहुत चहककर बातें कर रहा था; जब मुझे कोई ऐसी बात कहने का मौक़ा मिलता जो मुझे दिलचस्प या सटीक लगती तो मैं उसे ज़ोर से कहकर ड्राइंग-रूम के दरवाज़े की ओर देखता; लेकिन जब हम वहां से हटकर दूसरी जगह चले गये जहां हमें ड्राइंग-रूम से देख सकना या सुन सकना नामुमकिन था तो मैं चुप हो गया और मुझे बातचीत में मज़ा आना बिल्कुल बंद हो गया।

ड्राइंग-रूम और हॉल धीरे-धीरे मेहमानों से भर गये। जैसा कि बच्चों की पार्टियों में अकसर होता है, उनमें कई बच्चे ज़्यादा बड़ी उम्र के थे जो नाचने और मस्ती मनाने का मौक़ा हाथ से नहीं जाने देना चाहते थे, लेकिन जताते यही थे कि वह सिर्फ़ मेज़बान को खुश करने के लिए ऐसा कर रहे हैं।

जब ईविन-बंधु आये तो सेर्योजा से मिलने पर आम तौर पर होनेवाली खुशी के बजाय मुझे यह सोचकर झुंझलाहट की एक विचित्र भावना का आभास हुआ कि वह सोनेच्का को देखेगा, और सोनेच्का उसे देखेगी।

अध्याय २१

मज़ूर्का नाच से पहले

"मैं देख रहा हूं कि यहां नाचने का भी कार्यक्रम है," सेर्योजा ने ड्राइंग-रूम से बाहर आकर अपनी जेब में से मुलायम चमड़े के नये दस्ताने निकालते हुए कहा, "दस्ताने पहन लेने चाहिये।"

"हम लोग क्या करेंगे–हमारे पास तो दस्ताने हैं नहीं," मैंने सोचा, "ऊपर जाकर कहीं से खोज निकालने होंगे।"

लेकिन सारी दराज़ों को खखोलने के बाद हमारे हरे सफ़री दस्ताने और मुलायम चमड़े का एक ही दस्ताना मेरे हाथ लगा, जो मेरे किसी काम का नहीं था–पहली बात तो यह कि वह बहुत पुराना और मैला था, दूसरे वह मेरे लिए बहुत बड़ा था, और ख़ास तौर पर इसलिए भी कि उसकी बीच की उंगली ग़ायब थी, जिसे शायद कार्ल इवानिच ने बहुत पहले ही चोट खाये हुए हाथ के लिए काट लिया था। फिर भी यह बचा-खुचा दस्ताना मैंने पहन लिया और अपनी बीच की उंगली में उस जगह को घूरता रहा जहां हर वक़्त स्याही का धब्बा लगा रहता था।

"अगर नताल्या साविश्ना यहां होती तो वह ज़रूर कहीं से हमारे लिए दस्ताने ढूंढ निकालती। उनके बिना नीचे जाना असंभव है, क्योंकि अगर उन लोगों ने पूछा कि मैं नाच क्यों नहीं रहा हूं तो मैं क्या जवाब दूंगा? और यहां बैठे रहना भी उतना ही नामुमकिन है, क्योंकि वहां ज़रूर मुझे ढूंढा जायेगा। तो फिर क्या किया जाये?" अपने हाथ हिलाते हुए मैं कह रहा था।

"तुम यहां क्या कर रहे हो?" वोलोद्या ने भागकर अंदर आते हुए पूछा, "जाकर किसी लड़की से साथ नाचने को कहो, नाच बस शुरू ही होनेवाला है।"

"वोलोद्या," मैंने लगभग निराशा के भाव से उसे अपना हाथ दिखाया जिसकी दो उंगलियां मैले दस्ताने में से निकली हुई थीं, "वोलोद्या, तुम यह भूल गये!"

"क्या?" उसने अधीरता से कहा। "अरे हां, दस्ताने!" मेरे हाथ को देखते ही वह लापरवाही से बोला। "यह तो सच है, हमारे पास तो हैं नहीं। हमें नानी से पूछना चाहिये... देखें, वह क्या कहती हैं।" और ज़रा भी चिंतित हुए बिना वह नीचे भागा।

एक ऐसी बात के बारे में, जो मुझे इतनी महत्वपूर्ण लग रही थी, उसकी निश्चिंतता से आश्वस्त होकर मैं जल्दी से ड्राइंग-रूम में चला गया और बिल्कुल भूल ही गया कि अपने बायें हाथ पर मैं अभी तक वह फटा हुआ दस्ताना पहने था।

वड़ी सतर्कता से नानी की आराम-कुर्सी के पास जाकर और बहुत धीरे-से उनके लंबे गाऊन को छूते हुए मैंने कानाफूसी के स्वर में कहा :

"नानी, हम लोग क्या करें? हमारे पास तो दस्ताने हैं ही नहीं!"

"क्या बात है, बेटा?"

"हमारे पास दस्ताने नहीं हैं," मैंने और पास जाकर दोनों हाथ उनकी आराम-कुर्सी के हत्थे पर रखते हुए दोहराया।

"और यह क्या है?" उन्होंने अचानक मेरा बायां हाथ देखकर कहा। "Voyez, ma chère,"* मादाम वलाखीना की ओर मुड़कर वह कहती रहीं, "voyez comme ce jeune homme s'est fait élecant pour danser aveg votre fille."**

नानी मेरा हाथ कसकर पकड़े रहीं और अपने मेहमानों को उस वक़्त तक गंभीर और सवालिया नज़रों से देखती रहीं जब तक कि वहां पर मौजूद सभी लोगों के कौतूहल की तुष्टि नहीं हो गयी और सभी लोग हंसने नहीं लगे।

अगर उस वक़्त सेर्योजा मुझे देख लेता जब मैं शर्म के मारे मुंह सिकोड़े अपना हाथ छुड़ाने की बेकार कोशिश कर रहा था तो मुझे बड़ी खिसियाहट होती; लेकिन सोनेच्का के वहां मौजूद होने से मुझे तनिक भी परेशानी नहीं हुई, जो इतना हंसी कि उसकी आंखों में आंसू भर आये और उसके सारे घुंघराले बाल उसके लजाये हुए लाल चेहरे के चारों ओर बिखरे हुए उछल रहे थे। मैंने देखा कि वह इस तरह दिल खोलकर और स्वाभाविक ढंग से हंस रही थी कि ऐसा नहीं हो सकता था कि वह मेरा मज़ाक़ उड़ा रही हो; इसके विपरीत, हम दोनों साथ-साथ एक-दूसरे को देख-देखकर हंस रहे थे और ऐसा लगता था कि इस वजह से हम दोनों निकटतर आते जा रहे थे। दस्तानेवाली इस घटना से, भले ही उसका अंत बहुत सुखद न रहा

---

* यह देखिये, माई डियर! (फ़ांसीसी)

** देखिये, यह नौजवान आपकी बेटी के साथ नाचने के लिए कैसे बन-ठनकर आ गया है। (फ़ांसीसी)

ो, मुझे इतना लाभ ज़रूर हुआ कि मैं उस मंडली में सहज भाव से
ुल-मिल गया जो मुझे हमेशा बहुत डरावनी लगती थी – ड्राइंग-रूम
ंडली ; नाचने के कमरे में प्रवेश करते समय मैं तनिक भी नहीं
तजाया।

शर्मीले लोगों की सारी मुसीबतों की जड़ यह होती है कि उन्हें
ह भरोसा नहीं रहता कि दूसरे लोगों ने उनके बारे में क्या राय
ायम की होगी ; जैसे ही यह राय, वह अच्छी हो या बुरी, स्पष्ट
प से व्यक्त कर दी जाती है वैसे ही सारी मुसीबत दूर हो
ाती है।

मेरे सामने उस फूहड़ छोटे प्रिंस के साथ फ़ांसीसी क्वाड्रिल-नृत्य
ाचती हुई सोनेच्का वलाख़ीना कितनी आकर्षक लग रही थी! जब
haîne में उसने अपना छोटा-सा हाथ मेरी ओर बढ़ाया था तो
सकी मुस्कराहट में कितनी मिठास थी! उसके सुनहरे घुंघराले बालों
े लच्छे कैसे सुंदर ढंग से लय के साथ उछल रहे थे ; अपने नन्हे-
न्हे पांवों से वह किस मासूम अंदाज़ में jeté-assemblé* करती
ी! जब नाच के पांचवें तोड़े में मेरे साथवाली लड़की मुझे छोड़कर
ूसरी ओर चली गयी और मैं अकेले नाचने की तैयारी में ताल की
तीक्षा करने लगा तो सोनेच्का ने गंभीर भाव से अपने होंट भींच
लये और दूसरी ओर देखने लगी। लेकिन वह मेरी वजह से अकारण
ी डर रही थी। मैं बेझिझक chassé en avant, chassé en
rrière, glissade** करने लगा ; और जब मैं उसके पास पहुंच
हा था तो मैंने मज़ाक़ के अंदाज़ से उसे अपना दस्ताना दिखाया
जसमें से दो उंगलियां बाहर निकली हुई थीं। वह ठहाका मारकर
ंस पड़ी और उसके नन्हे-नन्हे पांव पहले से भी ज़्यादा मोहक ढंग
े फ़र्श पर थिरकने लगे। मुझे अब तक याद है कि जब हम सबने
क-दूसरे के हाथ पकड़कर घेरा बना लिया था तो उसने अपना छोटा-
ा सिर झुकाया और मेरे हाथ में से अपना हाथ छुड़ाये बिना दस्ताने

---

* chaîne, jeté-assemblé— नाच के तोड़े। –अनु०

** chassé en avant, chassé en arrière, glissade— नाच
े विभिन्न तोड़े। –अनु०

मे अपनी छोटी-सी नाक खुजा ली थी। यह सब कुछ अब भी मुझे इतना साफ़ दिखायी देता है जैसे मेरी आंखों के सामने हो रहा हो, और मुझे 'द डैन्यूब मेड' के क्वाड्रिल-नृत्य का वह संगीत अब तक सुनायी देता है जिसकी धुन पर यह सब कुछ हुआ था।

दूसरा क्वाड्रिल मैं खुद सोनेच्का के साथ नाचा, नाच के दौरान मुझे बेहद अटपटा महसूस होने लगा और मेरी समझ में तनिक भी नहीं आया कि मैं उससे क्या कहूं। जब मेरी चुप्पी बहुत लंबी खिंच गयी तो मुझे डर लगने लगा कि कहीं वह मुझे बेवक़ूफ़ न समझ बैठे, और मैंने फ़ैसला किया कि मैं अपने बारे में इस तरह के किसी भी भ्रम से उसे मुक्त कर दूंगा। "Vous êtes une habitante de Moscou?"* मैंने उससे पूछा और जब उसने 'हां' में जवाब दिया तो मैंने फिर कहा: "Et moi, je n'ai encore jamais fréquenté la capitale,"** इस बात का ख़ास तौर पर ध्यान रखते हुए कि "fréquenter"*** शब्द का क्या असर पड़ता है। फिर भी मैंने महसूस किया कि हालांकि यह बातचीत की बहुत शानदार शुरूआत थी, और इससे फ़्रांसीसी भाषा की मेरी जानकारी पूरी तरह साबित हो जाती थी, लेकिन मैं इसी ढर्रे पर बातचीत जारी रखने में असमर्थ था। हमारी नाचने की बारी बहुत जल्दी नहीं आनेवाली थी और एक बार फिर चुप्पी छा गयी थी। मैंने बेचैन होकर कनखियों से उसे देखा; मैं यह जानना चाहता था कि मेरे बारे में उसने अपनी क्या राय बनायी थी, और मैं राह देख रहा था कि वह मेरी मदद करे। "ऐसा मसखरेपन का दस्ताना आपको कहां से मिला," उसने अचानक पूछा; इस सवाल से मुझे बेहद ख़ुशी हुई और बहुत राहत पहुंची। मैंने समझाया कि वह दस्ताना कार्ल इवानिच का था, मैंने कार्ल इवानिच के बारे में कुछ व्यंग से बातें कीं और सोनेच्का को बताया कि जब वह अपनी लाल टोपी उतार लेते थे तो कैसे मसख़रे लगते थे, और यह भी कि एक बार वह अपना हरा

---

* आप मास्को में ही रहती हैं? (फ़्रांसीसी)

** मैं तो राजधानी में कभी आया भी नहीं। (फ़्रांसीसी)

*** आना। (फ़्रांसीसी)

ओवरकोट पहने-पहने घोड़े पर से ठीक कीचड़ में गिर पड़े थे, वग़ैरह-वग़ैरह। क्वाड्रिल कब पूरा हो गया यह हम लोगों को पता भी नहीं चला। सारा वातावरण अत्यंत सुखद था; लेकिन मैंने कार्ल इवानिच का मज़ाक़ क्यों उड़ाया था? अगर मैंने उनका वर्णन उसी स्नेह और आदर के साथ किया होता जो मैं उनके प्रति अनुभव करता था तो क्या सोनेच्का की राय अच्छी न रह जाती?

जब क्वाड्रिल ख़त्म हो गया तो सोनेच्का ने इतने मिठास-भरे अंदाज़ से "शुक्रिया" कहा मानो मैं सचमुच उसकी कृतज्ञता प्राप्त करने योग्य था। मैं ख़ुशी के मारे फूला न समाया, और मैं ख़ुद नहीं समझ पाया कि मुझमें कहां से आ गया इतना साहस, इतना विश्वास और सबसे बढ़कर इतनी दिलेरी। "कोई भी चीज़ मुझे शर्मिंदा नहीं कर सकती!" मैंने बड़े निश्चिंत भाव से नाच के कमरे में इधर-उधर टहलते हुए सोचा; "मैं किसी भी चीज़ के लिए तैयार हूं।"

सेर्योजा ने मुझसे उसकी जोड़ी के vis-à-vis* नाचने को कहा। "अच्छी बात है," मैंने कहा, "अभी तो मेरी जोड़ीदार नहीं है कोई, लेकिन मैं किसी को ढूंढ लाऊंगा।" कमरे में चारों ओर दृढ़ संकल्प से नज़र दौड़ाने पर मैंने देखा कि बैठक के दरवाज़े पर खड़ी हुई एक बड़ी लड़की के अलावा और सभी लड़कियां किसी न किसी के साथ जोड़ी बना चुकी थीं। एक नौजवान उनकी अपने साथ जोड़ी बनाकर नाचने का न्योता देने के लिए उनकी ओर बढ़ रहा था – मैं तो इसी नतीजे पर पहुंचा; वह उनसे कुछ ही क़दम की दूरी पर था जबकि मैं हॉल के दूसरे छोर पर था। पलक झपकते मैंने हवा जैसी तेज़ी से बीच की दूरी बड़ी सफ़ाई से फिसलकर पार कर ली, और सिर झुकाकर दृढ़ स्वर में मैंने उन्हें नाचने का निमंत्रण दिया। उस बड़ी लड़की ने अनुग्रहपूर्वक मुस्कराकर मेरी ओर अपना हाथ बढ़ाया और वह नौजवान बिना जोड़ीदार के रह गया।

मुझे अपनी ताक़त का इतना आभास था कि मैंने उस नौजवान की झुंझलाहट की ओर कोई ध्यान नहीं दिया, हालांकि बाद में मुझे

---

* आमने-सामने। (फ़्रांसीसी)

पता चला कि उसने पूछा था कि वह झबरीला लड़का कौन था जो कूदकर उसके सामने आ गया था और उसकी जोड़ीदार को उड़ा ले गया था।

अध्याय २२

मजूर्का

जिस नौजवान से मैंने उसकी जोड़ीदार छीन ली थी वह पहले जोड़े में मजूर्का नाच रहा था। वह उछलकर खड़ा हो गया, अपनी जोड़ीदार लड़की का हाथ पकड़ा और pas de Basques* करने के बजाय, जैसा कि मीमी ने हम लोगों को सिखाया था, वह सीधे आगे दौड़ गया; कोने में पहुंचकर वह रुका, उसने अपनी एड़ियां खड़कायीं, चक्कर लगाया और थिरकते हुए आगे बढ़ गया।

चूंकि मेरे साथ मजूर्का नाचनेवाली कोई लड़की थी नहीं इसलिए मैं नानी की ऊंची कुर्सी के पीछे बैठा देखता रहा।

"यह ऐसा क्यों करता है?" मैं सोचने लगा। "मीमी ने जो तरीक़ा हमें सिखाया था वह तो ऐसा बिल्कुल नहीं था; वह तो हमेशा यही कहती थी कि हर आदमी अपने पांवों को सरकाने के अंदाज़ से गोल-गोल घुमाकर पंजों के बल मजूर्का नाचता है; लेकिन पता यह चलता है कि यहां तो लोग इस तरह बिल्कुल नहीं नाचते। ईविन-बंधु और एत्येन सभी नाच रहे हैं, और उनमें से कोई भी pas de Basques नहीं कर रहा है। वोलोद्या तक ने नया फ़ैशन सीख लिया है! बुरा नहीं है!... और सोनेच्का कितनी प्यारी लग रही है! देखो, वह चल दी।..." मैं बहुत मगन था।

मजूर्का ख़त्म होने के क़रीब था. बड़ी उम्र की महिलाएं और सज्जन नानी के पास विदा लेने आ रहे थे और विदा लेकर जा रहे थे। नौकर बड़ी होशियारी से नाचनेवालों से कतराते हुए तश्तरियां पीछेवाले कमरे में ला रहे थे। साफ़ दिखायी दे रहा था कि नानी थक

---

* पुराने ढंग के मजूर्का नृत्य का एक क़दम। —अनु०

गयी थीं, और ऐसा लग रहा था कि वह अनमनेपन से और बहुत धीरे-धीरे बोल रही थीं; साज़िंदों ने अलसाते हुए तीसवीं बार वही धुन छेड़ी। जिस बड़ी लड़की के साथ मैं नाचा था उसने नाच का एक तोड़ा पूरा करते हुए मुझे देख लिया और बड़ी कपट-भरी मुस्कराहट के साथ – वह नानी को खुश करना चाहती होगी – वह सोनेच्का और उन बेशुमार नौजवान प्रिंसेसों में से एक को लेकर मेरे पास आयी। "Rose ou hortie"* उसने पूछा।

"अच्छा, तो तुम यहां हो!" नानी ने अपनी कुर्सी में घूमते हुए कहा। "जाओ, नाचो जाकर, बेटा।"

उस वक़्त नानी की कुर्सी के पीछे से निकलकर बाहर आने से ज़्यादा मैं अपना सिर उसके नीचे छिपा लेना पसंद करता, लेकिन मैं इंकार कैसे कर सकता था? मैं उठ खड़ा हुआ और डरी-डरी नज़रों से सोनेच्का को देखते हुए मैंने कहा, "rose", मैं पलक भी नहीं झपका पाया था कि मुलायम चमड़े के सफ़ेद दस्ताने में किसी का हाथ आकर मेरे हाथ में टिक गया, और नौजवान प्रिंसेस अत्यंत सुखद मुस्कराहट के साथ आगे चल पड़ी, उसे तनिक भी संदेह नहीं था कि मुझे इस बात का रत्ती भर भी पता नहीं था कि मुझे अपने पांवों से क्या करना है।

मैं जानता था कि pas de Basques अनुपयुक्त और अनुचित थे और उनसे मेरी भद भी हो सकती थी; लेकिन जब मज़ूर्का की जानी-पहचानी ताल मेरे कान में पड़ी तो उसने ध्वनि-तंत्रिकाओं तक एक परिचित गतिक्रम का संदेश पहुंचाया, और उन तंत्रिकाओं ने यह संदेश मेरे पांवों को पहुंचा दिया, और पांव अनायास ही पंजों के बल सरकते हुए गोल-गोल घूमने के घातक क़दम बढ़ाने लगे जिस पर सभी देखनेवालों को आश्चर्य हुआ। जब तक हम सीधे आगे बढ़ते रहे तब तक तो एक तरह से सब निभता रहा; लेकिन जब हम मुड़े तो मैंने देखा कि अगर मैंने कुछ सावधानी न बरती तो निश्चित रूप से मैं अपनी जोड़ीदार से आगे निकल जाऊंगा। इस भयानक स्थिति से बचने के लिए मैं इस इरादे से ठिठककर रुक गया कि पहले जोड़े के नौजवान ने जिस ख़ूबसूरती से तोड़ा निभाया था उसी की तरह

---

* गुलाब या बिच्छूबूटी? (फ़्रांसीसी)

में भी निभा जाऊंगा। लेकिन जैसे ही मैं अपने पांव एक-दूसरे से अलग करके उछलने की तैयारी कर रहा था ठीक उसी क्षण नौजवान प्रिंसेस तेजी से मेरे चारों ओर चक्कर लगाते हुए, कौतूहल और आश्चर्य से स्तंभित होकर मेरे पांवों की ओर देख रही थी। उसका देखना मेरे लिए कयामत हो गया। मैं अपना आत्म-संतुलन इस हद तक खो बैठा कि नाचने के बजाय मैं अपने पांव एक ही जगह पर बेहद अजीब ढंग से ऊपर-नीचे पटकता रहा, और आखिरकार वहीं गड़-सा गया। सभी लोग मुझे घूर रहे थे, कुछ लोग हैरत से और कुछ कौतूहल, अचंभे या हमदर्दी से; बस नानी ही ऐसी थीं जो बिल्कुल उदासीन भाव से देख रही थीं।

"Il ne fallait pas danser, si vous ne savez pas!"* पापा ने क्रुद्ध स्वर से मेरे कान में कहा; और हल्का-सा धक्का देकर मुझे एक ओर को ढकेलते हुए उन्होंने मेरी जोड़ीदार को पकड़ लिया और पुराने ढंग से उसके साथ एक चक्कर नाचे, जिसे देखकर सबको बहुत मज़ा आया, और फिर उन्होंने उसे उसकी कुर्सी तक पहुंचा दिया। मजूर्का फ़ौरन ख़त्म हो गया।

"भगवान, तू मुझे इतना भयानक दंड क्यों देता है?"

. . . .

सभी मुझसे नफ़रत करते हैं और हमेशा मुझसे नफ़रत करेंगे। प्यार, दोस्ती, इज़्ज़त – हर चीज़ के रास्ते मेरे लिए बंद हैं... सब चौपट हो गया! वोलोद्या ने मुझे इशारे क्यों किये, जिन्हें सबने देखा और जो मेरे लिए किसी काम के नहीं थे? उस दुष्ट राजकुमारी ने मेरे पांवों की तरफ़ इस तरह क्यों देखा? माना सोनेच्का बड़ी प्यारी लग रही थी, लेकिन वह ठीक उसी वक़्त क्यों मुस्करायी? पापा गुस्से में लाल क्यों हो गये और उन्होंने मेरा हाथ क्यों पकड़ लिया? क्या वह भी मेरी वजह से लज्जित थे? ओह, कैसा भयानक कांड था यह! अगर मां यहां होतीं तो वह अपने निकोलेंका की वजह से लज्जित न होतीं और मेरी कल्पना ने मुझे बहुत दूर ले जाकर उस सुखद स्वप्न तक पहुंचा दिया। मुझे याद आया घर के सामनेवाला घास का वह

---

* अगर नाचना नहीं आता तो नाचते क्यों हो! (फ़्रांसीसी)

मैदान, बाग़ में लाइम के ऊंचे-ऊंचे पेड़, साफ़ पानी का तालाब जिसके ऊपर अबाबीलें उड़ती फिरती थीं, नीला आकाश जिस पर पारदर्शी सफ़ेद बादल लटके रहते थे, ताज़े पयाल के सुगंधित ढेर; और कितनी ही दूसरी उल्लास-भरी, सुखद स्मृतियां मेरी विक्षिप्त कल्पना में उड़-उड़कर आयीं।

अध्याय २३

मज़ूर्का के बाद

खाने के वक़्त वह नौजवान जो पहले जोड़े में नाचा था बच्चों की मेज़ पर हम लोगों के साथ बैठ गया और मेरी ओर विशेष ध्यान देने लगा; मेरे साथ जो दुर्घटना हुई थी उसके बाद मुझ में अगर कुछ भी महसूस करने की क्षमता बाक़ी रह गयी होती तो उसकी इस बात से मेरे अहंभाव को बहुत संतोष मिलता। लेकिन ऐसा लग रहा था कि वह नौजवान मेरा हौसला बढ़ाने पर तुला हुआ था। वह मेरे साथ हंसी-मज़ाक़ कर रहा था, मुझे शाबाशी दे रहा था; और जब बड़े लोगों में से कोई भी हमारी ओर नहीं देख रहा होता था तो वह अलग-अलग बोतलों में से शराब उंडेलकर मुझे देता था और मुझसे पीने का आग्रह करता था। खाने के अंत में जब ख़ानसामां ने नैपकिन में लिपटी हुई बोतल में से मेरे शराब के गिलास में चौथाई गिलास ही शैम्पेन दी, और उस नौजवान ने आग्रह किया कि वह मेरा गिलास पूरा भर दे और मुझे पूरा गिलास एक घूंट में पी जाने पर मजबूर किया तो मेरे सारे शरीर में हल्की-हल्की सुखद गर्मी की एक लहर दौड़ गयी और अपने मस्त संरक्षक के प्रति विशेष प्रकार का अनुराग अनुभव करके मैं खिलखिलाकर हंस पड़ा।

अचानक हॉल में से 'बूढ़े बाबा' वाले नाच की आवाज़ें गूंजने लगीं और मेहमान मेज़ पर से उठने लगे। उस नौजवान के साथ मेरी दोस्ती फ़ौरन ख़त्म हो गयी: वह बड़े लोगों के साथ चला गया और मैं उसके पीछे जाने का साहस न बटोर पाकर यह सुनने की उत्सुकता

में मादाम वलाख़ीना के पास चला गया कि वह अपनी बेटी से क्या कह रही हैं।

"बस, आधा घंटा और," सोनेच्का अनुरोध कर रही थी।

"नहीं मुमकिन है, मेरी गुड़िया।"

"अरे नहीं, मेरी ख़ातिर," उसने लाड़ करते हुए फिर कहा।

"अगर मैं कल बीमार पड़ गयी तो तुम्हें ख़ुशी होगी?" मादाम वलाख़ीना ने कहा, और नासमझी यह कीं कि मुस्करा दीं।

"तो फिर हम रुक सकते हैं? है न?" सोनेच्का ने ख़ुशी से नाचते हुए ज़ोर से कहा।

"मैं कर ही क्या सकती हूं? अच्छी बात है, जाओ नाचो जाकर... यह रहा तुम्हारा जोड़ीदार," उन्होंने मेरी ओर इशारा करते हुए कहा।

सोनेच्का ने अपना हाथ मुझे थमा दिया, और हम भागकर हॉल में चले गये।

मैंने जो शराब पी रखी थी उसकी वजह से और सोनेच्का की मौजूदगी और मस्ती की वजह से मैं उस दुर्भाग्यपूर्ण घटना को बिल्कुल भूल ही गया जो मज़ूर्का नाचते समय मेरे साथ घटी थी। मैं अपने पांवों से तरह-तरह के दिलचस्प करतब दिखाने लगा, घोड़े की नक़ल करते हुए मैं अपनी टांगें बड़े गर्व से ऊपर उठाकर धीमी दुलकी चाल चलने का अभिनय करता, फिर एक ही जगह पर उस दुंबे की तरह पांव पटकने लगता जिसे किसी कुत्ते ने छेड़कर गुस्सा दिला दिया हो, और इस बात की परवाह किये बिना मैं हंस पड़ता कि देखनेवालों पर मेरी इस हरकत का क्या असर होगा। सोनेच्का भी लगातार हंस रही थी; जब हम लोग एक-दूसरे का हाथ पकड़कर चक्कर लगाते थे तब भी वह हंसती थी, वह किसी ऐसे बूढ़े सज्जन को देखकर भी हंस देती थी जो बड़ी सावधानी से अपना पांव उठाकर ज़मीन पर पड़े हुए रूमाल को इस तरह पार कर जाते थे मानो उनके लिए ऐसा कर पाना बहुत मुश्किल हो, और जब मैं अपनी चुस्ती दिखाने के लिए उछलकर लगभग छत से जा लगता था तब तो हंसते-हंसते उसके पेट में बल ही पड़ जाते थे।

नानी के पढ़ने के कमरे में से होकर गुज़रते वक़्त मैंने एक नज़र

आईना देखा: मेरा चेहरा पसीने से तर-वतर था, वाल विखरे हुए थे, सिर के ऊपरवाला वालों का गुच्छा पहले से भी ज़्यादा वुरी तरह खड़ा हुआ था; लेकिन मेरी सामान्य मुद्रा इतनी प्रफुल्लित, नेकी-भरी और स्वस्थ थी कि मैं अपने आप पर ख़ुश भी हुआ।

"अगर मैं हमेशा से ऐसा ही होता," मैंने सोचा, "तो लोगों को मुझसे प्यार भी हो सकता था।

लेकिन जव मैंने एक वार फिर अपनी जोड़ीदार के छोटे-से प्यारे मुखड़े को देखा तो मुझे उसमें उल्लास, स्वास्थ्य और निश्चिंतता के अलावा, जिन गुणों को स्वयं अपने चेहरे में देखकर मैं ख़ुश हो गया था, इतना अधिक कोमल तथा सौम्य सौंदर्य दिखायी दिया कि मैं अपने आप पर झुंझला उठा, मेरी समझ में आ गया कि यह उम्मीद करना मेरी कितनी वड़ी मूर्खता थी कि मैं ऐसी लाजवाव हस्ती का ध्यान अपनी ओर आकर्पित कर सकूंगा।

मैं यह उम्मीद नहीं कर सकता था कि पलटकर मुझसे भी प्यार किया जाये, और सच तो यह है कि इसके वारे में मैंने सोचा भी नहीं: मेरा मन मारे ख़ुशी के उमड़ा पड़ रहा था। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि उस प्यार के वदले जो मेरी आत्मा में उल्लास भर देता था, इससे वड़ा कोई सुख मांगा जा सकता था या इससे अधिक किसी चीज़ की इच्छा की जा सकती थी कि इस भावना का कभी अंत न हो। मैं ख़ुश था। मेरा दिल मगन पंछी की तरह फड़क रहा था, उसमें निरंतर नये रक्त का संचार हो रहा था और मैं चाहता था कि रो पड़ूं।

जव हम सीढ़ियों के नीचेवाली गोदाम की अंधेरी कोठरी के पास से होकर गलियारे में से गुज़रे तो मैंने एक नज़र उस कोठरी पर डालकर अपने मन में सोचा: काश मैं जीवन-भर इसके साथ इस अंधेरी कोठरी में रह सकूं! और किसी को मालूम न होने पाये कि हम यहां रहते हैं तो कितना अपार सुख मिलेगा!

"आज की रात मज़ेदार है न?" मैंने शांत, कांपते हुए स्वर में कहा, और डरकर जल्दी-जल्दी आगे क़दम वढ़ाने लगा; मैं उन वातों की वजह से उतना नहीं डर रहा था जो मैंने कही थीं, जितना उस वात से जो मेरे मन में थी।

"हां... बहुत!" उसने अपना छोटा-सा सिर मेरी ओर घुमाकर ऐसे निष्कपट और सहृदय भाव से कहा कि मेरा हर डर दूर हो गया।

"ख़ास तौर पर खाने के बाद... काश आपको मालूम होता कि मुझे कितना अफ़सोस है (मैं कहना चाहता था कि मैं कितना दुःखी हूं, लेकिन मेरी हिम्मत नहीं पड़ी) कि आप इतनी जल्दी चली जायेंगी और हम लोग अब एक-दूसरे से कभी नहीं मिल पायेंगे!"

"क्यों नहीं मिल पायेंगे हम लोग एक-दूसरे से?" उसने बड़े ग़ौर से अपने जूतों की नोक को देखते हुए और जिस जालीदार आड़ के पास से होकर हम गुज़र रहे थे उस पर अपनी उंगली चलाते हुए कहा। "मां और मैं हर मंगल और शुक्रवार को त्वेर्सकोई बुलिवार पर जाती हैं। आप कभी टहलने नहीं जाते?"

"मैं अगले मंगल को जाने की इजाज़त मांगूंगा; और अगर मुझे न जाने दिया गया तो मैं हैट पहने बिना ही अकेला भाग जाऊंगा। रास्ता मुझे आता है।"

"जानते हैं, मैं अभी क्या सोच रही थी?" सोनेच्का ने अचानक कहा, "जो लड़के हमारे घर आते हैं उन्हें मैं 'तुम' कहती हूं; हम भी एक-दूसरे को 'तुम' कहा करें। मंजूर है तुम्हें?" उसने अपने छोटे-से सिर को झटका देते हुए मेरी आंखों में आंखें डालकर कहा।

उसी वक़्त हम लोगों ने हॉल में क़दम रखा; 'बूढ़े बाबा' वाले नाच का दूसरा जानदार हिस्सा शुरू हो रहा था।

"मैं मानता हूं... आपकी बात," मैंने उस क्षण जवाब दिया जब शोर और संगीत में मेरे शब्द डूबकर रह सकते थे।

"'तुम्हारी' कहो," उसने हंसकर मेरी ग़लती ठीक करते हुए कहा।

'बूढ़े बाबा' वाला नाच ख़त्म भी हो गया और मैं अब तक एक फ़िक़रा भी 'तुम' के साथ नहीं कह पाया था, हालांकि मैं लगातार ऐसे फ़िक़रे गढ़ रहा था जिनमें उस सर्वनाम को कई बार दोहराना पड़े। मुझमें इतनी हिम्मत नहीं थी। "मंजूर है तुम्हें?" ये शब्द मेरे कानों में गूंज रहे थे और मुझ पर नशा-सा छाता जा रहा था। सोनेच्का

के अलावा मुझे न कोई आदमी दिखायी दे रहा था और न कोई चीज़। मैंने देखा कि उसके बाल उसके कानों के पीछे बंधे हुए थे, जिसकी वजह से उसके माथे का कुछ हिस्सा और कनपटियां दिखायी देने लगी थीं जो मैंने पहले नहीं देखी थीं; मैंने उसे हरी शाल में इतनी बुरी तरह लिपटा हुआ देखा था कि उसकी छोटी-सी नाक का सिर्फ़ सिरा दिखायी दे रहा था; सच तो यह है कि अगर उसने अपनी छोटी-छोटी गुलाबी उंगलियों से मुंह के पास थोड़ी-सी जगह खोल न ली होती तो उसका दम यक़ीनन घुट जाता; और मैंने देखा कि अपनी मां के साथ सीढ़ियों पर से उतरते वक़्त वह किस तरह जल्दी से हम लोगों की ओर मुड़ी थी, सिर हिलाया था और दरवाज़े में ग़ायब हो गयी थी।

वोलोद्या, ईविन-बंधु, नौजवान प्रिंस और मैं सभी सोनेच्का के प्रेम का शिकार थे और सीढ़ियों पर खड़े होकर उसे जाते देख रहे थे। मुझे मालूम नहीं उसने हममें से किसकी ओर अपना छोटा-सा सिर हिलाया था, लेकिन उस वक़्त मुझे पक्का यक़ीन था कि उसने मेरे लिए ही ऐसा किया था।

ईविन-बंधुओं से विदा लेकर मैंने बिल्कुल बेझिझक होकर, कुछ हद तक रूखेपन से भी, सेर्योजा से बातें कीं और हाथ मिलाया। अगर यह बात उसकी समझ में आ गयी होगी कि उस दिन दोनों ही चीज़ें उससे छिन गयी थीं, उसके प्रति मेरा प्यार भी और मुझ पर उसका अधिकार भी, तो उसे यक़ीनन अफ़सोस हुआ होगा, हालांकि उसने जताने की कोशिश यही की कि उसे इस बात में कोई दिलचस्पी नहीं थी।

अपने जीवन में पहली बार मैं अपने प्रेम के प्रति निष्ठावान नहीं रहा था, और पहली बार मुझे उस भावना की मिठास का आभास हुआ था। अभ्यासगत स्नेह की घिसी-पिटी भावना के बदले रहस्य और अनिश्चय से परिपूर्ण प्रेम की नयी भावना पाकर मैं ख़ुश था। इसके अलावा, एक ही समय एक प्रेम का अंत होने और दूसरे का आरंभ होने का मतलब होता है पिछले से दुगने आवेग से प्यार करना।

अध्याय २४

बिस्तर पर लेटे-लेटे

"मैं सेर्योजा को इतनी गहराई से और इतने दिन तक प्यार कैसे कर सका?" बिस्तर पर लेटे-लेटे मैं सोच रहा था। "नहीं! वह कभी मेरे प्यार को समझ ही नहीं सकता था, उसकी क़द्र नहीं कर सकता था और वह कभी उसके योग्य था ही नहीं। और सोनेच्का? कैसी प्यारी है! 'मंजूर है तुम्हें?' 'अब तुम्हारी बारी है शुरू करने की।'"

कल्पना में उसका प्यारा-सा मुखड़ा अपने सामने स्पष्ट रूप में चित्रित करते ही मैं बिस्तर पर लेटे-लेटे उछलकर कुहनियों और घुटनों के बल टिक गया, रज़ाई सिर के ऊपर खींच ली, उसे चारों ओर से अपने नीचे दबा लिया, और जब कहीं कोई खुली जगह बाक़ी नहीं रह गयी तो मैं लेट गया और हल्की-हल्की गर्मी का सुखद अनुभव करते हुए मीठी-मीठी कल्पनाओं और स्मृतियों में खो गया। रज़ाई के अस्तर पर एकटक अपनी नज़रें जमाये हुए मुझे उसकी सूरत उतनी ही साफ़ दिखायी दे रही थी जैसा मैंने अभी एक घंटे पहले उसे देखा था; मैं अपने दिमाग़ में उससे बातें करता रहा, और वह बातचीत हालांकि बिल्कुल निरर्थक थी, लेकिन उससे मुझे अपार हर्ष हो रहा था, क्योंकि उसमें सर्वनाम 'तुम', 'तुमको', 'तुम्हारे साथ' और 'तुम्हारी' लगातार बार-बार आ रहे थे।

ये कल्पना-चित्र इतने सुस्पष्ट थे कि सुखद भावनाओं के आवेग के कारण मुझे नींद नहीं आ रही थी, और मैं अपने हर्षातिरेक के बारे में किसी को बताना चाहता था।

"मेरी प्यारी!" अचानक करवट बदलते हुए मैंने लगभग ज़ोर से कहा। "वोलोद्या! क्या तुम सो रहे हो?"

"नहीं," उसने उनींदे स्वर में जवाब दिया, "क्या बात है?"

"मुझे प्यार हो गया है, वोलोद्या! मुझे सोनेच्का से सचमुच प्यार हो गया है।"

"अच्छा, तो फिर क्या हुआ?" उसने अंगड़ाई लेते हुए कहा।

"अरे, वोलोद्या! तुम समझ नहीं सकते कि मेरे अंदर क्या हो

रहा है... अभी मैं रज़ाई लपेटे यहां लेटा था, और मैंने उसकी सूरत साफ़, बिल्कुल साफ़ देखी, इतनी साफ़ कि क्या तवाऊं, और मैंने उससे बातें भी कीं। और जानते हो, जब मैं लेटे-लेटे उसके बारे में सोचता हूं तो इतना उदास हो जाता हूं कि मेरा जी रोने को चाहता है।"

वोलोद्या कसमसाया।

"मैं बस एक चीज़ चाहता हूं," मैं कहता रहा, "वह यह कि मैं हमेशा उसके साथ रहूं, हमेशा उसे देखता रहूं, बस और कुछ नहीं। क्या तुम्हें भी प्यार हो गया है? मुझे सच-सच बताना, वोलोद्या!"

बात कुछ बेतुकी ज़रूर है लेकिन मैं चाहता था कि हर आदमी को सोनेच्का से प्यार हो जाये, और मैं चाहता था कि वे सभी उसके बारे में बातें करें।

"तुम्हें उससे क्या मतलब?" वोलोद्या ने मेरी ओर मुंह फेरते हुए कहा, "शायद।"

"तुम्हें नींद नहीं आ रही है, तुम बस बन रहे हो!" उसकी चमकती हुई आंखों से यह अंदाज़ा लगाकर कि वह सोने के बारे में सोच ही नहीं रहा था, मैंने चिल्लाकर कहा और अपनी रज़ाई उतार फेंकी। "आओ, उसकी बातें करें। वह बहुत प्यारी है, है न? वह मुझे इतनी अच्छी लगती है कि अगर वह मुझसे कह दे, 'निकोलेंका! खिड़की के बाहर फांद जाओ, या आग में कूद पड़ो,' तो मैं क़सम खाकर कहता हूं कि मैं उसका कहा फ़ौरन पूरा कर दूं," मैंने कहा, "और खुशी से कर दूं। ओह, कैसा जादू है उसमें!" मैंने कल्पना में उसकी सूरत अपनी नज़रों के सामने देखते हुए कहा, और इस प्रतिबिंब का पूरी तरह आनंद लेने के लिए मैंने यकायक दूसरी ओर करवट बदल ली और अपना सिर तकिये के नीचे छिपा लिया। "वो-लोद्या, बुरी तरह मेरा रोने को जी चाह रहा है!"

"कैसे बेवक़ूफ़ हो!" उसने मुस्कराते हुए कहा और फिर कुछ देर को चुप रहकर बोला, "मैं तुम्हारी तरह बिल्कुल नहीं महसूस करता: मैं तो सोचता हूं कि अगर हो सके तो मैं पहले उसके पास बैठकर उससे बातें करना कहीं ज़्यादा पसंद करूंगा।..."

"अच्छा! तो तुम्हें भी प्यार हो गया है?" मैं बीच में बोल पड़ा।

"और फिर," वोलोद्या बड़ी नरमी से मुस्कराते हुए कहता रहा, "फिर मैं उसकी छोटी-छोटी उंगलियों को, उसकी आंखों को, उसके होंटों को, उसकी नाक को, उसके छोटे-छोटे पांवों को चूमूंगा – उसे सिर से पांव तक चूमूंगा।..."

"बकवास!" मैं तकिये के नीचे से चिल्लाया।

"तुम इसके बारे में कुछ भी नहीं समझते," वोलोद्या ने तिरस्कार के भाव से कहा।

"मैं तो समझता हूं, लेकिन तुम नहीं समझते, और तुम बकवास कर रहे हो," मैंने रुआंसे स्वर में कहा।

"अच्छा, इसमें रोने की कोई बात नहीं है। लड़की कहीं का!"

अध्याय २५

पत्र

जिस दिन का मैंने अभी वर्णन किया है उसके लगभग छः महीने बाद, १६ अप्रैल को, पापा ऊपर हम लोगों के पास पढ़ाई के वक़्त आये और उन्होंने हमें बताया कि हम लोगों को उसी रात को उनके साथ गांव चलना है।

यह ख़बर सुनते ही मेरा दिल बैठ गया और मैं फ़ौरन मां के बारे में सोचने लगा।

हम लोगों के इस तरह अचानक चल पड़ने का कारण निम्नलिखित पत्र था:

पेत्रोव्स्कोये, १२ अप्रैल।

"मुझे तुम्हारा ३ अप्रैल का प्रिय पत्र अभी रात को दस बजे मिला है, और हमेशा की तरह मैं फ़ौरन उसका जवाब दे रही हूं। फ़्योदोर कल रात उसे शहर से लाया था, लेकिन चूंकि बहुत देर हो चुकी थी इसलिए उसने वह मीमी को आज सुबह दे दिया था। और चूंकि मेरी तबियत ठीक नहीं थी और मुझे घबराहट हो रही थी इसलिए मीमी ने दिन भर वह मुझे नहीं दिया। दरअसल मुझे हल्का-सा

बुख़ार है, और सच तो यह है कि आज मुझे बिस्तर पर लेटे-लेटे चौथा दिन है।

"मेहरबानी करके तुम परेशान न होना, प्रिय दोस्त: मैं अब बिल्कुल ठीक हूं और अगर इवान वसील्येविच ने इजाज़त दे दी तो कल मैं बिस्तर छोड़ देने का इरादा रखती हूं।

"पिछले हफ़्ते शुक्रवार को मैं बच्चों को गाड़ी पर सैर कराने ले गयी थी; लेकिन बड़ी सड़क पर पहुंचते-पहुंचते, उसी पुल के पास जिससे मुझे हमेशा डर लगता रहा है, घोड़े कीचड़ में फंस गये। उस दिन मौसम बहुत अच्छा था और मैंने सोचा कि जितनी देर में ये लोग बग्घी को खींचकर कीचड़ में से बाहर निकालते हैं तब तक मैं बड़ी सड़क तक पैदल चली जाती हूं। गिरजाघर के पास पहुंचकर मैं इतनी थक गयी कि मुझे बैठ जाना पड़ा, और इस तरह जब तक गाड़ी खींचकर बाहर निकालने के लिए वे लोगों को बुलाकर लाये तब तक आधा घंटा बीत गया। मुझे सर्दी लगने लगी, ख़ास तौर पर पांवों में, क्योंकि मैं पतले तले के जूते पहने थी और वे बिल्कुल गीले हो गये थे। खाना खाने के बाद मुझे कुछ-कुछ बुख़ार-सा महसूस हुआ, लेकिन मैं हमेशा की तरह टहलती रही, और चाय पीने के बाद ल्यूबा के साथ पिआनो बजाने बैठ गयी। (उसने इतनी तरक़्क़ी कर ली है कि तुम उसे पहचानोगे नहीं!) लेकिन मुझे ताज्जुब तो इस बात पर हुआ कि मैं ठीक से सुर-ताल का हिसाब भी नहीं गिन पा रही थी। मैंने कई बार गिनना शुरू किया लेकिन मेरा सिर चकरा रहा था, और कानों में एक अजीब गूंज सुनायी दे रही थी। मैंने गिनना शुरू किया: एक, दो, तीन और फिर एकदम आठ और पंद्रह पर पहुंच गयी; और सबसे अजीब बात यह थी कि मुझे मालूम था कि मैं बकवास कर रही थी लेकिन मैं उस बकवास को बंद नहीं कर सकती थी। आख़िरकार मीमी ने आकर मेरी मदद की, और लगभग ज़बर्दस्ती मुझे बिस्तर पर लिटा दिया। तो, माई डियर, यह है मेरे बीमार पड़ने का पूरा ब्योरा, और इस बात का भी कि किस तरह यह ख़ुद मेरा दोष है। अगले दिन मुझे काफ़ी तेज़ बुख़ार था, और हमारे पुराने मेहरबान इवान वसील्येविच मुझे देखने आये; वह तबसे हमारे यहां से गये नहीं हैं, और वादा करते हैं कि जल्दी ही वह मुझे फिर

मेरा प्यार तुम्हारा साथ कभी नहीं छोड़ेगा। विदा वोलोद्या, मेरे फ़रिश्ते, विदा मेरे नन्हे निकोलेंका।

"क्या यह मुमकिन है कि वे मुझे भूल जायें?!"

इस पत्र के साथ ही फ़्रांसीसी में मीमी के हाथ का एक पर्चा था, जिसमें लिखा था:

"उन्होंने जिन दुःखमय पूर्वाभास की चर्चा की है उनकी डाक्टर ने भी पुष्टि कर दी है। कल रात उन्होंने मुझे यह खत फ़ौरन डाक में डाल आने के लिए दिया था। यह सोचकर कि वह सरसामी हालत में हैं मैंने सुबह तक राह देखी और फिर इसे खोलने का फ़ैसला किया। मैंने अभी इसे खोला ही था कि नताल्या निकोलायेव्ना ने मुझसे पूछा कि मैंने इसका क्या किया, और मुझे हुक्म दिया कि अगर वह अभी न भेजा गया हो तो मैं उसे जला दूं। वह बराबर उसकी चर्चा करती रहती हैं, और उन्हें पक्का यक़ीन है कि इसे पढ़कर आप मर जायेंगे। अगर आप चाहते हैं कि इससे पहले कि हमारा यह फ़रिश्ता हमेशा के लिए हमें छोड़कर चला जाये आप उससे मिल लें तो आने में ज़रा भी देर न कीजिये। मेरी इस घसीट लिखाई को माफ़ कीजियेगा। मैं तीन रातों से सोयी नहीं हूं। आप तो जानते ही हैं कि मुझे उनसे कितना प्यार है!"

नताल्या साविश्ना ने, जिसने ११ अप्रैल की पूरी रात मां के कमरे में वितायी थी, मुझे वताया कि खत का पहला हिस्सा लिखने के वाद मां उसे वग़लवाली छोटी मेज़ पर रखकर सो गयी थीं।

"सच तो यह है," नताल्या साविश्ना ने कहा, "मैं खुद आराम-कुर्सी पर ऊंघ गयी थी, और मोज़ा मेरे हाथ से गिर गया था। लेकिन कोई एक वजे रात को मैंने सपने में सुना कि जैसे वह किसी से बात कर रही हैं; मैंने आंख खोलकर देखा तो वह, मेरी नन्ही-सी फ़ाख्ता, अपने हाथ इस तरह बांधे पलंग पर बैठी थीं और उनकी आंखों में आंसू वह रहे थे। 'तो सब कुछ खत्म हो गया?' उन्होंने कहा और अपना मुंह दोनों हाथों से ढांप लिया। मैं उछलकर खड़ी हो गयी और मैंने उनसे पूछा, 'आपको क्या हो गया है?'"

"'आह, नताल्या साविश्ना, काश तुम्हें मालूम होता कि मैंने अभी क्या देखा है!' वह वोलीं।

गयी, जैसा कि उनकी हर गति से मालूम हो रहा था: वह दबे पांव बैठक में गये, उन्हें सांस लेने की भी हिम्मत नहीं हो रही थी, बंद दरवाज़े का हैंडिल पकड़ने का इरादा करने से पहले उन्होंने अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया। उसी वक़्त मीमी बाल बिखेरे गलियारे में से भागती हुई आयीं, उनका चेहरा आंसुओं से भीगा हुआ था। "आह, प्योत्र अलेक्सांद्रोविच," वह सच्ची निराशा के भाव से दबे स्वर में बोलीं, और फिर पापा को हैंडिल घुमाते देखकर उन्होंने बहुत ही क्षीण स्वर में, जिसे सुनना भी कठिन था, इतना और कहा, "इधर से नहीं। वह दरवाज़ा बंद है। अंदर जाने का रास्ता नौकरानियों की कोठरी की तरफ़ से है।"

उफ़, इन सब बातों से मेरी बाल-सुलभ कल्पना पर, जो एक भयावह आशंका के कारण पहले ही से व्यथा के रंग में रंगी हुई थी, कैसी गहरी उदासी छा गयी।

हम लोग नौकरानियों की कोठरी में गये। गलियारे में हमें अकिम मिला, वह बौड़म, जो तरह-तरह के मुंह बनाकर हमेशा हमारा दिल बहलाया करता था; लेकिन उस समय मुझे वह न सिर्फ़ यह कि हास्यजनक नहीं लगा बल्कि सच तो यह है कि उस समय मुझे सबसे अधिक पीड़ा उसके मूर्खतापूर्ण उदासीन चेहरे को देखकर हुई। नौकरानियों की कोठरी में दो नौकरानियों ने, जो कशीदाकारी कर रही थीं, उठकर ऐसे व्यथित भाव से झुककर हम लोगों का अभिवादन किया कि मैं तो सहम गया। उसके बाद मीमी के कमरे में से गुज़रकर पापा ने सोने के कमरे का दरवाज़ा खोला, और हम लोग अंदर गये। दरवाज़े के दाहिनी ओर दो खिड़कियां थीं जिन पर शॉलें लटकी हुई थीं; एक खिड़की के पास नताल्या साविश्ना नाक पर चश्मा टिकाये बैठी मोज़ा बुन रही थी। उसने हमें प्यार नहीं किया, जैसा कि वह हमेशा करती थी, बल्कि वह सिर्फ़ उठी, अपने चश्मे में से हम लोगों को देखा और उसके गालों पर आंसू बहने लगे। मुझे यह बिल्कुल अच्छा नहीं लगा कि हमें देखते ही वे सब की सब रोने लगीं जबकि पहले वे बिल्कुल शांत थीं।

दरवाज़े के बायीं ओर कई ओटें खड़ी थीं, और ओटों के पीछे पलंग, एक छोटी-सी मेज़, दवाओं से अटी हुई एक छोटी-सी अल्मारी,

और वड़ी-सी आराम-कुर्सी थी, जिस पर डाक्टर ऊंघ रहा था; पलंग के पास सुनहरे वालोंवाली एक नौजवान और वेहद ख़ूबसूरत लड़की खड़ी थी। सुवह पहनने की अपनी सफ़ेद पोशाक की आस्तीनें उलटे हुए वह मां के माथे पर वर्फ़ रख रही थी, लेकिन ख़ुद मां को मैं नहीं देख पा रहा था। यही लड़की वह la belle Flamande थी जिसके वारे में मां ने लिखा था, और जिसने वाद में चलकर हमारे पूरे परिवार के जीवन में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। हम लोगों के अंदर पहुंचते ही उसने मां के माथे पर से हाथ हटा लिया, सीने पर उसके गाऊन की सिलवटें ठीक कीं, और फिर दवे स्वर में कहा, "वेहोश हैं।"

उस क्षण मैं वहुत दुःखी था, लेकिन अनायास ही ये सारी छोटी-छोटी वातें मेरे मन में अंकित होती गयीं। कमरे में लगभग विल्कुल अंधेरा था, गर्मी थी, और पुदीने, ओडिकोलोन, ववूने के फूलों, और हॉफ़मैन की गोलियों की मिली-जुली गंध वसी हुई थी। इस गंध का मुझ पर इतना गहरा असर पड़ा कि न सिर्फ़ जव मैं उसे सूंघता हूं, वल्कि जव मुझे उसकी याद भी आ जाती है तो मेरी कल्पना मुझे उस अंधेरे, घुटे हुए कमरे में वापस खींच ले जाती है और उस भयानक क्षण के हर व्योरे को, उसकी छोटी-से-छोटी वात को मेरी आंखों के सामने फिर ला खड़ा करती है।

मां की आंखें खुली हुई थीं, लेकिन वह कुछ देख नहीं रही थीं।... मैं उस डरावनी मुद्रा को कभी भूल नहीं सकता। उसमें कितनी पीड़ा भरी हुई थी!...

हम लोगों को वहां से हटा दिया गया।

वाद में जव मैंने नताल्या साविश्ना से मां के अंतिम क्षणों के वारे में पूछा, तो उसने मुझे जो कुछ वताया वह इस प्रकार है:

"जव तुम लोगों को वहां से हटा दिया गया, तो मेरी लाड़ली वहुत देर तक वेचैन रहीं, मानो कोई चीज़ उन्हें वहीं कुचले दे रही हो; फिर उनका सिर तकिये पर से लुढ़क गया और वह आसमान के फ़रिश्ते की तरह शांतिपूर्वक सो गयीं। मैं यह देखने के लिए वाहर गयी कि अभी तक उनके पीने के लिए कुछ लाया क्यों नहीं गया है। जव मैं लौटकर आयी तो मेरी लाड़ली ने अपने चारों ओर की सारी

चीजें बिखेर दी थीं। वह तुम्हारे पापा को बार-बार हाथ के इशारे से अपने पास बुलाती रहीं; वह उनकी ओर झुकते, लेकिन तुम्हारी मा की शक्ति उनका साथ न देती और वह जो कुछ कहना चाहतीं वह कह न पातीं; वह बस अपने होंट खोलकर कराह-कराहकर इतना ही कह पातीं, 'हे भगवान! प्रभु! बच्चों को, मेरे बच्चों को!' मैं आप लोगों को अंदर ले जाने के लिए भागी, लेकिन इवान वसीलिच ने मुझे रोकते हुए कहा, 'इससे उनकी उत्तेजना और बढ़ेगी, बच्चों को न लाना ही बेहतर है।' इसके बाद वह बस अपना हाथ ऊपर उठातीं और उसे फिर नीचे गिरा लेतीं। इससे उनका क्या मतलब था, यह तो भगवान ही जाने। मैं समझती हूं कि वह आप लोगों को आशीर्वाद दे रही होती थीं। भगवान को यह मंजूर नहीं हुआ कि वह अपने अंतिम क्षण से पहले अपने नन्हे-नन्हे बच्चों को देख सकें। फिर मेरी लाड़ली तकिये पर से थोड़ा-सा उठीं, अपने हाथों से इस तरह की मुद्रा बनायी, और ऐसी आवाज़ में बोलीं जिसे याद करके भी मैं कांप उठती हूं, 'देवी-मां, उन्हें बेसहारा न छोड़ देना!...' इसके बाद दर्द शायद उनके दिल तक पहुंच गया होगा। हमें उनकी आंखों को देखकर पता चल रहा था कि बेचारी को कितनी पीड़ा थी; वह फिर तकियों पर लुढ़क गयीं, चादर को मुंह में दबा लिया और उनके आंसू बहते रहे, बहते रहे।"

"और फिर?" मैंने पूछा।

लेकिन नताल्या साविश्ना इससे आगे कुछ न कह सकी: वह मुंह फेरकर फूट-फूटकर रोने लगी।

मां बहुत असह्य पीड़ा झेलती हुई मरीं।

अध्याय २७

शोक

अगले दिन शाम को मैं उन्हें एक बार फिर देखना चाहता था; भय की सहज भावना को दबाकर मैंने चुपके से दरवाजा खोला और दबे पांव कमरे में घुसा।

कमरे के बीच में मेज़ पर ताबूत रखा हुआ था और उसके चारों ओर चांदी के लंबे-लंबे शमादानों में जलती हुई मोमबत्तियां लगी हुई थीं; दूर के कोने में मंत्र पढ़नेवाला पुरोहित धीमे सपाट स्वर में भजनों की किताब पढ़ रहा था।

मैं दरवाज़े पर रुक गया और नज़रें गड़ाकर देखने लगा; लेकिन रोते-रोते मेरी आंखें इतनी कमज़ोर हो गयी थीं, और मैं इतना व्याकुल था कि मुझे कुछ भी दिखायी नहीं दिया; सब चीज़ें अजीब तरीक़े से एक-दूसरे में घुली-मिली थीं – रोशनियां, ज़री, मख़मल, बड़े-बड़े शमादान, लैस की गोट लगा हुआ गुलाबी रंग का तकिया, फ़ीतेदार टोपी और कोई मोम जैसी पारदर्शी चीज़। उनका चेहरा देखने के लिए मैं एक कुर्सी पर चढ़ गया, लेकिन जहां पर उनका चेहरा होना चाहिये था वहां मुझे वही मोम जैसी पारदर्शी चीज़ दिखायी दी। मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि यह उन्हीं का चेहरा है। मैं उसे घूरने लगा तो धीरे-धीरे मैं उस चिर-परिचित सूरत को पहचानने लगा जिससे हमें इतना प्यार था। जब मुझे यह आभास हुआ कि यह वही हैं तो मैं कांप उठा। लेकिन उनकी मुंदी हुई आंखें इतनी गड्ढे में धंसी हुई क्यों थीं? उनके चेहरे पर वह भयानक मुर्दनी क्यों थी और एक गाल पर खाल के नीचे वह काला-सा धब्बा क्यों था? पूरे चेहरे की मुद्रा इतनी कठोर और निर्मम क्यों थी? होंटों पर इतना पीलापन क्यों था और उनकी रूपरेखा इतनी सुंदर, इतनी भव्य क्यों थी और उनसे ऐसी अलौकिक शांति क्यों टपक रही थी कि उसे देखकर मेरी पीठ पर और मेरे बालों में एक सिहरन-सी दौड़ गयी?...

एकटक देखते हुए मुझे ऐसा लगा कि कोई अज्ञात, अदम्य शक्ति मेरी आंखों को उस निर्जीव चेहरे की ओर खींच रही थी। मैंने उस पर से अपनी नज़रें नहीं हटायीं, और कल्पना मेरी आंखों के सामने फूल की तरह खिलते हुए जीवन और सुख के चित्र खींचती रही। मैं भूल जाता था कि मेरे सामने जो शव पड़ा था, और जिसे मैं मूर्खों की तरह ऐसे देख रहा था जैसे वह कोई ऐसी वस्तु हो जिससे मेरे सपनों का कोई सरोकार न हो, वास्तव में वह थीं। मैं उनकी कल्पना उसी रूप में कर रहा था जिस रूप में मैंने उन्हें इतनी बार देखा था, ज़िंदादिल, मस्त, मुस्कराती हुई; फिर यकायक उस पीले चेहरे की

कोई विशेषता, जिस पर फिर मेरी नज़रें टिकी हुई थीं, मुझे खटकती: भयानक यथार्थ को याद करके मैं कांप उठता, लेकिन मैं घूरना बंद नहीं करता। बार-बार कल्पनाएं यथार्थ को हटाकर उसकी जगह ले लेतीं, और फिर यथार्थ की चेतना उन कल्पनाओं को खदेड़ देती। आख़िरकार कल्पना थक गयी, और उसने मुझे धोखा देना बंद कर दिया; यथार्थ की चेतना भी लुप्त हो गयी, और मैं अपने होश-हवास खो बैठा। पता नहीं मैं कितनी देर इस हालत में रहा, या यह हालत दरअसल थी क्या; मैं बस इतना जानता हूं कि कुछ देर के लिए मुझे अपने अस्तित्व की भी चेतना नहीं रही, और मैं एक उदात्त, अकथनीय हद तक सुखद तथा उदासी-भरा हर्ष अनुभव करने लगा।

शायद यहां से उड़कर एक बेहतर दुनिया में जाते समय उनकी सुंदर आत्मा उदास भाव से उस दुनिया को देख रही थी जिसमें वह हम लोगों को छोड़ गयी थीं; उसने मेरे दुख को देखा, उस पर तरस खाया, और होंटों पर दया की अलौकिक मुस्कराहट लिये हुए मुझे सान्त्वना और आशीर्वाद देने के लिए वह प्रेम के पंखों पर धरती पर उतर आयी।

दरवाजा चरचराया और एक मंत्र पढ़नेवाले ने पहलेवाले को छुट्टी दिलाने के लिए कमरे में प्रवेश किया। इस शोर से मैं चौंक पड़ा और जो पहला विचार मेरे दिमाग़ में आया वह यह था कि मैं चूंकि रो नहीं रहा था और कुर्सी पर ऐसी मुद्रा में खड़ा था जिसमें कोई करुण भाव नहीं था, इसलिए वह कहीं मुझे ऐसा निष्ठुर लड़का न समझ ले जो तरस खाकर या जिज्ञासावश कुर्सी पर चढ़ गया था। मैंने अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया, सिर झुकाया और रोने लगा।

अब अपनी उस समय की प्रतिक्रियाओं को याद करके मैं देखता हूं कि आत्म-विस्मृति का वह क्षण ही सच्ची व्यथा का एकमात्र क्षण था। उनके दफ़न किये जाने से पहले और उसके बाद मैंने कभी रोना बंद नहीं किया और लगातार उदास रहा; फिर भी उस उदासी को याद करके मैं शर्मिंदा हो जाता हूं, क्योंकि उसके साथ हमेशा आत्म-प्रेम की एक भावना मिली रहती थी: कभी तो मैं यह दिखाना चाहता था कि मुझे दूसरों से ज़्यादा दुःख है, फिर कभी मुझे यह चिंता सताती

थी कि दूसरों पर मेरा क्या असर पड़ रहा होगा, और फिर, कभी निरुद्देश्य जिज्ञासा के कारण मैं मीमी की टोपी और वहां पर मौजूद दूसरे लोगों के चेहरों का अवलोकन करने लगता था। मुझे अपने आपसे नफ़रत हो रही थी क्योंकि मैं जो भावना अनुभव कर रहा था वह शुद्धत: व्यथा की भावना नहीं थी, और मैं अन्य सभी भावनाओं को छिपाने की कोशिश कर रहा था; इसीलिए मेरी व्यथा अहार्दिक और अस्वाभाविक थी। इसके अलावा यह जानकर मुझे एक तरह की ख़ुशी हो रही थी कि मैं दुःखी था। मैं अपनी व्यथा की चेतना को उकसाने की कोशिश कर रहा था और अन्य सभी भावनाओं की अपेक्षा अहंभाव से प्रेरित यह भावना मेरे अंदर सच्ची व्यथा का गला घोंटे दे रही थी।

रात गहरी और शांत नींद सोने के बाद, जैसा कि अपार दुःख के बाद हमेशा होता है, जब मेरी आंख खुली तो मेरे आंसू सूख चुके थे और मैं बिल्कुल शांत था। दस बजे हम लोगों को मृतात्मा के लिए उस प्रार्थना में बुलाया गया जो घर से शव ले जाने से पहले आयोजित की गयी थी। कमरा घर के रोते हुए नौकरों और किसानों से भरा हुआ था जो अपनी मालकिन को अंतिम विदा देने आये थे। प्रार्थना के दौरान मैं काफ़ी रोया, अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया और सिर ज़मीन तक झुकाया लेकिन मैंने सच्चे मन से प्रार्थना नहीं की और बिल्कुल उदासीन रहा। मुझे परेशानी हो रही थी कि मेरा वह नया कमर तक का कोट, जो मुझे पहना दिया गया था, बग़लों में तंग था। मैं सोच रहा था कि कहीं मेरी पतलून घुटनों पर बहुत मैली न हो जाये; और मैं नज़रें बचाकर वहां पर मौजूद सभी लोगों को ध्यान से देख रहा था। पापा ताबूत के सिरहाने खड़े थे। उनका रंग उनके रूमाल जैसा ही सफ़ेद पड़ गया था, और वह स्पष्टत: प्रयास करके बड़ी कठिनाई से ही अपने आंसू रोक पा रहे थे। काले कोट में उनका लंबा डीलडौल, उनका पीला, भावयुक्त चेहरा, अपने सीने पर सलीब का निशान बनाते समय, हाथ से ज़मीन छूकर सिर झुकाते समय, पादरी के हाथ से मोमबत्ती लेते समय या ताबूत के पास जाते समय उनकी एक-एक गति, जो हमेशा की तरह रुचिर और आश्वस्त थी, अत्यंत प्रभावशाली थी; फिर भी न जाने क्यों

ऐसे क्षण में इतने प्रभावशाली लगने की वह क्षमता ही मुझे अच्छी नहीं लग रही थी। मीमी दीवार के सहारे खड़ी थीं और लगता था कि वह मुश्किल से ही खड़ी हो पा रही थीं; उनकी पोशाक पर सिलवटें पड़ी हुई थीं और जगह-जगह रोएं चिपके हुए थे; उनकी टोपी एक ओर को झुकी हुई थी; उनकी सूजी हुई आंखें लाल थीं; उनका सिर हिल रहा था। वह लगातार दिल हिला देनेवाले ढंग से सुवक-सुवककर रो रही थीं, और वार-वार अपना चेहरा अपने हाथों या रूमाल में छिपा लेती थीं। मैं सोच रहा था कि वह देखनेवालों से अपना चेहरा छिपाने के लिए, और अपनी मक्कारी-भरी सिसकियों से एक क्षण के लिए आराम पाने के लिए ही ऐसा कर रही थीं। मुझे याद आ रहा था कि अभी कल ही वह पापा से कह रही थीं कि मां के मरने से उन्हें इतना गहरा धक्का पहुंचा था कि उन्हें अब उसे सह सकने की उम्मीद नहीं थी; कि मां के मर जाने से उनका सब कुछ छिन गया था; कि उस फ़रिश्ते ने (जैसा कि वह मां को कहती थी) अपने मरने से पहले उन्हें नहीं भुलाया था और उनके और कात्या के भविष्य को हमेशा के लिए चिंतामुक्त कर देने की इच्छा व्यक्त की थी। यह वात कहते हुए वह फूट-फूटकर रो रही थीं, और शायद उनकी पीड़ा सच्ची थी, लेकिन वह शुद्ध और अनन्य नहीं थी। ल्यूबा मातमी झालरवाली काली फ़्राक पहने, आंसुओं से अपना चेहरा भिगोये, सिर झुकाये खड़ी थी, और बीच-बीच में बच्चों की तरह सहमकर तावूत की तरफ़ देख लेती थी। कात्या अपनी मां के बग़ल में खड़ी थी, और उसके उदास भाव के बावजूद उसका चेहरा हमेशा की तरह गुलाबी था। वोलोद्या का निष्कपट स्वभाव उसकी व्यथा में भी निष्कपट था: वह कभी तो अपनी विचारमग्न, निश्चल दृष्टि किसी चीज़ पर गड़ाये खड़ा रहता, फिर उसका मुंह अचानक फड़कने लगता और वह जल्दी से अपने सीने पर सलीब का निशान बनाकर सिर झुका लेता। जनाज़े में जितने भी अजनबी थे वे सभी मुझे असह्य लग रहे थे। वे पापा से सांत्वना के जो शब्द कह रहे थे, कि वह वहां बेहतर रहेंगी, कि वह इस दुनिया के लिए थीं ही नहीं, उन्हें सुनकर मेरे मन में झल्लाहट पैदा होती थी।

इन लोगों को उनके बारे में बातें करने का और उनका शोक

मनाने का क्या अधिकार था? उनमें से कुछ लोग हमारी चर्चा करते हुए हमें अनाथ कहते थे। जैसे उनके वताये विना किसी को यह भी न मालूम होता कि जिन वच्चों की मां नहीं होती उन्हें यही कहा जाता है! स्पष्टत: उन्हें इस बात से खुशी होती थी कि सवसे पहले उन्होंने हमें इस उपाधि से विभूषित किया, ठीक उसी तरह जैसे आम तौर पर लोगों को इस वात की जल्दी रहती है कि जिस लड़की की अभी शादी हुई हो उसे वे पहली वार मादाम कहें।

हॉल के दूरवाले कोने में, वरतनों के कमरे के खुले हुए दरवाज़े के पीछे लगभग विल्कुल छिपी हुई सफ़ेद वालोंवाली एक वूढ़ी औरत घुटनों के बल सिर झुकाये वैठी थी। दोनों हाथ जोड़कर और आंखें आसमान की ओर उठाकर वह रो नहीं रही थी वल्कि प्रार्थना कर रही थी। उसकी आत्मा ईश्वर के पास पहुंच जाना चाहती थी, और वह उससे प्रार्थना कर रही थी कि वह उसे भी उसी से मिला दे जिससे उसे इस दुनिया में सवसे ज़्यादा प्यार था और उसे पूरी उम्मीद थी कि जल्दी ही ऐसा हो जायेगा।

"यह है जो उन्हें सचमुच प्यार करती थी!" मैंने सोचा, और मुझे अपने आप पर शर्म आने लगी।

प्रार्थना समाप्त हुई; मरनेवाली का चेहरा खोल दिया गया और हम लोगों को छोड़कर वहां पर मौजूद सभी लोगों ने वारी-वारी तावूत के पास जाकर उसे चूमा।

उसके पास जाकर अंतिम विदा देनेवालों में एक किसान औरत थी जो अपने साथ पांच साल की एक सुंदर लड़की को वहां भगवान जाने क्यों लायी थी। उसी क्षण अचानक मेरा भीगा हुआ रूमाल गिर पड़ा और मैं उसे उठाने के लिए अभी झुका ही था कि कान के परदे फाड़ देनेवाली एक भयानक चीख सुनकर मैं चौंक पड़ा; उस चीख़ में इतना भय समाया हुआ था कि अगर मैं सौ साल भी ज़िंदा रहूं तो उसे कभी नहीं भूलूंगा, और जब मैं उसे याद करता हूं तो हमेशा मेरे शरीर में सिहरन की एक लहर दौड़ जाती है। मैंने अपना सिर उठाया: तावूत के पास स्टूल पर वही किसान औरत वड़ी मुश्किल से अपनी वांहों में उस छोटी-सी लड़की को दवोचे खड़ी थी, जो अपने छोटे-छोटे हाथ ज़ोर से हवा में चलाकर, और अपना भयभीत चेहरा

पीछे हटाते हुए फटी-फटी आंखों से मेरी मृत मां को देख रही थी और लगातार भयानक चीखें मार रही थी। मैं भी ऐसी आवाज़ से चीख़ पड़ा जो शायद उस आवाज़ से भी डरावनी थी, जिसे सुनकर मैं चौंक पड़ा था, और मैं झपटकर कमरे के बाहर चला गया।

उस वक़्त जाकर मेरी समझ में आया कि वह तेज़ भारी गंध, जो लोबान की गंध के साथ मिलकर कमरे में छायी हुई थी, कहां से आ रही थी; और इस विचार ने कि वह चेहरा जो अभी कुछ ही दिन पहले तक सुंदरता और कोमलता से परिपूर्ण था, वह चेहरा जिसे मैं इस दुनिया की हर चीज़ से बढ़कर प्यार करता था, भय भी पैदा कर सकता है, मानो पहली बार मेरे सामने कटु सत्य का उद्‌घाटन किया और मेरी आत्मा को घोर निराशा से भर दिया।

अध्याय २८

आख़िरी उदास यादें

मां हम लोगों के बीच नहीं रह गयी थीं लेकिन हमारी ज़िंदगी अपने ढर्रे पर चलती रही: हम उसी वक़्त और उन्हीं कमरों में सोते थे और उसी वक़्त उठते थे; सुबह और शाम की चाय, दोपहर और रात का खाना, सभी कुछ उसी वक़्त होता था; मेज़-कुर्सियां उन्हीं जगहों पर रखी थीं; घर की किसी चीज़ में कोई परिवर्तन नहीं हुआ था और न ही हमारे रहन-सहन में; बस वह नहीं रही थीं।...

मुझे ऐसा लगता था कि ऐसे दुःख के बाद हर चीज़ को बदल जाना था; हमारा सामान्य जीवन मुझे उनकी स्मृति का अपमान लगता था, और उससे उनके न होने की याद बेहद स्पष्ट रूप से आती थी।

जनाज़े से पहलेवाले दिन खाना खाने के बाद मैं सोने जाना चाहता था; मैं नताल्या साविश्ना की कोठरी में यह सोचकर गया कि वहां मैं उसके नरम बिस्तर पर रूई-भरी गरम रज़ाई ओढ़कर सो जाऊंगा।

जब मैं कोठरी में घुसा उस वक़्त नताल्या साविश्ना अपने विस्तर पर लेटी हुई थी और शायद सो रही थी ; मेरे क़दमों की आहट सुनकर वह उठी और उसने मक्खियों से बचाने के लिए सिर पर जो ऊनी कपड़ा लपेट रखा था उसे एक तरफ़ फेंक दिया और अपनी टोपी ठीक करके पलंग की कगर पर बैठ गयी।

खाना खाने के बाद एक झपकी लेने मैं अकसर उसके कमरे में जाया करता था, और अब कोठरी में मेरे क़दम रखते ही वह समझ गयी कि मैं क्यों आया था... विस्तर से थोड़ा-सा उठते हुए उसने कहा :

"तो तुम यहां थोड़ी देर को आराम करने आये हो? तो लेट जाओ न, बेटा।"

"अरे नहीं, नताल्या साविश्ना!" मैंने हाथ पकडकर उसे रोकते हुए कहा। "यह बात बिल्कुल नहीं है... मैंने बस सोचा कि चला चलूं... तुम खुद थकी हुई हो ; तुम लेट जाओ।"

"मैं काफ़ी सो चुकी हूं, बेटा," वह बोली (मैं जानता था कि वह तीन दिन से सोयी नहीं थी), "और फिर, अब सोने की बात सोच ही कौन सकता है," उसने गहरी आह भरकर कहा।

मैं नताल्या साविश्ना से हमारे दुर्भाग्य के बारे में बातें करना चाहता था। मैं जानता था कि उसे मां से कितना सच्चा प्यार था, और उसके साथ मिलकर रोने से मुझे बड़ी राहत मिलती।

"नताल्या साविश्ना," थोड़ी देर चुप रहकर विस्तर पर बैठते हुए मैंने कहा, "क्या तुम्हें ऐसा लगा था?"

बुढ़िया ने मुझे आश्चर्य और कौतूहल से देखा, शायद इसलिए कि वह समझ नहीं पायी कि मैं उससे यह क्यों पूछ रहा था।

"कौन सोच सकता था कि ऐसा हो जायेगा?" मैंने दोह-राया।

"अरे बेटा," उसने कोमलतम सहानुभूति से मुझे एक दृष्टि देखते हुए कहा, "अब भी मुझे मुश्किल से ही विश्वास आता है। मैं बूढ़ी हूं, मेरी बूढ़ी हड्डियों को न जाने कब का दफ़न कर दिया जाना चाहिये था, और मुझे कैसे-कैसे दिन देखने पड़ रहे हैं—पुराने मालिक, तुम्हारे नाना प्रिंस निकोलाई मिखाइलोविच (भगवान उनकी आत्मा

को शांति दे!), मेरे दो भाई, और मेरी बहन अन्नुश्का मुझसे पहले दफ़न किये जा चुके हैं, हालांकि वे सब मुझसे छोटे थे, और अब, जाहिर है यह मेरे पापों का ही दंड है कि मैं अपने फ़रिश्ते के बाद तक जिंदा रहूं। उसकी पुनीत इच्छा के आगे किसका बस चलता है! उसने उन्हें इसलिए उठा लिया कि वह बहुत योग्य थीं, और उसे वहां अच्छे लोगों की जरूरत है।"

इस सीधे-सादे विचार से मुझे सांत्वना मिली और मैं नताल्या साविश्ना के और पास खिसक आया। वह अपने हाथ सीने पर बांधकर ऊपर देखने लगी; उसकी धंसी हुई आंसू-भरी आंखें अपार परंतु शांत व्यथा व्यक्त कर रही थीं। उसके मन में यह दृढ़ आशा पल रही थी कि भगवान उसे बहुत ज़्यादा दिन तक उनसे अलग नहीं रखेगा जिन पर उसने इतने वर्षों तक अपने प्यार की सारी शक्ति केंद्रित कर दी थी।

"हां, बेटा, ऐसा लगता है कि उस बात को बहुत दिन नहीं हुए जब मैं उनकी आया थी, और उनको कपड़े पहनाती थी और वह मुझे नाशा* कहती थीं। वह भागकर मेरे पास आतीं और अपनी छोटी-छोटी बांहें मेरे गले में डालकर मुझे चूमने लगतीं और कहतीं:

"'मेरी नाशा, मेरी सुंदरी, मेरी लाड़ली!'

"और मैं मज़ाक़ में कहती:

"'नहीं, छोटी सरकार, आप मुझसे प्यार नहीं करतीं; कुछ दिन रुक जाइये, आप बड़ी हो जायेंगी, और शादी कर लेंगी और अपनी नाशा को भूल जायेंगी।' वह विचारों में डूब जातीं। 'नहीं,' वह कहतीं, 'अगर मैं नाशा को अपने साथ नहीं ले जा सकूंगी तो मैं शादी ही नहीं करूंगी; मैं अपनी नाशा का साथ कभी नहीं छोड़ूंगी।' और अब वह मुझे छोड़कर चली गयीं, और मेरी राह तक नहीं देखी उन्होंने। कितना प्यार करती थीं वह मुझे! और सच पूछो तो कौन था ऐसा जिसे वह प्यार नहीं करती थीं! अपनी मां को कभी न भूलना, बेटा; वह कोई साधारण इंसान नहीं थीं, वह आसमान से

---

* नताल्या के स्नेहसूचक लघु रूप नताशा का ही एक और छोटा रूप। —अनु०

उतरा हुआ फ़रिश्ता थीं। जब उनकी आत्मा स्वर्गलोक में पहुंचेगी तो वह वहां भी आप लोगों से प्यार करेंगी, और आपको देख-देखकर ख़ुश होंगी।"

"तुम ऐसा क्यों कहती हो, नताल्या साविश्ना, कि जब वह स्वर्गलोक पहुंचेगी?" मैंने पूछा। "मैं तो समझता हूं कि वह इस वक़्त भी वहीं हैं।"

"नहीं, बेटा," नताल्या साविश्ना ने अपनी आवाज़ धीमी करते हुए और पलंग पर मेरे और पास आकर बैठते हुए कहा, "उनकी आत्मा अभी यहीं है।"

और उसने ऊपर की ओर इशारा किया। वह लगभग कानाफूसी के स्वर में और इतने भावपूर्ण ढंग से और विश्वास के साथ बोल रही थी कि अनायास ही मैंने नज़रें ऊपर उठायीं और कुछ खोजते हुए कार्निस को घूरने लगा।

"पुण्यात्माओं को स्वर्ग पहुंचने से पहले चालीस कठिन परीक्षाएं झेलनी पड़ती हैं, बेटा, और वह अपने घर में चालीस दिन तक रह सकती है।..."

वह बड़ी देर तक इसी तरह की बातें करती रही, और इतनी सादगी से और इतनी आस्था के साथ मानो वह बिल्कुल रोज़मर्रा की घटनाएं बयान कर रही हो जिन्हें उसने ख़ुद अपनी आंखों से देखा हो, और जिन पर कभी शक करने की बात कोई सोच भी नहीं सकता। मैं दम साधे उसकी बातें सुनता रहा, और हालांकि मैं अच्छी तरह समझ तो नहीं पाया कि वह क्या कह रही थी, फिर भी मैंने उसकी बात पर पूरी तरह यक़ीन कर लिया।

"हां, बेटा, वह अभी यहीं हैं, वह हमें देख रही हैं; शायद जो कुछ हम कह रहे हैं उसे वह सुन भी रही हों," नताल्या साविश्ना ने अपनी बात पूरी करते हुए कहा।

उसने अपना सिर झुका लिया और चुप हो गयी। उसे अपने ढलकते हुए आंसू पोंछने के लिए एक रूमाल की ज़रूरत थी: वह उठी और मेरी आंखों में आंखें डालकर भावातिरेक से कांपते स्वर में बोली:

"ऐसा करके भगवान ने मुझे कई क़दम अपने पास कर लिया

है। अब यहां मेरे लिए बचा ही क्या है? अब मैं किसके लिए ज़िंदा रहूं? अब मैं किससे प्यार करूं?"

"तुम्हें हम लोगों से प्यार नहीं है क्या?" मैंने झिड़की के अंदाज़ में बड़ी मुश्किल से अपने आंसू रोकते हुए पूछा।

"भगवान जानता है कि मुझे तुम लोगों से कितना प्यार है, मेरे लाड़लो, लेकिन मैंने कभी किसी से उतना प्यार नहीं किया है जितना मुझे उनसे था, और वैसा प्यार मैं किसी से कर भी नहीं सकती।"

वह इससे ज़्यादा कुछ नहीं कह पायी और मुंह फेरकर ज़ोर-ज़ोर से सिसकने लगी।

मैं अब सोने के बारे में सोच भी नहीं रहा था; हम दोनों एक-दूसरे के सामने चुप बैठे रो रहे थे।

फोका कोठरी में आया; हम लोगों की हालत देखकर और शायद यह सोचकर कि हम लोगों की बातों में विघ्न न पड़े, उसने डरी-डरी नज़रों से चुपचाप हम लोगों को देखा और दरवाज़े पर ही रुक गया।

"कुछ चाहिये, फ़ोका?" नताल्या साविश्ना ने अपनी आंखें पोंछते हुए पूछा।

"कूत्या* के लिए डेढ़ पौंड किशमिश, चार पौंड शकर और तीन पौंड चावल।"

"अच्छा, अभी देती हूं," नताल्या साविश्ना ने जल्दी से एक चुटकी नसवार चढ़ाते हुए कहा और वह तेज़ क़दम बढ़ाती हुई एक संदूक़ की तरफ़ गयी। जब वह अपना काम करने लगी, जिसे वह बेहद महत्वपूर्ण मानती थी, तो हमारी बातचीत से उत्पन्न होनेवाली व्यथा के अंतिम चिन्ह भी ग़ायब हो गये।

"चार पौंड का क्या करोगे?" वह शकर निकालकर तराज़ू पर तौलते हुए बड़बड़ायी। "साढ़े तीन काफ़ी होगी।"

---

*रूसी में मातम करनेवालों को खिलाया जानेवाला किशमिश, शहद मिला चावल का दलिया। — अनु०

और यह कहकर उसने तराज़ू पर से कई बट्टे हटा लिये।

"मेरी तो समझ में ही नहीं आता, मैंने अभी कल ही तो आठ पौंड चावल दिये हैं, फिर मांगते हैं! बुरा न मानना, फ़ोका, लेकिन मैं तुम्हें और चावल नहीं दे सकती। वह वान्का बहुत ख़ुश है कि सारे घर में उथल-पुथल मची हुई है: वह समझता है कि कोई देखेगा ही नहीं। नहीं, मैं अपने मालिक की जायदाद के मामले में किसी के भी साथ कोई रिआयत नहीं करती। आठ पौंड! भला किसी ने सुना है आज तक ऐसा!"

"किया क्या जाये? वह कहता है कि सब ख़त्म हो गया।"

"अच्छा, तो ले जाओ, यह रहे! ले जाने दो उसे!"

जिस तरह प्यार-भरे भावावेग के साथ वह मुझसे बातें कर रही थी उससे इस बकने-झकने और टुच्चे क़िस्म के हिसाब-किताब में उसके परिवर्तन पर मुझे आश्चर्य हुआ। बाद में इसके बारे में सोचने पर मेरी समझ में आया कि उसकी आत्मा में जो कुछ भी हो रहा था उसके बावजूद उसने अपने अंदर इतना मानसिक संतुलन बाक़ी रखा था कि वह अपने कामकाज में लगी रह सके, और उसकी आदत उसे अपने प्रतिदिन के कामों की ओर खींच ले जाती थी। उसकी व्यथा इतनी गहरी और इतनी सच्ची थी कि उसे यह जताने की कोई ज़रूरत ही नहीं थी कि वह छोटी-मोटी बातों की ओर ध्यान नहीं दे सकती, न ही वह इस बात को समझ सकती थी कि इस तरह की बात किसी को सूझ भी सकती है।

मिथ्याभिमान एक ऐसी भावना है जिसका सच्ची व्यथा से कोई मेल नहीं है, फिर भी वह बहुत-से लोगों के स्वभाव में इतनी बुरी तरह गुंथा रहता है कि गहरी से गहरी विपत्ति भी उसे शायद ही कभी दूर कर पाती हो। शोक की परिस्थिति में मिथ्याभिमान का प्रदर्शन उदास या दुःखी या दृढ़ लगने की इच्छा के रूप में होता है; लेकिन ये तुच्छ इच्छाएं, जिन्हें हम मानने को तैयार नहीं होते, पर जो शायद ही कभी हमारा पीछा छोड़ती हों, गहरे से गहरे संकट में भी नहीं, हमारे शोक को उसकी प्रबलता, उसकी गरिमा और उसके खरेपन से वंचित कर देती हैं। लेकिन नताल्या साविश्ना को अपने दुःख से इतनी गहरी चोट पहुंची थी कि उसके मन में कोई इच्छा

बाक़ी ही नहीं रह गयी थी और वह केवल आदत की वजह से जिये जा रही थी।

फ़ोका ने जो सामान मांगा था वह उसे देकर, और उसे पादरियों के भोज के लिए केक ज़रूर बनाने की याद दिलाकर, उसने उसे चलता किया, और अपना मोज़ा उठाकर फिर मेरे पास आकर बैठ गयी।

बातचीत का रुख़ फिर उसी पहलेवाले विषय की ओर मुड़ गया, और एक बार फिर हम दोनों साथ मिलकर रोने लगे।

नताल्या साविश्ना के साथ इस तरह की बातचीत रोज़ होती रही; उसके मूक आंसू और शांत श्रद्धा-भरे शब्दों से मुझे शांति और सांत्वना मिलती थी।

लेकिन आख़िरकार हम लोगों को एक-दूसरे से अलग होना पड़ा। जनाज़े के तीन दिन बाद सारा घर मास्को चला गया; मेरे भाग्य में उसे फिर देखना नहीं बदा था।

नानी को यह हृदय-विदारक समाचार हमारे पहुंचने पर ही मिला और उन्हें बेहद दुःख हुआ। हम लोगों को उन्हें देखने नहीं दिया जाता था क्योंकि वह हफ़्ते भर से बेहोश पड़ी थीं, और डाक्टर को उनकी जान का ख़तरा था, इसलिए और भी कि वह न सिर्फ़ कोई दवा नहीं खाती थीं, बल्कि वह किसी से बात भी नहीं करती थीं, सोती भी नहीं थीं और कुछ भी खाती-पीती नहीं थीं। कभी-कभी अपने कमरे में आराम-कुर्सी पर बैठे-बैठे वह अचानक हंस पड़ती थीं, फिर आंसुओं के बिना सिसकने लगती थीं और उन्हें दौरा पड़ने लगता था और वह चीख़-चीख़कर डरावनी या ऊटपटांग बातें बकने लगती थीं। अपने जीवन में उन्हें यह पहला असली सदमा हुआ था, और इसकी वजह से वह घोर निराशा में डूब गयी थीं। वह अपनी इस विपदा के लिए किसी को दोष देने की ज़रूरत महसूस करती थीं, और वह भयानक बातें कहने लगती थीं, बेहद जोश के साथ किसी को घूंसा दिखा-दिखाकर धमकाने लगती थीं, अपनी कुर्सी से उछल पड़ती थीं, लंबे-लंबे डग भरकर कमरे में इधर से उधर टहलने लगती थीं, और फिर बेहोश होकर गिर पड़ती थीं।

एक बार मैं उनके कमरे में चला गया। वह हमेशा की तरह अपनी आराम-कुर्सी पर बैठी थीं और देखने में बिल्कुल शांत लग रही थीं; फिर भी उनकी नज़र ने मुझे चौंका दिया। उनकी आंखें बिल्कुल पूरी तरह खुली हुई थीं, लेकिन शून्य और अस्थिर दृष्टि से घूर रही थीं; वह मुझ पर नज़रें गड़ाये थीं, लेकिन प्रकटतः मुझे देख नहीं रही थीं। उनके होंटों पर मंद मुस्कराहट आयी और उन्होंने दिल को छू लेनेवाली कोमलता से भरे हुए स्वर में कहा, "यहां आओ, मेरे कलेजे के टुकड़े, यहां आओ, मेरे फ़रिश्ते।" मैं समझा कि वह मुझसे कह रही हैं और मैं उनके और पास चला गया; लेकिन उन्होंने मेरी तरफ़ देखा भी नहीं। "अरे, काश तुम्हें मालूम होता कि मैंने कैसी-कैसी पीड़ाएं सही हैं, बेटी, और मुझे तुम्हारे आने की कितनी खुशी है!" तब मेरी समझ में आया कि वह अपनी कल्पना में मां को देख रही थीं, और मैं ठिठक गया। "मुझे बताया गया कि तुम मर गयी हो," वह त्योरियां चढ़ाकर कहती रहीं। "क्या बकवास है! क्या तुम मुझसे पहले मर सकती हो?" और यह कहकर वह दीवानों की तरह भयानक ठहाका मारकर हंस पड़ीं।

जो लोग गहरी मुहब्बत करना जानते हैं वे बहुत बड़ा दुःख भी झेल सकते हैं; फिर भी प्यार करने की यही ज़रूरत उनके दर्द को कम कर देती है और उनके घाव भर देती है। यही वजह है कि मनुष्य का नैतिक स्वभाव उसके शारीरिक स्वभाव से अधिक टिकाऊ होता है और दुःख किसी को कभी जान से नहीं मारता।

एक सप्ताह बाद नानी रोने लगीं और उनकी हालत सुधरती गयी।

होश-हवास ठीक होने के बाद उन्हें सबसे पहले हम लोगों का ख़्याल आया, और हम लोगों के प्रति उनका प्रेम बढ़ गया। हम उनकी आराम-कुर्सी के पास ही रहे; वह चुपके-चुपके रो रही थीं, मां की बातें कर रही थीं और बड़े स्नेह से हमें दुलार रही थीं।

नानी की व्यथा को देखकर किसी को यह नहीं लग सकता था कि वह उसे बढ़ा-चढ़ा रही हैं, और उस व्यथा की अभिव्यक्तियां दिल की गहराइयों को छू लेती थीं; फिर भी न जाने क्यों मुझे नताल्या साविश्ना के साथ ज़्यादा हमदर्दी थी, और आज तक मेरा पक्का

विश्वास है कि मां के प्रति किसी का भी प्रेम और किसी का भी शोक-प्रदर्शन उतना शुद्ध और उतना हार्दिक नहीं था जितना कि उस सीधी-सादी स्नेहमयी औरत का था।

मां के मरने के साथ ही मेरे बचपन के सुख के दिन भी ख़त्म हो गये और एक नया दौर शुरू हुआ – किशोरावस्था का दौर; लेकिन चूंकि नताल्या साविश्ना के बारे में, जिससे मैं फिर कभी नहीं मिला, और जिसने मेरे जीवन पर और मेरी संवेदनशीलता के विकास पर इतना प्रबल और इतना हितकर प्रभाव डाला, मेरी स्मृतियों का संबंध पहले दौर के साथ है इसलिए मैं उसके और उसकी मृत्यु के बारे में कुछ शब्द और कहूंगा।

जैसा कि मुझे बाद में गांव में रहनेवालों ने बताया, हम लोगों के चले आने के बाद कोई काम न होने की वजह से उसका वक़्त काटे नहीं कटता था। हालांकि सारे संदूक़ अभी तक उसी की निगरानी में थे, और वह लगातार उनमें कुछ खखोलती थी, कुछ चीज़ें एक संदूक़ से दूसरे में रखती थी, कपड़े निकालकर धूप में फैलाती रहती थी और फिर उन्हें तह करके संदूक़ों में बंद कर देती थी, फिर भी गांव की उस हवेली में, जिसकी बचपन से ही उसे आदत पड़ चुकी थी, जब मालिक लोग रहते थे उस समय के शोर-गुल और चहल-पहल का अभाव उसे खलता था। व्यथा, उसके जीवन के ढर्रे में परिवर्तन, ज़िम्मेदारियों का न होना – इन सब बातों ने बड़ी तेज़ी से उसमें बूढ़ों की एक बीमारी को उभार दिया, जिसकी प्रवृत्ति उसमें पहले से थी। मां के मरने के साल ही भर बाद उसे जलंधर हो गया और वह बिस्तर में लग गयी।

मैं समझता हूं कि नताल्या साविश्ना के लिए जीना तो मुश्किल था ही, मरना और भी मुश्किल था – पेत्रोव्स्कोये के उस बड़े-से ख़ाली घर में, जहां उसका न कोई रिश्तेदार था न दोस्त। उस घर में हर आदमी नताल्या साविश्ना से प्यार करता था और उसकी इज़्ज़त करता था, लेकिन उसने दोस्ती किसी के साथ नहीं की थी और इस बात पर उसे गर्व था। उसका ख़्याल था कि उस जैसे आदमी के लिए, जिसके ज़िम्मे पूरी गृहस्थी की देखभाल हो और जिस पर मालिक पूरी तरह भरोसा करना हो और जिसकी रखवाली में हर प्रकार की

संपत्ति से भरे हुए कितने ही संदूक़ हों, किसी के भी साथ दोस्ती का अनिवार्य परिणाम यह होगा कि उसे पक्षपात करना पड़ेगा और अक्षम्य एहसान करने पड़ेंगे। इसीलिए, या शायद इसलिए कि बाक़ी नौकरों के साथ उसका वास्ता नहीं था, वह सबसे अलग-थलग रहती थी और कहती थी कि उस घर में कोई उसका सगा नहीं था, और अपने मालिक की जायदाद के मामले में वह किसी के भी साथ कोई रिआयत नहीं करती थी।

भरपूर श्रद्धा से प्रार्थना करते समय अपनी हर भावना ईश्वर को बताकर वह सांत्वना खोजती थी और उसी में उसे सांत्वना मिलती थी; फिर भी कभी-कभी कमजोरी के उन क्षणों में, जिनका शिकार हम सभी लोग हो जाते हैं, जब आदमी को सबसे ज़्यादा राहत अपने आंसुओं और किसी प्राणी की सहानुभूति से मिलती है, वह अपने छोटे-से कुत्ते का बिस्तर पर लिटा लेती थी (वह उसके हाथ चाटता था, और अपनी पीली आंखें उस पर जमाये उसे देखता रहता था), उससे बातें करती थी, और उसे थपथपाकर चुपके-चुपके रोती थी। जब कुत्ता दर्द-भरी आवाज़ निकालने लगता था तो वह उसे शांत कराने की कोशिश करती थी और कहती थी, "बस, बस! मैं जानती हूं, तुम्हें बताने की ज़रूरत नहीं है, कि मैं जल्दी ही मरनेवाली हूं।"

मरने से महीना-भर पहले उसने अपने संदूक़ में से कुछ सफ़ेद सूती कपड़ा, कुछ सफ़ेद मलमल और गुलाबी फ़ीता निकाला; अपनी नौकरानी की मदद से उसने अपने लिए एक सफ़ेद पोशाक और टोपी बनायी और छोटी-से-छोटी चीज़ तक अपने कफ़न-दफ़न का सारा ज़रूरी सामान तैयार करके रख दिया। उसने अपने मालिक के भी सारे संदूक़ों का सब सामान निकालकर उसकी फ़ेहरिस्त तैयार की और सारा सामान स्टीवर्ड के सिपुर्द कर दिया; फिर उसने दो रेशमी पोशाकें, एक पुरानी शाल, जो नानी ने कभी उसे दी थी, नाना की कारचोबी फ़ौजी वर्दी, जो उसे उपहार में दे दी गयी थी, अपने संदूक़ से निकाली। उसकी देखभाल की बदौलत उस वर्दी की कशीदा-कारी और उस पर टंके हुए फ़ीते बिल्कुल नये जैसे लगते थे, और उसके कपड़े को कीड़े छू तक नहीं पाये थे।

मरने से पहले उसने इच्छा व्यक्त की कि उन दो रेशमी पोशाकों में से गुलाबीवाली पोशाक ड्रेसिंग-गाऊन या जैकेट बनाने के लिए वोलोद्या को दे दी जाये, और दूसरी, कत्थई चारख़ानेवाली, उसी काम के लिए मुझे दे दी जाये और शाल ल्यूबा को। फ़ौजी वर्दी उसने हम दोनों में से उसके लिए रखवा दी जो पहले अफ़सर बने। अपनी बाक़ी सारी जायदाद और सारा पैसा, सिर्फ़ चालीस रूबल छोड़कर जो उसने अपने कफ़न-दफ़न और जनाज़े की दावत के लिए अलग रख दिये थे, उसने अपने भाई के नाम कर दिया। उसका भाई, जिसे बहुत पहले कृषि-दासता से छुटकारा मिल गया था, किसी दूर के सूबे में बहुत बदचलनी की ज़िंदगी बसर करता था; इसलिए अपनी ज़िंदगी में नताल्या साविश्ना का उसके साथ किसी तरह का कोई संपर्क नहीं रहा था।

जब नताल्या साविश्ना का भाई अपना उत्तराधिकार लेने के लिए आया और मालूम यह हुआ कि मरनेवाली की कुल जायदाद पच्चीस रूबल के नोटों तक सीमित थी तो उसे विश्वास नहीं हुआ और उसने कहा कि ऐसा हो ही नहीं सकता कि वह बुढ़िया जो साठ साल तक ऐसे धनी परिवार में रही थी और जिसके ज़िम्मे उस परिवार की सारी गृहस्थी थी, जो हमेशा बेहद कंजूसी की ज़िंदगी बसर करती थी और एक-एक टुकड़े के लिए जान देने को तैयार रहती थी, अपने पीछे कुछ भी न छोड़ गयी हो। फिर भी दरअसल बात ऐसी ही थी।

नताल्या साविश्ना ने दो महीने तक अपनी बीमारी की मुसीबत झेली, और सच्चे ईसाइयों जैसे धीरज के साथ अपनी पीड़ा सहन की: वह न बड़बड़ायी, न उसने शिकायत की, बल्कि लगातार भगवान का नाम लेती रही, जैसी कि उसकी आदत थी। आख़िरी सांस लेने से घंटा-भर पहले उसने आख़िरी रस्में अदा करायीं।

उसने घर के सभी नौकरों से माफ़ी मांगी कि अगर उसने उन्हें कोई नुक़सान पहुंचाया हो तो वे माफ़ कर दें, और अपने पुरोहित फ़ादर वसीली से अनुरोध किया कि वह हम सबसे कह दें कि हम लोगों की कृपा के लिए आभार प्रकट करने को उसके पास शब्द नहीं थे, और हम लोगों से प्रार्थना की कि अगर अपनी नादानी में उसने

किसी को कोई कष्ट पहुंचाया हो तो वह उसे क्षमा कर दे, "लेकिन मैंने कभी चोरी नहीं की, और मैं कह सकती हूं कि मैंने अपने मालिकों को कभी एक तिनके का भी धोखा नहीं दिया।" अपने इसी एक गुण को वह मूल्यवान मानती थी।

जो ढीली पोशाक और टोपी उसने अपने लिये तैयार की थी वही पहने हुए, तकियों पर टिकी हुई वह अंतिम क्षण तक पुरोहित से बातें करती रही। उसे याद आया कि उसने ग़रीबों के लिए कुछ नहीं छोड़ा था; उसने पादरी को दस रूबल दिये कि अपनी यजमानी के ग़रीबों में बंटवा दे; फिर उसने अपने सीने पर सलीब का निशान बनाया, पीछे टिककर लेट गयी, आख़िरी बार आह भरी, और बहुत उल्लसित स्वर में ईश्वर का नाम लिया।

इस जीवन से विदा होते समय उसके मन में कोई पश्चात्ताप नहीं था, उसे मौत से डर नहीं लगा बल्कि उसने उसे एक वरदान की तरह स्वीकार किया। यह बात कही तो अकसर जाती है, लेकिन कितने कम उदाहरणों में यह सच होती है! नताल्या साविश्ना मौत से डरे बिना ही मर सकती थी, क्योंकि वह अपनी आस्था पर दृढ़ रहकर और धर्मग्रंथ में बताये गये नियमों का पालन करके मरी। शुद्ध, निःस्वार्थ प्रेम और आत्म-त्याग ही उसका सारा जीवन था।

काश उसके जीवन के सिद्धांत अधिक उच्च होते, अगर उसने अपना जीवन अधिक ऊंचे उद्देश्यों के लिए अर्पित कर दिया होता! क्या यह शुद्ध आत्मा इन कमियों की वजह से कम प्रेम और प्रशंसा के योग्य रह गयी है?

उसने इस ज़िंदगी में सबसे अच्छा और सबसे शानदार कारनामा कर दिखाया: वह किसी पश्चात्ताप और भय के बिना परलोक सिधार गयी।

उसकी इच्छा के अनुसार उसे मां की क़ब्र के पास बने हुए छोटे गिरजाघर से थोड़ी ही दूर पर दफ़न कर दिया गया। छोटी-सी क़ब्र के चारों ओर, जिसके नीचे वह दफ़न है और जिस पर बिच्छू-बूटी और बर्दोक के पौधे उगे हुए हैं, लोहे का काला जंगला लगा हुआ है; गिरजाघर से उस जंगले तक जाकर श्रद्धा से ज़मीन पर माथा टेकना मैं कभी नहीं भूलता।

कभी-कभी मैं गिरजाघर और उस काले जंगले के बीच आधे रास्ते में रुककर चुपचाप खड़ा हो जाता हूं। मेरे मन में दुःखद स्मृतियां उभरने लगती हैं। मेरे मन में विचार उठता है: क्या नियति ने इन दो प्राणियों के साथ मेरा संबंध केवल इसलिए जोड़ा था कि मैं जीवन-भर उनका शोक मनाऊं?...

किशोरावस्था

अध्याय १

अखंड यात्रा

पेत्रोव्स्कोयेवाले घर की वरसाती के सामने फिर दो गाड़ियां लगायी गयी हैं: एक वग्घी है जिसमें मीमी, कात्या, ल्यूवा और नौकरानी वैठ गये हैं और हम लोगों का कारिंदा याकोव खुद कोचवान के पास वैठा है; दूसरी गाड़ी व्रीच्का है जिसमें मुझे और वोलोद्या को अर्दली वसीली के साथ जाना है, जिसे लगान की अदायगी के वदले हाल ही में फिर खिदमतगार रख लिया गया है।

पापा, जो हम लोगों के कुछ दिन वाद मास्को आनेवाले हैं, हैट लगाये विना वरसाती में खड़े हैं और वग्घी और व्रीच्का की खिड़कियों पर सलीव का निशान वना रहे हैं।

"ईसा तुम्हारी रक्षा करें! अच्छा, अव जाओ!" याकोव और कोचवान (हम लोग अपनी ही गाड़ियों में यात्रा कर रहे हैं) अपनी टोपियां उतारकर सामने सलीव का निशान वनाते हैं। "भगवान हमारी रक्षा करे! चल, टिक-टिक!" वग्घी और व्रीच्का ऊवड़-खावड़ सड़क पर हचकोले खाने लगती हैं और वड़ी सड़क के दोनों ओर के वर्च के पेड़ हमारे पास से होकर एक-एक करके गुज़रने लगते हैं। मैं विल्कुल उदास नहीं हूं; मेरी कल्पना की दृष्टि वह नहीं देख रही है जो मैं पीछे छोड़कर जा रहा हूं, वल्कि वह देख रही है जो मेरे सामने आनेवाला है। इस क्षण तक जो पीड़ाजनक स्मृतियां मेरे दिमाग़ में भरी रही हैं उनसे संवंधित चीज़ें जैसे-जैसे दूर हटती जा रही हैं, वैसे-वैसे उन स्मृतियों की शक्ति भी कम होती जा रही है, और उनकी जगह यह लाजवाव चेतना लेती जा रही है कि जीवन शक्ति, ताज़गी और आशा से भरपूर है।

मैंने शायद ही कभी इतने – मैं मस्ती-भरे तो नहीं कहूंगा क्योंकि मस्ती का शिकार होने का विचार आते ही मेरा अंतःकरण मुझे कचोटने लगता है – बल्कि मैं कहूंगा इतने खुशगवार, इतने सुखद दिन नहीं बिताये होंगे जितने कि वे चार दिन थे जिनके दौरान हम यात्रा करते रहे। अब मेरी आंखों को मां के कमरे का वह बंद दरवाज़ा नहीं दिखायी देता, जिसके सामने से गुज़रते समय कभी ऐसा नहीं होता था कि मैं सिहर न उठता हूं ; न वह बंद पियानो, जिसे खोलना तो दूर रहा कोई उसकी ओर एक तरह के डर के बिना देखने की हिम्मत भी नहीं कर सकता था ; न वे मातमी लिबास (हम सब लोगों ने सादे सफ़री कपड़े पहन रखे थे), न उनमें से कोई चीज़ जो मुझे मेरी उस क्षति की स्पष्ट याद दिलाकर जिसकी कमी को कभी पूरा नहीं किया जा सकता था, मुझे जीवन के उल्लास के हर प्रदर्शन से दूर रहने पर मजबूर कर देती है कि मैं किसी तरह कहीं उनकी याद का अपमान न कर दूं। बल्कि इसके विपरीत नयी और नयनाभिराम जगहें और चीज़ें मेरा ध्यान आकर्षित करती हैं, और वसंती प्रकृति मेरे मन में वर्तमान के प्रति संतोष की हर्षप्रद भावना और भविष्य के प्रति आशा जागृत करती है।

सवेरे, बहुत तड़के, बेरहम वसीली, जो ज़रूरत से ज़्यादा जोश दिखाता है, जैसा कि लोग नयी स्थितियों में पड़कर अकसर करते हैं, कंबल खींचकर एलान करता है कि चल पड़ने का वक़्त हो गया है और हर चीज़ तैयार है। अपनी सवेरे की चैन की नींद को पंद्रह मिनट के लिए भी बढ़ाने को चाहे जितना कंबल लपेटकर लेटो, चाहे जितना गुस्सा करो, चाहे जितनी तरकीबें करो लेकिन वसीली की दृढ़ मुद्रा से साफ़ पता चलता है कि वह कोई रिआयत करनेवाला नहीं है और अगर ज़रूरी हुआ तो बीस बार कंबल खींचने को तैयार है ; इसलिए इसके अलावा कोई चारा ही नहीं रह जाता कि जल्दी से उछल खड़े हो और भागकर आंगन में जाओ और मुंह-हाथ धो डालो।

बाहरवाले कमरे में समोवार खौल रहा है, और कोचवान मितका उसे फूंक-फूंककर लाल अंगारे की तरह दहकाये दे रहा है। दरवाज़े के बाहर सीली नमी और कुहरा है, जैसे ताजे गोबर में से भाप निकल रही हो ; सुबह का सूरज पूर्वी आकाश पर और अहाते में चारों ओर

बने हुए बड़े-बड़े सायबानों की फूस की छतों पर अपनी चमकदार और खिली हुई रोशनी बिखेर रहा है जो ओस की वजह से चमक रही हैं। उन सायबानों में हम नांदों के सामने बंधे हुए अपने घोड़ों को देख सकते हैं, और उनकी चबाने की आवाज़ सुन सकते हैं। एक झबरा काला कुत्ता, जो भोर पहर से पहले तक खाद के ढेर पर सिकुड़ा हुआ लेटा था, अलसाये हुए ढंग से अंगड़ाई लेता है, फिर धीमी चाल से दौड़ता हुआ और सारी देर अपनी दुम को हिलाता हुआ अहाते को पार करता है। हड़बड़ायी हुई गृहिणी चूं-चूं करता हुआ फाटक खोलती है, किसी सोच में डूबी हुई गायों को सड़क पर हांक देती है, जहां से पशुओं के गल्लों के पैरों की चाप, गायों के रंभाने और भेड़ों के मिमियाने की आवाज़ें पहले से ही सुनायी दे रही हैं, और वह अपनी उनींदी पड़ोसिन से दो-चार बातें कर लेती है। फ़िलिप, जिसने अपनी आस्तीनें उलट रखी हैं, गहरे कुएं में से चमकदार छपछपाते हुए पानी की बाल्टियां निकालकर बलूत की लकड़ी की नांद में डाल रहा है जिसके आस-पास बत्तखों ने पानी से भरे हुए एक गड्ढे में सबेरे की अपनी पहली डुबकी लगाना शुरू भी कर दिया है; और मैं फ़िलिप के खूबसूरत चेहरे, उसकी घनी दाढ़ी, और कोई भी मेहनत का काम करते वक़्त उसकी नंगी मज़बूत बांहों पर उभर आनेवाली नसों और मांस-पेशियों को देखकर खुश हो रहा हूं।

बीच की दीवार के उस ओर से जहां मीमी और लड़कियां सोयी थीं, जिस दीवार के पार हम लोग रात को बातें कर रहे थे, चलने-फिरने की आवाज़ें सुनायी दे रही हैं। उनकी नौकरानी माशा न जाने क्या-क्या चीज़ें लेकर, जिन्हें वह अपनी पोशाक की आड़ में हमारी जिज्ञासा-भरी दृष्टि से छिपाने की कोशिश करती है, बार-बार अंदर-बाहर आ-जा रही है; आखिरकार वह दरवाज़ा खोलती है और हम लोगों से आकर चाय पी लेने को कहती है।

वसीली फ़ालतू जोश दिखाते हुए लगातार भागकर कमरे में जाता है और कभी कोई चीज़ बाहर निकाल लाता है और कभी कोई और चीज़, हम लोगों की तरफ़ देखकर आंख मारता है और मार्या इवानोव्ना को जल्दी से जल्दी चल पड़ने के लिए राज़ी करने की भरपूर कोशिश करता है। घोड़े गाड़ियों में जोत दिये गये हैं और वे थोड़ी-थोड़ी देर

वाद साज़ में लगी हुई घंटियां वजाकर अपनी अधीरता प्रकट करते हैं; वक्स, संदूक़, संदूक़चियां और सूटकेस सव एक वार फिर वंद करके रखे जा चुके हैं और हम लोग अपनी-अपनी जगहों पर जा बैठते हैं। लेकिन हर वार हम देखते हैं कि ब्रीच्का के अंदर बैठने की जगह कम है और सामान इतना भरा हुआ है कि न यह समझ में आता है कि आख़िर पिछले दिन वह सारा सामान कैसे रखा हुआ था और न यह कि हम लोग बैठें तो कैसे। ब्रीच्का में मेरी जगह के नीचे अख़रोट की लकड़ी का तिकोने ढक्कनवाला चाय का जो एक डिव्वा रखा है उस पर मुझे ख़ास तौर पर ताव आ रहा है। लेकिन वसीली का कहना है कि वह हिल-डुलकर ठीक हो जायेगा और मुझे मजवूर होकर उसकी वात मान लेनी पड़ती है।

पूरव में छाये हुए घने सफ़ेद वादलों के पीछे से सूरज अभी निकला है और चारों ओर का इलाक़ा सुखप्रद उल्लसित रोशनी से चमक उठा है। मेरे चारों ओर हर चीज़ वेहद ख़ूबसूरत है और मैं वेहद शांत हूं और मेरे मन पर कोई वोझ नहीं है। ... सामने सूखी खूंटियों से भरे हुए खेतों और ओस से चमकती हुई हरी-हरी घास के वीच से चौड़ी और वंधनमुक्त सड़क वल खाती चली जा रही है। जहां-तहां सड़क के किनारे वेद का कोई उदास पेड़, या छोटी-छोटी हरी-भरी पत्तियों-वाला अल्पवयस्क वर्च-वृक्ष वड़ी सड़क की धूल-भरी लीकों पर अपनी लंवी-लंवी निश्चल छायाएं डाल रहे हैं। पहियों और घोड़ों की घंटियों की एकरस आवाज़ सड़क के आस-पास मंडलाते हुए चंडूलों के गीत को दवा नहीं पा रही है। कीड़ों के खाये हुए कपड़े और धूल की गंध और हमारी घोड़ागाड़ी से चिपकी हुई एक तरह की खट्टी-खट्टी गंध प्रभात की सुगंध में खो गयी है; और मैं अपने मन में एक हर्षमय वेचैनी, कुछ करने की इच्छा महसूस करता हूं, जो सच्चे आनंद का संकेत है।

रात को जहां हम लोग ठहरे थे वहां मैं प्रार्थना नहीं कर पाया था; लेकिन चूंकि मैंने कई वार देखा है कि जिस दिन किसी वजह से मैं इस चर्या का पालन करना भूल जाता हूं उस दिन मेरा कोई न कोई अनिष्ट हो जाता है, इसलिए मैं अपनी इस चूक को ठीक करने की कोशिश करता हूं। मैं अपनी टोपी उतार लेता हूं और ब्रीच्का के कोने की तरफ़ मुंह करके प्रार्थना के शव्द दोहराता हूं और कोट के

अंदर हाथ डालकर सीने पर सलीव का निशान बनाता हूं ताकि कोई देखने न पाये, फिर भी हज़ारों चीज़ें मेरा ध्यान भटकाती हैं, और अपनी बदहवासी में मैं प्रार्थना के वही शब्द कई बार दोहरा डालता हूं।

सड़क के किनारे-किनारे बल खाकर जाती हुई पटरी पर धीरे-धीरे चलती हुई कुछ आकृतियां दिखायी देती हैं: ये तीर्थयात्री हैं। उनके सिर पर मैले रूमाल बंधे हुए हैं; उनकी पीठ पर बर्च की छाल की धज्जियों के बंडल हैं; उनके पांवों पर गंदी, फटी-पुरानी पट्टियां लिपटी हुई हैं और उन्होंने छाल के जूते पहन रखे हैं। अपनी लाठियां एक साथ झुलाते हुए और हम लोगों की ओर प्रायः बिल्कुल ही न देखते हुए वे धीरे-धीरे एक क़तार में आगे बढ़ रही हैं। मैं सोचने लगता हूं: वे कहां जा रही हैं और क्यों? क्या उनका सफ़र बहुत लंबा है? और सड़क पर उनकी जो दुबली-पतली परछाइयां पड़ रही हैं क्या वे शीघ्र ही उनके रास्ते पर पड़नेवाली बेद वृक्ष की छाया के साथ मिलकर एक हो जायेंगी? इतने में चार बदली के घोड़ों के साथ एक गाड़ी तेज़ी से हमारी ओर आती हुई दिखायी देती है। दो ही सेकंड बाद वे चेहरे जो दो अर्शीन * की दूरी पर बड़ी जिज्ञासा से मुस्कराते हुए हमें देख रहे थे, हमारे पास से होकर आगे निकल गये हैं; विश्वास नहीं होता कि ये चेहरे बिल्कुल अजनबी लोगों के थे और यह कि शायद मैं अब उन्हें कभी नहीं देख पाऊंगा।

इसके बाद पसीने से तर झबरे घोड़ों की एक जोड़ी, जिनके लगाम लगी हुई है, सरपट भागती हुई सड़क के किनारे से निकल जाती है; उनकी जोतों को बम के पट्टों के साथ गांठ बांधकर जोड़ दिया गया है; उनके पीछे बदली के घोड़ों की निगरानी करनेवाला लड़का उदास धुन का गाना गाता हुआ घोड़े पर सवार चला जा रहा है; उसकी मेमने के ऊन की टोपी एक ओर को झुकी हुई है, बड़े-बड़े बूटों में उसकी लंबी-लंबी टांगें घोड़े के दोनों तरफ़ झूल रही हैं; घोड़े पर दूगा ** कसा हुआ है। उसके चेहरे और उसके रवैये से ऐसी काहिली और लापरवाही टपक रही है कि मुझे ऐसा लगता है कि बदली के

---

* अर्शीन – पुरानी रूसी माप, जो ०,७ मीटर के बराबर है। – अनु०

** दूगा – घोड़े के साज़ का एक हिस्सा। – अनु०

घोड़ों का साईस होने, घोड़ो को उनके थान पर पहुंचा देने और उदास गाने गाते रहने से वढ़कर कोई सुख नहीं है। उधर, खड्ड के पार, वहुत दूर पर हरी छतवाला गांव का गिरजाघर चमकीले नीले आसमान की पृष्ठभूमि पर सवसे अलग-थलग दिखायी पड़ रहा है; और वह रहा एक छोटा-सा गांव, किसी भद्रजन के घर की लाल छत और हरा-भरा वाग़। उस घर में कौन रहता है? क्या उस घर में वच्चे होंगे, मां-वाप और मास्टर साहव? क्यों न हम लोग अपनी गाड़ियां लेकर वहां तक जायें और उसके मालिक से जान-पहचान पैदा करें? और यह आ रहा है मोटी-मोटी टांगोंवाले तीन-तीन तगड़े घोड़ों से खींची जानेवाली भारी-भरकम गाड़ियों का क़ाफ़िला, जिसे निकल जाने की जगह देने के लिए हमें मजबूर होकर सड़क पर से नीचे उतर जाना पड़ता है। "क्या ले जा रहे हो?" वसीली पहले गाड़ीवान से पूछता है, जो उस पटरे पर से, जिस पर वह बैठा हुआ है, अपने वड़े-वड़े पांव नीचे लटकाये शून्य दृष्टि से हमें घूरता रहता है, अपनी चावुक फटकारता है और हम लोगों से इतनी दूर जाकर ही जवाव में कुछ कहता है कि हमें कुछ सुनायी न दे। "क्या माल है तुम्हारे पास?" वसीली दूसरी गाड़ी की ओर मुड़कर पूछता है, जिसके घिरे हुए सामनेवाले हिस्से में एक और गाड़ीवाला मूंज की नयी चटाई ओढ़े लेटा है। सुनहरे वालों और लाल चेहरेवाला एक सिर क्षण-भर के लिए मूंज की चटाई के नीचे से निकलता है; वह हम लोगों पर तिरस्कार-भरी उदासीनता की एक दृष्टि डालता है और फिर चटाई के नीचे ग़ायव हो जाता है; और मेरे मन में यह विचार आता है कि इन गाड़ीवानों को यह तो क़तई नहीं मालूम होगा कि हम लोग कौन हैं और हम कहां जा रहे हैं।...

मैं अपने विभिन्न अवलोकनों में इतना खोया हुआ हूं कि डेढ़ घंटे तक वेर्स्ता के पत्थरों पर खुदे हुए टेढ़े-मेढ़े अंकों की ओर मेरा ध्यान ही नहीं जाता। लेकिन अव सूरज की तेज़ धूप से मेरी खोपड़ी और पीठ जलने लगी हैं सड़क ज़्यादा धूल-भरी हो गयी है, चाय का डिव्वा मुझे वहुत तकलीफ़ दे रहा है और मैं कई वार पहलू वदल-वदलकर वैठ चुका हूं। मुझे गर्मी लगने लगी है और उलझन हो रही है, और मैं ऊवने लगा हूं। मेरा सारा ध्यान वेर्स्ता के पत्थरों और उन पर अंकित

अक्षरों की ओर खिंच जाता है। मैं अपने मन में तरह-तरह से हिसाब लगाता हूं कि अगली मंज़िल तक पहुंचने में हमें कितना वक़्त लगेगा। "बारह वेर्स्ता छत्तीस की तिहाई होते हैं और लिपेत्स तक की दूरी इकतालीस है; इसलिए क्या हम लोगों ने तिहाई से थोड़ा-सा कम सफ़र पूरा कर लिया है?" वग़ैरह-वग़ैरह।

"वसीली," उसे कोचवान के पास की सीट पर ऊंघते देखकर मैं पुकारकर कहता हूं, "मुझे अपनी जगह बैठ जाने दे, बड़ा अच्छा है तू।"

वसीली राज़ी हो जाता है; हम अपनी जगहें बदल लेते हैं। वह फ़ौरन ख़र्राटे लेने लगता है और इस तरह हाथ-पांव फैला लेता है कि ब्रीच्का में किसी और के लिए कोई जगह ही नहीं रह जाती है। अपनी नयी जगह से मेरी आंखों के सामने अत्यंत रोचक दृश्य आता है—हमारे चारों घोड़े, नेरूचिंस्काया, डीकन, बायीं ओरवाली घोड़ी और अत्तार, जिनमें से सभी की सारी ख़ूबियां और ख़राबियां मैं अच्छी तरह जानता हूं।

"आज डीकन को बायीं तरफ़ जोतने के बजाय दायीं तरफ़ क्यों जोता है, फ़िलिप?" मैं कुछ झिझकते हुए पूछता हूं।

"डीकन?"

"और नेरूचिंस्काया बिल्कुल ज़ोर नहीं लगा रही है," मैं कहता हूं।

"डीकन को बायीं तरफ़ नहीं जोता जा सकता," फ़िलिप मेरी आख़िरी बात की ओर कोई ध्यान न देते हुए कहता है। "वह उस काम के लायक़ घोड़ा नहीं है; वहां तो किसी ऐसे घोड़े की ज़रूरत होती है जो—मेरा मतलब है, असली घोड़े की, और डीकन वैसा नहीं है।"

और यह कहकर फ़िलिप दाहिनी ओर आगे झुकता है और अपनी पूरी ताक़त से रास खींचकर वह अजीब ढंग से नीचे की तरफ़ से बेचारे डीकन की दुम और टांगों पर चाबुक मारने लगता है; और इस बात के बावजूद कि डीकन एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रहा है, यहां तक कि ब्रीच्का झोंका खाने लगती है, फ़िलिप अपनी तरकीब पर अमल करना उस वक़्त तक बंद नहीं करता जब तक कि वह ख़ुद सुस्ताने की और अपनी हैट एक तरफ़ झुका लेने की ज़रूरत नहीं महसूस करने लगता, हालांकि पहले वह उसके सिर पर बिल्कुल ठीक से जमी हुई थी। इस

अनुकूल अवसर का लाभ उठाकर मैं फ़िलिप की खुशामद करता हूं कि वह मुझे गाड़ी हांकने दे। फ़िलिप पहले मुझे एक रास देता है फिर दूसरी ; और आखिरकार चाबुक और छ: की छ: रासें मेरे हाथ में दे दी जाती हैं और मैं बेहद खुश हो जाता हूं। मैं छोटी-से-छोटी हर बात में फ़िलिप की नक़ल करने की कोशिश करता हूं और उससे पूछता हूं कि मैं ठीक तो चला रहा हूं न, लेकिन वह आम तौर पर असंतुष्ट है: वह कहता है कि एक घोड़ा बहुत ज़्यादा खींच रहा है और दूसरा बिल्कुल नहीं खींच रहा है, और वह झुककर सारी रासें मेरे हाथ से ले लेता है। गर्मी बढ़ती जा रही है। छोटे-छोटे बादलों के गाले साबुन के बुलबुलों की तरह फूलकर बड़े होते जा रहे हैं, एक-दूसरे में मिलते जा रहे हैं और उनमें कुछ-कुछ सुरमई रंग आता जा रहा है। बग्घी की खिड़की में से एक बोतल और पैकेट लिये हुए एक हाथ बाहर निकलता है। वसीली कमाल की चुस्ती से अपनी जगह से नीचे कूद पड़ता है, और हम लोगों को पनीर के केक और क्वास* लाकर देता है।

एक खड़ी ढलान पर पहुंचकर हम सब लोग गाड़ियों पर से उतर जाते हैं और दौड़ लगाते हैं, जबकि वसीली और याकोव पहियों को रोक लगाते हैं और बग्घी को दोनों तरफ़ से इस तरह अपने हाथों से सहारा देते हैं मानो अगर वह उलटने लगे तो वे उसे रोक ही तो लेंगे। फिर मीमी की इजाज़त से वोलोद्या या मैं बारी-बारी से जाकर बग्घी में बैठते हैं और ल्यूबा या कात्या जाकर ब्रीच्का में बैठती हैं। इन परिवर्तनों से लड़कियां बहुत खुश होती हैं क्योंकि वे समझती हैं, और ठीक ही समझती हैं कि ब्रीच्का में ज़्यादा मज़ा आता है। कभी-कभी जब गर्मी बहुत बढ़ जाती है और हम लोग किसी जंगल से गुज़र रहे होते हैं, तो हम बग्घी के पीछे रह जाते हैं, हरी-हरी टहनियां तोड़ लेते हैं, और ब्रीच्का में कुंज-सा बना लेते हैं। यह चलता-फिरता कुंज बग्घी से आगे निकल जाता है और ल्यूबा अत्यंत कर्णभेदी स्वर में चीख़ पड़ती है ; जब भी किसी मौक़े पर वह बहुत खुश होती है तो वह इस तरह चीख़ने से कभी नहीं चूकती।

लेकिन यह तो वह गांव आ गया जहां हमें खाना खाकर आराम

---

* रोटी को खट्टा करके बनाया जानेवाला स्फूर्तिदायक रूसी पेय। – अनु०

करना है। हमें गांव की, धुएं की, तारकोल की और सिंकती हुई रोटियों की महक मिलने लगी है। हमें लोगों के बोलने की, क़दमों की और पहियों की आवाज़ें सुनायी देने लगी हैं, घोड़ों की घंटियां अब उस तरह नहीं बज रही हैं जैसे वे खुले खेतों में बजती थीं; हम दोनों ओर छोटे-छोटे बंगलों के बीच से गुज़र रहे हैं, जिन पर फूस के छप्पर पड़े हुए हैं, जिनकी बरसातियों के लकड़ी के खंभों पर नक़्क़ाशी है, और जिनकी छोटी-छोटी खिड़कियों पर लाल और हरी झिलमिलियां पड़ी हुई हैं, जिनके बीच से जिज्ञासावश किसी औरत का चेहरा बाहर झांक लेता है। सिर्फ़ ढीले-ढाले झवले पहने छोटे-छोटे किसान लड़के और लड़कियां आंखें फाड़े और आश्चर्य से अपने हाथ फैलाये जहां के तहां गड़े खड़े हैं, या अपने छोटे-छोटे नंगे पांवों से धूल में रास्ता बनाते हुए चुपके-चुपके आगे बढ़ते हैं और फ़िलिप की धमकियों के बावजूद गाड़ियों के पीछे रखे हुए संदूक़ों पर चढ़ने की कोशिश करते हैं। हर तरफ़ से सरायों के अधपके बालोंवाले मालिक भागकर गाड़ियों की तरफ़ आते हैं और लुभानेवाले शब्दों और मुद्राओं का सहारा लेकर मुसाफ़िरों को एक-दूसरे से छीनने की कोशिश करते हैं। यह लो! फाटक चूं-चूं की आवाज़ करता हुआ खुलता है, कमानी जाकर फाटक के खंभों में अटक जाती हैं और हम अहाते में प्रवेश करते हैं। चार घंटे का आराम और आज़ादी!

अध्याय २

तूफ़ान

सूरज पश्चिम की ओर ढल रहा था और उसकी तपती हुई तिरछी किरनों से मेरी गर्दन पर और गालों पर असह्य जलन हो रही थी। ब्रीच्का के तचते हुए पार्श्वों को छूना असंभव था। धूल का घना गुबार सड़क पर से उठकर हवा में छा गया था। उसे वहां से उड़ा ले जाने के लिए तनिक-सी भी हवा नहीं चल रही थी। बग्घी का ऊंचा धूल से अटा ढांचा हमारे सामने हमेशा एक ही दूरी पर झूमता हुआ चल

रहा था, और जब कोचवान चाबुक फटकारता था तो अकसर हमें बग्घी के ऊपर से वह चाबुक, कोचवान की हैट और याकोव की टोपी दिखायी दे जाती थी। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था कि आख़िर मैं करूं क्या: किसी भी चीज़ से मेरा मन नहीं बहल रहा था—न मेरे बग़ल में ऊंघते हुए वोलोद्या के धूल से मैले चेहरे से, न फ़िलिप की पीठ की हरकतों से, न अपनी गाड़ी की लंबी तिरछी परछाईं से जो ठीक हमारे पीछे-पीछे चली आ रही थी। मेरा सारा ध्यान दूर दिखायी पड़ रहे वेर्स्ता के पत्थरों पर और उन बादलों पर केंद्रित था, जो पहले तो सारे आसमान पर बिखरे हुए थे, लेकिन अब एक जगह सिमटकर उन्होंने ख़तरनाक रूप धारण कर लिया था। बीच-बीच में कहीं दूर बादल गरज भी रहे थे। बाक़ी सब बातों से बढ़कर इस अंतिम परिस्थिति ने जल्दी पड़ाव डालने की जगह पहुंच जाने की मेरी अधीरता बढ़ा दी। बिजली की कड़क के साथ आंधीपानी का तूफ़ान मेरे मन में भय और उदासी की एक अकथनीय उत्पीड़क संवेदना पैदा कर रहा था।

सबसे क़रीब का गांव अभी दस वेर्स्ता दूर था, लेकिन वह गहरी ऊदी घटा, जो न जाने कहां से उठी थी क्योंकि कहीं हवा का नाम भी नहीं था, बड़ी तेज़ी से हमारी ओर बढ़ती आ रही थी। सूरज ने, जो अभी तक बादलों में छिपा नहीं था, उन बादलों के भयावह पिंड को और वहां से क्षितिज तक फैली हुई स्लेटी लकीरों को आलोकित कर दिया था। बीच-बीच में कहीं दूर बिजली चमक उठती थी और घुटी-घुटी-सी गरज सुनायी देती थी, जो सारे आकाश में बिखरे हुए खंडित गर्जनों में मिलकर धीरे-धीरे तेज़ होती जा रही थी। वसीली ने कोचवान की सीट पर खड़े होकर ब्रीच्का का हुड चढ़ा दिया। कोचवानों ने अपने कोट पहन लिये; हर बार जब बिजली कड़कती थी तो वे हैट उतारकर अपने सीनों पर सलीब का निशान बनाते थे। घोड़े अपने कान खड़े कर रहे थे, और अपने नथुने इस तरह फुला रहे थे मानो उस ताज़ा हवा को सूंघ रहे हों जो पास आते हुए तूफ़ान के बादल से आ रही थी, और ब्रीच्का धूल-भरी सड़क पर पहले से ज़्यादा तेज़ी से भागी चली जा रही थी। मेरे मन में एक विचित्र भावना छा गयी। मुझे अपनी नसों में धमकते हुए ख़ून का आभास हो रहा था। थोड़ी ही देर में सूरज पर बादलों का पतला परदा पड़ गया; उसने अंतिम बार झांककर

देखा, दहकते हुए क्षितिज पर रोशनी की आखिरी चमक डाली और ग़ायब हो गया। सारी दृश्यावली सहसा बदल गयी और उस पर उदासी छा गयी। ऐस्पेन के वृक्षों का झुरमुट कांप उठा; पत्तियों में सफ़ेद-सुरमई रंग का पुट पैदा हो गया और ऊदे बादलों की पृष्ठभूमि पर वे और उजागर हो उठीं – और सरसराने और फड़फड़ाने लगीं, लंबे-लंबे बर्च-वृक्षों की फुनगियां झूमने लगीं और सूखी घास के गुच्छे चक्कर काटते हुए सड़क पर इधर-उधर उड़ने लगे। सफ़ेद पोटेवाली अबाबीलें तेज़ी से ब्रीच्का के चारों ओर मंडलाती हुई और घोड़ों के सीनों के ठीक नीचे से इस तरह झपटकर उड़ने लगीं मानो वे हमें रोकना चाहती हों; हवा के थपेड़ों से उलझे हुए परोंवाले कौए हवा में बग़ल की तरफ़ उड़ रहे थे; चमड़े के उस एप्रन के सिरे, जो हमने अपने ऊपर बांध लिया था, फड़फड़ाकर ऊपर उड़े जा रहे थे, तेज़ हवा के भीगे-भीगे झोंकों को अंदर आने दे रहे थे, और गाड़ी से फट-फट करते हुए टकरा रहे थे। ऐसा लग रहा था कि बिजली ब्रीच्का के अंदर ही चमक रही है; जब बिजली चमकती तो हमारी आंखें चकाचौंध हो जातीं और एक क्षण को चोटियों की तरह गुंधी हुई किनारीवाला सुरमई रंग का कपड़ा और कोने में दुबकी हुई वोलोद्या की आकृति आलोकित हो उठती। उसी क्षण हमारे सिर के ठीक ऊपर घनगरज की आवाज़ सुनायी देती और ऐसा लगता कि वह निरंतर तेज़ होती जा रही है और एक विशाल सर्पिल चक्कर की तरह निरंतर अधिकाधिक विस्तृत होती जा रही है और धीरे-धीरे फूलती जा रही है, यहां तक कि वह कान के परदे फाड़ देनेवाले धमाके के साथ फट जाती, जिसे सुनकर हम सिहर उठते और विवश होकर दम साध लेते। दैवी कोप! इस प्रचलित धारणा में कितनी काव्यमयता है!

पहिये और तेज़ी से घूमने लगते हैं। वसीली की और फ़िलिप की पीठों को देखकर, जो बार-बार रासों को झटका देता रहता है, मुझे साफ़ लग रहा था कि वे भी डर रहे हैं। ब्रीच्का पहाड़ी की ढलान पर तेज़ी से लुढ़कती हुई नीचे की ओर जाती है और लकड़ी के पुल पर से घड़घड़ाती हुई गुज़रती है। मैं डर के मारे हिलता-डुलता तक नहीं और मुझे हर क्षण गाड़ी के गिरने से चूर-चूर हो जाने का खटका लगा रह-ता है।

अरे! जोत टूट जाती है, और, निरंतर कर्णभेदी बिजली की कड़क के बावजूद, हम पुल पर रुकने पर मजबूर हो जाते हैं।

मैं ब्रीच्का के पहलू से सिर टिकाकर दम साध लेता हूं, फ़िलिप की मोटी-मोटी काली उंगलियों को चलता देखकर मेरे दिल में निराशा घर करती जाती है। वह धीरे-धीरे गांठ बांधता है, जोतों को सीधा करता है और बग़लवाले घोड़े को थपकता है और चाबुक के डंडे से मारता है।

जैसे-जैसे तूफ़ान ज़ोर पकड़ता जाता वैसे-वैसे मेरे अंदर उदासी और भय की विषादयुक्त भावना भी बढ़ती जाती; लेकिन जब वह भव्य निस्तब्धता छा जाती, जैसा बिजली कड़कने से पहले आम तौर पर होता है, तो वे भावनाएं इतनी उग्र हो उठतीं कि अगर यह हालत पंद्रह मिनट तक और रहती तो मुझे यक़ीन है कि मैं घबराहट के मारे मर जाता। उसी वक़्त पुल के नीचे से मैली फटी हुई क़मीज़ पहने एक इंसानी शक्ल निकली, ज़िसका चेहरा सूजा हुआ और भावशून्य था, जिसका घुटा हुआ नंगा सिर हिल रहा था, जिसकी टांगें टेढ़ी और बेजान थीं, और उसके हाथ की जगह एक चमकीला लाल ठुंठ था, जिसे उसने ब्रीच्का के अंदर घुसेड़ दिया।

"भगवान के नाम पर, अपाहिज आदमी को कुछ मिल जाये!" भिखारी ने हर शब्द के बाद अपने सामने सलीब का निशान बनाते हुए बहुत झुककर कांपती हुई आवाज़ में कहा।

मैं बयान नहीं कर सकता कि उस वक़्त मेरे मन में कैसा डर समा गया। मेरे बालों तक में सिहरन की लहर दौड़ गयी, और मेरी आंखें डर के मारे उस भिखारी पर जमी की जमी रह गयीं।...

वसीली, जिसके ज़िम्मे यात्रा के दौरान भीख बांटने का काम था, फ़िलिप को जोत को मज़बूत करने के बारे में हिदायतें दे रहा था; और जब सब कुछ तैयार हो गया, और फ़िलिप रासें समेटकर ऊपर कोचवान की जगह पर जाकर बैठ गया, तब जाकर वसीली ने अपनी बग़लवाली जेब को टटोलना शुरू किया। लेकिन हम दुबारा रवाना ही हुए थे कि एक क्षण के लिए पूरे खड्ड में बिजली के चकाचौंध कर देनेवाले लपके की आग्नेय ज्योति भर गयी और घोड़े चमककर खड़े हो गये; इस चमक के साथ ही, बीच में थोड़े-से भी समय के अंतर

के बिना, इतने ज़ोर से बिजली के कड़कने की कर्णभेदी आवाज हुई कि ऐसा लगा मानो हमारे ऊपर सारा आसमान ही फटा पड़ रहा है। हवा और भी तेज़ हो गयी; घोड़ों के अयाल और उनकी दुमें, वसीली का लबादा, और एप्रन के छोर सभी गरजते हुए तूफ़ान के थपेड़ों के आगे एक ही दिशा में फड़फड़ाकर उड़ रहे थे। वर्षा की एक बड़ी-सी बूंद ब्रीच्का के चमड़े के हुड पर गिरी, फिर दूसरी, तीसरी, चौथी; और अचानक बारिश हम लोगों पर ढोल पर पड़ती हुई थापों की तरह गिरने लगी और पूरा प्राकृतिक परिवेश वर्षा की बूंदों की नियमित टप-टप से गूंज उठा। वसीली की कुहनी के हिलने-डुलने के ढंग से मैंने अंदाज़ा लगाया कि वह अपना बटुआ खोल रहा था; भिखारी अब तक अपने सामने सलीब का निशान बनाता हुआ और बार-बार झुकता हुआ पहिये के इतने पास दौड़ रहा था कि लगता था कि वह कुचल जायेगा। "भगवान के नाम पर!" आखिरकार तांबे का एक सिक्का हमारे पास से तेज़ी से होकर गुज़रा; वह अभागा जीव झिझकता हुआ, तेज़ हवा में झोंके खाता हुआ सड़क के बीच में रुक गया; बारिश से भीगा हुआ उसका लबादा उसके कृषकाय शरीर पर चिपक गया था; और फिर वह हमारी आंखों से ओझल हो गया।

मूसलाधार बारिश हो रही थी; तेज़ हवा के भयानक थपेड़ों से बूंदें तिरछी गिर रही थीं; वसीली के मोटे ऊनी कोट की पीठ पर से होकर बहती हुई पानी की धार एप्रन के झोले में जमा हो जानेवाले गंदे पानी में गिर रही थी। धूल, जिसकी पहले छोटी-छोटी चपटी टिकियां बन गयी थीं, अब बहती हुई कीचड़ का रूप धारण कर चुकी थी, जिसमें से होकर पहिये छप-छप करते हुए आगे बढ़ रहे थे; अब झटके कम लग रहे थे और गहरी लीकों में गंदले पानी के नाले बह रहे थे। बिजली के कौंधे ज़्यादा चौड़े होते जा रहे थे और फीके पड़ते जा रहे थे, बारिश की टप-टप की आवाज़ के ऊपर अब बिजली की कड़क हमें उतना नहीं चौंकाती थी।

बारिश भी अब उतनी तेज़ नहीं हो रही थी; तूफ़ान के बादल छंटने लगे; जहां सूरज होना चाहिये था वहां रोशनी झलकने लगी और बादल के सुरमई रंग का पुट लिये सफ़ेद छोरों को भेदकर साफ़ नीले रंग की एक दरार-सी लगभग बिल्कुल साफ़ दिखायी देने

लगी थी। एक ही क्षण बाद धूप की एक क्षीण-सी किरण सड़क पर पानी के गड्ढों में और बारिश की उन महीन सीधी धारियों में, जो इस तरह गिर रही थीं मानो छलनी में से निकल रही हों, और सड़क के किनारे की घास की चमकती हुई, अभी-अभी नहायी हुई हरियाली पर दमक रही थी।

आसमान के दूसरे छोर पर काले-काले तूफ़ान का जो बादल फैला हुआ था वह कुछ कम ख़तरनाक नहीं था, लेकिन उसे देखकर अब मुझे कोई डर नहीं लग रहा था। जीवन के प्रति आशा की एक अकथनीय सुखद भावना मुझ पर छा गयी थी और उसने भय की उत्पीड़क संवेदना को दूर कर दिया था। प्रकृति की तरह ही मेरी आत्मा भी मुस्करा रही थी; उसमें ताज़गी आ गयी थी और नयी जान पड़ गयी थी। वसीली ने अपने कोट का कॉलर गिरा लिया और अपनी टोपी उतारकर उसे झिटका। वोलोद्या ने झटके के साथ एप्रन दूर हटा दिया। मैं ब्रीच्का के बाहर झुककर बड़ी उत्सुकता से ताज़ा महकती हुई हवा में सांस लेने लगा। बारिश में अच्छी तरह धुलकर चमचमाती हुई संदूक़ों से लदी बग्घी हमारे आगे-आगे चली जा रही थी; घोड़ों की पीठें, उनके कूल्हों पर का साज़ और रासें, पहियों के टायर – हर चीज़ भीगी हुई थी और धूप में ऐसे चमक रही थी जैसे उस पर वार्निश की गयी हो। सड़क के एक तरफ़ जाड़े की फ़सल के गेहूं का अनंत विस्तारवाला खेत, जिसके बीच-बीच में छिछली नालियां चली गयी हैं, गीली मिट्टी और हरियाली से दमक रहा है और परछाईं के क़ालीन की तरह दूर क्षितिज तक फैला हुआ है; दूसरी तरफ़ ऐस्पेन का एक कुंज, जिसमें हेज़ेल-नट और जंगली चेरी की नीची-नीची झाड़ियां हैं, आनंद-विभोर होकर शांत खड़ा पिछले साल की सूखी पत्तियों पर अपनी तूफ़ान की धोयी हुई टहनियों से बारिश की चमकदार बूंदें धीरे-धीरे गिरा रहा है। ख़ुशी के गीत गाते हुए चंडूल चारों ओर ऊपर उठते हैं और जल्दी ही नीचे उतर आते हैं, और गीली झाड़ियों में से छोटी-छोटी चिड़ियों के इधर-उधर फुदकने की आवाज़ सुनायी दे रही है और जंगल के बीचोंबीच से कोयल की कूक साफ़ सुनायी दे रही है। वसंत के इस तूफ़ान के बाद जंगल की महक – बर्च-वृक्षों, वायलेट के फूलों, सड़ी हुई पत्तियों, कुकुरमुत्तों और जंगली चेरी की सुगंध – इतनी मोहक थी कि मैं ब्रीच्का

में शांत नहीं बैठा रह सका बल्कि पांवदान पर से कूदकर झाड़ियों की ओर भागा, और वर्षा की बूंदों की बौछार के बावजूद मैंने जंगली चेरी की कुछ टहनियां तोड़ लीं, और उनसे मुंह को हौले-हौले थपथपाने लगा और उनकी मादक सुगंध का रस लेने लगा। कीचड़ में सने अपने जूतों और अपने मोज़ों की ओर कोई ध्यान न देकर, जो न जाने कब के भीगकर बिल्कुल तर हो चुके थे, मैं क़ीचड़ में से छप-छप करके भागता हुआ बग्घी की खिड़की के पास जा पहुंचा।

"ल्यूबा! कात्या!" मैंने चेरी के फूलों की कुछ टहनियां ऊपर उठाकर ज़ोर से आवाज़ दी, "देखो तो यह कितनी सुंदर हैं!"

लड़कियां आह-आह करती हुई चिल्लायीं। मीमी ने मुझे डांटकर कहा कि मैं वहां से दूर हट जाऊं, नहीं तो कुचल जाऊंगा।

"लेकिन सूंघकर तो देखो कितनी अच्छी ख़ुशबू है!" मैंने चिल्लाकर कहा।

अध्याय ३

नये विचार

कात्या ब्रीच्का में मेरे बग़ल में बैठी थी, और वह अपना सुंदर-सा सिर झुकाये पहिये के नीचे से तेज़ी से भागती हुई सड़क को विचार-मग्न होकर देख रही थी। मैं चुपचाप उसे एकटक देखता रहा और उसकी उदास मुद्रा पर आश्चर्य करता रहा, जो बिल्कुल बच्चों जैसी नहीं थी और जिसे मैंने उसके गुलाबी चेहरे पर पहली बार देखा था।

"हम लोग थोड़ी ही देर में मास्को पहुंच जायेंगे," मैंने कहा। "तुम्हारा क्या ख़्याल है कि वह कैसी जगह होगी?"

"मालूम नहीं," उसने अनमनेपन से जवाब दिया।

"लेकिन तुम्हारा क्या अंदाज़ा है? वह सेर्पूख़ोव से बड़ा होगा या नहीं? ..."

"क्या?"

"नहीं, कुछ नहीं।"

लेकिन उस सहजबुद्धि के सहारे, जिसकी मदद से एक आदमी दूसरे के विचारों को भांप लेता है, और जो बातचीत में मार्गदर्शक डोर का काम देती है, कात्या समझ गयी कि उसकी उदासीनता से मुझे पीड़ा हुई थी ; सिर उठाकर उसने मेरी ओर मुड़कर देखा।

"तुम्हारे पापा ने तुमसे कहा है कि हम लोगों को नानी के यहां रहना है?"

"हां ; नानी की ज़िद है कि हम लोग उन्हीं के यहां रहें।"

"और हम सब लोग वहीं रहेंगे?"

"ज़ाहिर है : ऊपर आधे घर में हम लोग रहेंगे, और बाक़ी आधे घर में तुम लोग, और पापा बग़लवाले हिस्से में रहेंगे ; लेकिन खाना हम सब लोग नीचे नानी के साथ ही खाया करेंगे।"

"मां कहती हैं कि तुम्हारी नानी बेहद शान से रहती हैं—और बदमिज़ाज भी हैं।"

"अरे नहीं, वह ऐसी नहीं हैं! बस, शुरू में ही ऐसी लगती हैं। शान उनमें ज़रूर है, लेकिन बदमिज़ाज बिल्कुल नहीं हैं ; बल्कि बात इसकी उल्टी ही है, वह बहुत नेक और हंसमुख हैं। काश तुमने देखा होता कि उनके नामदिवस पर कैसा नाच हुआ था!"

"फिर भी, मुझे उनसे डर लगता है ; और फिर भगवान ही जानता है कि हम लोग ..."

कात्या अचानक बात कहते-कहते रुक गयी, और फिर विचारमग्न हो गयी।

"क्या बात है?" मैंने परेशान होकर पूछा।

"कुछ नहीं।"

"कुछ है तो, तुमने कहा, 'भगवान ही जानता है ...'"

"तो तुम कह रहे थे कि नानी के यहां कैसा नाच हुआ था।"

"हां, बड़े अफ़सोस की बात है कि तुम वहां नहीं थीं : वहां बहुत-से मेहमान थे—सैकड़ों मेहमान, और गाना, और फ़ौजी जनरल—और मैं नाचा था।" अचानक मैं अपने वृत्तांत के बीच में रुक गया : "कात्या, तुम सुन नहीं रही हो?"

"मैं बिल्कुल सुन रही हूं ; तुम कह रहे थे कि तुम नाचे थे।"

"तुम इतनी बुझी-बुझी क्यों हो?"

"आदमी हर वक़्त तो मस्त नहीं रह सकता।"

"लेकिन हम लोगों के मास्को से वापस आने के वाद से तुम वहुत वदल गयी हो। मुझे सच-सच वताओ," मैंने दृढ़ संकल्प से देखते हुए उसकी ओर मुड़कर कहा, "तुम इतनी अजीव क्यों हो गयी हो?"

"क्या मैं अजीव लगती हूं?" कात्या ने इस तरह चहककर जवाव दिया जिससे पता चलता था कि मेरी वात में उसे दिलचस्पी थी। "मैं अजीव तो नहीं हूं। बिल्कुल नहीं हूं।"

"तुम वैसी नहीं हो जैसी पहले हुआ करती थीं," मैं कहता रहा। "पहले यह वात विल्कुल साफ़ हुआ करती थी कि तुम भी हर चीज़ के वारे में वैसा ही महसूस करती थीं जैसा कि हम लोग महसूस करते थे, कि तुम हम लोगों को अपना सगा समझती थीं, और तुम भी हमें उसी तरह प्यार करती थीं जैसे हम तुम्हें करते थे; लेकिन अब तुम इतनी गंभीर हो गयी हो, तुम इतनी कटी-कटी रहती हो।..."

"नहीं तो, ऐसी वात तो नहीं है।..."

"मुझे अपनी वात पूरी करने दो," मैंने उसकी वात वीच में काटते हुए कहा; मुझे अपनी नाक में हल्की-सी गुदगुदी का आभास होने लगा था, जो आंसू निकलने का पूर्व-संकेत था; जव भी मैं किसी ऐसे विचार को व्यक्त करता था जिसे मैं पूरे दिल से महसूस करता रहा हूं और वहुत दिन से अपने दिल में दवाये रहा हूं तव हमेशा मेरे आंसू निकल आते थे। "तुम हम लोगों से दूर रहती हो; तुम मीमी के अलावा और किसी से वात नहीं करती हो, मानो तुम हम लोगों की ओर कोई ध्यान ही न देना चाहती हो।"

"ठीक है, कोई आदमी हमेशा वैसे का वैसा ही तो नहीं वना रह सकता; उसे कभी न कभी तो वदलना ही पड़ता है," कात्या ने जवाव दिया; उसकी आदत थी कि जव भी उसकी समझ में नहीं आता था कि क्या कहे तव वह हर चीज़ को यह कहकर समझा देती थी कि नियति का नियम ही ऐसा है।

मुझे याद है कि एक वार ल्यूवा के साथ इस बात पर झगड़ा होने के वाद कि उसने कात्या को बेवक़ूफ़ कह दिया था, उसने जवाव दिया था, "हर आदमी तो अक़्लमंद नहीं हो सकता: कुछ लोगों को वेवक़ूफ़ होना ही पड़ता है।" लेकिन उसके इस जवाव से मुझे संतोष

नहीं हुआ कि हर आदमी को कभी न कभी तो बदलना पड़ता ही है। इसलिए मैं अपने सवाल पूछता रहा।

"तुम्हें क्यों पड़े?"

"क्यों, आखिर हम लोग हमेशा तो साथ रहेंगे नहीं," कात्या ने कुछ लजाते हुए और फ़िलिप की पीठ को एकटक देखते हुए जवाब दिया। "मेरी मां तुम्हारी मां के साथ, जो अब मर चुकी हैं, इसलिए रह सकीं कि वह उनकी दोस्त थीं; लेकिन भगवान जाने काउंटेस से उनकी निभेगी भी कि नहीं, जिनके बारे में लोग कहते हैं कि वह बहुत बदमिज़ाज हैं। इसके अलावा, हम लोगों को किसी न किसी दिन तो बहरहाल अलग होना ही है। आप लोग अमीर हैं, आपके पास पेत्रो-व्स्कोये है; लेकिन हम लोग ग़रीब हैं, मेरी मां के पास कुछ भी नहीं है।"

आप लोग अमीर हैं, हम ग़रीब हैं!' ये शब्द और इनसे जुड़े हुए विचार मुझे बहुत अजीब लगे। उन दिनों मैं सोचा करता था कि सिर्फ़ भिखारी और किसान ग़रीब हो सकते हैं, और ग़रीबी के इस वि-चार को मैं अपनी कल्पना में कभी सुंदर और सौम्य कात्या के साथ नहीं जोड़ सकता था। मुझे ऐसा लगता था कि मीमी और कात्या चूंकि हमेशा से हम लोगों के साथ रहती आयी थीं, इसलिए वे हमारे साथ ही रहती रहेंगी और उन्हें हर चीज़ में अपना हिस्सा मिलता रहेगा। इसके अलावा और कुछ हो ही नहीं सकता। लेकिन अब उनके अकेलेपन के बारे में हज़ारों नये और अस्पष्ट विचार मेरे मन में उठने लगे; इस बात पर कि हम लोग अमीर थे और वे लोग ग़रीब थे मैं इतना लज्जित था कि मेरा चेहरा लाल हो गया और मैं कात्या से आंखें मि-लाने का साहस नहीं कर सका।

"इसका क्या मतलब है," मैंने सोचा: "हम लोग अमीर हैं, वे लोग ग़रीब हैं? और इससे यह मतलब कैसे निकलता है कि हम लोगों को अलग हो जाना चाहिये? हमारे पास जो कुछ है उसे हम बराबर-बराबर क्यों नहीं बांट सकते?" लेकिन मेरी समझ में यह आया कि यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसके बारे में मैं कात्या से बात करूं; और किसी व्यावहारिक सहजबुद्धि ने, जो इन तर्कसंगत निष्कर्षों के विपरीत जाती थी, मुझे पहले ही बता दिया था कि कात्या का कहना

ठीक था और उसे यह बताना असंगत होगा कि मैं क्या सोचता हूं।

"क्या यह सच है तुम हम लोगों को छोड़कर चली जाओगी ?" मैंने पूछा। "हम लोग एक-दूसरे से दूर कैसे रह सकेंगे ?"

"हम कर ही क्या सकते हैं ? मुझे भी तकलीफ़ होती है ; लेकिन अगर ऐसा हुआ तो मैं अपने बारे में तो जानती हूं कि मैं क्या करूंगी।..."

"तुम अभिनेत्री बन जाओगी ! क्या बकवास है !" मैं बीच में बोल पड़ा ; मुझे मालूम था कि हमेशा से उसकी तमन्ना अभिनेत्री बनने की थी।

"नहीं ; वह तो मैं तब कहती थी जब मैं बहुत छोटी थी।..."

"फिर तुम क्या करोगी ?"

"मैं सधुनी बन जाऊंगी और मठ में रहने लगूंगी, और काला गाऊन और मखमली टोपी पहनकर घूमा करूंगी।"

कात्या फूट-फूटकर रोने लगी।

क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ है, पाठकवर, कि अपने जीवन के किसी दौर में आपको अचानक ऐसा लगा हो कि चीज़ों के बारे में आपके विचार बिल्कुल बदल गये हैं ; मानो उन सभी चीज़ों ने, जिन्हें आप अभी तक देखते रहे थे, अचानक अपना वह दूसरा पहलू आपके सामने कर दिया हो जिसका आपको अभी तक पता नहीं था। इस तरह का नैतिक परिवर्तन मुझमें पहली बार हमारी इस यात्रा के दौरान आया। उस समय से मैं अपनी किशोरावस्था की शुरूआत मानता हूं।

पहली बार यह बात अच्छी तरह मेरी समझ में आ गयी कि इस दुनिया में बस हम ही – हमारे परिवार के लोग ही – नहीं हैं ; कि हम लोग वह केंद्र-बिंदु नहीं हैं जिसके चारों ओर सारे हित घूमते हैं ; और यह कि एक दूसरा जीवन भी है – उन लोगों का जीवन, जिनका हमसे कोई संबंध नहीं था, जिन्हें हमारी कोई परवाह नहीं थी, और जिन्हें हमारे अस्तित्व का पता तक नहीं था। बेशक यह सब कुछ मुझे पहले भी मालूम था, लेकिन मुझे यह उस तरह नहीं मालूम था जिस तरह उसे मैं इस वक़्त जान गया था। मैं इसे महसूस नहीं करता था।

कोई विचार दृढ़ विश्वास का रूप एक निश्चित तरीक़े से ही धारण करता है, जो बहुधा अप्रत्याशित और उस तरीक़े से बिल्कुल भिन्न होता है जिससे दूसरे दिमाग़ उसी दृढ़ विश्वास तक पहुंचते हैं। कात्या के साथ बातचीत, जिसका मुझ पर बहुत गहरा असर पड़ा, और जिसने मुझे उसकी भावी स्थिति के बारे में सोचने पर मजबूर किया, मेरे लिए ऐसा ही एक तरीक़ा था। उन गांवों और क़स्बों को देखकर, जिनसे होकर हम अपनी गाड़ी पर गुज़र रहे थे, जिनके हर घर में हमारा जैसा कम से कम एक परिवार ज़रूर रहता था; उन औरतों और बच्चों को देखकर जो क्षणिक कौतूहल से हमारी गाड़ियों को एकटक देखते थे और फिर हमेशा के लिए आंखों से ओझल हो जाते थे; उन दुकानदारों और किसानों को देखकर, जो न केवल उस तरह हमारा अभिवादन नहीं करते थे जिसका कि मैं पेत्रोव्स्कोये में आदी रह चुका था, बल्कि हमारा इतना सम्मान भी नहीं करते थे कि एक नज़र हमें देख लें—पहली बार मेरे मन में यह सवाल उठा: अगर वे हमारी तनिक भी परवाह नहीं करते तो वे क्या सोचते रहते हैं? और इस सवाल से दूसरे सवाल पैदा हुए: वे कैसे रहते हैं और कैसे अपना पेट पालते हैं? वे अपने बच्चों को कैसे पालते-पोसते हैं? क्या वे हर बात उन्हें सिखाते-पढ़ाते हैं, खेलने के लिए छोड़ देते हैं, वे उन्हें सज़ा कैसे देते हैं? वग़ैरह-वग़ैरह।

अध्याय ४

मास्को में

मास्को पहुंचकर चीज़ों, लोगों, और उनके साथ स्वयं अपने संबंधों के बारे में मेरे विचारों में यह परिवर्तन और भी प्रकट होता गया।

नानी से अपनी पहली मुलाक़ात में जब मैंने उनका दुबला-पतला, झुर्रियोंदार चेहरा और धुंधली आंखें देखी थीं तो मेरे मन में उनके प्रति असीम श्रद्धा और भय की जो भावना थी वह सहानुभूति की भावना

में बदल गयी थी। और जब ल्यूबा के सिर पर अपना चेहरा रखकर वह सिसक-सिसककर ऐसे रोने लगीं मानो वह अपनी प्यारी वेटी की लाश को देख रही हों, तो मेरी यह सहानुभूति प्यार में बदल गयी। हमसे मिलने पर उन्हें दुःखी होते देखकर मैं वेचैन हो उठा। मैंने देखा कि उनकी नज़रों में हम लोग खुद कुछ नहीं थे; कि हम लोग उन्हें केवल स्मृतियों के रूप में प्रिय थे। मैं महसूस कर रहा था कि वह मेरे गालों पर चुंवनों की जो बौछार कर रही थीं उनमें से हर एक में बस एक ही विचार व्यक्त होता था: "वह चली गयी; वह मर गयी; अव मैं उसे कभी नहीं देखूंगी!"

पापा, जिनका मास्को में हम लोगों से लगभग कोई सरोकार नहीं रह गया था और जिनके चेहरे पर निरंतर चिंता छायी रहती थी, हम लोगों के पास सिर्फ़ खाने के वक़्त काला कोट या सूट पहने हुए आते थे; मेरी नज़रों में उनकी क़द्र वहुत कम हो गयी थी, और साथ ही उनके बड़े-वड़े फड़फड़ाते हुए कॉलरों, उनके ड्रेसिंग-गाऊन, उनके ख़िदमतगारों, उनके मुंशियों, खलिहान तक उनकी चहलक़दमियों और उनके शिकार की भी। कार्ल इवानिच, जिन्हें नानी नौकर कहती थीं, और जिन्होंने अचानक, भगवान जाने क्यों, अपने सम्मानित और परि-चित गंजेपन की जगह एक लाल विग लगा ली थी जिसमें उनके सिर के ठीक वीच में एक मांग निकली हुई थी, मुझे इतने विचित्र और हास्यास्पद लगने लगे थे कि मुझे ताज्जुव हो रहा था कि यह वात पहले कैसे मेरी नज़र से चूक गयी।

लड़कियों के और हमारे वीच भी एक अदृश्य दीवार-सी खड़ी हो गयी। उनके अपने भेद थे और हमारे अपने भेद थे। ऐसा लगता था कि वे हमारे सामने अपने पेटीकोटों पर वहुत इतराती थीं जो पहले से लंबे हो गये थे, और हमें अपनी पतलूनों पर गर्व था जिनमें तलुवे के नीचे कसने के लिए तस्मे लगे थे। और पहले इतवार के खाने पर मीमी ऐसा शानदार गाऊन पहनकर और अपने सिर पर ऐसे फ़ीते सजाकर आयीं कि यह वात विल्कुल स्पष्ट हो गयी कि हम लोग गांव में नहीं थे, और यह कि अव हर चीज़ पहले जैसी नहीं रह जायेगी।

अध्याय ५

बड़ा भाई

मैं वोलोद्या से बस एक साल और कुछ महीने छोटा था: हम दोनों साथ-साथ पले-बढ़े थे, और न पढ़ाई में कभी अलग हुए थे न खेल में। हम दोनों के बीच बड़े और छोटे का भेदभाव कभी नहीं किया गया था। लेकिन जिस वक़्त की मैं चर्चा कर रहा हूं लगभग उसी समय मैं यह महसूस करने लगा था कि मैं न उम्र में वोलोद्या के बराबर हूं, न अपनी प्रवृत्तियों या योग्यताओं में। मैं यह भी सोचने लगा था कि वोलोद्या को शायद अपनी श्रेष्ठता का आभास था, और उसे उस पर गर्व था। इस दृढ़ विश्वास ने, जो कदाचित भ्रांत था, मेरे स्वाभिमान को उकसाया, और जब भी वोलोद्या से मेरा कोई टकराव होता तो इस स्वाभिमान को ठेस लग जाती। वह हर चीज़ में मुझसे बढ़कर था – खेल में, पढ़ाई में, लड़ाई-झगड़े में और उचित आचरण की जानकारी में, और इन सब बातों की वजह से वह मुझसे दूर खिंचता गया और मुझे ऐसी नैतिक पीड़ा होने लगी जो मेरी समझ में नहीं आती थी। वोलोद्या ने जब पहली बार चुन्नटदार लिनेन की कमीज़ पहनी थी तभी अगर मैंने साफ़-साफ़ कह दिया होता कि मुझे इस बात की बहुत झुंझलाहट थी कि मेरे पास वैसी कमीज़ नहीं थी तो मुझे यक़ीन है कि मुझे इतनी परेशानी न होती, और हर बार जब वह अपना कॉलर ठीक करता तो मुझे यह न लगता कि वह केवल मेरी भावनाओं को ठेस पहुंचाने के लिए ऐसा कर रहा है।

मुझे सबसे ज़्यादा तकलीफ़ इस बात से होती थी कि वोलोद्या मेरे मन की बात जान लेता था, जैसा कि मुझे कभी-कभी लगता था, लेकिन वह उसे छिपाने की कोशिश करता था।

ऐसे लोगों के बीच, जो हमेशा साथ रहे हों, आपस के उन रहस्यमय, शब्दहीन संबंधों को किसने नहीं देखा है जो मुश्किल से ही दिखायी देनेवाली मुस्कराहट में, किसी छोटी-सी हरकत में या एक नज़र में जाहिर हो जाते हैं – भाइयों के, दोस्तों के, पति और पत्नी के, मालिक और नौकर के संबंध, ख़ास तौर पर जब ये लोग हर मामले में एक-

दूसरे से खुलकर साफ़ बात न कहते हों! जब आंखें डरते-डरते और झिझकते हुए मिलती हैं तो कितनी अनकही इच्छाएं, विचार और मन का भेद खुल जाने के भय एक सरसरी-सी नज़र में व्यक्त हो जाते हैं।

लेकिन शायद इस मामले में मैं अपनी आवश्यकता से अधिक संवेदनशीलता और विश्लेषण करने की प्रवृत्ति से धोखा खा गया ; शायद वोलोद्या वह बिल्कुल नहीं महसूस करता था जो मैं महसूस करता था। वह जल्दबाज़ था, साफ़ बात कहता था, और उसके आवेग अस्थिर होते थे। वह विविधतम प्रकार की चीज़ों की ओर आकृष्ट हो जाता था और अपने आपको पूरे मन से उनके लिए समर्पित कर देता था।

एक बार उसे तस्वीरों की धुन सवार हो गयी ; उसने ख़ुद तस्वीरें बनाना शुरू कर दिया, अपना सारा पैसा उस पर ख़र्च कर देने लगा और कला के मास्टर से, पापा से और नानी से पैसे मांगने लगा ; फिर उसे अपनी मेज़ सजाने की चीज़ों की धुन सवार हुई और वह उन्हें घर के हर हिस्से से जमा करने लगा ; फिर उसे उपन्यासों का जुनून सवार हुआ, जिन्हें वह चोरी से हासिल करता था और दिन-रात पढ़ता था।... मैं भी अनायास ही उसकी रुचियों के प्रवाह में वह जाता था ; लेकिन मुझमें इतना अहंकार था कि मैं उसकी नक़ल नहीं करना चाहता था, और मैं इतना छोटा और इतना पराश्रित था कि मैं अपना रास्ता स्वयं नहीं चुन सकता था। लेकिन मुझे किसी और चीज़ से उतनी ईर्ष्या नहीं होती थी जितनी कि वोलोद्या के प्रसन्नचित्त, स्पष्टवादी और उदात्त चरित्र से, जो उस समय विशेष स्पष्टता के साथ उभरकर सामने आता था जब हम दोनों का झगड़ा होता था। मैं महसूस करता था कि उसका आचरण अच्छा था, फिर भी मैं उसकी नक़ल करने के लिए अपने आपको तैयार नहीं कर पाता था।

एक बार जब अजीब-अजीब चीज़ें बटोरने का उसका शौक़ अपने शिखर पर था, मैं उसकी मेज़ के पास गया और इत्तफ़ाक़ से एक छोटी-सी रंग-बिरंगी खाली शीशी मैंने तोड़ दी।

"तुम्हें मेरी चीज़ें छूने की इजाज़त किसने दी?" वोलोद्या ने कमरे में घुसने पर उस तबाही को देखते ही कहा, जो मैंने उसकी मेज़ पर व्यवस्थित ढंग से रखी हुई तरह-तरह की सजावट की चीज़ों में मचा दी थी ; "और वह छोटी-सी शीशी कहां गयी? तुम हमेशा ..."

"मेरे हाथ से इत्तफ़ाक़ से गिरकर टूट गयी। तो क्या नुक़सान हो गया?"

"मेहरबानी करके अब कभी मेरी चीज़ें छूने की हिम्मत न करना," उसने टूटी हुई शीशी के टुकड़ों को बटोरकर बड़े उदास भाव से उन्हें देखते हुए कहा।

"और तुम भी मेहरबानी करके मुझ पर हुक्म चलाने की कोशिश न करना," मैंने जवाब दिया। "टूट गयी तो टूट गयी, बस। बखेड़ा खड़ा करने से क्या फ़ायदा?"

और मैं मुस्करा दिया, हालांकि मुझे मुस्कराने की बिल्कुल इच्छा नहीं हो रही थी।

"अरे, तुम्हारे लिए कुछ न हो लेकिन मेरे लिए तो है," वोलोद्या ने पापा की तरह कंधा झिटककर कहा, "एक तो मेरी चीज़ें तोड़ देता है, फिर ऊपर से हंसता है, बेहूदा छोकरा!"

"मैं तो बेहूदा हूं लेकिन तुम जितने बड़े हो उतने ही बेवक़ूफ़ हो।"

"मैं तुमसे झगड़ा करना नहीं चाहता," वोलोद्या ने मुझे धीरे से धक्का देकर कहा, "चले जाओ यहां से!"

"धक्का मत दो मुझे!"

"चले जाओ!"

"मुझे धक्का मत दो, कहे देता हूं।"

वोलोद्या ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे मेज़ से दूर खींच लाने की कोशिश की; लेकिन मैं गुस्से से खौल रहा था। मैंने मेज़ का पाया पकड़ लिया और चीनी मिट्टी और कट-ग्लास की सारी सजावट की चीज़ें छनछनाती हुई फ़र्श पर आ गिरीं। "यह लो!"

"नीच बदमाश छोकरे!..." वोलोद्या ने अपनी कुछ गिरती हुई बहुमूल्य चीज़ों को बचाने की कोशिश करते हुए कहा।

"अब हम लोगों के संबंध हमेशा के लिए टूट गये," मैंने कमरे से बाहर जाते हुए सोचा, "अब हमारी हमेशा के लिए अनबन हो गयी।"

शाम तक हम दोनों एक-दूसरे से नहीं बोले। मैं महसूस कर रहा था कि ग़लती मेरी थी, मुझे उसकी ओर देखते डर लग रहा था, और सारे दिन मैं किसी भी काम में अपना मन नहीं लगा पाया।

इसके विपरीत, वोलोद्या ने ठीक से अपना सबक़ याद किया, और खाने के बाद हमेशा की तरह लड़कियों के साथ हंसता-बोलता रहा।

हर सबक़ पूरा हो जाने के बाद मैं कमरे से बाहर चला जाता था। मैं इतना डरा हुआ था, मुझे इतनी खिसियाहट हो रही थी और मेरा अंतःकरण मुझे इतनी बुरी तरह कचोट रहा था कि मैं अकेला अपने भाई के साथ नहीं रह सकता था। शाम को इतिहास की पढ़ाई के बाद मैं अपनी कॉपी लेकर दरवाज़े की तरफ़ चल दिया। हालांकि मैं वोलोद्या के पास जाकर उससे सुलह-समझौता कर लेना चाहता था, लेकिन इसके बावजूद जब मैं उसके पास से होकर गुज़रा तो मैंने मुंह फुला लिया और चेहरे पर गुस्से का भाव बनाये रहा। वोलोद्या ने उसी क्षण अपना सिर ऊपर उठाया और सहृदय व्यंगपूर्ण मुस्कराहट के साथ, जो मुश्किल से ही दिखायी पड़ रही थी, बड़ी ढिठाई से मेरी ओर देखा। हमारी आंखें मिलीं और मैं जान गया कि वह मेरे मन की बात समझता है, और यह भी कि मैं महसूस करता हूं कि वह मेरे मन की बात समझता है। पर मुझसे भी प्रबल किसी भावना ने मुझे अपना मुंह फेर लेने पर मजबूर कर दिया।

"निकोलेंका!" उसने तनिक भी किसी भावना के बिना बिल्कुल सीधे-सादे लहजे में कहा, "काफ़ी देर नाराज़ रह लिये। अगर मेरी बात बुरी लगी हो तो मुझे माफ़ कर दो।"

यह कहकर उसने मेरी ओर अपना हाथ बढ़ा दिया।

अचानक मेरे सीने में कोई चीज़ फूलने लगी, यहां तक कि उसके दबाव से मेरा दम घुटने लगा। ऐसा बस क्षण-भर ही रहा; उसके बाद मेरी आंखों में आंसू भर आये और मैं बेहतर महसूस करने लगा।

"मुझे... माफ़ कर देना, वोलोद्या!" मैंने उसका हाथ थामते हुए कहा।

लेकिन वोलोद्या ने मेरी तरफ़ इस तरह देखा मानो उसकी समझ में न आ रहा हो कि मेरी आंखों में आंसू क्यों थे।...

अध्याय ६

माशा

लेकिन विभिन्न चीज़ों के बारे में मेरे विचारों में जो परिवर्तन हुए थे उनमें से कोई भी मेरे लिए उतना आश्चर्यजनक नहीं था जितना कि वह जिसकी वजह से मैंने अपनी एक नौकरानी को केवल एक नौक-रानी समझना छोड़ दिया और मैं उसे एक ऐसी औरत समझने लगा जिस पर कुछ हद तक मेरी शांति और मेरा सुख निर्भर हो सकता था।

जब तक की मुझे याद है, माशा हमेशा से हमारे घर में थी; और उस घटना के वक़्त तक, जिसकी वजह से उसके बारे में मेरा दृष्टिकोण पूरी तरह बदल गया, और जिसे मैं अभी बयान करूंगा, मैंने उसकी ओर कभी तनिक भी ध्यान नहीं दिया था। माशा पच्चीस साल की थी जब मैं चौदह साल का था; वह बहुत सुंदर थी। लेकिन मैं उसका वर्णन करते डरता हूं, मैं डरता यह हूं कि कहीं मेरी कल्पना एक बार फिर वही आकर्षक और छलपूर्ण चित्र मेरे सामने न प्रस्तुत कर दे जो उस ज़माने में मेरी कल्पना में था जब मैं उसके पीछे दीवाना था। इस विचार से कि मैं कोई ग़लती न करूं मैं सिर्फ़ इतना कहूंगा कि उसका रंग बेहद गोरा था, उसका विकास भरपूर हुआ था, जैसा कि एक औरत का होना चाहिये। और मैं चौदह साल का था।

एक ऐसे क्षण में जब सबक़ की किताब हाथ में लिये हम कमरे में इधर से उधर टहलने में, फ़र्श पर सिर्फ़ दरारों पर क़दम रखकर चलने में, या कोई बेतुका गाना गुनगुनाने में, या मेज़ की कगर पर स्याही मलने में, या किसी फ़िक़रे को यंत्रवत् दोहराते रहने में व्यस्त हों—सारांश यह कि ऐसे एक क्षण में जब दिमाग़ काम करने से इंकार करता है और कल्पना हावी होकर नये-नये अनुभवों की छाप खोजने के फेर में रहती है—मैं पढ़ाई के कमरे में से निकला और किसी भी उद्देश्य के बिना सीढ़ियों की चौरस जगह की ओर चला गया।

कोई स्लीपरें पहने बग़लवाली सीढ़ियों पर चढ़ रहा था। ज़ाहिर है कि मैं जानना चाहता था कि वह कौन था; लेकिन क़दमों की आहट अचानक बंद हो गयी, और मुझे माशा की आवाज़ सुनायी दी: "जाओ

यहां से! अगर मार्या इवानोव्ना देख लेंगी तो वह क्या सोचेंगी?"

"अरे नहीं, वह नहीं आयेंगी," वोलोद्या का कानाफूसी का स्वर सुनायी दिया, और फिर मुझे एक ऐसी आवाज़ सुनायी दी मानो वोलोद्या उसे रोकने की कोशिश कर रहा हो।

"ए! ख़बरदार जो हाथ लगाया, बदमाश कहीं का!" और माशा मेरे पास से भागती हुई गुज़र गयी; उसका रूमाल एक तरफ़ को सरक गया था और उसके नीचे से उसकी गदरायी हुई गोरी-गोरी गर्दन दिखायी दे रही थी।

मैं बता नहीं सकता कि इस बात का पता लग जाने पर मुझे कितना आश्चर्य हुआ; लेकिन शीघ्र ही मुझे आश्चर्य के बजाय वोलोद्या की हरकत से हमदर्दी होने लगी। मुझे आश्चर्य उस पर नहीं था जो कुछ उसने किया था, बल्कि इस बात पर था कि यह विचार उसके मन में कैसे आया कि ऐसा करने में मज़ा आयेगा। और अनायास ही मेरा जी वही करने को चाहने लगा जो उसने किया था।

कभी-कभी मैं किसी भी बात के बारे में सोचे बिना घंटों उस खुली चौरस जगह पर बिता देता था और ऊपर से आनेवाली ज़रा-सी भी आहट की ओर कान लगाये रहता था; लेकिन मैं कभी वोलोद्या का अनुकरण करने पर अपने आपको आमादा न कर सका, हालांकि मैं दुनिया में सबसे ज़्यादा यही करना चाहता था। कभी-कभी मैं दरवाज़े के पीछे छिपकर ईर्ष्या और जलन की अपराधी भावना से नौकरनियों की कोठरी की चहल-पहल सुना करता था, और मेरे मन में यह विचार उठता था कि अगर मैं ऊपर जाकर वोलोद्या की तरह माशा को चूमने की कोशिश करूं तो मेरी स्थिति क्या होगी? अगर उसने पूछा कि मैं क्या चाहता हूं तो मैं अपनी यह चौड़ी नाक और उलझे हुए बाल लेकर क्या जवाब दूंगा? कभी-कभी मैं माशा को वोलोद्या से कहते हुए सुनता था, "कैसा ढीठ लड़का है! मुझे क्यों हैरान करते रहते हो? भाग जा, बदमाश कहीं का... आख़िर छोटा मालिक तो कभी यहां आकर मेरे साथ कोई शरारत नहीं करते।..." उसे क्या पता था कि छोटा मालिक उसी समय सीढ़ियों पर बैठा हुआ था, और अगर उसे वोलोद्या की जगह होने का मौक़ा मिलता तो वह उसके बदले दुनिया की हर चीज़ देने को तैयार था।

मैं स्वभाव से ही शर्मीला था, लेकिन मेरा शर्मीलापन अपने कुरूप होने के बारे में मेरे दृढ़ विश्वास की वजह से और बढ़ गया था। और मुझे पूरा यक़ीन है कि मनुष्य के जीवनक्रम पर किसी भी चीज़ का उतना निर्णायक प्रभाव नहीं पड़ता जितना उसकी अपनी सूरत-शक्ल का, और उसकी सूरत-शक्ल का भी उतना नहीं जितना कि उसके इस विश्वास का कि वह आकर्षक है या अनाकर्षक।

मुझमें इतना अधिक स्वाभिमान था कि मैं अपनी इस स्थिति का आदी नहीं हो सकता था, और मैंने अपने आपको यह तसल्ली देकर संतोष कर लिया कि अंगूर अभी खट्टे थे; मतलब यह कि मैंने उन सभी ख़ुशियों से नफ़रत करने की कोशिश की जो उस रुचिकर बाहरी रंग-रूप से प्राप्त होती थीं, जो मेरी नज़रों में वोलोद्या के पास था और जिससे मेरा रोम-रोम ईर्ष्या करता था, और मैं इस गर्वीले एकांत में सांत्वना प्राप्त करने के लिए अपने मन और अपनी कल्पना पर ज़ोर देने लगा।

अध्याय ७

कारतूस

"हे भगवान, बारूद! ..." मीमी डरकर हांपते हुए चिल्लायीं। "क्या कर रहे हो तुम लोग? क्या तुम लोग घर को जलाकर हम सबको मार डालना चाहते हो..."

और कठोरता की ऐसी विचित्र मुद्रा धारण करके, जिसे बयान नहीं किया जा सकता, मीमी ने सबको दूर हट जाने का आदेश दिया, लंबे-लंबे दृढ़ क़दम रखती हुई बिखरे हुए कारतूस के पास गयीं और अचानक धमाका हो जाने के ख़तरे की परवाह न करते हुए वह उस पर अपना पांव पटकने लगीं। जब, उनके ख़्याल से ख़तरा टल गया तो उन्होंने मिखेई को बुलाकर उसे आदेश दिया कि सारी बारूद ले जाकर जितनी दूर हो सके फेंक आये, या उससे भी अच्छा यह होगा कि पानी में फेंक आये; और फिर बड़े गर्व से अपनी टोपी हिलाते हुए वह ड्राइंग-

रूम की तरफ़ चल दीं। "सवकी वड़ी अच्छी देखभाल हो रही है, इससे कोई इंकार नहीं कर सकता," वह वुड़वुड़ायीं।

जव पापा घर के वग़लवाले हिस्से से आये और हम लोग उनके साथ नानी के कमरे में गये तो मीमी वहां पहले ही से खिड़की के पास वैठी किंचित रहस्यमयी औपचारिक मुद्रा से दरवाज़े की ओर धमकी-भरी नज़रों से देख रही थीं। उनके हाथ में काग़ज़ में लिपटी हुई कोई चीज़ थी। मैं ताड़ गया कि वह कारतूस ही थी, और यह कि नानी को सब कुछ मालूम हो चुका था।

नानी के कमरे में मीमी के अलावा नौकरानी गाशा थी, जिसके तमतमाये हुए और ग़ुस्से से भरे चेहरे से ही मालूम हो रहा था कि वह वहुत नाराज़ थी, और एक छोटे-से चेचकरू आदमी डा० व्लूमेंथाल थे, जो अपनी आंखों से और अपने सिर से गाशा को रहस्यमय और शांत करनेवाले इशारे करके उसका ग़ुस्सा ठंडा करने की वेकार कोशिश कर रहे थे।

नानी ख़ुद वग़ल की ओर मुंह किये कुछ तिरछी वैठी हुई अपने पत्ते 'यात्री' नामक पेशेंस के खेल के लिए विछा रही थीं, जो हमेशा इस वात का संकेत होता था कि उनका मिजाज़ उस वक़्त वेहद ख़राव है।

"आज आपकी तवियत कैसी है, माता जी? नींद तो ठीक से आयी न?" पापा ने सम्मानपूर्वक उनका हाथ चूमते हुए पूछा।

"वहुत अच्छी हूं, वेटा; मैं समझती हूं कि यह तो आप जानते ही होंगे कि मेरी तवियत हमेशा अच्छी रहती है," नानी ने ऐसे लहजे में जवाव दिया जिससे लगता था कि पापा का सवाल हद से ज़्यादा अनुचित और अपमानजनक था। "अरे, तुम मुझे साफ़ रूमाल लाकर दोगी कि नहीं?" वह गाशा की ओर मुड़कर कहती रहीं।

"दिया तो है," गाशा ने कुर्सी के हत्थे पर रखे हुए दूध जैसे सफ़ेद कैंव्रिक के रूमाल की तरफ़ इशारा करते हुए कहा।

"ले जाओ इस गंदे चीथड़े को और मुझे एक साफ़ रूमाल लाकर दो।"

गाशा ने अल्मारी के पास जाकर एक दराज़ खोली और उसे फिर इतने ज़ोर से वंद किया कि कमरे के सारे शीशे खड़खड़ा उठे। नानी ने घूमकर हम सव पर अपनी धमकी-भरी नज़र डाली और नौक-

रानी की सारी हरकतों को बड़े ध्यान से देखती रहीं। जब ग़ाशा ने उन्हें रूमाल दिया, जो मुझे वही पहलेवाला रूमाल लगा, तो वह बोली:

"मेरी नसवार कब पीस दोगी?"

"जब वक़्त मिलेगा तब पीस दूंगी।"

"क्या कहा?"

"आज पीस दूंगी।"

"अगर तुम मेरे यहां काम करना नहीं चाहतीं, तो कह देतीं; मैंने बहुत पहले ही तुम्हारी छुट्टी कर दी होती।"

"अगर आप छुट्टी कर भी देंगी तो मैं आंसू बहानेवाली नहीं हूं," नौकरानी ने धीमे स्वर में बुदबुदाकर कहा।

उसी क्षण डाक्टर ने उसे आंख मारने की कोशिश की, लेकिन उसने उन्हें इतने गुस्से और ढिठाई से देखा कि उन्होंने फ़ौरन नज़रें झुका लीं और अपनी घड़ी के बटन से खेलने लगे।

"देखा, बेटा," जब गाशा बुड़बुड़ाती हुई कमरे से चली गयी तो नानी ने पापा से कहा, "लोग मेरे ही घर में मुझसे कैसे बातें करते हैं।"

"अगर आप मुझे इजाज़त दें, माता जी, तो मैं आपके लिए नसवार पीस दूं," पापा ने कहा, जो नौकरानी के इस अप्रत्याशित आचरण से स्पष्टतः बहुत अटपटा महसूस कर रहे थे।

"नहीं, आपकी बड़ी मेहरबानी है; वह बदतमीज़ी से इसलिए बात करती है कि वह जानती है कि उसके अलावा कोई और मेरी पसंद की नसवार पीस नहीं सकता। "जानते हैं, बेटा," नानी कुछ देर रुककर बोलती रहीं, "आपके बच्चों ने तो आज घर को आग ही लगा दी होती?"

पापा ने सम्मानपूर्वक सवालिया नज़रों से नानी की ओर देखा।

"हां, ज़रा देखो, ये लोग किन चीज़ों से खेलते हैं। दिखाना तो," उन्होंने मीमी की ओर मुड़ते हुए कहा।

पापा ने कारतूस अपने हाथ में ले ली, और बरबस मुस्करा दिये।

"क्यों, यह तो कारतूस है, माता जी," उन्होंने कहा, "यह तो बिल्कुल ख़तरनाक नहीं है।"

"मैं आपका वहुत एहसान मानती हूं, वेटा, कि आप मुझे सिखाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन मैं अव वहुत वूढ़ी हो चुकी हूं। ..."

"घवराहट, घवराहट का दौरा है," डाक्टर वुदवुदाया।

और पापा फ़ौरन हम लोगों की ओर मुड़ पड़े:

"यह कहां से मिली तुम लोगों को? और तुम लोगों से इस तरह की चीज़ों से खिलवाड़ करने को कहा किसने?"

"यह बात इनसे पूछने की नहीं है; इनके निजी नौकर से पूछिये," नानी ने 'नौकर' शब्द का उच्चारण विशेप तिरस्कार से करते हुए कहा, "वह क्या निगरानी रखता है?"

"वोलोद्या कह रहा था कि कार्ल इवानिच ने खुद उसे यह वारूद दी थी," मीमी ने वात जड़ दी।

"सुन लिया, कैसा नेक है वह", नानी कहती रहीं, "और वह है कहां, वह इनका नौकर, क्या नाम है उसका? उसे भेज तो दीजिये यहां।"

"मुझसे छुट्टी लेकर किसी से मिलने गये हैं," पापा ने कहा।

"इस तरह काम नहीं चलेगा। उसे हर वक़्त यहीं रहना चाहिये। बच्चे आपके हैं, मेरे तो हैं नहीं, और मुझे आपको सलाह देने का कोई हक़ नहीं है, क्योंकि आप मुझसे ज़्यादा समझदार हैं," नानी अपनी वात कहती रहीं। "लेकिन शायद अव ऐसा वक़्त आ गया है कि वच्चों के लिए कोई ट्यूटर रख दिया जाये, न कि ख़िदमतगार, जर्मन किसान — हां, जाहिल किसान, जो उन्हें वदतमीज़ी और टाइरोली* गानों के अलावा कुछ भी नहीं सिखा सकता। मैं पूछती हूं क्या वच्चों के लिए सचमुच यह ज़रूरी है कि उन्हें टाइरोली गीत गाना आये? लेकिन अव इन सव वातों के वारे में कौन सोचता है, जैसा जी चाहे कीजिये।"

"अव" शब्द का मतलव था कि उनकी मां नहीं रह गयी थी, और इस चर्चा से नानी के मन में उदास यादें उभरने लगीं। उन्होंने

---

* आस्ट्रिया के टाइरोल नामक स्थान के। —अनु०

अपनी नसवार की डिबिया पर नज़रें झुका लीं, जिस पर एक तस्वीर बनी थी, और विचारमग्न हो गयीं।

"मैं बहुत अरसे से यही सोचता रहा हूं," पापा ने जल्दी से कहा, "और मैं आपकी सलाह लेना चाहता था, माता जी। St.-Jérôme* से बात करें, जो उन्हें रोज़ाना तनख़्वाह पर पढ़ाने आते हैं?"

"यह तो बहुत अच्छी बात होगी," नानी ने कहा; अब उनके स्वर में वह पहलेवाला असंतोष का पुट नहीं था। "St.-Jérôme कम से कम ऐसा ट्यूटर तो है जो यह जानता है कि des enfants de bonne maison** का आचरण कैसा होना चाहिये; वह मामूली नौकर नहीं है, जो बस इस काम के लायक़ हो कि उन्हें टहलाने ले जाया करे।"

"मैं कल ही उनसे बात करूंगा," पापा ने कहा।

और सचमुच, इस बातचीत के दो दिन बाद कार्ल इवानिच की जगह इस नौजवान फ़्रांसीसी छैला ने ले ली।

अध्याय ८

कार्ल इवानिच की दास्तान

जिस दिन कार्ल इवानिच हमारे यहां से हमेशा के लिए जानेवाले थे उससे एक दिन पहले काफ़ी रात गये वह पलंग के पास अपना रूई-भरा कोट और लाल टोपी पहने अपने संदूक़ पर झुके खड़े थे और बड़ी सावधानी से अपनी चीज़ें उसमें रख रहे थे।

इधर कुछ दिनों से हम लोगों की तरफ़ कार्ल इवानिच का रवैया कुछ अजीब खिंचा-खिंचा-सा था; ऐसा लगता था कि वह हम लोगों के साथ किसी भी तरह का संपर्क रखने से कतराने लगे थे। इस वक़्त भी जब मैं उनके कमरे में आया तो उन्होंने बड़ी रुखाई से मुझे देखा

---

* सेंट-जेरोम। (फ़्रांसीसी)

** भले घरों के बच्चे। (फ़्रांसीसी)

और अपना काम करते रहे। मैं अपने पलंग पर लेट गया, लेकिन कार्ल इवानिच ने, जिन्होंने पहले हम लोगों को ऐसा करने से बिल्कुल मना कर रखा था, मुझसे कुछ भी नहीं कहा ; और यह विचार कि वह अब कभी हम लोगों को डांटेंगे या रोकेंगे नहीं, कि अब उन्हें हमसे कोई सरोकार नहीं रह गया था, आनेवाले विछोह की याद दिलाना था। मुझे इस बात का बड़ा अफ़सोस था कि उन्होंने हम लोगों से प्यार करना छोड़ दिया था, और मैं यह भावना उनसे व्यक्त कर देना चाहता था।

"लाइये, मैं आपकी मदद कर दूं, कार्ल इवानिच," मैंने उनके पास जाकर कहा।

कार्ल इवानिच ने एक नज़र मुझे देखा और फिर मुंह फेर लिया ; लेकिन उन्होंने मुझ पर जो सरसरी-सी नजर डाली थी उसमें मुझे वह उपेक्षा नहीं दिखायी दी, जिसे मैं उनकी रुखाई का कारण समझता था, बल्कि सच्ची गहरी व्यथा दिखायी दी।

"भगवान सब देखता है, और सब जानता है ; और हर काम उसी की इच्छा से होता है," उन्होंने गहरी आह भरकर तनकर खड़े होते हुए कहा। "हां, निकोलेंका," मैं जिस सहज सहानुभूति की मुद्रा से उन्हें तक रहा था उसे देखकर वह कहते रहे, "मैं जब बिल्कुल बच्चा था तब से लेकर क़ब्र में पहुंचने तक मेरे भाग्य में दुःख उठाना ही लिखा है। मैंने लोगों के साथ जो भलाई की है उसके बदले में हमेशा मेरे साथ बुराई ही की गयी है ; लेकिन मुझे मेरे किये का फल यहां नहीं, वहां मिलेगा," उन्होंने आसमान की तरफ़ उंगली से इशारा करते हुए कहा। "काश आपको मेरी पूरी दास्तान मालूम होती और आप यह जानते होते कि इस ज़िंदगी में मैंने क्या कुछ झेला है! मैंने मोची का काम किया है, मैं सिपाही रह चुका हूं, मैं फ़ौज से भागा था, मैं कारखाने में मज़दूर रह चुका हूं, मैं अध्यापक रह चुका हूं, और अब मैं कुछ नहीं हूं ; और, ईश्वर के बेटे की तरह, मेरे पास भी सिर टिकाने की कोई जगह नहीं है," उन्होंने अपनी बात ख़त्म की, और आंखें बंद करके कुर्सी पर बैठ गये।

यह देखकर कि कार्ल इवानिच इस समय उस संवेदनशील मनोदशा में थे जब वह सुननेवाले की ओर कोई ध्यान दिये बिना अपने अनन्यतम

विचार स्वयं अपने संतोष के लिए शब्दों में व्यक्त करते थे, मैं चुपचाप पलंग पर बैठ गया, और एकटक उनके कृपालु चेहरे को देखता रहा।

"आप बच्चा नहीं हैं, आप समझ सकते हैं। मैं आपको बताऊंगा कि मेरी ज़िंदगी क्या रही है और मैंने इस ज़िंदगी में क्या-क्या झेला है। बच्चो, किसी दिन आप उस बूढ़े दोस्त को याद करेंगे जो आपको बेहद प्यार करता था! ..."

कार्ल इवानिच ने बग़ल में रखी हुई मेज़ पर अपनी कुहनी टिका ली, एक चुटकी नसवार ली, और आसमान की तरफ़ देखकर आंखें नचाते हुए उस विशेष, सपाट, हलक़ की गहराई से निकलनेवाले स्वर में अपनी दास्तान शुरू की, जिस स्वर में वह आम तौर पर हम लोगों को बोल-बोलकर इमला लिखाया करते थे।

मैं पैदा होने से पहले भी दुःखी था। "Das Unglück verfolgte mich schon im Schosse meiner Mutter!" उन्होंने बड़ी भावुकता से एक बार फिर दोहराया।

चूंकि कार्ल इवानिच मुझे अपनी दास्तान उन्हीं शब्दों में और हमेशा स्वर के उन्हीं उतार-चढ़ावों के साथ कई बार सुना चुके थे, इसलिए मुझे उम्मीद है कि मैं उसे लगभग शब्दशः दोहरा सकूंगा, अलबत्ता उसमें रूसी भाषा की वे ग़लतियां नहीं होंगी जो वह करते थे। वह सचमुच उनकी दास्तान थी, या हमारे घर में एकांत जीवन के दौरान उनकी कल्पना की उपज थी, या वह अपने जीवन की वास्तविक घटनाओं को केवल कल्पनातीत तथ्यों से रंगीन बना देते थे, इसका फ़ैसला मैं आज तक नहीं कर पाया हूं। एक ओर तो वह अपनी कहानी अत्यधिक भावुकता के साथ और सुव्यवस्थित क्रम से सुनाते थे, जो किसी भी कहानी के सच होने के ऐसे मुख्य प्रमाण होते हैं कि उसके बारे में शंका की कोई गुंजाइश नहीं रह जाती; दूसरी ओर, उनके जीवन-वृत्तांत में काव्यमय ब्योरे की बातों की इतनी भरमार रहती थी कि शंकाएं पैदा होने लगती थीं।

"मेरी रगों में सोम्मरब्लाट के काउंट का नस्ली ख़ून बह रहा है! In meinen Adern fliesst das edle Blut des Grafen von Sommerblat! मैं शादी के छः हफ़्ते बाद पैदा हुआ था। मेरी मां के पति

(मैं उन्हें डैडी कहता था) काउंट सोम्मरब्लाट के असामी थे। वह मेरी मां के इस कलंक को कभी नहीं भुला सके, और वह मुझसे प्यार नहीं करते थे। मेरा एक छोटा भाई था Johann* और दो बहनें थीं: लेकिन मैं अपने परिवार के बीच ही अजनबी था! Ich war ein Fremder in meiner eigenen Familie! जब Johann कोई शरारत करता तो डैडी कहते, 'यह लड़का कार्ल मुझे पल-भर को चैन नहीं लेने देता!' और मुझे डांटा जाता और सज़ा मिलती। जब मेरी बहनें एक-दूसरे से नाराज़ होतीं तो डैडी कहते, 'कार्ल कभी कहना माननेवाला लड़का नहीं होगा!' और मुझे डांटा जाता और सज़ा मिलती।

"सिर्फ़ मेरी प्यारी मां मुझे प्यार करती थीं और मेरे लाड़ करती थीं। वह अकसर मुझसे कहती थीं, 'कार्ल, यहां मेरे कमरे में आओ,' और तब वह सबकी आंख बचाकर मुझे प्यार कर लेती थीं। 'हाय, बेचारा कार्ल!' वह कहती थीं, 'तुझे कोई प्यार नहीं करता है, लेकिन मुझे तो कोई और चाहिये ही नहीं। तेरी मां तुझसे बस एक ही चीज़ चाहती है,' वह मुझसे कहतीं, 'अच्छी तरह पढ़ना-लिखना, और हमेशा इज़्ज़तदार आदमी रहना, तब भगवान भी हमेशा तेरे साथ रहेगा! Trachte nur ein ehrlicher Deutscher zu werden,—sagte sie—und der liebe Gott wird dich nicht verlassen!** और मैंने ऐसा ही करने की कोशिश की। जब मैं चौदह साल का हो गया और गिरजाघर में सामूहिक प्रार्थना में जाने लायक़ हो गया तो मां ने डैडी से कहा, 'कार्ल अब बड़ा हो गया है, गुस्ताव; अब उसके लिए क्या किया जाये?' और डैडी ने कहा, 'मैं कया जानूं।' तब मां ने कहा, 'क्यों न उसे हेर्र शुल्ज़ के मास भेज दें, वहां जूते बनाने का काम सीख लेगा।' इस पर डैडी बोले, 'अच्छी बात है,' und mein Vater sagte "gut"। मैं अपने उस्ताद मोची के साथ शहर में छः साल और सात महीने रहा, और मेरा उस्ताद मुझे प्यार करता था। वह कहता था, 'कार्ल बहुत अच्छा कारीगर है, और जल्दी ही

---

* जोहान्न। (जर्मन)

** इज़्ज़तदार जर्मन रहना और भगवान तुम्हारे साथ रहेगा! (जर्मन)

वह मेरा Geselle* बन जायेगा। लेकिन वही बात हुई कि मेरे मन कुछ और था, विधना के कुछ और... १७६६ में आम फ़ौजी भरती का हुक्म आ गया और अठारह से इक्कीस बरस तक के उन सभी लोगों को जो फ़ौज में नौकरी के लायक़ थे शहर जाना पड़ा।

"पापा और मेरा भाई Johann भी शहर आये, और हम दोनों साथ-साथ Loos** निकालने गये, यह देखने के लिए कि कौन सिपाही बने और कौन न बने। Johann ने बुरा नंबर निकाला: उसे सिपाही बनना था। मैंने अच्छा नंबर निकाला: मेरे लिए सिपाही बनना ज़रूरी नहीं था। और डैडी ने कहा, 'मेरे एक ही बेटा था, और उससे भी मुझे अलग होना पड़ेगा! Ich hatte einen einzigen Sohn und von diesem muss ich mich trennen!'

"मैंने उनका हाथ अपने हाथों में लेकर कहा, 'आपने यह क्यों कहा, डैडी? मेरे साथ आइये, मैं आपको एक बात बताता हूं।' और डैडी चले आये। डैडी आये, और हम लोग सराय में एक छोटी-सी मेज़ पर बैठ गये। 'कुछ Bierkrug*** देना', मैंने कहा, और बियर आ गयी। हम दोनों ने एक-एक पी, और मेरे भाई Johann ने भी पी।

"'डैडी', मैंने कहा, 'यह न कहिये कि आपके एक ही बेटा था, और आपको उससे भी अलग होना पड़ेगा। जब मैं यह बात सुनता हूं तो मेरा कलेजा मुंह को आता है। भाई Johann फ़ौज में नहीं जायेगा: सिपाही मैं बनूंगा। यहां कार्ल की ज़रूरत किसी को नहीं है, और कार्ल सिपाही बन जायेगा।'

"'तुम ईमानदार आदमी हो, कार्ल,' डैडी ने मुझसे कहा और मुझे चूम लिया। —Du bist ein braver Bursche!—sagte mir mein Vater und küsste mich.

"और मैं सिपाही बन गया।"

---

* सहायक मिस्त्री। (जर्मन)

** लॉटरी। (जर्मन)

*** बियर की सुराही। (जर्मन)

अध्याय ९

फिर क्या हुआ ...

"वह भयानक वक़्त था, निकोलेंका," कार्ल इवानिच ने अपना बयान जारी रखा। "तब नेपोलियन ज़िंदा था। वह जर्मनी को जीत लेना चाहता था और हमने ख़ून की आख़िरी बूंद तक अपने देश की रक्षा की! und wir verteidigten unser Vaterland bis auf den letzten Tropfen Blut!

"मैं उल्म में था, मैं आस्टरलिट्ज में था, मैं वाग्राम में था! ich war bei Wagram!"

"आप लड़े भी थे?" मैंने आश्चर्य से उन्हें घूरते हुए पूछा। "क्या आपने लोगों को जान से मारा भी?"

कार्ल इवानिच ने इस मामले में फ़ौरन मेरी तसल्ली कर दी।

"एक बार एक फ़्रांसीसी सैनिक अपने साथियों से पीछे रह गया और सड़क पर गिर पड़ा। मैं अपनी बंदूक़ लिये हुए उसकी तरफ़ दौड़ा और मैं उसे मारने जा ही रहा था कि aber der Franzose warf sein Gewehr und rief pardon,* और मैंने उसे छोड़ दिया।

"वाग्राम में नेपोलियन ने हमें द्वीप तक खदेड़ दिया और इस तरह घेर लिया कि बच निकलने का कोई रास्ता ही नहीं था। तीन दिन तक हमारे पास खाने-पीने को कुछ भी नहीं था, और हम घुटनों-घुटनों पानी में खड़े रहे। "वह दुष्ट न हमें क़ैदी बनाता था न हमें भागने देता था! und der Bösewicht Napoleon wollte uns nicht gefangen nehmen und auch nicht freilassen!

"चौथे दिन, भगवान भला करे, हम लोग क़ैद करके एक क़िले में पहुंचा दिये गये। मैं नीली पतलून, और अच्छे कपड़े की वर्दी पहने था, मेरे पास पंद्रह थेलर और चांदी की एक घड़ी थी, जो मेरे डैडी ने मुझे दी थी। एक फ़्रांसीसी सिपाही ने यह सब कुछ मुझसे ले लिया।

---

* लेकिन फ़्रांसीसी ने अपनी बंदूक़ फेंक दी और दया की भीख मांगने लगा। (जर्मन)

सौभाग्य से मेरे पास तीन ड्यूकट बचे रह गये थे जो मेरी मां ने मेरी वास्कट में सिल दिये थे। वे किसी के हाथ नहीं लगे!

"मैं क़िले में बहुत दिन नहीं रहना चाहता था, और मैंने वहां से भाग निकलने का फ़ैसला कर लिया था। एक बार किसी बड़े त्योहार के दिन मैंने उस सार्जेंट से कहा जो हमारी निगरानी करता था, 'साहब सार्जेंट, आज बहुत बड़ा त्योहार है और मैं उसे मनाना चाहता हूं। मेहरबानी करके दो बोतलें मदेइरा की ले आओ, हम लोग साथ-साथ पियेंगे।' सार्जेंट ने कहा, 'अच्छी बात है।' जब सार्जेंट मदेइरा लेकर आया और हम लोग एक-एक गिलास पी चुके, तो मैंने उससे कहा, 'साहब सार्जेंट, तुम्हारे मां-बाप तो हैं न?' उसने कहा, 'हैं तो, साहब मायर...' मैंने कहा, 'मेरे मां-बाप ने आठ साल से मुझे नहीं देखा है, और उन्हें यह भी नहीं मालूम है कि मैं ज़िंदा हूं या मेरी हड्डियां किसी सीलन-भरी क़ब्र में सड़ रही हैं। साहब सार्जेंट! मेरे पास दो ड्यूकट हैं, जो मेरी वास्कट में थे; वह तुम ले लो, और मुझे जाने दो। मेरे ऊपर इतना उपकार करो; मेरी मां उम्र-भर भगवान से तुम्हारे लिए प्रार्थना करेंगी।'

"सार्जेंट ने एक गिलास मदेइरा पी और कहा, 'साहब मायर, मुझे तुम्हारे ऊपर बेहद प्यार और तरस आता है; लेकिन तुम क़ैदी हो, और मैं हूं सिपाही।' मैंने उसका हाथ दबाकर कहा, 'साहब सार्जेंट! Ich drückte ihm die Hand und sagte: 'Her Sergeant!'

"और सार्जेंट ने कहा, 'तुम ग़रीब आदमी हो, मैं तुम्हारा पैसा तो नहीं लूंगा; लेकिन मैं तुम्हारी मदद करूंगा। जब मैं सो जाऊं तो सिपाहियों के लिए एक बाल्टी वोद्का ख़रीद लाना; उसे पीकर वे सो जायेंगे। मैं तुम्हारे ऊपर निगरानी नहीं रखूंगा।'

"वह अच्छा आदमी था। मैंने एक बाल्टी वोद्का की ख़रीदी; और जब सिपाही नशे में धुत्त हो गये तो मैं अपने बूट और पुराना फ़ौजी ओवरकोट पहनकर दरवाज़े से बाहर निकल गया। मैं इस इरादे से दीवार के पास गया कि मैं उसे फांद जाऊंगा; लेकिन वहां पानी भरा था, और मैं अपने आख़िरी बचे हुए कपड़े ख़राब करने को तैयार नहीं था। मैं फाटक की ओर गया।

"संतरी बंदूक़ लिये auf und ab* चक्कर लगा रहा था, उसने मेरी ओर देखा। 'Qui vive?'—sagte er auf einmal**, और मैंने कोई जवाव नहीं दिया। 'Qui vive?' उसने एक बार फिर कहा, और मैंने इस बार भी कोई जवाव नहीं दिया। 'Qui vive?' उसने तीसरी वार कहा, और इस वार मैं भाग खड़ा हुआ! मैं पानी में कूद पड़ा, और दूसरी दीवार पर चढ़कर दौड़ने लगा। Ich sprang in's Wasser, kletterte auf die andere Seite und machte mich aus dem Staube.

"सारी रात मैं सड़क पर दौड़ता रहा; लेकिन जव सवेरा होने लगा तो मुझे डर लगा कि मैं पहचान लिया जाऊंगा और मैं रई के ऊंचे-ऊंचे खेतों में छिप गया। वहां मैंने घुटने टेककर हाथ जोड़े और अपने परमपिता को धन्यवाद दिया कि उसने मुझे बचा लिया और शांतचित्त होकर सो गया।

"मैं शाम को उठा और फिर चल पड़ा। अचानक एक बड़ी-सी जर्मन गाड़ी, जिसमें दो घोड़े जुते हुए थे, मेरे विल्कुल पास आ गयी। गाड़ी में अच्छे कपड़े पहने हुए एक आदमी बैठा था, जो अपना पाइप पी रहा था और मेरी ओर देख रहा था। मैं धीरे-धीरे चलने लगा कि गाड़ी आगे निकल जाये; लेकिन जब मैंने अपनी रफ़्तार धीमी की तो गाड़ी ने भी अपनी रफ़्तार धीमी कर दी और वह आदमी मुझे घूरने लगा। मैं तेज़ चलने लगा तो गाड़ी की रफ़्तार भी तेज़ हो गयी और वह आदमी लगातार मुझे घूरता रहा। मैं सड़क के किनारे बैठ गया; उस आदमी ने अपने घोड़े रोक दिये और मुझे देखने लगा। 'नौजवान,' वह बोला, 'इतनी देर में कहां जा रहे हो?' मैंने कहा, 'मैं फ़्रैंकफ़र्ट जा रहा हूं।'—'मेरी गाड़ी में बैठ जाओ; काफ़ी जगह है, मैं तुम्हें वहां पहुंचा दूंगा।... तुम्हारे पास कोई सामान क्यों नहीं है? तुम्हारी दाढ़ी बनी हुई क्यों नहीं है? और तुम्हारे कपड़े कीचड़ में सने हुए क्यों हैं?' जब मैं उसके पास बैठ गया तो उसने मुझसे पूछा। 'मैं ग़रीब आदमी हूं' मैंने कहा। 'मैं कहीं मेहनत-मज़दूरी करना चाहता हूं; और मेरे कपड़े कीचड़ में सने हुए इसलिए हैं कि मैं सड़क पर गिर

* इधर से उधर। (जर्मन)

** "कौन है?" (फ़्रांसीसी)। उसने अचानक कहा। (जर्मन)

पड़ा था।' – 'तुम्हारी यह बात सच नहीं है, नौजवान,' उसने कहा। 'सड़क तो इस वक़्त सूखी है।'

"और मैं चुप रहा।

"'मुझे सारी बात सच-सच बता दो,' उस नेक आदमी ने मुझसे कहा। 'तुम कौन हो, और तुम कहां से आये हो? तुम सूरत से मुझे अच्छे लगते हो, और अगर तुम ईमानदार आदमी होगे तो मैं तुम्हारी मदद करूंगा।'

"और मैंने उसे सब कुछ सच-सच बता दिया। वह बोला, 'बहुत अच्छी बात है, नौजवान। मेरे रस्सियों के कारख़ाने में चलो। मैं तुम्हें काम दूंगा, कपड़े दूंगा, और पैसे दूंगा, और तुम मेरे साथ रहना।'

"और मैंने कहा, 'बहुत अच्छी बात है।'

"हम रस्सियों के कारख़ाने में गये, और उस भले आदमी ने अपनी बीवी से कहा, 'यह एक ऐसा नौजवान है जो अपने देश के लिए लड़ा और दुश्मन की क़ैद से भागकर आ गया; इसके पास न घर है, न कपड़े, न रोटी। यह मेरे साथ रहेगा। इसे कुछ साफ़ कपड़े दे दो और खाना खिला दो।'

"मैं डेढ़ साल तक रस्सियों के कारख़ाने में रहा, और मेरा मालिक मुझे इतना पसंद करने लगा कि वह किसी तरह मुझे जाने ही नहीं देता था। उस वक़्त मैं ख़ूबसूरत आदमी था; मैं नौजवान था, लंबा क़द, नीली आंखें और रोमनों जैसी नाक; और Madame L...* (मैं उनका नाम नहीं बता सकता), मेरे मालिक की बीवी, नौजवान और ख़ूबसूरत औरत थीं और वह मुझ पर लट्टू हो गयीं।

"जब वह मुझसे मिलीं तो उन्होंने मुझसे कहा, 'साहब मायर, तुम्हारी मां तुम्हें क्या कहती हैं?' मैंने कहा, 'कार्लख़ेन।'

"और वह बोलीं, 'कार्लख़ेन, यहां मेरे पास आकर बैठो।'

"मैं उनके बग़ल में बैठ गया; तब वह बोलीं, 'कार्लख़ेन, मुझे प्यार करो!'

"मैंने उन्हें प्यार किया, और वह बोलीं, 'कार्लख़ेन, मैं तुमसे इतना प्यार करती हूं कि अब मुझसे बर्दाश्त नहीं होता,' और यह

---

* मादाम एल० (फ़्रांसीसी)।

कहकर वह सिर से पांव तक कांप उठीं।"

कार्ल इवानिच इसके बाद काफ़ी देर चुप रहे; और अपनी नेकी-भरी नीली आंखें नचाकर उन्होंने सिर हिलाया और मुस्कराने लगे, जैसा कि लोग सुखद संस्मरणों के प्रभाव में करते हैं।

"हां," उन्होंने आराम-कुर्सी पर ठीक से जमकर बैठते हुए और अपना ड्रेसिंग-गाऊन चारों ओर लपेटते हुए फिर कहना शुरू किया। "मैंने अपनी ज़िंदगी में बहुत कुछ देखा है, अच्छा भी और बुरा भी; लेकिन भगवान मेरा साक्षी है," उन्होंने अपने पलंग के सिरहाने किर-मिच पर कढ़ी हुई ईसा मसीह की तस्वीर की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, "कोई भी यह नहीं कह सकता कि कार्ल इवानिच बेईमान आदमी था! साहब एल० ने मेरे साथ जो उपकार किया था उसका बदला मैं कलंकित कृतघ्नता से चुकाने को तैयार नहीं था; इसलिए मैंने उनके यहां से भाग आने का फ़ैसला किया। रात को जब सब लोग सो गये तब मैंने अपने मालिक के नाम एक ख़त लिखा, उसे अपने कमरे में मेज़ पर रख दिया, अपने कपड़े और तीन थेलर लिये और चुपचाप बाहर सड़क पर निकल आया। किसी ने मुझे देखा नहीं, और मैं सड़क पर चल पड़ा।"

अध्याय १०

बाक़ी दास्तान

"मैं अपनी मां से नौ साल से नहीं मिला था; मुझे यह तक नहीं मालूम था कि वह ज़िंदा भी थीं या उनकी हड्डियां किसी सीलन-भरी क़ब्र में सड़ रही थीं। मैं अपनी पितृभूमि लौट आया। शहर पहुंचकर मैंने गुस्ताव मायर का पता पूछा, जो काउंट सोम्मरब्लाट के असामी थे, और लोगों ने मुझे बताया, 'काउंट सोम्मरब्लाट तो मर चुके हैं, और गुस्ताव मायर बड़ी सड़क पर रहते हैं और शराब की दुकान चलाते हैं।' मैंने अपनी नयी वास्कट पहनी, एक ख़ूबसूरत-सा कोट पहना (जो मुझे कारख़ाने के मालिक ने भेंट किया था), अपने बाल

ठीक से संवारे, और डैडी की शराब की दुकान में जा पहुंचा। मेरी बहन Mariechen* दुकान में बैठी थी; उसने मुझसे पूछा कि मुझे क्या चाहिये। मैंने कहा, 'एक गिलास शराब मिल सकती है?' इस पर उसने कहा, 'Vater,** एक नौजवान एक गिलास शराब मांग रहा है।' और डैडी ने कहा, 'तो नौजवान को एक गिलास शराब दे दो।' मैं मेज़ पर बैठ गया, शराब का अपना गिलास ख़ाली किया, अपना पाइप सुलगाया, और डैडी, Mariechen और Johann को देखता रहा, जो उस वक़्त तक दुकान में आ चुका था। बातचीत के दौरान डैडी ने मुझसे कहा, 'नौजवान, शायद तुम्हें मालूम होगा कि हमारी फ़ौज इस वक़्त कहां है?' मैंने कहा, 'मैं ख़ुद फ़ौज से आ रहा हूं; वह Wien*** के पास है।' डैडी बोले, 'हमारा बेटा सिपाही था; नौ बरस पहले उसका ख़त आया था; अब हमें यह भी नहीं मालूम कि वह ज़िंदा है या मर गया। मेरी बीवी हरदम उसके लिए रोती रहती है।...' मैं पाइप का धुआं उड़ाते हुए बोला, 'आपके बेटे का नाम क्या था, और वह कहां सिपाही था? शायद मैं उसे जानता हूं।'—'उसका नाम कार्ल मायर था और वह आस्ट्रियाई सेना में था,' पापा ने कहा। 'वह तुम्हारी ही तरह लंबा और ख़ूबसूरत था,' मेरी बहन Mariechen बोली। 'आपके कार्ल को जानता हूं,' मैंने कहा। 'Amalia!—sagte auf einmal mein Vater,**** 'इधर आओ; यह नौजवान हमारे कार्ल को जानता है!' और मेरी प्यारी मां पीछेवाले दरवाज़े से अंदर आयीं। मैंने उन्हें फ़ौरन पहचान लिया। 'तुम हमारे कार्ल को जानते हो?' उन्होंने कहा, मेरी ओर देखा, बेहद पीली पड़ गयीं और कांपने लगीं। 'जी हां, मैंने उसे देखा है,' मैंने कहा और मेरी हिम्मत नहीं हुई कि आंखें उठाकर उनकी तरफ़ देखूं; मेरा कलेजा मुंह को आ रहा था। 'मेरा कार्ल ज़िंदा है!' मां ने कहा, 'भगवान की कृपा है! कहां है वह, मेरा प्यारा कार्ल? अगर मैं उसे बस एक बार भी देख पाती, अपने प्यारे बेटे को, तो मैं चैन से मर जाती;

---

* मारीख़ेन। (जर्मन)

** डैडी। (जर्मन)

*** विआना। (जर्मन)

**** अमालिया! मेरे बाप ने अचानक कहा। (जर्मन)

लेकिन भगवान की मर्ज़ी ऐसी नहीं है,' और यह कहकर वह रोने लगीं।... मुझसे यह बर्दाश्त न हो सका।... 'मां,' मैंने कहा, 'मैं हूं तुम्हारा कार्ल!' और वह मेरी बांहों में गिर पड़ीं।..."

कार्ल इवानिच ने अपनी आंखें मूंद लीं और उनके होंट कांपने लगे।

"Mutter,—sagte ich,—ich bin ihr Sohn, ich bin ihr Karl! und sie stürzte mir in die Arme," उन्होंने अपने आपको कुछ संभालते हुए और अपने गालों पर बहते हुए बड़े-बड़े आंसुओं को पोंछते हुए दोहराया।

"लेकिन भगवान की मर्ज़ी यह नहीं थी कि मैं अपने आख़िरी दिन अपने देश में गुज़ारूं। दुःखी रहना मेरे भाग्य में लिखा था। das Unglück verfolgte mich überall!..* मैं अपनी जन्मभूमि में कुल तीन महीने रहा। एक इतवार को मैं कॉफ़ी हाउस में बियर का जग ख़रीदकर पी रहा था, पाइप का धुआं उड़ा रहा था और दोस्तों से राजनीति के बारे में, और सम्राट् फ़्रैंज़ के बारे में, नेपोलियन के बारे में और लड़ाई के बारे में बातें कर रहा था, और हममें से सभी अपनी-अपनी राय ज़ाहिर कर रहे थे। हम लोगों के पास एक अजीब-से सज्जन स्लेटी रंग का Überrock** पहने बैठे कॉफ़ी पी रहे थे, पाइप का धुआं उड़ा रहे थे और एक शब्द भी नहीं बोल रहे थे। Er rauchte sein Pfeifchen und schwieg still. जब Nachtwächter*** ने रात के दस बजने की हांक लगायी तो मैंने अपनी हैट उठायी, पैसे दिये और घर चला गया। आधी रात के लगभग किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। मैं जाग पड़ा और मैंने पूछा, 'कौन है?'—'Macht auf!'**** 'पहले बताओ तुम कौन हो,' मैंने कहा, 'तब मैं दरवाज़ा खोलूंगा। Ich sagte: 'Sagt, wer ihr seid, und ich werde aufmachen.'—'Macht auf im Namen des Gesetzes!'*****

---

* मुसीबत हर जगह मेरा पीछा करती रही। (जर्मन)

** कोट। (जर्मन)

*** चौकीदार। (जर्मन)

**** दरवाज़ा खोलो! (जर्मन)

***** क़ानून के नाम पर मैं कहता हूं कि दरवाज़ा खोल दो! (जर्मन)

मैंने दरवाजा खोल दिया। दो सिपाही बंदूकें लिये दरवाज़े पर खड़े थे, और स्लेटी रंग का Überrock पहने वही अजनबी जो हमारे पास कॉफ़ी-हाउस में बैठा था कमरे में आ गया। वह जासूस था! Er war ein Spion!.. 'मेरे साथ चलो,' जासूस ने कहा। 'अच्छी बात है,' मैंने कहा। ... मैंने अपने बूट पहने, पतलून चढ़ाकर गेलिस लगायी और कमरे में टहलने लगा। मेरा ख़ून खौल रहा था। मैंने कहा, 'यह पाजी है।' जब मैं दीवार के पास पहुंचा जहां तलवार लटकी थी, मैंने झपटकर तलवार पकड़ ली और बोला, 'तू जासूस है। बचा अपने आपको! Du bist ein Spion; verteidige dich!' मैंने उसे ein Hieb* दिया दाहिनी तरफ़, ein Hieb दिया बायीं तरफ़, और एक सिर पर। जासूस गिर पड़ा! मैंने अपना सूटकेस और अपना बटुआ उठाया और खिड़की के बाहर कूद गया। Ich nahm meinen Mant elsack und Beutel und sprang zum Fenster hinaus. Ich kam nach Ems;** वहां मेरी जान-पहचान जनरल साज़िन से हो गयी। वह मुझे पसंद करने लगे, उन्होंने राजदूत से कहकर मेरा पासपोर्ट बनवा दिया और बच्चों को पढ़ाने के लिए मुझे अपने साथ रूस ले आये। जब जनरल साज़िन मरे तो आपकी मां ने मुझे अपने पास बुलाया। 'कार्ल इवानिच,' वह बोलीं, 'मैं अपने बच्चों को तुम्हारी निगरानी में सौंपती हूं: उनको अगर तुम प्यार से रखोगे तो मैं तुम्हें कभी नहीं निकालूंगी, मैं ऐसा बंदोबस्त कर दूंगी कि तुम्हारा बुढ़ापा आराम से कट जाये।' अब वह सिधार चुकी हैं तो सब कुछ भुला दिया गया है। बीस साल नौकरी करने के बाद अब मैं अपने बुढ़ापे में रूखी रोटी के एक टुकड़े के लिए दर-दर भीख मांगूं। ... भगवान सब देखता है और सब जानता है, और उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कुछ भी नहीं हो सकता. मुझे तो, बच्चो, बस आप लोगों के लिए अफ़सोस है!" कार्ल इवानिच ने अपनी बात ख़त्म करते हुए कहा और मेरा हाथ थामकर अपनी ओर खींच लिया और कलेजे से लगाकर मेरे सिर पर प्यार कर लिया।

---

* एक बार। (जर्मन)
** मैं एम्स चला गया। (जर्मन)

अध्याय ११

बुरे नंबर

मातम का साल पूरा हुआ और नानी के दु:ख का बोझ कुछ कम हो गया; और वह फिर कभी-कभार मेहमानों से मिलने लगीं, ख़ास तौर पर हमारी उम्र के बच्चों, लड़कों और लड़कियों से।

ल्यूबा की वर्षगांठ के दिन, १३ दिसंबर को, प्रिंसेस कोर्नाकोवा और उनकी बेटियां, वलाख़ीना और सोनेच्का, इलेंका ग्रैप, और दोनों छोटे ईविन-बंधु खाने से पहले आये।

हालांकि हमें नीचे ड्राइंग-रूम में बातें करने, हंसने और भागने-दौड़ने की आवाज़ें सुनायी दे रही थीं, लेकिन हम लोग अपनी सुबह की पढ़ाई पूरी करने से पहले उन लोगों के साथ शामिल नहीं हो सकते थे। पढ़ाई के कमरे में टंगे हुए टाइम-टेबुल में लिखा था: "Lundi, de 2 à 3, Maître d'Histoire et de Géographie"*; और छुट्टी पाने से पहले हमें इतिहास के मास्टर साहब के लिए इंतज़ार करना था, उनकी बातें सुननी थीं, और उन्हें विदा करना था। दो बजकर बीस मिनट हो चुके थे, लेकिन अभी तक सड़क पर भी उनका कहीं नाम-निशान नहीं था, जहां मैं इस प्रबल इच्छा के साथ अपनी नज़रें जमाये हुए था कि वह कभी दिखायी ही न दें।

"मैं समझता हूं कि आज लेबेदेव नहीं आयेंगे," वोलोद्या ने एक क्षण के लिए स्मारागदोव की किताब पर से, जिसमें से वह अपना सबक़ याद कर रहा था, अपनी नज़र उठाते हुए कहा।

"मैं भगवान से मना तो यही रहा हूं कि वह न आयें, क्योंकि मुझे कुछ भी मालूम नहीं है। लो, वह आ रहे हैं," मैंने निराश भाव से कहा।

वोलोद्या उठकर खिड़की के पास आ गया।

"नहीं, वह नहीं हैं, यह कोई और साहब हैं," उसने कहा। "ढाई बजे तक इंतज़ार कर लेते हैं," उसने अंगड़ाई लेते हुए और

---

* सोमवार को २ बजे से ३ बजे तक, इतिहास और भूगोल के अध्यापक। (फ़्रांसीसी)

अपना सिर खुजाते हुए कहा, जैसा कि वह काम के बीच में एक मिनट के लिए आराम करते समय करता था; "अगर वह ढाई बजे तक न आये, तो हम St.-Jérôme से कह देंगे कि वह हमारी कापियां उठाकर रख दें।

"वह आयें ही क्यों," मैंने भी अंगड़ाई लेते हुए और कैदानोव की किताब दोनों हाथों से अपने सिर के ऊपर हिलाते हुए कहा।

करने को और कुछ न होने की वजह से मैंने अपने सबक़ की जगह पर किताब खोली और उसे पढ़ने लगा। सबक़ लंबा और मुश्किल था। मुझे उसके बारे में कुछ भी मालूम नहीं था, और मैं महसूस कर रहा था कि मैं कुछ भी याद नहीं कर पाऊंगा, इसलिए और भी कि उस वक़्त मैं ऐसी घबराहट-भरी झुंझलाहट की हालत में था जिसमें दिमाग़ किसी भी विषय पर ध्यान केंद्रित करने से इंकार कर देता है।

इतिहास के अपने पिछले सबक़ के बाद (जो मुझे हमेशा सबसे ज्यादा बेवक़ूफ़ी का और उकतानेवाला विषय लगता था) लेबेदेव ने St.-Jérôme से मेरी शिकायत की थी और मेरी रेकार्ड-बुक में मुझे दो नंबर दिये थे, जो बहुत बुरे समझे जाते थे। St.-Jérôme ने उसी वक़्त मुझसे कहा था कि अगर अगले सबक़ में मुझे तीन से कम नंबर मिले तो मुझे सख़्त सज़ा दी जायेगी। अगले सबक़ का वक़्त आ गया था, और मैं मानता हूं कि मुझे बहुत डर लग रहा था।

अपरिचित सबक़ पढ़ने में मैं इतनी बुरी तरह खोया हुआ था कि बाहरवाले छोटे कमरे में बारिश के जूते उतारे जाने की आवाज़ सुनकर मैं चौंक पड़ा। मैं अभी ठीक से मुड़कर देख भी नहीं पाया था कि दरवाज़े में मास्टर साहब का चेचकरू चेहरा, जिसे देखकर ही मुझे इतनी नफ़रत होती थी, और उनकी बेडौल जानी-पहचानी आकृति दिखायी दी और नीला कोट जो उन्होंने पहन रखा था और उसके बटन विद्वानों के ढंग से कसकर बंद कर रखे थे।

आहिस्ता से उन्होंने अपनी हैट खिड़की पर और अपनी नोटबुकें मेज़ पर रखीं, अपना कोट पीछे से खींचकर ठीक किया (मानो ऐसा करना बहुत जरूरी रहा हो), और मुंह से हवा निकालते हुए अपनी जगह पर बैठ गये।

"अच्छा, साहबजादो," उन्होंने अपने पसीने से भीगे हुए हाथ

एक-दूसरे पर रगड़ते हुए कहा, "पहले तो हम एक वार फिर इस पर नज़र डाल लें कि पिछले सवक़ में हमने क्या पढ़ा था, और उसके वाद मैं तुम लोगों को मध्य-युग की उसके वाद की घटनाओं के वारे में वताऊंगा।"

इसका मतलव था: अपना सवक़ सुनाओ।

जिस वक़्त वोलोद्या अपना सवक़ ऐसी आसानी और ऐसे इतमीनान से सुना रहा था जो किसी विषय को अच्छी तरह जानने से पैदा होता है, मैं विना किसी उद्देश्य के वाहर सीढ़ियों पर निकल गया; और चूंकि मुझे नीचे जाने की इजाज़त नहीं थी इसलिए यह विल्कुल स्वाभाविक ही था कि मैं अनजाने ही सीढ़ियों की चौरस जगह पर पहुंच गया। लेकिन मैं दरवाज़े के पीछे अपने पुराने अड्डे की ओर जा ही रहा था कि अचानक मीमी, जो हमेशा से मेरी मुसीवतों की जड़ रही थीं, अचानक आकर मुझसे टकरा गयीं। "आप यहां?" उन्होंने धमकी-भरी नज़रों से मुझे देखते हुए कहा और फिर नौकरानियों की कोठरी की ओर देखा, और फिर एक वार मेरी ओर।

मैं विल्कुल अपराधी जैसा अनुभव कर रहा था, एक तो इसलिए कि मैं पढ़ाई के कमरे में नहीं था और दूसरे इसलिए भी कि मैं ऐसी जगह पर था जहां मेरे होने की कोई ज़रूरत नहीं थी। इसलिए मैं सिर झुकाये चुप्पी साधे रहा और पश्चात्ताप की अत्यंत मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति का साकार रूप वना खड़ा रहा।

"वहुत वुरी वात है!" मीमी ने कहा। "आप यहां कर क्या रहे हैं?" मैं चुप रहा। "नहीं, यह न समझिये कि वात यहीं ख़त्म हो जायेगी," वह अपनी उंगलियों के जोड़ों से सीढ़ियों का हत्था खटखटाती हुई कहती रहीं; "मैं काउंटेस को इसके वारे में सव कुछ वताऊंगी।"

जव मैं पढ़ाई के कमरे में लौटा उस वक़्त तीन वजने में पांच मिनट रह गये थे। मास्टर साहव वोलोद्या को अगला सवक़ इस तरह समझा रहे थे जैसे उन्हें मेरे वहां मौजूद होने का आभास ही न हो। अपना व्याख्यान समाप्त करके वह अपनी कापियां समेटने लगे, और वोलोद्या पढ़ाई का हिसाव लिखने का कार्ड लेने दूसरे कमरे में चला गया; और यह सोचकर मेरे मन को वहुत शांति मिली कि सारा मामला ख़त्म हो गया और मुझे भुला दिया गया।

लेकिन इतने में मास्टर साहब अचानक द्वेष-भरी मुस्कराहट के साथ मेरी ओर पलट पड़े।

"मैं उम्मीद करता हूं कि आपने अपना सबक़ याद कर लिया होगा, जनाब," उन्होंने अपने हाथ आपस में रगड़ते हुए कहा।

"जी हां," मैंने जवाब दिया।

"तो मुझे सेंट लुई के क्रूसेडों के बारे में कुछ बताओ," उन्होंने अपनी कुर्सी पर संभलकर बैठते हुए और विचारमग्न होकर अपने पांवों को एकटक देखते हुए कहा। "पहले तो मुझे वे कारण बताओ जिनकी वजह से फ़्रांस के राजा ने क्रॉस उठाया था," उन्होंने भवें चढ़ाकर और उंगली दवात की तरफ़ उठाकर कहा। "फिर मुझे उस मुहिम की कुछ मोटी-मोटी ख़ास बातें बताओ," उन्होंने अपनी कलाई कुछ इस तरह घुमाते हुए कहा, मानो कोई चीज़ पकड़ने की कोशिश कर रहे हों। "और, आख़िर में, यह बताओ कि इस क्रूसेड का योरप के राज्यों पर आम तौर पर," उन्होंने मेज़ के बायीं तरफ़ अपनी कापियां पटकते हुए कहा, "और फ़्रांस के राज्य पर ख़ास तौर पर क्या असर पड़ा," उन्होंने मेज़ के दायीं तरफ़ कापियां पटकते हुए सिर दायीं ओर झुकाकर अपनी बात ख़त्म की।

मैंने कई बार थूक निगला, खांसा, अपना सिर एक ओर को झुकाया, और चुप रह गया। फिर मेज़ पर पड़े हुए चिड़िया के पर के एक क़लम को उठाकर उसे नोच-नोचकर टुकड़े-टुकड़े करने लगा और चुप रहा।

"मेहरबानी करके वह क़लम मुझे दे दीजिये," मास्टर साहब ने अपना हाथ बढ़ाकर कहा; "काम की चीज़ है। तो बताइये, जनाब?"

"लू-ए-राजा-सेंट लुई-एक अच्छा और समझदार-ज़ार-ज़ार-था।"

"क्या कहा, जनाब?"

"ज़ार था। उसने येरूशलम जाने की ठानी और राज-काज की बागडोर अपनी मां को सौंप दी।"

"मां का नाम क्या था?"

"ब-ब-लांका।"

"क्या कहा, जनाब? बुलांका*?"

---

*हल्के बादामी रंग के घोड़े का नाम।—अनु०

मैं जवर्दस्ती सूखी हंसी हंस दिया।

"हुंः। कुछ और जानते हैं आप?" उन्होंने पूछा।

अव तो जितना नुक़सान होना था हो चुका था, इसलिए मैं खांसा और जो भी वेसिर-पैर की वातें मेरे दिमाग़ में आयीं मैं कहने लगा। मास्टर साहव चुपचाप वैठे उस क़लम से, जो उन्होंने मुझसे ले लिया था, मेज़ पर की धूल झाड़ रहे थे; वह मेरे कान से परे एकटक देखते रहे और उन्होंने दोहराया, "अच्छा, वहुत अच्छा, जनाव।" मुझे इस वात का आभास था कि मुझे कुछ भी नहीं मालूम था और मैं अपने विचारों को उस तरह विल्कुल नहीं व्यक्त कर रहा था जिस तरह मुझे करना चाहिये था; और यह देखकर मैं वेहद घवरा उठा कि मास्टर साहव ने न तो मुझे रोका और न ही मेरी किसी वात को ठीक किया।

"उसने येरूशलम जाने की क्यों ठानी?" उन्होंने मेरे शव्दों को दोहराते हुए कहा।

"क्योंकि-इसलिए कि-इस वास्ते कि-क्योंकि," मैं वुरी तरह वहकता रहा और इसके आगे एक शव्द भी नहीं कह पाया; मैं महसूस कर रहा था कि अगर मास्टर साहव साल-भर तक चुप रहते और इसी तरह सवालिया नज़रों से मुझे घूरते रहते तो भी मेरे मुंह से कोई आवाज़ न निकलती। मास्टर साहव तीन मिनट तक मुझे घूरते रहे; फिर उनके चेहरे पर घोर विषाद का भाव फैल गया और उन्होंने वड़ी संजीदगी से वोलोद्या से कहा, जो उसी समय कमरे में आया था:

"ज़रा मुझे रेकार्ड-वुक तो देना।"

वोलोद्या ने रेकार्ड-वुक उन्हें दे दी और वड़ी सावधानी से उसके पास ही कार्ड भी रख दिया।

मास्टर साहव ने रेकार्ड-वुक खोली और वड़ी सावधानी से दवात में क़लम डुवोकर वोलोद्या के नाम के सामने इतिहास और आचरण के शीर्षकों के नीचे अपनी ख़ूवसूरत लिखाई में पांच-पांच नंवर लिख दिये। फिर वह अपना क़लम उस स्तंभ के ऊपर साधे रहे जिसमें मेरे नंवर लिखे जाते थे; उन्होंने मेरी ओर देखा, स्याही छिड़की और विचार में डूव गये।

अचानक उनके हाथ में लगभग अदृश्य-सी गति हुई, और बहुत ख़ूबसूरत लिखाई में एक का अंक और उसके आगे पूर्ण विराम उभर आया ; हाथ एक वार फिर हिला और आचरण के स्तंभ में एक और एक का अंक और पूर्ण विराम लिख दिया गया।

रेकार्ड-बुक सावधानी से बंद करके मास्टर साहब उठे और दरवाज़े की ओर चले गये मानो वह मेरी नज़र को देख ही न रहे हों, जिससे निराशा, अनुनय-विनय, और ग्लानि सभी की अभिव्यक्ति हो रही थी।

"मास्टर साहब," मैंने कहा।

"नहीं," वह बोले। वह फ़ौरन समझ गये थे कि मैं उनसे क्या कहना चाहता था ; "यह पढ़ने का कोई तरीक़ा नहीं है। मैं मुफ़्त के पैसे नहीं लूंगा।"

मास्टर साहब ने अपने वारिश के जूते और अपना लवादा पहना और वहुत संभालकर अपना गुलूवंद वांधा। मेरे साथ जो कुछ हो चुका था उसके बाद किसी को क्या परवाह हो सकती थी! उनके लिए तो बस क़लम चलाना था, लेकिन मेरे लिए तो सबसे बड़ी मुसीवत हो गयी।

"पढ़ाई ख़त्म हो गयी?" St.-Jérôme ने कमरे में आते हुए पूछा।

"जी हां।"

"मास्टर साहब आप लोगों से ख़ुश रहे?"

"जी हां," वोलोद्या ने कहा।

"आपको कितने नंवर मिले?"

"पांच।"

"और Nicolas* को?"

मैं कुछ नहीं वोला।

"शायद चार मिले हैं," वोलोद्या ने कहा।

वह जानता था कि मेरा वचाव करना ज़रूरी था, भले ही वह सिर्फ़ उसी दिन के लिए हो। अगर मुझे सज़ा मिलनी ही है, तो आज तो न मिले जवकि घर में मेहमान आये हुए हैं।

---

* निकोलेंका। (फ़्रांसीसी)

"Voyons, messieurs!"* (St.-Jérôme को अपनी हर बात से पहले voyons जोड़ देने की आदत थी), "faites votre toillette et descendons."**

अध्याय १२

छोटी-सी चाभी

हम लोग नीचे उतरकर अभी ठीक से मेहमानों से सलाम-दुआ भी नहीं कर पाये थे कि खाने का एलान कर दिया गया। पापा बड़ी तरंग में थे (उस वक़्त ताश में उनकी क़िस्मत अच्छी चल रही थी); उन्होंने ल्यूबा को चांदी का एक डिनर-सेट भेंट किया, और खाने के वक़्त उन्हें याद आया कि घर में उनके पास मिठाई का एक डिब्बा भी रखा था जो वह उसके लिए लाये थे।

"नौकर को क्यों भेजा जाये? बेहतर होगा कि तुम्हीं चले जाओ, निकोलेंका," उन्होंने मुझसे कहा। "चाभियां बड़ी मेज़ पर रखी हैं, सीप की तश्तरी में, तुम तो जानते ही हो। उनमें से सबसे बड़ी चाभी से दायीं ओर की दूसरी दराज़ खोल लेना। उसमें तुम्हें वह डिब्बा और काग़ज़ में लिपटी हुई कुछ मिठाइयां मिलेंगी; सब यहां लेते आना।"

"और आपके सिगार भी लेता आऊं?" मैंने पूछा क्योंकि मैं जानता था कि खाने के बाद वह हमेशा सिगार मंगाते थे।

"हां, लेते आना, लेकिन कोई और चीज़ मत छूना," उन्होंने मेरे पीछे से पुकारकर कहा।

मुझे चाभियां वहीं मिल गयीं जहां उन्होंने बताया था; मैं दराज़ खोलने ही जा रहा था कि उसी गुच्छे में लगी हुई एक बहुत छोटी-सी चाभी देखकर मेरे मन में यह जानने की इच्छा पैदा हुई कि वह चाभी कहां की है।

---

* अच्छा, साहबान! (फ़ांसीसी)

** अपने कपड़े ठीक कीजिये और नीचे जाइये। (फ़ांसीसी)

मेज़ पर तरह-तरह की बहुत-सी चीज़ों के बीच किनारे के जंगले के पास एक नक़्क़ाशीदार संदूक़ची पड़ी थी जिसमें एक छोटा-सा ताला लगा हुआ था; मेरे मन में विचार आया कि उस छोटी-सी चाभी को लगाकर देखा जाये कि वह उस ताले की तो नहीं है। मेरी कोशिश बिल्कुल कामयाब रही; संदूक़ची खुल गयी, और उसमें मुझे काग़ज़ों का एक ढेर मिला। जिज्ञासा ने मुझे उन काग़ज़ों का रहस्य जानने के लिए इतना प्रबल उकसावा दिया कि अंत:करण की आवाज़ दबकर रह गयी, और मैं यह छानबीन करने लगा कि उस संदूक़ची में क्या-क्या था।...

. . . .

अपने सभी बड़ों के प्रति, और ख़ास तौर पर पापा के प्रति असंदिग्ध आदर की बचकाना भावना मेरे अंदर इतनी प्रबल थी कि जो कुछ मैंने देखा उससे कोई निष्कर्ष निकालने से मेरे दिमाग़ ने सहज ही इंकार कर दिया, मैंने महसूस किया कि पापा अपनी अलग ही एक सुंदर दुनिया में रहते होंगे, जहां तक मैं पहुंच नहीं सकता था और जो मेरी समझ में नहीं आ सकती थी, और उनके जीवन के रहस्यों को कुरेदने की कोशिश करना मेरे लिए एक तरह का अनाधिकार प्रयास होगा।

इसलिए पापा की संदूक़ची में मुझे अनायास ही जिन बातों का पता चल गया था उनकी मेरे मन पर कोई स्पष्ट छाप नहीं पड़ी बल्कि मेरे मन में अस्पष्ट-सा यही आभास बना रहा कि मैंने कोई ग़लत काम किया है। मैं बहुत लज्जित और बेचैन महसूस कर रहा था।

इस भावना के कारण मेरा जी चाहा कि मैं संदूक़ची जल्दी से जल्दी बंद कर दूं, लेकिन ऐसा लगता है कि उस अविस्मरणीय दिन मेरे भाग्य में हर तरह की मुसीबत झेलना बदा था। ताले के सूराख़ में चाभी डालकर मैंने उसे उल्टी तरफ़ घुमा दिया; यह सोचकर कि ताला बंद हो गया है मैंने चाभी खींच ली, और – लो, ग़ज़ब हो गया! चाभी का ऊपरी हिस्सा अलग होकर मेरे हाथ में आ गया। मैं ताले में अटके हुए उसके आधे हिस्से में उसे जोड़ देने और किसी जादू के ज़ोर से उसे निकाल लाने का व्यर्थ प्रयास करता रहा। आख़िरकार, मुझे हारकर इस भयावह विचार को मान लेना पड़ा कि मैंने एक नया

अपराध किया था, जिसका भांडा उसी दिन फूट जायेगा जब पापा अपने पढ़ने के कमरे में लौटकर आयेंगे।

मीमी की शिकायत, बुरे नंबर और वह छोटी-सी चाभी! इससे ज़्यादा बुरा मेरे साथ और क्या हो सकता था। मीमी की शिकायत की वजह से नानी, बुरे नंबरों की वजह से St.-Jérôme और उस चाभी की वजह से पापा—सभी मेरे ऊपर टूट पड़ेंगे, और सो भी हद से हद उस दिन शाम तक।

"मेरा क्या हाल होगा? अरे, यह क्या किया मैंने?" मैंने ज़ोर से कहा और पापा के पढ़ने के कमरे के मुलायम क़ालीन पर इधर-उधर टहलने लगा। "ख़ैर," मिठाई और सिगार निकालकर मैंने मन ही मन कहा, "जो होना होगा वह तो होकर रहेगा," और यह सोचकर मैं भागकर घर में पहुंच गया।

इस भाग्यवादी कथन का, जो मैंने अपने बचपन में निकोलाई से सुना था, मेरे जीवन की सभी कठिन घड़ियों में मुझ पर हितकर प्रभाव पड़ता रहा और इससे मुझे कुछ देर के लिए तसल्ली भी मिल जाती थी। जब मैंने बड़े कमरे में क़दम रखा तो मेरी मनोदशा कुछ उद्विग्न और अस्वाभाविक होते हुए भी बेहद उल्लसित थी।

अध्याय १३

विश्वासघातिनी

खाने के बाद petits jeux* शुरू हुए और मैंने उनमें दिल खोलकर हिस्सा लिया। 'कोने में बिल्ली' नामक खेल में हिस्सा लेते हुए मैं कोर्नाकोव परिवार की गवर्नेस से टकरा गया, जो हम लोगों के साथ खेल रही थी, उसकी पोशाक पर अनजाने ही पांव पड़ गया और वह फट गयी। यह देखकर कि सभी लड़कियों को, ख़ास तौर पर सोनेच्का को यह देखकर बड़ा संतोष हुआ था कि गवर्नेस अपनी पोशाक में टांके लगाने के लिए नाक-भौं चढ़ाकर नौकरानियों की कोठरी

* छोटे-मोटे खेल। (फ़्रांसीसी)

में चली गयी थी, मैंने एक बार फिर उन लड़कियों को यही सुख प्रदान करने का निर्णय किया। कमरे में गवर्नेस के वापस आते ही मैं इस नेक इरादे से उसके चारों ओर कुलांचें भरने लगा, और मैंने यह सिलसिला तब तक जारी रखा जब तक मुझे अपनी एड़ी एक बार फिर उसकी स्कर्ट पर रखकर उसे फाड़ देने का सुअवसर नहीं मिल गया। सोनेच्का और प्रिंसेसों के लिए अपनी हंसी रोकना मुश्किल हो गया, और उन्हें हंसता देखकर मैं गर्व से और भी फूल उठा; लेकिन St.-Jérôme जो शायद मेरी इस हरकत को देख रहे होंगे, मेरे पास आये और उन्होंने त्योरियां चढ़ाकर कहा (जिसे मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता था) कि मेरे मनबहलाव पर किसी अपशकुन की छाया है, और यह भी धमकी दी कि अगर मैंने अपनी हरकतें न छोड़ीं तो ख़ुशियां मनाने का दिन होने के बावजूद वह मेरी ऐसी ख़बर लेंगे कि मुझे पछताना पड़ेगा।

लेकिन मैं उस आदमी जैसी उद्विग्नता की हालत में था जो जुए में अपनी जेब की रक़म से ज़्यादा हार चुका हो और हिसाब करने से डर रहा हो, और इस संकट से उबर सकने की किसी उम्मीद के बिना अपनी सामर्थ्य से बढ़कर दांव लगा रहा हो, महज़ इसलिए कि वास्तविकता की ओर से उसका ध्यान हटा रहे। मैं ढिठाई से मुस्कराकर उनके पास से हट आया।

'कोने में बिल्ली' वाले खेल के बाद किसी ने वह खेल शुरू कर दिया जिसे हम लोग Lange Nase* कहते थे। आमने-सामने दो क़तारों में कुर्सियां रख दी जाती थीं, और लड़कों और लड़कियों की अलग-अलग दो टोलियां बना दी जाती थीं, जिनमें से हर एक बारी-बारी से अपना जोड़ीदार चुन लेता था।

छोटी प्रिंसेस हर बार ईविन-बंधुओं में से छोटे को चुनती थी; कात्या या वोलोद्या को चुनती थी या इलेंका को; सोनेच्का हर बार सेर्योजा को लेती थी, और जिस बात पर मुझे बेहद हैरत होती थी वह यह थी कि जब सेर्योजा जाकर ठीक उसके सामने बैठ जाता था तो वह जरा भी नहीं शरमाती थी। वह अपनी मीठी गूंजती हुई हंसी हंसती थी और उसकी ओर देखकर इस तरह सिर हिलाती थी मानो

* लंबी नाक। (जर्मन)

कह रही हो कि तुमने ठीक अनुमान लगाया। मुझे कोई कभी नहीं चुनता था और यह सोचकर मेरे स्वाभिमान को गहरी ठेस लगती थी कि मैं फ़ालतू था, फुटकर था; कि हर बार उन लोगों को मेरे बारे में कहना पड़ता था, "अब कौन बच गया? हां, निकोलेंका; तो, कोई उसे भी ले ले।"

इसलिए जब मेरी यह अंदाज़ा लगाने की बारी आती कि मुझे किसने चुना है तो मैं बड़ी निडरता से सीधा या तो अपनी बहन के पास चला जाता था या बदसूरत प्रिंसेसों में से एक के पास, और दुर्भाग्यवश मेरा अनुमान कभी ग़लत नहीं होता था। सोनेच्का इतनी बुरी तरह सेर्योजा ईविन में खोयी हुई लगती थी कि उसके लिए मानो मेरा कोई अस्तित्व ही नहीं था। मैं मन ही मन उसे विश्वासघातिनी कहने लगा था, मालूम नहीं किन बातों की बुनियाद पर, क्योंकि उसने कभी यह वादा नहीं किया था कि वह मुझे चुनेगी और सेर्योजा को नहीं चुनेगी; लेकिन मुझे पक्का विश्वास था कि उसका आचरण अत्यंत घृणास्पद था।

खेल के बाद मैंने देखा कि वह विश्वासघातिनी, जिससे मैं नफ़रत करता था लेकिन फिर भी जिसकी ओर से मैं अपनी नज़रें नहीं हटा पाता था, सेर्योजा और कात्या के साथ एक कोने में जाकर बैठ गयी थी, जहां वे कोई रहस्यमयी बातचीत कर रहे थे। उनका भेद जानने के लिए मैं पियानो के पीछे सरक गया और वहां से मैंने यह दृश्य देखा: कात्या ने कैंब्रिक के एक रूमाल के दो कोने पकड़कर उससे सोनेच्का और सेर्योजा के सिरों के बीच एक परदा-सा बना रखा था। "नहीं, आप हार गयी हैं; अब आपको जुर्माना देना पड़ेगा!" सेर्योजा बोला। सोनेच्का अपराधिनी की तरह उसके सामने खड़ी थी; उसकी दोनों बांहें बग़ल में झूल रही थीं और वह शरमाकर कह रही थी, "नहीं, मैं नहीं हारी हूं; भला मैं हारी हूं, mademoiselle Catherine?"* "मैं तो किसी का पक्ष नहीं लेती," कात्या ने जवाब दिया, "हार तो आप गयी हैं, ma chère** सोनेच्का, आपको जुर्माना देना पड़ेगा।"

---

* कुमारी कात्या (फ़्रांसीसी)

** मेरी प्यारी। (फ़्रांसीसी)

कात्या के मुंह से ये शब्द अभी निकले ही थे कि सेर्योजा ने सोनेच्का के ऊपर झुककर उसे प्यार कर लिया। उसने उसके गुलाबी होंटों पर भरपूर प्यार किया था। और सोनेच्का इस तरह खिलखिलाकर हंस दी थी जैसे यह कोई बात ही न हो, जैसे यह कोई बड़ी मज़े की बात हो। कैसी भयानक बात थी! ओह, कपटी विश्वासघातिनी कहीं की!

अध्याय १४

ग्रहण

सहसा मेरे मन में नारी जाति के प्रति आम तौर पर, और सोनेच्का के प्रति ख़ास तौर पर घृणा पैदा हो गयी; मैं अपने मन को विश्वास दिलाता रहा कि इन खेलों में मज़े की कोई बात नहीं थी कि वे लड़कियों के लायक़ खेल थे, और मैं कोई ऐसा धमाका करने के लिए बेचैन था, कोई ऐसा असाधारण साहस का काम करना चाहता था कि सब लोग चकित रह जायें। ऐसा करने का मौक़ा मिलने में देर न लगी।

St.-Jérôme किसी चीज़ के बारे में मीमी से बातें करने के बाद कमरे से चले गये, मुझे उनके क़दमों की आहट सुनायी दे रही थी कि वह सीढ़ियां चढ़ रहे थे, और फिर वह आहट ठीक हमारे ऊपर पढ़ाई के कमरे की दिशा में सुनायी दी। मेरे मन में यह विचार आया कि मीमी ने उन्हें बता दिया होगा कि उन्होंने पढ़ाई के वक़्त मुझे कहां देखा था, और वह रेकार्ड-बुक देखने गये थे। उस वक़्त मैं St.-Jérôme का मुझे सज़ा देने की इच्छा के अलावा जीवन में कोई और उद्देश्य ही नहीं समझता था। मैंने कहीं पढ़ रखा था कि बारह और चौदह वर्ष के बीच की उम्र के बच्चों में, अर्थात् उन बच्चों में जो बाल्यावस्था के संक्रमण काल में होते हैं, तोड़-फोड़, आगज़नी और यहां तक कि हत्या करने की प्रवृत्ति बहुत पायी जाती है। अपने बाल्यावस्था के दिनों की याद करते हुए, और ख़ास तौर पर उस मनोदशा को जिसमें उस अभागे दिन मैं था, मुझे स्पष्ट रूप से समझ में आता है कि उस दिन किसी अत्यंत भयानक अपराध के हो जाने की संभावना

थी, ऐसा अपराध जो हानि पहुंचाने के किसी उद्देश्य या इरादे के बिना ही केवल कौतूहलवश, केवल कुछ करने की सहज वृत्ति के कारण किया गया हो। कभी-कभी ऐसा समय आता है जब मनुष्य के सामने उसका भविष्य ऐसे डरावने रंगों में प्रकट होता है कि वह अपनी कल्पना दृष्टि उस पर टिकाने से डरता है, वह अपने दिमाग़ को सोचने से बिल्कुल रोक देता है, और अपने आपको यह समझाने की कोशिश करता है कि भविष्य कभी होगा नहीं और अतीत कभी था ही नहीं। ऐसे क्षणों में, जब विवेक इच्छा के हर निर्णय का पहले से मूल्यांकन नहीं करता, और शारीरिक सहज प्रवृत्तियां ही जीवन की एकमात्र क्रियात्मक शक्ति रह जाती हैं, मैं सहज ही समझ सकता हूं कि कोई बच्चा अपनी अनुभव-हीनता के कारण किस तरह विशेष रूप से इस प्रकार की मनोदशा की ओर प्रवृत्त होता होगा। उस समय वह बिना किसी भय या संकोच के, और होंटों पर जिज्ञासा की मुस्कान लिये, उस घर को भी आग लगा सकता है जिसमें उसके भाई, उसके मां-बाप, जिनसे उसे बेहद प्यार है, सो रहे हों। इसी क्षणिक विवेकहीनता के प्रभाव के अधीन—वस्तुतः अपनी खब्तुलहवासी में—सत्रह साल का एक किसान लड़का जो उस बेंच के पास, जिस पर उसका बूढ़ा बाप औंधे मुंह पड़ा सो रहा है, अभी-अभी तेज़ की गयी कुल्हाड़ी की धार को देखते हुए अचानक कुल्हाड़ी को भांजता है और मूर्खतापूर्ण जिज्ञासा के साथ सोनेवाले की गर्दन से निकलते हुए ख़ून के फ़व्वारे को देखता रहता है; उसी विवेक-हीनता और सहज जिज्ञासा के प्रभाव के अधीन मनुष्य किसी बहुत ऊंची खड़ी चट्टान की कगर पर रुककर सोचता है, "अगर मैं नीचे कूद पड़ूं तो?" या वह भरी हुई पिस्तौल अपनी कनपटी पर रखकर सोचता है, "अगर मैं इसकी लिबलिबी दबा दूं तो?" या किसी ऐसे आदमी को, जिसके प्रति समूचे समाज के मन में एक विशेष आदर की भावना है, घूरते हुए वह सोचता है, "अगर मैं उसके पास जाकर उसकी नाक पकड़ लूं और कहूं, 'आओ, यार, चलें!' तो कैसा रहे?"

इस प्रकार की आंतरिक उद्विग्नता और विवेकहीनता के अधीन, जब St.-Jérôme ने नीचे उतरकर मुझसे कहा कि मुझे उस शाम वहां रहने का कोई अधिकार नहीं था क्योंकि मेरा आचरण इतना बुरा रहा था और मैंने पढ़ाई भी इतनी बुरी की थी, और इसलिए मैं फ़ौरन

ऊपर चला जाऊं, तो मैंने अपनी जीभ निकालकर उन्हें चिढ़ाने के लिए दिखायी और कहा कि मैं अपनी जगह से हिलूंगा नहीं।

एक क्षण तक विस्मय और क्रोध के कारण St.-Jérôme के मुंह से एक शब्द भी नहीं निकला।

"C'est bien,"* उन्होंने मुझ पर टूटते हुए कहा; "मैं कई बार पहले भी कह चुका हूं कि मैं आपकी पिटाई करूंगा लेकिन आपकी नानी के कहने की वजह से हर बार आप बच गये; लेकिन अब मैं देखता हूं कि बर्च की क़मची से पिटाई हुए बिना आप मानेंगे नहीं, और आज आपकी सारी हरकतें ऐसी रही हैं कि उनकी यही सज़ा दी जानी चाहिये।"

वह इतने ज़ोर से बोल रहे थे कि हर आदमी ने सुन लिया कि वह क्या कह रहे थे। मैं महसूस कर रहा था कि ख़ून मेरे दिल की ओर असाधारण तेज़ी से दौड़कर आ रहा था, जिसकी वजह से मेरा दिल इतने ज़ोर से धड़क रहा था कि मेरे चेहरे का रंग उड़ गया और मेरे होंट अनायास ही कांपने लगे। मेरी सूरत उस वक़्त बहुत डरावनी लग रही होगी क्योंकि St.-Jérôme मेरी नज़रें बचाकर जल्दी से मेरे पास आये और उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया; लेकिन उनके हाथ के स्पर्श का आभास होते ही मैं आपे से बाहर हो गया, झटककर मैंने अपना हाथ छुड़ा लिया और अपनी पूरी ताक़त से, जितनी भी एक बच्चे में हो सकती है, उनको एक हाथ जड़ दिया।

"हो क्या गया है तुम्हें?" वोलोद्या ने मेरे पास आकर कहा; वह मेरा आचरण देखकर चकित और भयभीत हो उठा था।

"छोड़ दो मुझे!" मैंने चिल्लाकर कहा; मेरे आंसू तेज़ी से बह रहे थे; "आप लोगों में से कोई भी मुझे प्यार नहीं करता है, न ही कोई यह समझता है कि मैं कितना दुखी हूं। आप सब लोग दुष्ट और नफ़रत के क़ाबिल हैं," मैंने गुस्से से पागल होकर वहां मौजूद सभी लोगों की ओर मुड़कर कहा।

लेकिन इतने में St.-Jérôme अपने चेहरे पर, जिसका रंग पीला पड़ गया था, दृढ़ संकल्प की मुद्रा लिये हुए आये, और इससे पहले कि

---

* अच्छा। (फ़ांसीसी)

मैं अपने बचाव के लिए पैंतरा बांधूं उन्होंने बड़ी सख़्ती से मेरे दोनों हाथों को शिकंजे की तरह जकड़ लिया और मुझे खींच ले चले। ग़ुस्से के मारे मेरा सिर चकरा रहा था। मुझे बस इतना याद है कि जब तक मुझमें तनिक भी शक्ति रही मैं जान की बाज़ी लगाकर अपने सिर और घुटनों की मदद से लड़ता रहा। मुझे याद है कि मेरी नाक कई बार किसी के कूल्हे से टकराती रही और किसी का कोट बार-बार मेरे मुंह में आता रहा, और मुझे इस बात का आभास रहा कि किसी के पांव मेरे चारों ओर मौजूद हैं, और मुझे धूल की महक और violette* के उस सेंट की सुगंध का भी आभास रहा जिसे लगाने का St.-Jérôme को शौक़ था।

पांच मिनट बाद दुछत्ती का दरवाज़ा मेरे पीछे बंद हो गया।

"वसीली!" उन्होंने विजयोल्लास में डूबे हुए घृणास्पद स्वर में कहा, "बर्च की क़मची तो लाना..."

अध्याय १५

कल्पना-चित्र

उस समय क्या मैं इसकी कल्पना भी कर सकता था कि मुझ पर जो सारी विपदाएं पड़ी थीं उनसे मैं ज़िंदा बचकर निकल सकूंगा, और यह कि एक दिन ऐसा भी आयेगा जब मैं शांत भाव से उन घटनाओं को याद कर सकूंगा।

जब मुझे याद आता था कि मैंने क्या किया था तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि मेरा अंजाम क्या होगा, लेकिन इस बात का धुंधला-धुंधला पूर्वाभास मुझे था कि मेरा भविष्य हमेशा के लिए अंधकारमय हो चुका है।

पहले तो नीचे और मेरे चारों ओर बिल्कुल चुप्पी रही, या अपनी प्रबल आंतरिक उद्विग्नता के कारण कम से कम मुझे लगा ऐसा ही;

---

* वायलेट। (फ़्रांसीसी)

लेकिन धीरे-धीरे मैं अपने कानों में पड़नेवाली विभिन्न आवाज़ों को अलग-अलग पहचानने लगा। वसीली ऊपर आया और खिड़की की सिल पर झाड़ू जैसी कोई चीज़ फेंककर उसने जम्हाई ली और संदूक़ पर लेट गया। नीचे से St.-Jérôme की ऊंची आवाज़ आ रही थी (वह मेरी ही चर्चा कर रहे होंगे), फिर बच्चों की आवाज़ें, फिर हंसने की और भागने दौड़ने की; और कुछ ही मिनट बाद घर का हर काम-काज पूर्ववत् चलने लगा था, जैसे किसी को यह मालूम ही न हो या कोई इसके बारे में सोच ही न रहा हो कि मैं वहां उस अंधेरी दुछत्ती में बंद था।

मैं रो नहीं रहा था लेकिन मेरे दिल पर कोई पत्थर जैसा बोझ रखा हुआ था। मेरी उद्वेलित कल्पना के सामने विचार और दृश्य बिजली जैसी तेजी से आ-जा रहे थे; फिर भी मुझ पर जो विपदा आ पड़ी थी उसकी याद उनके आकर्षक क्रम को बार-बार भंग कर देती थी, और मैं एक बार फिर अपने अंजाम के बारे में अनिश्चय, भय और निराशा की अनंत भूलभुलैयों में खो जाता था।

उस वक़्त मेरे मन में यह विचार उठा कि कोई तो वजह होगी कि सभी लोग मुझे नापसंद ही नहीं बल्कि मुझसे नफ़रत तक करते थे। (उस समय मुझे इस बात का पक्का विश्वास था कि नानी से लेकर कोचवान फ़िलिप तक हर आदमी मुझसे नफ़रत करता था और मेरी तकलीफ़ों में सबको मजा आता था।) मैं सोचा करता था, शायद मैं अपने मां-बाप का बेटा हूं ही नहीं, न वोलोद्या का भाई हूं, बल्कि एक अभागा अनाथ बच्चा हूं, जिसे कहीं पड़ा पाया गया था और तरस खाकर गोद ले लिया गया था; और इस बेतुके विचार से मुझे न सिर्फ़ थोड़ी उदासी-भरी राहत मिलती थी, बल्कि यह बात मुझे बिल्कुल मुमकिन मालूम होती थी। यह सोचकर मैं खुश होता था कि मैं दुःखी इसलिए नहीं था कि इसमें मेरा कोई दोष था, बल्कि इसलिए कि जन्म से ही मेरी क़िस्मत ऐसी थी, और यह कि मेरा नसीब अभागे कार्ल इवानिच जैसा ही था।

"लेकिन अब जबकि मुझे इस भेद का पता चल गया है तो इसे छिपाया क्यों जाये?" मैंने मन ही मन कहा। "कल मैं पापा के पास जाकर उनसे कहूंगा, 'पापा आप मुझसे मेरे जन्म का भेद बेकार छिपाते

हैं; वह मुझे मालूम है।' वह कहेंगे, 'अच्छी बात है – चूंकि तुम्हें मालूम ही है – कभी न कभी तो तुम्हें इस बात का पता चलना ही था। तुम मेरे बेटे नहीं हो; मैंने तुम्हें गोद लिया है, और अगर तुम उस प्यार के क़ाबिल साबित हुए जो मैंने तुम्हें दिया है तो मैं तुम्हें कभी अपने से अलग नहीं करूंगा।' और तब मैं उनसे कहूंगा, 'पापा, हालांकि मुझे आपको इस नाम से पुकारने का कोई हक़ नहीं है, और इस वक़्त मैं आपको आखिरी बार पापा कह रहा हूं – लेकिन मैंने आपको हमेशा प्यार किया है और हमेशा करता रहूंगा, और मैं इस बात को कभी नहीं भूलूंगा कि आपने मेरे साथ उपकार किया है; लेकिन अब मैं आपके घर में नहीं रह सकता। यहां कोई भी मुझसे प्यार नहीं करता, और St.-Jérôme ने तो मुझे तबाह कर देने का प्रण कर रखा है। या तो उसे आपके घर को छोड़ना होगा या मुझे, क्योंकि मैं क्या कर बैठूं इसके लिए मैं ज़िम्मेदार न हूंगा। मुझे उस आदमी से इतनी नफ़रत है कि मैं कुछ भी कर सकता हूं। मैं उसे मार डालूंगा,' – मैं उनसे यही कहूंगा, 'पापा, मैं उसे मार डालूंगा।' पापा मुझे समझाने-बुझाने लगेंगे, लेकिन मैं उनकी बात अनसुनी करके कहूंगा, 'नहीं, मेरे दोस्त, मेरे हितैषी, हम लोग साथ-साथ नहीं रह सकते; मुझे जाने दीजिये।' और तब मैं उनके गले से लिपट जाऊंगा और न जाने क्यों फ़्रांसीसी में कहूंगा, 'Oh mon pére, oh mon bienfaiteur, donne moi pour la dernière fois ta bénédiction et que la volonté de dieu soit faite!'* और वहां उस अंधेरे गोदाम में संदूक़ पर बैठकर मैं इस विचार पर फूट-फूटकर रोने लगा। फिर मुझे अचानक उस शर्मनाक सज़ा की याद आयी जो मुझे मिलनेवाली थी; वास्तविकता अपने यथार्थ रूप में मेरे सामने आकर खड़ी हो गयी, और मेरे सारे ख़्वाब हवा हो गये।

इसके बाद मैं कल्पना करने लगा कि मैं आज़ाद होकर घर से बहुत दूर पहुंच गया हूं। मैं हुसारों की फ़ौज में भरती होकर लड़ाई पर चला जाता हूं। दुश्मन चारों ओर से हम पर टूट पड़ता है; मैं

---

* 'ओ मेरे पापा! ओ मेरे हितैषी! मुझे अंतिम बार अपना आशीर्वाद दीजिये और भगवान की इच्छा पूरी होने दीजिये। (फ़्रांसीसी)

अपनी तलवार घुमाता हूं और एक को मौत के घाट उतार देता हूं, फिर दूसरे को, और फिर तीसरे को। आख़िरकार घावों और थकन से चूर होकर मैं ज़मीन पर गिर पड़ता हूं और चिल्लाता हूं, "जीत लिया!" जनरल पास आकर पूछता है, "हमें उबारनेवाला कहां है?" सब लोग मेरी तरफ़ इशारा करते हैं, वह मेरे गले से लिपट जाता है और आंखों में ख़ुशी के आंसू भरकर चिल्लाता है, "जीत लिया!" मैं अच्छा हो गया हूं और एक काले रूमाल में अपनी बांह अटकाये त्वेर्सकोई बुलिवार पर टहल रहा हूं। मुझे जनरल बना दिया गया है! मैं सम्राट् से मिलता हूं, और वह पूछते हैं, "यह घायल नौजवान कौन है?" उन्हें बताया जाता है कि यह मशहूर सूरमा निकोलाई है। सम्राट् मेरे पास आकर कहते हैं, "मैं तुम्हें धन्यवाद देता हूं। तुम मुझसे जो चाहो मांग सकते हो।" मैं बड़े अदब से झुककर सलाम करता हूं, और अपनी तलवार के सहारे टिककर कहता हूं, "महाराजाधिराज, मुझे ख़ुशी है कि मुझे अपनी मातृभूमि के लिए ख़ून बहाने का मौक़ा मिला, और मैं ख़ुशी-ख़ुशी उसके लिए प्राण भी देने को तैयार हूं: फिर भी चूंकि आप इतने मेहरबान हैं, इसलिए मैं आपसे बस एक चीज़ मांगना चाहता हूं – मुझे इस बात की इजाज़त दीजिये कि मैं अपने दुश्मन इस विदेशी St.-Jérôme को जान से मार दूं।" मैं धमकी-भरे अंदाज़ से St.-Jérôme के सामने आकर खड़ा हो जाता हूं और उससे कहता हूं, "तुम ही मेरी मुसीबतों की जड़ हो, à genoux!"* लेकिन अचानक मुझे ख़्याल आता है कि असली St.-Jérôme किसी भी क्षण क़मची लिये हुए अंदर आ सकता है; और एक बार फिर मुझे अपनी असलियत दिखायी देती है कि मैं अपने देश को दुश्मन से छुटकारा दिलानेवाला जनरल नहीं, बल्कि बहुत ही दुखिया, मुसीबत का मारा प्राणी हूं।

मेरे मन में ईश्वर का ध्यान आता है और मैं बड़ी ढिठाई से उससे पूछता हूं कि वह मुझे दंड क्यों दे रहा है। "मैं नित्य सवेरे-शाम प्रार्थना करना कभी नहीं भूला, फिर मुझे यह मुसीबत क्यों उठानी पड़ रही है?" मैं बिना किसी संशय के यह कह सकता हूं कि किशोरावस्था में

---

* घुटनों के बल बैठ जाओ! (फ़्रांसीसी)

मैं जिन धार्मिक शंकाओं का शिकार रहा उनकी दिशा में पहला क़दम तभी उठाया गया था, इसलिए नहीं कि दुःख ने मुझे शिकायत करने और अविश्वास का मार्ग अपनाने के लिए उकसाया, बल्कि इसलिए कि आत्मिक बिखराव की उस घड़ी में विधाता के अन्याय का जो विचार मेरे मन में प्रवेश कर गया था वह और उस पूरे दिन की एकांत की भावना बड़ी तेज़ी से बढ़ी और उन्होंने उसी तरह जड़ पकड़ ली जैसे वर्षा होने के बाद गीली मिट्टी में डाला गया घातक बीज जड़ पकड़ लेता है। फिर मैं सोचने लगा कि मैं मरनेवाला हूं, और मेरी कल्पना-दृष्टि के सामने दुछत्ती में मेरे बजाय एक निर्जीव शरीर को पाकर St.-Jérôme की बौखलाहट का स्पष्ट चित्र उभर आया। नताल्या साविश्ना के मुंह से सुने हुए उन क़िस्सों को याद करके कि मरनेवाले की आत्मा चालीस दिन तक उसके घर से नहीं जाती, मैं कल्पना करने लगा कि मैं नानी के घर के सभी कमरों में अदृश्य उड़ रहा हूं और ल्यूबा के हार्दिक दुःख के आंसुओं को, नानी की व्यथा को और St.-Jérôme के साथ पापा की बातचीत को बड़े ध्यान से देख रहा हूं। "वह बहुत अच्छा लड़का था," पापा आंखों में आंसू भरकर कहेंगे। "जी हां," St.-Jérôme जवाब देगा, "लेकिन बेहद निकम्मा और बदमाश था।" फिर पापा कहेंगे, "आपको मरे हुए का सम्मान करना चाहिये। आपकी वजह से उसकी मौत हुई; आपने उसे डरा दिया; आप उसके साथ जिस अपमानजनक व्यवहार की तैयारी कर रहे थे उसे वह बर्दाश्त नहीं कर सका। दूर हो जाओ मेरे सामने से, दुष्ट!"

और St.-Jérôme अपने घुटनों के बल गिर पड़ेगा, और रोयेगा, और गिड़गिड़ाकर दया की भीख मांगेगा। चालीस दिन पूरे हो जाने पर मेरी आत्मा स्वर्ग की ओर उड़ जायेगी; वहां मुझे कोई आश्चर्यजनक हद तक सुंदर, सफ़ेद, पारदर्शी और लंबी-सी चीज़ दिखायी देगी, और मैं महसूस करूंगा कि वह मां हैं। और यह सफ़ेद-सी कोई चीज़ मेरे चारों ओर फैल जायेगी, और मेरा दुलार करेगी; लेकिन मैं बेचैनी महसूस करूंगा जैसे मैं उसे पहचानता ही नहीं हूं। "अगर यह सचमुच तुम ही हो," मैं कहूंगा, "तो मुझे और साफ़ दिखायी दो ताकि मैं तुम्हें गले लगा लूं।" और उसकी आवाज़ मुझे जवाब

देगी, "यहां हम सभी ऐसे हैं। मैं तुम्हें इससे ज़्यादा अच्छी तरह गले नहीं लगा सकती: क्या इस तरह तुम्हें सुख नहीं मिलता?" – "हां, मिलता है! लेकिन तुम मुझे गुदगुदा नहीं सकतीं और मैं तुम्हारे हाथों को चूम नहीं सकता।..." – "कोई ज़रूरत भी नहीं है। यहां ऐसे ही बहुत सुंदर है," वह कहेगी, और मैं महसूस करूंगा कि वहां सब कुछ सचमुच बहुत सुंदर है, और हम साथ-साथ ऊपर उठते जायेंगे, ऊंचे और ऊंचे। फिर अचानक ऐसा लगा कि मेरी आंख खुल गयी है और मैं अपने आपको फिर उसी अंधेरी दुछत्ती में संदूक़ पर पड़ा हुआ पाता हूं, मेरे गाल आंसुओं से भीगे हुए हैं, मेरा दिमाग़ बिल्कुल खाली है, और मैं यही शब्द बार-बार दोहरा रहा हूं: "हम ऊपर उठते जा रहे हैं, ऊंचे और ऊंचे।" बड़ी देर तक मैं अपनी सारी शक्ति को केंद्रित करके अपनी स्थिति को समझने की कोशिश करता रहा; लेकिन उस समय मेरा दिमाग़ बस जिस चीज़ की कल्पना कर सका वह था एक अनंत, अगम्य और भयानक अंधकारमय विस्तार। मैंने आनंद के उन्हीं सुख-सपनों में फिर से खो जाने की कोशिश की जिनका क्रम वास्तविकता की चेतना ने भंग कर दिया था; लेकिन मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जैसे ही मैंने अपने पिछले कल्पना-चित्रों के मार्गों पर अग्रसर होने की चेष्टा की वैसे ही मुझे इस बात का आभास हो गया कि उन मार्गों पर चलते रहना असंभव है, और इससे भी अधिक आश्चर्य इस बात पर हुआ कि उसमें मुझे अब कोई आनंद भी नहीं मिल रहा था।

अध्याय १६

अंत भला सो भला

मैंने रात दुछत्ती में ही बितायी, और कोई भी मेरे पास नहीं आया; कहीं अगले दिन जाकर, मतलब यह कि इतवार को, मुझे पढ़ाई के कमरे के बग़लवाली एक कोठरी में ले जाकर फिर बंद कर दिया गया। मैं उम्मीद करने लगा कि मेरा दंड कोठरी में बंद कर दिये जाने तक ही सीमित रहेगा; और ताज़गी देनेवाली मीठी नींद,

खिड़कियों के कांच पर जमी हुई बर्फ़ के बेल-बूटों पर खेलती धूप की किरनों और सड़कों पर दिन में आम तौर पर होनेवाले कोलाहल के प्रभाव के अधीन मेरे विचार व्यवस्थित होते गये। फिर भी मेरा एकांत बहुत ही दम घोटनेवाला था; मैं इधर-उधर घूमना-फिरना चाहता था, मेरी आत्मा के अंदर जो कुछ खौल रहा था उसके बारे में किसी को बताना चाहता था, और मेरे पास कोई भी जीव नहीं था। मेरी स्थिति इसलिए और भी दुःखद थी कि मेरे लिए लाख अरुचिकर होने पर भी मैं St.-Jérôme को अपने कमरे में बिल्कुल शांत भाव से टहल-टहलकर मस्त धुनों पर सीटी बजाते हुए सुनने से नहीं बच सकता था। मुझे पूरा विश्वास था कि उसका जी सीटी बजाने को बिल्कल नहीं चाह रहा था लेकिन वह बस मुझे सताने के लिए ऐसा कर रहा था।

दो बजे St.-Jérôme और वोलोद्या नीचे चले गये और निकोलाई मेरा खाना लेकर आया, और जब मैंने उसे बताया कि मैंने क्या किया था और मेरा क्या अंजाम होनेवाला था, तो उसने कहा:

"अरे, मालिक! दुःखी न हो; अंत भला सो भला।"

इस कहावत से, जिसने आगे चलकर भी कितनी ही बार मेरी मन की दृढ़ता को क़ायम रखा, मेरे मन को कुछ शांति मिली; लेकिन इस बात की वजह से ही कि मुझे सिर्फ़ रूखी रोटी और पानी नहीं बल्कि बढ़िया-बढ़िया केकों के साथ पूरा खाना भेजा गया था, मुझे बहुत कुछ सोचने का मौक़ा मिला। अगर मेरे लिए केक न भेजे गये होते तो उसका मतलब होता कि मुझे कोठरी में बंद रखकर ही सज़ा दी जायेगी; अब पता यह चला कि मुझे असली सज़ा मिलना तो अभी बाक़ी था और अभी तक तो मुझे सिर्फ़ दूसरों से बस इसलिए अलग कर दिया गया था कि मेरा उन पर बुरा असर पड़ता। मैं अभी इस समस्या को सुलझाने में ही लगा हुआ था कि मेरे क़ैदखाने के ताले में चाभी घूमी और St.-Jérôme ने अत्यंत औपचारिक कठोर मुद्रा के साथ अंदर प्रवेश किया।

"नीचे आकर अपनी नानी के पास चलिये," उन्होंने मेरी ओर देखे बिना कहा।

कोठरी से जाने से पहले मैं अपने कोट की आस्तीनें साफ़ कर

लेना चाहता था जिन पर खरिया लगी हुई थी; लेकिन St.-Jérôme ने कहा कि इसकी क़तई कोई ज़रूरत नहीं है, मानो वह मुझे समझा रहे हों कि मेरी नैतिक दशा इतनी दयनीय थी कि अपने वाहरी रख-रखाव के बारे में मेरा परेशान होना बेकार था।

St.-Jérôme जिस वक़्त मेरा हाथ पकड़कर मुझे हॉल में से होकर ले जा रहे थे तो कात्या, ल्यूबा और वोलोद्या मुझे उसी तरह घूर रहे थे जिस तरह हम उन क़ैदियों को घूरते रहते थे जो हर सोमवार को हमारी खिड़कियों के पास से ले जाये जाते दिखायी पड़ते थे। और जब मैं नानी का हाथ चूमने के इरादे से उनकी कुर्सी की ओर बढ़ा, तो उन्होंने मेरी ओर से अपना मुंह फेर लिया और अपना हाथ अपने लबादे के नीचे छिपा लिया।

'अच्छा, बेटा," बहुत देर तक चुप रहने के बाद उन्होंने कहा, जिसके दौरान उन्होंने सिर से पांव तक मुझे ऐसी मुद्रा से देखा कि मेरी समझ में नहीं आया कि किधर देखूं या अपने हाथ कहां रखूं, "मुझे कहना पड़ता है कि आप मेरे प्यार की क़द्र करते है और सचमुच आपसे मुझे राहत मिलती है। Monsieur* St.-Jérôme, जिन्होंने मेरे कहने पर," उन्होंने हर शब्द चबा-चबाकर बोलते हुए कहा, "आप लोगों को पढ़ाने का ज़िम्मा लिया था, अब मेरे घर में नहीं रहना चाहते। और क्यों? प्यारे बेटे, आपकी वजह से। मैं उम्मीद करती थी कि वह आप लोगों का जितना ध्यान रखते हैं और आप लोगों के साथ जितनी मेहनत करते हैं उनका आप एहसान मानेंगे," थोड़ी देर चुप रहने के बाद उन्होंने अपनी बात ऐसे लहजे में जारी रखी जिससे पता चलता था कि उन्होंने अपना भाषण पहले से तैयार कर रखा था, "और आप उनकी सेवाओं का मूल्य समझेंगे; लेकिन आपने, बालिश्त-भर के लड़के ने, उन पर हाथ उठाने की हिम्मत की। बड़ा अच्छा किया! सचमुच बड़ा अच्छा किया!! मैं भी यह सोचने लगी हूं कि आप अच्छे सलूक की क़द्र कर ही नहीं सकते, और यह कि आपको ज़रूरत है ज़्यादा सख़्त तरीक़ों की। फ़ौरन माफ़ी मांगो उनसे,"

---

* साहब या श्रीमान। (फ़्रांसीसी)

उन्होंने St.-Jérôme की तरफ़ इशारा करते हुए कठोर आदेश के स्वर में कहा, "सुना कि नहीं ?"

मैंने कनखियों से नानी के हाथ की तरफ़ देखा, और, जब मेरी नज़र St.-Jérôme के कोट पर पड़ी तो मैंने मुंह फेर लिया और अपनी जगह से हिला नहीं; एक बार फिर मैंने महसूस किया कि मेरा दिल सर्द होकर जमा जा रहा है।

"क्यों, सुना नहीं मैं क्या कह रही हूं ?"

मैं सिर से पांव तक कांप गया, लेकिन हिला नहीं।

"निकोलेंका !" नानी ने कहा, जिन्होंने उस आंतरिक वेदना को समझ लिया होगा जिसे मैं झेल रहा था। "निकोलेंका !" उन्होंने आदेशपूर्ण स्वर के बजाय कुछ कोमलता से कहा, "क्या यह मेरा निकोलेंका है ?"

"नानी, चाहे जो कुछ हो जाये, मैं उनसे माफ़ी नहीं मांगूंगा," मैंने कहा और अचानक चुप हो गया; मैं महसूस कर रहा था कि अगर मैं एक शब्द भी बोला तो जिन आंसुओं की वजह से मेरा गला रुंधा जा रहा था वे फूटकर बह पड़ेंगे।

"मैं कहती हूं तुमसे; यह मेरा हुक्म है। चलो, मांगो माफ़ी।"

"मैं – मैं – नहीं मांगूंगा... मैं नहीं मांग सकता," मैंने सुबक-सुबककर कहा और जिन सिसकियों को मैं अब तक रोके हुए था वे निराशा की बाढ़ बनकर फूट पड़ीं।

"C'est ainsi que vous obéissez à votre seconde mère, c'est ainsi que vous reconnaissez ses bontés,"* St.-Jérôme ने दुःख में डूबे हुए स्वर में कहा। "à genoux!"

"हे भगवान, अगर उसको यह सब देखना पड़ा होता !" नानी ने मेरी ओर से मुंह फेरकर अपने आंसू पोंछते हुए कहा। "अगर उसने यह देखा होता ... वह तो अच्छा ही हुआ। नहीं, वह इस सदमे को कभी बर्दाश्त न कर पाती, कभी नहीं।"

यह कहकर नानी और भी फूट-फूटकर रोने लगीं। मैं भी रोता रहा, लेकिन मेरा कोई इरादा माफ़ी मांगने का नहीं था।

---

* इस तरह मानते हैं आप उनका उपकार जिन्होंने आपको मां की तरह पाला है ? यह है आपका तरीक़ा उनकी नेकी का बदला चुकाने का ? (फ़्रांसीसी)

"Tranquillisez-vous au nom du ciel, madame la comtesse,"* St.-Jérôme ने कहा।

लेकिन नानी ने उनकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया; उन्होंने अपने हाथों मे अपना चेहरा ढक लिया, और उनकी सिसकियां थोड़ी ही देर में हिचकियों और वेहोशी के दौरे में वदल गयीं। मीमी और गाशा सूंघने की दवा लिये सहमी हुई कमरे में भागी-भागी आयीं, और थोड़ी ही देर में सारे घर में दौड़ने-भागने और कानाफूसी की आवाज़ें सुनायी देने लगीं।

"वड़ा कमाल किया आपने, वड़ी तारीफ़ का काम किया," St.-Jérôme ने मुझे ऊपर ले जाते हुए कहा।

"हे भगवान, यह क्या किया मैंने? मैं भी कितना दुष्ट लड़का हूं!"

St.-Jérôme मुझे अपने कमरे में जाने का आदेश देकर अभी नीचे गये ही थे कि विना कुछ जाने कि मैं क्या कर रहा हूं मैं सड़क पर जानेवाली वड़ी सीढ़ियों की ओर भागा।

मुझे याद नहीं कि मेरा इरादा भाग जाने का था या डूव जाने का। मुझे वस इतना याद है कि दोनों हाथों से अपना मुंह ढांपकर, ताकि कोई मुझे देख न सके, मैं आंख मूंदकर झपटता हुआ दौड़कर सीढ़ियां उतर गया था।

"कहां जा रहे हो?" सहसा किसी जानी-पहचानी आवाज़ ने पूछा। "तुम्हारी ही तो तलाश थी मुझे, वच्चू।"

मैंने भागकर आगे निकल जाने की कोशिश की; लेकिन पापा ने मेरा हाथ पकड़ लिया और कड़ककर वोले:

"चुपचाप मेरे साथ चले आओ। मेरे कमरे में तुमने मेरी संदूक़ची छूने की हिम्मत कैसे की?" उन्होंने मुझे पीछे-पीछे घसीटते हुए छोटी-सी बैठक में ले जाकर पूछा। "वताओ! जवाव क्यों नहीं देते?" उन्होंने मेरा कान पकड़कर फिर पूछा।

"मुझे वहुत अफ़सोस है," मैंने कहा, "मालूम नहीं मुझे क्या हो गया था।"

---

* शान्त हो जाइये, भगवान के लिए, काउंटेस। (फ़्रांसीसी)

"अच्छा! तुम्हें नहीं मालूम कि तुम्हें क्या हो गया था! तो तुम्हें नहीं मालूम है, क्यों? नहीं मालूम है न? सचमुच नहीं मालूम है!" हर शब्द पर मेरा कान खींचते हुए वह बार-बार दोहराते रहे। "अब तो कभी किसी ऐसी चीज़ में अपनी नाक नहीं घुसेड़ोगे जिससे तुम्हारा कोई मतलब न हो? अब तो कभी नहीं करोगे ऐसा? नहीं करोगे न?"

मेरे कान में बहुत दर्द हो रहा था, लेकिन मैं रोया नहीं, और जिस नैतिक भाव का मुझे अनुभव हो रहा था वह सुखद ही था। पापा ने जैसे ही मेरा कान छोड़ा मैंने उनका हाथ पकड़ लिया और उसे आंसुओं से भिगोने लगा और चूमने लगा।

"मुझे और मारिये," मैंने रोते-रोते कहा। "मुझे और ज़ोर से मारिये, इतना मारिये कि मेरा अंग-अंग दुखने लगे; मैं बहुत बुरा लड़का हूं, बहुत दुष्ट और अभागा लड़का हूं!"

"तुम्हें क्या हो गया है?" उन्होंने मुझे धीरे से ढकेलते हुए कहा।

"नहीं, मैं नहीं जाऊंगा," मैंने उनका कोट कसकर पकड़ते हुए कहा। "मुझसे सभी नफ़रत करते हैं, यह मैं जानता हूं; लेकिन, भगवान के लिए, मेरी बात सुन लीजिये, मुझे बचा लीजिये, या मुझे घर से निकाल दीजिये। मैं उनके साथ नहीं रह सकता; वह मुझे नीचा दिखाने का कोई मौक़ा नहीं चूकते। वह मुझसे अपने सामने घुटने टिकवाते हैं। वह मेरी पिटाई करना चाहते हैं। मैं ऐसा नहीं होने दूंगा; मैं कोई छोटा बच्चा तो हूं नहीं। मैं इसे बर्दाश्त नहीं कर सकता, मैं मर जाऊंगा; मैं अपने आपको मार डालूंगा। उन्होंने नानी से कहा कि मैं दुष्ट हूं, जिसे सुनकर नानी की तबियत ख़राब हो गयी है, और अब वह मेरी वजह से मर जायेंगी। मैं—भगवान के लिए, मुझे कोड़े लगाइये! सब लोग मुझे...सता... ते... क्यों... हैं?"

आंसुओं से मेरा गला रुंधा जा रहा था। मैं दीवान पर बैठ गया और अपना सिर उनके घुटनों पर टिकाकर मैं इस तरह सिसकियां ले-लेकर रोने लगा कि मुझे ऐसा लगा कि मैं उसी क्षण मर जाऊंगा।

"रो क्यों रहे हो, बच्चे?" पापा ने मेरे ऊपर झुककर बड़े प्यार से पूछा।

"वह मेरे जल्लाद हैं... क़साई हैं। मैं... मर जाऊंगा... मुझसे

कोई प्यार नहीं करता!" मुझे बोलने में कठिनाई हो रही थी और मेरी हिचकियां बंध गयी थीं।

पापा मुझे गोद में उठाकर सोने के कमरे में ले गये। मैं सो गया।

जब मेरी आंख खुली तो बहुत देर हो चुकी थी। मेरे पलंग के पास एक मोमबत्ती जल रही थी, और हमारे परिवार के डाक्टर, मीमी और ल्यूबा कमरे में बैठे हुए थे। उनकी सूरतों से साफ़ लग रहा था कि उन्हें मेरे स्वास्थ्य के बारे में बहुत डर लग रहा था; लेकिन मैं बारह घंटे की अपनी नींद के बाद इतना अच्छा और हल्का महसूस कर रहा था कि मैं अपने बिस्तर से उछल खड़ा हुआ होता, लेकिन मैं उनके इस विश्वास को डिगाना नहीं चाहता था कि मैं बहुत बीमार था।

अध्याय १७

घृणा

हां, वह सच्ची घृणा की भावना थी। वैसी घृणा नहीं जिसके बारे में उपन्यासों में लिखा जाता है और जिसमें मुझे तनिक भी विश्वास नहीं है – जिस घृणा की वजह से आदमी को बदी करने में मज़ा आता है; बल्कि वह घृणा जिसकी वजह से दिल में किसी ऐसे आदमी के लिए बेहद नफ़रत पैदा होती है जो फिर भी आपके लिए सम्मान का पात्र होता है; जिस घृणा की वजह से उसके बाल, उसकी गर्दन, उसकी चाल, उसकी आवाज़, उसके हाथ-पांव, उसकी हर अदा अरुचि पैदा करती है, और साथ ही वह किसी अनजान शक्ति से अपनी ओर आकर्षित भी करता है और अपनी छोटी-से-छोटी हरकत को ध्यान से देखने के लिए मजबूर करता है। मेरी यही भावना St.-Jérôme के प्रति थी।

St.-Jérôme हमारे यहां डेढ़ साल से थे। अब निष्पक्ष भाव से उनका मूल्यांकन करने पर मुझे पता चलता है कि वह बहुत ही अच्छे फ़ांसीसी थे, लेकिन उनकी रूह तक फ़ांसीसी थी। वह बुद्धू नहीं थे;

वह अच्छे ख़ासे पढ़े-लिखे थे, और हम लोगों के प्रति अपने कर्त्तव्य बड़ी निष्ठा से पूरे करते थे; लेकिन उनमें वे प्रवृत्तियां भी थीं जो उनके देशवासियों की लाक्षणिक विशेषताएं हैं और जो रूसी स्वभाव के इतनी प्रतिकूल हैं – छिछोरे क़िस्म का अहंकार, दंभ, धृष्टता और अज्ञानजन्य आत्म-विश्वास। इन सब बातों से मुझे बहुत नफ़रत थी।

अलबत्ता नानी ने उन्हें बच्चों को पीटने के बारे में अपने विचार बता दिये थे और वह हम लोगों को बेंत मारने की हिम्मत नहीं करते थे; लेकिन इसके बावजूद वह हम लोगों को क़मची से पिटाई करने की धमकी अकसर देते रहते थे, ख़ास तौर पर मुझे, और fouetter* शब्द का उच्चारण fouatter की तरह बहुत ही बेहूदा ढंग से करते थे, और उनका लहजा ऐसा होता था जिससे संकेत मिलता था कि कोड़े से मेरी धुनाई करके उन्हें बेहद ख़ुशी होगी।

मुझे दंड की पीड़ा से बिल्कुल डर नहीं लगता था क्योंकि मैंने अभी तक उसे कभी अनुभव नहीं किया था; लेकिन इस विचारमात्र से कि St.-Jérôme शायद मुझे पीटें मैं दबे-दबे क्रोध और निराशा की हालत में पहुंच जाता था।

कार्ल इवानिच कभी-कभी झुंझलाकर रूलर से या अपनी पेटी से हम लोगों पर अपना ग़ुस्सा उतारा करते थे, लेकिन उसकी याद आने पर मुझे तनिक भी चिढ़ नहीं होती थी। मैं जिस वक़्त की बात कर रहा हूं (जब मैं चौदह साल का था) उस वक़्त अगर कार्ल इवानिच ने मुझे पीटा भी होता तो मैं बिल्कुल शांत भाव से उसे सहन कर लेता। कार्ल इवानिच को मैं प्यार करता था। मुझे पहले जब तक की याद थी तबसे वह हमेशा मौजूद रहे थे और मैं उन्हें परिवार का ही एक आदमी समझने का आदी हो गया था; लेकिन St.-Jérôme बहुत ही घमंडी और अहंकारी आदमी थे जिनके लिए मेरे मन में उस अनैच्छिक सम्मान के अलावा और कोई भावना नहीं थी जो सभी बड़ी उम्र के लोगों के प्रति मेरे अंदर पैदा हो जाती थी। कार्ल इवानिच एक हास्यास्पद बूढ़े आदमी थे, एक तरह के चाकर जिन्हें मैं अपने दिल से प्यार करता था, लेकिन सामाजिक प्रतिष्ठा के बारे में अपनी बचकाना

---

* कोड़े लगाना। (फ़्रांसीसी)

धारणा के अनुसार जिन्हें मैं अपने से नीचा समझता था।

इसके विपरीत, St.-Jérôme ख़ूबसूरत, पढ़े-लिखे, नौजवान, मजे-बने आदमी थे, जो हर आदमी के साथ बराबरी के स्तर पर रहना चाहते थे।

कार्ल इवानिच हम लोगों को जब भी डांटते या सज़ा देते थे तो ठंडे दिमाग़ से। साफ़ ज़ाहिर होता था कि वह इसे एक आवश्यक लेकिन कष्टदायक कर्त्तव्य समझते थे। दूसरी ओर, St.-Jérôme अपनी शिक्षक की भूमिका पर बहुत इतराते थे। यह बात साफ़ थी कि वह हम लोगों को जो सज़ा देते थे वह उनके अपने संतोष के लिए ज़्यादा और हम लोगों की भलाई के लिए कम होती थी। उन्हें अपने बड़प्पन का बहुत घमंड था। उनके भारी-भरकम फ़्रांसीसी के फ़िक़रों से, जिनका उच्चारण वह शब्दों के अंतिम खंड पर बहुत ज़ोर देकर और कई जगह स्वरित बल देकर करते थे, मुझे इतनी नफ़रत थी कि मैं बता नहीं सकता। जब कार्ल इवानिच गुस्सा होते थे तो वह कहते थे, "कठपुतली का स्वांग, शरारती लड़का, या स्पेनी मक्खी!" St.-Jérôme हम लोगों को mauvais sujet, vilain garnement,* वग़ैरह कहते थे– ऐसे नाम जिनसे मेरे स्वाभिमान को ठेस लगती थी।

कार्ल इवानिच हम लोगों को कोने की ओर मुंह करके घुटनों के बल बिठा देते थे; और इस तरह बैठने में जो शारीरिक कष्ट होता था वही हमारा दंड होता था; St.-Jérôme अपना सीना तानकर बड़ी शान के साथ हाथ हिलाकर और आहत स्वर में कहते थे, "A genoux, mauvais sujet!" और हमें अपने सामने घुटनों के बल बिठाकर माफ़ी मांगने पर मजबूर करते थे। इसमें दंड अपमान निहित रहता था।

मुझे सज़ा नहीं दी गयी, और किसी ने कुछ कहा तक नहीं कि क्या हुआ था; फिर भी जो कुछ मुझ पर बीती थी उसे मैं भूल नहीं सका– उन दो दिनों की निराशा, लज्जा, भय और घृणा। इस बात के बावजूद कि उसके बाद से St.-Jérôme ने मुझसे कोई उम्मीद रखना ही छोड़ दिया था और मेरे बारे में वह तनिक भी चिंता नहीं

---

* बदमाश, आवारा छोकरा। (फ़्रांसीसी)

करते थे, मैं उनके प्रति उदासीनता का रवैया नहीं अपना सका। हर बार जब हमारी आंखें मिलती थीं तो मुझे ऐसा लगता था कि मेरी मुद्रा में ज़रूरत से ज़्यादा खुला द्वेष होता था और मैं जल्दी से उदासीनता की मुद्रा धारण कर लेता था, लेकिन तब मुझे ऐसा लगता था कि उन्होंने मेरी मक्कारी पकड़ ली है और मैं खिसियाकर बिल्कुल ही मुंह फेर लेता था।

सारांश यह कि मैं बयान नहीं कर सकता कि उनके साथ किसी भी तरह का संबंध रखने से मुझे कितनी घृणा होती थी।

अध्याय १८

नौकरानियों की कोठरी

मैं दिन-ब-दिन ज़्यादा अकेला महसूस करने लगा था, और मुझे एकमात्र सुख एकांत चिंतनों और अवलोकनों में मिलता था। अपने चिंतनों के बारे में मैं आगे के अध्याय में चर्चा करूंगा; मेरे अवलोकनों का मुख्य स्थल नौकरानियों की कोठरी थी, जहां एक ऐसी प्रेम-लीला चल रही थी जिसमें मुझे गहरी दिलचस्पी थी और जो मेरी भावनाओं को छू लेती थी। ज़ाहिर है इस प्रेम-लीला की नायिका थी माशा। उसे वसीली से प्रेम था, जो उसे उस वक़्त से जानता था जब वह नौकरी नहीं करती थी, और उसने उससे उसी वक़्त शादी करने का वादा कर लिया था। लेकिन जिस भाग्य ने पांच साल पहले उन दोनों को एक-दूसरे से अलग कर दिया था और अब नानी के घर में फिर ला मिलाया था, उसी भाग्य ने निकोलाई (माशा के चाचा) के रूप में उनके बीच एक दीवार भी खड़ी कर दी थी, जो इस बात की चर्चा भी नहीं सुनना चाहता था कि उसकी भतीजी वसीली से शादी करे, जिसे वह मोटी अक़ल का और बदचलन आदमी कहता था।

इस बाधा का नतीजा यह हुआ कि वसीली, जिसका आचरण अभी तक काफ़ी संतुलित और उदासीन था, माशा से इतनी गहरी मुहब्बत करने

लगा जैसी कि एक कृपि-दास दर्ज़ी ही कर सकता है, जो गुलाबी क़मीज़ पहनता हो और अपने बालों में क्रीम लगाता हो।

हालांकि अपना प्रेम प्रदर्शित करने के उसके तरीक़े बेहद विचित्र और बेतुके होते थे (मिसाल के लिए, जब भी वह माशा से मिलता था हमेशा उसे तकलीफ़ पहुंचाने की कोशिश करता था, और या तो उसे चुटकी काट लेता था या चांटा मार देता था या इतने ज़ोर से कसकर भींच लेता था कि उसका दम घुटने लगता था), लेकिन उसका प्यार सच्चा था जो इस बात से साबित होता है कि जिस दिन से निकोलाई ने आख़िरी तौर पर अपनी भतीजी की शादी उसके साथ करने से इंकार कर दिया उसी दिन से वसीली ग़म के मारे शराब पीने लगा, शराबख़ानों के चक्कर काटने लगा और हंगामे खड़े करने लगा; सारांश यह कि उसका आचरण इतना शर्मनाक हो गया कि कितनी ही बार पुलिस के हाथों उसकी बड़ी दुरगत हुई। लेकिन इस आचरण और उसके परिणामों की वजह से माशा की नज़रों में वह और भी योग्य पात्र हो गया और वह उससे पहले से भी ज़्यादा प्यार करने लगी। जब वसीली जेल में बंद कर दिया जाता था तो माशा कई-कई दिन तक लगातार इतना रोती रहती थी कि उसके आंसू सूखने का नाम ही न लेते थे, वह अपना दुखड़ा गाशा से रोती थी (जो इन दुःखी प्रेमियों के मामलों में बढ़-चढ़कर दिलचस्पी लेती थी); और अपने चाचा की डांट-फटकार और मार-पीट की परवाह न करके वह चुपके से आंख बचाकर अपने यार से मिलने और उसे तसल्ली देने थाने खिसक जाती थी।

उस समाज को, प्रिय पाठक, तिरस्कार की दृष्टि से न देखिये जिससे मैं आपका परिचय करा रहा हूं। यदि आपकी हृदय-तंत्री में प्रेम और सहानुभूति के तार कमज़ोर नहीं पड़ गये हैं तो वे आवाज़ें जिन पर वे झनझना उठेंगे नौकरानियों की कोठरी में सुनायी देंगी। आपको मेरे साथ आकर ख़ुशी हो या न हो, मैं सीढ़ियों की उस चौरस जगह की ओर जा रहा हूं जहां से मैं वह सब कुछ देख सकता था जो नौकरानियों की कोठरी में होता रहता था। वहां एक बेंच है, और उस पर एक इस्तरी रखी है, टूटी नाकवाली गत्ते की गुड़िया पड़ी है और एक छोटा-सा नहाने का टब और हाथ धोने का तसला है;

वहां खिड़की की सिल पर बहुत-सी चीज़ें अस्त-व्यस्त ढेर हैं: काले मोम का टुकड़ा, रेशम की लच्छी, कटा हुआ हरा खीरा और मिठाई का डिब्बा; वहां एक बड़ी-सी लाल मेज़ भी है, जिस पर अधूरी कशीदाकारी के एक नमूने पर सूती कपड़े में लिपटी हुई एक ईंट रखी है, और उसके पीछे वह बैठी है मेरी पसंदीदा गुलाबी पोशाक पहने और नीला रूमाल बांधे, जो खास तौर पर मेरा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है। वह बैठी कुछ सी रही है; बीच-बीच में वह सुई से अपना सिर खुजाने या मोमबत्ती ठीक करने के लिए रुक जाती है; और मैं उसे एकटक देखते हुए सोचने लगता हूं: "वह किसी रईसज़ादी के रूप में क्यों नहीं पैदा हुई, ऐसी चमकदार नीली-नीली आंखें, ऐसी बड़ी-सी सुनहरे बालों की चोटी, और वह भरा-भरा गदराया हुआ सीना? गुलाबी फ़ीतोंवाली टोपी और गहरे लाल रंग का गाऊन पहनकर, वैसा नहीं जैसा कि मीमी के पास है बल्कि वैसा जैसा कि मैंने त्वेर्स्कोई बुलिवार पर देखा था, किसी ड्राइंग-रूम में बैठना उसे कितना फबता! वह बैठकर अड्डे पर कुछ काढ़ती होती, और मैं उसे आईने में देखता रहता; और वह जो कुछ भी चाहती वह मैं करने को तैयार रहता; मैं उसे उसका लबादा और उसका खाना खुद लाकर देता।..."

और वह वसीली कसा हुआ कोट पहने, जिसके नीचे से उसकी मैली गुलाबी क़मीज़ झांकती रहती है, सूरत से ही कैसा शराबी लगता है और उसकी चाल-ढाल देखकर कितनी नफ़रत होती है! उसके शरीर के हर बार हिलने-डुलने पर, उसकी रीढ़ की हड्डी के हर बार झुकने पर मुझे ऐसा लगता है कि उसे जो शर्मनाक सज़ा मिली है उसी के अकाट्य प्रमाण मुझे दिखायी दे रहे हैं।...

"अरे, वसीली! फिर..." माशा ने गद्दे में सुई घुसाते हुए कहा, लेकिन वसीली के अंदर आने पर उसका अभिवादन करने के लिए उसने अपना सिर नहीं उठाया।

"हां, बोलो क्या कहती हो? उससे तुम किस भलाई की उम्मीद रख सकती हो?" वसीली ने जवाब दिया। "बस, अगर वह किसी भी तरह इस मामले को तै कर देता! लेकिन मेरी तो सारी कोशिशों पर पानी फिर गया, और सब उसकी वजह से।"

"अब तुझे उससे क्या चाहिये, बदमाश?" उसने वसीली को, जो उसे देखते ही जल्दी से उठ खड़ा हुआ था, दरवाज़े की तरफ़ ढकेलते हुए कहा; "तूने इसकी यह हालत कर दी है और अब भी इसकी जान नहीं छोड़ता। क्या उसे रुलाकर ही दम लेगा, बेशरम जंगली कहीं का! चल, हट यहां से। दूर हो जा मेरी नज़रों के सामने से। आख़िर इसमें तुझे ऐसी कौन-सी बात दिखायी दी?" वह माशा की ओर मुड़कर कहती रही। "आज इसी की वजह से तेरे चाचा ने तुझे पीटा नहीं था? मगर तू है कि अपनी ही बात पर अड़ी हुई है: 'मैं तो वसीली के अलावा किसी से शादी करूंगी ही नहीं।' बुद्धू लड़की!"

"और, सचमुच, मैं करूंगी भी नहीं, मुझे किसी से प्यार ही नही है, चाहे इसकी वजह से मार-मारकर मेरी जान ही क्यों न ले ली जाये," माशा ने अचानक फूट-फूटकर रोते हुए कहा।

मैं बड़ी देर तक माशा को एकटक देखता रहा, जो संदूक़ पर लेटी रूमाल से अपने आंसू पोंछ रही थी; और मैंने वसीली के बारे में अपनी राय बदलने की भरपूर कोशिश की, और उस दृष्टिकोण का पता लगाने की कोशिश की जिससे देखने पर वह माशा को इतना आकर्षक लग सकता था। लेकिन माशा की व्यथा के प्रति हार्दिक सहानुभूति होने पर भी मैं किसी तरह यह नहीं समझ पाया था कि माशा जैसी लड़की, जो मेरी नज़रों में इतनी मोहिनी लगती थी, वसीली से कैसे प्यार कर सकती थी।

"जब मैं बड़ा हो जाऊंगा," ऊपर अपने कमरे की ओर जाते हुए मैं सोच रहा था, "पेत्रोव्स्कोये मेरा होगा, और माशा और वसीली मेरे कृषि-दास होंगे। मैं अपने पढ़ने के कमरे में बैठा पाइप पी रहा हूंगा, माशा अपनी इस्तरी लेकर रसोई में चली जायेगी। तब मैं कहूंगा, 'माशा को मेरे पास भेज दो।' वह आयेगी, कमरे में कोई और नहीं होगा।... अचानक वसीली अंदर आ जायेगा, और माशा को देखकर वह कहेगा, 'मैं मिट गया!' और माशा रोने लगेगी; और मैं कहूंगा, 'वसीली, मैं जानता हूं कि तुम इससे प्यार करते हो, और यह तुमसे प्यार करती है: यह लो, एक हज़ार रूबल; इससे शादी कर लो; और भगवान तुम दोनों को सुखी रखे,' और उसके बाद मैं बैठक में

चला जाऊंगा।" उन असंख्य विचारों और कल्पनाओं में जो हमारे दिमाग़ में और हमारे मानसपट पर कोई छाप छोड़े बिना बिजली की तरह कौंध जाती हैं, कुछ ऐसी भी होती हैं जो अपने पीछे एक गहरी संवेदनशील लीक छोड़ जाती हैं, ताकि यह याद किये बिना कि हम किस चीज़ के बारे में सोच रहे थे, हमें यह याद आ जाये वह कोई सुखद चीज़ थी, हम उस विचार का प्रभाव अनुभव कर सकें और उसे एक बार फिर से उत्पन्न करने की कोशिश करें। वसीली से शादी करके माशा को जो सुख मिल सकता था उसकी ख़ातिर स्वयं अपनी भावना की बलि देने के विचार ने मेरी आत्मा पर ऐसी ही गहरी छाप डाली थी।

अध्याय १६

किशोरावस्था

अगर मैं बताऊं कि किशोरावस्था में मेरे चिंतन के सबसे प्रिय और सबसे अनवरत विषय कौन-से थे तो लोग शायद ही मेरा विश्वास करेंगे – वे मेरी उम्र और मेरी स्थिति को देखते हुए इतने बेमेल थे। लेकिन मेरी राय में किसी मनुष्य की स्थिति और उसकी नैतिक गतिविधियों में विषमता उसकी ईमानदारी का सबसे पक्का प्रमाण है। उस वर्ष, जिसके दौरान मैंने अपने अंदर ही संकेंद्रित रहकर एकांत नैतिक जीवन व्यतीत किया, मेरे सामने मनुष्य की नियति, भावी जीवन और आत्मा की अमरता से संबंधित सभी अमूर्त प्रश्न आये; और मेरा कमज़ोर, बचकाना दिमाग़ अनुभवहीनता की भरपूर लगन के साथ उन समस्याओं का समाधान खोजने का प्रयत्न करने लगा, जिनका प्रतिपादन उस सर्वोच्च अवस्था का द्योतक है जहां तक मनुष्य का मस्तिष्क पहुंच सकता है, परंतु जिनके समाधान का श्रेय उसके लिए विहित नहीं है।

मुझे ऐसा लगता है कि हर व्यक्ति में भी प्रज्ञा का विकासक्रम वैसा ही होता है जैसा पूरी की पूरी पीढ़ियों में; कि जो विचार विभिन्न दार्शनिक सिद्धांतों का आधार बनते हैं वे मस्तिष्क का अभिन्न लक्षण होते हैं, लेकिन हर आदमी को दार्शनिक सिद्धांतों की जानकारी होने

से पहले न्यूनाधिक स्पष्ट रूप में इन विचारों का आभास रहता है।

ये विचार मेरे दिमाग़ में इतनी स्पष्टता के साथ और इतने ज्वलंत रूप में उभरे कि मैंने उन्हें जीवन पर भी लागू करने की कोशिश की, यह सोचकर कि ऐसे महान और उपयोगी सत्यों की खोज करनेवाला मैं पहला आदमी हूं।

एक वार मेरे मन में यह विचार उठा कि सुख बाह्य परिस्थितियों पर नहीं बल्कि उनके प्रति हमारे रवैये पर निर्भर है; कि जिस आदमी को दुःख झेलने की आदत हो वह दुःखी नहीं हो सकता; और अपने आपको कष्ट का अभ्यस्त बनाने के लिए मैं अपने हाथ फैलाकर उनमें ततीश्चेव का शब्दकोश थामे रहता था हालांकि ऐसा करने में पीड़ा भयानक होती थी, या मैं दुछत्ती में जाकर अपनी पीठ रस्सी से इतने ज़ोर से रगड़ता था कि मेरी आंखों में अनायास आंसू आ जाते थे।

फिर कभी ऐसा भी होता था कि अचानक मुझे याद आता था कि किसी भी घड़ी, किसी भी क्षण मौत मेरा इंतज़ार कर रही है, मैं अपने मन में यह ठान लेता था, और मेरी समझ में नहीं आता था कि लोगों ने अभी तक इस बात को समझा क्यों नहीं, कि मनुष्य अपने वर्तमान का सदुपयोग करके और भविष्य के बारे में न सोचकर ही सुखी हो सकता है; और इसी विचार के प्रभाव के अधीन मैं तीन दिन तक अपनी पढ़ाई की उपेक्षा करता रहा, और बिस्तर पर लेटकर सिर्फ़ उपन्यास पढ़ता रहा और केक-मिठाइयां शहद के साथ खाता रहा, जो मैंने अपने आख़िरी पैसों से ख़रीदी थीं।

फिर एक बार ऐसा हुआ कि मैं ब्लैकबोर्ड के सामने खड़ा उस पर खरिया से तरह-तरह की आकृतियां बना रहा था कि अचानक मेरे मन में यह विचार उठा: प्रतिसाम्य आंखों को अच्छा क्यों लगता है? प्रतिसाम्य क्या होता है? यह एक अंतर्जात भावना होती है, मैंने उत्तर दिया। लेकिन वह आधारित किस चीज पर होती है? क्या जीवन में प्रतिसाम्य हर चीज़ में होता है? इसके विपरीत, मान लो यह जीवन है। मैं एक अंडाकार आकृति खींच देता हूं। जीवन के बाद आत्मा अनंत में संक्रमित हो जाती है। और मैंने उस अंडाकार आकृति के एक

ओर से एक रेखा खींच दी जो बोर्ड के सिरे तक चली गयी। दूसरी ओर ऐसी ही एक और रेखा क्यों नहीं है? और, सचमुच, सोचने की बात है कि यह कैसा अनंत है जिसका एक ही पक्ष है? क्योंकि इस जीवन से पहले भी तो हमारा अस्तित्व रहा होगा, लेकिन हमें अब उसकी याद नहीं रह गयी है।

इस तर्क से, जो मुझे बेहद अनोखा और स्पष्ट लगा, और जिसका सिरा मैं अब बड़ी मुश्किल से ही पकड़ पाता हूं, मैं बेहद खुश हुआ और मैंने इसे लिख डालने के इरादे से कागज़ का एक टुकड़ा उठाया ; लेकिन इसी सिलसिले में मेरे दिमाग़ में अचानक इतने बहुत-से विचारों की भीड़ जमा हो गयी कि मैं मजबूरन उठकर कमरे में टहलने लगा। जब मैं खिड़की के पास पहुंचा तो मेरा ध्यान पानी लानेवाले घोड़े की ओर गया जिसे कोचवान उस वक़्त जोत रहा था ; और मेरा सारा ध्यान इस समस्या को सुलझाने पर केंद्रित हो गया कि इस घोड़े की आत्मा मुक्त होने पर किस पशु या मनुष्य के शरीर में स्थानांतरित होगी? उसी समय वोलोद्या कमरे से होकर गुज़रा ; यह देखकर वह मुस्करा दिया कि मैं किसी के बारे में सोच रहा हूं ; और वह मुस्कराहट ही मेरे दिमाग़ में यह बात साफ़ कर देने के लिए काफ़ी थी कि मैं जिन बातों के बारे में सोच रहा था वे सरासर बकवास थीं।

मैंने अपने लिए न जाने क्यों अविस्मरणीय इस घटना का वर्णन केवल इसलिए किया है कि पाठक समझ सकें कि मैं किस तरह की बातों के बारे में सोचा करता था।

लेकिन कोई भी दार्शनिक प्रवृत्ति मुझे उतना आकर्षित नहीं करती थी जितनी कि संशयवाद की प्रवृत्ति, जिसने मुझे एक ज़माने में लगभग बिल्कुल पागलपन की हद तक पहुंचा दिया था। मैं सोचने लगा था कि मेरे अतिरिक्त इस पूरे संसार में किसी भी चीज़ या किसी भी व्यक्ति का अस्तित्व नहीं है ; कि वस्तुएं वास्तव में वस्तुएं नहीं हैं, बल्कि केवल बिंब हैं जो केवल उस समय प्रकट होते हैं जब मैं अपना ध्यान उनकी ओर निर्देशित करता हूं, और जैसे ही मैं उनके बारे में सोचना बंद कर देता हूं वे बिंब अदृश्य हो जाते हैं। सारांश यह कि मैं शेलिंग के इस विश्वास से सहमत था कि अस्तित्व वस्तुओं का नहीं होता, बल्कि केवल उनके प्रति मेरे संबंधों का होता है। ऐसे भी क्षण आते थे जब इस जड़

विचार के प्रभाव के अधीन मैं पागलपन की उस हद तक पहुंच जाता था कि जल्दी से विपरीत दिशा में देखने लगता था, इस आशा से कि जहां मैं नहीं था वहां मैं अनस्तित्व (néant) को चकित कर दूं।

मनुष्य का मस्तिष्क नैतिक क्रिया का कैसा दयनीय, निरर्थक स्रोत है!

मेरा कमज़ोर दिमाग़ अभेद्य को भेद नहीं सका, लेकिन इस प्रयास में, जो उसके सामर्थ्य के बाहर था, मैं एक-एक करके अपनी उन सारी आस्थाओं को खोता गया, जिन्हें स्वयं अपने जीवन के सुख की ख़ातिर मुझे कभी छेड़ने का साहस नहीं करना चाहिये था।

इस समस्त कष्टसाध्य नैतिक परिश्रम से मुझे मेरी इच्छा-शक्ति की दृढ़ता को कम कर देनेवाली मस्तिष्क की किंचित गूढ़ता और निरंतर नैतिक विश्लेषण करते रहने की उस आदत के अलावा कुछ नहीं मिला जिसने भावना की ताज़गी और विवेक की स्पष्टता को नष्ट कर दिया।

अमूर्त्त विचारों का प्रतिरूपण मनुष्य के मस्तिष्क की किसी क्षण विशेष में अपनी आत्मा की दशा को समझने और उसे अपनी स्मृति में स्थानांतरित करने की क्षमता के फलस्वरूप पैदा होता है। अमूर्त्त तर्क करने की मेरी प्रवृत्ति ने मुझमें अनुभूति की क्षमता इतनी अस्वाभाविक सीमा तक विकसित कर दी कि बहुधा साधारण से साधारण चीज के बारे में सोचते समय भी मैं अपने विचारों का निरंतर विश्लेषण करता रहता था और विचाराधीन प्रश्न के बारे में सोचना छोड़कर यह सोचने लगता था कि मैं किस चीज़ के बारे में सोच रहा था। जब मैं अपने आपसे प्रश्न करता था: मैं किस चीज़ के बारे में सोच रहा हूं? तो मैं उत्तर देता था: मैं उस चीज़ के बारे में सोच रहा हूं जिसके बारे में मैं सोच रहा हूं। और अब मैं किस चीज़ के बारे में सोच रहा हूं? मैं सोच रहा हूं कि मैं उस चीज़ के बारे में सोच रहा हूं जिसके बारे में मैं सोच रहा हूं, वग़ैरह, वग़ैरह। मुझे तर्क करने का कोई कारण समझ में नहीं आता था।...

फिर भी मैं जो दार्शनिक खोजें करता था उनसे मेरे अभिमान को अत्यधिक सांत्वना मिलती थी। मैं कभी-कभी कल्पना करता था कि मैं बहुत बड़ा आदमी हूं जो मानव-जाति के हित के लिए नये सत्यों की

खोज कर रहा है, और मैं दूसरे मर्त्य लोगों को अपने महत्व के गर्वपूर्ण आभास के साथ देखता था; लेकिन, आश्चर्य की बात है, जब मैं उन्हीं मर्त्य लोगों के संपर्क में आता था तो मैं उनमें से हर एक के सामने लज्जा अनुभव करता था, और स्वयं अपनी राय में मैं अपने आपको जितना ही ऊंचा आंकता था, दूसरों के सामने स्वयं अपने गुणों के वारे में अपनी सजगता का प्रदर्शन मैं उतना ही कम कर पाता था, और मैं अपने आपको इस बात का भी आदी नहीं वना पाया कि मैं अपनी हर बात पर और अपनी हर हरकत पर, वह कितनी ही सीधी-सादी क्यों न हो, लज्जित न अनुभव किया करूं।

अध्याय २०

वोलोद्या

सचमुच, अपने जीवन के इस दौर का वर्णन करने में मैं जितना ही आगे बढ़ता जाता हूं उतना ही अधिक यह काम मेरे लिए कष्टदायक और कठिन होता जाता है। इस दौर की यादों के बीच कभी-कभार ही मुझे भावना की सच्ची हार्दिकता के वैसे क्षण मिलते हैं जैसे क्षण मेरे प्रारंभिक जीवन को निरंतर इतनी प्रखर ज्योति से आलोकित किये रहते थे। जल्दी से जल्दी किशोरावस्था के इस मरुस्थल को पार करके मुझे बड़ी खुशी होगी, ताकि उतनी ही जल्दी मैं उस सुखद दौर में पहुंच जाऊं जब मित्रता की सचमुच कोमल, उदात्त भावना ने इस दौर के अंत को प्रभासित कर दिया और लालित्य तथा काव्यात्मकता से परिपूर्ण एक नये दौर का सूत्रपात किया – युवावस्था का।

मैं अपने संस्मरणों को एक-एक घड़ी के हिसाब से बयान नहीं करूंगा, बल्कि उस समय से लेकर तब तक की मुख्य-मुख्य यादों पर एक सरसरी-सी नज़र डालूंगा जब एक सराहनीय व्यक्ति के साथ मेरा संबंध स्थापित हुआ, जिसने मेरे चरित्र और मेरे विकास पर निर्णायक और हितकर प्रभाव डाला।

वोलोद्या कुछ ही दिन बाद यूनिवर्सिटी में भरती हो जायेगा।

उसे पढ़ाने के लिए खास मास्टर आते हैं, और जब वह बड़े आत्म-विश्वास के साथ हाथ में खरिया लेकर ब्लैकबोर्ड पर पट-पट की आवाज़ करते हुए लिखता है और फलनों और ज्याओं और निर्देशांकों की चर्चा करता है तो मैं ईर्ष्या और सहज आदर की भावना से सुनता रहता हूं, क्योंकि ये बातें मुझे अगम्य ज्ञान की अभिव्यक्ति प्रतीत होती हैं। आख़िरकार एक इतवार को खाने के बाद सभी अध्यापक और दो प्रोफ़ेसर नानी के कमरे में जमा होते हैं और पापा और कई मेहमानों के सामने वे वोलोद्या को अपनी यूनिवर्सिटी की परीक्षा का पूर्वाभ्यास कराते हैं, जिसके दौरान नानी को यह देखकर बड़ी ख़ुशी होती है कि वोलोद्या सराहनीय विद्वता का परिचय देता है। विभिन्न विषयों पर मुझसे भी सवाल पूछे जाते हैं; लेकिन मैं बहुत फिसड्डी साबित होता हूं, और प्रोफ़ेसर स्पष्टतः नानी के सामने मेरी जहालत पर परदा डालने की कोशिश करते हैं जिसकी वजह से मैं और भी बौखला जाता हूं। लेकिन मेरी ओर बहुत कम ध्यान दिया जाता है; मैं सिर्फ़ पंद्रह साल का हूं, इसलिए अपनी परीक्षा की तैयारी करने के लिए मेरे पास अभी पूरा एक साल पड़ा है। वोलोद्या बस खाना खाने के लिए नीचे आता है और सारे दिन, बल्कि रात को भी, ऊपर अपनी पढ़ाई में जुटा रहता है, इसलिए नहीं कि ऐसा करना ज़रूरी है बल्कि अपनी मर्ज़ी से। वह बड़ा स्वाभिमानी है, और परीक्षा में केवल पास नहीं होना चाहता बल्कि सबसे अच्छे नंबरों से पास होना चाहता है।

आख़िरकार पहली परीक्षा का दिन आ जाता है। वोलोद्या पीतल के बटनवाला अपना नीला कोट पहनता है, अपनी सोने की घड़ी लगाता है और पेटेंट-लेदर के जूते पहनता है; पापा की गाड़ी दरवाज़े के सामने लायी जाती है, निकोलाई परदा हटा देता है, और वोलोद्या और St.-Jérôme उस पर बैठकर यूनिवर्सिटी चल देते हैं। लड़कियां, ख़ास तौर पर कात्या, चेहरे पर हर्ष और चरम उल्लास का भाव लिये खिड़की से झांक-झांककर गाड़ी पर सवार होते हुए वोलोद्या की सुडौल आकृति को देखती रहती हैं; और पापा कहते हैं, "भगवान करे! भगवान करे!" और नानी भी, जो किसी तरह रगड़ती-घिसटती खिड़की तक आ गयी हैं, आंखों में आंसू भरकर वोलोद्या को तब तक आशीर्वाद देती रहती हैं जब तक कि गाड़ी गली के नुक्कड़ पर जाकर

आंखों से ओझल नहीं हो जाती, और बहुत ही धीमे स्वर में कुछ कहती रहती हैं।

वोलोद्या लौटकर आता है। सब लोग उत्सुकता से उसके चारों ओर जमा हो जाते हैं, "कैसा रहा? अच्छा? कितने नंबर?" लेकिन उसका खिला हुआ चेहरा ख़ुद ही जवाब दे रहा है। वोलोद्या को पूरे नंबर मिले हैं। अगले दिन भी उसे सफलता की उसी चिंता और शुभ-कामनाओं के साथ विदा किया गया, और उसी उत्सुकता और हर्ष से उसका स्वागत किया गया। इस तरह नौ दिन बीत गये। दसवें दिन अंतिम और सबसे कठिन परीक्षा का सामना था – धार्मिक ज्ञान की परीक्षा; हम सब लोग खिड़की के पास खड़े हमेशा से अधिक अधीरता से उसकी राह देख रहे हैं। दो बज गये हैं, और वोलोद्या अभी तक नहीं आया।

"हे भगवान! वह देखो! वे आ रहे हैं! वे आ गये!" ल्यूबा खिड़की के कांच से अपना मुंह चिपकाये हुए चिल्लाती है।

और सचमुच वोलोद्या गाड़ी पर St.-Jérôme के बग़ल में बैठा हुआ आ रहा है; अब वह अपनी नीला कोट और भूरी टोपी नहीं पहने हुए है, बल्कि उसने विद्यार्थियोंवाली पोशाक पहन रखी है, जिसमें नीला कढ़ा हुआ कॉलर लगा है, तिकोनी हैट लगा रखी है और उसके बग़ल में एक सुनहरा खंजर लटक रहा है।

"काश, आज वह ज़िंदा होती!" वोलोद्या को अपनी विद्यार्थियों-वाली पोशाक पहने देखकर नानी ख़ुशी से चीख़ उठती हैं और मूर्च्छित हो जाती हैं।

वोलोद्या खिला हुआ चेहरा लिये भागकर ड्योढ़ी में आता है और मुझे, ल्यूबा को, मीमी को और कात्या को प्यार करता है, जिसकी कान की लवें तक लाल हो जाती हैं। वोलोद्या ख़ुशी के मारे फूला नहीं समा रहा है। और अपनी पोशाक पहने हुए वह कितना सुंदर लगता है! अभी अंकुरित ही होती हुई उसकी मूंछों पर उसका नीला कॉलर कैसा फबता है! उसकी कमर कैसी पतली और लंबी है, और चाल कैसी बढ़िया है! उस अविस्मरणीय दिन सब लोग नानी के कमरे में खाना खाते हैं। हर चेहरे से ख़ुशी फूटी पड़ रही है; और मिठाइयां खाने के वक़्त ख़ानसामां अपने चेहरे पर बड़ी शिष्ट भव्यता लेकिन

साथ ही उल्लास की मुद्रा लिये नैपकिन में लिपटी हुई शैंपेन की बोतल लेकर आता है। मां के मरने के बाद नानी पहली बार शैंपेन पीती हैं; वोलोद्या को बधाई देने के लिए वह पूरा एक गिलास पी जाती है और उसे देखकर फिर खुशी के आंसू बहाने लगती हैं। वोलोद्या अब अपनी गाड़ी में बैठकर अहाते से बाहर जाता है, अपने जान-पहचानवालों से खुद अपने कमरे में मिलता है, सिगरेट पीता है, नाचने जाता है; और एक बार तो मैंने उसे अपने कमरे में कुछ मेहमानों के साथ शैंपेन की दो पूरी बोतलें खाली करते देखा था, और हर बार जाम भरकर वहां पर जमा सभी लोग कुछ रहस्यमयी हस्तियों के नाम का जाम पीते थे और इस बात पर झगड़ते थे कि le fond de la bouteille* किसके हिस्से में आयेगी। लेकिन खाना वह नियमित रूप से घर पर ही खाता है और तीसरे पहर का वक़्त पहले की तरह बैठक में ही बिताता है, और कात्या के साथ न जाने क्या भेद की बातें करता रहता है; लेकिन जहां तक मैं सुन पाता हूं – क्योंकि मैं उनकी बातचीत में हिस्सा नहीं लेता – वे बस अपने पढ़े हुए उपन्यासों के हीरो-हीरोइनों के बारे में, प्रेम और ईर्ष्या के बारे में बातें करते हैं; मेरी समझ में नहीं आता कि उन्हें इस तरह की बहस में क्या मज़ा आता होगा, या वे मुस्कराते इतनी नज़ाकत से क्यों हैं और बहस इतने तैश में आकर क्यों करते हैं।

मैं आम तौर पर इस नतीजे पर पहुंचा हूं कि बचपन के साथियों जैसी स्वाभाविक मित्रता के अलावा कात्या और वोलोद्या के बीच कुछ विशेष संबंध भी हैं, जिनकी वजह से वे हम लोगों से अलग और एक रहस्यमय ढंग से परस्पर संबद्ध दिखायी देते हैं।

अध्याय २१

कात्या और ल्यूबा

कात्या अब सोलह साल की है; वह बड़ी हो गयी है; बचपन से बढ़कर तरुणाई में प्रवेश करनेवाली लड़कियों की आकृति में जो एक अनगढ़ तीखापन और उनकी चाल में जो एक संकोच और अटपटापन

* अंतिम घूंट। (फ़्रांसीसी)

होता है उनकी जगह अब एक नये खिले हुए फूल की रचाव-भरी ताज़गी और लालित्य ने ले ली है। लेकिन वह ख़ुद नहीं बदली है: वही चमकती हुई नीली आंखें और मुस्कान-भरे चितवन, माथे से लगभग एक रेखा बनाती हुई सशक्त नथुनोंवाली छोटी-सी सीधी नाक, और खिली हुई मुस्कराहटवाला छोटा-सा मुंह, गुलाबी बिल्लूर जैसे गालों पर गढ़े, वही गोरे हाथ; और न जाने क्यों सजीली लड़की की संज्ञा अभी तक उसके लिए विशेषत: उपयुक्त है। उसमें नयी बातें बस ये हैं कि उसने बड़ी औरतों की तरह अपने घने सुनहरे बालों की चोटी गूंथना शुरू कर दिया है, और उसका नौजवान सीना जिससे स्पष्टत: उसे ख़ुशी भी होती है और साथ ही वह लजा भी जाती है।

ल्यूबा हालांकि उसी के साथ पली-बढ़ी है और उसी के साथ उसने पढ़ा है, लेकिन वह हर बात में उससे बिल्कुल अलग तरह की लड़की है।

ल्यूबा का क़द छोटा है, और सूखे की शिकायत की वजह से उसकी टांगें अभी तक टेढ़ी हैं और उसका डीलडौल बड़ा बदसूरत है। उसके चेहरे में कोई चीज़ ख़ूबसूरत है तो बस उसकी आंखें, और वे सचमुच बहुत ख़ूबसूरत हैं – बड़ी-बड़ी और काली, और उनमें गरिमा और सादगी का ऐसा अकथनीय आकर्षक भाव है कि वे बरबस अपनी ओर ध्यान खींच लेती हैं। ल्यूबा की हर बात में सहजता और सादगी है, जबकि कात्या के बारे में ऐसा लगता है कि वह अपने आपको किसी दूसरे के सांचे में ढालना चाहती है। ल्यूबा का देखने का अंदाज़ हमेशा निष्कपट रहता है; और कभी-कभी वह अपनी बड़ी-बड़ी काली आंखें किसी आदमी पर जमा लेती है और उन्हें इतनी देर तक उस पर जमाये रहती है कि उसे डांटा जाता है और उससे कहा जाता है कि ऐसा करना शिष्टता नहीं है।

इसके विपरीत कात्या अपनी पलकें झुका लेती है, अपनी आंखें सिकोड़ लेती है, और कहती है कि उसकी नज़र कमज़ोर है हालांकि मैं अच्छी तरह जानता हूं कि उसकी आंखें बिल्कुल ठीक हैं। ल्यूबा अजनबियों से मेल-जोल बढ़ाना नहीं चाहती; और जब कोई दूसरों के सामने उसे चूम लेता है तो वह मुंह बिसूरकर कहती है कि वह भावुकता को बर्दाश्त नहीं कर सकती। इसके विपरीत, कात्या मेहमानों

के सामने मीमी के प्रति विशेष रूप से स्नेह का प्रदर्शन करती है और ऐसे अवसरों पर किसी लड़की की बांह में बांह डालकर हॉल में टहलना उसे अच्छा लगता है। ल्यूबा बड़ी आसानी से छोटी-सी बात पर भी हंस पड़ती है; और कभी-कभी हर्षोल्लास का विस्फोट होने पर वह अपने हाथ हवा में हिलाती हुई कमरे में भागी फिरती है। इसके विपरीत, कात्या जब हंसना शुरू करती है तो अपने मुंह पर हाथ या रूमाल रख लेती है। ल्यूबा हमेशा सीधी तनकर बैठती है और जब वह चलती है तो उसके हाथ दोनों ओर झूलते रहते हैं; कात्या अपना सिर एक ओर झुकाये रहती है और हाथ एक-दूसरे से पकड़कर चलती है। जब भी ल्यूबा को किसी नौजवान आदमी से बात करने का मौक़ा मिलता है तो वह बेहद ख़ुश हो जाती है, और वह खुले-आम कहती है कि वह शादी किसी हुसार से ही करेगी; लेकिन कात्या कहती है कि सभी मर्द बेहद बुरे होते हैं, कि वह कभी शादी नहीं करेगी और जब भी कोई आदमी उससे बात करता है तो वह बिल्कुल ही दूसरी लड़की बन जाती है जैसे वह किसी चीज़ से डर रही हो। ल्यूबा हमेशा मीमी से झुंझलायी रहती है क्योंकि उसे कार्सेट में इतना कसकर जकड़ दिया जाता है कि उसके लिए "सांस लेना भी मुश्किल हो जाता है," और वह खाने की बहुत शौक़ीन है; लेकिन, दूसरी ओर, कात्या अकसर अपनी उंगली चोली के कटाव के नीचे घुसेड़कर बताती है कि वह उसके लिए कितनी ढीली है, और वह खाती बहुत थोड़ा है। ल्यूबा को चेहरे बनाने का शौक़ है, लेकिन कात्या सिर्फ़ फूलों और तितलियों के चित्र बनाती है। ल्यूबा फ़ील्ड की कांसेर्टों की संगीत-रचनाएं बिल्कुल सही-सही बजा लेती है और बीथोवेन के कुछ सोनाटा भी। कात्या विविध रचनाएं और वाल्ट्ज़ बजाती है, वह एक-एक सुर पर काफ़ी देर टिकती है, पियानो के परदों पर बहुत ज़ोर से उंगली मारती है, और लगातार उसका पैडल चलाती रहती है; कोई भी धुन बजाने से पहले वह परदों पर तीन बार उंगली दौड़ा देती है।

मैं तब सोचा करता था कि कात्या प्रौढ़ लोगों के अधिक समान थी, और इसलिए उससे मैं कहीं ज़्यादा ख़ुश रहता था।

अध्याय २२

पापा

वोलोद्या जबसे यूनिवर्सिटी में भरती हो गया है तबसे पापा ख़ास तौर पर ख़ुश नज़र आते हैं, और वह नानी के साथ खाना खाने के लिए हमेशा से ज़्यादा आने लगे हैं। लेकिन, जैसा कि मुझे निकोलाई से मालूम हुआ है, उनके ख़ुश रहने की वजह यह है कि इधर उन्होंने जुए में काफ़ी पैसा जीता है। अकसर शाम को क्लब जाने से पहले वह हम लोगों के पास भी आते हैं, पियानो पर जाकर बैठ जाते हैं, हम लोग उनके चारों ओर जमा हो जाते हैं, और वह अपने नरम तलेवाले जूतों से (उन्हें एड़ीदार जूतों से सख़्त चिढ़ है और वे उन्हें कभी नहीं पहनते) ताल देकर जिप्सी गीत गाते रहते हैं। और उस वक़्त ल्यूबा की मसख़रेपन की मस्ती देखने लायक़ होती है; वह पापा की लाड़ली है और वह पापा को बेहद चाहती है। कभी-कभी वह हम लोगों के पढ़ाई के कमरे में भी आ जाते हैं और जिस समय मैं अपना पाठ सुनाता होता हूं वह गंभीर मुद्रा बनाये सुनते रहते हैं; लेकिन कभी-कभी वह मुझे ठीक करने के लिए जो शब्द बोलते हैं उनसे मुझे पता चल जाता है कि जो कुछ मैं सीख रहा हूं उसके बारे में उन्हें बहुत जानकारी नहीं है। कभी-कभी जब नानी बड़बड़ाने लगती हैं और बिना किसी कारण के सभी से नाराज़ हो जाती हैं तो वह चुपके से आंख मारकर हम लोगों को इशारा करते हैं। "तो, बच्चो, आज तो हम लोगों को कसकर पड़ी," वह बाद में कहते हैं। कुल मिलाकर, मैंने अपनी बालोचित कल्पना की दृष्टि से उन्हें जिस ऊंचाई पर रखा था, जहां तक पहुंचना बहुत कठिन था, वहां से वह मेरी नज़रों में कुछ नीचे उतर आये हैं। मैं उनके बड़े-से गोरे हाथ को सच्चे प्यार और आदर की उसी भावना के साथ चूमता हूं, लेकिन अब मैंने अपने आपको इतनी छूट दे रखी है कि मैं उनके बारे में सोचने लगा हूं, वह जो कुछ करते हैं उसके गुण-दोषों को परखने लगा हूं और मेरे मन में ऐसे विचार उठने लगे हैं कि मैं डर जाता हूं। मैं उस एक घटना को कभी नहीं भूल सकता जिसने मेरे मन में ऐसे ही अनेक विचार पैदा

किये थे और मुझे बहुत नैतिक पीड़ा पहुंचायी थी।

एक रात वह अपना काला ड्रेस-कोट और सफ़ेद वास्कट पहने हुए वोलोद्या को नाच में ले जाने के लिए ड्राइंग-रूम में आये। वोलोद्या अपने कमरे में कपड़े बदल रहा था। नानी अपने सोने के कमरे में वोलोद्या का इंतज़ार कर रही थीं कि वह सज-बनकर अपने आपको उन्हें दिखा जाये (उनकी आदत थी कि हर नाच से पहले वह उसका निरीक्षण करने के लिए और उसे अपना आशीर्वाद और निर्देश देने के लिए अपने सामने तलब ज़रूर करती थीं)। मीमी और कात्या हॉल में एक सिरे से दूसरे सिरे तक चक्कर लगा रही थीं, जहां सिर्फ़ एक मोमबत्ती की रोशनी हो रही थी, और ल्यूबा पियानो पर फ़ील्ड के दूसरे कांसेर्टो का अभ्यास कर रही थी जो मां की प्रिय रचना थी।

मैंने कभी दो व्यक्तियों में ऐसी गहरी समानता नहीं देखी जैसी मेरी मां और मेरी बहन में थी। यह समानता न तो उनकी सूरत-शक्ल की थी और न ही उनके डीलडौल की, बल्कि यह समानता किसी सूक्ष्म गुण में थी – हाथों में, चलने के ढंग में, आवाज़ की विशेषताओं में और कुछ अभिव्यक्तियों में। जब ल्यूबा नाराज़ होकर कहती थी, "उमर भर ऐसा नहीं होने दिया जायेगा," तो वह "उमर भर" शब्दों का उच्चारण, जिन्हें बोलने की आदत मां को भी थी, इस तरह करती थी कि ऐसा लगता था जैसे उसकी आवाज़ में इन शब्दों के उच्चारण की सारी लंबाई सुनायी दे रही है। लेकिन जब वह पियानो बजाती थी तो उस बाजे के प्रसंग में उसके हर तौर-तरीक़े में यह समानता और भी उजागर हो जाती थी। बैठते हुए वह अपने कपड़े ठीक उसी ढंग से संभालती थी, और स्वर-लिपि के पन्ने ऊपर की ओर से अपने बायें हाथ से उलटती थी, और जब भी कोई कठिन भाग वह ठीक से नहीं बजा पाती थी तो झल्लाकर पियानो के परदों पर ज़ोर से मुक्का मारती थी और कहती थी, "हे, भगवान!" और पियानो बजाने के उसके ढंग में वही अकथनीय कोमलता और शुद्धता होती है, फ़ील्ड का वही सुंदर अंदाज़, जिसे jeu perlé* बिल्कुल ठीक ही कहा

* सूक्ष्मता का अंदाज़। (फ़्रांसीसी)

जाता है, और जिसके आकर्षण को आधुनिक पियानोवादकों की सारी बकवास के बावजूद भुलाया नहीं जा सकता।

पापा छोटे-छोटे क़दम रखते हुए तेज़ी से कमरे में आये और ल्यूबा के पास गये, जिसने उन्हें देखते ही पियानो बजाना बंद कर दिया।

"नहीं, बजाती रहो, ल्यूबा, बजाती रहो," उन्होंने उसे फिर बिठाते हुए कहा, "तुम जानती हो तुम्हारा संगीत सुनकर मुझे कितनी ख़ुशी होती है।..."

ल्यूबा पियानो बजाती रही, और पापा बड़ी देर तक उसके सामने हाथ पर अपना सिर टिकाये बैठे रहे; फिर वह अचानक अपने कंधों को एक हल्का-सा झटका देकर उठे और इधर-उधर टहलने लगे। हर बार पियानो के पास पहुंचकर वह रुक जाते और बड़े ध्यान से ल्यूबा को देखने लगते। उनके हाव-भाव से और उनके चलने के अंदाज़ से मुझे साफ़ पता चल रहा था कि वह बहुत बेचैन थे। कई बार हॉल में चक्कर लगाने के बाद वह ल्यूबा के पीछे जाकर खड़े हो गये, उन्होंने उसके काले बालों को चूमा, और फिर मुड़कर टहलने लगे। जब ल्यूबा ने वह संगीत-रचना पूरी बजा चुकने के बाद उनके पास जाकर पूछा, "आपको अच्छा लगा?" तो उन्होंने एक शब्द भी कहे बिना उसका सिर चुपचाप अपने हाथों में थाम लिया और उसके माथे और उसकी आंखों को ऐसे स्नेह से चूमने लगे जैसे स्नेह का प्रदर्शन करते मैंने उन्हें इससे पहले नहीं देखा था।

"अरे, आप तो रो रहे हैं!" ल्यूबा ने अचानक उनकी घड़ी की ज़ंजीर अपने हाथों से छोड़कर अपनी बड़ी-बड़ी विस्मय-भरी आंखें उनके चेहरे पर जमाते हुए कहा। "पापा, माफ़ कीजियेगा, मैं बिल्कुल भूल ही गयी थी कि वह मां की प्यारी धुन थी।"

"नहीं, बेटी, अकसर उसे बजाया करो, बजाओगी न," उन्होंने भावातिरेक से कांपते हुए स्वर में कहा, "काश तुम्हें मालूम होता कि तुम्हारे साथ रोकर मेरा जी कितना हल्का हो जाता है।"

उन्होंने एक बार फिर उसे प्यार किया, और अपने भावावेग को वश में करने का प्रयत्न करते हुए वह अपने कंधों को हल्का-सा झटका देकर गलियारे से होकर वोलोद्या के कमरे की ओर जानेवाले दरवाज़े के रास्ते बाहर चले गये।

"वोलोद्या!" तुम्हें तैयार होने में अभी कितनी देर और लगेगी?" उन्होंने गलियारे में आधे रास्ते में रुककर ऊंची आवाज़ में पूछा। उसी समय नौकरानी माशा उनके पास से होकर गुज़री, और मालिक को देखकर उसने नज़रें झुका लीं और उनसे कतराकर निकल जाने की कोशिश करने लगी। उन्होंने उसे रोका।

"सचमुच, तुम दिन-ब-दिन ज़्यादा ख़ूबसूरत लगने लगी हो," उन्होंने उसके ऊपर झुकते हुए कहा।

माशा लजा गयी और उसने अपना सिर और भी नीचे झुका लिया। "मुझे जाने दीजिये," उसने दबे स्वर में कहा।

"वोलोद्या, तुम तैयार हुए कि नहीं?" पापा ने कंधे झटकते हुए और खांसते हुए कहा; इतने में माशा निकल गयी और पापा की नज़र मुझ पर पड़ी।

मुझे अपने बाप से प्यार था; लेकिन आदमी का दिमाग़ अपने दिल की सलाह नहीं मानता और अकसर उसमें ऐसे विचार पलते रहते हैं, जो उसकी भावनाओं के लिए अपमानजनक होते हैं, उनके लिए अत्यंत दुरूह और कठोर होते हैं। और उन्हें दूर भगाने की लाख कोशिश करने पर भी इस तरह के विचार मेरे दिमाग़ में आते रहे।...

अध्याय २३

नानी

नानी दिन-ब-दिन कमज़ोर होती जा रही थीं; उनके कमरे से उनकी घंटी, गाशा की बुड़बुड़ाहट और दरवाज़े के धड़ से बंद किये जाने की आवाज़ें पहले से ज़्यादा बार सुनायी देने लगी थीं और अब वह बैठक में अपनी बड़ी-सी आराम-कुर्सी पर बैठकर नहीं, बल्कि अपने सोने के कमरे में ऊंचे-से पलंग पर लेटे-लेटे हम लोगों से मिलती थीं जिस पर लैस की झालर लगे हुए तकिये रखे रहते थे। जब मैं उनका अभिवादन करता तो मुझे उनके हाथ पर एक हल्के पीले रंग की चमकदार सूजन दिखायी देती और उनके कमरे में वैसी ही दम घोंटनेवाली

बदबू का आभास होता जैसी पांच साल पहले मां के कमरे में मैंने पायी थी। डाक्टर दिन में तीन बार आता था, और कई बार अपने साथ के दूसरे डाक्टरों से सलाह-मशविरा करता था। लेकिन उनका स्वभाव, परिवार के सभी लोगों के साथ, खास तौर पर पापा के साथ उनका दंभपूर्ण और रोबदार बर्ताव तनिक भी नहीं बदला था; वह अपने शब्दों को अब भी खींच-खींचकर बोलती थीं, अपनी भवें अब भी चढ़ाती थीं, और "मेरे प्यारे" संबोधन का उच्चारण ठीक पहले की तरह ही करती थीं।

फिर कुछ दिन तक हम लोगों को उनके पास नहीं जाने दिया गया; और एक बार सुबह St.-Jérôme ने सुझाव रखा कि पढ़ाई के समय के दौरान मैं ल्यूबा और कात्या के साथ घोड़ागाड़ी पर सैर के लिए चला जाऊं।

स्लेजगाड़ी पर बैठते-बैठते हालांकि मैंने देखा था कि नानी की खिड़कियों के सामनेवाली सड़क पर भूसा बिखरा हुआ था और हमारे फाटक के पास बहुत-से लोग नीले ओवरकोट पहने खड़े थे, लेकिन मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि हम लोगों को ऐसे असाधारण समय पर घोड़ागाड़ी पर सैर के लिए क्यों भेज दिया गया था। उस दिन पूरी सैर के दौरान ल्यूबा और मैं न जाने क्यों खास तौर पर मस्ती की उस हालत में थे जब किसी भी घटना पर, हर शब्द पर, ज़रा-ज़रा-सी हरकत पर हंसी आ जाती है।

सड़क पर अपना बक्सा लिये तेज़-तेज़ चलते हुए फेरीवाले को देखकर हमें हंसी आ जाती। कोई गाड़ीवाला रासों को फटकारकर अपना घोड़ा सरपट दौड़ाता हुआ हमारी स्लेज से आगे निकल जाता तो हम हंसकर चिल्लाने लगते। फ़िलिप की चाबुक स्लेज की पटरियों में फंस गयी; उसने मुड़कर कहा, "लानत है इस पर!" और हम हंसी के मारे लोट-पोट हो गये। मीमी ने नाराज़ होकर हम लोगों को देखा और कहा कि नासमझ लोग ही बिना वजह हंसते रहते हैं; और ल्यूबा ने, जिसका चेहरा हंसी दबाने की कोशिश में लाल हो गया था, कनखियों से मेरी ओर देखा। आंखें चार होते ही हम दोनों इस तरह बेतहाशा हंस पड़े कि हमारी आंखों में आंसू आ गये, और हम लोग मस्ती के उन फ़व्वारों को रोक नहीं सके जिनकी वजह से

हमारा दम घुटा जा रहा था। हम लोग अभी थोड़ा-सा शांत हुए ही थे कि मैंने एक नज़र ल्यूबा की ओर देखा, और एक ऐसा रहस्यमय शब्द कहा जिसका हम लोगों के बीच काफ़ी दिन से बहुत चलन था, और जिस पर हमेशा हंसी आ जाती थी; और हम एक बार फिर ठहाका मारकर हंस पड़े।

अपने घर के पास पहुंचते ही मैं ल्यूबा को देखकर उसे मुंह चिढ़ाने ही जा रहा था कि दरवाज़े के सहारे टिके हुए ताबूत के काले ढक्कन को देखकर मैं अचानक चौंक पड़ा, और मुंह चिढ़ाने की मुद्रा मेरे चेहरे पर जमकर रह गयी।

Votre grande-mère est morte!"* St.-Jérôme ने मुंह लटकाये हुए बाहर आकर हम लोगों से कहा।

जितनी देर नानी का शव घर में रखा रहा मेरे मन में मौत का दम घोंटनेवाला डर समाया रहा, मानो वह शव प्रबल रूप से मुझे इस अरुचिकर सत्य की याद दिला रहा हो कि किसी दिन मुझे भी मरना है–यह एक ऐसी भावना है जिसे आम तौर पर, न जाने क्यों, व्यथा समझ लिया जाता है। मुझे नानी के मरने का कोई अफ़सोस नहीं था, और, सच तो यह है कि उस घर में हालांकि मातमपुर्सी के लिए आनेवालों की भीड़ थी, लेकिन उनमें से शायद ही कोई ऐसा हो जिसे सचमुच उनके मरने का अफ़सोस हो, एक व्यक्ति को छोड़कर, जिसकी असीम व्यथा पर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। और वह थी गाशा, नौकरानी। दुछत्ती में बंद होकर वह लगातार रोती रही, अपने आपको कोसती रही; अपने बाल नोचती रही; वह किसी तरह शांत होने का नाम ही नहीं लेती थी और बस यही कहती रहती थी कि अब उसकी प्यारी मालकिन के मर जाने के बाद उसके लिए भी बस मौत का ही सहारा रह गया है।

मैं एक बार फिर कहता हूं कि भावना के मामले में जो असंभव लगता है वही सच्चा होता है।

हालांकि नानी अब हमारे बीच नहीं रह गयी थीं, लेकिन घर में उन्हें बराबर याद किया जाता रहता था और उनकी चर्चा होती

---

* आपकी नानी का देहांत हो गया! (फ़्रांसीसी)

रहती थी। इन यादों और चर्चाओं का विषय ख़ास तौर पर वह वसीयत होती थी जो उन्होंने मरने से पहले तैयार की थी और जिसके बारे में किसी को भी नहीं मालूम था कि उसमें क्या था, अलावा प्रिंस इवान इवानिच के, जिनको उन्होंने उस वसीयत की शर्तों को लागू करने का काम सौंपा था। मैं देखता था कि नानी से संबंधित लोगों में काफ़ी खलबली रहती थी, और अकसर मेरे कान में इस तरह की बातें भी पड़ती रहती थीं कि कौन किसके हिस्से में आयेगा; और मुझे यह स्वीकार करते हुए कोई संकोच नहीं होता कि यह सोचकर मुझे बरबस बहुत ख़ुशी होती थी कि उत्तराधिकार में हमें भी कुछ मिलेगा।

छः सप्ताह पूरे होने पर निकोलाई ने, जो हमारे यहां का दैनिक समाचारपत्र था, मुझे बताया कि नानी अपनी सारी जायदाद ल्यूबा के नाम छोड़ गयी थीं, और उसका विवाह होने तक के लिए उसका अभिभावक पापा को नहीं बल्कि प्रिंस इवान इवानिच को बना गयी थीं।

अध्याय २४

मैं

मेरे यूनिवर्सिटी में भरती होने में बस अब कुछ ही महीने बाक़ी हैं। मैं पढ़ाई जी लगाकर कर रहा हूं। न केवल यह कि मैं बिना डरे अपने अध्यापकों के आने की प्रतीक्षा करता हूं, बल्कि मुझे अपनी पढ़ाई में कुछ मज़ा भी आने लगा है।

अपना याद किया हुआ पाठ साफ़-साफ़ और सही-सही सुनाने में मुझे आनंद आता है। मैं गणित विभाग में भरती होने की तैयारी कर रहा हूं; और सच पूछिये तो मैंने इस विषय को महज़ इसलिए चुना है कि मुझे साइन, टैंजेंट, डिफ़रेंशल, इंटीग्रल आदि शब्द बेहद अच्छे लगते हैं।

क़द में मैं वोलोद्या से बहुत छोटा हूं, मेरे कंधे चौड़े और मेरा

शरीर मांसल है, और हमेशा की तरह मैं बिल्कुल सामान्य-साधारण हूं और हमेशा की तरह ही मैं इस बात की वजह से चिंतित रहता हूं। मैं मौलिक दिखायी देने की कोशिश करता हूं। एक बात से मुझे सांत्वना मिलती है: वह यह कि पापा ने एक बार कहा था: "तुम्हारे भेजे में कुछ अक़ल मालूम होती है", और मैं उनकी बात पर पूरा भरोसा करता हूं।

St.-Jérôme मुझसे संतुष्ट हैं, और अब मुझे भी उनसे नफ़रत नहीं रह गयी है; सच तो यह है कि कभी-कभी जब वह कहते हैं कि बड़े अफ़सोस की बात है कि मेरी जैसी प्रतिभा और मेरी जैसी प्रखर बुद्धि रखते हुए मैं यह काम या वह काम नहीं कर पाता हूं तो मुझे ऐसा आभास होता है कि वह मुझे अच्छे भी लगते हैं।

नौकरानियों की कोठरी में मेरा ताकना-झांकना बहुत पहले ही बंद हो चुका है। दरवाज़े के पीछे छिपकर खड़े रहने में मुझे शर्म आती है, और, इसके अलावा, मुझे मानना पड़ता है कि अपने इस दृढ़ विश्वास की वजह से कि माशा को वसीली से प्रेम है, मेरा उत्साह कुछ ठंडा पड़ गया है। वसीली की शादी हो जाने के बाद से, जिसकी इजाज़त उसके कहने पर मैंने ही पापा से ले दी थी, अंततः मेरा यह बदनसीब जुनून भी ख़त्म हो गया।

जब नव-दम्पति पापा को धन्यवाद देने के लिए एक ट्रे में मिठाइयां लेकर आते हैं, और नीले फ़ीतोंवाली टोपी पहने माशा भी एक-एक के कंधे पर प्यार करके हम सभी लोगों को किसी न किसी बात के लिए धन्यवाद देती है, तो मुझे रत्ती-भर भी भावावेग का नहीं बल्कि केवल उसके बालों में लगे हुए गुलाब के पोमेड की सुगंध का आभास रहता है।

कुल मिलाकर, मैं अपनी लड़कपन की ख़ामियों पर धीरे-धीरे क़ाबू पाता जा रहा हूं, लेकिन, बस उस सबसे बड़ी ख़ामी को छोड़कर, जो मुझे मेरी ज़िंदगी में आगे चलकर बहुत नुक़सान पहुंचानेवाली है – मेरी दार्शनिक बनने की प्रवृत्ति।

अध्याय २५

वोलोद्या के मित्र

वोलोद्या के मित्रों के साथ मेरी भूमिका ऐसी रहती थी जिससे मेरे अहंकार को ठेस लगती थी, लेकिन जब उसके मिलनेवाले आते थे तो मुझे उसके कमरे में बैठकर वहां जो कुछ होता रहता था उसे देखने में मज़ा आता था।

वोलोद्या के मेहमानों में जो लोग सबसे ज़्यादा आते थे उनमें एक तो दुबकोव नामक अंगरक्षक अफ़सर था और एक प्रिंस नेख़ल्यूदोव नामक छात्र। दुबकोव छोटा-सा, गठे शरीर का, सांवला आदमी था, जो अपनी नौजवानी की उम्र को पार कर चुका था, उसकी टांगें कुछ छोटी ज़रूर थीं, लेकिन वह सूरत-शक्ल का बुरा नहीं था और हमेशा मस्त रहता था। वह उन सीमित गुणोंवाले लोगों में से था जो अपनी इन्हीं परिसीमाओं के कारण विशेष रूप से रुचिकर लगते हैं, जिनमें चीज़ों को अलग-अलग पहलुओं से देखने की क्षमता नहीं होती, और जो हमेशा किसी न किसी चीज़ के प्रति अत्यधिक उत्साह के प्रवाह में बह जाने को तैयार रहते हैं। इस तरह के लोगों के विचार एकतरफ़ा और ग़लत होते हैं, फिर भी वे हमेशा खुले दिल से और आकर्षक ढंग से अपने विचार प्रकट करते हैं। न जाने क्यों उनका संकीर्ण अहंभाव भी क्षम्य और आकर्षक लगता है। इसके अलावा दुबकोव में मेरे और वोलोद्या के लिए एक दोहरा आकर्षण था: सिपाहियों जैसी चाल-ढाल और सबसे बढ़कर ऐसी उम्र जिसके साथ नौजवान लोग सम्मान और प्रतिष्ठा का संबंध जोड़ते हैं – जिसे फ़्रांसीसी में comme il faut कहा जाता था – जिसे हमारी उम्र के लोग बहुत पसंद करते थे। इसके अलावा दुबकोव सचमुच ऐसा आदमी था जिसे "un homme comme il faut"* कहते हैं। बस एक बात जो मुझे अच्छी नहीं लगती थी वह यह थी कि कभी-कभी ऐसा लगता था कि वोलोद्या मेरी मासूम से मासूम हरकतों पर और सबसे

---

* सुसंस्कृत आदमी। (फ़्रांसीसी)

बढ़कर मेरी कमउम्री पर उसके सामने लज्जित अनुभव करता था।

नेख़ल्यूदोव ख़ूबसूरत नहीं था: छोटी-छोटी भूरी आंखों, पतले-से आगे को उभरे हुए माथे, लंबी-लंबी बेडौल बांहों और टांगों को ख़ूबसूरती की निशानी तो नहीं कहा जा सकता था। उसकी बस एक ही चीज़ ख़ूबसूरत थी और वह था उसका बेहद ऊंचा क़द, उसके चेहरे का नाज़ुक रंग, और उसके बहुत ही अच्छे दांत। लेकिन उसकी छोटी-छोटी चमकदार आंखों और उसके मुस्कराने के अंदाज़ से, जो कठोरता से बचकाना अस्पष्टता में बदल जाता था, उसके चेहरे पर ऐसी मौलिकता और स्फूर्ति का भाव आ जाता था कि यह असंभव था कि देखनेवाला उससे प्रभावित न हो।

वह बेहद शर्मीला मालूम होता था क्योंकि छोटी-से-छोटी बात से उसकी कान की लवें तक लाल हो जाती थीं, लेकिन उसका शर्मीलापन मेरा जैसा नहीं था। उसका चेहरा जितना ही लाल होता जाता था उतना ही ज़्यादा उस पर दृढ़ संकल्प का भाव आता जाता था। ऐसा लगता था कि उसे अपनी इस कमज़ोरी पर ग़ुस्सा आता था।

हालांकि ऐसा लगता था कि दुबकोव और वोलोद्या के साथ उसकी गहरी दोस्ती थी लेकिन यह साफ़ ज़ाहिर था कि संयोग ने ही उन सबको मिला दिया था। वे एक-दूसरे से बिल्कुल अलग थे। ऐसा लगता था कि वोलोद्या और दुबकोव तो हर उस चीज़ से डरते थे जो गंभीर वाद-विवाद और भावना से थोड़ी-सी भी मिलती-जुलती हो; इसके विपरीत नेख़ल्यूदोव बेहद जोशीले स्वभाव का था, और अकसर दार्शनिक समस्याओं और भावनाओं की बहस में मज़ाक़ उड़ाये जाने की परवाह किये बिना कूद पड़ता था। वोलोद्या और दुबकोव को अपनी प्रेमिकाओं की चर्चा करने का शौक़ था (और वे एक साथ कई लड़कियों के, और दोनों उन्हीं लड़कियों के प्रेम के जाल में फंस जाते थे); इसके विपरीत, जब वे लोग लाल बालोंवाली किसी लड़की से नेख़ल्यूदोव का प्रेम होने की ओर इशारा करते थे तो वह नाराज़ हो जाता था।

वोलोद्या और दुबकोव कभी-कभी अपने रिश्तेदारों का भी मज़ाक़ उड़ा लेते थे; इसके विपरीत, नेख़ल्यूदोव की चाची के बारे में, जिनके प्रति उसके हृदय में अगाध श्रद्धा थी, अगर कोई ऐसी-वैसी बात कह दी जाये तो वह आपे से बाहर हो जाता था। वोलोद्या और दुबकोव

रात के खाने के बाद नेख़ल्यूदोव को साथ लिये बिना कहीं चले जाते थे, और वे उसे नाजुक छोकरी कहा करते थे।...

प्रिंस नेख़ल्यूदोव ने शुरू से ही मुझे अपनी बातचीत और अपनी चाल-ढाल से भी प्रभावित कर दिया था। लेकिन उसके स्वभाव में अपने स्वभाव से मिलती-जुलती बहुत-सी चीज़ें पाने के बावजूद – या शायद इसी वजह से – पहली बार देखने में उसने मेरे मन में जो भावना जागृत की थी वह किसी भी प्रकार रुचिकर नहीं थी।

मुझे उसकी तेज़ी से चलती हुई नज़र, उसकी जमी हुई आवाज़, उसकी दंभ-भरी मुद्रा बिल्कुल नापसंद थी, लेकिन सबसे ज़्यादा जो बात मुझे नापसंद थी वह थी मेरी तरफ़ उसकी सरासर बेरुख़ी। अकसर बहस के दौरान मैं उसकी किसी बात का खंडन करने के लिए और उसको उसके दंभ की सज़ा देने के उद्देश्य से उसको नीचा दिखाने के लिए तिलमिलाता रहता था, ताकि मैं साबित कर दूं कि मेरे प्रति उसकी उपेक्षा के बावजूद मैं बहुत बुद्धिमान था। लेकिन मेरा शर्मीलापन आड़े आ जाता था।

अध्याय २६

बहसें

अपनी शाम की पढ़ाई के बाद जब मैं हमेशा की तरह वोलोद्या के कमरे में गया तो वह सोफ़े पर पांव रखे कुहनी पर टिका हुआ कोई फ़्रांसीसी उपन्यास पढ़ रहा था। उसने एक सेकंड के लिए आंख उठाकर मेरी ओर देखा, और फिर पढ़ने में लीन हो गया, जो बहुत ही सीधी-सादी स्वाभाविक बात थी, फिर भी इस पर मेरा चेहरा तमतमा उठा। ऐसा लगा कि उसकी नज़र ने मुझसे पूछा था कि मैं किसलिए आया था, और जिस तरह जल्दी-से उसने अपना सिर झुका लिया था उससे संकेत मिलता था कि वह मुझसे उस नज़र का मतलब छिपाना चाहता था। मामूली से मामूली हरकत में कोई छिपा हुआ मतलब देखने की प्रवृत्ति उस उम्र में मेरी लाक्षणिक विशेषता थी।

मैंने भी मेज़ के पास जाकर एक किताब उठा ली ; लेकिन उसे पढ़ना शुरू करने से पहले मेरे मन में यह विचार उठा कि दिन-भर के बाद मुलाक़ात होने पर एक-दूसरे से कुछ न कहना कितना हास्यास्पद है।

"आज रात तुम घर पर रहोगे?"

"मालूम नहीं। क्यों?"

"यों ही," मैंने कहा, और यह देखकर कि मैं बातचीत का सिलसिला शुरू नहीं कर सकूंगा, मैं अपनी किताब उठाकर पढ़ने लगा।

अजीब बात है कि जब मैं और वोलोद्या अकेले होते थे तो घंटों एक-दूसरे से कुछ बोले बिना चुपचाप काट देते थे, लेकिन किसी तीसरे आदमी की मौजूदगी, चाहे वह कुछ भी न बोले, काफ़ी होती थी कि हम दोनों के बीच विविधतम विषयों पर और बेहद दिलचस्प बातचीत शुरू हो जाये। हम महसूस करते थे कि हम दोनों एक-दूसरे को बहुत अच्छी तरह जानते थे, और किसी आदमी को बहुत अच्छी तरह जानने से भी घनिष्ठता पैदा होने में उसी तरह रुकावट होती है जिस तरह किसी को बहुत कम जानने से।

"वोलोद्या घर पर है?" बरामदे में दुबकोव की आवाज़ पूछती हुई सुनायी दी।

"हां," वोलोद्या ने अपने पांव नीचे उतारकर किताब मेज़ पर रखते हुए कहा।

दुबकोव और नेख़ल्यूदोव कोट और हैट पहने हुए कमरे में आ गये।

"थियेटर चल रहे हो?"

"नहीं, मेरे पास वक़्त नहीं है," वोलोद्या ने जवाब दिया, उसका चेहरा लाल हो गया।

"क्या बात कही है! आओ, चलो भी।"

"और फिर मेरे पास टिकट भी तो नहीं है।"

"दरवाज़े पर जितने टिकट चाहोगे मिल जायेंगे।"

"रुको, मैं अभी आता हूं," वोलोद्या ने बात टालते हुए कहा, और वह अपने कंधों को झटककर कमरे से बाहर निकल गया।

मैं जानता था कि वोलोद्या का जी थियेटर जाने को बहुत चाह रहा था और उसने इंकार बस इसलिए किया था कि उसके पास पैसे

नहीं थे, इस वक़्त वह अगला जेबखर्च मिलने तक के लिए खानसामां से पांच रूबल उधार मांगने गया था।

"कहिये, क्या हालचाल हैं, डिप्लोमैट साहब?" दुबकोव ने मेरी ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा।

वोलोद्या के दोस्त मुझे डिप्लोमैट इसलिए कहते थे कि एक बार खाने के बाद हमारी नानी ने हम लोगों के भविष्य की चर्चा करते हुए कहा था कि वोलोद्या तो फ़ौजी अफ़सर बनेगा और उन्होंने आशा प्रकट की थी कि मैं राजनीतिज्ञ बनूंगा, काला ड्रेस-कोट पहने, à la coq ढंग के बाल बनाये, जिन्हें वह कूटनीतिज्ञ के काम के लिए अनिवार्य समझती थीं।

"वोलोद्या गया कहां है?" नेख़ल्यूदोव ने पूछा।

"पता नहीं," मैंने जवाब दिया, और यह सोचकर मैं कुछ झेंप गया कि शायद उन लोगों ने अनुमान लगा लिया होगा कि वोलोद्या कमरे से चला क्यों गया था।

"मैं समझता हूं उसके पास पैसा नहीं है, क्यों? अरे, बड़े डिप्लोमैट हो तुम!" उसने मेरी मुस्कराहट का सकारात्मक अर्थ निकालते हुए कहा। "मेरे पास भी नहीं है। तुम्हारे पास है, दुबकोव?"

"देखता हूं," दुबकोव ने अपना बटुआ निकालकर बड़ी सावधानी से अपनी छोटी-छोटी उंगलियों से थोड़ी-सी रेज़गारी को टटोलते हुए जवाब दिया। "यह रहा एक पांच कोपेक का सिक्का, और यह है बीस कोपेक का सिक्का – छिः!" उसने अपना हाथ मसख़रेपन से हिलाते हुए कहा।

उसी समय वोलोद्या कमरे में आया।

"तो, चलें?"

"नहीं।"

"तुम भी अजीब आदमी हो!" नेख़ल्यूदोव ने कहा। "कहा क्यों नहीं कि तुम्हारे पास पैसा नहीं हैं? जी चाहे तो मेरा टिकट ले लो।"

"और तुम क्या करोगे?"

"यह अपने रिश्ते की बहनों के बॉक्स में जाकर बैठ जायेगा," दुबकोव ने कहा।

"नहीं, मैं तो जा ही नहीं रहा हूं।"

"क्यों?"

"क्योंकि, तुम तो जानते ही हो, मुझे बॉक्स में बैठना अच्छा नहीं लगता।

"क्यों?"

"बस, नहीं अच्छा लगता, मुझे अटपटा महसूस होता है।"

"फिर वही पुरानी बात! मेरी समझ में नहीं आता कि ऐसी जगह तुम्हें अटपटा कैसे लग सकता है, जहां तुम्हारे होने से हर आदमी को ख़ुशी होती हो। इससे मज़ा आता है, mon cher.*"

"तो मैं करूं क्या, si je suis timide!** मुझे यक़ीन है कि तुम तो अपनी ज़िंदगी में कभी शरमाये नहीं होगे, लेकिन मैं तो ज़रा-ज़रा-सी बात पर शरमा जाता हूं," उसने कहा और यह बात कहते-कहते भी सचमुच शरमा गया।

"Savez vous, d'où vient votre timidité?..d'un excès d'amour propre, mon cher,"*** दुबकोव ने सरपरस्ती के भाव से कहा।

"Excès d'amour propre, तो क्या हुआ!" नेख़ल्यूदोव ने चिढ़कर कहा। "बात इसकी उल्टी ही है, वजह यह है कि मुझमें amour propre बहुत कम है। मुझे हमेशा ऐसा महसूस होता रहता है कि लोगों को मैं नापसंद हूं, उनके लिए मैं नागवार हूं... और इसलिए..."

"कपड़े पहनो, वोलोद्या," दुबकोव ने कंधे पकड़कर उसका कोट झटके के साथ खींचते हुए कहा। "इग्नात, अपने मालिक को जल्दी से तैयार तो कर दो!"

"और इसलिए अकसर मेरे साथ होता यह है कि..." नेख़ल्यूदोव अपनी बात कहता रहा।

लेकिन दुबकोव अब उसकी बात सुन नहीं रहा था। "त्र-ल-ल-ला,"

---

* मेरे दोस्त। (फ़्रांसीसी)

** मैं शर्मीला हूं! (फ़्रांसीसी)

*** जानते हो तुम्हारे अंदर शर्मीलापन कहां से आता है? ज़रूरत से ज़्यादा अहंकार से, मेरे दोस्त। (फ़्रांसीसी)

वह कोई धुन गुनगुना रहा था।

"अरे, तुम इस तरह बच नहीं सकते," नेख़ल्यूदोव ने कहा, "मैं साबित कर दूंगा कि शर्मीलापन अहंकार से बिल्कुल नहीं पैदा होता है।"

"साबित करने के लिए तुम्हें हम लोगों के साथ चलना पड़ेगा।"

"मैंने कह दिया कि मैं नहीं जाऊंगा।"

"अच्छी बात है, तो ठहरो यहीं, और डिप्लोमैट के सामने साबित करते रहो; जब हम लोग लौटकर आयेंगे तो वह हमें सब कुछ बता देगा।"

"साबित तो कर ही दूंगा," नेख़ल्यूदोव ने बच्चों जैसी हठधर्मी के साथ कहा, "जल्दी से लौट आना।"

"आपका क्या ख़्याल है? क्या मैं अहंकारी हूं?" उसने मेरे पास बैठते हुए पूछा।

हालांकि इस बात के बारे में मेरी अपनी एक राय थी, लेकिन मैं अचानक पूछे गये इस सवाल से इतना सकपका गया कि उसका जवाब देने में मुझे कुछ वक़्त लगा।

"जी हां, मैं ऐसा ही समझता हूं," मैंने कहा और मुझे ऐसा महसूस हुआ कि यह सोचकर मेरी आवाज़ लड़खड़ा रही थी और मेरा चेहरा लाल हो गया था कि उसे यह बता देने का वक़्त आ गया था कि मैं बुद्धिमान हूं। "मैं समझता हूं कि हर आदमी घमंडी होता है, और आदमी जो कुछ भी करता है वह अहंकार की वजह से ही करता है।"

"आपकी राय में अहंकार क्या होता है?" नेख़ल्यूदोव ने कुछ तिरस्कार से मुस्कराते हुए पूछा, कम से कम मुझे लगा ऐसा हीं।

"अहंकार," मैंने कहा, "यह दृढ़ विश्वास होता है कि मैं किसी भी दूसरे आदमी से बेहतर और अधिक बुद्धिमान हूं।"

"लेकिन हर आदमी को यह दृढ़ विश्वास कैसे हो सकता है?"

"मुझे मालूम नहीं कि यह सही है या नहीं, लेकिन इस बात को कोई मानता नहीं है; जैसे, मुझे पक्का विश्वास है कि मैं दुनिया में सबसे ज़्यादा अक़्लमंद हूं, और मुझे यक़ीन है कि आपको अपने बारे में भी यही विश्वास होगा।"

"नहीं; कम से कम अपने बारे में मैं यह कह सकता हूं कि मुझे ऐसे लोग मिले हैं जिन्हें मैंने अपने से ज़्यादा अक़्लमंद माना है," नेख़ल्यूदोव ने कहा।

"नामुमकिन," मैंने दृढ़ विश्वास से कहा।

"क्या आप सचमुच ऐसा सोचते हैं?" नेख़ल्यूदोव ने मुझे ग़ौर से देखते हुए कहा।

"हां," मैंने जवाब दिया।

इस पर मेरे मन में एक विचार उठा जिसे मैंने फ़ौरन व्यक्त कर दिया।

"मैं आपके सामने इस बात को साबित कर दूंगा। क्या वजह है कि हम अपने आपको दूसरों से ज़्यादा प्यार करते हैं?... इसलिए कि हम अपने आपको दूसरों से बेहतर समझते हैं, प्यार के ज़्यादा क़ाबिल समझते हैं। अगर हम दूसरों को अपने से बेहतर समझते होते, तो हम उन्हें अपने से ज़्यादा प्यार भी करते, और ऐसा कभी होता नहीं। अगर ऐसा होता भी हो, तब भी मेरी बात सही है," मैंने अनायास ही बड़े निश्चिंत भाव से मुस्कराते हुए जोड़ दिया।

नख़ल्यूदोव एक क्षण तक चुप रहा।

"मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि आप इतने समझदार हैं।" उसने कहा और इतनी मिठास और इतने सद्भाव से मुस्करा दिया कि अचानक मुझे बहुत ख़ुशी हुई।

प्रशंसा का मनुष्य की भावनाओं पर ही नहीं बल्कि उसके दिमाग़ पर भी इतना ज़बर्दस्त असर पड़ता है कि उसके सुखद प्रभाव के कारण मुझे ऐसा लगा कि मैं पहले से ज़्यादा चतुर हो गया हूं, और मेरे दिमाग़ में बेतहाशा तेज़ी से एक के बाद एक विचार आने लगे। अहंकार की चर्चा से हम लोग अनजाने ही प्रेम के विषय पर पहुंच गये, और इस विषय पर बहस का कोई अंत ही दिखायी नहीं देता था। भले ही हमारे विचार दिलचस्पी न रखनेवाले श्रोता को सरासर बकवास मालूम हों – वे थे ही इतने अस्पष्ट और एकतरफ़ा – लेकिन हमारे लिए उनका बहुत महत्व था। हम दोनों की आत्माओं में इतना गहरा सामंजस्य था कि हम में से किसी भी एक के अंदर के तारों को तनिक-सा छू देने से जो झंकार पैदा होती थी उसकी गूंज दूसरे में भी सुनायी देती

थी। अपनी बहस के दौरान हमने जिन कई तारों को छुआ उनकी गूंज परस्पर एक-दूसरे में इस तरह सुनकर हमें बड़ी खुशी हो रही थी। हमें ऐसा लगता था कि जो विचार मुखर हो उठने के लिए हमारे अंदर मचल रहे थे उन्हें व्यक्त करने के लिए हमारे पास न समय था न शब्द।

अध्याय २७

मित्रता का आरंभ

इसके बाद से मेरे और द्मित्री नेख़ल्यूदोव के बीच कुछ विचित्र परंतु अत्यंत सुचारु संबंध बने रहे। अजनबियों के सामने वह मेरी ओर लगभग कोई ध्यान नहीं देते थे; लेकिन जैसे ही हम दोनों अकेले होते थे, वैसे ही हम किसी शांत कोने में जा बैठते थे और बहस करने लगते थे, हमें न समय का होश रहता था न अपने चारों ओर की किसी चीज़ का।

हम भावी जीवन की, विभिन्न कलाओं की, सरकारी नौकरी की, विवाह की, और बच्चों की शिक्षा की बातें करते थे; और यह बात कभी हमारे दिमाग़ में भी नहीं आती थी कि हम लोग जो कुछ कहते थे वह सरासर बकवास होता था। यह बात कभी हमारे दिमाग़ में इसलिए नहीं आती थी कि हम लोग अपनी बातों में जो बकवास करते थे वह समझदारी की और अच्छी बकवास होती थी; और नौजवानी के दिनों में आदमी समझदारी की क़द्र करता है और उस पर आस्था रखता है। नौजवानी में आत्मा की सारी शक्तियों की दिशा भविष्य की ओर रहती है; और आशा के प्रभाव के अंतर्गत—जिस आशा की बुनियाद अतीत के अनुभव पर नहीं, बल्कि आगामी सुख की कल्पित संभावनाओं पर होती है—वह भविष्य ऐसे विविध, स्पष्ट और आकर्षक रूप धारण कर लेता है कि उस उम्र में भावी सुख के सपने तक, दूसरों के साथ बांट लेने पर, सच्चा सुख बन जाते हैं। आध्यात्मिक बहसों में, जो हमारी बातचीत का एक मुख्य विषय होती

थीं, मुझे वे क्षण बहुत पसंद थे जब विचार एक के बाद एक अधिकाधिक तेज़ी के साथ दिमाग़ में आते जाते थे, और अधिकाधिक अमूर्त्त होते जाते थे, अंततः उनमें इतना गहरा धुंधलापन पैदा हो जाता था कि उन्हें व्यक्त करने का कोई उपाय ही नहीं सूझता था, और हालांकि हम समझते थे कि जो कहना चाहते हैं वही कह रहे हैं, लेकिन वास्तव में हम कोई बिल्कुल ही दूसरी बात कह रहे होते थे। मुझे वे क्षण प्रिय थे जब विचारों के क्षेत्र में अधिकाधिक ऊंचाई पर पहुंचकर, हम अचानक उसके समस्त अनंत विस्तार को अपनी पकड़ में ले लेते थे, और यह मान लेते थे कि अब इससे आगे बढ़ना नामुमकिन था।

एक बार कार्निवाल के दौरान नेख़ल्यूदोव विभिन्न मनोरंजनों में ऐसे खोया हुआ था कि दिन में कई-कई बार हमारे यहां आने के बावजूद वह एक बार भी मुझसे नहीं बोला था; और इस बात से मुझे इतनी ठेस पहुंची थी कि वह मुझे फिर घमंडी और अरुचिकर आदमी लगने लगा। मैं बस किसी मौक़े की ताक में था कि उसे दिखा दूं कि मैं उसके साथ रहने को कोई महत्व नहीं देता और यह कि मेरे दिल में उसके प्रति कोई खास लगाव नहीं था।

कार्निवाल के बाद पहली ही बार जब उसने मुझसे बात करने की कोशिश की तो मैंने कह दिया कि मुझे अपना सबक़ याद करना है, और मैं ऊपर चला गया; लेकिन पंद्रह मिनट बाद किसी ने पढ़ाई के कमरे का दरवाज़ा खोला और नेख़ल्यूदोव अंदर आया।

"मैं आपके काम में विघ्न तो नहीं डाल रहा हूं?" उसने पूछा।

"नहीं तो," मैंने जवाब दिया, हालांकि मैं कहना चाहता था कि मुझे सचमुच बहुत काम करना था।

"फिर आप वोलोद्या के कमरे से चले क्यों आये? बहुत अर्से से हम लोगों की बातचीत नहीं हुई है। और मैं इसका इतना आदी हो चुका हूं कि मुझे ऐसा लगता है जैसे किसी चीज़ की कमी है।"

मेरी चिड़चिड़ाहट एक क्षण में दूर हो गयी, और मेरी नज़रों में द्मित्री फिर पहले जैसे ही नेकदिल और आकर्षक आदमी लगने लगा।

"आपको शायद मालूम है कि मैं क्यों चला आया," मैंने कहा।

"शायद मालूम है," उसने मेरे पास बैठते हुए जवाब दिया। "मुझे हालांकि इसका अंदाज़ा है, लेकिन मैं बता नहीं सकता कि आप

क्यों चले आये, लेकिन आप बता सकते हैं," उसने कहा।

"मैं आपको बताता हूं: मैं इसलिए चला आया कि मैं आपसे नाराज़ था... नाराज़ नहीं, बल्कि चिढ़ा हुआ। साफ़ बात बताउ तो मुझे हमेशा डर लगता रहता है कि आप मुझसे इसलिए नफ़रत करेंगे कि मैं इतना कमउम्र हूं।"

"जानते हैं आपके साथ मेरी इतनी घनिष्ठता क्यों हो गयी है?' उसने मेरी स्वीकारोक्ति का जवाब ख़ुशमिज़ाजी और समझदारी की मुस्कराहट से देते हुए कहा–"इसकी क्या वजह है कि जिन लोगों से मेरी ज़्यादा अच्छी जान-पहचान है और जिनकी मेरे साथ कहीं ज़्यादा बातों में समानता है उनसे भी ज़्यादा मैं आपको प्यार करता हूं? इस सवाल का जवाब मुझे अभी मिला है। आपमें एक अनोखा गुण है–दो-टूक बात कहने का।"

"हां, मैं हमेशा वही बातें कह देता हूं जिन्हें स्वीकार करते मुझे शर्म आती है," मैंने सहमति प्रकट करते हुए कहा, "लेकिन उन्हीं लोगों से जिन पर मैं भरोसा कर सकता हूं।"

"हां, लेकिन किसी आदमी पर भरोसा करने के लिए यह ज़रूरी है कि उसके साथ दोस्ती हो और हम लोग अभी दोस्त तो हैं नहीं निकोलेंका। आपको याद है कि हमने दोस्ती के सवाल पर बहस की थी; सच्चे दोस्त होने के लिए एक-दूसरे पर भरोसा करना ज़रूरी है।"

"इस बात का भरोसा होना कि जो कुछ मैं आपसे कहूंगा आप उसे किसी दूसरे को नहीं बतायेंगे," मैंने कहा। "लेकिन सबसे महत्व पूर्ण, सबसे दिलचस्प विचार तो वे होते हैं जो हम किसी भी क़ीमत पर एक-दूसरे को नहीं बताते।"

"और कैसे घिनौने विचार!" उसने कहा। "ऐसे विचार कि अगर हमें मालूम होता कि हमें उन्हें बताने पर मजबूर होना पड़ेगा तो हम उन्हें सोचने का कभी साहस ही नहीं करते। जानते हैं मुझे क्या बात सूझी है, निकोलेंका?" उसने अपनी कुर्सी से उठकर मुस्कराते हुए अपनी हथेलियां आपस में रगड़ते हुए कहा, "आयें, ऐसा कर लें और फिर देखना कि हम दोनों के लिए यह कितना फ़ायदेमंद रहेगा हम लोग वचन दें कि हम हर बात एक-दूसरे के सामने मान लिया करेंगे

हम एक-दूसरे को जानेंगे, और हम किसी बात पर लज्जित नहीं होंगे; लेकिन इसलिए कि हमें अजनबियों का डर न रहे, हम यह भी वचन दें कि हम एक-दूसरे के बारे में किसी से कुछ भी कभी नहीं कहेंगे। हम ऐसा ही करेंगे।"

"मैं राज़ी हूं।"

और हमने सचमुच ऐसा किया भी। इसका नतीजा क्या हुआ यह मैं अब आगे चलकर बताऊंगा।

कार्र ने कहा है कि हर लगाव में दो पक्ष होते हैं: एक प्रेम करता है, और दूसरा इस बात की छूट देता है कि उससे प्रेम किया जाये; एक चूमता है, दूसरा अपना गाल पेश करता है। यह बिल्कुल ठीक है; और हम लोगों की दोस्ती में चूमनेवाला मैं था और गाल पेश करनेवाला था द्मित्री; लेकिन वह मुझे चूमने को भी तैयार रहता था। हम दोनों का प्यार बराबर था, क्योंकि हम एक-दूसरे को जानते थे और एक-दूसरे की क़द्र करते थे; लेकिन इस बात ने उसे मुझ पर अपना प्रभाव डालने से नहीं रोका, और न मुझे उसका प्रभाव स्वीकार करने से।

यह सच है कि नेख़ल्यूदोव के ही असर की वजह से मैंने अनजाने ही उसका दृष्टिकोण अपना लिया, जिसका निचोड़ यह था कि सच्चरित्रता के आदर्श की उत्साहपूर्वक सराहना की जाये, और यह विश्वास कि मनुष्य के जीवन का लक्ष्य ही यह है कि वह निरंतर अपने आपको श्रेष्ठतर बनाने का प्रयत्न करे। तब समस्त मानवता को सुधारना, समस्त दुर्गुणों और व्यथाओं को ख़त्म करना एक व्यावहारिक बात मालूम होती थी। अपने आपको सुधारना, सारे सद्गुण अपने अंदर पैदा कर लेना, और सुखी रहना बहुत साधारण और आसान बात मालूम होती थी।...

लेकिन भगवान ही जानता है कि नौजवानी की ये उच्च महत्वाकांक्षाएं हास्यास्पद थीं या नहीं, और अगर वे पूरी न हो सकीं तो इसके लिए दोषी कौन है।...

युवावस्था

अध्याय १

मेरी युवावस्था कहां से शुरू हुई

मैं बता चुका हूं कि द्मित्री के साथ मेरी दोस्ती ने मेरे सामने जीवन, उसके उद्देश्यों और उसके संबंधों के बारे में एक नये दृष्टिकोण का रहस्योद्घाटन किया। यह दृष्टिकोण बुनियादी तौर पर यह विश्वास था कि नैतिक परिष्कार के शिखर तक पहुंचने का प्रयास करना ही मनुष्य की नियति है और इस शिखर तक पहुंचना सुगम, संभव और शाश्वत है। लेकिन अब तक मैं इस विश्वास से उत्पन्न होनेवाले नये विचारों की खोज और एक नैतिक तथा सक्रिय भविष्य की शानदार योजनाएं बनाने में मगन था; जबकि मेरा जीवन उसी तुच्छ, उलझे हुए और निकम्मेपन के ढर्रे पर चल रहा था।

अपने जिगरी दोस्त द्मित्री के साथ—लाजवाब मीत्या के साथ, जैसा कि मैं मन ही मन कभी-कभी दबे स्वर में उसे कहता था—अपनी बातचीत में हम जिन सद्विचारों को व्यक्त करते थे उनसे केवल मेरे मस्तिष्क को प्रसन्नता होती थी, मेरी भावनाओं को नहीं। लेकिन वह समय भी आ ही गया जब ये विचार मेरे दिमाग़ में ऐसी ताज़गी और नैतिक बोध की ऐसी प्रबल शक्ति के साथ उभरे कि मैं यह सोचकर सहम उठा कि मैंने कितना समय नष्ट कर दिया था, और मैं इन विचारों को तुरंत, उसी क्षण, इस दृढ़ संकल्प के साथ जीवन में लागू करना चाहता था कि मैं उनके प्रति अपनी निष्ठा कभी नष्ट नहीं होने दूंगा।

उसी समय को मैं अपनी युवावस्था के आरंभ होने की तिथि मानता हूं।

तब मैं लगभग सत्रह वर्ष का था। मास्टर मुझे उस समय भी पढ़ाते थे। St.-Jérôme उस वक़्त भी मेरी पढ़ाई पर निगरानी रखते थे और इच्छा न रहते हुए भी मैं विश्वविद्यालय की शिक्षा की तैयारी करने के लिए मजबूर था।

अपनी पढ़ाई के अलावा मेरी व्यस्तताएं थीं: एकांत में बिखरे हुए विचारों में उलझे रहना और चिंतनमनन; अपने आपको संसार में सबसे बलवान आदमी बनाने के उद्देश्य से जिमनास्टिक व्यायाम करना; सभी कमरों में और ख़ास तौर पर नौकरानियों की कोठरी के गलियारे में निरुद्देश्य घूमना; और आईने में अपनी सूरत को एकटक देखते रहना, और इस अंतिम व्यस्तता के बारे में लगे हाथ मैं यह भी बता दूं कि मैं हमेशा घोर निराशा की और घृणा तक की उत्पीड़क भावना के साथ अपना मुंह फेर लेता था।

इसका मुझे यक़ीन था, कि मेरी सूरत-शक्ल न सिर्फ़ बिल्कुल सादी थी, बल्कि मैं अपने आपको वे तसल्लियां भी नहीं दे सकता था जो ऐसी हालत में लोग आम तौर पर अपने आपको देते रहते हैं। मैं यह नहीं कह सकता था कि मेरा चेहरा बहुत अभिव्यंजनापूर्ण, प्रखर बुद्धि का परिचायक या उदात्त था। उसमें अभिव्यंजना जैसी कोई बात थी ही नहीं; मेरा नाक-नक़्शा बहुत ही भद्दे, और मामूली क़िस्म का था। मेरी छोटी-छोटी भूरी आंखों से बुद्धिमत्ता के बजाय मूर्खता टपकती थी, ख़ास तौर पर जब मैं आईने में अपनी सूरत देखता था। मेरे चेहरे में मर्दानगी तो और भी कम थी। हालांकि मेरा क़द छोटा नहीं था, और अपनी उम्र को देखते हुए मैं बहुत तगड़ा था, लेकिन मेरे नाक-नक़्शे की हर चीज़ पिलपिली, ढीली-ढाली और अनगढ़ थी। उसमें कोई चीज़ उदात्त भी नहीं थी; बल्कि इसके विपरीत मेरा चेहरा बहुत कुछ गंवारों जैसा लगता था, और मेरे हाथ और पांव बेहद बड़े-बड़े थे; उस समय यह बात मुझे बहुत लज्जास्पद लगती थी।

वसंत

जिस साल मैं यूनिवर्सिटी में गया उस साल ईस्टर अप्रैल के बिल्कुल आख़िर में जाकर पड़ा, इसलिए परीक्षाओं के लिए क्वासीमोडो* सप्ताह की तारीख़ें तै की गयीं; ईस्टर से पहलेवाले सप्ताह में मुझे कम्युनियन प्राप्त करना था और फिर तैयारी पूरी करनी थी।

गीली बरफ़ पड़ने के बाद कोई तीन दिन तक मौसम सुहावना, थोड़ा-थोड़ा गरम और साफ़ रहा, जिसके बारे में कार्ल इवानिच कहा करते थे कि "बाप के बाद बेटा आया।" सड़कों पर वर्फ़ का एक भी तूदा नहीं दिखायी देता था और गंदी पतली कीचड़ की जगह सड़क की पटरियां गीली थीं, चमक रही थीं और उन पर पानी तेज़ी से छोटी-छोटी नदियों की तरह बह रहा था। छतों पर से धूप में बर्फ़ की आख़िरी बूंदें भी पिघल-पिघलकर नीचे गिर रही थीं, सामनेवाले बाग़ में पेड़ों पर कोंपलें फूट रही थीं। अहाते के अंदर का रास्ता सूखा था, अस्तबलों के पास, खाद के जमे हुए ढेरों से परे और बरसाती के आस-पास के पत्थरों के बीच काई जैसी घास हरी पड़ने लगी थी। यह वसंत का वह ख़ास वक़्त था जिसका मनुष्य की आत्मा पर सबसे गहरा प्रभाव पड़ता है – सूरज की रोशनी साफ़, भरपूर और चमकदार होती है, लेकिन उसमें गरमी नहीं होती, छोटी-छोटी नदियों जैसी जल-धाराएं, वर्फ़ के नीचे से निकली हुई जगहें हवा में ताज़गी फूंकती हैं; और कोमल नीले आकाश पर लंबे-लंबे पारदर्शी बादलों की धारियां पड़ी रहती हैं। मुझे मालूम नहीं ऐसा क्यों है, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि वसंत के अभ्युदय का यह पहला चरण बड़े शहर में और भी सशक्त तथा गोचर रूप में सामने आता है – हमें जितना दिखायी देता है उससे कहीं अधिक हम आगे आनेवाली बातों का अनुमान लगा लेते हैं। मैं खिड़की के पास खड़ा ब्लैकबोर्ड पर एलजेब्रा का एक लंबा सवाल हल कर रहा था; खिड़की के दोहरे पल्लों के पार सुबह का सूरज

---

* ईस्टर के बाद के पहले इतवार से आरंभ होनेवाला सप्ताह। – अनु०

धूल के कणों से भरी हुई अपनी किरनें पढ़ाई के कमरे के फ़र्श पर डाल रहा था जहां मेरा जी असह्य हद तक उकताता था। मेरे एक हाथ में फ़्रैंकर के एलजेब्रा की फटी-पुरानी किताब थी, और दूसरे हाथ में खरिया का छोटा-सा टुकड़ा था, जिससे मैं दोनों हाथ, अपना चेहरा और अपने कोट की कुहनियां गंदी कर चुका था। एप्रन पहने और आस्तीनें चढ़ाये हुए निकोलाई सामने के बाग़ की ओर खुलनेवाली खिड़कियों की संदों में भरा हुआ मसाला निकाल रहा था और कीलें उखाड़ रहा था। उसके इस काम की वजह से और वह जो शोर कर रहा था उसकी वजह से मेरा ध्यान भटक रहा था। इसके अलावा मैं बहुत झुंझलाया हुआ और असंतुष्ट था। मेरी कोई बात ठीक ही नहीं होती थी। मैंने अपने हिसाब के शुरू में ही एक ग़ल्ती कर दी थी, जिसकी वजह से मुझे सारा काम फिर से शुरू करना पड़ा था। खरिया दो बार मेरे हाथ से नीचे गिर चुकी थी, मुझे इस बात का आभास था कि मेरा चेहरा और मेरे हाथ मैले हो चुके थे। बोर्ड पोंछने का स्पंज न जाने कहां ग़ायब हो गया था; निकोलाई जो शोर कर रहा था उससे मेरी झुंझलाहट बेहद बढ़ती जा रही थी। मेरा जी चाहता था कि ग़ुस्से से भड़क उठूं और किसी को फटकार दूं। मैं खरिया और एलजेब्रा की किताब फेंककर कमरे में टहलने लगा। फिर मुझे याद आया कि आज तो मुझे पाप-स्वीकरण के लिए जाना है, इसलिए मुझे कोई ग़लत काम नहीं करना चाहिये; और अचानक मेरे मिज़ाज में एक अजीब-सी नरमी आ गयी और मैं निकोलाई के पास चला गया।

"लाओ, मैं तुम्हारी मदद कर दूं, निकोलाई," मैंने अपनी आवाज़ में ज़्यादा से ज़्यादा नरमी लाते हुए कहा। यह सोचकर कि मैं अच्छा बर्ताव कर रहा था, अपनी झुंझलाहट को दबा रहा था, और उसकी मदद कर रहा था, मेरे मिज़ाज की नरमी और भी बढ़ गयी।

संदों में भरा हुआ मसाला निकालकर फेंक दिया गया, कीलें उखाड़ दी गयीं; लेकिन हालांकि निकोलाई अपना पूरा ज़ोर लगाकर खिड़की में लगे हुए चौखटे को खींच रहा था फिर भी वह टस से मस नहीं हो रहा था।

"अगर हम दोनों के एकसाथ खींचने पर चौखटा अभी फ़ौरन

बाहर निकल आये," मैं सोच रहा था, "तो आज और ज़्यादा पढ़ना पाप होगा, इसलिए मैं नहीं पढ़ूंगा।" चौखटा एक तरफ़ से हुमसा और निकलकर बाहर आ गया।

"इसे कहां ले जाना है?" मैंने पूछा।

"आप रहने दें, मैं खुद सब कर लूंगा," निकोलाई ने प्रकट आश्चर्य से जवाब दिया; ऐसा लग रहा था कि मेरे जोश से वह नाराज़ है; "मैं इन सबको नंबर डालकर दुछत्ती में रखता हूं।"

"मैं नंबर डाल दूंगा," मैंने चौखटा उठाते हुए कहा।

मुझे ऐसा लगता है कि अगर दुछत्ती दो वेर्स्ता दूर होती और खिड़की के चौखटे दुगने भारी होते तो मुझे बहुत खुशी होती। निकोलाई की यह सेवा करते-करते मैं अपने आपको थका डालना चाहता था। जब मैं लौटकर कमरे में आया तो टाइलें और नमक के कोन* खिड़कियों की सिलों पर फिर से व्यवस्थित ढंग से रख दिये गये थे, और निकोलाई ने सारी धूल और मरियल मक्खियां पंखों से झाड़कर खुली खिड़की के बाहर फेंक दी थीं। कमरे में ताज़ी भीनी-भीनी खुशबूदार हवा भर गयी थी। उसके साथ ही शहर का कोलाहल और गौरैयों की चहचहाहट भी अंदर आ रही थी।

हर चीज़ रोशनी में नहायी हुई थी; कमरे में रौनक़ आ गयी थी; वसंत की हवा के हल्के-हल्के झोंके मेरी एलजेब्रा की किताब के पन्नों को और निकोलाई के बालों को उड़ा रहे थे। मैं खिड़की के पास जाकर उसकी सिल पर बैठ गया और बाहर बाग़ में झांककर सोचने लगा।

एकदम से मेरी आत्मा में कोई नयी, अत्यंत सशक्त और सुखद संवेदना समा गयी। गीली धरती जिसमें से जहां-तहां हरी-हरी घास की पीली डंठलोंवाली बर्छियां ज़ोर लगाकर बाहर निकली आ रही थीं, धूप में चमकती हुई जल-धाराएं जो मिट्टी के छोटे-छोटे ढेलों और लकड़ी की छोटी-छोटी छिपटियों को अपने साथ बहाये ले जा

---

* नमी को सोखने के लिए दोहरी खिड़कियों के बीच में नमक के छोटे-छोटे कोन (शंकु) रख दिये जाते हैं। अकसर सजावट के लिए टाइलें या छोटी-छोटी ईंटें भी रख दी जाती हैं। —अनु०

रही थीं और खिड़की के ठीक नीचे झूमती हुई लाइलक की लाल पड़ती हुई टहनियां जिन पर कोंपलें फूट रही थीं, इस झाड़ी में जमा झुंड की झुंड चिड़ियों की उत्कंठा-भरी चहचहाहट, पिघली हुई बर्फ़ से गीला काला-सा बाड़ा, लेकिन सबसे बढ़कर भीनी-भीनी ख़ुशबूदार हवा और उल्लास-भरा सूरज – ये सभी मुझे बिल्कुल साफ़ और समझ में आनेवाले ढंग से किसी नयी और बहुत ही सुंदर चीज़ के बारे में बता रहे थे, जिसे मैं बिल्कुल वैसा ही तो बयान नहीं कर सकता जैसा कि वह मुझे बताया गया था, फिर भी मैं उसे उस रूप में बयान करने की कोशिश करूंगा जिस रूप में वह मेरी समझ में आया। हर चीज़ मुझे सौंदर्य, सुख और सद्‌गुण के बारे में बता रही थी, कह रही थी कि सभी मेरे लिए सुलभ और संभव हैं, कि इनमें एक के बिना दूसरा नहीं रह सकता, और यहां तक कि सौंदर्य, सुख और सद्‌गुण एक ही चीज़ हैं। "यह बात अब तक मेरी समझ में क्यों नहीं आयी? मैं पहले कितना दुष्ट था! मैं कितना अच्छा और सुखी हो सकता था, और आगे चलकर मैं कितना अच्छा और सुखी हो सकता हूं!" मैंने मन ही मन कहा। "मुझे जल्दी ही, जल्दी से जल्दी, इसी क्षण बिल्कुल ही दूसरा आदमी बन जाना चाहिये, और बिल्कुल ही दूसरी तरह रहने लगना चाहिये।" लेकिन इसके बावजूद मैं बड़ी देर तक खिड़की की सिल पर बैठा सपने देखता रहा और इसके अलावा कुछ भी नहीं करता रहा। कभी गर्मियों में आपके साथ ऐसा हुआ है कि आप दिन के वक़्त बरसात के उदासी-भरे मौसम में सोने के लिए लेटे हों और सूरज डूबने के वक़्त जागे हों, और जब आपकी आंख खुली हो तो चौड़ी-सी चौकोर खिड़की में से उस पर पड़े हुए लिनेन के परदे के पार, जो हवा से फूल जाता है और खिड़की की सिल से टकराता है, आपकी नज़र बारिश के पानी से भीगी हुई लिंडेन की वीथिका के छायादार बैंगनी-से पक्ष पर और सूरज की चमकदार तिरछी किरनों से आलोकित बाग़ के गीले छोटे रास्ते पर पड़ी हो, अचानक आपके कानों में बाग़ की चिड़ियों के प्रफुल्लित जीवन की आवाज़ पड़ी हो, सूरज की धूप में खिड़की की खुली हुई दरार में आर-पार बिल्कुल साफ़ दिखायी देनेवाले मंडलाते हुए कीड़े आपको दिखायी दिये हों, और आपको बारिश के बाद की हवा के सोंधेपन का आभास हुआ हो

और आपने सोचा हो, "मेरे लिए कितनी शर्म की बात है कि ऐसी सुहानी शाम मैंने सोकर बिता दी!" और उसके बाद आप बाग़ में जाकर जीवन का आनंद लेने के लिए जल्दी से उछलकर खड़े हो गये हों? अगर ऐसा आपके साथ कभी हुआ है, तो वह उस प्रबल भावना का नमूना था जो मैं उस समय अनुभव कर रहा था।

अध्याय ३

दिवास्वप्न

"आज मैं पाप-स्वीकरण की रस्म अदा करूंगा, मैं अपने आपको सारे गुनाहों से पाक कर लूंगा," मैं सोच रहा था, "और अब इसके बाद मैं कोई पाप नहीं करूंगा।..." (यहां पर मैंने उन सारे पापों को याद किया जो मुझे सबसे ज़्यादा परेशान करते रहते थे।) "मैं कभी नाग़ा किये बिना हर इतवार को गिरजाघर जाया करूंगा, और उसके बाद मैं पूरे घंटे-भर बाइबिल पढ़ा करूंगा; और फिर, यूनिवर्सिटी में भरती हो जाने पर हर महीने मुझे जो पच्चीस रूबल का नोट मिला करेगा उसमें से ढाई रूबल (यानी दसवां भाग) मैं ज़रूर ग़रीबों को दे दिया करूंगा और वह भी इस तरह कि किसी को पता न चलने पाये – और मैं भिखारियों को नहीं दूंगा, बल्कि मैं ऐसे ग़रीब लोगों को खोज निकालूंगा जिनके बारे में कोई न जानता हो, कोई अनाथ या कोई बुढ़िया।

"मुझे अलग एक कमरा दिया जायेगा (शायद St.-Jérôme वाला) और उसकी देखभाल मैं ख़ुद किया करूंगा, और उसे बेहद साफ़-सुथरा रखा करूंगा; और मैं किसी और नौकर को अपने लिए कुछ भी काम करने के लिए मजबूर नहीं करूंगा, क्योंकि वह भी तो मेरी तरह ही इंसान है। फिर मैं यूनिवर्सिटी पैदल जाया करूंगा (और अगर मुझे घोड़ागाड़ी दी गयी तो मैं उसे बेच दूंगा और वह पैसा भी ग़रीबों के लिए रख छोड़ूंगा), और मैं हर बात बहुत ही नपे-तुले ढंग से करूंगा (यह 'हर बात' क्या थी इसका मुझे उस वक़्त तक कोई

अंदाज़ा भी नहीं था; लेकिन मैं विवेकपूर्ण, नैतिक और अनिंदनीय जीवन की इस 'हर बात' को स्पष्टतः समझता और महसूस करता था)। जो कुछ पढ़ाया जानेवाला होगा उसे मैं अच्छी तरह तैयार कर लिया करूंगा, और उन विषयों की जानकारी पहले से भी प्राप्त कर लिया करूंगा, इस तरह पहले वर्ष में मैं सबसे आगे रहूंगा, और मैं एक गवेषणात्मक निबंध लिखूंगा; दूसरे वर्ष में मुझे सब कुछ पहले से ही मालूम होगा, और मुमकिन है कि वे लोग मुझे सीधे तीसरे वर्ष के पाठ्यक्रम में पहुंचा दें, इस तरह अठारह साल का होने पर मैं सबसे प्रथम स्थान पाकर स्नातक बन जाऊंगा और मुझे दो स्वर्ण पदक मिलेंगे; फिर मैं स्नातकोत्तर परीक्षा में बैठूंगा, फिर डॉक्टर की परीक्षा में और मैं रूस का एक प्रमुख विद्वान बन जाऊंगा... हो सकता है कि मैं पूरे योरप का भी सबसे विद्वान आदमी बन जाऊं।... और उसके बाद क्या होगा?" मैंने अपने आपसे पूछा। लेकिन यहां पर पहुंचकर मुझे याद आया कि ये सब सपने थे—अहंकार, पाप, जो मुझे शाम को पादरी को बताना पड़ेगा; और मैं फिर अपने चिंतन के प्रारंभ में पहुंच गया। "अपनी पढ़ाई की तैयारी करने के लिए मैं गौरैया पहाड़ी पर चला जाया करूंगा; वहां मैं किसी पेड़ के नीचे एक जगह चुनकर अपना पाठ याद किया करूंगा। कभी-कभी मैं अपने साथ खाने के लिए कुछ ले जाया करूंगा, पनीर या पेदोत्ती के यहां की पैटीस, या कुछ और। फिर मैं थोड़ी देर आराम किया करूंगा और उसके बाद कोई अच्छी-सी किताब पढ़ा करूंगा, या प्राकृतिक दृश्यों के चित्र बनाया करूंगा, या कोई बाजा बजाया करूंगा (बांसुरी बजाना तो मैं ज़रूर सीख लूंगा)। फिर ऐसा होगा कि 'वह' भी गौरैया पहाड़ी पर टहलने आया करेगी, और किसी दिन 'वह' मेरे पास आकर पूछेगी कि मैं कौन हूं। और मैं बड़े उदास भाव से उसकी ओर देखूंगा और कहूंगा कि मैं एक पादरी का बेटा हूं, और यह कि मैं सिर्फ़ यहीं ख़ुश रहता हूं जब मैं अकेला होता हूं, बिल्कुल नितांत अकेला। फिर 'वह' मेरे हाथ में अपना हाथ देकर कुछ कहेगी और मेरे बग़ल में बैठ जायेगी। इस तरह हम लोग वहां रोज़ जाने लगेंगे और हम दोस्त बन जायेंगे और मैं उसे चूम लूंगा।... नहीं, ऐसा करना ठीक न होगा; इसके विपरीत, आज से मैं किसी औरत की

तरफ़ आंख उठाकर देखूंगा भी नहीं। नौकरानियों की कोठरी में हरगिज़ नहीं जाऊंगा मैं, कभी नहीं जाऊंगा, मैं कोशिश करूंगा कि उसके पास से होकर गुज़रूं भी नहीं; और तीन साल में मैं वालिग़ हो जाऊंगा और मैं शादी कर लूंगा, बिल्कुल पक्की बात है। मैं रोज़ जितनी भी हो सकेगी जिमनास्टिक किया करूंगा ताकि बीस साल का होने पर मैं रैपो से भी तगड़ा हो जाऊं। पहले दिन मैं अपने फैले हुए हाथ में पांच मिनट तक आधा पूड* वज़न उठाऊंगा, दूसरे दिन इक्कीस पौंड, तीसरे दिन बाईस पौंड, और इसी तरह रोज़ वज़न बढ़ता जायेगा, यहां तक कि मैं दोनों हाथों में चार-चार पूड वज़न उठा सकूंगा और मैं सब नौकरों से तगड़ा हो जाऊंगा; और अगर कोई मेरा अपमान करने की हिम्मत करेगा, या 'उसके' बारे में बेअदबी से बात करेगा तो मैं सिर्फ़ एक हाथ से उसकी गर्दन पकड़कर उसे ज़मीन से एक-डेढ़ मीटर ऊपर उठा दूंगा, और उसे बस इतनी देर इसी तरह उठाये रहूंगा कि उसे मेरी ताक़त का अंदाज़ा हो जाये, और फिर मैं उसे छोड़ दूंगा। लेकिन ऐसा करना भी ठीक नहीं है; अरे, कोई बात नहीं है, मैं उसे कोई नुक़सान थोड़े ही पहुंचाऊंगा, मैं तो उसे सिर्फ़ यह दिखाऊंगा कि मैं..."

कोई इस बात के लिए मुझे बुरा-भला न कहे कि मेरे जवानी के सपने भी उतने ही बचकाना थे जितने मेरे बचपन और लड़कपन के थे। मुझे पूरा यक़ीन है कि अगर मैं जीते-जीते बेहद बूढ़ा भी हो जाऊं और बीतते हुए वर्षों के साथ मैं अपनी कहानी बयान करता रहूं तो सत्तर बरस का बूढ़ा हो जाने के बाद भी मैं वैसे ही निहायत बचकाना सपने देखता हुआ पाया जाऊंगा जैसे कि मैं इस वक़्त देखता हूं। मैं किसी सलोनी मरीया के सपने देखूंगा जो मुझसे, एक पोपले बूढ़े से, उसी तरह प्यार करेगी जैसे वह मज़ेपा से करती थी;** मैं सपने देखूंगा कि किस तरह मेरा मंदबुद्धि बेटा किसी असाधारण परि-स्थिति की वजह से अचानक मंत्री बन जायेगा, या किस तरह अचानक करोड़ों की दौलत मेरे हाथ लग जायेगी। मुझे पक्का यक़ीन है कि

---

* भार की रूसी माप जो लगभग १६ किलोग्राम के बराबर है। – अनु०

** संकेत पुश्किन की कविता 'पोल्तावा' की ओर है। – अनु०

कोई भी मनुष्य या कोई भी उम्र ऐसी नहीं है जो सपने देखने की इस सुखद और सांत्वना देनेवाली क्षमता से वंचित हो। फिर भी, चमत्कारी स्वप्नों की एक सामान्य विशेषता को छोड़कर – साकार न होने का उनका गुण – हर मनुष्य के और जीवन की हर अवस्था के सपनों की अपनी खास विशेषताएं होती हैं। उस दौर में जिसे मैं अपने लड़कपन का अंत और अपनी जवानी की शुरूआत मानता हूं, चार भावनाएं मेरे सपनों का आधार थीं: 'उसका', एक कल्पित स्त्री का, प्रेम जिसके बारे में मैं हमेशा एक ही ढंग से सोचता था, और जिससे मैं किसी भी क्षण कहीं न कहीं मिल जाने की आशा लगाये रहता था। यह 'वह' कुछ-कुछ सोनेच्का जैसी थी, कुछ-कुछ वसीली की पत्नी माशा की उस छवि जैसी जब वह टब के पास खड़ी होकर कपड़े धोती होती थी, और कुछ-कुछ अपनी गोरी-गोरी गर्दन में मोतियों की माला पहने उस औरत जैसी जिसे मैंने बहुत पहले थियेटर में बग़लवाले बॉक्स में बैठे हुए देखा था। दूसरी भावना थी प्यार की लालसा। मैं चाहता था कि हर आदमी मुझे जाने और मुझसे प्यार करे। मैं चाहता था कि कुछ ऐसा हो जाये कि मैं अपना नाम लूं, निकोलाई इर्तेन्येव, और हर आदमी इस सूचना से चौंककर मेरे पास भीड़ लगाकर खड़ा हो जाये और किसी चीज़ के लिए मुझे धन्यवाद देने लगे। तीसरी भावना थी किसी उल्लेखनीय, गौरवशाली सुख की आशा की – यह भावना इतनी अपार और इतनी दृढ़ थी कि उन्माद की सीमाओं को छू लेती थी। मुझे जल्दी ही किसी न किसी असाधारण परिस्थिति की वजह से संसार का सबसे महान और सबसे प्रतिष्ठित आदमी बन जाने का इतना पक्का यक़ीन था कि मैं हर वक़्त बड़ी उत्कंठा से मन को मोह लेनेवाली किसी चमत्कारी और आनंदमयी चीज़ के होने की आस लगाये रहता था। मैं हमेशा अपेक्षा करता रहता था कि वह चीज़ शुरू होनेवाली ही थी और मैं वह सब कुछ प्राप्त कर लूंगा जिसकी मनुष्य कल्पना ही कर सकता है, और मैं हमेशा हड़बड़ाकर हर दिशा में यह सोचकर भागता रहता था कि वह चीज़ उस जगह शुरू हो भी चुकी है जहां मैं नहीं हूं। चौथी और मुख्य भावना अपने आपसे विरक्ति और पश्चात्ताप की थी, लेकिन उस पश्चा-त्ताप में सुख की आशा इस तरह मिली रहती थी कि उसमें दुःखी

होने की कोई बात नहीं थी। स्वयं को अपने समस्त अतीत से अलग कर लेना, हर काम नये सिरे से करना, जो कुछ भी हो चुका था उस सबको भूल जाना, और अपने जीवन को उसके सारे संबंधों सहित फिर से शुरू करना मुझे इतना आसान और स्वाभाविक मालूम होता था कि मैं अपने ऊपर न अतीत का बोझ महसूस करता था और न ही उसकी वजह से ख़ुद को ज़ंजीरों में जकड़ा हुआ पाता था। अतीत से नफ़रत करने और जितना अंधकारमय वह था उससे भी ज़्यादा अंधकार-मय रूप में उसे देखने में मुझे मज़ा भी आता था। अतीत की स्मृतियों का वृत्त जितना ही अधिक काला होता था उसकी पृष्ठभूमि में वर्तमान का निर्मल, ज्योतिर्मय विंदु और भविष्य के इंद्रधनुष के रंग उतने ही ज़्यादा उभरकर अधिक निष्कलंक और चमकदार दिखायी देते थे। पश्चात्ताप का और निर्विकार श्रेष्ठता प्राप्त करने की उत्कट इच्छा का यह स्वर मेरे विकास की उस अवस्था की मुख्य नयी आत्मिक भावना का द्योतक था; और यही स्वर था जिसने स्वयं अपने वारे में, लोगों के वारे में, और भगवान की सृष्टि के वारे में मेरे दृष्टिकोण के लिए नये सिद्धांत प्रदान किये। हे, धन्य, सुखद स्वर, जिसने वाद के दिनों में—उन दुःख-भरे दिनों में जब आत्मा चुपचाप जीवन के असत्य और अवगुण के बोझ के नीचे दबकर रह गयी थी, अतीत को बेनक़ाब करके और वर्तमान के ज्योतिर्मय विंदु की ओर संकेत करके और उसके प्रति मन में लगाव पैदा करके, और भविष्य में कल्याण तथा सुख का आश्वासन देकर हर असत्य के ख़िलाफ़ कितनी ही बार अचानक आवाज़ उठायी—हे, धन्य, सुखद स्वर! क्या एक दिन तुम शांत हो जाओगे?

अध्याय ४

हमारा परिवार-वृत्त

उस साल वसंत के दिनों में पापा शायद ही कभी घर पर होते थे। लेकिन जब भी वह होते थे तब वह बहुत मस्त रहते थे; पियानो पर अपनी पसंद की धुनें बजाते रहते थे, शरारत-भरी नज़रों से हम

लोगों को देखते थे और मीमी के बारे में और हम सब लोगों के बारे में मज़ाक़ गढ़ते रहते थे ; उदाहरण के लिए, एक बार उन्होंने कहा कि जार्जिया के राजकुमार ने मीमी को एक बार बाहर घुड़सवारी करते देख लिया था, और वह उन पर इतनी बुरी तरह लट्टू हो गये थे कि उन्होंने अदालत में तलाक़ की अर्ज़ी तक दे दी थी, या यह कि मैं वियना के राजदूत का सहायक सचिव नियुक्त कर दिया गया था – यह ख़बर वह बिल्कुल गंभीर मुद्रा धारण करके सुनाते थे ; फिर कभी, वह कात्या को मकड़ियों से डराते थे, जिनसे उसे बहुत डर लगता था। हमारे मित्रों दुबकोव और नेख़ल्यूदोव के साथ वह बड़ी हार्दिकता का व्यवहार करते थे, और वह हमें और मिलने आनेवालों को लगातार अगले साल के लिए अपनी योजनाएं बताते रहते थे। ये योजनाएं हालांकि लगभग रोज़ ही बदलती रहती थीं और एक-दूसरे का खंडन करती थीं, फिर भी वे इतनी आकर्षक होती थीं कि हम उन्हें बड़ी उत्सुकता से सुनते थे, और ल्यूबा बिना पलक झपकाये पापा के मुंह को घूरती रहती थी कि कहीं कोई शब्द वह सुनने से चूक न जाये। कभी उनकी योजना होती कि वह हम लोगों को मास्को में यूनिवर्सिटी में छोड़कर दो साल के लिए ल्यूबा के साथ इटली चले जायेंगे, फिर कभी वह क्रीमिया में दक्षिणी समुद्रतट पर ज़मीन ख़रीद लेने और हर साल गर्मी में वहां जाने की योजना बनाते, या फिर कभी उनकी योजना सारे परिवार को लेकर पीटर्सबर्ग चले जाने की होती, वग़ैरह-वग़ैरह। लेकिन पापा की आश्चर्यजनक मस्ती के अलावा उनमें एक ऐसा परिवर्तन भी हुआ था जिस पर मुझे बहुत ताज्जुब होता था। उन्होंने अपने लिए कुछ ठाठदार कपड़े बनवा लिये थे – जैतूनी रंग का टैल-कोट, नये फ़ैशन की पतलून, और लंबा ओवरकोट, जो उन पर बहुत फबता था – और जब वह कहीं बाहर जाते थे, विशेष रूप से एक ख़ास महिला के यहां, तो वह मादक सुगंध से महकते रहते थे ; मीमी जब भी इस महिला की चर्चा करती थीं तो आह भरकर और उनके चेहरे पर ऐसा भाव रहता था मानो कह रही हों, "बेचारे अनाथ बच्चे ! कैसा अभागा उन्माद है ! अच्छा ही है कि 'वह' अब नहीं रहीं," वग़ैरह-वग़ैरह। मुझे निकोलाई से पता चला (क्योंकि पापा हम लोगों को अपने जुए से संबंधित

मामलात के बारे में कभी नहीं बताते थे) कि उस साल जाड़ों में ताश के खेल में उसकी क़िस्मत बहुत अच्छी रही थी, उन्होंने बेहद बड़ी रक़म जीती थी, जो सारी की सारी उन्होंने बैंक में रख दी थी, और उस साल वसंत में अब उनका जुआ खेलने का कोई इरादा नहीं था। शायद यही वजह थी कि वह जल्दी से गांव चले जाने के लिए इतने बेताब थे, कि कहीं ऐसा न हो कि उन्हें अपने ऊपर क़ाबू न रह जाये। उन्होंने यह भी फ़ैसला कर लिया कि वह यूनिवर्सिटी में मेरे भरती होने का भी इंतज़ार नहीं करेंगे और ईस्टर के फ़ौरन बाद लड़कियों को साथ लेकर पेत्रोव्स्कोये चले जायेंगे, जहां मुझे और वोलोद्या को बाद में जाना था। जाड़े भर वसंत तक वोलोद्या लगातार दुबकोव के साथ चिपका रहा था (लेकिन द्मित्री के प्रति उसका उत्साह काफ़ी ठंडा पड़ गया था और वे एक-दूसरे से दूर होने लगे थे)। जो बातचीत मेरे कानों में पड़ती थी उससे मैं जहां तक अनुमान लगा पाया था, उनकी सबसे ख़ास ख़ुशियां थीं लगातार शैम्पेन पीना, उस लड़की की खिड़की के नीचे से होकर, जिनसे उन दोनों को प्रेम था, स्लेज पर बैठकर गुज़रना और नाचना – अब बच्चों के नाच में नहीं, बल्कि सचमुच के नाच में। इस आख़िरी बात की वजह से, मेरे और वोलोद्या के परस्पर स्नेह के बावजूद, हम दोनों के बीच कुछ मनमुटाव हो गया। हमें इस बात का आभास था कि अभी तक घर पर मास्टरों से पढ़नेवाले लड़के और एक ऐसे आदमी के बीच, जो नाच की महफ़िलों में हिस्सा लेता हो, इतना ज़्यादा अंतर होता है कि हम दोनों अपने अंतरंग विचार एक-दूसरे को नहीं बता पाते थे। कात्या अच्छी ख़ासी बड़ी हो गयी थी और बहुत-से उपन्यास पढ़ती रहती थी, और यह विचार कि जल्दी ही उसका ब्याह हो जायेगा अब मुझे कोई मज़ाक़ नहीं मालूम होता था; फिर भी, हालांकि वोलोद्या भी बड़ा हो गया था, वे दोनों एक-दूसरे से बहुत मिलते-जुलते नहीं थे और यहां तक लगता था कि उन्हें एक-दूसरे से नफ़रत है। आम तौर पर, जब कात्या घर पर अकेली होती थी तो हर वक़्त बस अपने उपन्यासों में ही खोयी रहती थी, और ज़्यादातर वक़्त उकतायी हुई रहती थी; लेकिन जब पुरुष मिलने आते थे तो वह बहुत चपल और मिलनसार हो जाती थी, और उन्हें देखकर ऐसे आंखें मटकाती थी कि मेरी समझ में ही

के साथ मेज़ के नीचे हाथ रगड़ते हुए सूप के प्लेटों को, जिनमें से भाप उठती रहती थी, एकटक देखता रहता था, जिसे ख़ानसामां हर आदमी को उसके पद, उसकी उम्र और उस पर नानी की कृपा-दृष्टि के क्रम से बांटता था।

अब खाना खाने के लिए आने पर मैं न वैसा उल्लास अनुभव करता था और न वैसी उत्कंठा।

इस दिन, मीमी, St.-Jérôme और लड़कियों के बीच रूसी के अध्यापक के बेहद बदसूरत जूतों और प्रिंसेस कोर्नाकोवा की बेटियों की झालरदार पोशाकों इत्यादि के बारे में जो बातें हो रही थीं – जिस तरह की बातों से पहले मेरे मन में सचमुच तिरस्कार की भावना जागृत होती थी जिसे मैं कात्या और ल्यूबा की हद तक छिपाने की भी कोशिश नहीं करता था – उनसे मेरी नयी और सदाचारी मनोदशा में तनिक भी हलचल पैदा नहीं हुई। मैं असाधारण रूप से सुशील बना रहा; मैं एक विशेष स्निग्ध मुस्कराहट के साथ उनकी बातें सुनता रहा, बड़ी शिष्टता से मैंने कहा कि क्वास मेरी ओर बढ़ा दिया जाये, और खाना खाने के वक़्त मेरे इस्तेमाल किये हुए एक फ़िक़रे को जब St.-Jérôme ने ठीक किया और मुझसे कहा कि je peux के बजाय je puis* कहना बेहतर है, तो मैंने उनसे सहमति प्रकट की। फिर भी मैं यह मानता हूं कि मुझे कुछ बुरा लगा कि किसी ने मेरी सुशीलता और शिष्टता की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। खाना खाने के बाद ल्यूबा ने मुझे एक काग़ज़ दिखाया जिस पर उसने अपने सारे पापों की सूची लिखी थी। मैंने उससे कहा कि यह तो उसने बहुत अच्छा किया था, लेकिन पापों को अपनी आत्मा पर अंकित कर लेना इससे भी अच्छा है और "इसका इससे कोई संबंध नहीं था।"

"क्यों नहीं?" ल्यूबा ने पूछा।

"कोई बात नहीं – वह भी ठीक ही है; मेरी बात तुम्हारी समझ में नहीं आ सकती।" और यह कहकर मैं ऊपर अपने कमरे में चला गया; मैंने St.-Jérôme से तो यह कहा कि मैं पढ़ने जा रहा

---

* मैं कर सकता हूं। (फ़ांसीसी)

हूं, लेकिन वास्तव में मैं पाप-स्वीकरण से पहले का समय, जो डेढ़ घंटे बाद होनेवाला था, पूरे जीवन के लिए अपने कर्त्तव्यों और कामों की सूची बनाने में व्यतीत करना चाहता था, और काग़ज़ पर अपने जीवन का उद्देश्य और वे नियम लिख डालना चाहता था जिनका मुझे हमेशा अडिग रूप से पालन करना था।

अध्याय ५

नियम

मैंने काग़ज़ का एक ताव लिया और सबसे पहले आनेवाले साल के लिए अपने तमाम कामों और कर्त्तव्यों की सूची तैयार करने की कोशिश की। इसके लिए काग़ज़ पर लकीरें खींचना ज़रूरी था, लेकिन चूंकि रूलर मुझे कहीं मिला नहीं इसलिए मैंने लैटिन का शब्दकोश इस्तेमाल किया। जब मैं शब्दकोश के सहारे क़लम से लकीर खींचता और फिर शब्दकोश को पीछे सरकाता तो पता यह चलता कि लकीर खींचने के बजाय मैंने काग़ज़ पर स्याही का एक लंबा-सा धब्बा डाल दिया है; इसके अलावा शब्दकोश काग़ज़ से छोटा भी था, और उसके मुलायम कोने के पास पहुंचकर लकीर टेढ़ी हो जाती थी। मैंने काग़ज़ का एक और ताव लिया, और शब्दकोश को किसी तरह खिसकाकर मैं जैसी-तैसी लकीरें खींचने में सफल हो गया। अपने कर्त्तव्यों को तीन श्रेणियों में बांटकर – अपने प्रति, अपने पड़ोसी के प्रति, और ईश्वर के प्रति – मैंने पहली श्रेणी के कर्त्तव्य लिखना शुरू किया; लेकिन उनकी संख्या इतनी बड़ी थी, और उनमें इतने प्रकार के कर्त्तव्य थे और इतने उप-विभाग थे कि ज़रूरी यह हो गया कि पहले लिखा जाये 'जीवन के नियम' और फिर कामों और कर्त्तव्यों की सूची तैयार करना शुरू किया जाये। मैंने काग़ज़ के छः ताव लिये, उन्हें एक में सिलकर किताब जैसी तैयार कर ली और सबसे ऊपर लिखा 'जीवन के नियम'। ये शब्द ऐसे टेढ़े-मेढ़े लिखे गये थे कि मैं बड़ी देर तक सोचता रहा कि उन्हें फिर से क्यों न लिख डालूं; उस क्षत-

विक्षत सूची और इस आकारहीन शीर्षक को देखकर मैं बड़ी देर तक दुःखी रहा। हर वह चीज़ जो मेरी आत्मा में इतनी सुंदर और स्वच्छ होती है, वह काग़ज़ पर आते ही इतनी घिनौनी क्यों हो जाती है, और आम तौर पर जीवन में भी, जब मैं अपनी सोची हुई किसी बात को व्यवहार में पूरा करना चाहता हूं?

"पादरी साहब आ गये हैं, नीचे चलकर उनकी हिदायतें सुन लीजिये," निकोलाई ने आकर सूचना दी।

मैंने अपनी किताब मेज़ में छिपा दी, आईने में अपनी सूरत देखी, बाल ऊपर की ओर काढ़े, जिनकी वजह से मेरी राय में मेरी सूरत विचारमग्न लगने लगी, और बैठक में गया, जहां एक मेज़ पर मेज़पोश बिछाकर उस पर देव-प्रतिमा और जली हुई मोमबत्तियां रखकर पूरी तैयारी कर रखी गयी थी। जिस वक़्त मैंने प्रवेश किया उसी वक़्त पापा भी दूसरे दरवाज़े से अंदर आये। पुरोहित ने, जो सफ़ेद बालों और कठोर, बूढ़े चेहरेवाला एक पादरी था, पापा को आशीर्वाद दिया। पापा ने उसके छोटे-से, चौड़े, सूखे हाथ को चूमा; मैंने भी वैसा ही किया।

"वोल्देमार को बुलाओ," पापा ने कहा, "कहां गया वह? अरे, हां, वह तो यूनिवर्सिटी में कम्युनियन ले रहा होगा।"

"वह प्रिंस के साथ पढ़ रहा है," कात्या ने कहा, और ल्यूबा की ओर देखा। न जाने क्यों ल्यूबा अचानक शरमा गयी, कांपकर यह जताने लगी जैसे किसी चीज़ से उसे पीड़ा हो रही हो, और कमरे से बाहर निकल गयी। मैं उसके पीछे-पीछे गया। ड्राइंग-रूम में रुककर उसने अपने काग़ज़ पर कुछ और लिखा।

"क्या, तुमने कोई नया पाप किया है?" मैंने पूछा।

"नहीं, ऐसा तो कुछ नहीं है," उसने झेंपते हुए कहा; उसका चेहरा लाल हो गया।

उसी समय हमें बाहरवाले छोटे कमरे में वोलोद्या से विदा लेते हुए द्मित्री की आवाज़ सुनायी दी।

"अरे हां, हर चीज़ तुम्हारे लिए एक ललचावा बन जाती है," कात्या ने कमरे में आकर ल्यूबा को संबोधित करते हुए कहा।

मेरी समझ में नहीं आया कि बहन को हो क्या गया था: वह

इतनी बुरी तरह खिसिया गयी कि उसकी आंखों में आंसू छलक आये, और बढ़ते-बढ़ते उसकी खिसियाहट ने स्वयं अपने ऊपर और कात्या के ऊपर गुस्से का रूप धारण कर लिया, जो स्पष्टतः उसे चिढ़ा रही थी।

"कोई भी साफ़ देख सकता है कि तुम परदेसी हो" (कात्या को कोई भी बात इतनी अपमानजनक नहीं लगती थी जितनी कि यह कि कोई उसे "परदेसी" कहे और इसीलिए ल्यूबा ने ऐसा किया था)। "ऐसे संस्कार से पहले," अपने स्वर में गरिमा लाकर वह कहती रही, "तुमने मुझे जान-बूझकर परेशान कर दिया... तुम्हें समझना चाहिये... कि यह कोई मजाक़ की बात नहीं है।..."

"जानते हो इसने क्या लिखा है, निकोलेंका?" कात्या ने "पर-देसी" कहे जाने पर चिढ़कर कहा। "इसने लिखा है..."

"मैं नहीं जानती थी कि तुम इतनी निर्दयी हो," ल्यूबा ने हम लोगों से दूर जाते हुए बिल्कुल रुआंसे स्वर में कहा। "ऐसे अवसर पर यह मुझे पाप की ओर ले जाती है, और सो भी जान-बूझकर। मैं तो तुम्हारी भावनाओं और पीड़ाओं को लेकर तुम्हारे पीछे नहीं पड़ जाती, या पड़ जाती हूं?"

अध्याय ६

पाप-स्वीकरण

ध्यान भटकानेवाले इन और ऐसे ही दूसरे विचारों को लिये हुए मैं बैठक में लौट आया; सब लोग वहां जमा हो गये थे और पुरोहित उठकर पाप-स्वीकरण से पहले प्रार्थना पढ़ने को तैयार हुआ। लेकिन जैसे ही चारों ओर छायी हुई खामोशी में पादरी की कठोर, भावपूर्ण आवाज़ गूंजी, और खास तौर पर जब उसने इन शब्दों से हमें संबोधित किया, "बिना किसी संकोच के, कुछ भी छिपाये या घटाये बिना अपने सारे पापों को स्वीकार कर लो और तुम्हारी आत्मा ईश्वर के सामने साफ़ हो जायेगी; लेकिन अगर तुमने कुछ भी छिपाया तो

तुम्हारा पाप और भी बढ़ जायेगा," तब मेरे मन में फिर वही श्रद्धामय उद्विग्नता उभर आयी जो मैंने आनेवाले संस्कार की बात ध्यान में आते ही कल सवेरे अनुभव की थी। मुझे अपनी इस दशा को अनुभव करने में कुछ मजा भी आ रहा था, और मैंने उन सभी विचारों को रोककर जो मेरे दिमाग़ में आ रहे थे, और किसी चीज़ से डरने की कोशिश करके इस दशा को बनाये रखने की कोशिश की।

सबसे पहले पापा पाप-स्वीकरण के लिए गये। वह बड़ी देर तक नानी के कमरे में रहे, और इस पूरे दौरान में हम सब लोग जो बैठक में थे चुप रहे या कानाफूसी करते रहे कि सबसे पहले कौन जाये। आख़िरकार दरवाज़े के पीछे से एक बार फिर पादरी की आवाज़ प्रार्थना के शब्दों का उच्चारण करती हुई सुनायी दी, और उसके बाद पापा के क़दमों की आहट सुनायी दी। दरवाज़ा चरचराया और वह बाहर निकले, खांसते हुए और कंधा बिचकाते हुए जैसी कि उनकी आदत थी, और हम लोगों की ओर न देखते हुए।

"अब तुम जाओ, ल्यूबा, और देखो, सब कुछ कह देना। तुम मेरी सबसे बड़ी पापिन हो, जानती हो," पापा ने उसके गाल पर चुटकी भरकर मज़ाक़ करते हुए कहा।

ल्यूबा का चेहरा लाल हो गया और फिर फ़ौरन उसका रंग बिल्कुल उतर गया, उसने एप्रन में से अपनी सूची निकाली, और फिर छिपा ली, और अपना सिर कंधों के बीच धंसाये, मानो उसे ऊपर से कोई आघात होने की आशंका हो, वह दरवाज़े के पार निकल गयी। वह वहां ज़्यादा देर नहीं रुकी लेकिन जब वह बाहर आयी तो उसकी सिसकियां रह-रहकर उसके कंधों को झटका दे रही थीं।

आख़िरकार, सलोनी कात्या के बाद, जो मुस्कराती हुई बाहर निकली थी, मेरी बारी आयी। मैं अपने अंदर वही मूर्खतापूर्ण आतंक और उस आतंक को जान-बूझकर बढ़ाने की इच्छा लिये हुए उस धुंधली-धुंधली रोशनीवाले कमरे में घुसा। पादरी साहब पाठ-मंच के सामने खड़े थे, और उन्होंने अपना चेहरा धीरे-धीरे मेरी ओर मोड़ा।

नानी के कमरे में मैं पांच मिनट से ज़्यादा नहीं रहा, लेकिन जब मैं बाहर निकला, तो मैं बहुत ख़ुश था और, उस समय की अपनी आस्थाओं के अनुसार, मैं बिल्कुल शुद्ध, नैतिक दृष्टि से बदला

हुआ, और नया आदमी बनकर निकला था। हालांकि जीवन के पुराने परिवेश की सभी चीज़ें मुझे अरुचिकर लग रही थीं, वही कमरे, वही फ़र्नीचर, मेरी वही आकृति भी (मैं चाहता तो यही था कि मेरा बाहरी रूप भी बदल जाये, जिस तरह मेरे अंदर का सब कुछ बदल गया था) – फिर भी, इसके बावजूद, मैं जब तक सोने के लिए लेट नहीं गया तब तक मैं इसी हर्षप्रद मनस्थिति में रहा।

अपनी कल्पना में उन सभी पापों के बारे में सोचते-सोचते, जिनसे मैं पाक हो गया था, मुझे नींद आने लगी थी कि इतने में अचानक मुझे एक शर्मनाक पाप याद आया जिसका मैंने पाप-स्वीकरण में उल्लेख नहीं किया था। पाप स्वीकार करने से पहले की प्रार्थना के शब्द मुझे याद आये और मेरे कानों में लगातार गूंजने लगे। मेरे मन की सारी स्थिरता एक क्षण में ग़ायब हो गयी। "लेकिन अगर तुमने कुछ भी छिपाया तो तुम्हारा पाप और भी बढ़ जायेगा," ये शब्द मुझे निरंतर सुनायी दे रहे थे। मैं सोच रहा था कि मैं ऐसा भयानक पापी था कि कोई भी दंड मेरे लिए पर्याप्त नहीं था। अपनी स्थिति पर विचार करते हुए मैं बड़ी देर तक लेटा करवटें बदलता रहा, और प्रतिक्षण दैवी दंड की और यहां तक कि आकस्मिक मृत्यु की प्रतीक्षा करता रहा – यह एक ऐसा विचार था जिसकी वजह से मुझ पर अकथनीय आतंक छा गया। लेकिन सहसा मेरे मन में यह सुखद विचार उठा कि सबेरे रोशनी होते ही मैं पैदल या किराये की गाड़ी करके मठ में पादरी के पास जाऊंगा और एक बार फिर पाप स्वीकार कर लूंगा और यह सोचकर मैं शांत हो गया।

अध्याय ७

मठ की यात्रा

उस रात इस डर से कि मैं कहीं देर तक सोता न रह जाऊं मेरी आंख कई बार खुली, और छः बजे मैं उठ खड़ा हुआ। खिड़कियों में अभी रोशनी ठीक से दिखायी भी नहीं देने लगी थी। मैंने कपड़े और जूते पहने, जो बिस्तर के पास ही बिना साफ़ किये हुए उल्टे-

सीधे पड़े थे क्योंकि निकोलाई को उन्हें अभी तक साफ़ करके ठीक से रखने का वक्त नहीं मिला था ; हाथ-मुंह धोये और प्रार्थना किये बिना ही मैं अपनी ज़िंदगी में पहली बार अकेला सड़क पर निकल गया।

सड़क के दूसरी ओर वड़े-से हरी छतवाले मकान के पीछे से निस्तेज ठिठुरते हुए प्रभात की लालिमा झांक रही थी। वसंत की सुवह के तीखे पाले ने गीली मिट्टी और पानी की धाराओं को जकड़ दिया था, जमी हुई वर्फ़ पांवों के नीचे कुरकुरा रही थी, और पाले के थपेड़े मेरे चेहरे और हाथों पर डंक-सा मार रहे थे।

उस वक्त तक हमारी सड़क पर एक भी गाड़ीवाला नहीं था, हालांकि मुझे पूरा भरोसा था कि किराये की गाड़ी तो मिल ही जायेगी ताकि मैं ज़्यादा तेज़ी से वहां तक जाकर वापस लौट आऊं। वस अरवात सड़क पर कुछ ठेले धीरे-धीरे घिसटते हुए जा रहे थे, और कुछ राज-मज़दूर सड़क की पटरी पर बातें करते हुए जा रहे थे। कोई एक हज़ार क़दम जाने के बाद मुझे रास्ते में नौकर और औरतें मिलने लगीं जो टोकरियां लेकर बाज़ार जा रही थीं, पीपों में पानी भरने जा रही थीं ; नुक्कड़ पर एक विस्कुटवाले ने अपना खोमचा लगा दिया था, कलाच* बनानेवाले एक नानवाई की दुकान खुल गयी थी ; और अर-वात्स्की फाटक के पास मुझे एक बूढ़ा गाड़ीवाला अपनी नीले रंग की टूटी-फूटी पैवंद लगी घोड़ागाड़ी पर सोता हुआ मिला। शायद वह अभी तक नींद में था, इसलिए उसने मठ तक ले जाकर वापस ले आने के वीस कोपेक मांगे, लेकिन फिर अचानक उसे होश आया, मैं गाड़ी पर बैठने ही जा रहा था कि उसने रास के सिरे घोड़े की पीठ पर जमाये और चल पड़ने को हुआ, "मेरे घोड़े के दाने-पानी का वक्त है!" वह बुदबुदाया। "मैं आपको ले नहीं जा पाऊंगा, साहव।"

वड़ी मुश्किल से मैंने उसे रुकने पर राज़ी किया और उसे चालीस कोपेक देने का वादा किया। उसने घोड़े की रास खींची, मुझे वड़े ध्यान से देखा, और वोला, "वैठ जाइये, साहव।" सच कहता हूं कि मुझे

---

* नाले की शक्ल का नान-पाव या डवलरोटी। – अनु०

कुछ-कुछ डर लग रहा था कि वह मुझे किसी सुनसान गली में ले जाकर लूट लेगा। उसके फटे कोट का कॉलर पकड़कर जिसके नीचे से उसकी गर्दन झुकी हुई पीठ के ऊपर बड़े दयनीय ढंग से दिखायी दे रही थी, मैं नीली गोलाईदार हिलती-डुलती सीट पर बैठ गया, और हम खड़खड़ाते हुए वोज्द्विजेंका सड़क पर नीचे की ओर चल दिये। रास्ते में मैंने देखा कि गाड़ी की पीठ पर बस उसी हरे रंग का कपड़ा मढ़ा हुआ था जिस कपड़े का ड्राइवर का कोट बना था; और इस बात से न जाने क्यों मेरा मन शांत हो गया और मुझे इस बात का डर नहीं रह गया कि वह मुझे किसी सुनसान गली में ले जाकर लूट लेगा।

जब हम लोग मठ पहुंचे सूरज काफ़ी ऊंचा चढ़ चुका था और उसने ग़िरजाघरों के गुंबदों पर अपनी चमकदार सुनहरी किरनें बिखेर दी थीं। छाया में अभी तक जहां-तहां वर्फ़ दिखायी दे रही थी, लेकिन सड़क पर गंदले पानी की धाराएं बह रही थीं, और घोड़ा पिघली हुई पतली कीचड़ में से छप-छप करता हुआ आगे बढ़ रहा था। मठ के अहाते में घुसने पर जो पहला आदमी मिला उससे मैंने पूछा कि पादरी साहब कहां मिलेंगे।

"वह उधर रही उनकी कोठरी," गुजरते हुए मठवासी ने क्षण-भर के लिए रुककर एक छोटे-से घर की ओर इशारा किया जिसके सामने छोटी-सी बरसाती थी।

"बहुत-बहुत शुक्रिया आपका," मैंने कहा।...

फिर मैं इस चिंता में पड़ गया कि सारे मठवासी, जो उस वक़्त गिरजाघर में से निकलकर बाहर आते-आते मेरी ओर ही देख रहे थे, मेरे बारे में क्या सोच रहे होंगे? न तो मैं बड़ी उम्र का आदमी था और न ही बिल्कुल बच्चा था; मेरा मुंह धुला हुआ नहीं था, मेरे बालों में कंघी नहीं की गयी थी, मेरे कपड़े साफ़-सुथरे नहीं थे, मेरे जूतों पर पालिश नहीं थी और कीचड़ लगी हुई थी। मेरी ओर देखनेवाले मठवासी लोगों के किस वर्ग से मेरा संबंध जोड़ते थे? काफ़ी ग़ौर से घूर रहे थे वे मुझे। फिर भी मैं नौजवान मठवासी की बतायी हुई दिशा में चलता रहा।

काली पोशाक पहने हुए सफ़ेद घनी भवोंवाला एक बूढ़ा आदमी

मुझे उस संकरे रास्ते में मिला जो मठवासियों की कोठरियों की ओर जाता था और उसने मुझसे पूछा कि मुझे किस चीज़ की ज़रूरत थी।

एक क्षण के लिए तो मेरा जी चाहा कि कह दूं "किसी चीज़ की नहीं," भागकर गाड़ी के पास वापस पहुंच जाऊं और घर चला जाऊं; लेकिन उस बूढ़े की सिकुड़ी हुई भवों के बावजूद उसके चेहरे को देखकर भरोसा पैदा होता था। मैंने कहा कि मुझे पादरी से मिलना है और उसका नाम बताया।

"आइये, छोटे साहब, मैं आपको रास्ता बता दूं," उसने पीछे मुड़ते हुए, और स्पष्टतः मेरे आने की वजह फ़ौरन समझते हुए कहा। "पादरी साहब गिरजाघर में प्रार्थना कर रहे हैं; वह थोड़ी ही देर में यहां आयेंगे।"

उसने दरवाज़ा खोला और फ़र्श पर बिछी हुई साफ़ चादर पर चलता हुआ एक साफ़-सुथरे बरामदे और बाहर के छोटे कमरे से होकर मुझे कोठरी में ले गया।

"मेहरबानी करके यहां इंतज़ार कीजिये," उसने आश्वस्त करने-वाली अनुग्रहपूर्ण दृष्टि से देखते हुए कहा और बाहर चला गया।

मैंने अपने आपको जिस छोटे-से कमरे में पाया वह बहुत ही छोटा था, और बहुत साफ़-सुथरे ढंग से व्यवस्थित था। उसके फ़र्नीचर में बस कुछ ही चीज़ें थीं: दोहरे पल्लोंवाली दो खिड़कियों के बीच जिन पर जेरेनियम के फूलों के दो गमले रखे हुए थे, एक छोटी-सी मेज़ थी जिस पर मोमजामा बिछा हुआ था, देव-प्रतिमाओं को रखने के लिए एक स्टैंड और उनके सामने झूलता हुआ एक चिराग़, एक आराम कुर्सी और दो साधारण कुर्सियां। कोने में दीवार पर एक घड़ी लटकी थी जिसके डायल पर फूल-पत्ते बने हुए थे, और उसके पीतल के वज़न ज़ंजीरों पर लटके हुए थे; बीच की आड़ में (जिसके पीछे शायद पलंग होगा) ठुकी हुई कीलों पर पादरियोंवाले दो लबादे लटके हुए थे; यह आड़ सफ़ेद पुते हुए लकड़ी के तख़्तों से छत से जुड़ी हुई थी।

खिड़कियां लगभग दो अर्शिन की दूरी पर बनी हुई एक सफ़ेद दीवार की ओर खुलती थीं। खिड़कियों और दीवार के बीच में लाइलक की एक छोटी-सी झाड़ी उगी हुई थी। बाहर से ज़रा-सी भी आवाज़ कमरे में नहीं आ पाती थी, जिसकी वजह से इस ख़ामोशी में घड़ी

के पेंडुलम की नपी-तुली और मधुर आवाज़ काफ़ी ऊंची सुनायी देती थी। इस ख़ामोश एकांत जगह में पहुंचते ही इससे पहले के मेरे सारे विचार और सारी स्मृतियां मेरे दिमाग़ से अचानक ग़ायब हो गयीं, मानो वे पहले कभी वहां रही ही न हों, और मैं एक अकथनीय हद तक सुखद कल्पना में पूरी तरह खो गया। नानकीन का उड़े हुए रंगवाला वह लबादा, जिसका अस्तर तार-तार हो चुका था, किताबों की घिसी हुई काली चमड़े की जिल्दें और उनके पीतल के बकसुए, पौधों का फीका हरा रंग, बड़े ध्यान से सींची गयी मिट्टी और अच्छी तरह धोयी गयी पत्तियां, और ख़ास तौर पर पेंडुलम की रह-रहकर सुनायी देनेवाली नीरस आवाज़—ये सब चीज़ें मुझे एक ऐसे नये जीवन के बारे में बता रही थीं जिससे मैं अभी तक बिल्कुल अपरिचित था, एकांत के, प्रार्थना के, शांत, कोलाहलरहित सुख के जीवन के बारे में।...

"महीने बीत जाते हैं, साल बीत जाते हैं," मैं सोच रहा था। "यह हमेशा अकेला रहता है, हमेशा शांत रहता है, यह हमेशा महसूस करता है कि इसका अंतःकरण ईश्वर की दृष्टि में शुद्ध है, और यह कि वह इसकी प्रार्थनाएं सुनता है।" आधे घंटे तक मैं उस कुर्सी पर बैठा कोशिश करता रहा कि हिलूं-डुलूं नहीं और सांस ज़ोर से न लूं, ताकि उन ध्वनियों के सामंजस्य में क़ोई विघ्न न पड़े जो मुझे इतना बहुत-कुछ बता रही थीं। और घड़ी का पेंडुलम पहले की तरह टिक-टिक करता रहा, दाहिनी ओर ज़्यादा ज़ोर से और बायीं ओर अधिक धीरे से।

अध्याय ८

दूसरा पाप-स्वीकरण

पादरी के क़दमों की आहट ने मेरी इस कल्पना को भंग कर दिया।

"स्वागत है," उसने अपने सफ़ेद बालों पर हाथ फेरते हुए कहा। "मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूं?"

मैंने उससे मुझे आशीर्वाद देने को कहा और उसके छोटे-से पीले हाथ को संतोष की विचित्र भावना के साथ चूम लिया।

जब मैंने उसे अपनी फ़रियाद सुनायी तो उसने कोई जवाब नहीं दिया और देव-प्रतिमा के पास जाकर मेरा पाप-स्वीकरण सुनने लगा।

अपने संकोच पर क़ाबू पाकर जब मैंने उसे वह सब कुछ बता दिया जो मेरे मन में था और पाप-स्वीकरण समाप्त हो गया तो उसने अपने हाथ मेरे सिर पर रख दिये और अपने शांत, सुरीले स्वर में वह बोला, "बेटा, तुम्हें हमारे परमपिता का आशीर्वाद प्राप्त हो और तुम्हारे अंदर जो आस्था, भीरुता और विनम्रता है उसे वह अधिकाधिक सुरक्षित रखे। आमीन।"

मैं बेहद खुश था; खुशी के आंसुओं से मेरा गला रुंध गया था; मैंने उसके चोग़े की सिलवटों को चूमा और अपना सिर ऊपर उठाया। मठवासी का चेहरा बिल्कुल शांत था।

मैंने महसूस किया कि भावना के संवेदन में मुझे आनंद मिल रहा था, और इस डर से कि कहीं मैं इससे वंचित न हो जाऊं, मैंने जल्दी से पादरी से विदा ली, इधर-उधर देखे बिना कि कहीं मेरी इस मनस्थिति का लोप न हो जाये मैं अहाते से बाहर निकल आया और एक बार फिर अपनी उस पैवंद-लगी डगमगाती हुई घोड़ागाड़ी पर जा बैठा। लेकिन उस छकड़े के झटकों ने, मेरी आंखों के सामने से होकर गुज़रनेवाली चीज़ों की विविधता ने बड़ी तेज़ी से उस संवेदन को क्षीण कर दिया था; और मैं सोचने लगा था कि शायद पादरी अब तक यह सोचने भी लगा होगा कि मेरी जैसी शुद्ध आत्मावाले नौजवान से अपने जीवन में न तो वह पहले कभी मिला था और न आगे चलकर कभी मिलेगा, और यह कि मेरा जैसा कोई भी दूसरा नहीं है। इस बात का मुझे पक्का विश्वास था, और इस दृढ़ विश्वास के कारण मेरे मन में प्रफुल्लता की ऐसी भावना जागृत हुई कि वह किसी के साथ आलाप की मांग करने लगी।

मेरा जी किसी के साथ बात करने को बेहद तड़प रहा था; लेकिन चूंकि गाड़ीवाले के अलावा कोई पास नहीं था, इसलिए मैंने उसी का सहारा लिया।

"क्यों, मुझे बहुत देर तो नहीं लगी?" मैंने पूछा।

"बहुत तो नहीं, लेकिन घोड़े को दाना खिलाने का वक़्त बहुत पहले ही हो चुका था; बात यह है कि मैं रात को गाड़ी चलाता हूं," उसने जवाब दिया; अब सूरज निकल आने की वजह से वह ज़्यादा ख़ुश नज़र आ रहा था।

"मुझे तो ऐसा लगा कि मुझे एक मिनट से भी ज़्यादा वक़्त नहीं लगा।... और जानते हो मैं मठ में क्यों गया था?" मैंने इतना और कहा और अपनी सीट बदलकर बूढ़े ड्राइवर के और पास जा बैठा।

"अरे, मुझे इससे क्या मतलब, ठीक बात है न? मैं तो जहां सवारियां मुझसे कहती हैं वहीं चला जाता हूं," उसने जवाब दिया।

"नहीं, फिर भी तुम्हारा क्या ख़्याल है?" मैंने आग्रह किया।

"शायद किसी को दफ़न करना होगा, और उसके लिए जगह ख़रीदने गये होंगे," उसने कहा।

"नहीं, मेरे दोस्त; जानते हो मैं किसलिए गया था?"

"मैं कैसे जानूंगा, साहब," उसने फिर वही बात दोहरायी।

उसकी आवाज़ में मुझे इतनी नेकी दिखायी दी कि मैंने उसे अपनी इस यात्रा का कारण, और उसने जो भावना मेरे मन में पैदा की थी उसके बारे में भी बता देने का फ़ैसला किया ताकि उसे नसीहत मिले।

"अगर जानना चाहो तो मैं तुम्हें बताता हूं। देखो, बात यह है..."

और मैंने उसे सब कुछ बता दिया, और अपने सारे सुंदर मनोभाव बयान कर दिये। आज भी मैं उस घटना को याद करके शरमा जाता हूं।

"अच्छा, साहब," उसने संदेहपूर्वक कहा।

और उसके बाद बहुत देर तक वह बिल्कुल शांत और निश्चल बैठा रहा, बस बीच-बीच में कभी अपने कोट की पिछाड़ी ठीक कर लेता था, वह बार-बार उसके रंग-बिरंगे पांव के नीचे से निकल जाती थी, जो अपने बड़े-से बूट में पांवदान पर ऊपर-नीचे उठता-गिरता रहता था। मैं कल्पना करने लगा था कि वह भी मेरे बारे में वही सोच रहा होगा जो पादरी ने सोचा था—अर्थात् यह कि दुनिया में मेरा जैसा अच्छा नौजवान कोई दूसरा नहीं है; लेकिन उसने अचानक मुझसे कहा:

"अरे, मालिक, ये सब तो शरीफ़ लोगों की बातें हैं।"

"क्या?" मैंने पूछा।

"शरीफ़ लोगों की बातें।"

"नहीं, यह मेरी बात समझा नहीं," मैंने सोचा, लेकिन जब तक हम लोग घर नहीं पहुंच गये तब तक मैंने उससे कुछ और नहीं कहा।

हालांकि भक्ति और श्रद्धा की भावना सारे रास्ते नहीं रही, लेकिन उन लोगों के बावजूद जो धूप में चमकती सड़कों पर हर जगह रंग के धब्बों की तरह इधर-उधर बिखरे हुए थे, इन भावनाओं को अनुभव करने का आत्म-संतोष बना रहा; लेकिन घर पहुंचते ही वह भावना बिल्कुल ग़ायब हो गयी। मेरे पास गाड़ीवाले का किराया चुकाने के लिए बीस-बीस कोपेक के दो सिक्के नहीं थे। ख़ानसामां गव्रीलो का मैं पहले से ही क़र्ज़दार था, वह अब मुझे और पैसा देने को तैयार नहीं था। पैसा लाने के लिए मुझे दो बार अहाते के पार भागकर जाते देखकर गाड़ीवाले ने शायद इसकी वजह भांप ली, क्योंकि वह अपनी गाड़ी पर से उतरा और इसके बावजूद कि वह मुझे इतना नेक लगा था, ज़ोर-ज़ोर से उन दग़ाबाज़ों की बातें करने लगा जो अपना किराया नहीं चुकाते; उसके रवैये से साफ़ ज़ाहिर था कि वह मुझसे चिढ़ा हुआ था।

घर में अभी तक सब लोग सोये हुए थे, इसलिए नौकरों के अलावा कोई था भी नहीं जिससे मैं चालीस कोपेक उधार मांग सकता। आख़िरकार, वसीली ने, मुझसे पक्की, बिल्कुल पक्की क़सम लेकर, जिसमें (मुझे उसके चेहरे से ही साफ़ लग रहा था) उसे तनिक भी विश्वास नहीं था, बल्कि इसलिए कि वह मुझे प्यार करता था और मैंने उसके साथ जो एहसान किया था उसे याद करके, मेरी तरफ़ से गाड़ीवाले का भुगतान कर दिया। इस प्रकार यह संवेदन धुएं की तरह ग़ायब हो गया। जब मैं गिरजाघर जाने के लिए कपड़े पहनने गया ताकि बाक़ी सब लोगों के साथ मैं भी कम्युनियन में शामिल हो सकूं और मुझे पता चला कि मेरे नये कपड़े तब तक तैयार नहीं हुए थे, तो मुझे बेहद गुस्सा आया। दूसरा सूट पहनकर मैं मन में एक विचित्र-सा तूफ़ान लिये, और अपने सभी उत्कृष्ट मनोवेगों के प्रति सर्वथा अविश्वास की भावना से भरा हुआ गिरजाघर में गया।

परीक्षा की तैयारी

ईस्टर के बादवाले बृहस्पतिवार को पापा, मेरी बहन, मीमी और कात्या गांव चले गये; इस तरह नानी की उस बड़ी-सी हवेली में बस वोलोद्या, मैं और St.-Jérôme रह गये। पाप-स्वीकरण के दिन और जब मैं मठ में गया था उस समय मैंने अपने आपको जिस मन:स्थिति में पाया था वह बिल्कुल ख़त्म हो गयी थी, और वह अपने पीछे बस एक धुंधली-सी लेकिन सुखद स्मृति छोड़ गयी थी, जो उन्मुक्त जीवन की नयी अनुभूतियों के नीचे अधिकाधिक क्षीण पड़ती गयी।

'जीवन के नियम' वाली कॉपी नोटबुकों के ढेर के नीचे दबा दी गयी थी। जीवन की सभी परिस्थितियों के लिए नियम निर्धारित कर देने और हमेशा उनका पालन करने की संभावना का विचार हालांकि मुझे पसंद आता था और बहुत सीधा-सादा और साथ ही बहुत महान लगता था, और मेरा इरादा बहरहाल उसे ज़िंदगी में लागू करने का था, लेकिन ऐसा लगता था कि मैं एक बार फिर इस बात को भूल गया था कि इस काम को फ़ौरन करना ज़रूरी था, और मैं उसे किसी अनिश्चित समय तक के लिए टालता रहा। लेकिन एक बात से मुझे ख़ुशी होती थी; वह यह थी कि अब जो भी विचार मेरे मन में उठता था वह तुरंत ही मेरे नियमों और कर्त्तव्यों की किसी न किसी कोटि में आ जाता था – या तो अपने पड़ोसी के प्रति, या स्वयं अपने प्रति या ईश्वर के प्रति कर्त्तव्य की कोटि में। "तो मैं इसे वहीं दर्ज कर दूंगा," मैं अपने आप से कहता, "और उन दूसरे अनेकानेक विचारों को भी जो इस विषय में मेरे मन में बाद में उठेंगे।" अब मैं अकसर अपने आप से पूछता हूं: मैं किस वक़्त बेहतर और ज़्यादा सही था – उस वक़्त जब मैं मनुष्य की बुद्धि के सर्वाधिक शक्तिशाली होने में विश्वास रखता था, या अब जबकि मुझमें विकास की क्षमता बाक़ी नहीं रह गयी है, और मैं मानव विवेक की शक्ति तथा उसके महत्व के बारे में शंका करने लगा हूं? और इसका मैं कोई ठोस जवाब नहीं दे पाता।

स्वतंत्रता की चेतना, और किसी चीज़ की प्रतीक्ष. होने की वह प्रफुल्लित वसंती भावना, जिसका उल्लेख मैं पहले ५र चुका हूं, मुझे इतना उद्वेलित कर देती थी कि मैं अपने आपको बिल्कुल वश में नहीं रख पाता था, और इसकी वजह से मेरी परीक्षा की तैयारी भी बहुत बुरी हुई। मान लो कि तुम सबेरे पढ़ाई के कमरे में व्यस्त हो, और तुम्हें मालूम है कि तुम्हें काम करना चाहिये, क्योंकि कल एक विषय की परीक्षा है, जिसके दो प्रश्नों के बारे में तुमने बिल्कुल कुछ नही पढ़ा है, कि इतने में खिड़की में से वसंती महक का एक झोंका अंदर आता है; ऐसा मालूम होता है मानो तुम्हारे लिए किसी बीती हुई बात को याद करना नितांत आवश्यक है; तुम्हारी बांहें अपने आप किताब नीचे रख देती हैं, तुम्हारे पांव अपने आप गतिशील हो उठते हैं और इधर-उधर टहलने लगते हैं, और ऐसा प्रतीत होता है कि तुम्हारे सिर के अंदर कोई कसा हुआ स्प्रिंग लगा है जो सारी मशीन को चलाता है; तुम्हें ऐसा महसूस होता है मानो तुम्हारे दिमाग़ पर कोई बोझ नहीं रह गया है, और मस्ती-भरी जगमगाती हुई यादें तुम्हारे दिमाग़ में से होकर इतनी जल्दी-जल्दी दौड़ने लगती हैं कि उनकी चमक के अलावा कुछ भी तुम्हारी पकड़ में नहीं आता। इसी तरह बिना जाने ही एक घंटा, दो घंटे बीत जाते हैं। या तुम अपनी किताब खोले बैठे हो और जो कुछ भी तुम पढ़ रहे हो उस पर बड़ी मुश्किल से अपना ध्यान केंद्रित कर पा रहे हो; और अचानक गलियारे में तुम्हें किसी औरत के क़दमों की आहट और उसकी पोशाक की मरमराहट सुनायी देती है, और हर चीज़ तुम्हारे दिमाग़ से ग़ायब हो जाती है, और तुमसे शांत नहीं बैठा जाता, हालांकि तुम अच्छी तरह जानते हो कि नानी की पुरानी नौकरानी गाशा के अलावा गलियारे में होकर कोई नहीं जा रहा होगा। "फिर भी मान लो कि 'वह' हो?" तुम्हारे दिमाग़ में विचार आता है, "मान लो अभी शुरूआत होनेवाली हो और मैं मौक़ा चूक जाऊं?" और तीर जैसी तेज़ी से गलियारे में आकर तुम देखते हो कि सचमुच गाशा ही है; फिर भी तुम अपने दिमाग़ को बहुत देर तक क़ाबू में नहीं कर पाते। स्प्रिंग फिर कस दिया गया है, और भयानक उथल-पुथल एक बार फिर शुरू हो गयी है। या तुम शाम को अपने कमरे में मोमबत्ती जलाये

अकेले बैठे हो ; मोमबत्ती का गुल साफ़ करने के लिए या अपनी कुर्सी पर ज़्यादा आराम से बैठ जाने के लिए तुम एक क्षण को किताब से अपना ध्यान हटाते हो – चारों ओर, दरवाज़े पर और कोनों में अंधेरा है, और सारे घर में सन्नाटा छाया हुआ है ; और एक बार फिर रुककर उस सन्नाटे को न सुनना, और खुले हुए दरवाज़े के कालेपन में न घूरना, और बहुत-बहुत देर तक इसी मुद्रा में निश्चल न बने रहना, या नीचे न जाना और सभी ख़ाली कमरों में चक्कर न लगाना असंभव हो जाता है। अकसर ऐसा भी हुआ है कि मैं बड़ी देर तक सबकी नज़रों से बचकर हॉल में बैठा 'बुलबुल' की धुन सुनता रहा हूं, जिसे गाशा मकान के उस बड़े-से हिस्से में जलती हुई एकमात्र मोमबत्ती की रोशनी में अकेली बैठी एक उंगली से पियानो पर बजाती रहती थी। और जब भरपूर चांदनी छिटकी होती थी तो मैं किसी तरह बिस्तर से उठकर बाग़ की ओर खुलनेवाली खिड़की पर लेट जाने और शापोशनिकोव के घर की चमकती हुई छत को, और पासवाले गिरजाघर की सुडौल मीनार को, और बाग़ के रास्तों पर पड़ती हुई झाड़ियों की और बाड़ की रात्रिकालीन परछाइयों को एकटक देखते रहने से अपने आपको रोक ही नहीं पाता था। मैं इस तरह इतनी देर तक बैठा रहता था कि सुबह जब मेरी आंख खुलती थी तो दस बज चुके होते थे।

इसलिए अगर वे मास्टर न होते जो लगातार मुझे पढ़ाने आते रहे, अगर St.-Jérôme न होते जो यदा-कदा अनचाहे ही मेरे अहं-भाव को उकसा देते थे, और सबसे बढ़कर अगर मुझमें अपने दोस्त नेख़ल्यूदोव की नज़रों में अपने आपको एक योग्य नौजवान साबित करने की, अर्थात् परीक्षा में बहुत अच्छे नंबरों से पास होने की इच्छा न होती, जो उनकी राय में बहुत महत्वपूर्ण बात थी – अगर ये सब बातें न होतीं तो वसंत का और आज़ादी का नतीजा यह होता कि जो कुछ मुझे पहले मालूम था वह भी मैं भूल गया होता, और मैं किसी भी तरह परीक्षा में सफल न हो पाता।

इतिहास की परीक्षा

मैंने १६ अप्रैल को St.-Jérôme के संरक्षण में पहली बार यूनिवर्सिटी के बड़े हॉल में प्रवेश किया। हम अपनी बहुत ही भड़कीली फ़िटन पर बैठकर वहां गये थे। मैंने उस दिन ज़िंदगी में पहली बार टेल-कोट पहना था, और नीचे पहनने के कपड़ों और मोज़ों तक मेरे सारे कपड़े बिल्कुल नये और बहुत ही बढ़िया क़िस्म के थे। जब दरबान ने मेरा ओवरकोट उतारा और मैं अपनी नयी पोशाक के समस्त वैभव के साथ उसके सामने खड़ा था तो अपने इस भड़कीलेपन पर मैं स्वयं कुछ लज्जित हो गया; लेकिन पालिश किये हुए फ़र्शवाले उस जगमगाते हुए हॉल में क़दम रखते ही, जहां लोग खचाखच भरे हुए थे, और जिमनेज़ियम की यूनिफ़ार्म और टेल-कोट पहने सैकड़ों नौजवानों को देखते ही, जिनमें से कुछ ने मुझ पर उचटती हुई नज़र भी डाली, और हॉल के दूरवाले छोर पर प्रतिष्ठित प्रोफ़ेसरों को मेज़ों के बीच उन्मुक्त भाव से चलते-फिरते या बड़ी-बड़ी आराम-कुर्सियों पर बैठा हुआ देखते ही मेरी इस उम्मीद पर पानी फिर गया कि मैं सबका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लूंगा, और मेरे चेहरे की मुद्रा, जिससे घर पर और बाहरवाले छोटे कमरे में भी यह संकेत मिलता था कि मेरी वह उदात्त और गरिमापूर्ण मुखाकृति मेरे न चाहते हुए भी वैसी थी, अत्यंत भीरुता की, और कुछ हद तक निराशा की मुद्रा में बदल गयी। बल्कि मेरी मनोदशा दूसरे छोर पर पहुंच गयी, और मुझे बहुत खुशी हुई जब मैंने बहुत बुरे और मैले-कुचैले कपड़े पहने हुए एक सज्जन को, जो अभी बूढ़े तो नहीं हुए थे लेकिन जिनके बाल बिल्कुल सफ़ेद हो गये थे, बाक़ी लोगों से कुछ दूर आख़िरी बेंच पर बैठे देखा। मैं फ़ौरन उसके पास बैठ गया और परीक्षार्थियों को ध्यान से देखकर उनके बारे में अपने निष्कर्ष निकालने लगा। वहां बहुत-से और भांति-भांति के चेहरे-मोहरे थे; लेकिन उस समय की मेरी राय के हिसाब से उन सभी को बड़ी आसानी से तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता था।

सबसे पहले तो वे लोग थे जो मेरी तरह अपने मास्टरों या अपने माता-पिता के साथ परीक्षा देने आये थे, और इस तरह के लोगों में जाने-पहचाने फ़्रॉस्ट के साथ सबसे छोटा ईविन और अपने बूढ़े बाप के साथ इलेंका ग्रैप दिखायी दे रहे थे। इन सबकी ठोड़ियों पर हल्के-हल्के बाल उगने लगे थे, वे सब तड़क-भड़कदार क़मीज़ें पहने थे और अपनी किताबें या कॉपियां खोले बिना, जिन्हें वे अपने साथ लाये थे, चुपचाप बैठे थे और प्रकट भीरुता के साथ प्रोफ़ेसरों को और परीक्षकों की मेज़ों की ओर देख रहे थे। दूसरी श्रेणी के परीक्षार्थी वे नौजवान थे जो स्कूल की यूनिफ़ॉर्म पहने थे, जिनमें से कई तो अभी से दाढ़ी भी बनाने लगे थे। इनमें से ज़्यादातर एक-दूसरे को जानते थे, वे ज़ोर-ज़ोर से बातें कर रहे थे, वे प्रोफ़ेसरों की चर्चा उनके नाम और बाप का नाम लेकर कर रहे थे, वे वहीं बैठे-बैठे सवालों के जवाब तैयार कर रहे थे, एक-दूसरे की ओर अपनी कॉपियां बढ़ा रहे थे, वे बेंचों को फांदते थे, अपने लिए दालान से पैटिस और सैंडविचें ला रहे थे और बस अपने सिर डेस्क के स्तर के बराबर तक झुकाकर उन्हें वहीं बैठे-बैठे खाये ले रहे थे। और, अंत में, परीक्षार्थियों की एक तीसरी श्रेणी थी, जिनकी संख्या तो बहुत थोड़ी थी लेकिन जिनकी उम्र काफ़ी ज़्यादा थी, जिनमें से कुछ टेल-कोट पहने हुए थे, लेकिन ज़्यादातर बंद गले के लंबे कोट पहने हुए थे जिनमें से उनकी क़मीज़ें नहीं दिखायी देती थीं। ये लोग गंभीर मुद्रा धारण किये हुए थे, अकेले बैठते थे और बहुत उदास दिखायी देते थे। यह आदमी, जो निश्चित रूप से मुझसे बुरे कपड़े पहने होने की वजह से मेरे लिए सांत्वना का स्रोत था, इसी अंतिम श्रेणी का था। वह अपनी कुहनियों के सहारे आगे की ओर झुका हुआ था और अपने उलझे हुए सफ़ेद बालों में उंगलियां फेरकर कोई किताब पढ़ रहा था; उसने अपनी चमकती हुई आंखों से बस क्षण-भर के लिए मुझ पर एक सरसरी-सी नज़र डाली थी – और वह भी बहुत मित्रता के भाव से नहीं – और मुझे और निकट आने से रोकने के लिए उसने मेरी ओर अपनी मुड़ी हुई कुहनी बढ़ाकर मुझे कुछ नाराज़गी से और आंखें तरेरकर देखा। इसके विपरीत, स्कूल के लड़के ज़रूरत से ज़्यादा बेतकल्लुफ़ थे, और मुझे उनसे कुछ डर भी लगता था। उनमें से एक ने मेरे हाथ में एक किताब थमाते

हुए कहा, "ज़रा इसे उधर उन साहब के पास तो बढ़ा देना।" किसी और ने मेरे सामने से गुज़रते हुए कहा, "जाने दो, यार।" तीसरे ने बेंच को फांदते हुए मेरे कंधे का सहारा लेकर उसे इस तरह दबाया जैसे वह बेंच हो। यह सब कुछ मेरे लिए बहुत ही अशिष्ट और अरुचिकर था। मैं अपने आपको स्कूल के इन लड़कों से श्रेष्ठतर समझता था, और मैं समझता था कि उन्हें मेरे साथ इतनी बेतकल्लुफ़ी से पेश आने की कोई ज़रूरत नहीं थी। आख़िरकार, नाम पुकारे जाने लगे; जिमनेज़ियम के लड़के बेधड़क आगे बढ़ गये; उनमें से ज़्यादातर ने परीक्षा में उत्तर ठीक से दिये, और वे ख़ुश-ख़ुश लौटे। हमारे दल के लड़के उनकी अपेक्षा अधिक दब्बू थे और ऐसा लगता था कि उन्होंने जवाब उतने अच्छे नहीं दिये थे। बड़ी उम्र के लोगों में से कुछ ने जवाब बहुत अच्छे दिये थे और कुछ ने सचमुच बहुत ही बुरे। जब सेम्योनोव का नाम पुकारा गया तो मेरे पास बैठा हुआ चमकदार आंखों और सफ़ेद बालोंवाला आदमी उठा, उसने बहुत ज़ोर से मुझे धक्का दिया, मेरी टांगों को फांदता हुआ आगे बढ़ा और एक मेज़ के पास जा पहुंचा। प्रोफ़ेसरों के चेहरों को देखने से पता चलता था कि वह सवालों के जवाब अच्छे और भरोसे के साथ दे रहा था। अपनी जगह पर वापस आने के बाद उसने चुपचाप अपनी कॉपियां उठायीं और यह मालूम किये बिना कि उसे कौन-सा नंबर मिला था वहां से चला गया। नाम पुकारने की आवाज़ सुनकर मैं कई बार कांप चुका था, लेकिन मेरी बारी अभी तक नहीं आयी थी। "इकोनिन और तेन्येव," प्रोफ़ेसरोंवाले कोने से कोई अचानक चिल्लाया। मेरी पीठ पर और मेरे बालों में सिहरन दौड़ गयी।

"किसे पुकारा गया? बार्तेन्येव कौन है?" लोग मेरे आस-पास कहने लगे।

"जाओ, इकोनिन, तुम्हें बुलाया जा रहा है; लेकिन यह बार्तेन्येव या मोर्देन्येव कौन है? मुझे मालूम नहीं। बताओ!" मेरे पीछे खड़े हुए एक लंबे-से गुलाबी चेहरेवाले स्कूलवाले लड़के ने कहा।

"तुम्हारी बारी है," St.-Jérôme ने कहा।

"मेरा नाम इर्तेन्येव है," मैंने स्कूल के गुलाबी चेहरेवाले लड़के से कहा। "क्या उन्होंने इर्तेन्येव का नाम पुकारा था?"

"हां ; तुम आख़िर जाते क्यों नहीं हो ?... देखा, कैसा छैला है !" उसने कहा, ज़्यादा ज़ोर से नहीं लेकिन फिर भी इस तरह कि अपनी बेंच से उठकर जाते-जाते मैं सुन लूं। मेरे आगे-आगे इकोनिन चल रहा था, पच्चीस साल का एक लंबा-सा नौजवान, जो उन लोगों में से था जिन्हें मैंने बड़ी उम्र के परीक्षार्थियों की श्रेणी में रखा था। उसने ज़ैतूनी रंग का कसा हुआ टेल-कोट पहन रखा था और साटन की नीली टाई बांध रखी थी, जिसके ऊपर पीछे की ओर उसके लंबे-लंबे सुनहरे बाल पड़े थे, जो देहातियों के ढंग से कटे हुए थे। जिस समय हम लोग बेंचों पर बैठे थे तभी उसके हुलिया ने मेरा ध्यान आकर्षित किया था। वह देखने में काफ़ी ख़ूबसूरत और बातूनी था; उसकी जिस बात की ओर मेरा ध्यान सबसे अधिक आकृष्ट हुआ था वह थी उसके वे अजीब-से लाल रंग के बाल जो उसने अपने गले पर उग आने दिये थे, और, इससे भी बढ़कर, उसकी यह अजीब आदत कि वह लगातार अपनी वास्कट के बटन खोलता रहता था और क़मीज़ के नीचे अपना सीना खुजाता रहता था।

जिस मेज़ के पास मैं और इकोनिन गये उस पर तीन प्रोफ़ेसर बैठे हुए थे; उनमें से एक ने भी हमारे सलाम का जवाब नहीं दिया। उनमें से जो उम्र में सबसे छोटा था वह कार्डों की गड्डी ताशों की तरह फेंट रहा था; दूसरा प्रोफ़ेसर, जिसके टेल-कोट पर एक सितारा लगा हुआ था, उस स्कूलवाले को घूरे चला जा रहा था, जो कार्ल महान के बारे में धाराप्रवाह कुछ बोल रहा था और हर शब्द के बाद "आखिरकार" जोड़ देता था, और तीसरा, जो बूढ़ा था, हम लोगों को अपने चश्मे में से देख रहा था और कार्डों की तरफ़ इशारा कर रहा था। मुझे ऐसा लग रहा था कि उसकी नज़र एक साथ मेरे और इकोनिन दोनों के ऊपर टिकी हुई थी, और यह कि हमारे हुलिया में कोई चीज़ ऐसी थी जो उसे नापसंद थी (शायद इकोनिन की लाल दाढ़ी), क्योंकि जब उसने एक बार फिर हमें उसी ढंग से देखा तो उसने अपने सिर से अधीरतापूर्वक इशारा किया कि हम लोग अपने-अपने कार्ड जल्दी से ले लें। मैं झुंझला उठा और अपमानित महसूस करने लगा, सबसे पहले तो इस वजह से कि किसी ने हमारे सलाम का जवाब नहीं दिया था, और दूसरे, इसलिए कि स्पष्टतः उन लोगों

ने इकोनिन को और मुझे एक ही श्रेणी में रख दिया था, परीक्षार्थियों की श्रेणी में, और इकोनिन की लाल दाढ़ी की वजह से उन्होंने मेरे बारे में भी पहले ही से ख़राब राय क़ायम कर ली थी। मैंने बेधड़क अपना कार्ड ले लिया और जवाब देने के लिए तैयार हुआ, लेकिन प्रोफ़ेसर ने अपनी पैनी नज़र इकोनिन की ओर घुमा ली। मैंने अपना कार्ड पढ़ा: मुझे सब जवाब मालूम थे, और शांत भाव से अपनी बारी की प्रतीक्षा करते हुए मैं जो कुछ मेरी आंखों के सामने हो रहा था उसे देखता रहा। इकोनिन तनिक भी घबराया हुआ नहीं था, बल्कि ज़रूरत से ज़्यादा ही बेझिझक होकर वह कार्ड लेने के लिए पूरी तरह बग़ल मेज़ की तरफ़ करके घूमा, उसने अपने बाल झटक दिये और कार्ड पर जो कुछ छपा था उसे तेज़ी से पढ़ गया। मेरे ख़्याल से वह जवाब देने के लिए अपना मुंह खोलने जा ही रहा था कि सितारेवाले प्रोफ़ेसर ने उस जिमनेज़ियमवाले की प्रशंसा करके उसे विदा कर दिया और इकोनिन को एक नज़र कनखियों से देखा। इकोनिन को जैसे कुछ याद आ गया और वह रुक गया। दोनों ओर से यह ख़ामोशी कुछ मिनट तक बनी रही।

"तो?" चश्मेवाले प्रोफ़ेसर ने कहा।

इकोनिन ने फिर अपना मुंह खोला, लेकिन चुप रहा।

"बोलिये अकेले आप ही तो हैं नहीं। जवाब देना है कि नहीं?" नौजवान प्रोफ़ेसर ने पूछा लेकिन इकोनिन ने उसकी ओर देखा तक नहीं। वह कार्ड को घूरता रहा और उसने एक शब्द भी नहीं कहा। चश्मेवाले प्रोफ़ेसर ने अपने चश्मे में से, चश्मे के ऊपर से और चश्मा लगाये बिना उसे घूरा, क्योंकि उसके पास चश्मा उतारने, उसे सावधानी से साफ़ करने और फिर पहन लेने का समय काफ़ी था। इकोनिन एक शब्द भी नहीं बोला। अचानक उसके चेहरे पर मुस्कराहट दौड़ गयी, उसने अपने बाल झटके, एक बार फिर अपनी बग़ल पूरी तरह मेज की ओर करके घूमा और कार्ड को मेज़ पर रख दिया, सभी प्रोफ़ेसरों को बारी-बारी देखा, फिर मुझे देखा, मुड़ा, और अपने हाथ हवा में हिलाता हुआ तेज़ क़दम बढ़ाता हुआ बेंच की ओर वापस चला गया। प्रोफ़ेसर एक-दूसरे को देखते रहे।

"कमाल लड़का है!" नौजवान प्रोफ़ेसर ने कहा, "अपने ख़र्चे से पढ़ना चाहता है।"

मैं बढ़कर मेज़ के और पास आ गया, लेकिन प्रोफ़ेसर लोग लगभग कानाफूसी के स्वर में आपस में बातें करते ही रहे, मानो उनमें से किसी को मेरी मौजूदगी का भी पता न हो। मुझे पक्का यक़ीन था कि तीनों प्रोफ़ेसर इस सवाल में बुरी तरह उलझे हुए थे कि मैं परीक्षा में सफल रहूंगा या नहीं, और मुझे उसमें अच्छे नंबर मिलेंगे या नहीं, लेकिन वे रोब जमाने के लिए यह जता रहे थे कि उन्हें इस मामले में कोई दिलचस्पी नहीं है और यह कि उन्होंने मुझे देखा ही नहीं है।

जब चश्मेवाले प्रोफ़ेसर ने बड़ी उदासीनता से मेरी ओर मुड़कर मुझसे सवालों के जवाब देने को कहा तो मैंने उसकी आंखों में आंखें डालकर देखा और उसकी तरफ़ से कुछ शर्मिंदा भी हुआ कि मेरे सामने वह इस तरह ढोंग कर रहा था, और जवाब देना शुरू करने में तो मुझे कुछ संकोच हुआ; लेकिन जैसे-जैसे मैं आगे बढ़ता गया, यह काम आसान होता गया, और चूंकि प्रश्न रूसी इतिहास के बारे में था, जो मैं बहुत अच्छी तरह जानता था, इसलिए मैंने अपना जवाब बहुत ही शानदार ढंग से समाप्त किया, और मुझमें इतना ताव आ गया कि प्रोफ़ेसरों को यह आभास दिला देने के लिए कि मैं इकोनिन नहीं हूं और मुझको और उसे एक ही कोटि में रखना नामुमकिन है, मैंने दूसरा कार्ड निकालने का सुझाव रखा। लेकिन प्रोफ़ेसर ने अपना सिर हिलाकर कहा, "बस, इतना ही काफ़ी है," और यह कहकर उसने अपने रजिस्टर में कुछ दर्ज कर लिया। जब मैं वापस बेंच पर आया तो मुझे फ़ौरन स्कूलवालों से पता चला, जिन्हें भगवान जाने कैसे हर बात मालूम रहती थी, कि मुझे पूरे नंबर मिले थे।

अध्याय ११

गणित की परीक्षा

इसके बाद की परीक्षाओं में ग्रैप (जिसे मैं अपनी जान-पहचान के लायक़ नहीं समझता था) और ईविन (जो न जाने क्यों मुझसे कतराता था) के अलावा कई और नये लोगों से मेरी जान-पहचान

हो चुकी थी। कई लोगों से मेरी साहब-सलामत शुरू भी हो चुकी थी।

इकोनिन तो मुझे देखकर बहुत खुश भी हुआ, और उसने मुझे बताया कि इतिहास में उसकी परीक्षा फिर से ली जायेगी, कि इतिहास के प्रोफ़ेसर को पिछली परीक्षा के बाद से ही उससे कुछ बैर-सा हो गया था, और उस परीक्षा में भी उसने उसे बौखला देने की कोशिश की थी। सेम्योनोव, जो मेरी ही तरह गणित विभाग में नाम लिखानेवाला था, परीक्षा के अंत तक सभी से कतराता रहा और हमेशा अपनी कुहनियों पर टिककर और अपने सफ़ेद बालों में उंगलियां फेरते हुए चुपचाप अकेला ही बैठता रहा। वह परीक्षा बहुत ही शानदार नंबरों से पास कर रहा था और उसे दूसरा स्थान प्राप्त होनेवाला था; पहला स्थान प्रथम स्कूल के एक छात्र को मिलनेवाला था। यह लड़का लंबा, दुबला-पतला, बेहद पीला, काले बालोंवाला नौजवान था, जिसके गले में काली टाई बंधी हुई थी, और जिसके माथे पर ढेरों मुंहासे थे। उसके हाथ पतले-पतले और लाल थे, जिनकी उंगलियां बेहद लंबी थीं; उसने अपने नाख़ून इतनी बुरी तरह कुतर रखे थे कि ऐसा लगता था कि उंगलियों के सिरों पर धागा लिपटा हुआ है। यह सब कुछ मुझे बहुत शानदार लग रहा था, ठीक वैसा ही जैसा कि स्कूल के सबसे तेज़ लड़के के मामले में होना चाहिये। वह सबसे बाक़ी सभी लोगों की तरह बोलता था, यहां तक कि मैंने भी उससे जान-पहचान पैदा कर ली थी, लेकिन मुझे ऐसा लगा कि उसकी चाल-ढाल में, उसके होंटों के हिलने-डुलने के ढंग में और उसकी काली आंखों में कोई असाधारण बात थी।

गणित की परीक्षा में मैं हमेशा से जल्दी पहुंच गया था। मुझे विषय की जानकारी काफ़ी अच्छी थी; लेकिन बीजगणित के दो प्रश्न ऐसे थे जिन पर मैंने किसी तरकीब से अपने मास्टर साहब की नज़र नहीं पड़ने दी थी, और जिनके बारे में मुझे कुछ भी नहीं मालूम था। ये प्रश्न थे: संचयों का सिद्धांत और न्यूटन का द्विपद प्रमेय। मैं पीछे एक बेंच पर बैठा इन दो सवालों को देख रहा था जिनके बारे में मैं कुछ नही जानता था; लेकिन चूंकि मुझे शोर-गुलवाले कमरे में काम करने की आदत नहीं थी, और मुझे ऐसा लग रहा था कि मेरे

पास काफ़ी समय नहीं होगा, इसलिए मैं जो कुछ पढ़ रहा था उसे समझने में मुझे कठिनाई हो रही थी।

"यह रहा वह। इधर, नेख़ल्यूदोव," मुझे अपने पीछे से वोलोद्या की जानी-पहचानी आवाज़ सुनायी दी।

मैंने मुड़कर देखा कि मेरा भाई और द्मित्री बेंचों के बीच से घुस-पिलकर रास्ता बनाते हुए मेरी ओर आ रहे हैं – उनके कोट के बटन खुले हुए थे और वे अपने हाथ हिला रहे थे। यह बात फ़ौरन साफ़ नज़र आती थी कि वे दूसरे वर्ष के छात्र थे जो यूनिवर्सिटी में ऐसे घुलमिल गये थे जैसे अपने घर में हों। उनके कोट के खुले हुए बटन ही हम यूनिवर्सिटी में प्रवेश चाहनेवाले लोगों के प्रति तिरस्कार की भावना के द्योतक थे, और उन्हें देखकर हमारे यूनिवर्सिटी में प्रवेश चाहनेवालों के मन में ईर्ष्या और सम्मान की भावनाएं जागृत होती थीं। यह सोचकर मैं बड़ा गर्व अनुभव कर रहा था कि मेरे आस-पास सभी लोग यह देख सकते थे कि दूसरे वर्ष के दो छात्रों के साथ मेरी जान-पहचान थी, और मैं जल्दी से उनसे मिलने के लिए उठ खड़ा हुआ।

वोलोद्या थोड़ी-सी शेख़ी बघारने का मौक़ा भला कब चूकनेवाला था।

"अरे, मुसीबत के मारे!" उसने कहा, "अभी तक तुम्हारी परीक्षा नहीं हुई?"

"नहीं।"

"क्या पढ़ रहे हो? क्या पहले से तैयारी नहीं की?"

"दो सवालों के बारे में ठीक से नहीं की। वे मेरी समझ में नहीं आते।"

"कौन-सा? यह सवाल?" वोलोद्या ने कहा और मुझे न्यूटन का द्विपद प्रमेय समझाने लगा, लेकिन इतनी जल्दी-जल्दी और इतने उलझे ढंग से कि मेरी आंखों में अपनी जानकारी के प्रति अविश्वास का भाव देखकर उसने एक नज़र द्मित्री पर डाली और उसकी आंखों में शायद यही भाव देखकर उसका चेहरा लाल हो गया, लेकिन वह फिर भी कुछ कहता रहा जो मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आया।

"वोलोद्या, ज़रा ठहरो, मैं इसे समझाये देता हूं, शायद अभी

काफ़ी वक़्त होगा," मित्री ने प्रोफ़ेसरों के कोने पर नज़र डालते हुए कहा, और वह मेरे पास बैठ गया।

मैंने फ़ौरन देख लिया कि मेरा दोस्त उस वक़्त विनम्रता की उसी मनोदशा में था जिसमें कि वह अपने आपसे संतुष्ट रहने पर हमेशा रहता था, और उसकी यह बात मुझे ख़ास तौर पर बहुत अच्छी लगती थी। चूंकि वह गणित बहुत अच्छी जानता था, और बोलता बहुत साफ़ सुलझे हुए ढंग से था, इसलिए उसने वह सवाल मुझे इतनी अच्छी तरह समझा दिया कि मुझे आज तक याद है। वह अभी ख़त्म ही कर पाया था कि St.-Jérôme ने ज़ोर से फुसफुसाकर कहा, "a vous, Nicolas!"* और मैं उठकर चुपचाप इकोनिन के पीछे चल दिया और मुझे उस दूसरे सवाल को देखने का मौक़ा ही नहीं मिला जिसके बारे में मुझे कुछ नहीं मालूम था। मैं उस मेज़ की तरफ़ बढ़ा जिस पर दो प्रोफ़ेसर बैठे थे और एक स्कूल का लड़का ब्लैकबोर्ड के सामने खड़ा था। उस लड़के ने बेधड़क कोई फ़ार्मूला बोर्ड पर लिख मारा था और बोर्ड पर ज़ोर से खरिया की नोक मारकर तोड़ दी थी, और वह अब भी लिखे चला जा रहा था, हालांकि प्रोफ़ेसर ने "बस!" कह दिया था और हम लोगों को अपने-अपने कार्ड निकालने को कह दिया था। "अगर मेरे हिस्से में वही संचयों का सिद्धांत आ गया तो?" मैंने कटे हुए काग़ज़ की नरम गड्डी में से कांपती उंगलियों से अपना कार्ड निकालते हुए सोचा। इकोनिन ने पिछली परीक्षा की तरह इस बार भी उसी निःसंकोच भाव से और अपना पूरा शरीर बग़ल की ओर से मेज़ की तरफ़ करके बिना छांटे सबसे ऊपरवाला कार्ड ले लिया, उसे देखा और भवें चढ़ायीं।

"लानत है!" उसने बुदबुदाकर कहा।

मैंने अपना कार्ड देखा।

अरे, मर गये! वही संचयों का सिद्धांत था!...

"तुम्हें क्या मिला?" इकोनिन ने पूछा।

मैंने कार्ड दिखा दिया।

---

* आपकी बारी है, निकोलेंका! (फ़्रांसीसी)

"मुझे मालूम है," वह बोला।

"बदलते हो?

"नहीं, फ़र्क़ भी क्या पड़ता है, ऐसा लगता है कि आज मेरा मन ठिकाने नहीं है," इकोनिन क्षीण स्वर में मुझसे बस इतना कह पाया था कि प्रोफ़ेसर ने हम लोगों से ब्लैकबोर्ड पर जाने को कहा।

"चलो, सत्यानाश हो गया!" मैंने सोचा। "जिस शानदार ढंग से परीक्षा में सफल होने का मैं स्वप्न देख रहा था उसके बजाय अब मुझ पर हमेशा के लिए कलंक लग जायेगा, इकोनिन से भी बदतर मेरी हालत होगी।" लेकिन अचानक इकोनिन मेरी ओर मुड़ा और प्रोफ़ेसर की आंख के सामने उसने कार्ड मेरे हाथ से झपट लिया और मुझे अपना कार्ड थमा दिया। मैंने उसके कार्ड पर एक नज़र डाली। न्यूटन का द्विपद प्रमेय था।

प्रोफ़ेसर बूढ़ा नहीं था, और उसके चेहरे का भाव रुचिकर और समझदारी का था, जिसमें उसके माथे के बेहद उभरे हुए निचले भाग का विशेष रूप से बहुत बड़ा योगदान था।

"यह क्या हो रहा है, साहब? कार्ड बदल रहे हैं आप लोग?"

"जी नहीं, इसने अपना कार्ड मुझे देखने के लिए दिया था, प्रोफ़ेसर साहब," इकोनिन ने झट से जवाब दिया और एक बार फिर 'प्रोफ़ेसर साहब' के शब्द अंतिम शब्द थे जो वह बोला था; और एक बार फिर अपनी जगह वापस जाते हुए मेरे सामने से होकर गुज़रते हुए उसने प्रोफ़ेसरों पर और मुझ पर एक नज़र डाली, मुस्कराया, और उसने अपने कंधे ऐसे भाव से बिचकाये मानो कह रहा हो, "सब कुछ ठीक है, भाई!" (बाद में मुझे मालूम हुआ कि इकोनिन तीसरी बार परीक्षा देने आया था।)

मैंने उस सवाल का, जो मैंने अभी-अभी तैयार किया था, बहुत ही अच्छा जवाब दिया – उससे भी अच्छा, जैसा कि प्रोफ़ेसर ने मुझे बताया, जितना कि ज़रूरी था – और मुझे पूरे नंबर मिले।

अध्याय १२

लैटिन की परीक्षा

मेरी लैटिन की परीक्षा होने तक सब कुछ ठीक-ठाक चलता रहा। अभी तक वह स्कूल का लड़का जो गुलूबंद बांधे रहता था प्रथम स्थान पर था, सेम्योनोव दूसरे पर और मैं तीसरे पर। मैं इस बात पर गर्व भी अनुभव करने लगा था और सोचने लगा था कि इतनी कम उम्र होने के बावजूद मेरी भी कुछ हस्ती थी।

पहली परीक्षा के समय से ही हर आदमी लैटिन के प्रोफ़ेसर के बारे में आतंकित होकर बात करता आया था; कहते थे कि प्रोफ़ेसर साहब बहुत ही ज़ालिम आदमी थे जिन्हें नौजवान लड़कों को फ़ेल करने में मज़ा आता था, ख़ास तौर पर उन्हें जो अपने ख़र्चे से पढ़ते थे, और वह लैटिन और ग्रीक के अलावा कभी कोई दूसरी भाषा नहीं बोलते थे। St.-Jérôme, जो मुझे लैटिन पढ़ाते थे, मेरा हौसला बढ़ाते रहते थे; और मुझे भी सचमुच ऐसा लगता था कि चूंकि मैं सिसेरो का और होरेस की कई कविताओं का अनुवाद शब्दकोश की सहायता के बिना कर सकता था, और चूंकि मुझे जुंप्ट के लिखित लैटिन व्याकरण का बहुत अच्छा ज्ञान था, इसलिए मेरी तैयारी किसी से कम नहीं थी। फिर भी नतीजा उल्टा ही निकला। तमाम सुबह मुझे जो लोग मुझसे पहले गये थे उनकी तबाही के क़िस्सों के अलावा कुछ भी सुनने को नहीं मिला: एक को तो शून्य मिला था, किसी और को एक नंबर मिला था, और एक और लड़के को बहुत फटकारा गया था और वह निकाल दिया जानेवाला था, इत्यादि-इत्यादि। बस सेम्योनोव और प्रथम स्कूलवाला लड़का तो हमेशा की तरह शांत भाव से वहां गये और पूरे नंबर प्राप्त करके लौटे। जब मुझे इकोनिन के साथ उस छोटी मेज़ के पास बुलाया गया, जिसके सामने वह डरावने प्रोफ़ेसर बिल्कुल अकेले बैठे थे, तभी मुझे आनेवाले सर्वनाश का पूर्वाभास हो गया था। डरावने प्रोफ़ेसर छोटे-से, दुबले-पतले, पीली रंगत के आदमी थे, जिनके लंबे-लंबे बालों में तेल चुपड़ा हुआ था और उनके चेहरे का भाव बहुत विचारमग्न था।

उन्होंने इकोनिन को सिसेरो के भाषणों की एक पुस्तक दी और उससे अनुवाद करने को कहा।

मुझे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि इकोनिन ने न केवल कई पंक्तियां पढ़ दीं बल्कि प्रोफ़ेसर की सहायता से, जो बीच-बीच में उसे सहारा देते जाते थे, उनका अनुवाद भी कर दिया। ऐसे कमज़ोर प्रतिद्वंद्वी की अपेक्षा अपनी श्रेष्ठता का आभास रखते हुए जब पद-व्याख्या करने का सवाल आया और इकोनिन पहले की तरह प्रकटत: अटल चुप्पी में डूब गया तो मैं बरबस तनिक तिरस्कार के भाव से मुस्करा दिया। मैं समझदारी की और कुछ व्यंग-भरी उस मुस्कराहट की मदद से प्रोफ़ेसर की नज़र में चढ़ना चाहता था, लेकिन नतीजा उल्टा ही हुआ।

"ज़ाहिर है कि आपको बेहतर मालूम है, क्योंकि आप मुस्करा रहे हैं," प्रोफ़ेसर ने मुझसे टूटी-फूटी रूसी में कहा। "अच्छा, देखते हैं। तो, आप ही बताइये जवाब।"

मुझे बाद में मालूम हुआ कि लैटिन के प्रोफ़ेसर इकोनिन के अभिभावक थे और इकोनिन रहता भी उन्हीं के यहां था। इकोनिन से वाक्य-विन्यास का जो प्रश्न पूछा गया था उसका जवाब मैंने फ़ौरन दे दिया, लेकिन प्रोफ़ेसर ने उदास मुद्रा बनाकर मेरी ओर से मुंह फेर लिया।

"अच्छी बात है, जनाब, आपकी भी बारी आयेगी; तब देखेंगे कि आप कितना जानते हैं," उन्होंने मेरी ओर देखे बिना कहा, और इकोनिन को वह विषय समझाने लगे जो उन्होंने उससे पूछा था।

"तुम जा सकते हो," उन्होंने कहा; और मैंने देखा कि उन्होंने रजिस्टर में इकोनिन के नाम के सामने चार नंबर लिख दिये। "मुमकिन है," मैंने सोचा, "वह उतना सख़्त नहीं है जितना कि लोग कहते थे।" इकोनिन के चले जाने के बाद कम से कम पांच मिनट तक, जो मुझे पांच घंटे जैसे लगे, वह अपनी किताबें और कार्ड ठीक करने, नाक साफ़ करने, अपनी आराम-कुर्सी ठीक करने में व्यस्त रहे, वह पीछे सहारा लगाकर आराम-कुर्सी पर बैठ गये और कमरे में चारों ओर नज़र डालने लगे; उन्होंने हर तरफ़ देखा बस मेरी ओर नहीं देखा। फिर भी यह सारा ढोंग उन्हें अपर्याप्त प्रतीत हुआ। वह एक किताब खोलकर उसे इस तरह पढ़ने का ढोंग करने लगे, जैसे मैं वहां था ही

नहीं। मैं उनके कुछ और पास जाकर खांसा।

"अरे, हां! आप भी तो हैं। ठीक है, कोई चीज़ अनुवाद करके बताइये", उन्होंने मुझे एक किताब थमाते हुए कहा। "नहीं; बेहतर होगा कि यह किताब लीजिये।" उन्होंने होरेस की एक किताब के पन्ने उलटकर उसका एक ऐसा अंश खोलकर मुझे दिया जिसके बारे में मुझे ऐसा लगा कि कोई भी कभी उसका अनुवाद नहीं कर सकता था।

"मैंने इसे तैयार नहीं किया है," मैंने कहा।

"और आप वही पढ़कर सुनाना चाहते हैं जो आपने रट रखा हो, क्यों? बहुत अच्छा! नहीं, इसी का अनुवाद कीजिये।"

किसी तरह मैं उसका भावार्थ निकालने लगा, लेकिन मेरी हर प्रश्नसूचक दृष्टि पर प्रोफ़ेसर साहब बस अपना सिर हिला देते थे, और आह भरकर जवाब में सिर्फ़ "नहीं" कह देते थे। आख़िरकार उन्होंने इतनी हड़बड़ाहट में किताब बंद की कि ख़ुद उनकी उंगली उसके पन्नों के बीच आकर कुचल गयी। उन्होंने झल्लाकर उंगली बाहर खींच ली, मुझे व्याकरण का एक सवाल दिया, और फिर आराम से कुर्सी पर बैठकर अत्यंत द्वेषपूर्ण चुप्पी साध ली। मैं जवाब देने जा ही रहा था, लेकिन उनके चेहरे की मुद्रा देखकर मेरी ज़बान पर ताला-सा पड़ गया, और जो कुछ भी मैंने कहा वह मुझे ग़लत मालूम होने लगा।

"ऐसा नहीं है! ऐसा बिल्कुल नहीं है!" जल्दी से कुर्सी पर पहलू बदलकर मेज़ पर अपनी कुहनियां टिकाते हुए उन्होंने बहुत बुरे उच्चारण के साथ अचानक कहा और उनके बायें हाथ की पतली-सी उंगली में जो सोने की अंगूठी झूल रही थी उससे खेलने लगे: "यह तरीक़ा नहीं होता, जनाब, उच्च शिक्षा की संस्था में भरती होने की तैयारी करने का। आप लोग बस चाहते यह हैं कि नीले कॉलरवाली यूनिफ़ार्म पहन लें; थोड़ी-बहुत जानकारी हासिल कर ली आपने और आप समझने लगते हैं कि इतना करके ही आप अपने को यूनिवर्सिटी के छात्र कह सकते हैं। नहीं, साहब, आपको विषय की पूरी जानकारी होनी चाहिये," वग़ैरह-वग़ैरह।

इस पूरे भाषण के दौरान, जो टूटी-फूटी भाषा में दिया गया था, मैं भावहीन ध्यान से उनकी आंखों को देखता रहा, जो नीचे झुकी हुई थीं। सबसे पहले तो तृतीय स्थान पर रह पाने की आशा भंग हो जाने

से मैं व्यथित होता रहा; फिर यह डर सताता रहा कि संभवतः मैं परीक्षा में उत्तीर्ण ही न होऊं; और अंत में इसमें अन्याय का, आहत स्वाभिमान का और अकारण अपमान का आभास भी जुड़ गया। इसके अलावा, प्रोफ़ेसर के प्रति तिरस्कार की भावना, क्योंकि वह, मेरी राय में, comme il faut आदमी नहीं थे – जिसका पता मैंने उनके छोटे-छोटे, सख़्त, गोल नाख़ूनों को देखकर लगा लिया था – मुझे अधिकाधिक प्रभावित करती गयी, और उसने इन सारी भावनाओं को विषाक्त कर दिया। उन्होंने मुझ पर एक नज़र डाली और मेरे कांपते हुए होंटों और आंसुओं से भरी आंखों को देखकर, मेरे इस भावावेग का अर्थ उन्होंने यह लगाया होगा कि मैं अपने नंबर बढ़वाने के लिए प्रार्थना कर रहा हूं, और मानो मुझ पर तरस खाकर वह बोले (और सो भी एक दूसरे प्रोफ़ेसर के सामने जो इसी बीच वहां आ गया था):

"अच्छी बात है, हालांकि आप इस लायक़ तो नहीं हैं लेकिन आपकी कमउम्री को देखते हुए मैं आपको 'पास' किये देता हूं, इस उम्मीद से कि आप यूनिवर्सिटी में इतने हल्केपन का सबूत नहीं देंगे।"

एक अजनबी प्रोफ़ेसर के सामने जिसने मुझे इस तरह देखा मानो कह रहा हो, "समझ गये, बरखुरदार!" कहे गये इस फ़िक़रे की वजह से मैं पूरी तरह बौखला उठा। एक क्षण के लिए मेरी आंखों के सामने कुहरा-सा छा गया: मुझे ऐसा लगने लगा कि वह डरावने प्रोफ़ेसर, अपनी मेज़ सहित, कहीं बहुत दूर बैठे हैं, और भयानक एकतरफ़ा स्पष्टता के साथ यह विचार मेरे मन में उठा, "और, क्या होगा अगर... क्या होगा अगर?" लेकिन मैंने न जाने क्यों ऐसी कोई हरकत नहीं की, बल्कि, इसके विपरीत, मैंने अनायास ही विशेष शिष्टता के साथ झुककर दोनों प्रोफ़ेसरों को सलाम किया और हल्की-सी मुस्कराहट के साथ मेज़ के पास से चला आया; मुझे लगा कि मेरी मुस्कराहट इकोनिन जैसी ही थी।

उस समय मुझ पर इस अन्याय का इतना गहरा असर हुआ कि अगर मैं अपनी इच्छा से काम करने के लिए स्वतंत्र होता, तो मैं उसके बाद कोई परीक्षा देता ही नहीं। मेरा सारा घमंड दूर हो गया (क्योंकि अब संभवतः मेरा तीसरा स्थान नहीं रह सकता था), और मैंने बाक़ी परीक्षाएं कोई प्रयास किये बिना, और अपनी ओर से तनिक भी उत्ते-

जिन हुए बिना बीत जाने दीं। फिर भी मेरे औसत नंबर चार से कुछ अधिक ही थे, लेकिन इसमें मुझे रत्ती-भर भी दिलचस्पी नहीं थी; मैंने मन ही मन निश्चय कर लिया, और अपने आपको यह बात साफ़ तौर पर समझा ली कि पहला स्थान प्राप्त करना mauvais genre* है और न बहुत अच्छा होना चाहिये और न बहुत बुरा, वोलोद्या की तरह। यूनिवर्सिटी में मैं इसी नियम का पालन करना चाहता था, हालांकि इस बात पर पहली बार अपने दोस्त द्मित्री से मेरा मतभेद हुआ था।

मैं तो बस अपनी यूनिफ़ार्म, अपनी तिकोनी टोपी, अलग अपनी घोड़ागाड़ी, अलग अपने कमरे, और, सबसे बढ़कर, अपनी आज़ादी के बारे में सोच रहा था।

अध्याय १३

मैं बड़ा हो गया

और इन विचारों का भी अपना अलग ही आकर्षण था।

८ मई को धार्मिक ज्ञान की अपनी अंतिम परीक्षा से लौटने पर मुझे रोज़ानोव के यहां काम सीखनेवाला एक दर्जी घर पर मिला, जिसे मैं पहले से जानता था, क्योंकि वह मेरी यूनिफ़ार्म और चमकीले काले बनात के बड़े लोगों जैसे कोट को फ़िट करके देखने के लिए आ चुका था, और उसने कॉलरों पर खरिया से निशान भी लगाये थे, और जो अब तैयार पोशाक लेकर आया था और साथ में काग़ज़ में लपेटकर चमकदार सुनहरे बटन भी लाया था।

मैंने पोशाक पहनकर देखी, और मुझे वह बहुत अच्छी लगी (हालांकि St.-Jérôme ने कहा कि पीछे उसमें झोल था), और मैं आत्म-संतोष की मुस्कराहट के साथ, जो अनायास ही मेरे पूरे चेहरे पर फैल गयी, नीचे वोलोद्या के कमरे में गया। मुझे इस बात का आभास था

---

* बुरा अंदाज़। (फ़ांसीसी)

कि घर के नौकर-चाकर वाहरवाले छोटे कमरे और गलियारे में से वड़ी उत्सुकता से मेरे ऊपर नज़रें जमाये हुए थे, हालांकि मैं जताने की कोशिश यही कर रहा था कि मुझे इस वात का आभास नहीं है। खानसामां गाव्रीलो ने लपककर हॉल में मुझे पकड़ लिया, यूनिवर्सिटी में प्रवेश करने पर मुझे वधाई दी, पापा के आदेशानुसार मुझे पच्चीस-पच्चीस रूवल के चार नोट दिये, और पापा की ही हिदायत पर मुझे यह भी वताया कि उस दिन से कोचवान कुज़्मा, एक घोड़ा-गाड़ी, कत्थई घोड़ा व्यूटी केवल मेरी सेवा में रहेंगे। इस प्रायः अप्रत्याशित सुसमाचार से मुझे इतनी खुशी हुई कि गाव्रीलो के सामने मैं उदासीनता का ढोंग नहीं कर सका, और घवराकर घुटते हुए गले से मैंने जो वात दिमाग़ में सवसे पहले आयी वही कह दी, और वह यह थी कि व्यूटी शानदार घोड़ा है। वाहरवाले छोटे कमरे और गलियारे में खुलनेवाले दरवाज़ों में से निकले हुए सिरों पर नज़र पड़ने पर मैं अव और ज़्यादा देर अपने आपको क़ावू में न रख सका, और मैं चमकदार पीतल के वटनोंवाला अपना नया कोट पहने भागकर हॉल को पार कर गया। वोलोद्या के कमरे में क़दम रखते ही मुझे दुवकोव और नेखल्यूदोव की आवाज़ें सुनायी दीं, जो मुझे वधाई देने और यह सुझाव रखने आये थे कि मेरे यूनिवर्सिटी में भरती होने की खुशी में हम लोग कहीं जाकर खाना खायें और शैम्पेन पियें। द्मित्री ने मुझसे कहा कि उसे शैम्पेन पीने का हालांकि वहुत शौक़ नहीं है, फिर भी वह हमारी घनिष्ठता की शुरूआत की खुशी मनाने के लिए उस दिन हमारे साथ चलेगा। दुवकोव ने कहा कि न जाने क्यों मैं कर्नल जैसा लग रहा था। वोलोद्या ने मुझे वधाई नहीं दी, वल्कि वहुत ही रूखे स्वर में वस इतना कहा कि अव हम परसों गांव के लिए रवाना हो सकते हैं। ऐसा लग रहा था कि जैसे उसे मेरे यूनिवर्सिटी में प्रवेश करने की खुशी तो थी लेकिन यह वात उसके लिए कुछ अरुचिकर थी कि मैं भी उसी की तरह वड़ा हो गया था। St.-Jérôme हमारे यहां आये थे और उन्होंने वड़े रोव से कहा था कि अव उनकी ज़िम्मेदारियां पूरी हो गयी थीं, और वह पूरे भरोसे के साथ नहीं कह सकते थे कि उन्होंने उन्हें अच्छी तरह निभाया था या वुरी तरह, लेकिन जो कुछ उनके वस में था वह उन्होंने किया था; और अव अगले दिन से वह अपने काउंट के यहां जानेवाले

थे। मुझसे जो कुछ कहा गया था उसके जवाब में मुझे ऐसा लगा कि मेरे चेहरे पर शहद जैसी मीठी, खुशी-भरी, कुछ-कुछ बेवक़ूफ़ों जैसी आत्म-संतुष्टि में डूबी हुई मुस्कराहट मेरे न चाहते हुए भी फैल गयी थी; और मैंने देखा कि यह मुस्कराहट उन लोगों तक भी पहुंच गयी थी जो मुझसे बातें कर रहे थे।

तो अब मैं मास्टर साहब से आज़ाद हो गया था, मेरे पास अलग अपनी घोड़ागाड़ी थी, मेरा नाम छात्रों के रजिस्टर में दर्ज हो चुका था, मेरी पेटी से अब एक खंजर लटकता था, संतरी कभी-कभी मुझे सलाम भी कर लेते थे... मैं बड़ा हो गया था और, मैं समझता था कि मैं खुश था।

हम लोगों ने कोई पांच बजे 'यार' रेस्तोरां में खाना खाने का फ़ैसला किया; लेकिन चूंकि वोलोद्या दुबकोव के साथ कहीं चला गया और द्मित्री भी अपनी आदत के अनुसार यह कहकर ग़ायब हो गया कि खाने से पहले उसे कोई मामला निबटाना है, इसलिए बीच के दो घंटे मैं अपनी मर्ज़ी से जिस तरह चाहता बिता सकता था। काफ़ी देर तक मैं सब कमरों में टहलता रहा, आईनों में अपनी सूरत देखता रहा – कभी नये कोट के बटन लगा लिये, कभी उसके सारे बटन खोल दिये, फिर सिर्फ़ सबसे ऊपरवाला बटन लगा रहने दिया; और हर तरह से वह मुझे बहुत ही बढ़िया लगा। फिर, ज़रूरत से ज़्यादा खुशी दिखाने पर शर्मिंदा होकर, मैं बरबस अस्तबल और गाड़ीखाने की ओर ब्यूटी, कुज़्मा और घोड़ागाड़ी का मुआइना करने चल पड़ा; उसके बाद मैं फिर वापस जाकर कमरों में टहलने लगा, आईनों में अपनी सूरत देखने लगा, अपनी जेब में पड़ी हुई रक़म गिनने लगा, और तमाम वक़्त उसी हर्षातिरेक से मुस्कराता रहा। लेकिन अभी एक घंटा भी नहीं बीता था कि मैं उकताने लगा, या मुझे इस बात का अफ़सोस होने लगा कि मेरी वह तड़क-भड़क देखनेवाला कोई नहीं था; और मैं गतिशील हो जाने के लिए और कुछ करने के लिए बेचैन हो उठा। फलस्वरूप मैंने घोड़ागाड़ी जोत लाने का हुक्म दिया, और फ़ैसला किया कि सबसे अच्छा यही होगा कि कुज़्नेत्स्की मोस्त सड़क पर जाकर कुछ खरीदारी की जाये।

मुझे याद आया कि जब वोलोद्या यूनिवर्सिटी में भरती हुआ था

तब उसने अपने लिए विक्टर एडम की घोड़ों की तस्वीर की लिथो-ग्राफ़, कुछ तंबाकू और कई पाइप ख़रीदे थे; और मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मेरे लिए भी ऐसा ही करना अनिवार्य है।

मैं घोड़ागाड़ी पर बैठकर कुज़्नेत्स्की मोस्त गया; रास्ते भर चारों ओर से लोगों की नज़रें मुझ पर जमी रहीं, और धूप की चमक मेरे बटनों पर, मेरी हैट में लगे हुए बिल्ले पर और मेरे खंजर पर पड़ रही थीं; दात्सिआरो की तस्वीरों की दुकान के पास मैंने गाड़ी रुकवायी। चारों ओर नज़र डालकर मैं दुकान में घुस गया। मैं विक्टर एडम की बनायी हुई घोड़ों की तस्वीर नहीं ख़रीदना चाहता था कि कहीं कोई मुझ पर वोलोद्या की नक़ल करने का आरोप न लगाये; इस बात से कुछ लज्जित होकर कि मैं उस शिष्ट दुकानदार को तकलीफ़ दे रहा था, मैं जल्दी से जल्दी अपनी पसंद तै कर लेने की उत्सुकता में था, और मैंने खिड़की में रखा हुआ एक स्त्री के चेहरे का भद्दा-सा चित्र ले लिया, और उसके बीस रूबल चुका दिये। लेकिन बीस रूबल ख़र्च करने के बाद भी मेरा अंतःकरण मुझे कचोटता रहा कि मैंने इतनी छोटी-छोटी बातों के लिए उन दो दुकानदारों को, जिन्होंने बेहद ख़ूब-सूरत कपड़े पहन रखे थे, तकलीफ़ दी और इसके अलावा ऐसा लग रहा था मानो वे दोनों मुझे बेहद लापरवाही से देख रहे थे। उन लोगों को यह बात अच्छी तरह समझा देने के लिए कि मैं किस तरह का आदमी था मैंने अपना ध्यान चांदी की एक छोटी-सी चीज़ की ओर मोड़ा जो कांच के नीचे रखी हुई थी, और जब मुझे मालूम हुआ कि वह अट्ठारह रूबल का पेंसिलदान है, मैंने उसे भी लपेट देने को कहा, उसके पैसे चुकाये और यह पता लगने पर कि बग़लवाली तंबाकू की दुकान में अच्छे पाइप और तंबाकू भी मिल सकती है, मैंने बड़ी शिष्टता से झुककर उन दोनों दुकानदारों से विदा ली और अपनी तस्वीर बग़ल में दबाये सड़क पर निकल आया। पासवाली दुकान में, जिसके साइनबोर्ड पर सिगार पीता हुआ एक हब्शी दिखाया गया था, मैंने (किसी की नक़ल न करने की इच्छा से ही) जूकोव मार्का नहीं बल्कि सुल्तान मार्का तंबाकू, एक तुर्की पाइप, और दो चुबूक ख़रीद लिये, एक लिंडेन की लकड़ी का, दूसरा गुलाब की लकड़ी का। दुकान से निकलकर अपनी घोड़ागाड़ी की ओर जाते हुए मैंने सेम्योनोव को सड़क की पटरी

पर तेज़ी से जाते हुए देखा; उसने मामूली रोज़मर्रा के कपड़े पहन रखे थे और सिर झुकाये चला जा रहा था। मुझे इस बात पर कुछ झुंझलाहट हुई कि उसने मुझे पहचाना नहीं। मैंने काफ़ी ऊंची आवाज़ में कहा, "गाड़ी बढ़ाओ!" और घोड़ागाड़ी पर बैठकर मैंने देखते-देखते सेम्योनोव को जा पकड़ा।

"कैसे हैं?" मैंने उससे कहा।

"आपकी मेहरबानी," उसने जवाब दिया और अपने रास्ते चल दिया।

"आपने अपनी यूनिफ़ार्म क्यों नहीं पहन रखी है?" मैंने पूछा।

सेम्योनोव ठिठक गया, उसने अपनी आंखें सिकोड़ीं और अपने सफ़ेद दांत निपोर दिये, मानो सूरज की ओर देखने में उसे तकलीफ़ हो रही हो, लेकिन दरअसल यह ज़ाहिर करने के लिए कि उसे मेरी घोड़ागाड़ी और मेरी यूनिफ़ार्म में कोई दिलचस्पी नहीं है, उसने मुझे चुपचाप घूरा और अपनी राह चल दिया।

कुज़्नेत्स्की मोस्त सड़क से मैं घोड़ागाड़ी पर त्वेर्स्काया मार्ग पर मिठाई की दुकान में गया; और हालांकि मैंने जताने की कोशिश यही की कि मुझे ख़ास तौर पर उन अख़बारों में दिलचस्पी थी जो उस दुकान में थे, लेकिन मैं अपने आपको रोक नहीं पाया और एक के बाद दूसरा समोसा खाने लगा। उन कुछ सज्जनों के सामने, जो अपने अख़बारों के पीछे से बड़ी उत्सुकता से मुझे घूर रहे थे, लज्जित अनुभव करने के बावजूद, मैं बड़ी तेज़ी से आठ समोसे खा गया; दुकान में थे ही इतनी क़िस्म के समोसे।

घर पहुंचकर मेरे सीने में कुछ जलन-सी महसूस हुई, लेकिन उसकी ओर कोई ध्यान न देकर मैं अपनी ख़रीदी हुई चीज़ों को देखने-भालने में लग गया। तस्वीर मुझे इतनी नापसंद हुई कि वोलोद्या की तरह उसे फ़्रेम में जड़वाकर अपने कमरे में टांगना तो दूर रहा, मैंने उसे उल्टे अलमारी के पीछे छिपा दिया जहां कोई उसे देख न पाये। घर पहुंचकर वह पेंसिलदान भी मुझे कुछ ख़ास अच्छा नहीं लगा, मैंने उसे मेज की दराज में रख दिया, और यह सोचकर अपने आपको तसल्ली दी कि वह चांदी का बना हुआ था, चीज़ क़ीमती थी और छात्रों के बेहद काम की थी।

जहां तक धूम्रपान के सामान का सवाल था मैंने उसे फ़ौरन इस्तेमाल करने और आज़माकर देखने का फ़ैसला किया।

मैंने चौथाई पौंड का एक पैकेट खोला और अपने तुर्की पाइप में महीन-महीन कटा हुआ ज़ाफ़रानी रंग का सुल्तान मार्का तंबाकू बड़ी सावधानी से भरकर उस पर एक दहकता हुआ अंगारा रखा और अपनी तीसरी और चौथी उंगलियों के बीच पाइप की नलकी थामकर (हाथ की यह स्थिति मुझे बेहद पसंद थी) मैं धुआं उड़ाने लगा।

तंबाकू की खुशबू बहुत ही अच्छी थी, लेकिन उसका स्वाद कड़वा था, और धुएं से मेरे गले में फंदा लग गया। फिर भी मैंने अपने साथ ज़बर्दस्ती करके काफ़ी देर तक यह सिलसिला जारी रखा, मैं धुआं सांस के साथ सीने में ले जाता रहा और छल्ले बनाकर धुआं बाहर निकालने की कोशिश करता रहा। थोड़ी ही देर में सारा कमरा नीले धुएं के बादलों से भर गया, पाइप गुड़गुड़ाने लगा और दहकती हुई तंबाकू से लपटें उठने लगीं; मुझे अपने मुंह में कड़वाहट महसूस हुई और सिर कुछ चकराने लगा; मैं पाइप पीना बंद करना चाहता था, पर उससे पहले मुंह में पाइप लगाये हुए अपनी सूरत आईने में देखने के लिए मैंने उठने की कोशिश की, लेकिन मुझे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि मैं लड़खड़ाने लगा, कमरा चारों ओर घूमने लगा, और जब मैंने आईने में, जहां तक मैं बड़ी मुश्किल से पहुंच पाया था, अपनी सूरत पर नज़र डाली तो देखता क्या हूं कि मेरा चेहरा चूने की तरह सफ़ेद पड़ गया है। मैं किसी तरह गिरता-पड़ता दीवान पर लेटा ही था कि मुझे ऐसी मतली और कमज़ोरी का आभास हुआ कि मैं सोचने लगा कि मैं मर रहा हूं और कल्पना करने लगा कि वह पाइप ही मेरे लिए घातक सिद्ध हुआ है। मैं बेहद डर गया; मैं किसी को मदद के लिए पुकारना और डाक्टर को बुलवाना चाहता था।

लेकिन यह आतंक बहुत देर तक नहीं रहा। जल्दी ही मैं सब कुछ समझ गया; और बड़ी देर तक कमज़ोरी और सिर में भयानक पीड़ा की हालत में कोच पर लेटा निश्चेत एकाग्रता से चौथाई पौंडवाले पैकेट पर बने हुए बोस्तांद जोगलो के कुल-चिन्ह को, पाइप और धूम्रपान के साज़-सामान और फ़र्श पर गिरे हुए मिठाईवाले के यहां के समोसे के टुकड़ों को देखता रहा, और आशाओं के भंग होने के इस क्षण में

उदास भाव से सोचता रहा, "अगर मैं दूसरे लोगों की तरह धूम्रपान नहीं कर सकता तो मैं यक़ीनन अभी बड़ा नहीं हुआ हूं; और यह बात बिल्कुल साफ़ है कि मेरे भाग्य में ही यह नहीं लिखा है कि दूसरे लोगों की तरह मैं अपनी तीसरी और चौथी उंगलियों के बीच में अपना पाइप थामूं, धुआं सांस के साथ सीने में ले जाऊं और उसे अपनी सुनहरी मूंछों के पार बाहर निकालूं।"

जब द्मित्री पांच बजे मुझे लेने आया तो उसने मुझे इसी अरुचिकर स्थिति में पाया। लेकिन एक गिलास पानी पीकर मैं फिर लगभग बिल्कुल चंगा हो गया और उसके साथ चलने को तैयार हो गया।

"आपके पाइप पीने की क्या सूझी थी?" मेरे धूम्रपान की बची-खुची निशानियों को ध्यान से देखते हुए उसने कहा। "यह सरासर बकवास आदत है और पैसे की बर्बादी है। मैंने तो अपने आपसे वादा किया है कि कभी सिगार-पाइप वग़ैरह नहीं पिऊंगा। लेकिन जल्दी करो—हमें दुबकोव को लेना है।"

अध्याय १४

वोलोद्या और दुबकोव क्या करते रहे

जैसे ही द्मित्री मेरे कमरे में आया था वैसे ही मैं उसकी सूरत, उसकी चाल और उसकी वह हरकत देखकर, जो बदमिज़ाजी की हालत में वह हमेशा करता था—आंखें झपकाना और मुंह बनाकर अपने सिर को एक ओर झटकना—मैं फ़ौरन समझ गया कि उस समय वह भाव-शून्यता और हठधर्मी की उस मनस्थिति में था जो अपने आप से नाराज़ होने पर हमेशा उस पर छा जाती थी, और जो उसके प्रति मेरे उत्साह को हमेशा ठंडा कर देती थी। इधर कुछ समय से मैं अपने दोस्त के चरित्र को ध्यान से देखने और परखने लगा था, लेकिन इसकी वजह से हमारी दोस्ती में कोई फ़र्क़ नहीं आया था: वह अब भी इतनी नयी थी और वह अब भी इतनी मजबूत थी कि मैं द्मित्री को जिस पहलू से भी देखता वह मुझे निर्विकार ही दिखायी देता। उसके व्यक्तित्व

में दो अलग-अलग व्यक्ति थे, और मेरी नज़रों में दोनों ही बहुत अच्छे थे। एक, जिसे मैं दिल से प्यार करता था, बहुत नेक, ख़ुशमिज़ाज, भला था और इन सद्‌गुणों का उसे आभास था। जब भी वह इस मनस्थिति में होता था तो उसकी सारी सूरत-शक्ल, उसके बोलने की आवाज़, उसकी सारी चाल-ढाल मानो कह उठती थी, "मैं नेक और सच्चरित्र हूं; नेक और सच्चरित्र रहने में मुझे आनंद मिलता है, जैसा कि आप सब लोग देख सकते हैं।" दूसरा व्यक्ति – जिसे पहचानना और जिसकी भव्यता के आगे सिर झुकाना मैंने अभी शुरू ही किया था – स्वयं अपने प्रति और दूसरों के प्रति निष्ठुर और कठोर, गर्वीला, अंधेपन की हद तक धार्मिक, और कट्टर नीतिपरायण था। इस समय वह यही दूसरा व्यक्ति था।

जब हम लोग घोड़ागाड़ी पर बैठे तो मैंने बिल्कुल साफ़-साफ़ शब्दों में उसे बता दिया, जो हमारी दोस्ती की अनिवार्य शर्त थी, कि एक ऐसे दिन जो मेरे लिए इतनी ख़ुशी का दिन था, उसे ऐसी अप्रसन्न और अरुचिकर मनस्थिति में देखना मेरे लिए बहुत दुःख और पीड़ा का विषय था।

"यक़ीनन किसी चीज़ ने आपको परेशान कर दिया होगा; आप मुझे बताते क्यों नहीं?" मैंने पूछा।

"निकोलेंका!" उसने अपना सिर एक ओर को झटककर और आंख झपकाकर शब्दों को तोलते हुए जवाब दिया, "चूंकि मैंने वादा किया है कि मैं कुछ भी तुमसे छिपाऊंगा नहीं, इसलिए तुम्हें मुझ पर यह शक करने की कोई वजह नहीं है कि मैं तुमसे कुछ छिपा रहा हूं। हर समय एक ही मनस्थिति में रहना नामुमकिन है, और अगर किसी बात ने मुझे परेशान किया है तो मैं ख़ुद अपने आपको नहीं बता सकता कि वह चीज़ क्या है।"

"कैसा कमाल का खरा और ईमानदार चरित्र है!" मैंने सोचा और इसके बाद उससे कुछ भी नहीं कहा।

दुबकोव का फ़्लैट बेहद शानदार था, या उस वक़्त कम से कम मुझे लगा वैसा ही था। वहां हर जगह क़ालीन थे, तस्वीरें थीं, परदे थे, दीवार पर रंग-बिरंगा काग़ज मढ़ा था, छविचित्र थे, गोलाईदार आराम-कुर्सियां थीं; दीवारों पर बंदूक़ें, पिस्तौल, तंबाकू के बटुए

और गत्ते से बनाये गये कुछ जंगली जानवरों के सिर लटके हुए थे। पढ़ने के इस कमरे को देखकर मेरी समझ में आ गया कि अपने कमरे को सजाने में वोलोद्या किसकी नक़ल करता था। जब हम लोग पहुंचे तो वोलोद्या और दुबकोव ताश खेल रहे थे। एक सज्जन, जिन्हें मैं नहीं जानता था (और जिनकी विनीत मुद्रा से पता चलता था कि उनका कोई ख़ास महत्व नहीं रहा होगा), मेज़ के पास बैठे बड़े ध्यान से खेल देख रहे थे। दुबकोव ने रेशमी ड्रेसिंग-गाऊन और मुलायम सलीपरें पहन रखी थीं। वोलोद्या कोट उतारे उसके सामने सोफ़े पर बैठा था, और उसके तमतमाये हुए चेहरे से और जिस तरह उसने ताश के पत्तों पर से हटाकर हम लोगों पर एक असंतुष्ट उचटी हुई नज़र डाली उससे जाहिर था कि वह खेल में पूरी तरह खोया हुआ था। मुझे देखते ही उसका चेहरा और लाल हो गया।

"चलो, तुम्हारी बांटने की बारी है," उसने दुबकोव से कहा। मैं देख रहा था कि मेरे सामने यह बात खुल जाने से वह नाराज़ था कि वह ताश खेलता था। लेकिन उसके चेहरे पर कोई लज्जा दिखायी नहीं दे रही थी, और ऐसा लग रहा था कि वह मुझसे कह रहा है, "हां, मैं ताश खेल रहा हूं और तुम्हें ताज्जुब सिर्फ़ इसलिए हो रहा है कि तुम अभी बहुत छोटे हो। इसमें न सिर्फ़ कोई बुराई की बात नहीं है – बल्कि हमारी उम्र में तो यह ज़रूरी भी है।"

मैंने फ़ौरन इसे महसूस किया और बात मेरी समझ में आ गयी।

लेकिन दुबकोव पत्ते बांटने के बजाय उठ खड़ा हुआ, उसने हम लोगों से हाथ मिलाये, हमें बैठने को कुर्सियां दीं, और पीने के लिए पाइप पेश किये, जिन्हें लेने से हमने इंकार कर दिया।

"तो यह है हमारा डिप्लोमैट – आज का हीरो," दुबकोव ने कहा। "ख़ुदा की क़सम, तुम देखने में बिल्कुल कर्नल जैसे लगते हो।"

"हूं!" मैं बुड़बुड़ाया और मैंने अनुभव किया कि वह बेवक़ूफ़ों जैसी आत्म-संतोष की मुस्कराहट मेरे सारे चेहरे पर फैलती जा रही है।

मैं दुबकोव के प्रति इतना आदर महसूस करता रहा जितना सोलह बरस का एक लड़का ही सत्ताईस वर्ष के एक ऐसे अफ़सर के सामने महसूस कर सकता है जिसे उससे बड़े सभी लोग बहुत ही शरीफ़ नौजवान कहते हों, जो अच्छी तरह नाचना जानता हो और फ़्रांसीसी धारा-

प्रवाह बोलता हो, और जो मन ही मन मेरी कमउम्री की उपेक्षा करते हुए भी इस बात को ज़ाहिर न होने देने की पूरी कोशिश करता हो।

लेकिन उसके प्रति मेरे मन में आदर-सम्मान की भावना के बावजूद, भगवान जाने क्यों, जितने दिन हमारी जान-पहचान रही मैं हमेशा उससे आंख मिलाने में कठिनाई और अटपटापन महसूस करता रहा। और बाद में मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि तीन तरह के लोग हैं जिनसे आंख मिलाने में मुझे कठिनाई होती है—वे जो मुझसे बहुत घटिया होते हैं, वे जो मुझसे बहुत बढ़िया होते हैं, और वे जिनके सामने मैं उन बातों की चर्चा करने का फ़ैसला नहीं कर पाता जिन्हें हम दोनों जानते हैं, और जो उन बातों की चर्चा मेरे सामने भी नहीं करते। यह तो मुझे मालूम नहीं कि दुबकोव मुझसे बढ़िया था या घटिया, लेकिन एक बात पक्की है, वह यह कि वह अकसर झूठ बोलता था, और इस बात को कभी मानता नहीं था; मुझे उसकी इस कमज़ोरी का पता चल गया था, लेकिन मैं कभी इस बात को उससे कहने का साहस नहीं बटोर पाया था।

"आओ, एक बाज़ी और खेलें," वोलोद्या ने पापा की तरह कंधा झिटककर ताश फेंटते हुए कहा।

"इससे जान छुड़ाना मुश्किल है!" दुबकोव ने कहा। "बाद में खेलेंगे। अच्छा, तो बस एक बाज़ी।"

वे लोग खेलते रहे, मैं उनके हाथों को देखता रहा। वोलोद्या का हाथ बहुत बड़ा और ख़ूबसूरत था। पत्ते पकड़ते वक़्त अपना अंगूठा अलग रखने और अपनी उंगलियां मोड़ने का उसका तरीक़ा पापा से इतना मिलता-जुलता था कि एक वक़्त तो मुझे सचमुच ऐसा लगा कि वोलोद्या अपने पत्ते उस तरह जान-बूझकर पकड़ता था ताकि वह और ज़्यादा बड़े लोगों जैसा लगे; लेकिन अगले ही क्षण उसका चेहरा देखने पर मुझे लगा कि वह खेल के अलावा और किसी बात के बारे में नहीं सोच रहा है। इसके विपरीत, दुबकोव के हाथ छोटे-छोटे, मांसल, अंदर की ओर मुड़े हुए और बेहद दक्ष थे, और उसकी उंगलियां मुलायम थीं; उसके हाथ ठीक उस तरह के थे जैसे हाथों पर अंगूठियां फबती हैं, और जैसे हाथ उन लोगों के होते हैं जिनकी रुचि दस्तकारी की ओर होती है और जिन्हें ख़ूबसूरत चीज़ों का शौक़ होता है।

वोलोद्या शायद हार रहा होगा, क्योंकि जो सज्जन उसके पत्ते देख रहे थे उन्होंने कहा कि व्लादीमिर पेत्रोविच की क़िस्मत बहुत ही ख़राब थी; दुबकोव ने डायरी निकाली और उसमें कुछ लिख लिया, और जो कुछ उसने लिखा था वह वोलोद्या को दिखाते हुए बोला, "ठीक है?"

"हां!" वोलोद्या ने बनावटी अन्यमनस्कता से डायरी पर एक नज़र डालते हुए कहा। "अच्छा, अब चलें।"

वोलोद्या ने दुबकोव को अपनी गाड़ी पर बिठा लिया, और द्मित्री ने अपनी फ़िटन पर मुझे।

"क्या खेल रहे थे वे?" मैंने द्मित्री से पूछा।

"पिकेट। बहुत ही बेवक़ूफ़ी का खेल है, और जुआ खेलना तो यों भी बेवक़ूफ़ी की बात है ही।"

"क्या वे बड़ी-बड़ी रक़में दांव पर लगाते हैं?"

"ज़्यादा नहीं, फिर भी यह ठीक नहीं है।"

"और आप नहीं खेलते?"

"नहीं; मैंने न खेलने की क़सम खायी है; दुबकोव तो जो भी पकड़ में आ जाये उसके साथ खेले बिना रह ही नहीं सकता, और वह आम तौर पर जीतता है।"

"लेकिन उसकी यह हरकत ठीक नहीं है," मैंने कहा। "वोलोद्या शायद उसका जैसा अच्छा नहीं खेलता।"

"ज़ाहिर है कि ठीक तो नहीं है; लेकिन उसमें कोई ऐसी ख़ास बुराई भी नहीं है। दुबकोव को ताश खेलने का शौक़ है और वह खेलता भी अच्छा है; बहरहाल वह आदमी बहुत ही बढ़िया है।"

"लेकिन मैंने समझा ही कब कि वह..." मैंने कहा।

"उसे बुरा समझना नामुमकिन है, क्योंकि वह सचमुच बहुत ही अच्छा आदमी है, मुझे उससे बड़ा लगाव है, और उसकी कमज़ोरियों के बावजूद हमेशा रहेगा।"

न जाने क्यों मुझे ऐसा लगा कि द्मित्री चूंकि दुबकोव की पैरवी इतने जोश के साथ कर रहा था इसलिए वह अब न उसे प्यार करता था न उसकी इज्जत करता था, लेकिन उसने इस बात को माना नहीं, बस हठधर्मी की वजह से और इसलिए कि कोई उस पर ढुलमुलपन

का आरोप न लगाये। वह उन लोगों में से था जो अपने दोस्तों से ज़िंदगी-भर प्यार करते हैं, इस वजह से नहीं कि वे दोस्त उन्हें हमेशा प्यारे रहते हैं, बल्कि इसलिए कि एक बार, ग़लती से ही सही, किसी आदमी को पसंद कर लेने के बाद वे उसे पसंद करना छोड़ देना बेइज़्ज़ती की बात समझते हैं।

अध्याय १५

मेरी सफलता का उत्सव

दुबकोव और वोलोद्या 'यार' रेस्तोरां के सभी लोगों को उनके नाम से जानते थे, और दरबान से लेकर मालिक तक सभी ने उनके प्रति अधिकतम सम्मान प्रकट किया। हम लोगों को फ़ौरन एक प्राइवेट कमरे में ले जाया गया और हमारे सामने बेहतरीन डिनर पेश किया गया, जिसे दुबकोव ने फ़्रांसीसी खानों की सूची में से चुना था। ठंडी शैम्पेन की एक बोतल, जिसकी ओर मैंने यथासंभव अधिकतम उदासीनता के भाव से देखने की कोशिश की, पहले से तैयार कर रखी गयी थी। खाना बहुत हंसी-खुशी के वातावरण में गुज़रा इसके बावजूद कि दुबकोव ने हमेशा की तरह अजीब-अजीब घटनाओं के क़िस्से सुनाये जो उसके अनुसार बिल्कुल सच थे—उनमें से एक क़िस्सा यह भी था कि किस तरह उसकी नानी ने एक बार उन पर हमला करनेवाले तीन डाकुओं को बंदूक़ से मौत के घाट उतार दिया था (इस पर मैं कुछ शरमा गया, मैंने अपनी नज़रें झुका लीं, और उसकी ओर से मुंह फेर लिया)—और इस बात के भी बावजूद कि जब मैं मुंह खोलता था तो वोलोद्या बज़ाहिर डर-सा जाता था (जिसकी क़तई कोई ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि जहां तक मुझे याद है मैंने ऐसी कोई शर्मनाक बात नहीं कही)। जब शैम्पेन पेश की गयी तो सबने मुझे बधाई दी, और मैंने दुबकोव और द्मित्री के साथ एक विशेष रस्म पूरी करते हुए शराब पी और हम लोगों ने एक-दूसरे को चूमा, जिसके बाद हम लोग एक-दूसरे को "तुम" कहकर संबोधित कर सकते थे। चूंकि मुझे यह नहीं

मालूम था कि वह शैम्पेन की बोतल किसके हिसाब में आयी थी (जैसा कि उन लोगों ने मुझे बाद में बताया, वह साझे की थी), और मैं अपने दोस्तों की खातिर खुद अपने पैसों से करना चाहता था, जिन्हें मैं अपनी जेब में लगातार टटोलता जा रहा था, मैंने चुपके से दस रूबल का एक नोट निकाला और वेटर को बुलाकर उसे देते हुए उसके कान में कहा, लेकिन इस तरह कि उन सब लोगों ने सुन लिया, कि "ज़रा फिर मेहरबानी करके एक आधी बोतल शैम्पेन की और ले आओ।" वोलोद्या का चेहरा लाल हो गया, और वह अपना कंधा इतने जोर से उचकाने लगा और मुझको और दूसरों को इतना सहमकर देखने लगा कि मुझे यक़ीन हो गया कि मैंने कोई बहुत बड़ी ग़लती कर दी है; बहरहाल, आधी बोतल आयी और हम सबने उसे बड़े संतोष से पिया। ऐसा लग रहा था कि अब भी सब कुछ हंसी-खुशी चल रहा है। दुबकोव लगातार झूठ बोले जा रहा था, और वोलोद्या भी ऐसी मजेदार कहानियां सुना रहा था और इतनी अच्छी तरह सुना रहा था कि मैं उसके सिलसिले में ऐसा सोच भी नहीं सकता था, और हम लोग जी खोलकर हंस रहे थे। उन लोगों के – यानी दुबकोव के और वोलोद्या के – हास-परिहास का विशिष्ट लक्षण इस सुविदित चुटकुले की नक़ल करने और उसे अतिरंजित कर देने में निहित था: एक आदमी पूछता है, "अच्छा, तुम कभी विदेश गये हो?" दूसरा जवाब देता है, "नहीं, मैं तो नहीं गया हूं, लेकिन मेरा भाई वायलिन बजाता है।" उन लोगों ने इस तरह की मसखरेपन की बकवास में इतनी निपुणता प्राप्त कर ली थी कि वे इसी कहानी को इस तरह सुनाते थे: "मेरे भाई ने तो कभी वायलिन भी नहीं बजाया।" वे एक-दूसरे के हर सवाल का जवाब इसी तरह देते थे, और कभी-कभी वे, सवालों के बिना ही, दो बिल्कुल बेमेल चीज़ों को आपस में मिला देने की कोशिश करते थे – वे ऐसी बकवास बहुत गंभीर मुद्रा बनाकर करते थे – और उनकी इन बातों पर बेहद हंसी आती थी। मुझे उनका गुर समझ में आने लगा, और मैंने भी कोई मजेदार बात कहने का इरादा किया; लेकिन मेरे बोलते समय वे सब या संकुचित रह गये, या उन लोगों ने मेरी ओर न देखने की कोशिश की, और मेरी कहानी असफल रही। दुबकोव ने कहा, "यह आप कुछ जरूरत से ज़्यादा दूर की कौड़ी

ले आये, मेरे प्यारे डिप्लोमैट साहब"; लेकिन शैम्पेन की तरंग में और इन बड़े लोगों की संगत में मुझे ऐसा अच्छा लग रहा था कि उसकी इस बात से मुझे ज़रा भी ठेस नहीं लगी। अकेला द्मित्री ही पूर्ववत् कठोर और गंभीर बना रहा, हालांकि उसने भी हम लोगों जितनी ही पी थी, जिसकी वजह से मस्ती में बेक़ाबू हो जाने पर कुछ अंकुश लगा रहा।

"अच्छा, सुनिये, साहबान," दुबकोव ने कहा। "खाने के बाद डिप्लोमैट का कुछ इंतज़ाम करना होगा। अगर हम लोग 'चाची' के यहां चलें तो कैसा रहे? वहां तो हम इसका पूरा बंदोबस्त कर देंगे।"

"नेख़ल्यूदोव तो जायेगा नहीं", वोलोद्या ने कहा।

"बड़ा महात्मा है न! तुम भी निरे महात्मा हो", दुबकोव ने उसकी ओर मुड़कर कहा। "हम लोगों के साथ चलो तो, फिर देखना कि चाची कैसी लाजवाब चीज़ हैं।"

"मैं तो क़तई जाऊंगा ही नहीं, और इतना ही नहीं, मैं इसे भी नहीं जाने दूंगा," द्मित्री ने तमतमाये हुए चेहरे से जवाब दिया।

"किसे? डिप्लोमैट को? क्यों, डिप्लोमैट, तुम चलना चाहते हो? अरे, देखो तो इसे, चाची का नाम सुनते ही कैसा खिल उठा।"

"मेरा यह मतलब नहीं है कि मैं उसे ज़बर्दस्ती रोक लूंगा," द्मित्री ने अपनी जगह से उठकर मेरी ओर देखे बिना कमरे में टहलते हुए अपनी बात जारी रखी। "लेकिन न मैं उसे इसकी सलाह दूंगा और न मैं चाहता हूं कि यह वहां जाये। अब यह बच्चा तो रहा नहीं, अगर चाहे तो अकेले तुम्हारे बिना भी जा सकता है। लेकिन, दुबकोव, तुम्हें अपने आप पर शर्म आनी चाहिये; तुम जो कुछ कर रहे हो वह ठीक नहीं है, और तुम चाहते हो कि दूसरे भी वैसा ही करें।"

"हर्ज ही क्या है इसमें," दुबकोव ने वोलोद्या की ओर देखकर आंख मारते हुए पूछा, "अगर मैं तुम सब लोगों को चाची के यहां चाय पीने के लिए बुलाऊं? अच्छी बात है, अगर तुमको पसंद नहीं कि हम लोग वहां जानेवाले हैं तो वोलोद्या और मैं अकेले चले जायेंगे। चलते हो, वोलोद्या?"

"हां, हां!" वोलोद्या ने हामी भरते हुए कहा। "हम लोग वहां जायेंगे, फिर मेरे यहां वापस आकर पिकेट खेलना जारी रखेंगे।"

"बोलो, तुम इन लोगों के साथ जाना चाहते हो कि नहीं?" द्मित्री ने मेरे पास आकर कहा।

"नहीं," मैंने सरककर सोफ़े पर उसके बैठने के लिए जगह बनाते हुए कहा, "यों तो मैं खुद भी नहीं जाना चाहता, और अगर तुम्हारी सलाह है कि मैं न जाऊं तब तो मैं बिल्कुल नहीं जाऊंगा।"

"यह बात नहीं है," मैंने बाद में इतना और जोड़ दिया, "मेरा यह कहना सच नहीं है कि मैं उनके साथ जाना नहीं चाहता; लेकिन मुझे खुशी है कि मैं जा नहीं रहा हूं।"

"यही ठीक है," उसने जवाब दिया। "अपने ढंग से रहो, और किसी की धुन पर मत नाचो; यही सबसे अच्छा तरीक़ा है।"

न केवल यह कि इस छोटे-से झगड़े से हमारे आनंद में कोई विघ्न नहीं पड़ा बल्कि वह कुछ बढ़ ही गया। द्मित्री फ़ौरन नेकी की अपनी उस मनोदशा में पहुंच गया जो मुझे सबसे अच्छी लगती थी–कोई भी अच्छा काम करने की चेतना का उस पर इतना असर होता था (जैसा कि मैंने बाद में कई बार देखा) कि कुछ पूछिये नहीं। इस समय वह अपने आपसे इसलिए बहुत खुश था कि उसने मुझे जाने से रोक लिया था। वह बेहद मस्त हो गया, उसने एक बोतल शैम्पेन और मंगायी (जो उसके नियम के विरुद्ध था), एक अजनबी को हमारे कमरे में बुला लिया, उसे खूब शराब पिलायी, Gaudeamus igitur* गाया, सब से साथ गाने का अनुरोध किया, और घोड़ागाड़ी पर बैठकर सोकोल्निकी पार्क जाने का सुझाव रखा, जिस पर दुबकोव ने कहा कि यह आवश्यकता से अधिक भावुकता है।

"आज हम लोग जी भरकर खुशी मनायें," द्मित्री ने मुस्कराकर कहा, "आज इसके यूनिवर्सिटी में भरती होने की खुशी में मैं पहली बार इतनी पिऊंगा कि नशे में चूर हो जाऊं, आज यही सही।" कुछ अजीब-सी बात थी कि यह मस्ती द्मित्री पर फबती थी। उसकी हालत किसी ऐसे मास्टर साहब या नेकदिल बाप जैसी हो रही थी जो अपने बच्चों से संतुष्ट हो, जो मस्ती में बेक़ाबू हो गया हो और उन्हें खुश करना चाहता हो, और साथ ही उन पर यह भी जताना चाहता हो

---

* लैटिन भाषा में छात्रों का एक पुराना गीत। –अनु०

कि शरीफ़ों की तरह इज़्ज़तदार तरीक़े से मस्त हुआ जा सकता है; इसके बावजूद ऐसा मालूम पड़ रहा था कि यह मस्ती हम सब लोगों को छूत की बीमारी की तरह लगती जा रही है, इसलिए और भी ज़्यादा कि हममें से हर एक ने आधी-आधी बोतल शैम्पेन पी रखी थी।

ऐसी प्रसन्न मुद्रा में मैंने दुबकोव की दी हुई सिगरेट जलाने के लिए बाहर आम गाहकों के बैठने के बड़े कमरे में प्रवेश किया।

जब मैं अपनी जगह से उठा तो मुझे महसूस हुआ कि मुझे कुछ चक्कर आ रहा है और मेरे हाथ-पांव अपनी प्राकृतिक स्थिति में तभी रहते हैं जब मैं अपना ध्यान दृढ़तापूर्वक उन पर केंद्रित करता हूं। वरना मेरे पांव एक ओर को रेंगने लगते हैं और मेरे हाथ तरह-तरह की मुद्राएं बनाने लगते हैं। मैंने सारा ध्यान अपने हाथ-पांवों पर केंद्रित करके अपने हाथों को कोट का बटन लगाने और बालों को संवारने का आदेश दिया (जिसके दौरान मेरी कुहनियां झटके के साथ बेहद ऊंची उठ गयीं), और मैंने अपनी टांगों से मुझे दरवाज़े की ओर ले चलने को कहा; टांगों ने मेरे इस आदेश का पालन तो किया, लेकिन वे ज़मीन पर या तो बहुत ज़ोर से पड़ती थीं या बहुत धीरे से, और बायां पांव ख़ास तौर पर लगातार अंगूठे के बल टिका रहता था। "कहां जा रहे हो?" किसी ने पुकारकर मुझसे पूछा। "अभी मोमबत्ती आयी जाती है।" मैंने अनुमान लगाया कि वह आवाज़ वोलोद्या की थी, और यह सोचकर मुझे संतोष हुआ कि मेरा अंदाज़ा ठीक था; जवाब में मैं सिर्फ़ मुस्कराकर आगे बढ़ गया।

अध्याय १६

झगड़ा

आम गाहकों के बड़े कमरे में कुछ गठीले बदन के लाल मूंछोंवाले एक नाटे-से सज्जन ग़ैर-फ़ौजी पोशाक पहने एक छोटी-सी मेज़ पर बैठे खाना खा रहे थे। उनके पास ही लंबे क़द के काले बालोंवाले एक साहब बैठे थे जिनके मूंछें नहीं थीं। दोनों फ़्रांसीसी में बातें कर रहे

थे। उनकी नजरों से मैं संकोच में पड़ गया, लेकिन इसके बावजूद मैंने अपनी सिगरेट उनके सामने रखी हुई मोमवत्ती से जलाने का फ़ैसला किया। उनकी घूरती हुई आंखों से आंखें मिलाने से बचने के लिए इधर-उधर देखते हुए मैंने मेज के पास जाकर सिगरेट मोमबत्ती की लौ से लगा दी। जब सिगरेट अच्छी तरह सुलग गयी तो बरबस मेरी नज़र उन सज्जन की ओर गयी जो खाना खा रहे थे और मैंने देखा कि वह द्वेष के भाव मे मुझे अपनी भूरी आंखों से देख रहे थे। जैसे ही मैं मुड़नेवाला था उनकी मूंछ फड़की और उन्होंने फ़्रांसीसी में कहा:

"जनाब, जब मैं खाना खा रहा होता हूं उस वक़्त मुझे किसी का सिगरेट पीना पसंद नहीं।"

मैंने बुदबुदाकर कुछ उल्टा-सीधा जवाब दे दिया।

"नहीं, जनाब, मुझे यह बात बिल्कुल पसंद नहीं," वह मूंछोंवाले सज्जन बिना मूंछोंवाले सज्जन पर जल्दी से इस तरह एक नज़र डालकर कठोर स्वर में अपनी बात कहते रहे मानो जिस ढंग से वह मेरा दिमाग़ ठिकाने लगानेवाले थे उसकी प्रशंसा करने का न्योता दे रहे हों। "और न ही मुझे वे लोग पसंद हैं जो इतने गुस्ताख़ होते हैं, जनाब, कि आकर दूसरों की नाक में धुआं छोड़ते हैं; मुझे इस क़िस्म के लोग बिल्कुल पसंद नहीं हैं।" मैं फ़ौरन समझ गया कि वह सज्जन मुझे लताड़ रहे थे, पर शुरू में मुझे ऐसा लगा कि मैं उनके सामने क़सूरवार हूं।

"मैं नहीं समझता था कि इससे आपको कोई तकलीफ़ होगी," मैंने कहा।

"अरे, समझा तो आपने यह भी नहीं होगा कि आप बदतमीज़ हैं, लेकिन मैंने समझा था!" वह सज्जन चिल्लाकर बोले।

"आपको मुझ पर इस तरह चिल्लाने का क्या हक़ है?" मैंने यह महसूस करके उनसे पूछा कि वह मेरा अपमान कर रहे थे, और मुझे खुद गुस्सा आने लगा था।

"मुझे हक़ यह है कि मैं किसी को अपने साथ गुस्ताख़ी नहीं करने देता; और आपके जैसे नौजवानों को मैं हमेशा तमीज़ से पेश आना सिखाता रहूंगा। आपका नाम क्या है, जनाब, और आप रहते कहां हैं?"

मुझे बेहद गुस्सा आया, मेरे होंट कांपने लगे, और मेरी सांस रुकने लगी। फिर भी न जाने क्यों मैं अपने आपको अपराधी समझ रहा था, शायद इसलिए कि मैंने इतनी ज़्यादा शैम्पेन पी ली थी और शायद इसीलिए मैंने उन सज्जन के प्रति कोई अपमानजनक बात नहीं कही, बल्कि इसके विपरीत मेरे होंटों से अत्यंत विनीत स्वर में मेरा नाम और पता निकला।

"मेरा नाम कोल्पिकोव है, जनाब; और आप आइंदा ज़्यादा तमीज़ से पेश आइये। आपसे फिर मुलाक़ात होगी (vous aurez de mes nouvelles)," उन्होंने अपनी बात ख़त्म करते हुए फ़्रांसीसी में कहा, क्योंकि सारी बातचीत फ़्रांसीसी में हुई थी।

"मुझे बहुत ख़ुशी होगी," अपनी आवाज़ में ज़्यादा से ज़्यादा मज़बूती लाने की कोशिश करते हुए मैंने बस इतना कहा, पीछे मुड़ा और अपनी सिगरेट लिये हुए जो इतनी देर में बुझ गयी थी, अपने कमरे में चला गया।

मैंने न अपने भाई को बताया कि क्या हुआ था न अपने दोस्तों को (इसलिए और भी कि उनके बीच गरमागरम बहस चल रही थी), बल्कि एक कोने में बैठकर उस विचित्र घटना के बारे में सोचने लगा। उनके वे शब्द "आप बदतमीज़ हैं, जनाब" (un mal élevé, monsieur) मेरे कानों में गूंजते रहे और मुझे और ज़्यादा ताव आता रहा। मेरा नशा अब तक बिल्कुल उतर चुका था, और इस मामले में अपने आचरण पर ग़ौर करते हुए मेरे मन में यह भयानक विचार उठा कि मैंने कायरों जैसी हरकत की थी। "उसे मुझ पर चोट करने का क्या हक़ था? उसने सीधे-सीधे बस इतना ही क्यों नहीं कह दिया कि मेरे सिगरेट जलाने की वजह से उसे परेशानी हो रही थी। यक़ीनन, ग़लती उसी की रही होगी। तो फिर जब उसने कहा था कि मैं बदतमीज़ था तो मैंने पलटकर उससे क्यों नहीं कहा, 'जनाब, बदतमीज़ वह होता है जो रूखा होता है'; या मैं सीधे-सीधे यह क्यों नहीं चिल्लाया, 'चुप रहो!' यह बहुत ही अच्छा होता। या मैंने उसे आमने-सामने लड़कर निबट लेने की चुनौती क्यों नहीं दी? नहीं, मैंने यह सब कुछ नहीं किया, बल्कि निरे कायर की तरह चुपचाप सारा अपमान सह लिया। "आप बदतमीज़ हैं, जनाब," ये शब्द लगातार मेरे कानों

मे गूजते रहे और मेरी झुंझलाहट बढ़ाते रहे। "नहीं, मैं इस मामले को यहीं ख़त्म नहीं हो जाने दूंगा," मैंने सोचा और अपने मन में यह ठानकर उठा कि मैं उन सज्जन के पास जाऊंगा और उनसे कोई बहुत बुरी बात कहूंगा, या अगर मुझे ठीक जंचा तो शायद उनके सिर पर मोमबत्ती ही मार दूं। मैं इस आख़िरी इरादे के बारे में मन ही मन बहुत ख़ुश होकर सोचता रहा, लेकिन जब मैंने आम गाहकों के बड़े कमरे मे फिर क़दम रखा तो मेरा दिल डर के मारे ज़ोर से धड़क रहा था।

सौभाग्यवश, कोल्पिकोव अब वहां नहीं थे, बल्कि सिर्फ़ एक वेटर मेज़ साफ़ कर रहा था। मैं वेटर को बताना चाहता था कि हुआ क्या था, और उसे समझा देना चाहता था कि उसमें मेरा क़सूर बिल्कुल नहीं था, लेकिन किसी वजह से मैंने अपना इरादा बदल दिया, और बेहद उदास मन से अपने कमरे में वापस चला गया।

"हमारे डिप्लोमैट को हो क्या गया है?" दुबकोव ने कहा, "शायद वह इस वक़्त योरप की क़िस्मत का फ़ैसला कर रहा है।"

"बस, मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो," मैंने मुंह फेरते हुए चिढ़कर कहा। फिर, कमरे में इधर-उधर टहलते हुए मैं न जाने क्यों सोचने लगा कि दुबकोव बिल्कुल अच्छा आदमी नहीं है। "और जहां तक उसके हमेशा मजाक करते रहने का, और मेरा नाम 'डिप्लोमैट' रख देने का सवाल है तो इनमें कोई भलमनसाहत की बात नहीं है। वह तो बस इसी फ़िक्र में रहता है कि वोलोद्या से पैसे जीत ले, और किसी चाची के यहां चला जाये।... और उसमें कोई ख़ुशी पहुंचानेवाली बात नहीं है। हर बात जो वह कहता है, वह या तो झूठ होती है या घिसी-पिटी होती है, और वह हमेशा किसी दूसरे का मज़ाक उड़ाकर हंसता रहता है। मुझे लगता है कि वह सरासर बेवक़ूफ़ है, और साथ ही बुरा आदमी भी है।" मैं पांच मिनट तक इन्हीं विचारों में डूबा रहा, और दुबकोव के प्रति न जाने क्यों अधिकाधिक द्वेष महसूस करता रहा। जहां तक दुबकोव का सवाल था, उसने मेरी ओर कोई ध्यान नहीं दिया, और इससे मुझे और भी गुस्सा आया। मैं वोलोद्या और द्मित्री से चिढ़ तक गया कि वे उससे बात क्यों कर रहे थे।

"जानते हो, दोस्तो? हमें डिप्लोमैट के ऊपर पानी डाल देना चाहिये," दुबकोव ने मुझे ऐसी मुस्कराहट के साथ देखकर अचानक कहा जो मुझे न केवल चिढ़ानेवाली बल्कि विश्वासघातक भी लगी, "उसकी हालत बहुत पतली है! क़सम से, उसकी हालत बहुत ही ख़राब है!"

"आपको पानी में ग़ोता देने की ज़रूरत है, आपकी हालत ख़ुद बहुत ख़राब है," मैंने दुष्टता से मुस्कराते हुए पलटकर जवाब दिया, मुझे इस बात का भी ध्यान नहीं रहा कि मैं इससे पहले उसे तुम कहने लगा था।

यह जवाब सुनकर दुबकोव दंग रह गया होगा; लेकिन उसने बड़ी लापरवाही से मेरी ओर से मुंह फेर लिया और वोलोद्या और द्मित्री से बातें करता रहा।

मैं बातचीत में शरीक होने की कोशिश करता, लेकिन मैंने महसूस किया कि मैं यह नाटक हरगिज़ नहीं कर पाऊंगा, इसलिए मैं एक बार फिर अपने कोने में सिमट गया, जहां मैं घर जाने के वक़्त तक वैसे ही बैठा रहा।

बिल चुकाकर जब हम लोग अपने ओवरकोट पहन रहे थे तब दुबकोव ने द्मित्री से कहा:

"अच्छा, तो आरैस्तीस और पाइलेडीस* कहां जा रहे हैं? शायद, प्रेम के बारे में बातें करने घर। अच्छा, तो हम चले अपनी प्यारी चाची से मिलने – तुम लोगों की फीकी दोस्ती की तुलना में तो वहां ज़्यादा ही मज़ा आयेगा।"

"आपको क्या अधिकार है कि इस तरह की बातें करें और हम लोगों का मज़ाक़ उड़ाएं?" हवा में हाथ चलाते हुए मैं उसके बिल्कुल पास जाकर उस पर बरस पड़ा। "जिन भावनाओं को आप समझते नहीं उनकी हंसी उड़ाने का आपको क्या अधिकार है? मैं इसे बर्दाश्त नहीं करूंगा। ज़बान पर लगाम लगाकर रखिये!" मैं चिल्लाया और चुप हो गया, क्योंकि मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि अब इसके बाद क्या कहूं और उत्तेजना के मारे मेरी सांस रुकने लगी थी। दुबकोव

---

* यूनानी पौराणिक कथाओं के दो गहरे मित्र। अनु०

पहले तो सकपका गया; फिर उसने मुस्कराकर इस बात को मज़ाक़ में टाल देने की कोशिश की; लेकिन आखिरकार मुझे बेहद ताज्जुब इस बात पर हुआ कि उसने डरकर आंखें नीची कर लीं।

"मैं आप और आपकी भावनाओं पर बिल्कुल नहीं हंस रहा हूं; मैं बोलता ही ऐसे हूं," उसने बात को टालते हुए कहा।

"यही तो बात है," मैंने चिल्लाकर कहा, लेकिन उसी क्षण मैं अपने आपसे शर्मिंदा भी था और मुझे दुबकोव से हमदर्दी भी हो रही थी, जिसके तमतमाये हुए संकुचित चेहरे से सचमुच दुख टपक रहा था।

"तुम्हें हो क्या गया है?" वोलोद्या और द्मित्री ने एक साथ पूछा। "तुम्हारा अपमान तो कोई भी नहीं कर रहा था।"

"नहीं, यह मेरा अपमान करना चाहता था।"

"तुम्हारा भाई तो बड़ा बेढब बंदा है," दुबकोव ने बाहर जाते-जाते कहा, ताकि जो कुछ मैं कहूं वह उसे सुनना न पड़े।

मुमकिन था कि मैं उसके पीछे झपटकर जाता और इससे भी ज़्यादा गुस्ताख़ी की बातें कहता; लेकिन उसी वक़्त उस वेटर ने, जो कोल्पिकोव के साथ मेरी झड़प के वक़्त वहां पर मौजूद था, मुझे मेरा कोट लाकर दिया और मैं फ़ौरन शांत हो गया और द्मित्री के सामने बस उतना ही गुस्सा दिखाने का ढोंग करता रहा जितना कि इस बात के लिए अनिवार्य था कि मेरा अचानक शांत हो जाना उसे अजीब न लगे। अगले दिन दुबकोव की और मेरी मुलाक़ात वोलोद्या के कमरे में हुई। न मैंने उस घटना का कोई उल्लेख किया न उसने, फिर भी एक-दूसरे को "आप" कहकर संबोधित करते रहे; हम लोगों के लिए एक-दूसरे से आंख मिलाना हमेशा से अधिक कठिन मालूम हो रहा था।

कोल्पिकोव के साथ मेरे झगड़े की याद, जिसने मुझे de ses nouvelles* न उस दिन दिया और न बाद में कभी, बरसों मेरे मन पर एक भयानक बोझ बनी रही और बिल्कुल स्पष्ट चित्र की तरह मेरी आंखों के सामने घूमती रही। पूरे पांच साल बाद

---

* खुद अपना समाचार। (फ़्रांसीसी)

भी जब मुझे उस अपमान की याद आती थी, जिसका बदला नहीं लिया गया था, तो मैं तिलमिला उठता था और चीख पड़ता था, और बड़े आत्म-संतोष के साथ अपने आपको इस बात की याद दिलाकर तसल्ली देता था कि बाद में दुबकोव के साथ अपनी झड़प में मैंने कैसी मर्दानगी का सबूत दिया था। बहुत बाद में जाकर मैं इस पूरे मामले को बिल्कुल ही दूसरी नज़र से देखने लगा और कोल्पिकोव के साथ अपने झगड़े की याद आने पर मुझे हंसी आती थी, और मुझे इस बात पर अफ़सोस होता था कि मैंने अकारण ही उस नेक बंदे दुबकोव पर चोट की थी।

उसी दिन शाम को जब मैंने द्मित्री को कोल्पिकोव के साथ अपने झगड़े का ब्योरा सुनाया, जिसका हुलिया मैंने उसके सामने पूरे विस्तार के साथ बयान किया था, तो उसे बहुत ताज्जुब हुआ।

"अरे, यह तो वही आदमी है!" उसने कहा। "कमाल हो गया! वह कोल्पिकोव तो छंटा हुआ बदमाश और पत्तेबाज़ है, लेकिन सबसे बढ़कर वह कायर है, जिसे उसकी रेजिमेंट से इसलिए निकाल दिया गया था कि किसी ने उसके मुंह पर तमाचा मार दिया था और वह उससे लड़ने को तैयार नहीं हुआ था। उसमें इतनी बहादुरी आयी कहां से?" द्मित्री ने बड़ी नेकी से मुस्कराते हुए मुझ पर एक नज़र डालकर कहा। "तो उसने 'बदतमीज़' से ज़्यादा कुछ नहीं कहा?"

"नहीं," मैंने जवाब दिया और मेरा चेहरा लाल हो गया।

"ख़ैर, हुआ तो बुरा, लेकिन कोई ज़्यादा नुक़सान नहीं हुआ," द्मित्री ने मुझे तसल्ली देते हुए कहा।

बहुत बाद में जाकर जब मैंने इस पूरे कांड पर शांत भाव से विचार किया तो मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि बिल्कुल मुमकिन है कि उस सफ़ाचट मूंछों और काले बालोंवाले आदमी के सामने कोल्पिकोव ने इस मौक़े का फ़ायदा मुझसे उस तमाचे का बदला लेने के लिए उठाया हो जो उसे मारा गया था, ठीक उसी तरह जैसे मैंने उसके "बदतमीज़" कहने का बदला फ़ौरन दुबकोव से लिया था।

22-915

अध्याय १७

कुछ लोगों से मिलने की तैयारी

अगले दिन सोकर उठते ही सबसे पहले मुझे कोल्पिकोव के साथ अपनी झड़प का ध्यान आया। एक बार फिर मन ही मन आह भरते हुए मैं कमरे में तेज़ी से इधर-उधर टहलने लगा, लेकिन मैं इस मामले के सिलसिले में कुछ कर नहीं सकता था; इसके अलावा वह मास्को में मेरा आख़िरी दिन था और पापा के आदेशानुसार मुझे कुछ लोगों से मिलना था जिनकी सूची उन्होंने खुद बनाकर मेरे लिए काग़ज़ पर लिख दी थी। पापा को हम लोगों की चिंता नैतिकता और ज्ञान के मामले में उतनी नहीं थी जितनी कि दुनियादारी के संबंधों के सिलसिले में थी। काग़ज़ पर उनकी नुकीली घसीट लिखाई में लिखा हुआ था: (१) प्रिंस इवान इवानिच से निश्चित रूप से; (२) ईविन-परिवार से निश्चित रूप से; (३) प्रिंस मिख़ाइलो से; (४) प्रिंसेस नेख़ल्यूदोवा और मादाम वलाख़ीना से अगर हो सके; और क्यूरेटर, रेक्टर और प्रोफ़ेसरों से तो मिलना ही था।

द्मित्री ने सूची के अंत में बताये गये लोगों से मिलने से मुझे निरुत्साह करते हुए कहा कि इन लोगों से मिलना न सिर्फ़ यह कि ज़रूरी नहीं था, बल्कि एक तरह से अनुचित भी होगा; लेकिन बाक़ी सारी मुलाक़ातें उसी दिन करनी थीं। इनमें से पहली दो मुलाक़ातों से, जिन्हें निश्चित रूप से किया जाना था, मुझे ख़ास तौर पर डर लगता था। प्रिंस इवान इवानिच जनरल थे, बूढ़े आदमी थे, रईस थे और अकेले थे; और इधर मैं था, सोलह साल का छात्र जिसे सीधे उनसे बातचीत वग़ैरह करनी थी, जिसके बारे में मुझे पूर्वाभास था कि वह मेरे लिए श्रेयस्कर नहीं हो सकती थी। ईविन-परिवार भी रईस था; उन लोगों के बाप भी ग़ैर-फ़ौजी जनरल थे और जब नानी ज़िंदा थीं उस ज़माने में बस एक बार वह हमारे घर आये थे। नानी के मरने के बाद मैंने देखा था कि ईविन-बंधुओं में से सबसे छोटा हम लोगों से कतराने लगा था, और ऐसा लगता था कि वह कुछ अकड़ने भी लगा था। सबसे बड़ा भाई, जैसा कि मैंने लोगों से सुना था, वकालत

पास कर चुका था, और सेंट पीटर्सबर्ग में किसी पद पर नियुक्त कर दिया गया था; दूसरा (सेर्गेई) भी, जिसका एक ज़माने में मैं बहुत बड़ा प्रशंसक था, सेंट पीटर्सबर्ग में था—अभिजातवर्गीय युवकों के लिए फ़ौजी स्कूल का लंबे-चौड़े डील-डौलवाला मोटा-सा कैडेट।

युवावस्था में सिर्फ़ यही बात नहीं थी कि उन लोगों से मिलना-जुलना मुझे नापसंद था जो अपने आपको मुझसे बढ़कर समझते थे, बल्कि उन लोगों के साथ संबंध मेरे लिए असह्य रूप से कष्टदायक थे, क्योंकि मुझे हरदम अपमान का डर लगा रहता था, और मुझे अपनी सारी मानसिक क्षमताएं अपने आपको इस तरह के लोगों से स्वतंत्र साबित करने की कोशिश में लगा देनी पड़ती थीं। लेकिन चूंकि मैं पापा के अंतिम आदेशों का पालन नहीं करनेवाला था, इसलिए मैंने सोचा कि पहले आदेश का पालन करके मैं मामले को ठीक-ठाक कर दूं। मैं अपने कमरे में इधर-उधर टहल रहा था, कुर्सियों पर फैले हुए अपने कपड़ों को, खंजर और अपनी हैट को देख रहा था और जानेवाला ही था कि इतने में बूढ़ा ग्रैप मुझे बधाई देने आया और अपने साथ इलेंका को भी लाया। बूढ़ा ग्रैप था तो जर्मन, पर पैदा रूस में ही हुआ था और उम्र भर यहीं रहा था; वह बर्दाश्त के बाहर हद तक चिकनी-चुपड़ी और खुशामद की बातें करता था, और अकसर नशे में धुत्त रहता था। वह हम लोगों के पास आम तौर पर कुछ न कुछ मांगने ही आता था, और हालांकि पापा कभी-कभी उसे अपने पढ़ने के कमरे में बुलाकर उसकी आवभगत करते थे, लेकिन उन्होंने उससे कभी हम लोगों के साथ खाना खाने को नहीं कहा था। उसकी विनम्रता और लगातार कुछ न कुछ मांगते रहने की आदत के साथ ही उसके स्वभाव में ऊपर से देखने में ऐसी भलमनसाहत थी और वह हमारे घर से इतनी अच्छी तरह परिचित था कि हर आदमी इसे उसका गुण समझता था कि उसे हम सब लोगों से इतना गहरा लगाव था; लेकिन न जाने क्यों वह मुझे कभी अच्छा नहीं लगा, और वह जब भी बोलता था तो मुझे उस पर शर्म आती थी।

इन मेहमानों के आने पर मैं बहुत नाराज़ था और मैंने अपनी इस नाराज़गी को छिपाने की भी कोई कोशिश नहीं की। इलेंका को तिरस्कार की दृष्टि से देखने का मैं इतना आदी हो गया था और इलेंका यह

समझने का भी आदी हो गया था कि हमारा ऐसा करना ठीक ही था, कि मुझे तो यह बात भी नापसंद थी कि वह भी मेरी तरह ही छात्र था। मुझे यह भी लगा कि इस बराबरी पर वह मेरे सामने कुछ लज्जित भी था। मैंने बड़ी रुखाई से उनका स्वागत किया और उनसे बैठने को भी नहीं कहा; मुझे ऐसा करते शर्म आ रही थी क्योंकि मेरा ख़्याल था कि वे मेरे कहे बिना ही बैठ जायेंगे; और मैंने घोड़ागाड़ी तैयार किये जाने का हुक्म दे दिया। इलेंका बहुत ही नेक, बहुत ही ईमानदार और बहुत ही होशियार नौजवान था, फिर भी वह कुछ सनकी स्वभाव का आदमी था। हमेशा बिना वजह वह किसी न किसी मनोदशा के उग्रतम रूप का शिकार होता रहता था: कभी रोने की झक सवार हो जाती, कभी हंसने की प्रवृत्ति उभर आती, फिर कभी वह ज़रा-सी बात पर बुरा मान जाता। और इस वक़्त ऐसा लग रहा था कि वह अपनी इसी आख़िरवाली मनोदशा में था। उसने कुछ कहा नहीं, नाराज़ होकर मुझ पर और अपने बाप पर नज़र डाली, और जब उसे संबोधित किया गया तभी वह लाचारी से ज़बर्दस्ती मुस्कराया, जिस मुस्कराहट की आड़ में वह अपनी भावनाओं को छिपाने का इतना आदी हो चुका था, ख़ास तौर पर अपने बाप पर लज्जित होने की भावना को, जो वह हम लोगों के सामने बरबस अनुभव करता था।

"तो, निकोलाई पेत्रोविच," बूढ़े ने कहा; जब मैं कपड़े बदल रहा था उस वक़्त वह कमरे में मेरे पीछे-पीछे लगा रहा और नानी ने नसवार की जो चांदी की डिबिया उसे दी थी उसको वह अपनी मोटी-मोटी उंगलियों में बड़े सम्मान की भावना के साथ धीरे-धीरे फिराता रहा; "जैसे ही मुझे बेटे से मालूम हुआ कि आप इम्तहान में बहुत अच्छे नंबरों से पास हो गये हैं—हालांकि यह बात भला किसे मालूम नहीं है कि आप बहुत होशियार हैं—वैसे ही मैं फ़ौरन आपको बधाई देने के लिए चल पड़ा। अरे, मैंने आपको कंधे पर बिठाकर कितना घुमाया है, और भगवान जानता है कि आपके घरवालों को मैं अपने सगों की तरह प्यार करता हूं; और इलेंका भी आपसे मिल लेने को कहता रहता था। उसे भी आप लोगों से इतना लगाव हो गया है।"

इस दौरान में इलेंका खिड़की के पास चुपचाप बैठा रहा; वह

मेरी तिकोनी टोपी को ध्यान से देखने में डूबा हुआ लग रहा था और दवे स्वर में ग़ुस्से से कुछ बुड़बुड़ा रहा था।

"अच्छा, मैं आपसे यह पूछना चाहता था, निकोलाई पेत्रोविच," बूढ़े ने अपनी बात जारी रखी, "क्या, मेरा इलेंका इम्तहान में अच्छे नंबरों से पास हुआ था? वह कहता है कि वह उसी विभाग में पढ़ेगा जिसमें आप हैं—तो मेहरबानी करके ज़रा उस पर नज़र रखियेगा और ज़रूरत पड़े तो उसे सलाह दे दीजियेगा।"

"क्यों, वह पास तो बहुत अच्छे नंबरों से हुआ था," मैंने इलेंका पर एक नज़र डालकर कहा; यह महसूस करके कि मैं उसे देख रहा हूं वह शरमा गया और उसने अपने होंट चलाना बंद कर दिये।

"क्या वह आज का दिन आपके यहां बिता सकता है?" बूढ़े ने इतनी सहमी हुई मुस्कराहट के साथ पूछा, मानो वह मुझसे बहुत डरता हो, और हरदम मैं जिधर जाता था वह मुझसे ऐसा चिपका रहता था कि शराब के भभके और तंबाकू की बू, जिनमें वह डूबा हुआ था, लगातार मुझे महसूस होती रहती थी। मुझे उससे झुंझलाहट हो रही थी कि उसने अपने बेटे के मामले में मुझे ऐसी दुबिधा में डाल दिया था, और इसलिए भी कि उसने मेरा ध्यान उस चीज़ की ओर से हटा दिया था जिसमें व्यस्त रहना मेरे लिए बहुत महत्वपूर्ण था—यानी, कपड़े पहनना; लेकिन सबसे बढ़कर मुझे तेज़ ब्रांडी की लगातार आती हुई उस बू से इतनी झुंझलाहट हो रही थी कि मैंने बड़े रूखेपन से कहा कि मैं इलेंका के साथ समय इसलिए नहीं बिता सकता कि मैं दिन-भर घर पर रहूंगा ही नहीं।

"लेकिन, पापा, आप तो बुआ जी के यहां चल रहे थे न," इलेंका ने मुस्कराते हुए मेरी ओर देखे बिना कहा, "और फिर मुझे कुछ काम भी निबटाना है।" मुझे और भी झुंझलाहट हुई और मुझे कुछ खेद भी हुआ, इसलिए अपने इंकार पर लीपा-पोती करने के लिए मैंने जल्दी से उन्हें बताया कि मैं घर पर इसलिए नहीं रहूंगा कि मुझे प्रिंस इवान इवानिच, और प्रिंसेस कोर्नाकोवा और ईविन से भी मिलने जाना है, जो इतने ऊंचे ओहदे पर हैं, और यह कि शायद मैं खाना प्रिंसेस नेख़ल्यूदोवा के साथ खाऊंगा। मैंने सोचा था कि जब उन लोगों को मालूम होगा कि मैं कैसे-कैसे बड़े लोगों के यहां जा रहा हूं तो

वे ख़ुद मुझ पर कोई हक़ नहीं जतायेंगे। जब वे लोग जाने को तैयार हुए तो मैंने इलेंका से फिर आने को कहा; लेकिन इलेंका ने सिर्फ़ बुदबुदाकर कुछ कहा, और ज़बर्दस्ती की हंसी हंस दिया। यह स्पष्ट था कि वह फिर कभी मेरी चौखट के अंदर पांव रखनेवाला नहीं था।

उनके चले जाने के बाद मैं अपनी मुलाक़ातों के लिए निकल पड़ा। उस दिन सवेरे मैंने वोलोद्या से साथ चलने को कहा था ताकि मुझे उतनी अटपट न लगे जितना कि अकेले जाने पर लगता, लेकिन उसने यह बहाना बनाकर इंकार कर दिया था कि यह अत्यधिक भावुकता होगी कि दो भाई एक ही घोड़ागाड़ी पर बैठकर इधर-उधर घूमें।

अध्याय १८

वलाख़ीन-परिवार

इसलिए मैं अकेला ही चल पड़ा। इस पूरे चक्कर में सबसे पहले मुझे सिवत्सेव व्राजेक सड़क पर वलाखीन-परिवार के यहां जाना था। मैं सोनेच्का से तीन साल से नहीं मिला था, और ज़ाहिर है कि उसके प्रति मेरा प्यार न जाने कब का एक बीती हुई बात बनकर रह गया था; फिर भी मेरे दिल में कहीं बचपन के उस भूले-बिसरे प्यार की मर्मस्पर्शी याद की चिंगारी सुलग रही थी। इन तीन वर्षों के दौरान कभी-कभी उसकी याद मुझे इतने प्रबल और इतने स्पष्ट रूप से आयी थी कि मैंने आंसू बहाये थे और मुझे ऐसा लगा था जैसे मुझे फिर से प्यार हो गया है; लेकिन ऐसी हालत केवल कुछ ही मिनट तक रहती थी और फिर दुबारा वैसी हालत बहुत दिन बाद पैदा होती थी।

मैं जानता था कि सोनेच्का अपनी मां के साथ विदेश हो आयी थी, जहां वे दो साल रही थीं, और जहां, कहा जाता था, वे घोड़ागाड़ी की दुर्घटना का शिकार हो गयी थीं और सोनेच्का का चेहरा कांच से बुरी तरह कट गया था, जिसकी वजह से उसकी ख़ूबसूरती बहुत बड़ी हद तक जाती रही थी। उनके घर की ओर जाते हुए मुझे

पहलेवाली सोनेच्का की सूरत विल्कुल साफ़ याद आती रही, और मैं सोचता रहा कि इस वार वह देखने में कैसी लगेगी। मैं कल्पना कर रहा था कि दो साल विदेश में रहने के वाद वह न जाने क्यों वहुत लंवी हो गयी होगी, कमर पतली हो गयी होगी, उसमें गंभीरता और गरिमा आ गयी होगी, लेकिन वह वहुत आकर्षक हो गयी होगी। मेरी कल्पना ने उसके ऐसे चित्र बनाने से इंकार कर दिया जिनमें उसका चेहरा घावों के निशानों से विकृत हो गया हो; इसके विपरीत, मैंने कहीं एक ऐसे सच्चे प्रेमी के वारे में सुन रखा था जो अपनी प्रेयसी का चेहरा चेचक से कुरूप हो जाने के वावजूद उसके प्रति निष्ठावान रहा था, इसलिए मैंने भी यह सोचने की कोशिश की कि मुझे सोनेच्का से प्रेम था, ताकि मुझे इस वात का श्रेय मिल सके कि उसके घावों के निशानों के वावजूद मैं उसके साथ सच्चा प्यार निभाता रहा था। सच तो यह है कि जव मैं वलाखीन-परिवार के घर पहुंचा उस समय मुझे प्रेम नहीं था, लेकिन प्रेम की पुरानी स्मृतियों को छेड़ देने के वाद मैं प्रेमपाश में फंस जाने को विल्कुल तैयार था, और ऐसा करने को मेरा बहुत जी चाह रहा था, इसलिए और भी कि अपने उन सभी प्रेमग्रस्त मित्रों से मुझे शर्म आती थी कि इस मामले में मैं उनसे इतना पीछे रह गया था।

वलाख़ीन-परिवार लकड़ी के एक छोटे-से साफ़-सुथरे मकान में रहता था, जिसका प्रवेश-द्वार पीछे अहाते में से था। घंटी वजाने पर, जो उस ज़माने में मास्को में किसी-किसी के यहां ही होती थी, एक बहुत ही छोटे-से, साफ़-सुथरे कपड़े पहने हुए लड़के ने दरवाज़ा खोला। वह या तो मेरी वात समझा नहीं, या वह मुझे वताना नहीं चाहता था कि मालिक घर पर था या नहीं; और मुझे अंधेरी ड्योढ़ी में छोड़कर वह और भी अंधेरे गलियारे में भाग गया।

मैं काफ़ी देर तक उस अंधेरी कोठरी में खड़ा रहा, जिसमें प्रवेश-द्वार और गलियारे के अलावा एक वंद दरवाज़ा और था; एक ओर तो मैं इस घर के अंधकारमय स्वरूप पर आश्चर्य कर रहा था, और दूसरी ओर मन ही मन यह सोच रहा था कि जो लोग विदेश हो आते हैं उनका यही हाल होता होगा। पांच मिनट वाद उसी लड़के ने हॉल का दरवाज़ा अंदर से खोला, और वह मुझे ड्राइंग-रूम में ले गया,

जो साफ़-सुथरा तो था लेकिन जिसका फ़र्नीचर वग़ैरह बहुत बढ़िया नहीं था; मेरे पीछे-पीछे सोनेच्का वहां आयी।

वह सत्रह साल की थी। उसका क़द नाटा था, वह बहुत दुबली-पतली थी और उसके चेहरे की रंगत बीमारों जैसी पीली थी। उसके चेहरे पर घाव के कोई निशान दिखायी नहीं दे रहे थे, और उसकी जादू-भरी कुछ उभरी हुई आंखें, और उसकी खिली हुई, सद्भावनापूर्ण, उल्लास-भरी मुस्कराहट वैसी ही थीं जैसी कि मैंने बचपन में देखी थीं और जिनसे मैंने प्यार किया था। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि वह ऐसी होगी, इसलिए मैं उस पर वे भावनाएं लुटा नहीं सका जिनकी तैयारी मैंने रास्ते में की थी। उसने अंग्रेज़ी परंपरा के अनुसार मेरी ओर अपना हाथ बढ़ा दिया, जो उस ज़माने में वैसी ही अनोखी बात थी जैसी कि दरवाज़े पर घंटी, बड़े तपाक से मुझसे हाथ मिलाया और मुझे अपने पास सोफ़े पर बिठाया।

"ओह, माई डियर Nicolas", तुम नहीं जानते कि तुम्हें देखकर मुझे कितनी ख़ुशी हुई," उसने मेरे चेहरे पर अपनी नज़रें गड़ाकर कहा, जिनमें सच्ची ख़ुशी का ऐसा निष्कपट भाव था कि मैंने देखा कि उसने "माई डियर Nicolas" मित्रता के भाव से कहा था, न कि सरपरस्ती के अंदाज़ से। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि विदेश हो आने के बाद उसके अंदाज़ में पहले से ज़्यादा सादगी, अपनापन और स्वाभाविकता आ गयी थी। मैंने देखा कि उसकी नाक के पास और माथे पर घाव के दो छोटे-छोटे निशान थे; लेकिन उसकी लाजवाब आंखें और मुस्कराहट वैसी ही थीं जैसी कि मुझे याद थीं, और उनमें पहले जैसी ही चमक थी।

"तुम कितना बदल गये हो!" उसने कहा। "तुम अब बहुत बड़े हो गये हो। हां, और मैं – मेरे बारे में क्या ख़्याल है तुम्हारा?"

"अरे, मैं तो तुम्हें पहचान भी न पाता," मैंने जवाब दिया, हालांकि उसी समय मैं सोच रहा था कि मैं उसे कहीं भी पहचान लेता। मैं अपने आपको फिर उसी निश्चिंत उल्लसित मनोदशा में अनुभव करने लगा जिसमें आज से पांच साल पहले नानी के जन्मदिन की पार्टी में उसके साथ "बूढ़े बाबा" का नाच नाचा था।

"क्यों, क्या मैं बहुत बदसूरत हो गयी हूं?" उसने अपना सिर हिलाते हुए पूछा।

"नहीं, बिल्कुल नहीं; तुम थोड़ी-सी बढ़ गयी हो, पहले से बड़ी हो गयी हो," मैंने जल्दी से जवाब दिया, "लेकिन, इसके बरख़िलाफ़... तुम पहले से कुछ ज़्यादा ही..."

"अच्छा, कोई बात नहीं, तुम्हें हमारे नाच याद हैं, हमारे खेल, St.-Jérôme, madame Dorat? (मुझे किसी madame Dorat की याद नहीं थी; ज़ाहिर है कि सोनेच्का अपने बचपन की सुखद यादों के प्रवाह में ऐसी बह गयी थी कि वह उन्हें आपस में मिलाये दे रही थी।) "अरे, वह भी क्या ज़माना था!" वह अपनी बात कहती रही और वही मुस्कराहट, बल्कि जो मुस्कराहट मेरी स्मृति में सुरक्षित थी उससे भी सुंदर, और वही ख़ूबसूरत आंखें मेरी नज़रों के सामने चमकती रहीं। जिस समय वह बोल रही थी उसके दौरान मैं उस स्थिति को समझ लेने में सफल हो गया था जिसमें मैंने अपने आपको उस समय पाया था, और मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि उस क्षण मुझे प्रेम हो गया था। जैसे ही इसके बारे में मैंने अपना मन पक्का किया, वैसे ही मेरी उल्लसित, निश्चिंत मनोदशा लुप्त हो गयी, ऐसा लगा जैसे मेरे सामने कुहरा-सा उभर रहा है, जिसकी आड़ में उसकी आंखें और उसकी मुस्कराहट तक छिप गयी है, मैं किसी बात पर लज्जित अनुभव करने लगा, मेरी ज़बान पर ताला लग गया, और मेरा चेहरा लाल हो गया।

"ज़माना बदल गया है," उसने आह भरकर अपनी भवों को कुछ ऊपर उठाते हुए कहा, "हर चीज़ पहले से ज़्यादा बुरी लगने लगी है, और हम लोग भी बदतर हो गये हैं, हो गये हैं न, Nicolas?"

मैं कोई जवाब न दे सका, और चुपचाप उसे घूरता रहा।

"अब वे सारे ईविन और कोर्नाकोव कहां गये? तुम्हें याद है न?" वह मेरे लाल और डरे हुए चेहरे को कुछ कौतूहल से देखकर कहती रही, "वह भी कैसा शानदार ज़माना था!"

और अब भी मैं कोई जवाब न दे सका।

मादाम वलाख़ीना के आ जाने से कुछ समय के लिए मैं इस संकट से छुटकारा पा गया। मैं उठा, झुककर सलाम किया, और मेरी खोयी

हुई आवाज मुझे वापस मिल गयी; दूसरी ओर, मां के आते ही सोनेच्का में एक विचित्र परिवर्तन हो गया। उसकी सारी हंसी-खुशी और उसका मित्रता का भाव अचानक ग़ायब हो गया, उसकी मुस्कराहट तक बदल गयी; और सहसा, लंबे क़द को छोड़कर वह वही विदेश से लौटी हुई नवयुवती बन गयी जिसकी मैंने उसके सिलसिले में कल्पना की थी। ऐसा लग रहा था जैसे इस परिवर्तन की कोई वजह नहीं थी क्योंकि उसकी मां उतनी ही खुशमिज़ाजी से मुस्करा रही थीं और उनके हर अंदाज़ से वही पहले जैसी कोमलता व्यक्त हो रही थी। वलाख़ीना एक बड़ी-सी आराम कुर्सी पर बैठ गयीं, और अपने पास ही एक जगह की ओर इशारा करके मुझसे वहां बैठने को कहा। उन्होंने अपनी बेटी से अंग्रेज़ी में कुछ कहा, और सोनेच्का फ़ौरन कमरे से चली गयी, जिससे मुझे और ज़्यादा राहत मिली। वलाख़ीना ने मेरे रिश्तेदारों की, भाई की, बाप की ख़ैरियत पूछी, और फिर मुझे अपना दुखड़ा – अपने पति की मृत्यु के बारे में – सुनाया, और आख़िरकार यह महसूस करके कि अब मुझसे कहने को कुछ नहीं रह गया है उन्होंने चुपचाप मुझे इस तरह देखा मानो कह रही हों, "अच्छा, अगर अब तुम उठ खड़े हो और विदा लो और यहां से चले जाओ तो बड़ा अच्छा करो।" लेकिन मेरे साथ एक विचित्र बात हुई। सोनेच्का अपना काम लेकर वापस आ गयी थी और एक कोने में बैठ गयी थी; मैं महसूस कर रहा था कि उसकी नज़रें मुझ पर जमी हुई हैं। जिस समय वलाख़ीना अपने पति की मृत्यु के बारे में बता रही थीं उस समय मुझे एक बार फिर याद आया था कि मुझे प्यार हो गया था, और मैं सोच रहा था कि शायद मां ने भी इस बात को भांप लिया है; और मेरे ऊपर शर्मीलेपन का एक और ऐसा ज़बर्दस्त दौरा पड़ा कि मैं अपने हाथ-पांव भी स्वाभाविक ढंग से हिलाने-डुलाने में असमर्थ हो गया। मैं जानता था कि उठकर वहां से चले जाने के लिए मुझे सोचना पड़ेगा कि अपना पांव कहां रखूं, अपने सिर का क्या करूं और अपने हाथ का क्या करूं; सारांश यह कि मैं बिल्कुल वैसा ही महसूस कर रहा था जैसा कि पिछली रात आधी बोतल शैम्पेन पीने के बाद कर रहा था। मुझे पहले से ही यह विश्वास हो चला था कि यह सब करने में मुझे सफलता नहीं मिलेगी और इसलिए मैं उठा नहीं और असल

में मैं उठ पाता भी नहीं। मेरा तमतमाया हुआ लाल चेहरा और मेरी बिल्कुल ही हिल-डुल न सकने की हालत देखकर शायद वलाख़ीना को ताज्जुब हुआ होगा; लेकिन मैंने फ़ैसला किया कि अटपटे तरीक़े से उठने और वहां से चले जाने का जोखिम मोल लेने से अच्छा तो यही था कि मैं मूर्खों जैसी उसी मुद्रा में चुपचाप बैठा रहूं। मैं बड़ी देर तक उसी तरह बैठा उम्मीद करता रहा कि कोई अप्रत्याशित परिस्थिति मुझे उस हालत से उबार लेगी। यह परिस्थिति एक नगण्य नौजवान के रूप में सामने आयी, जिसने घर के एक आदमी के अंदाज़ से कमरे में प्रवेश किया और बड़ी शिष्टता से झुककर मुझे सलाम किया। वलाख़ीना माफ़ी मांगते हुए उठ खड़ी हुई और बोलीं कि उन्हें अपने *homme d'affaires** से बात करनी थी, और उन्होंने मुझे आश्चर्य के इस भाव से देखा मानो कह रही हों, "अगर तुम्हारा इरादा वहीं हमेशा बैठे रहने का है तो बैठे रहो – मैं तुम्हें घर से निकाल नहीं रही हूं।" किसी न किसी तरह बड़ी कोशिश करके मैं उठा लेकिन अब मेरी हालत ऐसी नहीं रह गयी थी कि शिष्टाचार के नाते भी झुक सकूं, और मां-बेटी की तरस खाती हुई नज़रों से घिरा जब मैं बाहर जा रहा था तो एक कुर्सी से टकरा गया जो मेरे रास्ते में भी नहीं थी; मैं उससे सिर्फ़ इसलिए टकरा गया कि मेरा सारा ध्यान इस बात की ओर लगा हुआ था कि मैं कहीं अपने पांव के नीचे के क़ालीन पर न लड़खड़ा जाऊं। लेकिन खुली हवा में थोड़ी देर गाड़ी पर कसमसाने और इतने ज़ोर से कुछ बुड़बुड़ाने के बाद कि कुज़्मा तक ने कई बार मुझसे पूछा, "जी, सरकार?" यह भावना ग़ायब हो गयी और मैं सोनेच्का के प्रति अपने प्रेम के बारे में और अपनी मां के प्रति सोनेच्का के रवैये के बारे में शांति से सोचने लगा, जो मुझे कुछ अनोखा-सा लगा। बाद में जब मैंने अपनी राय अपने पापा को बतायी – कि मादाम वलाख़ीना और उनकी बेटी की आपस में बनती नहीं है – तो उन्होंने कहा:

"हां, अपनी कंजूसी की वजह से उन्होंने उस बेचारी लड़की की ज़िंदगी मुसीबत बना रखी है; और यह बहुत ही अजीब बात मालूम होती है," उन्होंने इतना और जोड़ दिया और यह कहते हुए उनका

---

* सेक्रेटरी, मैनेजर, प्रबंधक। (फ़्रांसीसी)

भाव उससे अधिक प्रबल था जितना कि केवल एक रिश्तेदार के प्रति उनका हो सकता था। "कितनी दिलकश और मीठे स्वभाव की औरत हुआ करती थीं वह। समझ में नहीं आता कि वह इतना बदल क्यों गयीं। तुमने वहां किसी सेक्रेटरी को तो नहीं देखा? यह भी कहां का फ़ैशन निकला है कि रूसी महिलाएं सेक्रेटरी रखने लगीं?" उन्होंने गुस्से से मुझसे दूर हटते हुए कहा।

"देखा तो था," मैंने कहा।

"अच्छा, वह कम से कम देखने में ख़ूबसूरत तो है?"

"नहीं, बिल्कुल नहीं!"

"बात कुछ समझ में नहीं आती," पापा ने खांसकर और झुंझलाकर कंधा बिचकाते हुए कहा।

"मुझे भी तो प्यार हो गया है," अपनी घोड़ागाड़ी पर जाते हुए मैं सोच रहा था।

अध्याय १६

कोर्नाकोव-परिवार

इस गश्त में दूसरी मुलाक़ात के लिए मुझे कोर्नाकोव-परिवार के यहां जाना था। ये लोग अरबात में एक बड़े-से घर की पहली मंज़िल पर रहते थे। घर के अंदर सीढ़ियां बहुत सजावटी और साफ़-सुथरी थीं, लेकिन बहुत आलीशान नहीं थीं–उन पर पॉलिश की हुई पीतल की छड़ों की मदद से दरी जड़ी हुई थी; लेकिन न तो कोई फूल थे और न आईने। ड्राइंग-रूम तक पहुंचने के लिए मुझे हॉल के चमकदार फ़र्श को पार करके जाना पड़ा; उसकी सजावट में भी कोई तड़क-भड़क नहीं थी, हर चीज़ नीरस और साफ़-सुथरे ढंग से व्यवस्थित थी, हर चीज चमक रही थी और काफ़ी टिकाऊ मालूम होती थी, हालांकि नयी बिल्कुल नहीं थी, लेकिन कहीं भी कोई तस्वीरें, पर्दे या सजावट की कोई दूसरी चीज़ दिखायी नहीं दे रही थी। प्रिंसेस की कुछ बेटियां ड्राइंग-रूम में थीं। वे वैसे ही किसी काम

में व्यस्त हुए विना इस तरह नपी-तुली मुद्राओं में वैठी थीं कि साफ़ मालूम हो रहा था कि जब तक कोई मेहमान आनेवाले नहीं होते थे तब तक वे इस तरह नहीं बैठती थीं।

"मां अभी आती ही होंगी," उनमें से सबसे बड़ी ने आकर मेरे पास बैठते हुए मुझसे कहा। कोई पंद्रह मिनट तक यह छोटी प्रिंसेस बड़े सहज भाव से मुझसे बातचीत करती रही, और उसने यह काम इतनी निपुणता से किया कि वातचीत का मज़ा एक क्षण के लिए भी फीका नहीं पड़ने पाया। लेकिन यह वात ज़रूरत से ज़्यादा साफ़ थी कि वह मेरा मन वहलाने के लिए ही ऐसा कर रही थी, और इसलिए वह मुझे अच्छी नहीं लगी। दूसरी वातों के अलावा उसने मुझे वताया कि उसका भाई स्तेपान, जिसे वे लोग फ़्रांसीसी ढंग से एत्येन कहती थीं, और जो दो साल पहले जुंकरों के स्कूल में भेजा गया था, तरक्क़ी पाकर अफ़सर वन चुका था। अपने भाई की चर्चा करते समय, ख़ास तौर पर इस बात का उल्लेख करते समय कि वह मां की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हुसारों के रिसाले में भरती हो गया था, उसने भयभीत मुद्रा धारण कर ली, और बाक़ी सब वहनों ने भी, जो चुपचाप वैठी हुई थीं, उतने ही भयभीत्त चेहरे बना लिये। नानी के मरने की चर्चा करते समय उसने अपना चेहरा शोकाकुल बना लिया, और उसकी सभी छोटी वहनों ने भी ऐसा ही किया। जब उसे याद आया कि किस तरह मैंने St.-Jérôme को तमाचा मार दिया था, और किस तरह मुझे हॉल से ज़बर्दस्ती हटा दिया गया था, वह अपने वदसूरत दांत खोलकर हंस पड़ी, और बाक़ी सव वहनें भी अपने वदसूरत दांत खोलकर हंस दीं।

प्रिंसेस कोर्नाकोवा ने कमरे में प्रवेश किया। वह वही पहले जैसी वेचैन आंखोंवाली सूखी हुई महिला थीं, जिनकी आदत थी कि जिस वक़्त किसी आदमी से बातें करती होती थीं तो दूसरे लोगों की तरफ़ लगातार देखती रहती थीं। उन्होंने मेरा हाथ पकड़ लिया और अपना हाथ उठाकर मेरे होंटों के पास तक ले आयीं, ताकि मैं उसे चूम लूं जो मैं कभी न करता, क्योंकि मैं इस काम को अनिवार्य कर्त्तव्य नहीं मानता था।

"तुमसे मिलकर कितनी ख़ुशी हुई मुझे," उन्होंने वेटियों पर नज़र

डालकर अपनी हमेशा जैसी वाचालता के साथ कहना शुरू किया। "अरे कितना मिलता है अपनी maman से! है न, Lise?"

Lise ने हामी भरी; हालांकि मैं पक्के तौर पर जानता था कि मुझमें और मेरी मां में तनिक भी समानता नहीं थी।

"और तुम बड़े कितने हो गये हो! और मेरा एत्येन, तुम्हें याद है उसकी, तुम दोनों की नानियां सगी बहनें थीं – नहीं, नानियां नहीं; क्या रिश्ता बनता है इसके साथ, Lise? मेरी मां थीं वारवारा द्मित्रियेव्ना, द्मित्री निकोलायेविच की बेटी, और तुम्हारी नानी थीं नताल्या निकोलायेव्ना।"

"तब तो यह हमारे मौसेरे के मौसेरे के मौसेरे भाई हुए," सबसे बड़ी बहन ने कहा।

"अरे, तुम सब गड़बड़ किये दे रही हो," मां ने चिल्लाकर कहा। "मौसेरे के मौसेरे भाई बिल्कुल नहीं है, बल्कि ये issus de germains हैं – मौसेरी की मौसेरी बहनों की संतानें; तुम्हारा और मेरे लाड़ले एत्येन का यही रिश्ता है। वह तो अफ़सर भी बन चुका है; यह मालूम है तुम्हें? लेकिन एक तरह से यह अच्छा नहीं हुआ: उसे ज़रूरत से ज़्यादा आज़ादी मिल गयी है। तुम नौजवानों को क़ाबू में रखे जाने की ज़रूरत है। हां बेटा, खरी-खरी बात कहने पर अपनी बूढ़ी मौसी से नाराज़ न हो। मैंने एत्येन को उस पर बड़ी सख़्त नज़र रखकर पाला है, और मैं समझती हूं कि यही ठीक तरीक़ा है।"

"हां, तो यह है हम लोगों की रिश्तेदारी," वह कहती रहीं। "प्रिंस इवान इवानिच मेरे मामा हैं और वह तुम्हारी मां के भी मामा हैं। इस तरह तुम्हारी मां और मैं मौसेरी बहनें थीं; नहीं मौसेरी की मौसेरी बहनें। हां, तो यह है। अच्छा, अब तुम बताओ मुझे: तुम प्रिंस इवान के यहां गये?"

मैंने बताया कि मैं वहां उस वक़्त तक गया तो नहीं था, लेकिन उसी दिन मुझे वहां जाना ज़रूर था।

"अरे, यह क्या गज़ब किया!" उन्होंने चौंककर कहा। "अरे, वहां तो तुम्हें सबसे पहले जाना चाहिये था। तुम्हें मालूम है कि प्रिंस इवान बिल्कुल तुम्हारे बाप की तरह हैं। उनके कोई औलाद नहीं है, इसलिए उनकी सारी जायदाद तुम लोगों को और मेरे बच्चों को मिलेगी।

तुम्हें उनकी उम्र की वजह से और दुनिया में उनकी हैसियत की वजह से, और हर बात की वजह से उनकी इज़्ज़त करनी चाहिये। मैं जानती हूं कि मौजूदा पीढ़ी के तुम नौजवानों की नज़र में रिश्तेदारी कोई चीज़ नहीं है, और बूढ़े लोग तुम्हें अच्छे नहीं लगते; लेकिन अपनी बूढ़ी मौसी की बात मानो, क्योंकि मुझे तुमसे लगाव है, और मुझे तुम्हारी मां से भी लगाव था, और तुम्हारी नानी से भी, मैं उनकी बेहद, बेहद इज़्ज़त करती थी।... तुम्हें वहां ज़रूर जाना चाहिये, हर हालत में जाना चाहिये।"

मैंने कहा कि मैं ज़रूर जाऊंगा, और चूंकि, मेरी राय में, यह मुलाक़ात ज़रूरत से ज़्यादा लंबी हो चुकी थी इसलिए मैं चलने के लिए उठ पड़ा; लेकिन उन्होंने मुझे रोक लिया।

"ज़रा, एक मिनट ठहरो। तुम लोगों के पापा कहां हैं, Lise? उन्हें यहां बुला तो लाओ। वह तुमसे मिलकर बहुत ख़ुश होंगे," मेरी ओर मुड़कर वह कहती रहीं।

दो-एक मिनट के अंदर ही प्रिंस मिख़ाइलो सचमुच वहां आ गये। वह गठीले बदन के नाटे-से आदमी थे, जो बहुत लापरवाही से कपड़े पहने हुए थे, दाढ़ी नहीं बनाये हुए थे और उनके चेहरे पर लगभग मूर्खता की हद तक उदासीनता का भाव था। वह मुझे देखकर ज़रा भी ख़ुश नहीं हुए, बहरहाल, उन्होंने यह बात किसी तरह व्यक्त नहीं की। लेकिन प्रिंसेस ने, जिनसे स्पष्टतः वह बहुत डरते थे, उनसे कहा:

"देखो, वोल्डेमार (वह मेरा नाम साफ़ भूल गयी थीं) अपनी मां से कितना मिलता है, है न?" और यह कहकर उन्होंने अपनी आंखों से ऐसा इशारा किया कि प्रिंस शायद उनकी मर्ज़ी समझकर मेरे पास आये और अत्यंत विरक्त बल्कि कुछ हद तक असंतुष्ट मुद्रा से उन्होंने अपना गाल, जिस पर दाढ़ी भी नहीं बनायी गयी थी, मेरी ओर बढ़ा दिया और मुझे मजबूरन उसे चूमना पड़ा।

"तुमने अभी तक कपड़े नहीं पहने हैं हालांकि तुम्हें अभी थोड़ी ही देर में जाना है," प्रिंसेस फ़ौरन उनसे नाराज़गी के स्वर में कहने लगीं; स्पष्टतः अपने घर के लोगों से वह आम तौर पर इसी लहजे में बात करती थीं। "तुम चाहते हो कि लोग एक बार फिर तुम्हारे बारे में बुरी राय बना लें, तुम लोगों को फिर नाराज़ कर देना चाहते हो!"

"एक मिनट में, एक मिनट में, माई डियर," प्रिंस मिख़ाइलो ने कहा और वहां से चले गये। मैंने भी विदा ली और चल दिया।

यह बात मैंने पहली बार सुनी थी कि हम लोग प्रिंस इवान इवानिच के उत्तराधिकारी थे, और यह सूचना मेरे लिए एक अरुचिकर बात थी।

अध्याय २०

ईविन-परिवार

उस आगामी अनिवार्य मुलाक़ात के बारे में सोच-सोचकर मैं और दुःखी होने लगा। लेकिन अपने मार्ग के क्रम के अनुसार मैं पहले ईविन-परिवार के यहां गया। वे लोग त्वेर्सकाया सड़क पर एक बहुत बड़े ख़ूबसूरत-से मकान में रहते थे। कुछ सहमा हुआ-सा मैं मुख्य प्रवेश-द्वार पर पहुंचा, जिस पर एक दरबान लाठी लिये खड़ा था।

मैंने उससे पूछा कि मालिक घर पर हैं या नहीं।

"आपको किससे मिलना है, साहब? जनरल साहब के बेटे घर पर हैं," दरबान ने जवाब दिया।

"और जनरल साहब ख़ुद?" मैंने साहस करके पूछा।

"पूछता हूं। क्या कह दूं कि कौन आया है?" दरबान ने पूछा और घंटी बजायी।

सीढ़ियों पर एक अर्दली के पांव दिखायी दिये। न जाने क्यों मैं इतना डरा हुआ था कि मैंने अर्दली से कह दिया कि वह जनरल साहब को मेरे आने की ख़बर न दे, और यह कि मैं पहले जनरल साहब के बेटे से मिलने जाऊंगा। उन बड़ी-सी सीढ़ियों पर होकर ऊपर जाते हुए मुझे ऐसा लगा कि मैं बेहद छोटा हो गया हूं (आलंकारिक अर्थ में नहीं, बल्कि शब्द के वास्तविक अर्थ में)। जब मेरी घोड़ागाड़ी उस आलीशान घर के पास पहुंची थी उस समय भी मुझे ऐसा ही आभास हुआ था: मुझे ऐसा लगा था कि घोड़ागाड़ी, और घोड़ा और कोचवान सभी छोटे हो गये हैं। जब मैंने कमरे के अंदर क़दम

रखा तो जनरल साहब का बेटा अपने सामने एक किताब खोले सोफ़े पर गहरी नींद सो रहा था। उसके मास्टर साहब हेर्र फ़ॉस्ट, जो अभी तक उस घर में ही रहते थे, मेरे पीछे-पीछे अकड़ते हुए कमरे में आये और उन्होंने अपने शिष्य को जगाया। ईविन ने मुझे देखकर कोई ख़ास ख़ुशी ज़ाहिर नहीं की, और मैंने देखा कि मुझसे बातें करते समय वह मेरी भवों की ओर देख रहा था। हालांकि वह बहुत शिष्टता के साथ पेश आया लेकिन मुझे ऐसा लगा कि वह भी ठीक उसी तरह मेहमान की ख़ातिर करने की कोशिश कर रहा था जैसे कि प्रिंसेस की बेटी ने की थी, और यह कि उसे मेरे प्रति कोई विशेष आकर्षण नहीं था, और उसे मेरी जान-पहचान की कोई ज़रूरत नहीं थी, क्योंकि शायद अपने जाननेवालों की उसकी अलग ही मंडली रही होगी। इन सब बातों की कल्पना मैंने मुख्यतः इसलिए की कि वह मेरी भवों को घूर रहा था। सारांश यह कि, मेरी ओर उसका रवैया – मेरे वास्ते यह बात मान लेने के लिए कितना ही अरुचिकर क्यों न रहा हो, – लेकिन वह ठीक वैसा ही था जैसा कि मेरा रवैया इलेंका की ओर था। मुझे झुंझलाहट होने लगी; मैंने ईविन की हर नज़र को बीच में ही पकड़ लिया, और जब उसकी और फ़ॉस्ट की नज़रें मिलीं तो मैंने उसकी नज़र का अर्थ इस प्रश्न जैसा लगाया, "यह हम लोगों से मिलने आया क्यों है?"

मुझसे थोड़ी देर बातें करने के बाद ईविन ने कहा कि उसके माता-पिता घर पर ही हैं और पूछा कि क्या मैं उसके साथ उनके पास नहीं जाना चाहूंगा।

"मैं फ़ौरन कपड़े पहने लेता हूं," उसने दूसरे कमरे में जाते हुए कहा, हालांकि उसने बिल्कुल ठीक कपड़े पहन रखे थे – नया कोट और सफ़ेद वास्कट। कुछ देर बाद वह गले तक के बटन लगाये अपनी यूनिफ़ार्म पहने हुए आया और हम दोनों साथ-साथ नीचे गये। जिन स्वागत-कक्षों से होकर हम गुज़रे वे बेहद ऊंचे, बेहद बड़े थे और उनकी सजावट बेहद ठाठदार मालूम होती थी; हर तरफ़ संगमरमर और सुनहरी क़लई, और कोई चीज़ मलमल में लिपटी हुई, और आईने। ड्राइंग-रूम के पीछेवाले छोटे कमरे में जिस समय हम लोगों ने प्रवेश किया, ठीक उसी समय दूसरे दरवाज़े से मादाम ईविना ने

वहां क़दम रखा। उन्होंने बहुत मित्रता के भाव से एक रिश्तेदार की तरह मेरा स्वागत किया, मुझे अपने पास बिठाया, और हमारे पूरे परिवार के बारे में बड़ी दिलचस्पी के साथ पूछा।

मादाम ईविना को उससे पहले मैंने केवल एक-दो बार झलक-भर देखी थी; इस समय ध्यान से देखने पर वह मुझे बहुत अच्छी लगी। वह लंबी, दुबली-पतली और बहुत गोरी थीं, और हमेशा उदास और थकी हुई लगती थीं। उनकी मुस्कराहट व्यथा-भरी लेकिन अत्यंत सहृदयतापूर्ण थी; उनकी आंखें बड़ी और थकी-थकी थीं और कुछ तिरछी थीं, जिसकी वजह से उनके चेहरे का भाव अधिक उदास और आकर्षक हो जाता था। वह झुकी हुई तो नहीं बैठी थीं, लेकिन उनका पूरा शरीर ढीला था, और उनकी हर चाल-ढाल से लगता था जैसे अभी बीमारी से उठी हों। वह अलसाये हुए स्वर में बोलती थीं पर उनकी आवाज़ और 'र' और 'ल' का अनका अस्पष्ट उच्चारण कानों को बहुत सुखद लगता था। वह मेरे साथ केवल आतिथ्य-सत्कार का शिष्टाचार नहीं निभा रही थीं, बल्कि अपने रिश्तेदारों के बारे में मेरे जवाबों में स्पष्टतः उन्हें उदासी-भरी दिलचस्पी थी, मानो मेरी बात सुनते हुए वह व्यथित मन से अपने बीते हुए अधिक सुखमय दिनों को याद कर रही हों। उनका बेटा कहीं चला गया; वह दो-एक मिनट तक चुपचाप मुझे घूरती रहीं, और अचानक रो पड़ीं। मैं उनके सामने बैठा हुआ था और मेरी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि क्या कहूं या क्या करूं। वह मेरी ओर देखे बिना रोती रहीं। पहले तो मुझे उनसे बहुत हमदर्दी हुई; फिर मैंने सोचा, "क्या मुझे उनको तसल्ली नहीं देना चाहिये, लेकिन मैं तसल्ली दूं तो कैसे?" आख़िरकार मुझे उनसे झुंझलाहट होने लगी कि उन्होंने मुझे ऐसी अटपटी स्थिति में डाल दिया था। "क्या मेरी सूरत-शक्ल ऐसी दयनीय है?" मैंने सोचा, "या वह जान-बूझकर यह मालूम करने के लिए ऐसा कर रही हैं कि इन परिस्थितियों में मेरा आचरण कैसा रहेगा?"

"इस वक़्त यहां से चले जाना ठीक नहीं होगा—ऐसा लगेगा कि मैं उनके आंसुओं से भाग रहा हूं," मेरे विचारों का सिलसिला जारी रहा। उन्हें वहां अपनी मौजूदगी की याद दिलाने के लिए मैंने कुर्सी पर पहलू बदला।

"अरे, मैं भी कितनी बेवकूफ़ हूं!" उन्होंने मेरी ओर देखकर मुस्कराने की कोशिश करते हुए कहा, "कुछ दिन ऐसे होते हैं जब बिना किसी वजह के रुलाई आ जाती है।"

वह सोफ़े पर आस-पास अपना रूमाल ढूंढने लगीं, और अचानक वह और भी ज़ोर से रो पड़ीं।

"अरे, कैसी बेतुकी बात है कि मैं इस तरह रो रही हूं! तुम्हारी मां से मुझे बड़ा लगाव था; हम दोनों में... ऐसी दोस्ती थी... और..."

उन्हें उनका रूमाल मिल गया, और उससे अपना मुंह ढककर वह रोती रहीं। मैं फिर दुविधा में पड़ गया और बड़ी देर तक इसी हालत में रहा। मुझे झुंझलाहट तो हो रही थी, लेकिन उन पर तरस और भी ज़्यादा आ रहा था। उनके आंसू सच्चे मालूम हो रहे थे, और मैं सोचता रहा कि वह मेरी मां की वजह से उतना नहीं रो रही थीं जितना कि इस वजह से कि इस वक़्त वह दुःखी थीं, और वह इससे अच्छे दिन देख चुकी थीं। मुझे मालूम नहीं कि यह सिलसिला किस तरह ख़त्म होता अगर छोटे ईविन ने आकर यह न कहा होता कि बड़े ईविन उन्हें बुला रहे थे। वह उठकर जानेवाली ही थीं कि ईविन साहब ख़ुद कमरे में आ गये। वह छोटे-से, गठे बदन के, सफ़ेद बालोंवाले सज्जन थे, घनी काली भवें, बिल्कुल सफ़ेद ख़शख़शी कटे हुए बाल, और चेहरे पर अत्यंत कठोरता और दृढ़ता का भाव।

मैं उठा और झुककर उनको सलाम किया; लेकिन ईविन साहब ने, जिनके हरे टेल-कोट पर तीन सितारे लगे हुए थे, न सिर्फ़ यह कि मेरे सलाम का जवाब नहीं दिया बल्कि उन्होंने मेरी तरफ़ नज़र तक नहीं डाली, जिसकी वजह से मुझे फ़ौरन ऐसा महसूस हुआ कि मैं इंसान नहीं हूं, बल्कि कोई ऐसी चीज़ हूं जो ध्यान देने योग्य नहीं है–कोई आराम-कुर्सी या खिड़की, या अगर इंसान हूं भी तो किसी तरह मेरी हैसियत आराम-कुर्सी या खिड़की से अलग नहीं है।

"आपने अभी तक काउंटेस को चिट्ठी नहीं लिखी है, माई डियर," उन्होंने अपनी पत्नी से फ़्रांसीसी में कहा; उनके चेहरे पर विरक्ति का लेकिन साथ ही दृढ़ता का भाव था।

"अच्छा, अब मैं चलती हूं, monsieur Irteneff," मादाम

ईविना ने फ़ौरन अपना सिर कुछ अकड़ के साथ मेरी ओर झुकाकर मेरी भवों को अपने बेटे की तरह ही देखकर कहा। मैंने एक बार फिर उनकी और उनके पति की ओर झुककर सलाम किया, और एक बार फिर ईविन साहब पर ठीक वैसा ही असर हुआ जैसे किसी खिड़की के खुलने या बंद होने का होता। लेकिन छात्र ईविन मेरे साथ दरवाज़े तक आया और उसने रास्ते में मुझे बताया कि वह मास्को यूनिवर्सिटी छोड़कर पीटर्सबर्ग यूनिवर्सिटी में जानेवाला है, क्योंकि उसके बाप को वहां किसी ओहदे पर तैनात कर दिया गया है (और उसने किसी बहुत महत्वपूर्ण पद का नाम लिया)।

"ख़ैर, पापा जैसा चाहें," मैं अपनी घोड़ागाड़ी पर बैठते हुए बुड़बुड़ाया, "लेकिन मैं अब फिर कभी इस घर में क़दम नहीं रखूंगा। वह पिनपिनी मुझे देखकर ऐसे रोती है जैसे मैं कोई अभागा हूं और वह सूअर ईविन मेरे सलाम का जवाब भी नहीं देता। मैं उसकी ख़बर लूंगा..." मैं कैसे उसकी ख़बर लेनेवाला था यह तो दरअसल मुझे नहीं मालूम था, लेकिन उस वक़्त मुझे यही शब्द सूझा।

इसके बाद कई बार मुझे अपने पापा की नसीहतें सुननी पड़ीं कि इस जान-पहचान को बढ़ाना बेहद ज़रूरी था, और यह कि मैं इस बात की उम्मीद तो नहीं रख सकता कि ईविन जैसी हैसियत का आदमी मेरे जैसे लड़के की ओर ध्यान देगा, लेकिन बहुत अरसे तक मैं अपने फ़ैसले पर अडिग रहा।

अध्याय २१

प्रिंस इवान इवानिच

"बस अब आख़िरी जगह चलना है—निकीत्सकाया सड़क पर," मैंने कोचवान कुज़्मा से कहा और हमारी गाड़ी प्रिंस इवान इवानिच के घर की ओर चल पड़ी।

लोगों के यहां मिलने जाने के कई अनुभवों के बाद मुझमें अभ्यास से आत्म-विश्वास पैदा होता था; और अब मैं अपनी घोड़ागाड़ी पर

काफ़ी स्थिर मानसिक स्थिति में प्रिंस के यहां पहुंचनेवाला ही था कि इतने में मुझे प्रिंसेस कोर्नाकोवा के शब्द याद आये कि मैं उनका उत्तराधिकारी था; इसके अलावा मैंने उनकी ड्योढ़ी के पास दो घोड़ागाड़ियां खड़ी देखीं, और एक बार फिर मुझे संकोच ने आ दबोचा।

मुझे ऐसा लगा कि वह बूढ़ा दरबान जिसने मेरे लिए दरवाज़ा खोला था, और वह अर्दली जिसने मेरा कोट उतारा था, और वे तीन महिलाएं और दो सज्जन जिन्हें मैंने ड्राइंग-रूम में बैठा हुआ पाया था, और ख़ास तौर पर प्रिंस इवान इवानिच ख़ुद, जो ग़ैर-फ़ौजी कोट पहने सोफ़े पर बैठे थे—मुझे ऐसा लगा कि ये सब लोग मुझे उत्तराधिकारी समझ रहे थे, और इसलिए सबके मन में मेरे प्रति द्वेष था। मेरे प्रति प्रिंस का व्यवहार बहुत मित्रता का था: उन्होंने मुझे चूमा, मतलब यह कि एक क्षण के लिए उन्होंने अपने मुलायम, सूखे हुए, ठंडे होंट मेरे गाल से छुआ दिये, मुझसे मेरी व्यस्तताओं और मेरी योजनाओं के बारे में पूछा, मेरे साथ हंसी-मज़ाक़ की बातें कीं, मुझसे पूछा कि क्या मैं अब भी वैसी कविताएं लिखता था जैसी कि मैंने अपनी नानी के जन्मदिवस पर लिखी थीं, और मुझे उस दिन खाना उनके साथ ही खाने का न्योता दिया। लेकिन वह जितनी ही शिष्टता दिखाते थे उतना ही ज़्यादा मुझे यह लगता था कि वह मेरा लाड़ सिर्फ़ इसलिए करना चाहते थे कि मैं यह न समझ जाऊं कि यह विचार कि मैं उनका उत्तराधिकारी था उनके लिए कितना अरुचिकर था। उनकी एक आदत थी—जिसकी वजह थे उनके वे नक़ली दांत जिनसे उनका मुंह भरा हुआ था—कि कोई भी बात कहने के बाद वह अपना ऊपरी होंट नाक की तरफ़ उठाते और हल्की-सी आवाज़ पैदा करते थे, जैसे वह अपना होंट अपने नथुनों के अंदर खींचे ले रहे हों; और इस अवसर पर जब उन्होंने ऐसा ही किया तो मुझे ऐसा लगा कि जैसे वह मन ही मन कह रहे हों, "बच्चू, बच्चू, तुम्हारे कहे बिना मुझे मालूम है, उत्तराधिकारी, उत्तराधिकारी," वग़ैरह-वग़ैरह।

हम लोग बचपन में प्रिंस इवान इवानिच को "दादा" कहा करते थे; लेकिन अब उनके उत्तराधिकारी की हैसियत से यह शब्द किसी तरह मेरी ज़बान से निकल ही नहीं रहा था, और उन्हें "योर एक्सीलेंसी" कहना, जैसा कि उनसे मिलने के लिए आये हुए एक सज्जन

उन्हें कह रहे थे, मुझे अपमानजनक मालूम हुआ; इसलिए पूरी बात-चीत के दौरान मेरी कोशिश यही रही कि मैं उन्हें कुछ न कहूं। लेकिन सबसे ज़्यादा अटपटा मैं एक बूढ़ी प्रिंसेस की वजह से महसूस कर रहा था जो प्रिंस के उत्तराधिकारियों में से एक थीं और उसी घर में रहती थीं। पूरे खाने के दौरान, जिसमें मैं इन प्रिंसेस के बग़ल में बैठा हुआ था, मैं यही कल्पना करता रहा कि प्रिंसेस मुझसे इसी वजह से नहीं बोल रही थीं कि वह मुझसे इसीलिए नफ़रत करती थीं कि मैं भी उन्हीं की तरह प्रिंस का उत्तराधिकारी था; और यह कि मेज़ पर जिस तरफ़ हम लोग बैठे थे – प्रिंसेस और मैं – उधर प्रिंस कोई ध्यान इसलिए नहीं दे रहे थे कि हम लोग उत्तराधिकारी थे, और इसलिए उनकी दृष्टि में समान रूप से घृणास्पद थे।

"हां, तुम्हें यक़ीन नहीं आयेगा कि मुझे कितना बुरा लगा," मैंने उसी दिन शाम को मित्री से कहा; मैं उसके सामने डींग मारना चाहता था कि इस विचार से मेरे मन में नफ़रत की भावना पैदा हो गयी थी कि मैं 'उत्तराधिकारी' था (यह भावना मुझे बहुत अच्छी लगती थी), "कि मुझे कितना बुरा लगा आज प्रिंस के यहां पूरे दो घंटे काटना। वह बहुत अच्छे आदमी हैं, और मेरे साथ बड़े प्यार से पेश आये," मैंने कहा; दूसरी बातों के अलावा मैं यह बात भी अपने दोस्त को समझा देना चाहता था कि मैंने जो कुछ कहा था उसकी वजह यह नहीं थी कि प्रिंस के सामने मैंने तिरस्कृत अनुभव किया था; "लेकिन," मैंने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "मैं तो यह सोचकर ही कांप उठता हूं कि मेरी तरफ़ भी उन लोगों का रवैया वैसा ही हो जैसा उन प्रिंसेस की तरफ़ है जो उनके घर में रहती हैं और उनके सामने हर वक़्त हाथ बांधे खड़ी रहती हैं। वह बहुत ही लाजवाब बुज़ुर्ग हैं, और सबके साथ उनका बर्ताव बेहद नेकी और शराफ़त का है, लेकिन उन प्रिंसेस के साथ वह जैसा बुरा बर्ताव करते हैं उसे देखकर तकलीफ़ होती है। यह कमबख़्त पैसा हर संबंध को बिगाड़ देता है! जानते हो, मैं समझता हूं कि कहीं बेहतर होगा कि मैं अपनी बात प्रिंस को साफ़-साफ़ समझा दूं," मैं कहता रहा, "मैं उन्हें बता दूं कि मैं उनकी इज़्ज़त करता हूं, लेकिन मेरे मन में उनकी जायदाद पाने का कोई ख़्याल नहीं है, और यह कि मेरी उनसे प्रार्थना है कि वह मेरे

लिए कुछ न छोड़ जायें, और यह कि इसी शर्त पर मैं उनके यहां जाता रहूंगा।"

जब मैंने यह बात मित्री को बतायी तो वह हंसा नहीं; इसके विपरीत, वह विचारमग्न हो गया, और कई मिनट तक चुप रहने के बाद उसने मुझसे कहा:

"देखो, तुम्हारा कहना ठीक नहीं है। या तो तुम्हें यह मानना ही नहीं चाहिये कि लोग तुम्हारे बारे में उसी तरह सोच सकते हैं जिस तरह वे उन प्रिंसेस के बारे में सोचते हैं; या अगर तुम ऐसा मानते हो, तो तुम्हें अपने अनुमानों को और आगे बढ़ाना चाहिये; मतलब यह कि तुम जानते हो कि लोग तुम्हारे बारे में क्या सोचते होंगे, लेकिन यह कि इस तरह के विचार तुम्हारे अपने इरादों से इतने दूर हैं कि तुम उन्हें तिरस्कार की दृष्टि से देखते हो, और तुम उनके आधार पर कुछ नहीं करोगे। अब, मान लो कि वे लोग मानते हों कि तुम ऐसा मानते हो... लेकिन, कुल मतलब यह है," यह महसूस करते हुए कि वह अपने विचारों में उलझता जा रहा है, उसने इतना और जोड़ दिया, "कहीं अच्छा है कि कुछ मानो ही नहीं।"

मेरा दोस्त बिल्कुल ठीक कहता था। बाद में, बहुत बाद में जाकर मुझे अपने जीवन के अनुभव से इस बात का यक़ीन हुआ कि बहुत-सी ऐसी बातों के बारे में, जो देखने में बहुत उदात्त लगती हैं, लेकिन जिन्हें हमेशा के लिए हर आदमी के दिल में छिपा रहना चाहिये, सोचना कितना हानिकारक होता है, और उन्हें कह देने से तो और भी ज़्यादा नुक़सान पहुंचता है; और कितने इने-गिने अवसरों पर ही ऐसा होता है कि उदात्त शब्दों के साथ ही उदात्त कर्म भी मिलते हों। मुझे पूरा विश्वास है कि यह बात ही कि किसी नेक इरादे का एलान कर दिया गया है उस इरादे का अमल में पूरा किया जाना ज़्यादा मुश्किल, बल्कि आम तौर पर नामुमकिन तक बना देती है। लेकिन नौजवानी के उदात्त भावनाओं से प्रेरित आत्म-संतुष्ट आवेगों की अभिव्यक्ति पर अंकुश कैसे लगाया जाये? केवल बाद में जाकर जब हमें उनकी याद आती है तब हम उनका मातम भी उस फूल की तरह करते हैं जिसे देखकर हम अपने लालच पर क़ाबू न रख सके और जिसे ख़ुद हमने पूरी तरह खिलने से पहले ही तोड़ लिया, और फिर उसे ज़मीन

पर कुचला हुआ, मुरझाया हुआ पड़ा पाया।

मैंने अभी अपने दोस्त द्मित्री से कहा था कि पैसा हर संबंध को बिगाड़ देता है, और मैंने ही अगले दिन सुबह गांव जाने से पहले उससे पच्चीस रूपये उधार मांगे जो उसने मुझे पेश कर दिये, जबकि मैंने देखा यह कि खुद अपना सारा पैसा मैंने भांति-भांति की तस्वीरों और पाइपों की नलकियों पर उड़ा दिया था; और बाद में सचमुच बहुत ही लंबे अरसे तक उसका यह क़र्ज़ मुझ पर चढ़ा रहा।

अध्याय २२

अपने मित्र के साथ अंतरंग वार्तालाप

यह बातचीत कुंत्सेवो जाते हुए रास्ते में फ़िटन पर हुई। द्मित्री ने मुझे सुबह उसकी मां से मिलने जाने से रोक दिया था; लेकिन दोपहर के खाने के बाद वह सारी शाम ही नहीं बल्कि रात भी शहर के पास ही अपने उस बंगले में बिताने के लिए, जहां उसका परिवार रहता था, मुझे ले जाने के लिए आ पहुंचा। जब हम लोग शहर से बाहर निकल आये और गंदी, पंचमेल सड़कों और कान के परदे फाड़ देनेवाले सड़कों के शोर की जगह दूर तक फैले हुए खेतों की विस्तृत दृश्यावली ने और धूल-भरे रास्तों पर पहियों की हल्की खड़खड़ाहट ने ले ली, और वसंत की महकती हुई हवा और खुलेपन के आभास ने मुझे चारों ओर से घेर लिया – तब जाकर कुछ हद तक मैं अपनी विभिन्न नयी अनुभूतियों से और स्वतंत्रता की उस नयी चेतना से छुटकारा पाकर होश में आया जिसने पिछले दो दिनों से मुझे बिल्कुल उलझा दिया था। द्मित्री बातूनी था और उसके रवैये में नरमी थी; उसने न तो अपने सिर को झटका देकर गले में बंधी हुई टाई ठीक की और न ही पलकें झपकायीं और न ही आंखें सिकोड़ीं। मैंने जो उदात्त भावनाएं उनमे व्यक्त की थीं उनमे मैं संतुष्ट था, क्योंकि मैं समझ रहा था कि उनकी वजह से उसने कोल्पिकोव के साथ मेरी शर्मनाक झड़प को बिल्कुल माफ़ कर दिया था और अब वह उसकी वजह से मुझे

तिरस्कार की दृष्टि से नहीं देखेगा; और हम दोनों मित्रता के भाव से बहुत-से ऐसे अंतरंग विषयों के बारे में बातें करते रहे जिनके बारे में दोस्त भी हमेशा आपस में बातें नहीं करते। द्मित्री ने मुझे अपने परिवार के लोगों के बारे में बताया, जिन्हें मैं अभी तक नहीं जानता था– उसने अपनी मां के बारे में, अपनी मौसी, अपनी बहन और उस औरत के बारे में बताया जिसके बारे में वोलोद्या और दुबकोव समझते थे कि मेरा दोस्त उसके पीछे दीवाना है और जिसे उन लोगों ने "नन्ही लालपरी" का नाम दे रखा था। उसने अपनी मां की चर्चा किंचित शांत, गरिमापूर्ण प्रशंसा के भाव से की, मानो वह पहले से इस विषय में कोई आपत्ति उठाये जाने की रोकथाम कर लेना चाहता हो; अपनी मौसी के बारे में उसने उत्साह तो व्यक्त किया, लेकिन कुछ इस तरह जैसे उनके साथ रिआयत कर रहा हो; अपनी बहन के बारे में उसने बहुत थोड़ा कहा, और ऐसा लगता था कि मुझसे उसकी बातें करते हुए वह शरमा रहा था; लेकिन "नन्ही लालपरी" के बारे में, जिसका असली नाम ल्युबोव सेर्गेयेव्ना था, और जो काफ़ी बड़ी उम्र की अविवाहिता स्त्री थी और नेख़ल्यूदोव-परिवार के साथ किसी रिश्तेदार की हैसियत से रहती थी, उसके बारे में उसने मुझसे काफ़ी जोश के साथ बातें कीं।

"अरे, कमाल की लड़की है वह," उसने झेंपते हुए लेकिन इसी-लिए और ज़्यादा ढिठाई से मेरी आंखों में आंखें डालकर कहा। "वह अब कमसिन लड़की तो नहीं है– बल्कि वह कुछ ज़्यादा ही उम्र की है, और तनिक भी सुंदर नहीं है; लेकिन रूप से प्यार करना कितनी बेवक़ूफ़ी की, कितनी नासमझी की बात है! मेरी तो समझ में ही नहीं आता यह, इतनी बड़ी बेवक़ूफ़ी है यह (वह ऐसे बातें कर रहा था जैसे उसने अभी-अभी एक बिल्कुल नये और अनूठे सत्य का पता लगाया हो); लेकिन ऐसी आत्मा है उसकी, ऐसा दिल है, ऐसे सिद्धांत... मुझे पक्का विश्वास है कि आजकल तुम्हें उसकी जैसी लड़की नहीं मिल सकती।" (मालूम नहीं क्यों द्मित्री की यह आदत पड़ गयी थी कि वह हर अच्छी चीज़ के बारे में कहने लगा था कि आजकल उसका मिलना मुश्किल है; उसे यह बात बार-बार दोहराना बहुत अच्छा लगता था और यह बात उस पर फबती भी थी। "मुझे

बस यह डर है", अपनी निंदा से उन लोगों का संहार कर चुकने के बाद जो रूप से प्यार करने की बेवक़ूफ़ी करते थे, उसने शांत भाव से अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "मुझे डर है कि उसे समझने में और उसे अच्छी तरह जानने में तुम्हें कुछ वक़्त लगेगा। वह बहुत विनम्र है, बल्कि कुछ हद तक चुप्पी भी है; उसे अपने अच्छे, अपने लाजवाब गुणों की नुमाइश करने का शौक़ नहीं है। मिसाल के लिए, मां, जो, जैसा कि तुम खुद देखोगे, बहुत ही अच्छी और समझदार औरत है, ल्युबोव सेर्गेयेव्ना को जानती कई साल से हैं, लेकिन वह न तो उसे समझ सकती हैं और न उसे समझना चाहती हैं। अभी कल रात को... मैं तुम्हें बताता हूं कि जब तुमने पूछा था उस वक़्त मेरा मिजाज ख़राब क्यों था। परसों ल्युबोव सेर्गेयेव्ना मुझे अपने साथ इवान याकोव्लेविच के यहां ले जाना चाहती थी – जिनके बारे में कहा जाता है कि वह सनकी आदमी हैं लेकिन दरअसल वह हैं लाजवाब आदमी। ल्युबोव सेर्गेयेव्ना बहुत धर्मनिष्ठ है, यह मैं तुम्हें बता दूं, और वह इवान याकोव्लेविच को अच्छी तरह समझती है। वह अकसर उनसे मिलने जाती है, उनसे बातें करती है, और उन्हें ग़रीबों के लिए पैसे देती है, जो उसकी अपनी कमाई के पैसे होते हैं। वह कमाल की औरत है, तुम खुद देखोगे। मैं भी उसके साथ इवान याकोव्लेविच के यहां चला जाता, और मैं उसका बड़ा उपकार मानता कि उसकी बदौलत मुझे उस लाजवाब आदमी से मिलने का मौक़ा मिला। लेकिन मां इस बात को कभी नहीं समझेंगी, वह इसे अंधविश्वास मानती है। कल रात जिंदगी में पहली बार मां से मेरा झगड़ा हुआ, और काफ़ी संगीन झगड़ा हुआ," मानो उस भावना को याद करके, जो उसने उस झगड़े के दौरान अनुभव की थी, उसने गर्दन को एक झटका देकर अपनी बात ख़त्म करते हुए कहा।

"अच्छा, तुम्हारा क्या ख़्याल है? मतलब यह कि तुम क्या सोचते हो कि आगे चलकर इसकी शक्ल क्या बनेगी?.. या तुम उससे कभी बात करते हो कि इसे किस तरह होना चाहिये, और तुम्हारी मुहब्बत और दोस्ती का अंजाम क्या होगा?" मैंने उसका ध्यान अरुचिकर स्मृतियों की ओर से हटाने की कोशिश करते हुए पूछा।

"तुम पूछना चाहते हो कि क्या मेरा इरादा उससे शादी करने

का है?" उसने पूछा; उसका चेहरा फिर लाल हो गया था, लेकिन वह मुड़कर मेरी आंखों में आंखें डालकर देखता रहा।

"ख़ैर," मैंने अपने आपको संभालते हुए सोचा, "ठीक ही है–हम लोग 'वड़े' हैं, दोस्त हैं, हम इस फ़िटन पर जा रहे हैं और अपने भावी जीवन की चर्चा कर रहे हैं। अगर कोई हमारी वातें सुने और हमें देखे तो उसे वहुत मज़ा आयेगा।"

"क्यों नहीं?" मेरे स्वीकृति में जवाव दे देने के वाद वह अपनी वात कहता रहा। "हर समझदार आदमी की तरह मेरा यह लक्ष्य है कि जहां तक हो सके सुखी रहूं और नेकी करूं; और जैसे ही मैं विल्कुल आज़ाद हो जाऊंगा, मैं दुनिया की वड़ी से वड़ी सुंदरी के मुक़ावले उसके साथ, अगर वह चाहेगी तो, ज़्यादा सुखी और वेहतर जीवन विता सकूंगा।"

इस तरह वातें करते हुए हमें पता भी नहीं चला कि हम कुंत्सेवो पहुंच गये थे, आसमान पर वादल घिर आये थे और वारिश होनेवाली थी। सूरज वाग़ के पुराने पेड़ों के ऊपर दाहिनी ओर वहुत ऊंचाई पर नहीं था, और उसका आधा चमकदार तवा थोड़े-थोड़े पारदर्शी सुरमई वादलों से ढका हुआ था; दूसरे आधे हिस्से से टूटी-टूटी दहकती हुई किरनें चिंगारियों की तरह फूट पड़ती थीं और वाग़ के पुराने पेड़ों को चकाचौंध कर देनेवाली जगमगाहट से चमका देती थीं और उनकी हरी-हरी घनी निश्चल फुनगियां नीले आकाश की जगमगाती हुई दरार में चमक उठती थीं। आसमान के इस तरफ़ की चमक और रोशनी के विपरीत हमारे सामने क्षितिज पर दिखायी देनेवाले अल्पवयस्क वर्चवृक्षों के ऊपर गहरे-गहरे ऊदे वादल छाये हुए थे।

थोड़ी दूर आगे दाहिनी ओर झाड़ियों और पेड़ों के पीछे हमें वंगलों की रंग-विरंगी छतें दिखायी देने लगी थीं, जिनमें से कुछ सूरज की चमकदार किरनों को प्रतिविंवित कर रही थीं, और कुछ पर आसमान के दूसरे हिस्से की उदासी छा गयी थी। नीचे, वायीं ओर, तालाव का निश्चल नीला जल झिलमिला रहा था; हल्के हरे रंग के वेदवृक्ष तालाव को घेरे खड़े थे और उसके निस्तेज और देखने में उभरे हुए धरातल पर गहरे रंग के धव्वों जैसे प्रतिविंवित हो रहे थे। तालाब के पार एक टीले की ढलान पर काला परती खेत फैला हुआ

था और उसे बीच मे विभाजित करनेवाली सीधी हरी पट्टी दूर तक भागती चली गयी थी और जाकर सीसे के रंग के तूफ़ान-भरे क्षितिज पर टिक गयी थी। जिस कच्ची सड़क पर हमारी फ़िटन मंथर गति से चली जा रही थी उसके दोनों ओर घनी रसदार रई के खेतों की चटकीले हरे रंग की चादर-सी बिछी हुई थी और जहां-तहां उन पौधों मे से डंठलें भी फूट निकली थीं। हवा बिल्कुल थमी हुई थी और अपनी हर सांस मे ताजगी बिखेर रही थी; पेड़ों, पत्तियों और रई की हरियाली बिल्कुल निश्चल और असाधारण रूप से शुद्ध और स्वच्छ थी। ऐसा लगता था जैसे हर पत्ती, घास का हर तिनका स्वयं अपनी उन्मुक्त, सुखी और स्वतंत्र जिंदगी जी रहा था। सड़क के किनारे मुझे एक काली-सी पगडंडी दिखायी दी, जो रई के गहरे हरे रंग के पौधों के बीच, जो अब तक अपनी पूरी बाढ़ का चौथाई से ज़्यादा हिस्सा पूरा कर चुके थे, बल खाती हुई चली गयी थी; और न जाने क्यों इस पगडंडी को देखकर मुझे बहुत स्पष्ट रूप से अपने गांव की याद आ गयी; और गांव की याद आने के फलस्वरूप, विचारों के किसी विचित्र संयोजन के माध्यम से मुझे विशेष स्पष्टता के साथ सोनेच्का की याद आयी, और इस बात की कि मुझे उससे प्यार हो गया था।

द्मित्री से अपनी तमाम दोस्ती के बावजूद, और उसकी स्पष्टवादिता से मुझे जो खुशी मिलती थी उसके बावजूद, मैं ल्युबोव सेर्गेयेव्ना के प्रति उसकी भावनाओं और उसके इरादों के बारे में और ज़्यादा नहीं जानना चाहता था; लेकिन मुझे सोनेच्का से अपने प्रेम के बारे में, जो मुझे अधिक उच्च कोटि का प्रेम मालूम होता था, द्मित्री को अनिवार्य रूप से बताने की बड़ी इच्छा थी। फिर भी न जाने क्यों मैं उसे सीधे-सीधे इस बात के बारे में अपने विचार बताने का फ़ैसला न कर सका कि कितना अच्छा रहेगा जब सोनेच्का से शादी करके मैं देहात में रहने लगूंगा, और फिर मेरे छोटे-छोटे बच्चे होंगे जो फ़र्श पर घुटनों के बल रेंगते फिरेंगे और मुझे पापा कहेंगे, और मैं कितना खुश होऊंगा जब वह और उसकी बीवी ल्युबोव सेर्गेयेव्ना अपनी सफ़री पोशाक पहनकर हमसे मिलने आयेंगे... लेकिन इन सब बातों के बजाय मैंने डूबते सूरज की तरफ़ इशारा किया, "देखो, द्मित्री, कितना सुंदर है!"

द्मित्री ने कुछ नहीं कहा; स्पष्टतः वह नाराज़ था कि उसकी स्वीकारोक्ति के जवाब में, जिसके लिए उसे काफ़ी कोशिश करनी पड़ी होगी, मैंने उसका ध्यान प्रकृति की ओर मोड़ दिया था, जिसके प्रति वह सर्वथा उदासीन था। प्रकृति जिस प्रकार मुझे प्रभावित करती थी उस पर उसका प्रभाव उससे बिल्कुल ही भिन्न होता था : उसे प्रकृति अपने सौंदर्य से उतना नहीं जितना अपनी रोचकता से प्रभावित करती थी; वह प्रकृति से प्रेम अपनी भावनाओं से नहीं बल्कि अपने दिमाग़ से करता था।

"मुझे बड़ी ख़ुशी है", मैंने इसके बाद कहा, इस बात की ओर कोई ध्यान दिये बिना कि वह अपने ही विचारों में खोया हुआ था, और मैं उससे चाहे जो कुछ कहता उसके प्रति वह बिल्कुल उदासीन था; "मेरा ख़्याल है कि मैंने तुम्हें एक लड़की के बारे में बताया था जिससे मैं अपने बचपन में प्रेम करने लगा था; आज मैं उससे फिर मिला," मैं बड़े उत्साह से अपनी बात कहता रहा, "और अब मैं पक्के तौर पर उससे प्रेम करता हूं।..."

उसके चेहरे पर अब भी उदासीनता का भाव मंडला रहा था, उसके बावजूद मैंने उसे अपने प्रेम के बारे में और भावी सुखी विवाहित जीवन की अपनी सारी योजनाओं के बारे में बता दिया। और अजीब बात है कि जैसे ही मैं अपनी भावना की सारी प्रबलता को पूरे विस्तार के साथ बयान कर चुका वैसे ही वह क्षीण होने लगी।

बर्चवृक्षों के बीच से होकर बंगले तक जानेवाली सड़क पर हमारे पहुंचते ही बारिश ने हमें आ पकड़ा लेकिन उसने हमें भिगोया नहीं। बारिश होने का पता तो मुझे सिर्फ़ इसलिए चला कि मेरी नाक और हाथ पर कुछ बूंदें गिरीं, और बर्चवृक्षों की चिपचिपी कोमल पत्तियों से टप-टप की आवाज़ आने लगी। इन वृक्षों की घुंघराली टहनियां निश्चल नीचे लटक रही थीं और ऐसा लगता था कि वे पानी की इन शुद्ध, निर्मल बूंदों को उल्लसित होकर स्वीकार कर रही हैं, जैसा कि उस तेज़ महक से पता चलता था जिससे उन्होंने उस पूरे छायादार मार्ग को भर दिया था। बाग़ को भागकर पार करते हुए घर तक ज़्यादा जल्दी पहुंच जाने के इरादे से हम लोग फ़िटन पर से उतर पड़े। लेकिन घर के दरवाज़े पर ही हमारी मुठभेड़ चार महिलाओं से हो गयी, जिनमें

से दो के पास कुछ सीने-पिरोने का काम था, एक के हाथ में किताब थी और चौथी के हाथ में छोटा-सा कुत्ता; चारों तेज़ क़दम बढ़ाती हुई दूसरी दिशा से उधर ही आ रही थीं। द्मित्री ने फ़ौरन मेरा परिचय अपनी मां, बहन, मौसी और ल्युबोव सेर्गेयेव्ना से कराया। वे एक क्षण के लिए रुक गयीं, लेकिन बारिश ज़्यादा तेज़ होने लगी।

"आओ, बरामदे में चलें, वहां एक बार फिर इनका परिचय हम लोगों से करा देना," उन महिला ने कहा जिन्हें मैंने द्मित्री की मां समझा था; और हम लोग उन महिलाओं के साथ-साथ सीढ़ियां चढ़ने लगे।

अध्याय २३

नेख़ल्यूदोव-परिवार

पहली नज़र में, इस पूरी मंडली में जिसने मुझे सबसे ज़्यादा आश्चर्यचकित किया वह थी ल्युबोव सेर्गेयेव्ना, जो अपनी गोद में एक छोटा-सा कुत्ता लिये, और एक मोटा-सा बुना हुआ जूता पहने सबसे बाद में सीढ़ियां चढ़ रही थी। वह रुककर मुझे ध्यान से देखने के लिए दो बार पीछे मुड़ी और इसके फ़ौरन बाद उसने अपने कुत्ते को चूमा। उसे ख़ूबसूरत तो किसी भी तरह नहीं कहा जा सकता – लाल रंग के बाल, दुबला-पतला शरीर, नाटा क़द और कुछ एकंगापन लिये हुए। जिस चीज़ की वजह से उसका बदसूरत चेहरा और भी बदसूरत हो गया था वह था उसका अपने सारे बाल एक तरफ़ करके बाल संवारने का तरीक़ा (एक ऐसी केशभूषा जिसे महीन बालोंवाली औरतों ने अपने लिए ईजाद किया है)। अपने दोस्त को ख़ुश करने की इच्छा से लाख कोशिश करने पर भी मैं उसकी सूरत-शक्ल में एक भी अच्छाई नहीं ढूंढ सका। उसकी भूरी आंखें भी, नेकदिली का परिचय देने के बावजूद, बहुत छोटी-छोटी और निस्तेज थीं, और बिल्कुल बदसूरत थीं; यहां तक कि उसके हाथ भी, हालांकि बहुत बड़े या बदशक्ल नहीं थे, लेकिन वे लाल और खुरदुरे थे।

जब मैं उन लोगों के पीछे-पीछे बरामदे में पहुंचा तो द्मित्री की बहन वारेंका को छोड़कर, जिसने मुझे बस अपनी बड़ी-बड़ी गहरी सुरमई आंखों से ध्यान से देखा, सभी महिलाओं ने अपना-अपना काम फिर से शुरू करने से पहले मुझसे कुछ शब्द कहे ज़रूर; वारेंका अपने घुटनों पर किताब खोलकर, जिसके पन्नों के बीच में वह उंगली रखे हुए थी, ज़ोर-ज़ोर से पढ़ने लगी।

प्रिंसेस मार्या इवानोव्ना लंबे क़द की, शानदार डीलडौल की कोई चालीस साल की औरत थीं। उनकी टोपी के नीचे से जो सफ़ेद घूंघर साफ़ झलकते थे उन्हें देखते हुए उनकी उम्र इससे भी ज़्यादा आंकी जा सकती थी। लेकिन अपने ताज़गी-भरे, नाज़ुक चेहरे की वजह से, जिस पर शायद ही कोई झुर्री पड़ी हो, और ख़ास तौर पर अपनी बड़ी-बड़ी आंखों की चंचल, उल्लास-भरी चमक की वजह से वह अपनी उम्र से काफ़ी छोटी लगती थीं। उनकी आंखें भूरी और पूरी तरह खुली हुई थीं; उनके होंट बेहद पतले, और कुछ हद तक कठोर थे; उनकी नाक काफ़ी सिजल और थोड़ी-सी बायीं ओर को झुकी हुई थी; उनके हाथ पतली-पतली उंगलियोंवाले, बड़े-बड़े, लगभग मर्दाना थे; उन पर कोई अंगूठी नहीं थी। वह गहरे नीले रंग की ऊंचे गले की चुस्त पोशाक पहने थीं, जो उनकी सुडौल और अभी तक यौवनमय कमर पर, जिस पर स्पष्टतः उन्हें गर्व था, कसकर चिपकी हुई थी। वह बिल्कुल तनकर सीधी बैठी हुई थीं और कोई कपड़ा सी रही थीं। बरामदे में मेरे पहुंचने पर उन्होंने मेरा हाथ पकड़कर मुझे इस तरह अपने पास खींच लिया मानो मुझे और पास से देखना चाहती हों, और अपने बेटे जैसी ही भावशून्य, फटी-फटी नज़रों से मुझे घूरते हुए कहा कि द्मित्री के बयानों के माध्यम से वह मुझे बहुत पहले से जानती थीं, और उन्होंने मुझे पूरा एक दिन उनके यहां बिताने को इसलिए बुलाया था कि वे लोग मुझसे ज़्यादा अच्छी तरह परिचित हो सकें।

"हम लोगों की तनिक भी चिंता किये बिना जो आपका जी चाहे कीजिये ठीक उसी तरह जैसे हम लोग भी आपकी वजह से अपने ऊपर कोई बंधन नहीं लगायेंगे। घूमिये-टहलिये, पढ़िये, बातें सुनिये, या अगर आपको उसमें ज़्यादा मज़ा आता हो तो सोइये," उन्होंने अपनी बात में इतना और जोड़ दिया।

सोफ़िया इवानोव्ना अधेड़ उम्र की अविवाहिता महिला थीं और प्रिंसेस की छोटी बहन थीं, हालांकि देखने में वह बड़ी लगती थीं। उनके शरीर की बनावट जरूरत से ज़्यादा स्थूल थी, जैसी कि छोटे कद की उन बहुत ही मांसल कुआंरी स्त्रियों की होती है जो कार्सेट पहनती हैं। ऐसा लगता था कि उनकी सारी तनदुरुस्ती इतने ज़ोर से ऊपर की ओर चढ़ आयी थी कि हर क्षण उनका दम घुट जाने का खतरा बना रहता था। उनके छोटे-छोटे मोटे हाथ उनकी चोली के नीचे एक-दूसरे को छू नही सकते थे।

दोनों बहनें एक-दूसरे से बहुत मिलती-जुलती थी, इस बात के बावजूद कि मार्या इवानोव्ना के बाल काले और आंखें गहरे रंग की थी और सोफ़िया इवानोव्ना के बाल सुनहरे थे और उनकी बड़ी-बड़ी, स्फूर्तिमय, लेकिन उसके साथ ही (जो बहुत कम होता है) शांत आंखें नीले रंग की थी। दोनों बहनों में अत्यधिक वंशानुगत समानता थी। दोनों के चेहरे पर एक जैसा भाव था, दोनों की नाकें एक जैसी थी, और उनके होंठ भी एक जैसे थे, बस सोफ़िया इवानोव्ना की नाक और होंठ कुछ मोटे थे और जब वह मुस्कराती थीं तो वे ज़रा-सा दाहिनी ओर को मुड़ जाते थे और प्रिंसेस के बायीं ओर को। सोफ़िया इवानोव्ना की पोशाक और उनकी केशभूषा को देखने से लगता था कि वह स्पष्टतः जवान दिखायी देती रहने की कोशिश करती थीं, और अगर उनके कोई सफ़ेद बालोंवाला घूंघर होता भी तो वह उस पर किसी की नजर न पड़ने देतीं। जिस तरह वह मुझे देखती थीं और मेरी ओर उनका जो रवैया था वह शुरू में तो मुझे अत्यंत दंभपूर्ण लगा, और उस पर मैंने कुछ अटपटा भी महसूस किया; जबकि, इसके विपरीत, प्रिंसेस के साथ मुझे किसी तरह की कोई झिझक नहीं महसूस होती थी। शायद सोफ़िया इवानोव्ना के शरीर के गठीलेपन की वजह से, और उनकी आकृति में और कैथरीन महान के चित्र में मुझे जो थोड़ी-बहुत समानता खटकी थी उसकी वजह से, मेरी नजरों में उनमें दंभ का वह भाव आ गया था। लेकिन मैं बिल्कुल शर्मिंदा हो गया जब उन्होंने एकटक मुझे देखते हुए कहा, "हमारे दोस्तों के दोस्त हमारे भी दोस्त हैं।" मुझमें तब फिर आत्म-संतुलन पैदा हुआ और मैंने उनके बारे में अपनी राय बिल्कुल बदल दी जब ये शब्द कहने के

वाद वह थोड़ी देर रुकीं और फिर उन्होंने अपना मुंह खोलकर एक गहरी आह भरी। यक़ीनन अपने मोटापे की वजह से ही उनकी यह आदत पड़ गयी थी कि हर वार कुछ शव्द वोलने के वाद वह अपना मुंह थोड़ा-सा खोलकर और अपनी वड़ी-वड़ी नीली आंखें ऊपर उठाकर गहरी आह भरती थीं। उनकी इस आदत से न जाने क्यों इतनी मिलनसारी व्यक्त होती थी कि उस आह के वाद मेरे दिल से उनका सारा डर जाता रहा, और मैं उनसे वहुत खुश रहने लगा। उनकी आंखें वहुत आकर्षक थीं, उनकी आवाज़ सुरीली और रुचिकर थी ; यहां तक कि अपनी जवानी के उस दौर में उनके शरीर की सुस्पष्ट गोलाइयां भी मुझे सौंदर्य से सर्वथा वंचित नहीं लगीं।

ल्युवोव सेर्गेयेव्ना को, मेरे दोस्त की दोस्त होने के नाते, फ़ौरन मुझसे कोई वेहद दोस्ती की और दिल की वात ज़रूर कहनी होगी (ऐसा मैंने मान लिया था), और वह काफ़ी देर तक मुझे चुपचाप घूरती भी रही, मानो फ़ैसला न कर पा रही हो कि जो कुछ वह मुझसे कहना चाहती थी वह कहीं ज़रूरत से ज़्यादा दोस्ताना वात तो नहीं थी ; लेकिन उसने अपनी चुप्पी सिर्फ़ यह पूछने के लिए तोड़ी कि मैं किस विभाग में था। इसके वाद वह फिर थोड़ी देर तक मुझे ग़ौर से एकटक देखती रही, स्पष्टतः वह संकोच कर रही थी कि उस दिली, नेकी-भरी और दोस्ताना वात को कहे या न कहे, और मैंने उसके इस असमंजस को भांपकर अपने चेहरे की मुद्रा से उससे अनुरोध किया कि वह मुझे सव कुछ वता दे ; लेकिन उसने कहा, "सुना है कि आज-कल यूनिवर्सिटियों में साइंस की तरफ़ वहुत कम ध्यान दिया जाता है," और यह कहकर उसने अपी छोटी कुतिया सुज़ेत को वुलाया।

ल्युवोव सेर्गेयेव्ना सारी शाम इसी तरह असंगत, हमारी वातचीत से और एक-दूसरे से असंवधित वातें करती रहीं ; लेकिन मुझे द्मित्री पर इतना पक्का भरोसा था, और वह सारी शाम इतना एकाग्रचित्त होकर पहले मुझे और फिर उसे ऐसी मुद्रा वनाये देखता रहा था मानो पूछ रहा हो, "कहो, क्या ख़्याल है?" – कि, जैसा कि अकसर होता है, हालांकि अपने मन में मुझे पक्का विश्वास था कि ल्युवोव सेर्गेयेव्ना में ऐसी कोई ख़ास वात नहीं थी, फिर भी इस विचार को मैं स्वयं भी नहीं स्वीकार कर पा रहा था।

अंत में, इस परिवार की आखिरी सदस्या वारेंका बहुत गोल-मटोल सोलह साल की लड़की थी।

उसमें एकमात्र खूबसूरत चीजें थीं उसकी बड़ी-बड़ी गहरी सुरमई आंखें, जिनमें मस्ती और शांत एकाग्रता का मिला-जुला भाव था और जो बहुत कुछ उसकी मौसी जैसी थीं, उसके सुनहरे बालों की बहुत बड़ी चोटी, और उसके बेहद मुलायम और सुंदर हाथ।

"मैं समझती हूं, monsicur Nicolas, कि शुरू का हिस्सा न सुनने की वजह से आप उकता गये होंगे," सोफ़िया इवानोव्ना ने अपनी सिलाई को एक तरफ़ रखते हुए नेकदिली से आह भरकर कहा।

उस क्षण किताब का पढ़ना कुछ देर के लिए रुक गया था क्योंकि मित्री कहीं चला गया था।

"या शायद आप 'रॉब रॉय' पहले पढ़ चुके हों?"

उस समय मैंने केवल इसलिए कि मैंने यूनिवर्सिटी के छात्रोंवाली पोशाक पहन रखी थी इस बात को अपना कर्त्तव्य समझा कि जिन लोगों को मैं बहुत अच्छी तरह नहीं जानता था उनके हर सवाल का जवाब, वे कितने ही सीधे सवाल क्यों न हों, मैं बड़ी समझ-बूझ और मौलिकता के साथ दूं, और मैंने, "हां" और "नहीं", "जी हां, बहुत ऊबा देनेवाली चीज़ है", "अरे, बड़ा मजा आ रहा है", जैसे संक्षिप्त और सुस्पष्ट जवाबों को और इसी तरह के दूसरे जवाबों को अपने लिए बहुत शर्मनाक बात समझा। अपनी फ़ैशनेबुल नयी पतलून और अपने कोट के चमकदार बटनों पर नज़र डालते हुए मैंने जवाब दिया कि मैंने 'रॉब रॉय' पढ़ी तो नहीं थी लेकिन उसे सुनने में मुझे बड़ा मजा आ रहा था, क्योंकि मैं किताबों को शुरू के बजाय बीच में पढ़ना ज़्यादा पसंद करता था।

"उसमें दोहरा मजा आता है; आप अटकल लगाने पर मजबूर हो जाते हैं कि क्या हो चुका है और क्या होनेवाला है," मैंने आत्म-संतुष्ट मुस्कराहट के साथ इतना और जोड़ दिया।

प्रिंसेस यह सुनकर अस्वाभाविक-सी हंसी हंसने लगीं। मैंने बाद में देखा कि वह और किसी तरह की हंसी हंसती ही नहीं थीं)।

"हां, शायद यह बात सच है," उन्होंने कहा। "और क्या आप यहां बहुत दिन रहेंगे, Nicolas? बुरा न मानियेगा अगर मैं आपको

monsieur न कहूं? आप कब जा रहे हैं?"

"मालूम नहीं; शायद कल ही चला जाऊं, लेकिन हम लोग काफ़ी लंबे अरसे तक भी ठहर सकते हैं," मैंने जवाब दिया, हालांकि मैं अच्छी तरह जानता था कि हम लोगों का अगले दिन ही चल देना पक्का था।

"कितना अच्छा होता अगर आप ज़्यादा दिन रह सकते, आपके लिए भी और द्मित्री के लिए भी," प्रिंसेस ने बहुत दूर शून्य में देखते हुए कहा; "आप लोगों की उम्र में दोस्ती लाजवाब चीज़ होती है।"

मुझे ऐसा लगा कि वे सब मुझे देख रही थीं, और इस बात का इंतज़ार कर रही थीं कि देखें अब मैं क्या कहता हूं, हालांकि वारेंका जता यह रही थी कि वह अपनी मौसी की सिलाई को देख रही थी। मुझे ऐसा लगा कि वे लोग मेरी किसी तरह की परीक्षा ले रही थीं, और यह कि मुझे अपने आपको श्रेष्ठतम रूप में प्रस्तुत करना चाहिये।

"जी हां," मैंने कहा, "मेरे लिए द्मित्री की दोस्ती बहुत फ़ायदे-मंद है, लेकिन मेरी दोस्ती से उसे कोई फ़ायदा नहीं हो सकता; वह मुझसे हज़ार गुना अच्छा है।" (मैं जो कुछ कह रहा था वह द्मित्री सुन नहीं सकता था, वरना मुझे डर होता कि वह मेरी बात के बनावटी-पन को पकड़ लेगा।)

प्रिंसेस फिर अपनी अस्वाभाविक हंसी हंस पड़ीं, जो उनके लिए स्वाभाविक थी।

"कोई बातें तो सुने इनकी," उन्होंने कहा, "तो c'est vous qui êtes un petit monstre de perfection."*

"'Monstre de perfection,' यह तो लाजवाब बात है, मुझे इसे याद रखना चाहिये," मैंने सोचा।

"लेकिन, अपनी बात तो जाने दीजिये, वह इस मामले में उस्ताद है," वह अपनी आवाज़ नीची करके (जो मुझे विशेष रूप से सुखद लग रही थी), और अपनी आंखों से ल्युबोव सेर्गेयेव्ना की ओर इशारा करके अपनी बात कहती रहीं। "उसने हमारी 'बेचारी चाची' में" (वे सब लोग ल्युबोव सेर्गेयेव्ना को इसी नाम से पुकारते थे), "जिन्हें

---

* अच्छे ख़ासे कमाल के आदमी तो आप हैं। (फ़्रांसीसी)

मैं उनकी मुझेत समेत बीस साल से जानती हूं, ऐसे-ऐसे नायाब गुण ढूंढ लिये हैं जिनका मुझे कभी गुमान तक नहीं था।... वार्या, जरा किसी से कहना कि मुझे एक गिलास पानी तो ला दे," उन्होंने एक बार फिर दूर शून्य में देखते हुए कहा, शायद यह महसूस करके कि अभी इतनी जल्दी या कभी भी मुझे परिवार की बातें बताना जरूरी नहीं था; "या, बेहतर होगा कि इन्हें जाने दो। यह कोई काम तो कर नहीं रहे हैं, और तुम पढ़ती रहो। सीधे उस दरवाजे से चले जाइये, मेरे दोस्त, कोई पंद्रह क़दम जाकर ज़ोर से आवाज़ दीजियेगा, 'प्योत्र, मार्या इवानोव्ना को एक गिलास पानी और बर्फ़ दे आओ!'" उन्होंने मुझसे कहा, और एक बार फिर अपनी वही अस्वाभाविक हंसी धीरे से हंस दीं।

"यक़ीनन वह आपस में मेरे बारे में बातचीत करना चाहती हैं," कमरे से बाहर निकलते हुए मैंने सोचा, "शायद वह कहना चाहती होंगी कि उन्होंने देखा है मैं बहुत समझदार आदमी हूं।" लेकिन मैं अभी पंद्रह क़दम गया भी नहीं था कि हांपती हुई सोफ़िया इवानोव्ना ने मोटी होने पर भी तेज़ी से पोले-पोले क़दम बढ़ाते हुए मुझे आ पकड़ा।

"Merci, mon cher," उन्होंने कहा, "मैं उधर ही जा रही हूं, मैं उससे कह दूंगी।"

अध्याय २४

प्रेम

सोफ़िया इवानोव्ना, जैसा कि मुझे बाद में चलकर मालूम हुआ, अधेड़ उम्र की उन औरतों में से थीं जो हालांकि पैदा तो पारिवारिक जीवन के लिए होती हैं, लेकिन चूंकि उन्हें इस सुख से वंचित रखा जाता है इसलिए वे अचानक मन में ठान लेती हैं कि उनके दिलों में प्यार का जो खजाना इतने अरसे से जमा होता रहा है और बढ़ता और पनपता रहा है, उसे वे सारे का सारा अपने कुछ चुने हुए चहेते लोगों पर उंडेल देंगी। और इस तरह की कुंआरियों के बीच यह ख़ज़ाना

इतना अथाह होता है कि चहेतों की संख्या बहुत अधिक होते हुए भी ढेरों प्यार बच जाता है जिसे वे अपने चारों ओर के सभी लोगों पर, भला-बुरा जो भी मिल जाता है उस पर लुटा देती हैं।

प्रेम तीन प्रकार के होते हैं:

१) सुंदर प्रेम,

२) आत्म-बलिदानी प्रेम और

३) सक्रिय प्रेम।

मैं उस प्रेम की बात नहीं कर रहा हूं जो किसी नौजवान को किसी लड़की से, या उस लड़की को उस नौजवान से होता है; इन भावनाओं से मुझे डर लगता है, और मुझे जीवन में यह मौक़ा नहीं मिला कि इस प्रकार के प्रेम में मुझे सच्चाई की एक चिंगारी भी दिखायी दे बल्कि केवल झूठ ही दिखायी दिया है, जिसमें वासना, विवाहित संबंध, पैसा, अपने हाथों को बांध देने या मुक्त कर लेने की इच्छा इतनी ज़्यादा हद तक स्वयं इस भावना को उलझा देती है कि उसकी तह तक पहुंचना असंभव हो जाता है। मैं चर्चा कर रहा हूं मनुष्य के प्रति उस प्रेम की, जो आत्मा की अधिक या कम शक्ति के अनुसार, किसी एक व्यक्ति या अनेक लोगों पर केंद्रित हो जाता है, या अपने आपको बहुतों पर उंडेल देता है; मैं बात कर रहा हूं मां, बाप, भाई, संतान के प्रेम की, अपने साथी के लिए, दोस्तों के लिए, किसी देशवासी के लिए प्रेम की – मनुष्य के प्रति प्रेम की।

सुंदर प्रेम स्वयं इस भावना के प्रति और इस भावना की अभिव्यक्ति की सुंदरता के प्रति प्रेम होता है। जो लोग इस प्रकार प्रेम करते हैं, उनके स्नेह का पात्र केवल इस दृष्टि से प्रिय होता है कि वह इस रुचिकर भावना को उत्पन्न करता है जिसकी चेतना और जिसकी अभिव्यक्ति में उन्हें आनंद मिलता है। जिन लोगों का प्रेम सुंदर प्रेम होता है उन्हें इस बात की चिंता बहुत ही कम रहती है कि उनसे भी प्रेम किया जाये, क्योंकि इस पारस्परिकता का उस भावना की सुंदरता और उसके आनंद पर कोई प्रभाव नहीं होता। वे अपने प्रेम के पात्रों को बार-बार बदलते रहते हैं क्योंकि उनका मुख्य उद्देश्य केवल प्रेम की रुचिकर भावना को निरंतर उकसाते रहना होता है। अपने अन्दर इस सुखद भावना को बनाये रखने के लिए, वे अपने स्नेह के बारे में

लगातार अत्यंत सुरुचिपूर्ण शब्दों में बातें करते रहते हैं, उससे भी जो उस स्नेह का पात्र होता है, और अन्य सभी लोगों से भी, उनसे भी जिनका उस प्रेम से कोई संबंध नहीं होता। हमारे देश में एक वर्ग विशेष के लोग जो 'सुंदर ढंग से' प्रेम करते हैं न केवल हर आदमी से अपने प्रेम की चर्चा करते हैं, बल्कि अनिवार्य रूप से यह चर्चा फ़्रांसीसी में करते हैं। कहने को तो बड़ी हास्यास्पद और विचित्र बात है, लेकिन मुझे पक्का विश्वास है कि एक समाज विशेष में ऐसे बहुत से लोग हो चुके हैं और अब भी हैं, विशेष रूप से स्त्रियां, कि अगर उन्हें उसकी चर्चा फ़्रांसीसी में करने से मना कर दिया जाये तो अपने मित्रों, अपने पति और अपने बच्चों के प्रति उनका प्रेम फ़ौरन ढह जाये।

दूसरे प्रकार का प्रेम – **आत्म-बलिदानी प्रेम** – अपने आपको प्रेम के पात्र के लिए मिटा देने की प्रक्रिया का प्रेम होता है, इस बात की कोई चिंता किये बिना कि उस क़ुर्बानी से प्रेम के पात्र को कोई लाभ हुआ है या हानि। "कोई भी इतनी अरुचिकर चीज़ नहीं है कि मैं सारी दुनिया के सामने, और 'उसके' (पुरुष या स्त्री के) सामने अपनी निष्ठा को सिद्ध करने के लिए न करूं।" इस प्रकार के प्रेम का यही मूलमंत्र होता है। इस प्रकार प्रेम करनेवाले लोग कभी पारस्परिकता में विश्वास नहीं करते (क्योंकि एक ऐसे व्यक्ति के लिए, जो हमारे मन की बात न समझता हो, अपने आपको बलि चढ़ा देना कहीं अधिक श्रेयस्कर है), उनका स्वास्थ्य हमेशा ख़राब रहता है, और इससे भी बलिदान का श्रेय अधिक हो जाता है; ज़्यादातर ये लोग अपने प्रेम में अडिग रहते हैं, क्योंकि अपने प्रेम के पात्र के लिए दी गयी क़ुर्बानियों के श्रेय से वंचित हो जाना उनके लिए कठिन होता है; 'उसके' सामने अपनी लगन की गहराई को सिद्ध करने के लिए वे जान तक देने को तैयार रहते हैं, लेकिन वे प्रेम के प्रतिदिन के छोटे-मोटे प्रदर्शनों को नज़रअंदाज करते हैं क्योंकि उनके लिए आत्म-बलिदान के विशेष विस्फोटों की आवश्यकता नहीं होती। उन्हें इस बात से कोई अंतर नहीं पड़ता कि आपने ठीक से खाना खाया है या नहीं या आपको नींद ठीक से आयी है या नहीं, आप प्रसन्न हैं या नहीं, या आपका स्वास्थ्य ठीक है या नहीं, और अगर ये सुख-सुविधाएं उनके वश में भी हों तब भी

वे उन्हें आपके वास्ते उपलब्ध करने के लिए कुछ नहीं करेंगे ; लेकिन गोलियों का सामना करना, पानी में या आग में कूद पड़ना, प्रेम में घुलते जाना – इन बातों के लिए वे अवसर मिलने पर हमेशा तैयार रहेंगे। इसके अलावा, जिन लोगों में आत्म-बलिदानी प्रेम की प्रवृत्ति होती है वे हमेशा अपने प्रेम पर गर्व करनेवाले, बहुत अधिक मांग करनेवाले, ईर्ष्यालु और संदेह करनेवाले होते हैं, और अजीब बात है कि वे चाहते हैं कि उनके प्रेम का पात्र ख़तरों में फंसे ताकि वे उसे उनसे उबारें, कि वह मुसीबत में पड़े ताकि वे उसे तसल्ली दें और यहां तक कि वे चाहते हैं कि वह दुर्गुणों का शिकार हो ताकि वे उसे सुधारें।

आप अपनी पत्नी के साथ, जो आपसे आत्म-बलिदानी प्रेम करती है, देहात में अकेले रह रहे हैं। आप भले-चंगे और शांत हैं ; आपके पास ऐसे काम हैं जो आपको पसंद हैं ; आपकी स्नेहमयी पत्नी इतनी कमज़ोर है कि वह गृहस्थी के प्रबंध में अपने आपको व्यस्त नहीं रख सकती, इसलिए यह काम नौकरों को सौंप दिया जाता है, न वह बच्चों की देखभाल कर सकती है, जो आयाओं के ज़िम्मे रहते हैं, न ही वह कोई ऐसा काम कर सकती है जिससे उसे लगाव हो, क्योंकि उसे तो बस आपसे प्रेम है। देखने से ही लगता है कि वह बीमार है, लेकिन यह सोचकर कि कहीं आपको तकलीफ़ न हो, वह आपको यह बात बतायेगी नहीं ; ज़ाहिर है कि वह उकतायी हुई रहती है, लेकिन आपकी ख़ातिर वह जीवन-भर उकतायी हुई रहने को तैयार है। यह बात कि आप बड़ी लगन से अपने कामों में व्यस्त रहते हैं (वे कुछ भी हों – शिकार, किताबें, खेती, सेवा) स्पष्टतः उसे मारे डाल रही है ; उसे विश्वास है कि ये व्यस्तताएं आपको तबाह किये दे रही हैं, लेकिन वह चुप साधे रहती है, और सारी पीड़ा चुपचाप सहती रहती है। लेकिन फिर आप बीमार पड़ जाते हैं। आपकी पत्नी आपकी ख़ातिर अपनी बीमारी को भूल जाती है, और आपके लाख मिन्नत करने पर भी कि वह अपने आपको व्यर्थ यातना न दे, वह आपके पलंग के पास बैठी रहती है और वहां से हटने का नाम नहीं लेती, और आप हर पल उसकी सहानुभूति-भरी दृष्टि अपने आप पर जमी हुई महसूस करते हैं, मानो वह कह रही हो, "देखा! मैंने आपसे

कहा था। लेकिन अब इससे मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, मैं आपका साथ नहीं छोड़ने की।" सुबह आपकी तबियत कुछ बेहतर हो जाती है और आप दूसरे कमरे में चले जाते हैं। कमरा गरम नहीं किया गया है, न साफ़ किया गया है; आप सिर्फ़ सूप पी सकते हैं, लेकिन बावर्ची को सूप तैयार करने के लिए नहीं कहा गया है; दवा नहीं मंगवायी गयी है; लेकिन आपकी दुखिया, प्यार करनेवाली पत्नी, जो जाग-जागकर निढाल हो गयी है, आपको सहानुभूति के उसी भाव से एकटक देखती रहती है, पंजों के बल चलती है, और नौकरों को कानाफूसी के स्वर में उलझे हुए आदेश देती रहती है। आप पढ़ना चाहते हैं, आपकी स्नेहमयी पत्नी आह भरकर आपसे कहती है कि वह जानती है कि आप उसकी बात सुनेंगे नहीं, कि आप उससे नाराज़ होंगे, और वह इसकी आदी हो चुकी है–लेकिन आपके लिए बेहतर यही है कि आप न पढ़ें। आप कमरे में एक सिरे से दूसरे सिरे तक टहलना चाहते हैं, लेकिन बेहतर यही होगा कि आप ऐसा भी न करें। आप आये हुए किसी दोस्त से बात करना चाहते हैं–आपके लिए बातें करना अच्छा नहीं है। रात को आपको फिर बुखार हो जाता है, और आप चाहते हैं कि आपको अकेला छोड़ दिया जाये, लेकिन आपकी प्यार करनेवाली बीवी अपना उतरा हुआ पीला चेहरा लिये, रह-रहकर आहें भरती हुई, रात को जलनेवाली बत्ती की धुंधली रोशनी के नीचे आपके सामने आराम-कुर्सी पर बैठी है और उसके ज़रा-सा भी हिलने-डुलने या आवाज़ पैदा करने से आप झुंझला पड़ते हैं या बेचैन हो उठते हैं। आपके पास एक नौकर है, जो आपके यहां बीस साल से रह रहा है, जिसके आप आदी हो चुके हैं, जो आपकी सेवा बड़े सराहनीय ढंग से और हंसी-खुशी करता है क्योंकि वह दिन में काफ़ी सो लेता है, और, इसके अलावा, उसे अपनी सेवाओं के बदले पारिश्रमिक मिलता है, लेकिन आपकी पत्नी उस नौकर को आपकी देखभाल नहीं करने देती। वह सब कुछ अपनी कमजोर फूहड़ उंगलियों से करेगी, जिन्हें आप झुंझलाहट के साथ देखते रहने पर मजबूर होते हैं, जब वे रक्तहीन सफ़ेद उंगलियां शीशी की डाट खोलने का व्यर्थ प्रयास करती हैं, मोमबत्ती बुझाती हैं, आपकी दवा छलका देती हैं या जब वे बड़ी सावधानी से आपको छूती हैं। अगर आप अधीर स्वभाव के गुस्सैल

आदमी हैं, और उससे वहां से चले जाने का अनुरोध करते हैं, तो आपके बीमार आदमीवाले झुंझलाये हुए कानों में दरवाजे के बाहर आहें भरने और सिसकने की और आपके नौकर से कानाफूसी के स्वर में कुछ बकवास करने की आवाज़ पड़ती रहेगी; और आख़िरकार, अगर आप मर नहीं जाते, तो आपकी प्यार करनेवाली पत्नी, जो आपकी बीस दिन की बीमारी में एक रात भी नहीं सोयी (जैसा कि वह लगातार आपके सामने दोहराती रहती है), बीमार पड़ जाती है, कमज़ोर होती जाती है, मुसीबत झेलती है, और कोई भी काम करने की उसकी क्षमता पहले से भी कम हो जाती है, और जब तक आपकी हालत फिर सामान्य होती है वह आपके चारों ओर केवल एक प्रकार की कोमल उदासी बिखेरकर अपना आत्म-बलिदान का प्रेम व्यक्त कर सकती है जो अनायास ही आपसे और आपके चारों ओर की हर चीज से सम्पर्क स्थापित कर लेती है।

तीसरे प्रकार का प्रेम—सक्रिय प्रेम—प्रेम के पात्र की हर आवश्यकता, इच्छा, सनक और दुर्गुण तक की तृप्ति कर देने के लिए तैयार रहता है। जो लोग इस तरह का प्रेम करते हैं, वे जीवन-भर प्रेम करते हैं क्योंकि जितना ही अधिक वे प्रेम करते हैं उतना ही अधिक वे अपने प्रेम के पात्र को जानते हैं, और उनके लिए प्रेम करना—अर्थात् जिस पुरुष या स्त्री से प्रेम किया जाता है उसकी इच्छाओं को पूरा करना—उतना ही आसान होता जाता है। उनका प्रेम शब्दों में शायद ही कभी व्यक्त किया जाता है, और अगर व्यक्त किया भी जाता है तो आत्म-संतोष की भावना के साथ मुखर रूप से नहीं, बल्कि लज्जित होकर, झेंपकर, क्योंकि उन्हें हमेशा डर लगा रहता है कि वे पर्याप्त प्रेम नहीं करते। इन लोगों को अपने प्रेम के पात्र के दुर्गुण अच्छे भी लगते हैं, क्योंकि उनसे उन्हें उस पुरुष अथवा स्त्री की इच्छाओं को पूरा करने का एक और अवसर मिलता है। वे पारस्परिकता के लिए प्रयत्नशील रहते हैं, जान-बूझकर अपने आपको धोखा देकर भी उसमें विश्वास रखते हैं, और उसके प्राप्त हो जाने पर वे खुश होते हैं; लेकिन इसकी विपरीत परिस्थितियों में भी वे प्रेम करते हैं, और अपने प्रेम के पात्र के लिए न केवल सुख की कामना करते हैं, बल्कि उनके वश में जो भी छोटे-बड़े नैतिक और भौतिक साधन होते हैं उन

कहा था। लेकिन अब इससे मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, मैं आपका साथ नहीं छोड़ने की।" सुबह आपकी तबियत कुछ बेहतर हो जाती है और आप दूसरे कमरे में चले जाते हैं। कमरा गरम नहीं किया गया है, न साफ़ किया गया है; आप सिर्फ़ सूप पी सकते हैं, लेकिन बावर्ची को सूप तैयार करने के लिए नहीं कहा गया है; दवा नहीं मंगवायी गयी है; लेकिन आपकी दुखिया, प्यार करनेवाली पत्नी, जो जाग-जागकर निढाल हो गयी है, आपको सहानुभूति के उसी भाव से एकटक देखती रहती है, पंजों के बल चलती है, और नौकरों को कानाफूसी के स्वर में उलझे हुए आदेश देती रहती है। आप पढ़ना चाहते हैं, आपकी स्नेहमयी पत्नी आह भरकर आपसे कहती है कि वह जानती है कि आप उसकी बात सुनेंगे नहीं, कि आप उससे नाराज़ होंगे, और वह इसकी आदी हो चुकी है—लेकिन आपके लिए बेहतर यही है कि आप न पढ़ें। आप कमरे में एक सिरे से दूसरे सिरे तक टहलना चाहते हैं, लेकिन बेहतर यही होगा कि आप ऐसा भी न करें। आप आये हुए किसी दोस्त से बात करना चाहते हैं—आपके लिए बातें करना अच्छा नहीं है। रात को आपको फिर बुख़ार हो जाता है, और आप चाहते हैं कि आपको अकेला छोड़ दिया जाये, लेकिन आपकी प्यार करनेवाली बीवी अपना उतरा हुआ पीला चेहरा लिये, रह-रहकर आहें भरती हुई, रात को जलनेवाली बत्ती की धुंधली रोशनी के नीचे आपके सामने आराम-कुर्सी पर बैठी है और उसके ज़रा-सा भी हिलने-डुलने या आवाज़ पैदा करने से आप झुंझला पड़ते हैं या बेचैन हो उठते हैं। आपके पास एक नौकर है, जो आपके यहां बीस साल से रह रहा है, जिसके आप आदी हो चुके हैं, जो आपकी सेवा बड़े सराहनीय ढंग से और हंसी-ख़ुशी करता है क्योंकि वह दिन में काफ़ी सो लेता है, और, इसके अलावा, उसे अपनी सेवाओं के बदले पारि-श्रमिक मिलता है, लेकिन आपकी पत्नी उस नौकर को आपकी देखभाल नहीं करने देती। वह सब कुछ अपनी कमज़ोर फूहड़ उंगलियों से करेगी, जिन्हें आप झुंझलाहट के साथ देखते रहने पर मजबूर होते हैं, जब वे रक्तहीन सफ़ेद उंगलियां शीशी की डाट खोलने का व्यर्थ प्रयास करती हैं, मोमबत्ती बुझाती हैं, आपकी दवा छलका देती हैं या जब वे बड़ी सावधानी से आपको छूती हैं। अगर आप अधीर स्वभाव के गुस्सैल

आदमी हैं, और उससे वहां से चले जाने का अनुरोध करते हैं, तो आपके बीमार आदमीवाले झुंझलाये हुए कानों में दरवाज़े के बाहर आहें भरने और सिसकने की और आपके नौकर से कानाफूसी के स्वर में कुछ बकवास करने की आवाज़ पड़ती रहेगी; और आख़िरकार, अगर आप मर नहीं जाते, तो आपकी प्यार करनेवाली पत्नी, जो आपकी बीस दिन की बीमारी में एक रात भी नहीं सोयी (जैसा कि वह लगातार आपके सामने दोहराती रहती है), बीमार पड़ जाती है, कमजोर होती जाती है, मुसीबत झेलती है, और कोई भी काम करने की उसकी क्षमता पहले से भी कम हो जाती है, और जब तक आपकी हालत फिर सामान्य होती है वह आपके चारों ओर केवल एक प्रकार की कोमल उदासी बिखेरकर अपना आत्म-बलिदान का प्रेम व्यक्त कर सकती है जो अनायास ही आपसे और आपके चारों ओर की हर चीज़ से सम्पर्क स्थापित कर लेती है।

तीसरे प्रकार का प्रेम – **सक्रिय प्रेम** – प्रेम के पात्र की हर आवश्यकता, इच्छा, सनक और दुर्गुण तक की तृप्ति कर देने के लिए तैयार रहता है। जो लोग इस तरह का प्रेम करते हैं, वे जीवन-भर प्रेम करते हैं क्योंकि जितना ही अधिक वे प्रेम करते हैं उतना ही अधिक वे अपने प्रेम के पात्र को जानते हैं, और उनके लिए प्रेम करना – अर्थात् जिस पुरुष या स्त्री से प्रेम किया जाता है उसकी इच्छाओं को पूरा करना – उतना ही आसान होता जाता है। उनका प्रेम शब्दों में शायद ही कभी व्यक्त किया जाता है, और अगर व्यक्त किया भी जाता है तो आत्म-संतोष की भावना के साथ मुखर रूप से नहीं, बल्कि लज्जित होकर, झेंपकर, क्योंकि उन्हें हमेशा डर लगा रहता है कि वे पर्याप्त प्रेम नहीं करते। इन लोगों को अपने प्रेम के पात्र के दुर्गुण अच्छे भी लगते हैं, क्योंकि उनसे उन्हें उस पुरुष अथवा स्त्री की इच्छाओं को पूरा करने का एक और अवसर मिलता है। वे पारस्परिकता के लिए प्रयत्नशील रहते हैं, जान-बूझकर अपने आपको धोखा देकर भी उसमें विश्वास रखते हैं, और उसके प्राप्त हो जाने पर वे ख़ुश होते हैं; लेकिन इसकी विपरीत परिस्थितियों में भी वे प्रेम करते हैं, और अपने प्रेम के पात्र के लिए न केवल सुख की कामना करते हैं, बल्कि उनके वश में जो भी छोटे-बड़े नैतिक और भौतिक साधन होते हैं उन

सभी की सहायता से वे उस पुरुष अथवा स्त्री के लिए वह सुख उपलब्ध करने की सतत चेष्टा करते हैं।

और अपने भांजे-भांजी के लिए, अपनी बहन के लिए, ल्युबोव सेर्गेयेव्ना के लिए, यहां तक कि मेरे लिए भी, क्योंकि द्मित्री मुझसे प्यार करता था, यही सक्रिय प्रेम था जो सोफ़िया इवानोव्ना की आंखों में, उनके एक-एक शब्द और हरकत में चमक रहा था।

बहुत बाद में जाकर मैं सोफ़िया इवानोव्ना का पूरा मूल्य जान पाया, लेकिन तब भी मेरे मन में यह सवाल बना रहा: इसका क्या कारण था कि द्मित्री, जो प्रेम को उससे बिल्कुल भिन्न ढंग से समझने की कोशिश कर रहा था जिस ढंग से कि आम तौर पर नौजवान लोग उसे समझते हैं, और जिसकी आंखों के सामने यह नेक और स्नेहमयी सोफ़िया इवानोव्ना हमेशा थी, अचानक इस रहस्यमयी ल्युबोव सेर्गेयेव्ना से प्रेम करने लगा, और उसने केवल इतना स्वीकार किया कि उसकी मौसी में भी कुछ अच्छे गुण हैं? यह कहावत बिल्कुल सच है कि "घर का जोगी जोगड़ा, आन गांव का सिद्ध।" दो में से एक ही बात हो सकती है: या तो हर आदमी में अच्छाई की अपेक्षा बुराई अधिक होती है, या फिर मनुष्य अच्छाई की अपेक्षा बुराई को ज़्यादा आसानी से ग्रहण कर लेता है। ल्युबोव सेर्गेयेव्ना को द्मित्री ज़्यादा दिन से नहीं जानता था, जबकि अपनी मौसी का प्रेम उसने अपने जन्म से ही पाया था।

अध्याय २५

अधिक घनिष्ठ परिचय

जब मैं बरामदे में वापस आया तो मैंने देखा कि वे लोग मेरी बातें बिल्कुल नहीं कर रही थीं, जैसा कि मैंने समझ रखा था: फिर भी, वारेंका पढ़ नहीं रही थी और किताब एक ओर को रखकर वह द्मित्री के साथ गरमागरम बहस में उलझी हुई थी, जो गर्दन में नेकटाई ठीक करते हुए, आंखें तरेरकर एक सिरे से दूसरे सिरे तक टहल

रहा था। उनके बीच बहस इवान याकोव्लेविच के बारे में और अंध-विश्वास के विषय पर हो रही थी; लेकिन उस बहस में इतनी गरमी थी कि यह नामुमकिन था कि उसके वास्तविक परंतु अनुल्लिखित कारण का पूरे परिवार के साथ कोई अधिक गहरा संबंध न हो। प्रिंसेस और ल्युबोव सेर्गेयेव्ना चुप बैठी एक-एक शब्द सुन रही थीं; स्पष्टतः, बीच-बीच में उनके मन में भी बहस में हिस्सा लेने की इच्छा पैदा होती थी, लेकिन वे अपने आपको रोक लेती थीं, और उनमें से एक वारेंका को और दूसरी द्मित्री को अपना प्रतिनिधित्व करने देती थी। जब मैंने अंदर क़दम रखा तो वारेंका ने मुझे उदासीनता के ऐसे भाव से देखा कि यह स्पष्ट था कि उसे उस बहस में इतनी गहरी दिलचस्पी थी कि उसे इसकी कोई परवाह नहीं थी कि वह जो कुछ कह रही थी उसे मैं सुन रहा हूं या नहीं। प्रिंसेस के चेहरे पर भी, जो स्पष्टतः वारेंका के पक्ष में थीं, वही भाव था। लेकिन मेरे सामने द्मित्री और भी जोश में आकर बहस करने लगा; और ल्युबोव सेर्गेयेव्ना ऐसा लग रहा था, मेरे आ जाने से बेहद डर गयी थी, और उसने किसी ख़ास आदमी को संबोधित न करते हुए कहा:

"बूढ़े लोगों का यह कहना बिल्कुल ठीक ही है – si jeunesse savait, si vieillesse pouvait.*"

लेकिन इस कहावत के सुना देने से झगड़े का अंत नहीं हुआ, बल्कि उसने मुझे केवल यह सोचने के लिए प्रेरित किया कि ल्युबोव सेर्गेयेव्ना और मेरा दोस्त ग़लत थे। हालांकि मैं एक छोटे-से घरेलू झगड़े के वक़्त मौजूद रहने पर कुछ अटपटा महसूस कर रहा था, फिर भी झगड़े के दौरान इस परिवार के लोगों के वास्तविक संबंधों को अच्छी तरह देखकर और यह महसूस करके ख़ुशी भी हो रही थी कि मेरी मौजूदगी से इन लोगों के खुलकर बोलने में कोई बाधा नहीं पड़ रही थी।

अकसर ऐसा होता है कि आप किसी परिवार को बरसों औचित्य के परदे की आड़ में देखते रहते हैं और उसके सदस्यों के असली संबंध आपके लिए एक रहस्य बने रहते हैं। (मैंने तो यहां तक देखा है कि

---

* काश जवानी में समझ होती, काश बुढ़ापे में शक्ति होती। (फ़्रांसीसी)

यह परदा जितना ही अभेद्य और सजावटी होता है, उतने ही भद्दे वे असली संबंध होते हैं जिन्हें वह आपसे छिपाता है!) फिर एक दिन, बिल्कुल अनजाने ही, ऐसा होता है कि उस परिवार में कोई सवाल उठ खड़ा होता है, जो बहुधा बहुत ही मामूली होता है, सुनहरे बालोंवाली किसी महिला के बारे में, या पति की घोड़ागाड़ी में बैठकर किसी से मिलने चले जाने के बारे में, – और, किसी प्रकट कारण के बिना ही यह झगड़ा अधिकाधिक उग्र रूप धारण करता जाता है, परदे की आड़ में उस स्थिति को सुलझाना असंभव हो जाता है, और अचानक सारे असली भद्दे संबंध नग्न रूप में सामने आ जाते हैं, जिस पर स्वयं लड़नेवाले आतंकित हो उठते हैं, और जो लोग वहां मौजूद होते हैं उन्हें भी आश्चर्य होता है; वह परदा, जो अब किसी भी चीज़ को नहीं ढकता, बेकार होकर लड़नेवाले दोनों पक्षों के बीच फड़फड़ाता रहता है, और आपको सिर्फ़ इस बात की याद दिलाता रहता है कि कितने लंबे अरसे तक आप उससे धोखा खाते रहे हैं। अकसर पूरे जोर से सिर चौखट से टकरा जाने से उतनी पीड़ा नहीं होती जितनी किसी दुखती हुई रग को हल्के-से छू भर देने से होती है। और ऐसी दुखती हुई रग लगभग हर परिवार में होती ज़रूर है। नेख़ल्यूदोव-परिवार में यह दुखती हुई रग थी ल्युबोव सेर्गेयेव्ना के प्रति मित्री का विचित्र प्यार, जिसकी वजह से उसकी मां और बहन के मन में ईर्ष्या की भावना भले ही न जागती हो, पर कम से कम उनकी स्वजनोंवाली भावना को ठेस अवश्य लगती थी। यही कारण था कि इवान याकोव्लेविच और अंधविश्वास के बारे में वह झगड़ा उन सभी के लिए इतना महत्वपूर्ण था।

"दूसरे लोग किस चीज़ का मज़ाक़ उड़ाते हैं और किस चीज़ से नफ़रत करते हैं," वारेंका ने हर अक्षर का उच्चारण साफ़-साफ़ करते हुए अपनी सुरीली आवाज़ में कहा, "उसमें तुम कोई न कोई लाजवाब खूबी खोज निकालने की कोशिश करते हो।"

"पहली बात तो यह कि कोई ऐसा आदमी ही जिसे गंभीरता छू भी न गयी हो इवान याकोव्लेविच जैसे शानदार आदमी से नफ़रत करने की बात कह सकता है," मित्री ने कुछ घबराकर सिर झटके के साथ बहन की ओर से मोड़ते हुए जवाब दिया, "और दूसरी बात

यह कि जान-बूझकर जो अपने सामने की भी अच्छाई को न देखने की कोशिश कर रहा है वह तुम हो!"

हम लोगों के बीच वापस आने पर सोफ़िया इवानोव्ना ने डरी-डरी नज़रों से कई बार पहले अपने भांजे को देखा, फिर अपनी भांजी को और फिर मुझे, और दो बार मानो कुछ कहने को अपना मुंह खोला, और गहरी आह भरकर रह गयीं।

"अच्छा, वार्या, मेहरबानी करके अपना पढ़ना जारी रखो," उन्होंने किताब वारेंका को देते हुए और उसका हाथ बड़े प्यार से थपकते हुए कहा, "मुझे यह जानने की बहुत बेचैनी है कि वह फिर उसे मिली कि नहीं। (सच तो यह है कि उस किताब में किसी के किसी और को पाने के बारे में शायद एक शब्द भी कहीं नहीं कहा गया था।) और, मीत्या बेटे, तुम अपने गालों पर कुछ लपेट लो क्योंकि हवा ठंडी है और तुम्हारे दांत में फिर दर्द होने लगेगा," उन्होंने अपने भांजे से कहा, इस बात की ओर कोई ध्यान दिये बिना कि वह उन्हें नाराज़गी से देख रहा था, शायद इसलिए कि उन्होंने उसके तर्क का क्रम भंग कर दिया था। किताब पढ़ने का सिलसिला फिर शुरू हुआ।

इस छोटी-सी झड़प से परिवार की शांति में और महिला-वृत्त में व्याप्त विवेकपूर्ण सामंजस्य की भावना में कोई विघ्न नहीं पड़ा।

इस वृत्त में, जिसे स्पष्टतः प्रिंसेस मार्या इवानोव्ना ने चरित्र और दिशा प्रदान की थी, मुझे एक प्रकार की तर्कसंगति की, और उसके साथ ही सादगी और सुरुचि की सर्वथा अनोखी और आकर्षक झलक दिखायी दी। मेरे लिए यह झलक चीज़ों की सुंदरता, शुद्धता और सादगी में व्यक्त हो रही थी – घंटी, किताबों की जिल्द, आराम-कुर्सी, मेज में; और प्रिंसेस की कसे हुए चुस्त कपड़ों में तनकर सीधे बैठने की मुद्रा में, नज़र आ जानेवाले उनके सफ़ेद बालों के घूंघरों में, पहली ही मुलाक़ात में मुझे सिर्फ़ Nicolas और 'वह' कहने के उनके अंदाज़ में; उनकी व्यस्तताओं में, ज़ोर से किताब पढ़ने में, सीने-पिरोने में और महिलाओं के हाथों के बेहद गोरेपन में। (उन सभी के हाथों की एक ख़ास पारिवारिक पहचान यह थी कि उनकी हथेलियों के कोमल भाग का रंग तो गहरा गुलाबी था, और हाथ

का ऊपरी भाग असाधारण रूप से गोरा था, इसकी वजह से दोनों के बीच सीधी स्पष्ट रेखा दिखायी देती थी।) लेकिन चरित्र की यह विशेषता सबसे बढ़कर उन तीनों के फ़ांसीसी और रूसी बोलने के बहुत ही अच्छे ढंग में व्यक्त होती थी; वे हर अक्षर का उच्चारण बिल्कुल साफ़-साफ़ करती थीं, और हर शब्द और हर फ़िक़रे को बिल्कुल नपे-तुले सही ढंग से ख़त्म करती थीं। इन सब बातों का नतीजा यह हुआ कि उन लोगों के बीच मुझे ज़रा भी अटपटापन महसूस नहीं हुआ, ख़ास तौर पर इस बात की वजह से कि वे लोग बहुत सहज भाव से और गंभीरता से मेरे साथ एक प्रौढ़ व्यक्ति जैसा बर्ताव करती थीं, मुझे अपने विचार बताती थीं और मेरी राय सुनती थीं। (इसकी मुझे इतनी कम आदत थी कि अपने चमकदार बटनों और नीले कफ़ों के बावजूद मुझे अब भी डर लगा रहता था कि कोई अचानक मुझसे कह देगा, "क्या तुम समझते हो कि लोग तुमसे गंभीरता से बातें करेंगे? जाओ, पढ़ो जाकर!") मैं बीच-बीच में उठ खड़ा होता रहा, बार-बार अपनी बैठने की जगह बदलता रहा, और बारेंका को छोड़कर मैंने सबसे बातें कीं, जिससे पहली मुलाक़ात में बात करना मुझे अभद्र, न जाने क्यों वर्जित लग रहा था।

किताब पढ़ने के दौरान, उसकी मधुर सुरीली आवाज़ सुनते हुए, मैं कभी उस पर एक नज़र डाल लेता था, कभी फूलों के बग़ीचे के रेतीले रास्ते पर, जिस पर जगह-जगह बारिश के पानी के गहरे रंग के गोल दायरे बन गये थे, फिर लाइम के पेड़ों पर, जिनकी पत्तियों पर एक बादल की हल्के नीले रंग के कगर से, जिसने चारों ओर से हमें घेर रखा था, अब भी एकाध बूंद टप से गिर पड़ती थी, उसके बाद मैंने फिर एक बार उसकी ओर देखा, फिर डूबते सूरज की अंतिम किरनों को, जिन्होंने पत्तियों से लदे हुए बर्च के पुराने वृक्षों को, जिनसे बारिश के पानी की बूंदें टपक रही थीं, अपनी रोशनी में लपेट रखा था, और फिर एक बार और बारेंका को देखा, और मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि उसकी सूरत-शक्ल बिल्कुल बदसूरत नहीं थी, जैसा कि मैंने शुरू में समझा था।

"बड़े अफ़सोस की बात है कि मैं पहले से ही दूसरी लड़की से प्रेम करता हूं," मैंने सोचा, "और यह कि बारेंका सोनेच्का नहीं

है। कितना अच्छा होगा अगर मैं अचानक इस परिवार का सदस्य बन जाऊं! मुझे मां, मौसी, बीवी सब कुछ एक साथ मिल जायेगा।" और इस तरह कल्पना करते हुए जब मैं किताब पढ़ने में व्यस्त वारेंका को एकटक देख रहा था, और सोच ही रहा था कि मैं उस पर वशीकरण मंत्र चला रहा हूं और उसे अपनी ओर देखने पर मजबूर कर रहा हूं कि इतने में वारेंका ने किताब पर से अपना सिर उठाया, एक नज़र मेरी ओर देखा, और मुझसे आंखें चार होने पर मुंह फेर लिया।

"अभी तक बारिश रुकी नहीं है," उसने कहा।

और सहसा मुझे एक विचित्र संवेदना का आभास हुआ। मुझे अचानक याद आया कि इस समय मुझे जो कुछ हो रहा था वह ठीक वैसा ही था जैसा कि एक बार पहले भी हो चुका था; कि उस समय भी हल्की-हल्की बारिश हो रही थी, और सूरज वर्च के पेड़ों के पीछे डूब रहा था, और मैं "उसकी" ओर देख रहा था, और "वह" पढ़ रही थी, और मैंने "उस" पर वशीकरण मंत्र चला दिया था, और "उसने" नजर उठाकर ऊपर देखा था, और उस वक़्त भी मुझे याद आया था कि ऐसा पहले हो चुका है।

"क्या यह 'वह' है? 'वह'?" मैंने सोचा, "क्या शुरूआत हो रही है?" लेकिन मैंने जल्दी से फ़ैसला किया कि वह दरअसल 'वह' नहीं है, और यह कि अभी यह शुरूआत नहीं है। "पहली बात तो यह कि यह सूरत-शक्ल की अच्छी नहीं है," मैंने सोचा, "और दूसरी बात यह कि यह तो महज़ एक नौजवान लड़की है, और मैं इससे बिल्कुल साधारण ढंग से मिला हूं, जबकि वह लाजवाब होगी और मैं उससे कहीं किसी असाधारण स्थान में मिलूंगा; और, इसके अलावा, यह परिवार मुझे इतना पसंद सिर्फ़ इसलिए है कि मैंने अभी तक कुछ देखा नहीं है," मैंने फ़ैसला किया, "लेकिन ज़ाहिर है, ऐसे और भी होंगे, और अपने जीवन में मैं कई के सम्पर्क में आऊंगा।"

अध्याय २६

मेरा सबसे श्रेयस्कर रूप

चाय के समय किताब पढ़ने का सिलसिला खत्म हो गया और औरतें जान-बूझकर, मुझे लगा ऐसा ही, ऐसे लोगों और ऐसी परिस्थितियों के बारे में बातें करने लगीं जिनसे मैं अपरिचित था, ताकि मेरा जो हार्दिक स्वागत हुआ था उसके बावजूद मैं उस अंतर को महसूस कर लूं जो उन लोगों के और मेरे बीच मौजूद था, उम्र में भी और हैसियत में भी। लेकिन, आम बातचीत में, जिसमें मैं अपनी पहलेवाली खामोशी की कसर पूरी कर सकता था, मैंने अपनी सराहनीय समझ-बूझ और मौलिकता का परिचय देने की कोशिश की, जिसके बारे में मैं समझता था कि अपनी छात्रोंवाली पोशाक की वजह से ऐसा करना विशेष रूप से मेरा कर्त्तव्य है। जब बातचीत की दिशा देहात के बंगलों की ओर मुड़ी तो अचानक मैंने बयान करना शुरू कर दिया कि मास्को के पास प्रिंस इवान इवानिच का ऐसा शानदार बंगला था कि लोग लंदन और पेरिस से उसे देखने आते थे, कि उसमें एक जंगलेदार बाड़ा था जिसकी लागत तीन लाख अस्सी हज़ार रूबल थी, और यह कि प्रिंस इवान इवानिच मेरे नज़दीकी रिश्तेदार थे, कि मैंने उसी दिन उनके साथ खाना खाया था, और उन्होंने मुझसे कहा था कि मैं आकर सारी गर्मी उनके बंगले में ज़रूर बिताऊं, लेकिन मैंने इंकार कर दिया था, क्योंकि मैं वहां कई बार हो आया था और यह कि उन तमाम बाड़ों और पुलों में मुझे कोई दिलचस्पी नहीं थी क्योंकि मैं ऐश-आराम बर्दाश्त नहीं कर सकता था, खास तौर पर देहात में, और यह कि मुझे यही पसंद था कि गांव में हर चीज़ गांव जैसी हो।... यह साफ़ और पेचीदा झूठ बोलने के बाद मैं झेंप गया, और मेरा चेहरा इतना लाल हो गया कि हर आदमी ने यह ज़रूर ताड़ लिया होगा कि मैं झूठ बोल रहा था। वारेंका, जिसने उसी समय चाय का प्याला मुझे दिया था और सोफ़िया इवानोव्ना, जो मेरे बोलते समय एकटक मुझे देखे जा रही थीं, दोनों ही ने मेरी ओर से मुंह फेर लिया और ऐसी मुद्रा बनाकर किसी और चीज़ के बारे में बातें

करने लगीं, जैसी मुद्रा मैंने बाद में अकसर नेक लोगों की उस वक़्त देखी है जब कोई बहुत ही कमउम्र आदमी उनके मुंह पर साफ़ झूठ बोलने लगता है, और जिस मुद्रा से यह आशय व्यक्त होता है, "हमें मालूम है कि वह झूठ बोल रहा है, लेकिन वह बेचारा ऐसा कर क्यों रहा है!"

प्रिंस इवान इवानिच के पास वह बंगला होने की बात मैंने सिर्फ़ इसलिए कही थी कि मुझे प्रिंस इवान इवानिच के साथ अपनी रिश्तेदारी और उसी दिन उनके साथ खाना खाने दोनों ही बातों का उल्लेख करने का इससे बेहतर कोई बहाना नहीं सूझा; लेकिन मैंने तीन लाख अस्सी हज़ार रूबल के जंगले का और उस घर में पहले भी अकसर हो आने का ज़िक्र क्यों किया था जबकि मैं पहले वहां एक बार भी नहीं गया था, और जा भी नहीं सकता था, क्योंकि प्रिंस इवान इवानिच सिर्फ़ मास्को या नेपल्स में रहते थे और यह बात नेख़ल्यूदोव-परिवार को अच्छी तरह मालूम थी। सचमुच, इसकी कोई वजह ख़ुद मेरी समझ में नहीं आती। न बचपन में, न किशोरावस्था में, न बाद में चलकर बड़े हो जाने पर, मैंने अपने अंदर झूठ बोलने का दुर्गुण कभी नहीं पाया; इसके विपरीत, मैं कुछ ज़्यादा ही खरा और ईमानदार रहा था; लेकिन तरुणावस्था के इस पहले चरण में सब कुछ दांव पर लगाकर झूठ बोलने की एक विचित्र इच्छा, और सो भी बिना किसी कारण के, मुझे आ दबोचती थी। "सब कुछ दांव पर लगाकर" मैं जान-बूझकर इसलिए कह रहा हूं कि मैं ऐसी चीज़ों के बारे में झूठ बोलता था जिनमें मेरा पकड़ा जाना बेहद आसान था। मुझे लगता है कि इस विचित्र प्रवृत्ति का मुख्य कारण यह था कि जो कुछ मैं था उससे बिल्कुल ही भिन्न रूप में अपने आपको प्रस्तुत करने की मुझमें एक दंभपूर्ण इच्छा थी, और इसके साथ ही यह अव्यावहारिक आशा भी जुड़ी रहती थी कि जीवन में ऐसा झूठ बोलूं कि पकड़ा न जाऊं।

चाय पीने के बाद चूंकि बारिश रुक गयी थी और शाम का वातावरण स्वच्छ और शांत था, इसलिए प्रिंसेस ने सुझाव रखा कि हम लोग नीचेवाले बाग़ में चलकर टहलें और उनके सबसे प्रिय स्थान को सराहें। अपने इस नियम का पालन करते हुए कि हमेशा मौलिकता का

परिचय देना चाहिये, और यह सोचकर कि प्रिंसेस और मेरे जैसे समझदार लोगों को शिष्टाचार की घिसी-पिटी बातों से ऊपर रहना चाहिये, मैंने जवाब दिया कि मुझे निरुद्देश्य टहलने से चिढ़ है, और यह कि मैं अगर कभी टहलता भी हूं तो अकेले। मेरी समझ में यह नहीं आया कि यह सरासर गुस्ताख़ी की बात थी; उस वक़्त मुझे ऐसा लगा कि घिसी-पिटी लल्लो-चप्पो की बातों से अधिक शर्मनाक कोई बात नहीं हो सकती और थोड़ी-सी अशिष्ट स्पष्टवादिता से बढ़कर रुचिकर और मौलिकता की बात कोई दूसरी नहीं हो सकती। फिर भी, अपने जवाब से बिल्कुल संतुष्ट रहकर मैं बाक़ी लोगों के साथ टहलने निकल पड़ा।

प्रिंसेस का प्रिय स्थान बाग़ में बहुत अंदर जाकर सबसे निचले भाग में दलदल के एक छोटे-से चप्पे पर बने हुए छोटे-से पुल पर था। वहां से जो कुछ दिखायी देता था वह बहुत ही थोड़ा था, लेकिन वह बहुत उदासी-भरा और रमणीक था। हम लोग कला और प्रकृति को एक-दूसरे में इतनी बुरी तरह गड्ड-मड्ड कर देते हैं कि प्रकृति के ये प्रकट रूप जिन्हें हमने कभी चित्रों में नहीं देखा है हमें वास्तविक प्रकृति नहीं प्रतीत होते – मानो प्रकृति अप्राकृतिक है – और, इसके विपरीत वे प्राकृतिक दृश्य जिनका चित्रण कला में बार-बार किया जा चुका हो हमें बिल्कुल घिसे-पिटे प्रतीत होते हैं और कभी-कभी केवल एक विचार और भावना से परिपूर्ण कुछ दृश्य हमें आडंबरपूर्ण, बनावटी लगते हैं। प्रिंसेस के प्रिय स्थान से आंखों के सामने आनेवाला दृश्य भी इसी प्रकार का था। उसमें एक छोटा-सा तालाब था जिसके चारों ओर घास-फूस उगा हुआ था; उसके ठीक पीछे खड़ी ढलानवाला एक टीला था जिस पर बड़े-बड़े पुराने पेड़ और झाड़ियां उगी हुई थीं, जिनकी अलग-अलग ढंग की हरियाली जहां-तहां एक-दूसरे में मिल गयी थी। वहीं अपनी मोटी-मोटी जड़ों से तालाब के गीले किनारे से लिपटा हुआ बर्च का एक पुराना वृक्ष था, जो बिल्कुल तालाब पर झुका आ रहा था, जिसने अपनी फुनगी एक ऊंचे-से चीड़ के पेड़ पर टिका रखी थी, और जो अपनी घुंघराली टहनियां तालाब की समतल सतह पर झुलाता रहता था, जिसमें वे झुकी हुई डालें और आस-पास की हरियाली प्रतिबिंबित होती रहती थीं।

"कितना सुंदर है!" प्रिंसेस ने किसी को विशेष रूप से संबो-

धित न करते हुए अपना सिर हिलाकर कहा।

"जी हां, बहुत ही लाजवाब है, लेकिन न जाने क्यों यह भयानक हद तक बिल्कुल नाटक के परदे की सीनरी जैसा लगता है," मैंने यह जताने की इच्छा से कहा कि मैं हर चीज़ के बारे में अपनी अलग राय रखता हूं।

मेरी बात मानो न सुनकर प्रिंसेस उस दृश्य को सराहती रहीं और अपनी बहन और ल्युबोव सेर्गेयेव्ना की ओर मुड़कर उन्होंने अलग-अलग ब्योरों की ओर संकेत किया – टेढ़ी-मेढ़ी डाल, और उसका प्रतिबिंब जो उन्हें ख़ास तौर पर पसंद था। सोफ़िया इवानोव्ना ने कहा कि हर चीज़ बहुत सुंदर थी, और यह कि उनकी बहन की आदत थी कि वह लगातार कई घंटे वहां बिताया करती थीं; लेकिन स्पष्ट था कि उन्होंने यह बात केवल प्रिंसेस को खुश करने के लिए कही थी। मैंने देखा है कि जिन लोगों में वह गुण होता है जिसे मैं सक्रिय प्रेम कहता हूं, वे शायद ही कभी प्रकृति के सौंदर्य के प्रति संवेदनशील होते हैं। ल्युबोव सेर्गेयेव्ना भी मंत्रमुग्ध लग रही थी, उसने लगे हाथ पूछा, "वह बर्च-वृक्ष किस चीज़ के सहारे टिका हुआ है? क्या वह बहुत दिन तक टिका रहेगा?" वह लगातार अपनी सुज़ेत को देखे जा रही थी, जो अपनी झबरी दुम हिलाते हुए टेढ़ी टांगों से इतना ऊधम मचाते हुए पुल पर इधर से उधर भाग रही थी, मानो उसके जीवन में यह पहला अवसर था जब वह कमरे में नहीं थी। द्मित्री ने अपनी मां से इस विषय पर एक तर्कपूर्ण बहस छेड़ दी कि कोई भी दृश्य जिसमें क्षितिज सीमित हो बहुत सुंदर हो ही नहीं सकता। वारेंका ने कुछ भी नहीं कहा। जब मैंने उस पर नज़र डाली तो वह अपने चेहरे का पार्श्व-भाग मेरी ओर किये और ठीक अपने सामने देखते हुए पुल के जंगले के सहारे झुकी खड़ी थी। शायद किसी चीज़ में उसे बहुत दिलचस्पी पैदा हो गयी थी, और उसने उसके हृदय को छू भी लिया था; स्पष्टतः वह दिवास्वप्नों में खोयी हुई थी और उसे न अपना ध्यान था और न इस बात का कि कोई उसे देख रहा था। उसकी बड़ी-बड़ी आंखों में एकाग्र अवलोकन, शांत, सुस्पष्ट चिंतन इतना भरा हुआ था, उसकी मुद्रा इतनी स्वाभाविक थी, और उसके छोटे क़द के बावजूद उसकी आकृति में इतनी भव्यता थी कि मैं

एक बार फिर मानो उसकी याद से चमत्कृत हो उठा और मैंने अपने आपसे प्रश्न किया, "कहीं यह शुरूआत तो नहीं है?" और एक बार फिर मैंने जवाब दिया कि मुझे सोनेच्का से प्रेम हो चुका है, और यह कि वारेंका केवल एक नवयुवती है जो मेरे दोस्त की बहन है। लेकिन उस समय वह मुझे अच्छी लग रही थी, और इसलिए मेरे मन में एक अस्पष्ट-सी इच्छा जागृत हुई कि मैं उससे कोई ऐसी बात कह दूं जो उसे थोड़ी अरुचिकर लगे।

"जानते हो, द्मित्री," मैंने वारेंका के और निकट जाकर, ताकि जो कुछ मैं कहने जा रहा था उसे वह सुन ले, अपने दोस्त से कहा, "मैं समझता हूं कि अगर मच्छर न भी होते तब भी इस जगह में कोई खूबसूरत बात नहीं थी, और अब तो," मैंने अपने माथे पर जोर से हाथ मारकर सचमुच एक मच्छर को मौत के घाट उतारते हुए कहा, "यह बिल्कुल ही बेकार जगह बन गयी है।"

"तो आपको प्रकृति से कोई लगाव नहीं है?" वारेंका ने अपना सिर घुमाये बिना मुझसे कहा।

"प्रकृति को सराहना निरर्थक बेकार का काम है," मैंने जवाब दिया; मैं इस बात से बहुत संतुष्ट था कि मैंने उससे छोटी-सी अरुचिकर और साथ ही मौलिक बात कह दी थी। वारेंका ने क्षण-भर के लिए अपनी भवें करुणा के भाव से कुछ ऊपर उठायीं और पहले ही जैसे शांत भाव से वह सीधे अपने सामने देखती रही।

मुझे उससे झुंझलाहट हुई; लेकिन इसके बावजूद, पुल का वह उड़े हुए रंगवाला सुरमई-सा जंगला, जिसके सहारे झुककर वह खड़ी थी, गहरे रंग के पानी में तालाब के ऊपर झुके हुए बर्च-वृक्ष की झुकी हुई डाल का प्रतिबिंब, जो अपनी लटकी हुई टहनियों तक जा पहुंचने का इच्छुक मालूम होता था, दलदल की बदबू, अपने माथे पर कुचले हुए मच्छर का आभास, और वारेंका की ध्यानमग्न एकाग्र दृष्टि और उसकी गंभीर मुद्रा—ये सब चीजें बाद में अक्सर मेरी कल्पना में अप्रत्याशित रूप से उभरती रहती थीं।

द्मित्री

टहलने के बाद जब हम लोग घर लौटे तो वारेंका का जी गाने को नहीं चाह रहा था, जबकि आम तौर पर शाम को वह गाती थी; और मैंने पूरे आत्म-विश्वास के साथ इसका श्रेय भी अपने ज़िम्मे ले लिया और मैं कल्पना करने लगा कि जो कुछ मैंने उससे पुल पर कहा था उसी की वजह से वह नहीं गा रही थी। नेख़ल्यूदोव-परिवार रात का खाना नहीं खाता था और वे लोग जल्दी सो जाते थे; उस दिन चूंकि द्मित्री के दांत में दर्द था, जैसी कि सोफ़िया इवानोव्ना ने भविष्यवाणी की थी, इसलिए हम लोग हमेशा से जल्दी उसके कमरे में चले गये। यह मानकर कि अपने नीले कॉलर और अपने चमकदार बटनों की वजह से जो भी मेरा कर्त्तव्य था वह मैंने निभा दिया था, और यह कि मैंने सबको ख़ुश कर दिया था, मैं बेहद ख़ुशमिज़ाजी और आत्म-संतोष की मनोदशा में था। इसके विपरीत द्मित्री झगड़े और दांत के दर्द की वजह से कुछ चुप-चुप और उदास था। वह मेज़ के पास बैठ गया, अपनी कॉपियां निकालीं—अपनी डायरी और वह मोटी कॉपी जिसमें वह हर रात को अपने पिछले और अगले काम लिखने का आदी हो चुका था—और लगातार माथे पर बल डाले और हाथ से अपने गाल को सहलाते हुए वह बड़ी देर तक उनमें कुछ लिखता रहा।

"अरे, मेरी जान छोड़ दे!" वह उस नौकरानी पर चिल्लाया जिसे सोफ़िया इवानोव्ना ने यह मालूम करने भेजा था कि उसके दांत का दर्द कैसा है, और यह कि उसे अपने दांत पर पुल्टिस तो नहीं बांधनी है। इसके बाद उसने मुझे बताया कि मेरा बिस्तर अभी तैयार हुआ जाता है, और यह कहकर कि वह फ़ौरन वापस आ रहा है वह ल्युबोव सेर्गेयेव्ना के पास चला गया।

"कितने अफ़सोस की बात है कि वारेंका ख़ूबसूरत नहीं है, काश वह सोनेच्का होती!" कमरे में अकेले रह जाने पर मैं सोचता रहा। "कितना अच्छा होता कि यूनिवर्सिटी की पढ़ाई पूरी करने के बाद

मैं उनके पास आता और शादी करने का प्रस्ताव रखता! मैं कहता, 'प्रिंसेस, हालांकि अब मैं नौजवान नहीं रहा और इसलिए मुहब्बत में दीवाना नहीं हो सकता, फिर भी मैं हमेशा आपको प्यारी बहन की तरह अपने दिल में जगह दूंगा।' 'और आपकी तो मैं पहले से ही बहुत इज्जत करने लगा हूं,' मैं उसकी मां से कहता, 'और जहां तक आपका सवाल है, सोफ़िया इवानोव्ना, यक़ीन जानिये कि मैं आपकी बहुत क़द्र करता हूं।' इसके बाद मैं सीधे-सादे ढंग से साफ़-साफ़ पूछता, 'क्या आप मुझसे शादी करेंगी?'–'हां,' और यह कहकर वह अपना हाथ मेरी ओर बढ़ा देतीं, और मैं उसे दबाकर कहता, 'मेरा प्यार शब्दों में नहीं, आचरण में व्यक्त होता है।' और क्या होगा," मेरे मन में यह विचार उठा, "अगर अचानक द्मित्री को ल्यूबा से प्यार हो जाये?" ल्यूबा तो उससे पहले ही से प्यार करती है,–और वह उससे शादी करना चाहे? तब हम दोनों में से किसी एक की शादी नहीं हो पायेगी। और यह बहुत ही अच्छी बात होगी, क्योंकि तब मैं यह करूंगा। मैं फ़ौरन समझ जाऊंगा कि मामला क्या है, मैं कुछ बोलूंगा नहीं, बल्कि सीधे द्मित्री के पास जाकर कहूंगा, मेरे दोस्त, हम लोग अपने राज़ एक-दूसरे से छिपाने की बेकार कोशिश करते रहे हैं। तुम जानते हो कि तुम्हारी बहन से मेरा प्रेम मेरे मरते दम तक क़ायम रहेगा। लेकिन मुझे सब कुछ मालूम है–तुमने मेरी सबसे बड़ी उम्मीद पर पानी फेर दिया है, तुमने मेरी ख़ुशी मुझसे छीन ली है; लेकिन निकोलाई इर्तेन्येव अपने जीवन-भर के दुख का बदला इस तरह लेता है–यह लो, यह रही मेरी बहन,' और यह कहकर मैं ल्यूबा का हाथ उसके हाथ में दे दूंगा। वह कहेगा, 'नहीं, कभी नहीं!...' और मैं कहूंगा, 'प्रिंस नेख़ल्यूदोव! मुझसे अधिक उदार बनने की आपकी कोशिश बेकार है। सारी दुनिया में निकोलाई इर्तेन्येव से बढ़कर उदार आदमी कोई नहीं है।' इसके बाद मैं झुककर सलाम करूंगा और वहां से चला आऊंगा। द्मित्री और ल्यूबा आंखों में आंसू भरे मेरे पीछे भागेंगे, और मेरी मिन्नत करेंगे कि मैं उनकी क़ुर्बानी स्वीकार कर लूं। और शायद मैं स्वीकार कर भी लूंगा और ख़ुशी से फूला न समाऊंगा अगर मुझे वारेंका से प्यार होगा। ये सपने इतने सुखद थे कि मेरा बहुत जी चाहता था कि मैं अपने दोस्त को

उनके बारे में बता दूं; लेकिन एक-दूसरे से कोई बात न छिपाने के अपने वचन के बावजूद न जाने क्यों मेरे लिए ऐसा करना वास्तव में असंभव था।

अपने दांत पर ल्युबोव सेर्गेयेव्ना से दवा की कुछ बूंदें डलवाकर जब द्मित्री उसके पास से आया तो उसका दर्द और भी बढ़ गया था, और इसलिए वह पहले से भी ज़्यादा उदास लग रहा था। मेरा बिस्तर उस वक़्त तक नहीं लगा था; एक छोटा-सा लड़का, जो द्मित्री का नौकर था, उससे पूछने आया कि मैं कहां सोऊंगा।

"भाड़ में जाओ तुम!" द्मित्री पांव पटककर चिल्लाया। "वास्का! वास्का! वास्का!" लड़के के जाते ही उसने ज़ोर से पुकारा, और हर बार उसकी आवाज़ ज़्यादा ऊंची होती गयी, "वास्का! मेरे लिए फ़र्श पर बिस्तर बिछा दो।"

"नहीं, फ़र्श पर मैं सो जाऊंगा," मैंने कहा।

"ख़ैर, कोई बात नहीं है। कहीं भी लगा दो," द्मित्री उसी क्रोध-भरे स्वर में कहता रहा। "अरे, लगाते क्यों नहीं?"

लेकिन स्पष्टतः वास्का की समझ में नहीं आया था कि उसे करना क्या है, इसलिए वह बुत बना खड़ा रहा।

"अरे, तुम्हें हो क्या गया है? सुनायी नहीं देता, जाओ करो न जैसा मैं कहता हूं, वास्का! वास्का!" द्मित्री अचानक गुस्से के मारे आपे से बाहर होकर चिल्लाया।

लेकिन अब भी वास्का की समझ में कुछ नहीं आया, और वह सहमा हुआ चुपचाप खड़ा रहा।

"तो तुमने फ़ैसला कर लिया है कि मुझे मर... मुझे पागल बना दोगे?" द्मित्री ने कहा और वह कुर्सी पर से उछलकर वास्का पर झपटा और उसने उसके सिर पर कई घूंसे जड़ दिये। वास्का सीधा कमरे से बाहर भागा। दरवाज़े पर रुककर द्मित्री ने मुझे मुड़कर देखा; उसके चेहरे पर एक क्षण के लिए रोष और क्रूरता का जो भाव आ गया था वह ऐसी नेकी, शर्मिंदगी और स्नेह-भरे बचकानेपन के भाव में बदल गया कि मुझे उस पर तरस आने लगा, और लाख चाहते हुए भी मैं उसकी तरफ़ से मुंह न फेर सका। उसने कुछ कहा नहीं, लेकिन बड़ी देर तक कमरे में इधर से उधर टहलता रहा; बीच-

बीच में वह मेरी ओर अनुनय-भरी दृष्टि से देख लेता था; इसके बाद उसने मेज पर से नोट-बुक उठाकर उसमें कुछ लिखा, अपना कोट उतारकर बड़ी सावधानी से उसे तह किया, उस कोने की ओर गया जहां देव-प्रतिमाएं टंगी हुई थीं और अपने बड़े-बड़े गोरे हाथ सीने पर बांधकर प्रार्थना करने लगा। वह इतनी देर प्रार्थना करता रहा कि वास्का को एक गद्दा लाकर फ़र्श पर बिछा देने का समय मिल गया, जैसा कि मैंने चुपके से उसे आदेश दे दिया था। मैं कपड़े उतारकर फर्श पर बिछाये गये बिस्तर पर लेट गया; लेकिन द्मित्री अभी तक प्रार्थना ही कर रहा था। जब मेरी नज़र द्मित्री की कुछ झुकी हुई पीठ और उसके तलुवों पर पड़ी, जो उसके फ़र्श पर झुककर माथा टेकने के समय बहुत ही विनीत भाव से मेरी ओर हो गये थे तो मुझे द्मित्री पर पहले से भी ज़्यादा प्यार आया, और मैं सोचता रहा, "मैं उसे बताऊं या न बताऊं कि मैं अपनी और उसकी बहन के बारे में क्या सपने देखता रहा था?" अपनी प्रार्थना पूरी करके द्मित्री आकर मेरे पास बिस्तर पर लेट गया, और अपनी कुहनी पर टिककर वह प्यार-भरी और लज्जित दृष्टि से बड़ी देर तक मुझे चुपचाप एकटक देखता रहा। स्पष्टतः ऐसा करने में उसे पीड़ा हो रही थी लेकिन ऐसा लगता था कि वह अपने आपको सज़ा दे रहा था। उसे देखकर मैं मुस्करा दिया। वह भी मुस्करा पड़ा।

"तुम कहते क्यों नहीं मुझसे," वह बोला, "कि मैंने बहुत ही निंदनीय हरकत की है? ज़ाहिर है तुमने अभी ऐसा सोचा होगा।"

"हां," मैंने जवाब दिया, हालांकि मैं किसी दूसरी ही बात के बारे में सोच रहा था, लेकिन मुझे ऐसा लगा कि मैं यही सोच रहा था, "हां, तुमने बिल्कुल अच्छा नहीं किया; मुझे तुमसे ऐसी उम्मीद नहीं थी," मैंने कहा, और उस समय मुझे उसे तुम कहकर संबोधित करने में विशेष संतोष मिला। "अच्छा, तुम्हारे दांतों का क्या हाल है?" मैंने इतना और पूछ लिया।

"पहले से बहुत अच्छा है। अरे, निकोलेंका, मेरे दोस्त," द्मित्री ने सहसा ऐसे स्नेह के आवेग से कहा कि ऐसा लगा कि उसकी चमकती हुई आंखों में आंसू छलक आये हैं, "मैं जानता हूं, मैं महसूस करता हूं कि मैं दुष्ट हूं; और भगवान देखता है कि मैं अपने आपको सुधारने

की कितनी कोशिश करता हूं, और किस तरह मैं उसकी विनती करता हूं कि वह मुझे वेहतर वना दे। लेकिन मैं करूं क्या, अगर मेरा स्वभाव ही इतना बुरा है? मैं करूं क्या? मैं अपने आपको वश में रखने की, अपने आपको सुधारने की कोशिश करता हूं; लेकिन अचानक यह असंभव हो जाता है और अकेले के लिए तो असंभव हो ही जाता है। मुझे किसी की मदद और सहारे की ज़रूरत है। ल्युवोव सेर्गेयेव्ना को लो–वह मुझे समझती है, मेरी मदद करती रहती है और उसने इस मामले में मेरी वहुत मदद की है। अपनी डायरी से मुझे मालूम है कि पिछले साल के दौरान मुझमें वहुत सुधार हुआ है। आह, निको-लेंका, मेरे दोस्त!" वह विचित्र और अनजाने स्नेह के साथ और ऐसे स्वर में कहता रहा जो इस स्वीकारोक्ति के वाद पहले की अपेक्षा कुछ शांत हो चुका था; "उस तरह की औरत के प्रभाव से कितना फ़र्क़ पड़ता है! मेरे भगवान! सोचो तो, जब मैं विल्कुल स्वतंत्र हो जाऊंगा तो मेरे लिए उसका जैसा दोस्त रखना कितना अच्छा होगा! उसके साथ मैं विल्कुल ही दूसरा आदमी हो जाता हूं।"

और इसके बाद द्मित्री मुझे विवाह की, देहात में जीवन विताने की और निरंतर आत्म-सुधार की अपनी योजनाएं बताने लगा।

"मैं देहात में रहूंगा। तुम मुझसे मिलने आया करोगे, शायद; और तुम्हारी शादी सोनेच्का से हो चुकी होगी," उसने कहा। "हमारे वच्चे साथ-साथ खेला करेंगे। ज़ाहिर है, इन सब बातों पर हंसी आती है, लेकिन आगे चलकर यह सब कुछ विल्कुल सच भी हो सकता है।"

"ज़रूर, क्यों नहीं!" मैंने मुस्कराते हुए कहा, और साथ ही मैं यह भी सोचता रहा कि अगर मैं उसकी वहन से शादी कर लूं तो और भी अच्छा हो।

"मैं तुमसे एक वात कहता हूं," थोड़ी देर चुप रहने के वाद उसने कहा, "तुम सिर्फ़ सोचते हो कि तुम्हें सोनेच्का से प्रेम है, लेकिन मुझे साफ़ दिखायी दे रहा है कि यह गंभीर वात नहीं है; तुम्हें अभी तक मालूम ही नहीं है कि प्रेम की असली भावना होती क्या है।"

मैंने कोई जवाव नहीं दिया क्योंकि मैं उससे लगभग पूरी तरह सहमत था। हम दोनों कुछ देर चुप रहे।

"तुमने यह तो देखा ही होगा कि आज फिर मुझे वेहद ताव आ

गया और वार्या के साथ मेरा बुरी तरह झगड़ा हुआ। बाद में मुझे बहुत बुरा लगा, ख़ास तौर पर इसलिए कि यह सब कुछ तुम्हारे सामने हुआ। हालांकि बहुत-सी बातों के बारे में वह ऐसे ढंग से सोचती है जैसे सोचना चाहिये नहीं लेकिन वह लाजवाब लड़की है, और जब तुम उसे ज़्यादा अच्छी तरह जान लोगे तो वह बहुत ही अच्छी लगेगी।

यह कहते-कहते कि मुझे प्रेम नहीं था उसने बातचीत का रुख़ जिस तरह अपनी बहन की तारीफ़ करने की ओर मोड़ दिया उससे मेरा जी बेहद ख़ुश हुआ और मैं झेंप गया; फिर भी मैंने उसकी बहन के बारे में उससे कुछ नहीं कहा, और हम लोग किसी और चीज़ के बारे में बातें करते रहे।

हम लोग इसी तरह पौ फटने तक बातें करते रहे, और जिस वक़्त द्मित्री जाकर अपने बिस्तर पर लेटा और उसने बत्ती बुझायी उस वक़्त खिड़की में से उषा की हल्की-हल्की लाली झांकने लगी थी।

"अच्छा, अब सो जायें," उसने कहा।

"हां," मैंने जवाब दिया, "लेकिन बस एक बात और।"

"क्या?"

"ज़िंदगी बहुत शानदार चीज़ है, है न?"

"हां, है तो," उसने ऐसी आवाज़ से जवाब दिया कि अंधेरे में भी मुझे लगा कि उसकी उल्लास-भरी, स्नेहमयी आंखों का भाव और बच्चों जैसी मुस्कराहट मुझे साफ़ दिखायी दे रही है।

अध्याय २८

देहात में

अगले दिन वोलोद्या और मैं डाक ले जानेवाली घोड़ागाड़ी पर बैठकर देहात के लिए रवाना हो गये। रास्ते में मास्को की सारी बातों को याद करते हुए मुझे सोनेच्का वलाखीना की याद आयी, लेकिन पूरी पांच मंज़िलें पार कर चुकने के बाद, शाम को। "अजीब बात

है," मैंने सोचा, "मुझे प्रेम है, फिर भी मैं उसके बारे में बिल्कुल भूल चुका था; मुझे उसके बारे में सोचना चाहिये।" और मैं सचमुच उसके बारे में सोचने लगा, जिस तरह कोई सफ़र करते हुए सोचता है, टूटे-टूटे क्रम में, लेकिन सजीव रूप से; और इस तरह मैंने अपने आपको ऐसी हालत में पहुंचा दिया कि न जाने क्यों मैंने इसे अनिवार्य समझा कि देहात पहुंचने के बाद दो दिन तक मैं सब घरवालों के सामने उदास और विचारों में डूबा हुआ लगूं, ख़ास तौर पर कात्या के सामने जिसे मैं इस तरह के मामलों का बहुत बड़ा पारखी समझता था, और जिसे मैंने अपने दिल की हालत का कुछ संकेत दे दिया था। लेकिन दूसरों की नज़रों में और ख़ुद अपनी नज़रों में ढोंग रचने की अपनी सारी कोशिशों के बावजूद, उन सारे चिन्हों को, जो मैंने प्रेम का शिकार होनेवाले दूसरे लोगों में देखे थे, जान-बूझकर अपना लेने के बावजूद, उन दो दिनों के दौरान मैं लगातार इस बात को ध्यान में न रख सका कि मैं प्रेम का शिकार हूं, बल्कि मुझे इसकी याद मुख्यत: शाम को आती थी; और आख़िरकार मैं देहात के जीवन के नये चक्कर और वहां की व्यस्तताओं में इतनी जल्दी फंस गया कि सोनेच्का के प्रति अपने प्रेम को मैं बिल्कुल भूल ही गया।

हम लोग पेत्रोव्स्कोये रात को पहुंचे थे; मैं इतनी गहरी नींद सो रहा था कि मुझे न घर दिखायी दिया, न बर्च-वृक्षों की पांतों के बीच से होकर जानेवाला रास्ता, और न ही मैं घर के किसी आदमी से मिला, क्योंकि सभी लोग न जाने कबके सो चुके थे। बूढ़े फ़ोका ने, कमर झुकाये, नंगे पांव, अपनी पत्नी की कोई रूई-भरी बंडी पहने हाथ में मोमबत्ती लिये आकर हम लोगों के लिए दरवाज़ा खोला। हमें देखकर वह ख़ुशी के मारे कांपने लगा, उसने हम लोगों के कंधे पर प्यार किया, जल्दी से अपना नमदा समेटा, और कपड़े पहनने लगा। दालान और सीढ़ियों से गुज़रते समय मैं पूरी तरह जाग नहीं रहा था; लेकिन बाहरवाले छोटे कमरे में पहुंचने पर दरवाज़े का ताला, कुंडा, ऐंठे हुए तख़्ते, संदूक़, बाबा आदम के ज़माने का शमादान जिस पर पहले ही की तरह अब भी पिघली हुई चरबी के धब्बे पड़े हुए थे, कुछ ही देर पहले जलायी गयी ठंडी, झुकी हुई मोमबत्ती की परछाईं, हमेशा धूल से अटी रहने-

वाली दोहरी खिड़की, जिसमें से धूल कभी झाड़ी नहीं जाती थी और जिसके पीछे, मुझे याद था, पहाड़ी ऐश का पेड़ उगा हुआ था – ये सब चीजें इतनी जानी-पहचानी थीं, इनके साथ इतनी स्मृतियां जुड़ी हुई थीं, यह सब कुछ अपने आप में इतना सामंजस्यपूर्ण था, मानो एक ही विचार की लड़ी में पिरोया हुआ हो, कि सहसा मैं इस प्यारे पुराने घर का स्पर्श अनुभव करने लगा। "आखिर हम दोनों, यह घर और मैं," मैं सोचने लगा, "इतने दिन तक एक-दूसरे के बिना रहे कैसे?" और न जाने क्यों जल्दी-जल्दी मैं यह देखने के लिए लपका कि कमरे तो वही हैं न। हर चीज़ वही थी, बस हुआ यह था कि हर चीज पहले से छोटी और नीची हो गयी थी, जबकि मैं पहले से ज़्यादा लंबा, भारी और भोंडा हो गया था। लेकिन मैं जैसा भी था, घर ने बहुत खुश होकर मुझे अपनी बांहों में समेट लिया; और फ़र्श के हर तख्ते, हर खिड़की, सीढ़ियों के हर ज़ीने, हर आवाज ने मेरे अंदर कभी लौटकर न आनेवाले सुखद अतीत की आकृतियों, भावनाओं और घटनाओं की एक पूरी दुनिया जगा दी। हम लोग उस कमरे में गये जहां हम बचपन में सोते थे; कोनों के अंधेरे में और दरवाज़ों के पीछे एक बार फिर मैंने अपने बचपन के सारे भय छिपे हुए पाये। हम ड्राइंग-रूम में गये; कमरे की हर चीज़ पर मातृत्व का वही कोमल भाव बिखरा हुआ था। हम हॉल में गये; ऐसा लग रहा था मानो बच्चों का ऊधमी, चिंतामुक्त उल्लास घर के इस खंड में अभी तक बसा हुआ था और इस बात की प्रतीक्षा कर रहा था कि कोई उसे फिर से जगा दे। बैठक में, जहां फ़ोका हमें ले गया और जहां उसने हमारे बिस्तर लगाये थे, ऐसा लगता था कि हर चीज – आईना, ओटें, लकड़ी की पुरानी देव-प्रतिमा, सफ़ेद कागज़ से मढ़ी हुई दीवारों का हर उभार – सभी चीजें व्यथा का, मौत का और उस सब का पता दे रही थीं जिसका अस्तित्व अब फिर कभी संभव नहीं था।

हम लोग लेट गये और फ़ोका रात्रि के लिए शुभकामनाएं व्यक्त करके हमसे विदा लेकर चला गया।

"मां इसी कमरे में मरी थीं न?" वोलोद्या ने कहा।

मैंने उसके सवाल का जवाब नहीं दिया और जताता रहा कि जैसे सो गया हूं। अगर मैंने एक शब्द भी कहा होता तो मैं रो पड़ता।

सुबह उठने पर मैंने देखा कि पापा अभी तक अपना ड्रेसिंग-गाऊन और अपनी भड़कीली सलीपरें पहने हुए मुंह में सिगार दवाये वोलोद्या के पलंग पर बैठे उससे वातें कर रहे हैं और हंस रहे हैं। वह ख़ुश होकर अपना कंधा कुछ विचकाते हुए उछल पड़े, एक छलांग में मेरे पास पहुंच गये और अपने बड़े-से हाथ से मेरी पीठ पर धप मारकर उन्होंने अपना गाल मेरी ओर करके मेरे होंटों से लगा दिया।

"शावाश, डिप्लोमैट, शुक्रिया," उन्होंने अपनी छोटी-छोटी चमकती हुई आंखों से मुझे एकटक देखते हुए अपने ख़ास मज़ाकिया दुलार-भरे लहजे में कहा। "वोलोद्या ने मुझे बताया कि तुम वहुत अच्छे नंवरों से पास हुए, यह वहुत अच्छी वात है। जव तुम्हारे मन में वेवक़ूफ़ी नहीं होती है, तव तुम वहुत अच्छे लड़के रहते हो। शावाश, वेटे, शुक्रिया। अच्छा, अभी तो यहां हम लोग खूव मज़े करेंगे, और जाड़ों में शायद हम लोग सेंट पीटर्सवर्ग चले जायेंगे; अफ़सोस वस इस वात का है कि शिकार के दिन वीत चुके हैं, वरना मैं तुम लोगों का मन वहलाने का कुछ इंतज़ाम करता। लेकिन वंदूक़ से तुम शिकार कर सकते हो, वोल्डेमार। शिकार के लिए चिड़ियों की यहां कोई कमी नहीं है, किसी दिन मैं ख़ुद तुम्हारे साथ चलूंगा। और भगवान ने चाहा तो जाड़ों में हम सेंट पीटर्सवर्ग चले जायेंगे और वहां तुम लोगों से मिलोगे और नये संवंध क़ायम करोगे। लड़को, अव तुम वड़े हो गये हो, और मैं अभी वोल्डेमार से कह रहा था कि अव तुम लोग अपने पैरों पर खड़े हो गये हो और मेरी ज़िम्मेदारी पूरी हो गयी है; अव तुम अकेले चल सकते हो। और मुझसे अगर कोई सलाह लेना चाहो तो वेझिझक मांग लेना – अव मैं तुम्हारी देखभाल करनेवाला नहीं, वल्कि तुम्हारा दोस्त हूं, कम से कम तुम्हारा दोस्त और साथी और सलाहकार होना चाहता हूं, जहां मैं किसी काम आ सकूं, वस इससे ज़्यादा कुछ नहीं। यह बात तुम्हारे फ़लसफ़े से कैसे मेल खाती है, निकोलेंका? ठीक है या ग़लत, क्यों?"

ज़ाहिर है कि मैंने जवाव दिया कि वह पूरी तरह मेल खाती थी, और मैं सचमुच समझता भी यही था। उस दिन पापा की मुद्रा एक ख़ास ढंग से आकर्षक, प्रमुदित और उल्लास-भरी रही; और मेरे साथ उनके इन नये संवंधों की वजह से, जैसे किसी वरावरवाले या

किसी साथी के साथ होते हैं, मैं उन्हें पहले से भी ज़्यादा प्यार करने लगा।

"अच्छा, यह बताओ कि तुम हमारे सब रिश्तेदारों से मिलकर आये थे? ईविन-परिवार से? बूढ़े ईविन साहब से मिले थे? क्या कहा उन्होंने तुमसे?" वह मुझसे सवाल पूछते रहे। "प्रिंस इवान इवानिच से मिलने गये थे?"

कपड़े पहने बिना हम लोग इतनी देर तक बातें करते रहे कि सूरज बैठक की खिड़कियों से विदा होने लगा था; और याकोव, जो पहले जितना ही बूढ़ा था और पीठ के पीछे हाथ करके अपनी उंगलियां मरोड़ता रहता था और बार-बार कहता रहता था "और फिर", कमरे में आया और उसने पापा को सूचना दी कि बग्घी तैयार थी।

"कहां जा रहे हैं आप?" मैंने पापा से पूछा।

"अरे, मैं तो भूल ही गया था," पापा ने कुछ चिढ़कर कंधा बिचकाते और उलझन से खांसते हुए कहा। "मैंने आज येपिफ़ानोव के घर जाने का वादा किया था। तुम्हें येपिफ़ानोवा की याद है, la belle Flamande की? वह तुम्हारी मां से मिलने आया करती थीं। बहुत भले लोग हैं," इतना कहकर पापा कुछ खिसियाकर कंधा बिचकाते हुए (मुझे लगा ऐसा ही) कमरे से चले गये।

हमारी बातचीत के दौरान ल्यूबा ने कई बार दरवाज़े तक आकर ज़ोर से पूछा था, "मैं अंदर आ सकती हूं?" लेकिन हर बार पापा ने दरवाज़े के पार ही चिल्लाकर उससे कह दिया था, "क़तई नहीं क्योंकि हम लोगों ने ठीक से कपड़े नहीं पहन रखे हैं।"

"हर्ज ही क्या है? मैं पहले भी आपको ड्रेसिंग-गाऊन पहने देख चुकी हूं।"

"तुम अपने भाइयों से इस हालत में कैसे मिल सकती हो जबकि उन्होंने अपने वे कपड़े भी नहीं पहन रखे हैं जिनकी चर्चा भी नहीं की जाती," पापा ने चिल्लाकर उससे कहा। "अगर वे लोग तुम्हारा दरवाज़ा खटखटायें, तो क्या यह तुम्हारे लिए काफ़ी होगा? अच्छा, लड़को, खटखटाओ। इस तरह के कपड़े पहनकर उनके लिए तुमसे बात करना भी ठीक नहीं है।"

"ओह, तुम लोग कितने बुरे हो! बहरहाल, जल्दी करो और

नीचे बैठक में आ जाओ। मीमी तुम लोगों से मिलने को तड़प रही हैं!" ल्यूबा ने बाहर से पुकारकर कहा।

पापा के जाते ही मैंने झटपट अपना छात्रोंवाला कोट पहना और ड्राइंग-रूम में जा पहुंचा। इसके विपरीत, वोलोद्या को कोई जल्दी नहीं थी और वह बड़ी देर तक ऊपर ही याकोव से बातें करता रहा कि चहे और वनमुरग़ी का शिकार करने के लिए सबसे अच्छी जगह कौन-सी है। जैसा कि मैं पहले ही बता चुका हूं, वह किसी चीज़ से उतना नहीं डरता था जितना कि, जिसे वह कहता था, अपने भैया, बहनिया और पप्पा के प्रति भावुकता दिखाने से; और भावुकता के हर प्रदर्शन से बचने के चक्कर में वह दूसरे छोर पर पहुंच गया— भावशून्यता के छोर पर—जिसकी वजह से अकसर उन लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचती थी जो इसका कारण नहीं समझ पाते थे। बाहरवाले छोटे कमरे में मेरी मुठभेड़ पापा से हो गयी जो तेज़ी से छोटे-छोटे क़दम बढ़ाते हुए घोड़ागाड़ी की ओर लपके चले जा रहे थे। उन्होंने अपना नया फ़ैशनेबुल मास्कोवाला कोट पहन रखा था और ख़ुशबू से महक रहे थे। मुझ पर नज़र पड़ते ही उन्होंने बड़ी मस्ती से सिर हिलाया मानो कह रहे हों, "सब कुछ अच्छा है न?" और एक बार फिर मेरा ध्यान उनकी आंखों में उल्लास के उस भाव की ओर गया जो मैं उसी दिन सवेरे पहले ही देख चुका था।

ड्राइंग-रूम वही रोशनीदार, ऊंचा-सा कमरा था, जिसमें पीले-से रंग का बड़ा-सा अंग्रेज़ी पियानो रखा था; उसकी बड़ी-बड़ी खिड़कियां खुली हुई थीं, जिनमें से बाग़ के हरे-हरे पेड़ और मटमैले लाल रंग के रास्ते मगन होकर झांक रहे थे। मीमी और ल्यूबा को प्यार करने के बाद मैं कात्या के पास जा रहा था कि अचानक मैंने सोचा कि अभी उसे प्यार करना उचित नहीं होगा; यह सोचकर मैं ठिठक गया और खिसियाकर बिल्कुल चुप रह गया। कात्या ने, जो बिल्कुल अटपटा नहीं महसूस कर रही थी, अपना गोरा-गोरा हाथ मेरी ओर बढ़ा दिया, और यूनिवर्सिटी में भरती हो जाने पर मुझे बधाई दी। जब वोलोद्या अंदर आया तो कात्या को देखकर उसका भी वही हाल हुआ। सच है साथ-साथ पलने-बढ़ने और उस पूरे दौरान में रोज़ एक-दूसरे को देखते रहने के आदी हो चुकने के बाद यह फ़ैसला करना

मशकिल था कि पहली बार अलग होने के बाद अब हम लोग एक-दूसरे का अभिवादन किस तरह करें। कात्या का चेहरा हम सब से ज्यादा लाल हो गया। वोलोद्या ने किसी तरह का कोई अटपटापन महसूस नहीं किया, लेकिन उसकी ओर थोड़ा-सा झुककर वह ल्यूबा के पास चला गया जिससे उसने थोड़ी देर बात की और सो भी गंभीरता से नहीं; उसके बाद वह कहीं टहलने चला गया।

अध्याय २६

लड़कियों की तरफ़ हमारा रवैया

लड़कियों के बारे में वोलोद्या के विचार इतने विचित्र थे कि वह इस तरह के सवालों में तो दिलचस्पी ले सकता था: क्या वे भूखी थीं? क्या वे ठीक से सोयी थीं? क्या उन्होंने ढंग के कपड़े पहन रखे थे? उन्होंने फ़ांसीसी बोलने में कोई ऐसी ग़लतियां तो नहीं की थीं जिनकी वजह से उसे अजनबियों के सामने शर्मिंदा होना पड़े? लेकिन वह इस विचार को कभी स्वीकार नहीं करता था कि उनका कोई भी मानवीय विचार या भावना हो सकती थी, और इससे भी कम वह इस बात को मानता था कि उनके साथ किसी विषय पर गंभीरता से बातें की जा सकती थीं। अगर वे उससे कोई गंभीर सवाल पूछती थीं (लेकिन ऐसा करने से वे बचने लगी थीं), अगर वे उससे किसी उपन्यास के बारे में या यूनिवर्सिटी में उसकी पढ़ाई के बारे में उसकी राय पूछती थीं, तो वह मुंह बनाकर चुपचाप वहां से चल देता था या जवाब में फ़ांसीसी का कोई फ़िक़रा तोड़-मरोड़कर कह देता था, जैसे comme ci tri joli.* या ऐसी ही कोई चीज़; या फिर, बहुत गंभीर और जानबूझकर बेवक़ूफ़ों जैसी सूरत बनाकर वह कोई ऐसा शब्द कह देता था जिसका कोई तुक या उस सवाल से कोई संबंध नहीं होता था, फ़ौरन अपनी आंखों में धुंधलापन लाकर वह कहता था,

---

*Comme c'est très joli – कितना अच्छा। – अनु०

"डबल रोटी को" या "वे चले गये", या "करमकल्ला" या इसी तरह की कोई और चीज़। अगर कभी मैं ल्यूबा या कात्या के बताये हुए शब्दों को उसके सामने दोहराता था तो वह हमेशा कहता था:

"अच्छा! तुम अभी तक उनसे बहस करते हो? तुम अभी तक बुद्धू हो।"

उसकी इस बात से तिरस्कार का जो गहरा और हमेशा एक जैसा भाव व्यक्त होता था उसे पूरी तरह समझने के लिए उसी के मुंह से यह बात सुनना ज़रूरी था। वोलोद्या को बालिग़ हुए दो साल हो चुके थे; वह जिस ख़ूबसूरत औरत से भी मिलता था उससे प्यार करने लगता था; फिर भी, हालांकि वह कात्या से रोज़ मिलता था, जो दो साल से लंबी पोशाकें पहनती आ रही थी और दिन-ब-दिन ख़ूबसूरत होती जा रही थी, लेकिन उससे प्रेम की संभावना उसके दिमाग़ में कभी उठी ही नहीं थी। उसका यह रवैया शायद इस वजह से पैदा हुआ था कि बचपन की नीरस स्मृतियां–मास्टर साहब की रूलर, उसके नख़रे–उसकी याद में अभी तक बिल्कुल ताज़ा थीं; या विरक्ति की उस भावना से जो हर घरेलू चीज़ के प्रति बहुत कमउम्र लोगों के मन में होती है, या मनुष्य की उस सामान्य कमज़ोरी से जिसमें जीवन के आरंभ में ही किसी अच्छी या बहुत सुंदर चीज़ से मिलने पर आदमी सोचने लगता है, "अरे, ऐसी तो अभी ज़िंदगी में बहुत मिलेंगी"–बहरहाल, अभी तक वोलोद्या ने कात्या को मर्द की नज़रों से नहीं देखा था।

उस गर्मी भर वोलोद्या स्पष्टतः बहुत ही उकताया हुआ रहा। उसकी उकताहट की वजह थी हम लोगों के प्रति उसकी तिरस्कार की भावना, जिसे, जैसा कि मैं पहले बता चुका हूं, वह छिपाने की कोई कोशिश नहीं करता था। उसके चेहरे की मुद्रा हमेशा यही कहती हुई लगती थी: "ओह! कैसी उकताहट है! कोई बात करने को भी नहीं है।" सुबह वह या शिकार को अकेला निकल जाता, या दोपहर के खाने तक कपड़े बदले बिना अपने कमरे में लेटा कोई किताब पढ़ता रहता। अगर पापा घर पर नहीं होते थे तो वह किताब लिये-लिये ही खाने पहुंच जाता था और हम लोगों से एक अक्षर भी बोले बिना

पड़ना रहता था, जिसकी वजह से हम लोग ऐसा महसूस करते थे जैसे हमने उसके प्रति कोई अपराध किया हो। शाम को भी वह ड्राइंग-रूम में सोफ़े पर पांव फैलाकर लेट जाता था और या तो अपनी कुहनी पर सिर रखकर सो जाता था, या गंभीर मुद्रा से हम लोगों को बिल्कुल अनहोनी कहानियां सुनाता रहता था, जो कभी तो निहायत बेहूदा होती थीं, जिसकी वजह से मीमी का गुस्सा भड़क उठता था और उनका चेहरा जगह-जगह लाल हो उठता था और हम लोग हंसते-हंसते लोट-पोट हो जाते थे; लेकिन पापा को छोड़कर वह परिवार के किसी सदस्य के साथ संजीदगी से बात करना गवारा नहीं करता था, या फिर कभी-कभी मुझसे। लड़कियों के मामले में अनायास ही मैं अपने भाई के रवैये की नक़ल करने लगा था, हालांकि भावुकता से मैं उतना नहीं डरता था जितना वह डरता था, और लड़कियों के प्रति मेरी तिरस्कार की भावना भी उतनी गहरी और मज़बूत नहीं थी। उस गर्मी में मन बहलाने का कोई और तरीक़ा न होने की वजह से मैंने ल्यूबा और कात्या के साथ अधिक घनिष्ठ संबंध बनाने और उनसे बातचीत करने की भी कई कोशिशें कीं; लेकिन हर बार मैंने उनमें तर्कसंगत ढंग से सोचने की क्षमता, और सीधी से सीधी, बिल्कुल साधारण चीज़ों की जानकारी का ऐसा अभाव पाया, जैसे यह कि धन क्या होता है, यूनिवर्सिटी में क्या पढ़ाया जाता है, लड़ाई क्या होती है, वग़ैरह-वग़ैरह, और इन सभी चीज़ों की व्याख्या के प्रति उनमें इतनी उदासीनता थी, कि इन कोशिशों का नतीजा केवल यह हुआ कि उनके बारे में मेरी जो ख़राब राय थी वह और पक्की हो गयी।

मुझे याद है कि एक दिन शाम को ल्यूबा पियानो पर कोई अत्यंत दुरूह धुन बार-बार बजाये चली जा रही थी। वोलोद्या ड्राइंग-रूम में सोफ़े पर पड़ा ऊंघ रहा था और रह-रहकर कुछ द्वेषपूर्ण व्यंग के साथ, लेकिन किसी व्यक्ति विशेष को संबोधित किये बिना, वह बुड़बुड़ा उठता था, "अरे, वाह! क्या सच्चे सुर हैं... बीथोवेन को भी मात कर दिया!... (यह नाम वह विशेष व्यंग के साथ लेता था) कमाल कर दिया – चलो, एक बार फिर! यह हुई बात," वग़ैरह-वग़ैरह। कात्या और मैं चाय की मेज़ पर बैठे थे, और मुझे याद नहीं कि कात्या

ने किस तरह बातचीत का रुख अपने प्रिय विषय की ओर मोड़ दिया—प्रेम की ओर। मैं फ़लसफ़ा बघारने की मनःस्थिति में था, इसलिए प्रेम की व्याख्या इस रूप में करके मैंने शुरूआत ही बहुत ऊंचे से की कि किसी ऐसी चीज़ को पाने की इच्छा को जो हमारे पास न हो, प्रेम कहते हैं, वग़ैरह-वग़ैरह। लेकिन कात्या ने जवाब दिया कि, इसके विपरीत, अगर कोई लड़की किसी आदमी से उसके पैसे की ख़ातिर शादी करने की बात सोचे तो वह प्रेम नहीं होगा, और यह कि उसकी राय में जायदाद सबसे बेकार चीज़ है, लेकिन सच्चा प्रेम सिर्फ़ वह होता है जो वियोग को सहन कर सके (इसका अर्थ मैंने यह समझा कि उसका संकेत दुबकोव की ओर था)। हमारी बातचीत स्पष्टतः वोलोद्या के कानों में पड़ी होगी; उसने कुहनी के बल अपने आपको थोड़ा ऊपर उठाया और चिल्लाकर पूछा:

"कात्या, रूसियों को?"

"उफ़, फिर वही तुम्हारी हमेशावाली बकवास!" कात्या ने कहा।

"क्या? मिर्च के बर्तन में?" वोलोद्या हर मात्रा पर ज़ोर देकर कहता रहा। और मैं यह सोचे बिना न रह सका कि वह बिल्कुल ठीक था।

बुद्धिमत्ता, संवेदनशीलता और कलात्मक अनुभूति के सामान्य गुणों के अलावा एक विशेष गुण भी होता है जो समाज के विभिन्न वृत्तों में, और विशेष रूप से परिवारों में, अधिक या कम मात्रा में होता है, जिसे मैं **आपसी समझ-बूझ** कहता हूं। इस गुण की बुनियादी बात होती है एक स्वीकृत अनुपात की भावना, और चीज़ों के बारे में स्थिर दृष्टिकोण। एक ही वृत्त के या एक ही परिवार के दो व्यक्ति, जिनमें यह गुण हो, हमेशा अपनी भावना की अभिव्यक्ति को एक हद तक पहुंचने देते हैं जिससे आगे जाने पर वे दोनों ही कोरे शब्दाडंबर देखते हैं। दोनों ही एक साथ समझ लेते हैं कि कहां पर प्रशंसा की सीमा समाप्त होती है और व्यंग की सीमा शुरू होती है, कहां सच्चा उत्साह समाप्त होता है और दिखावा शुरू होता है, जो दूसरी समझ-बूझवाले लोगों के लिए बिल्कुल ही उल्टे मतलब की बात हो सकती है। एक ही समझ-बूझ रखनेवाले लोग हर वस्तु पर सरसरी-सी नज़र

जानकर उसका हास्यास्पद, या सुंदर, अथवा घृणास्पद पहलू देखते हैं। समझ-बूझ के इस तादात्म्य को सुगम बनाने के लिए एक ही वृत्त अथवा परिवार के लोगों के बीच अपनी अलग ही एक भाषा, अपने मुहावरे, अपने कुछ शब्द तक पैदा हो जाते हैं, जो ऐसे सूक्ष्म अभिप्रायों के सूचक होते हैं जिनका दूसरों के लिए कोई अस्तित्व भी नहीं होता। हमारे परिवार में यह आपसी समझ-बूझ अधिकतम सीमा तक पापा और हम दो भाइयों के बीच विकसित हो गयी थी। दुबकोव भी हमारे इस छोटे-से वृत्त में बहुत अच्छी तरह खप जाता था, और "समझता था"; जबकि द्मित्री उससे कहीं ज़्यादा होशियार होने के बावजूद इस मामले में बिल्कुल बुद्धू था। लेकिन यह गुण परिष्कार की जिस हद तक वोलोद्या और मेरे बीच विकसित हुआ था, जो बिल्कुल एक ही परिस्थितियों में पले-बढ़े थे, उतना किसी और के बीच नहीं हुआ था। पापा कबके हम दोनों से बहुत पीछे रह गये थे, और बहुत-सी ऐसी बातें जो हमारे लिए दो दूनी चार की तरह स्पष्ट थीं वे उनकी समझ में नहीं आती थीं। मिसाल के लिए, भगवान जाने क्यों, वोलोद्या और मेरे बीच इन शब्दों और उनके तदनुरूप अर्थों के बारे में एक सहमति पैदा हो चुकी थी: **किशमिश** का अर्थ था यह प्रकट करने की दंभपूर्ण इच्छा कि मेरे पास पैसा है; **टक्कर** (इस शब्द का उच्चारण करते समय जरूरी था कि उंगलियां आपस में जोड़ दी जायें और एक साथ दोनों व्यंजनों पर विशेष बल दिया जाये) का अर्थ था कोई ऐसी चीज जो ताजा, स्वस्थ, सुचारु हो पर भड़कीली न हो; किसी संज्ञा का प्रयोग बहुवचन रूप में करने का अर्थ होता था उस चीज़ के प्रति अनुचित आकर्षण, वग़ैरह-वग़ैरह। बल्कि सच तो यह है कि अर्थ चेहरे के भाव पर, पूरी बातचीत पर ही निर्भर रहता था; इसलिए हममें से कोई भी किसी नये सूक्ष्म अर्थ को व्यक्त करने के लिए जो भी नयी अभिव्यक्ति ईजाद करता था उसे दूसरा पहले ही संकेत में ठीक उसी अर्थ में समझ लेता था। लड़कियों में हमारी जैसी समझ-बूझ नहीं थी और हमारे नैतिक दृष्टि से अलग होने का, और उनके प्रति हमारी तिरस्कार की भावना का यही मुख्य कारण था।

शायद उनकी अपनी अलग ही एक **आपसी समझ-बूझ** थी; लेकिन वह हमारी समझ-बूझ से इतनी भिन्न थी कि जो हमारे लिए शब्दाडं-

बर होता था वह उनके लिए वास्तविक भावना होती थी; हमारा व्यंग उनके लिए सत्य होता था, इत्यादि-इत्यादि। उस समय यह बात मेरी समझ में नहीं आती थी कि इसमें उनका कोई दोष नहीं था, और इस तरह की "समझ-बूझ" न रखने के बावजूद वे बहुत अच्छी और होशियार लड़कियां थीं; पर उस समय मैं उनसे नफ़रत करता था। इसके अलावा, चूंकि स्पष्टवादिता का विचार मेरे हाथ लग गया था और मैंने अपने मामले में उसे चरम सीमा तक लागू किया था, मैं ल्यूबा के शांत और विश्वासपूर्ण स्वभाव के कारण उस पर बातों को छिपाने और बनावटी आचरण का आरोप लगाता था, जो अपने विचारों और अपनी आत्मा की सहज प्रवृत्तियों को कुरेदने और उनको जांचने की कोई ज़रूरत नहीं समझती थी। मिसाल के लिए, वह मुझे सरासर ढोंग मालूम होता था जब ल्यूबा रोज़ रात को पापा के ऊपर सलीब का निशान बनाती थी और जब मां की आत्मा के लिए प्रार्थना के समय वह और कात्या गिरजाघर में रोती थीं और जब कात्या पियानो बजाते समय आहें भरती थी और आंखें नचाती थी; और मैं अपने आप से पूछता था: उन्होंने बड़ों की तरह ढोंग करना कब सीखा, और इन्हें अपने आप पर शर्म क्यों नहीं आती?

अध्याय ३०

मेरी व्यस्तताएं

फिर भी उस साल गर्मी में दूसरे वर्षों की अपेक्षा हमारी नवयुवती महिलाएं और मैं एक-दूसरे के अधिक निकट आ गये, क्योंकि मुझमें संगीत के प्रति लगाव पैदा हो गया था। उस साल वसंत में एक नौ-जवान पड़ोसी हम लोगों से मिलने आया और ड्राइंग-रूम में घुसते ही उसने पियानो को बार-बार देखा और मीमी और कात्या से यों ही बातें करते हुए लगातार कुर्सी पियानो की तरफ़ खिसकाता रहा। थोड़ी देर तक मौसम और ग्रामीण जीवन के सुख की बातें करने के बाद उसने बड़ी होशियारी से बातचीत का रुख पियानो के सुर मिलाने-

बालों की ओर, संगीत की ओर, पियानो की ओर मोड़ दिया, और अन्त में उसने कहा कि वह खुद पियानो बजाता था; और सचमुच उसने तीन वाल्ट्ज बजाये भी और ल्यूबा, मीमी और कात्या पियानो के आस-पास खड़ी एकटक उसे देखती रहीं। यह नौजवान फिर कभी नहीं आया; लेकिन उसके पियानो बजाने के ढंग से मुझे बेहद खुशी हुई, और पियानो पर बैठे होने के समय उसकी मुद्रा से भी, अपने बालों को वह जिस तरह उछालता था उससे, और खास तौर पर जिस ढंग से वह अपने बायें हाथ से अष्टक स्वर बजाता था, अपना अंगूठा और छोटी उंगली तेजी से फैलाकर अष्टक स्वरों के क्षेत्र पर रखता था, फिर धीरे-धीरे उन्हें एक-दूसरे से मिलाता था और फिर तेज़ी से उन्हें फैलाता था। उसकी यह सौम्य गति, उसकी बेफ़िक्री की मुद्रा, उसका बालों को झटके से उछालने का ढंग, और उसकी प्रतिभा की ओर हमारी महिलाओं का ध्यान देना—इन सब बातों ने मेरे अंदर पियानो बजाना सीखने की इच्छा जागृत कर दी। इस इच्छा के फलस्वरूप, अपने आपको इस बात का पक्का विश्वास दिलाकर कि मुझमें संगीत की प्रतिभा भी थी और उसके प्रति अपार उत्साह भी, मैंने सीखना शुरू कर दिया। इस मामले में मेरा आचरण भी उन लाखों लड़कों जैसा, और खास तौर पर उन लड़कियों जैसा था, जो अच्छे शिक्षक के बिना, वास्तविक रुचि के बिना, और इस बात की तनिक भी समझ के बिना कि कला हमें क्या दे सकती है और कला से कुछ प्राप्त करने के लिए उसमें किस तरह बढ़ना चाहिये, अध्ययन आरंभ कर देती हैं। संगीत, बल्कि कहना चाहिये पियानो-वादन, मेरे लिए लड़कियों को अपनी भावनाओं के माध्यम से वश में करने का एक साधन मात्र था। कात्या की मदद से संगीत के स्वरों का ज्ञान प्राप्त करके और अपनी मोटी उंगलियों को कुछ लचीला बनाकर (लगे हाथ मैं यह भी बता दूं कि इस चक्कर में मैंने दो महीने ऐसे जोश के साथ बिताये कि मैं अपनी उद्दंड चौथी उंगली को खाते समय अपने घुटने पर और बिस्तर पर लेटे-लेटे तकिये पर मोड़ता-तोड़ता रहता था) मैं फ़ौरन संगीत रचनाएं बजाने लगा, और, जैसा कि कात्या ने स्वयं माना, मैं उन्हें बहुत भावपूर्वक, avec âme, बजाता था लेकिन सुर-ताल से बाहर।

संगीत. रचनाओं का चयन शर्मनाक हद तक बुरा होता था— वाल्ट्ज़, गैलप-नृत्य, प्रेम-गीत, इत्यादि—सभी उन दिग्गज संगीतकारों की रचनाएं, जिनकी एक छोटी-सी गड्डी थोड़ी-सी सुरुचि रखनेवाला कोई भी आदमी संगीत की दुकान में बहुत-सी सुंदर चीज़ों के वड़े-वड़े ढेरों में से निकालकर आपको थमाकर कहेगा, "ये हैं वे चीज़ें जिन्हें तुम कभी न वजाना, क्योंकि स्वर-लिपि लिखने के काग़ज़ पर इससे बुरी, इससे ज़्यादा सुरुचिहीन, और इससे ज़्यादा वेतुकी कोई चीज़ कभी नहीं लिखी गयी," और जो शायद इसी वजह से तुम्हें हर रूसी लड़की के पियानो पर रखी हुई मिलती हैं। यह सच है कि हमारे पास अभागे बीथोवेन के 'Sonate Pathétique' और 'Cis-moll' सोनाटा भी थे, लड़कियों ने जिन्हें हमेशा के लिए अपंग वना दिया था और जिन्हें ल्यूबा मां की याद में बजाया करती थी, और दूसरी कई अच्छी चीज़ें थीं जो उसकी मास्कोवाली टीचर ने उसे दी थीं; लेकिन उनमें कुछ रचनाएं इस टीचर की भी थीं, वेतुकी फ़ौजी कूच की धुनें और गैलप-नृत्य, और ल्यूबा इन्हें भी वजाती थी। कात्या को और मुझे गंभीर चीज़ें पसंद नहीं थीं, और हमारी सबसे प्रिय रचनाएं थी 'Le Fou' और 'बुलबुल', जिसे कात्या कुछ इस ढंग से वजाती थी कि उसकी उंगलियां दिखायी नहीं पड़ती थीं, और जिसे मैं भी काफ़ी फुर्ती से और वड़ी सुगमता से बजाने लगा था। मैंने उसी नौजवान का हाव-भाव अपना लिया था और मुझे अकसर अफ़सोस होता था कि मुझे पियानो वजाते देखने के लिए वहां कोई बाहर के लोग नहीं होते थे। लेकिन जल्दी ही यह साबित हो गया कि लिज़्ट और काल्कब्रेनर मेरे बस के बाहर हैं, और मैंने समझ लिया कि मैं कात्या के बराबर वजा नहीं सकूंगा। इसके फलस्वरूप, यह सोचकर कि शास्त्रीय संगीत ज़्यादा आसान है, और कुछ हद तक मौलिकता के फेर में, मैं अचानक इस नतीजे पर पहुंच गया कि मुझे पांडित्यपूर्ण जर्मन संगीत पसंद है और जब ल्यूबा 'Sonate Pathétique' बजाती थी तो मैं आनंद-विभोर हो उठता था, हालांकि सच पूछा जाये तो यह सोनाटा बहुत पहले ही मुझे अरुचिकर लगने लगा था। मैं स्वयं बीथोवेन वजाने लगा था, और इस नाम का उच्चारण भी जर्मन ढंग से करने लगा था। लेकिन, जैसा कि अब मुझे याद आता है, इस तमाम गड़बड़ी और ढोंगबाज़ी

के बावजूद मुझमें प्रतिभा जैसी कोई चीज़ थी, क्योंकि संगीत सुनकर कभी-कभी मेरे आंसू तक निकल आते थे, और जो चीज़ें मुझे अच्छी लगती थीं उन्हें मैं स्वर-लिपियों की मदद के बिना सिर्फ़ सुनकर ही पियानो पर बजा सकता था ; इसलिए अगर उसी समय किसी ने मुझे सिखा दिया होता कि संगीत को एक लक्ष्य, एक आनंद समझना चाहिये, न कि वादन की तीव्र गति और भावुकता से लड़कियों को रिझाने का साधन, तो शायद मैं सचमुच काफ़ी अच्छा संगीतकार बन गया होता।

उस साल गर्मी में फ़्रांसीसी उपन्यास पढ़ना, जो वोलोद्या बहुत-से ले आया था, मेरा एक और शौक़ था। उस समय मोंटे क्रिस्टो और तरह-तरह के 'रहस्यों' का प्रकाशन आरंभ ही हुआ था ; और मैं स्यू*, द्यूमा** और पॉल दे कॉक*** के उपन्यासों में डूब गया। सभी अत्यंत अस्वाभाविक पात्र और घटनाएं मेरे लिए वास्तविकता जैसी सजीव होती थीं ; और न केवल यह कि मैं लेखक पर झूठ बोलने का संदेह नहीं करता था, बल्कि लेखक का मेरे लिए कोई अस्तित्व ही नही होता था – छपी हुई किताब में से निकलकर जीते-जागते, वास्तविक लोग और साहसपूर्ण प्रसंग मेरी आंखों के सामने प्रकट होते थे। जिस तरह के लोगों के बारे में मैं पढ़ता था उस तरह के लोग हालांकि मैंने कभी कहीं नहीं देखे थे, फिर भी एक क्षण के लिए भी मेरे मन में इस बात के बारे में कोई शंका उत्पन्न नहीं होती थी कि किसी दिन उनका अस्तित्व होगा।

मैं अपने अंदर हर उपन्यास में वर्णित सभी भावावेग मौजूद पाता था और सभी पात्रों, नायकों और खलनायकों से समानता महसूस करता था, जिस तरह कोई भी संवेदनशील आदमी डाक्टरी की किताब पढ़ने पर अपने अंदर सभी संभव रोगों के सारे चिन्ह मौजूद पाता है। इन उपन्यासों में मुझे ख़ुशी होती थी चतुराई-भरे विचारों और विदग्ध

---

* एजेन स्यू (१८०४–१८५७) – फ़्रांसीसी लेखक जिनकी रचना 'पेरिस के रहस्य' उनके जीवनकाल में ही प्रसिद्ध हो गयी थी।

** अलेक्सान्द्र द्यूमा (१८०२–१८७०) – फ़्रांसीसी लेखक।

*** पॉल दे कॉक (१७९४–१८७१) – फ़्रांसीसी लेखक।

भावनाओं से, चमत्कारी घटनाओं और विसंगतिहीन पात्रों से : अच्छा आदमी पूरी तरह अच्छा होता था, बुरा आदमी पूरी तरह बुरा होता था – ठीक वैसे ही जैसा कि अपनी युवावस्था के आरंभ में मैं लोगों के बारे में कल्पना करता था। मुझे इस बात से भी बेहद खुशी होती थी कि यह सब कुछ फ़्रांसीसी में था, और इस बात से कि मैं उदात्त नायकों के कहे हुए उदारतापूर्ण शब्दों को याद कर सकता था और आगे चलकर कभी कोई उदात्त कर्म करते हुए उनका प्रयोग कर सकता था। फ़्रांसीसी के न जाने कितने फ़िक़रे मैंने उन किताबों की मदद से गढ़े थे, कोल्पिकोव के लिए कि शायद उससे कहीं मुठभेड़ हो जाये, और "उसके" लिए, जब आखिरकार "उससे" मिलन हो और मैं उससे अपने प्रेम की घोषणा कर दूं। मैंने उनसे कहने के लिए ऐसी बात तैयार की जिसे सुनकर वे वहीं तबाह हो जायें। इन उपन्यासों पर मैंने नैतिक मूल्य के उन नये आदर्शों की आधारशिला रखी, जिन्हें मैं प्राप्त करना चाहता था। सबसे बढ़कर मैं अपने हर काम और व्यवहार में "noble" बनना चाहता था। मैं रूसी नहीं पर फ़्रांसीसी शब्द noble इसलिए कहता हूं कि फ़्रांसीसी शब्द का अर्थ दूसरा है, जिसे जर्मनों ने अच्छी तरह समझा था और noble शब्द को अपनाकर इसे ehrlich* शब्द के साथ गड्ड-मड्ड नहीं किया था, दूसरे, मैं अपने अंदर "अपार उत्साह" पैदा करना चाहता था ; और अंत में मैं वह बनना चाहता था जिसकी ओर हमेशा से मेरी प्रवृत्ति रही थी, यथासंभव अधिक से अधिक comme il faut । अपनी आकृति और आदतें भी मैं उन नायकों जैसी बनाने की कोशिश करता था जिनके अंदर इनमें से कोई भी गुण पाया जाता था। मुझे याद है कि उस साल गर्मियों में मैंने जो सैकड़ों उपन्यास पढ़े थे उनमें से एक में घनी भवोंवाला एक बेहद जोशीला नायक था ; और सूरत-शक्ल से उसका जैसा लगने को मेरा इतना जी चाहता था (आत्मिक दृष्टि से तो मैं अपने आपको बिल्कुल उसका जैसा समझता ही था), कि आईने में अपनी भवों को देखकर मुझे सूझी कि मैं उन्हें थोड़ा-सा कतर दूं ताकि वे और घनी उगें ; लेकिन जब

---

* Noble का अर्थ होता है कुलीन। Ehrlich का आशय है उदात्त, ईमानदार, इज़्ज़तदार, वफ़ादार, इत्यादि।

मैंने ऐसा करना शुरू किया तो एक जगह वे ज़रूरत से ज़्यादा कट गयीं। मुझे उनको बराबर करना पड़ा, और यह सिलसिला पूरा कर चुकने के बाद जब मैंने आईना में देखा तो अपनी भवों को सफ़ाचट देखकर मेरे होश उड़ गये, जिसकी वजह से मैं सचमुच बहुत बदसूरत लगने लगा था। लेकिन मैं इस उम्मीद से अपने आपको तसल्ली देता रहा कि जल्दी ही मेरी भवें बहुत घनी उग आयेंगी, उस जोशीले आदमी जैसी, और मुझे चिंता बस यह थी कि जब मेरे घरवाले मुझे बिना भवों के देखेंगे तो मैं उनसे क्या कहूंगा। मैंने वोलोद्या से कुछ बारूद लेकर अपनी भवों पर मली और उसमें आग लगा दी हालांकि बारूद आग लगकर भड़की नहीं, फिर भी मेरी सूरत काफ़ी हद तक उस आदमी जैसी हो गयी जो जल गया हो। मेरी तिकड़म को कोई समझा नहीं, और जब मेरी भवें सचमुच पहले से बहुत घनी उग आयीं तब तक मैं उस जोशीले आदमी के बारे में सब कुछ भूल भी चुका था।

अध्याय ३१

COMME IL FAUT

इस वृत्तांत में पहले भी कई बार मैं फ़्रांसीसी के इस शीर्षक के अनुरूप विचार का उल्लेख कर चुका हूं और अब मैं इसके बारे में एक पूरा अध्याय लिखने की ज़रूरत महसूस करता हूं, क्योंकि शिक्षा और समाज ने जितने भी विचार मेरे ऊपर लादे थे उनमें से यह सबसे मिथ्या और सबसे घातक विचार था।

मानव-जाति को कई श्रेणियों में बांटा जा सकता है—अमीर और ग़रीब, अच्छे और बुरे, सिपाही और शहरी, समझदार और नासमझ, वग़ैरह-वग़ैरह। लेकिन हर आदमी का विभाजन का अपना प्रिय मुख्य सिद्धांत होता है, जिसके अनुसार वह हर व्यक्ति को बिना सोचे-समझे किसी कोटि में डाल देता है। जिस समय के बारे में मैं लिख रहा हूं उस समय इस विभाजन का मेरा मुख्य और प्रिय सिद्धांत

था: एक ओर वे जो comme il faut थे, और दूसरी ओर जो comme il ne faut pas* थे। इस दूसरी श्रेणी का विभाजन फिर ऐसे किया जाता था: वे जो सिरे से comme il faut थे ही नहीं और वे जो साधारण लोग थे। जो comme il faut थे उनकी मैं इज़्ज़त करता था और उन्हें मैं इस योग्य समझता था कि वे मुझसे बराबरी का व्यवहार करें; जहां तक दूसरी श्रेणी के लोगों का सवाल था, मैं जताता तो यह था कि मैं उन्हें नापसंद करता था, लेकिन वास्तव में मैं उनसे नफ़रत करता था, उनके प्रति कुछ ऐसी भावना रखता था जैसे उन्होंने मुझे एक व्यक्ति के रूप में हानि पहुंचायी हो; तीसरे प्रकार के लोगों का मेरे लिए अस्तित्व ही नहीं था – मैं उन्हें बिल्कुल तुच्छ समझता था। मेरे इस comme il faut की पहली और मुख्य कसौटी थी फ़्रांसीसी भाषा की बहुत अच्छी जानकारी, और ख़ास तौर पर बहुत अच्छा उच्चारण। जिस आदमी का फ़्रांसीसी का उच्चारण अच्छा नहीं होता था उसके प्रति मेरे मन में फ़ौरन घृणा की भावना जागृत हो जाती थी। "जब तुम्हें आता नहीं है तो हम लोगों की तरह बात करना चाहते क्यों हो?" मैं कटु व्यंग के साथ मन ही मन ऐसे आदमी से पूछता था। Comme il faut की दूसरी शर्त थी हाथों के नाख़ून लंबे, साफ़ और पॉलिश किये हुए होना; तीसरी शर्त थी झुककर अभिवादन करने, नाचने और बातचीत करने के सलीक़े की जानकारी; चौथी, और एक बहुत महत्त्वपूर्ण शर्त थी हर चीज़ के प्रति उदासीनता और लगातार मुंह पर बड़ी शालीन और तिरस्कारपूर्ण विमनता का भाव। इसके अलावा कुछ ऐसे सामान्य संकेत थे जिनकी मदद से मैं किसी आदमी से बात किये बिना ही यह फ़ैसला कर लेता था कि वह किस श्रेणी का है। उसके कमरे की सज-धज, उसकी मुहर, उसकी लिखाई और उसकी गाड़ी और घोड़ों के अलावा इनमें से मुख्य संकेत था उसके पांव। यह बात कि किसी आदमी के जूते उसकी पतलून से किस हद तक मेल खाते हैं, मेरी नज़रों में फ़ौरन उस आदमी की हैसियत तै कर देती थी। सामने से नुकीले और बिना एड़ी के जूते और तलुवे के नीचे अटकाने के तस्मों के बिना पतली मोरी की पतलून–

---

* शिष्ट और अशिष्ट। (फ़्रांसीसी)

यह साधारण आदमी होने की निशानी थी; सामने से गोल पतली नोकवाले एड़ीदार जूते और पांवों को चारों ओर लपेटनेवाली नीचे से पतली पतलून जिसमें तस्मे हों, या पांवों की उंगलियों पर शामियानों की तरह तने हुए तस्मोंवाली चौड़ी पतलून – यह थी mauvais genre के आदमी की पहचान, वग़ैरह-वग़ैरह।

अजीब बात है कि यह विचार मेरे ऊपर, जो निश्चित रूप से comme il faut बनने के अयोग्य था, इतनी बुरी तरह छा गया। लेकिन शायद इसी वजह से कि मुझे इस comme il faut के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए इतना प्रयास करना पड़ा, इस विचार ने मेरे अंदर इतनी गहरी जड़ पकड़ ली थी। अब यह सोचकर भी मैं कांप उठता हूं कि अपने जीवन के सबसे अच्छे दौर में, सोलह साल की उम्र में, मैंने यह गुण पैदा करने के लिए अपना इतना बहुमूल्य समय नष्ट कर दिया। मैं जिन लोगों की भी नक़ल कर रहा था उन सभी के लिए – वोलोद्या के लिए, दुबकोव के लिए और मेरी जान-पहचान के ज़्यादातर लोगों के लिए – यह सब कुछ सहज लगता था। मैं उनसे ईर्ष्या करता था, और चुपके-चुपके फ़्रांसीसी बोलने की, अपने सामनेवाले आदमी को देखे बिना उसका अभिवादन करने की, बातचीत करने की, नाचने की, उदासीनता और विमनता पैदा करने की, नाख़ून काटने की कोशिश में जुटा रहता था – जिसके दौरान मैंने कैंची से उंगलियों का मांस तक काट डाला – और तमाम वक़्त मैं यही महसूस करता रहता था कि अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मुझे अभी बहुत कुछ करना है। लेकिन जहां तक मेरे कमरे, मेरी लिखने की मेज़, मेरी गाड़ी का सवाल था, तो इन सभी चीज़ों के बारे में मुझे कुछ भी नहीं मालूम था कि उन्हें किस ढंग से व्यवस्थित किया जाये कि वे comme il faut हो जायें, हालांकि व्यावहारिक बातों के प्रति अपनी अरुचि के बावजूद मैंने इसकी ओर ध्यान देने की कोशिश की। दूसरे लोगों के लिए ये सभी बातें इतनी स्वाभाविक लगती थीं जैसे इसके अलावा और कुछ हो ही नहीं सकता। मुझे याद है कि एक बार अपने नाख़ूनों के साथ बहुत देर तक व्यर्थ मेहनत करने के बाद मैंने दुबकोव से पूछा, जिसके नाख़ून कमाल के थे, क्या वे बहुत अरसे से ऐसे ही थे, और उसने उन्हें ऐसा बनाया कैसे। दुबकोव ने जवाब दिया, "अपनी याद में मैंने

उन्हें ऐसा बनाने के लिए कभी कुछ नहीं किया, और मैं कल्पना भी नहीं कर सकता कि किसी शरीफ़ आदमी के नाखून इसके अलावा और किसी तरह के हो भी सकते हैं।" उसके इस जवाब से मुझे बहुत गहरी ठेस पहुंची। उस समय मुझे यह नहीं मालूम था कि comme il faut की एक मुख्य शर्त है कि comme il faut का लक्ष्य जितनी मेहनत से प्राप्त किया जाता है उसके बारे में गोपनीयता बरती जाये। मेरी राय में, comme il faut न केवल एक बहुत बड़ा कमाल, एक बहुत अच्छा गुण, एक ऐसा परिष्कार था जिसे मैं प्राप्त करना चाहता था, बल्कि वह ज़िंदगी की लाज़िमी शर्त था जिसके बिना न सुख मिल सकता था, न गौरव, और न ही दुनिया की कोई भी अच्छी चीज़। मैं किसी विख्यात कलाकार की, या विद्वान की, या उस आदमी की जिसने मानव-जाति के साथ उपकार किया हो, इज़्ज़त कर ही नहीं सकता था अगर वह comme il faut न होता। जो आदमी comme il faut होता है वह उनसे कहीं ऊंचे स्तर का होता है; वह चित्रकारी करने, संगीत रचनाएं बनाने, किताबें लिखने, या नेकी करने का काम उनके लिए छोड़ देता है; वह ऐसा करने के लिए उनकी प्रशंसा भी करता है: अच्छाई की प्रशंसा क्यों न की जाये, वह किसी भी आदमी में क्यों न हो? लेकिन वह उनके साथ एक ही स्तर पर खड़ा नहीं हो सकता: वह comme il faut है, और वे नहीं हैं, और बस इतनी ही बात काफ़ी है। मुझे तो यहां तक लगता है कि अगर हमारा कोई भाई, हमारी मां या हमारे बाप comme il faut न होते तो मैं कहता कि यह हमारा दुर्भाग्य था, लेकिन उनके और मेरे बीच कोई समानता न होती। लेकिन मैंने comme il faut बनने की सारी शर्तों को पूरा करने के बारे में चिंतित रहने में अपना जो क़ीमती वक़्त बर्बाद किया था, जिन्हें पूरा करना मेरे लिए इतना कठिन था और जिसकी वजह से मैं किसी और गंभीर काम के प्रति उत्साह नहीं दिखा सकता था, नब्बे प्रतिशत मानव-जाति के प्रति घृणा और तिरस्कार, comme il faut की परिधि के बाहर की किसी भी अच्छी चीज़ की ओर ध्यान न देना— यह वह मुख्य हानि नहीं थी जो मुझे इस विचार से हुई। मुख्य हानि यह हुई कि मेरी यह दृढ़ धारणा बन गयी कि comme il faut होना एक सामाजिक प्रतिष्ठा है; कि अगर कोई आदमी comme il faut हो तो

उसे अफ़सर या गाड़ी बनानेवाला, सिपाही या विद्वान बनने की कोशिश करने की कोई ज़रूरत नहीं है; कि यह हैसियत पा लेने के बाद वह अपने जीवन का उद्देश्य पूरा कर लेता है और यहां तक कि वह अधिकांश मानव-जाति से ऊंचा बन जाता है।

तरुणाई के एक ख़ास दौर में, कई ग़ल्तियों और भटकावों के बाद, नियमत: हर आदमी सामाजिक जीवन में सक्रिय रूप से भाग लेने की आवश्यकता अनुभव करता है, वह उद्योग की कोई शाखा चुनकर तन-मन से उसमें लग जाता है; लेकिन जो comme il faut होता है उसके साथ ऐसा शायद ही कभी होता है। मैं बहुत-से ऐसे स्वाभिमानी, आत्म-विश्वास और कुशाग्र विवेक-बुद्धि रखनेवाले पुराने लोगों को जानता था, और अब भी जानता हूं, जिनसे अगर दूसरी दुनिया में पहुंचने पर पूछा जाये, "तुम कौन हो? तुमने वहां नीचे क्या किया?" तो वे इसके अलावा कोई जवाब नहीं दे पायेंगे कि "Je fus un homme très comme il faut."*

यही नियति मेरे सामने आनेवाली थी।

अध्याय ३२

युवावस्था

मेरे दिमाग़ में विचारों का जो ववंडर मंडला रहा था उसके बावजूद उस साल गर्मियों में मैं नौजवान था, मासूम था, स्वतंत्र था और इसलिए लगभग सुखी था।

कभी-कभी, यानी अकसर ही, मैं तड़के उठ जाता था। (मैं खुली हवा में बरामदे में सोता था और सुबह के सूरज की चमकदार, तिरछी किरनें मुझे जगा देती थीं)। जल्दी से कपड़े पहनकर मैं एक तौलिया ले लेता था और बग़ल में फ़्रांसीसी का एक उपन्यास दबाकर घर से कोई आधे वेर्स्ता की दूरी पर बर्च-वृक्षों के एक झुरमुट की छाया में

---

* मैं बिल्कुल शिष्ट आदमी था। (फ़्रांसीसी)

नदी में नहाने चल देता था। उसके बाद मैं छाया में घास पर लेटकर पढ़ता था। बीच-बीच में किताब पर से नज़रें हटाकर मैं इधर-उधर डाल लेता था – नदी की सतह पर, जो पेड़ों की छाया में बैंगनी लगती थी और जिस पर सुबह की हल्की हवा से छोटी-छोटी लहरें उठने लगती थीं; उस पारवाले किनारे के रई के पीले खेत पर; सुबह की रोशनी की हल्की लाल किरनों पर, जो बर्च-वृक्षों के सफ़ेद तनों पर, जो एक-दूसरे के पीछे छिपते हुए मुझसे बहुत दूर तक स्वच्छ जंगल की गहराइयों में चले गये थे, लगातार नीचे उतरती हुई उन्हें अपने रंग से रंग देती थीं; और मुझे अपने अंदर जीवन की इस तरह की ताज़गी-भरी युवाशक्ति का उल्लासमय आभास होता था जो मेरे चारों ओर की प्रकृति से उच्छ्वसित होती रहती थी। जब आकाश पर सुबह के छोटे-छोटे सुरमई बादल छा जाते थे, और नहाने के बाद मैं कांपने लगता था, तो अकसर मैं जंगल और घास के मैदानों में बिना किसी निश्चित लक्ष्य के टहलना शुरू कर देता था और हर्ष-विभोर होकर जूतों के पार अपने पैरों को ताज़ी ओस में बिल्कुल भिगो लेता था। इस पूरे दौरान में मैं सबसे बाद में पढ़े हुए उपन्यास के नायकों के सजीव स्वप्न देखता रहता था और अपनी कल्पना कभी बहुत बड़े सूरमा के रूप में, कभी मंत्री के रूप में, कभी बहुत ही ताक़तवर आदमी के रूप में, और कभी गहरे प्रेम में डूबे हुए आदमी के रूप में करता था; और मैं कुछ-कुछ कांपते दिल से लगातार चारों ओर इस उम्मीद से नज़र दौड़ाता रहता था कि शायद कहीं किसी घास के मैदान में या किसी पेड़ के पीछे अचानक "वह" मिल जाये। जब भी इस तरह टहलता हुआ मैं काम करते हुए किसानों के पास जा निकलता था **साधारण लोगों** के प्रति अपनी समस्त उपेक्षा के बावजूद मैं अनायास ही बहुत ज़बर्दस्त खिसियाहट महसूस करता था और कोशिश करता था कि वे मुझे देखने न पायें। जब गर्मी बहुत बढ़ जाती थी, लेकिन महिलाएं अभी तक चाय पीने के लिए नहीं आयी होती थीं तो मैं तैयार सब्ज़ियां और पके हुए फल खाने क्यारियों में या बाग़ में चला जाता था। और यह मेरा एक सबसे बड़ा सुख था। उदाहरण के लिए, अकसर मैं सेब के बाग़ में, या मकोय की ऊंची-ऊंची घनी झाड़ियों के बीच में घुस जाता था। ऊपर तपता हुआ स्वच्छ आकाश

होता था, चारों ओर मकोय की झाड़ी की हल्के हरे रंग की कंटीली टहनियां होती थीं, जिनके बीच-बीच में घास-फूस के पौधे मिले होते थे। ऊपर की ओर बड़ी नज़ाकत से फैली हुई पतली, फूलदार फुनगियोंवाली बिच्छूबूटी उगी होती थी; कांटेदार और अस्वाभाविक बैंगनी फूलोंवाला बर्डोक, जो बेहद फैलकर मकोय की झाड़ी के ऊपर उगा होता था और सिर से भी ऊंचा चला जाता था, और जहां-तहां बिच्छूबूटी के साथ मिलकर वह सेब के पुराने पेड़ों की हल्के रंग की फैली हुई टहनियों तक भी पहुंच जाता था, जिन पर बहुत ऊंचाई पर लगे हुए गोल-गोल हाथीदांत जैसे चमकीले सेब, जो तब तक पके नहीं होते थे सूरज की गरमी में गदरा रहे होते थे। नीचे मकोय की एक बिना पत्ती की लगभग सूखी हुई झाड़ी बल खाती हुई सूरज तक पहुंचने की कोशिश करती होती थी; घास की पत्तियों के हरे-हरे सुई जैसे नुकीले भाले और अस्वाभाविक बर्डोक पिछले साल की पत्तियों के बीच घुसे आते थे, और ये सभी, ओस के छींटों से नहाकर, उस चिर-छाया में इस तरह हरे-भरे और समृद्ध होकर फल-फूल रहे होते थे, मानो उन्हें इस बात का पता ही न हो कि सूरज की किरनें ऊपर सेबों पर कैसी निहाल होकर खेल रही थीं।

इस कुंज में हमेशा नमी रहती थी; उसमें घनी और निरंतर छाया की, मकड़ी के जालों और गिरे हुए सेबों की सुगंध बसी हुई थी, जो ढीली मिट्टीवाली ज़मीन पर पड़े-पड़े काले होने लगे थे; वहां मकोय की और कभी-कभी छेउकी की भी महक आती थी, जिसे भूल से अनजाने ही किसी बेरी के साथ खा लिया जाता है—जिसके बाद जल्दी से जल्दी दूसरी बेरी निगल लेनी पड़ती है। जब मैं आगे बढ़ता था तो हमेशा कुंज में रहनेवाली गौरैयां डरकर उड़ जाती थीं; उनकी डरी-सहमी चूं-चूं और तेज़ी से फड़फड़ाते हुए उनके छोटे-छोटे पंखों के डालों से टकराने की आवाज़ आती थी; कहीं आपको भिड़ की भनभनाहट सुनायी देती थी, कहीं रास्ते पर माली बुद्धू अकिम के क़दमों की आहट सुनायी देती थी, जो हरदम कुछ बुड़बुड़ाता रहता था; मन में विचार आता था: "कभी नहीं! यहां मुझे वह तो क्या दुनिया में कोई भी नहीं ढूंढ सकता।..." मैं दोनों हाथों से रसीली बेरियां उनकी सफ़ेद नोकदार डंठलों पर से तोड़ता रहता था, और

उन्हें बहुत खुश होकर एक के बाद एक निगलता जाता था। टांगें घुटनों के काफ़ी ऊपर तक गीली हो चुकी होती थीं; कोई न कोई बेहूदा बकवास दिमाग़ में चक्कर काटती रहती थी (मन ही मन हज़ार बार लगातार दोहराता रहता था, "औ-ै-ै-र बी-ी-ी-स, औ-ै-र, सा-ा-ा-त"); बांहों में और तर-ब-तर पतलून के पार टांगों तक में बिच्छूबूटियां काटती रहती थीं; सूरज की खड़ी किरनें, जो कुंज के अंदर घुस आती थीं, खोपड़ी को जलाने लगती थीं; खाने की इच्छा न जाने कब की मर चुकी होती थी, पर मैं उस उलझे हुए जंगली झाड़-झंखाड़ के बीच बैठा रहता था और सुनता रहता था और देखता रहता था और सोचता रहता था, और यंत्रवत् पकी-पकी बेरियां तोड़-तोड़कर खाता रहता था।

लगभग ग्यारह बजे, जिस वक़्त तक औरतें आम तौर पर चाय पीकर अपने-अपने काम में लग चुकी होती थीं, मैं ड्राइंग-रूम में जाता था। पहली खिड़की पर धूप रोकने के लिए कोरी लिनेन के परदे पड़े हुए थे, जिसके सूराखों में से निकलती हुई सूरज की चमकदार किरनें अपने रास्ते में आनेवाली हर चीज़ पर ऐसे चकाचौंध करनेवाले गोले बना रही थीं कि उन्हें देखने से आंखों में तकलीफ़ होती थी; इसी खिड़की के पास कशीदाकारी का अड्डा रखा था, जिस पर पड़ी हुई सफ़ेद चादर पर मक्खियां बड़े शांत भाव से मटरगश्ती करती रहती थीं। अड्डे के सामने बैठी हुई मीमी ग़ुस्सा होकर लगातार अपना सिर हिलाती रहती थीं, और धूप से बचने के लिए एक जगह से दूसरी जगह खिसकती रहती थीं, और धूप कहीं न कहीं से निकलने का रास्ता बनाकर कभी तीर की तरह आकर उनके हाथ पर लगती थी और कभी उनके चेहरे पर। बाक़ी तीन खिड़कियों में से धूप चौखटों की परछाईं के साथ पूरे-पूरे, चमकदार, वर्गाकार चप्पों के रूप में फ़र्श पर गिरती थी। ड्राइंग-रूम के बिना रंग किये हुए फ़र्श पर ऐसे ही चप्पे में मील्का अपनी पुरानी आदत के अनुसार लेटी रहती थी और रोशनी के चौकोर में इधर-उधर फिरती हुई मक्खियों को देखकर अपने कान खड़े करती रहती थी। कात्या सोफ़े पर बैठी कुछ बुनती या पढ़ती रहतीं थी, और अधीर होकर अपने गोरे-गोरे हाथ हिलाती थी, जो चमकदार रोशनी में लगभग पारदर्शी लगते थे, या त्योरियों पर बल

डालकर उन मक्खियों को भगाने के लिए, जो उसकी घनी सुनहरी लटों में रेंगकर भिनभिनाती रहती थीं, अपना सिर झिटकती रहती थी। ल्यूबा पीठ के पीछे अपने हाथ बांधे या तो कमरे में इधर से उधर टहल-टहलकर बाग़ में जाने का इंतज़ार करती रहती थी, या कोई धुन बजाती रहती थी जिसके एक-एक सुर से मैं परिचित हो चुका था। मैं कहीं बैठकर संगीत या किताब का पाठ सुनता रहता था और खुद पियानो बजाने का मौक़ा पाने की राह देखता रहता था। दोपहर का खाना खाने के बाद मैं कभी-कभी लड़कियों पर एहसान करके उनके साथ घुड़सवारी के लिए जाने पर राज़ी हो जाता था (मैं पैदल चलने को अपनी उम्र और दुनिया में अपनी हैसियत को देखते हुए अनुचित समझता था)। और हमारे इन सैर-सपाटों में, जिनके दौरान मैं उन्हें असाधारण स्थानों और खड्डों में से होकर ले जाता था, हमें बहुत मजा आता था। कभी-कभी ऐसी आकस्मिक परिस्थितियों का सामना होता था जिनमें मैं बहुत बहादुरी का परिचय देता था, और लड़कियां मेरी घुड़सवारी की और मेरे साहस की प्रशंसा करती थीं और मुझे अपना संरक्षक समझती थीं। शाम को, अगर कोई मेहमान नहीं होते थे तो चाय के बाद, जो हम छायादार बरामदे में पीते थे, और पापा के साथ जमीन-जायदाद के सिलसिले में एक चक्कर लगाने के बाद मैं ड्राइंग-रूम में बड़ी-सी आराम-कुर्सी पर बैठ जाता था और कात्या या ल्यूबा का संगीत सुनते हुए पहले की तरह पढ़ता रहता था और साथ ही सपने देखता रहता था। कभी-कभी जब मैं ड्राइंग-रूम में अकेला रह जाता था और ल्यूबा कोई पुराना संगीत बजाती रहती थी, तो मैं अनायास ही अपनी किताब रख देता था और बाल्कनी के खुले दरवाजे से बाहर बर्च के ऊंचे-ऊंचे पेड़ों की टेढ़ी-मेढ़ी ऐंठी हुई डालों को देखता रहता था, जिन पर शाम उतरने लगती थी, और स्वच्छ आकाश को देखता रहता था, जिस पर अगर आप एक जगह नजर जमाकर देखते रहें तो अचानक एक मटमैला पीला-सा धब्बा आंखों के सामने आता हुआ मालूम होता है और फिर ग़ायब हो जाता है; और हॉल में से आते हुए संगीत, फाटक की चूं-चूं, औरतों के स्वर और गांव लौटते हुए गल्लों की आवाज़ें सुनकर सहसा मेरी आंखों के सामने बड़े स्पष्ट रूप में नताल्या साविश्ना, और मां,

और कार्ल इवानिच की सूरतें आ जाती थीं और एक क्षण के लिए मैं उदास हो जाता था। लेकिन उन दिनों मेरा मन जीवन की उमंगों और आशाओं से इतना भरपूर था कि ये स्मृतियां अपने पंखों से बस मुझे छूकर फड़फड़ाती हुई दूर उड़ जाती थीं।

रात के खाने के बाद, और कभी-कभी बाग़ में किसी के साथ टहलने के बाद – अंधेरे रास्तों पर मुझे अकेले जाते डर लगता था – मैं बरामदे में अकेला, फ़र्श पर ही सोने चला जाता था; लाखों मच्छरों के बावजूद जो मुझे खा जाते थे, मुझे इसमें बड़ा आनंद आता था। जब पूरा चांद निकला होता था तो अकसर मैं सारी-सारी रात अपने गद्दे पर बैठा रोशनियों और परछाइयों को एकटक देखते हुए, ख़ामोशी और शोर को सुनते हुए, तरह-तरह की चीज़ों के बारे में, ख़ास तौर पर काव्यमय और विलासमय आनंद के बारे में, सपने देखते हुए काट देता था, जो उस समय मुझे जीवन का सबसे बड़ा सुख लगता था, और मैं इसलिए दुःखी होता रहता था कि उस समय तक मुझे केवल उसकी कल्पना करने का ही अवसर मिला था। जैसे ही सब लोग सोने चले जाते थे, और मैं देख लेता था कि ड्राइंग-रूम की रोशनियां ऊपर के कमरों में चली गयी हैं, जहां से अभी थोड़ी देर में औरतों की आवाज़ें और खिड़कियों के खुलने और बंद होने की आवाज़ें सुनायी देने लगेंगी, मैं बरामदे में जाकर टहलने लगता था, और धीरे-धीरे निद्रा की गोद में पहुंचते हुए घर की सारी आवाज़ें सुनता रहता था। जब तक उस सुख का एक अंश भी पाने की, जिसके मैं स्वप्न देखता था, थोड़ी से थोड़ी निराधार आशा भी बाक़ी रहती थी, तब तक मैं शांत भाव से अपने लिए आनंद की कल्पना भी नहीं कर सकता था।

नंगे पांवों की हर आहट पर, हर खांसी या आह पर, खिड़की की ज़रा-सी खड़खड़ाहट या पोशाक की सरसराहट पर मैं अपने बिस्तर से उछल पड़ता था, चोरों की तरह इधर-उधर देखता और सुनता रहता था, और किसी प्रकट कारण के बिना ही उद्विग्न हो उठता था। लेकिन थोड़ी ही देर में ऊपर की खिड़कियों में रोशनी ग़ायब हो जाती थी; क़दमों की आहटों और बातचीत की आवाज़ों की जगह ख़र्राटों की आवाज़ें आने लगती थीं; रात को पहरा देनेवाला चौकीदार अपने तख़्ते पर खट-खट की आवाज़ करने लगता था;

बाग और भी उदास हो जाता था, और जब खिड़कियों में से लाल रोशनी की आखिरी धारियां भी ग़ायब हो जाती थीं तो वह और भी उजागर हो उठता था; आखिरी मोमबत्ती वर्तनों की कोठरी से सरककर बाहरवाले कमरे में पहुंच जाती थी और ओस से भीगे बाग़ पर रोशनी की एक चौड़ी-सी पट्टी डालती थी; और खिड़की में से मुझे फ़ोका की झुकी हुई आकृति दिखायी देती थी, जो बंडी लपेटे, हाथ में मोमबत्ती लिये सोने की तैयारी कर रहा होता था। अकसर मुझे घर की काली परछाईं में गीली घास पर रेंगकर बाहर-वाले कमरे के पास पहुंच जाने और दम साधकर लड़के के ख़र्राटे, फ़ोका की कराहें, जो समझता था कि कोई उसे सुन ही नहीं सकता, और जब वह बहुत देर तक प्रार्थना करता रहता था तो उसकी बूढ़ी आवाज सुनने में बहुत ज़्यादा और मर्मस्पर्शी आनंद आता था। अंततः उसकी मोमबत्ती भी बुझा दी जाती थी, खिड़की धड़ से बंद कर दी जाती थी, और मैं बिल्कुल अकेला रह जाता था; और यह देखने के लिए चारों ओर डरा-सहमा हुआ नज़र डालकर कि झाड़ियों के झुरमुटों के आस-पास या मेरे बिस्तर के पास कहीं कोई गोरी औरत तो नहीं है, मैं भागता हुआ जल्दी से बरामदे में पहुंच जाता था। फिर मैं बाग़ की ओर मुंह किये मच्छरों और चमगादड़ों से बचने के लिए ज्यादा से ज़्यादा ओढ़-लपेटकर अपने बिस्तर पर लेट जाता था और बाग़ की दिशा में एकटक देखता रहता था, रात की आवाज़ें सुनता रहता था, और प्रेम और सुख के सपने देखता रहता था।

उस समय हर चीज मेरे लिए दूसरा ही आशय धारण कर लेती थी: पुराने बर्च के पेड़, जिनकी पत्तियों से लदी शाखें एक ओर चांदनी में चमकती रहती थीं और दूसरी ओर झाड़ियों और सड़क को अपनी छाया से अंधकारमय बनाती रहती थीं; और तालाब की शांत, शानदार झिलमिलाहट जिसकी चमक उभरती हुई आवाज़ की तरह बढ़ती रहती थी; और बरामदे के सामने उन फूलों पर चांदनी में चमकती हुई ओस की बूंदें जो भूरी-भूरी क्यारियों के पार अपनी सुडौल परछाइयां डालते रहते थे; और तालाब के उस पार बटेरों की चीख़; और सड़क पर किसी आदमी की आवाज; और बर्च के दो पुराने पेड़ों

के एक-दूसरे से रगड़ने की शांत और लगभग न सुनायी देनेवाली ध्वनि ; और मेरे कान के पास कंबल के अंदर मच्छर की भनभनाहट ; और सूखी पत्तियों पर किसी सेब के गिरने की आवाज़ जो गिरते-गिरते टहनी पर अटका रह गया था ; और मेंढकों का फुदकना, जो कभी-कभी बरामदे की सीढ़ियों तक आ जाते थे और जिनकी हरी-हरी पीठें चांदनी में रहस्यमय ढंग से चमकती रहती थीं—यह सब कुछ मेरे लिए एक रहस्यमय महत्व धारण कर लेता था, एक ऐसे सौंदर्य का महत्व जो अतिशय होता था और अधूरे सुख से परिपूर्ण था। और तब "वह" प्रकट हुई, काले बालों की लंबी-सी चोटी ; उभरी हुई छातियां, सदा उदास और अत्यंत सुंदर, नंगी बांहें और विलास-भरे आलिंगन लिये। वह मुझसे प्यार करती थी और उसके प्यार के एक क्षण के लिए मैंने अपना सारा जीवन न्योछावर कर दिया। लेकिन चांद आकाश पर और ऊंचा उठता गया, उसकी चमक और बढ़ती गयी ; आवाज़ की तरह उभरते हुए तालाब की शानदार चमक अधिकाधिक उजागर होती गयी ; परछाइयां अधिकाधिक गहरी होती गयीं, प्रकाश अधिकाधिक पारदर्शी होता गया ; और यह सब कुछ देखते समय और सुनते समय, किसी चीज़ ने मुझे बताया कि "वह", उसकी नंगी बांहें और उसके तपते हुए आलिंगन संपूर्ण सुख तो नहीं है, बिल्कुल नहीं है, कि उससे प्यार करना समस्त आनंद नहीं है, बिल्कुल नहीं है, और मैं ऊंचे, पूरे चांद को नज़र गड़ाकर जितना ही ज़्यादा देखता गया, सच्चा सौंदर्य और आनंद मुझे उतना ही अधिक ऊंचा, अधिकाधिक शुद्ध और उस सर्वशक्तिमान के, समस्त सौंदर्य और आनंद के उस स्रोत के उतना ही निकटतर लगता गया ; और मेरी आंखों में अतुष्टि लेकिन उद्विग्नता के आंसू छलक आये।

और अभी तक मैं अकेला था ; और मुझे ऐसा लग रहा था कि यह रहस्यमयी शानदार प्रकृति, अपनी ओर आकर्षित करती हुई चांद की चमकदार थाली जो किसी कारण हल्के नीले रंग के आसमान पर एक बहुत ऊंचे लेकिन अनिश्चित स्थान पर टिकी हुई थी और साथ ही हर जगह स्थित थी और जो समस्त अपार व्योम को अपने आप से भर देती हुई प्रतीत होती थी, और मैं, एक नगण्य कीड़ा,

जो समस्त निकृष्ट, तुच्छ पार्थिव वासनाओं से कलंकित हो चुका था, लेकिन जिसे कल्पना और प्रेम की अपार शक्ति का वरदान था – मुझे ऐसा लग रहा था कि ऐसे क्षणों में मानो प्रकृति और चांद और मैं सभी एक हैं।

अध्याय ३३

पड़ोसी

गांव पहुंचने के पहले ही दिन मुझे इस बात पर बहुत आश्चर्य हुआ कि पापा येपिफ़ानोव-परिवार के लोगों को बहुत अच्छे लोग कह रहे थे, और इससे भी ज़्यादा आश्चर्य मुझे इस बात पर हुआ कि वह उनके घर जाते थे। हम लोगों और येपिफ़ानोव-परिवार के बीच बहुत दिनों से किसी ज़मीन के टुकड़े के कारण मुक़द्दमेबाज़ी चली आ रही थी। बचपन में मैंने कई बार पापा को इस मुक़द्दमे के बारे में ग़ुस्से से आगबबूला होते, येपिफ़ानोव-परिवार के ख़िलाफ़ चीख़ते-चिल्लाते, और, जहां तक मैं समझ पाया, उन लोगों के ख़िलाफ़ अपनी मदद के लिए तरह-तरह के लोगों को बुलाते सुना था; याकोव को मैंने उन लोगों को हमारा दुश्मन, "दुष्ट लोग" कहते सुना था; और मुझे याद है कि मां किस तरह सबसे अनुरोध किया करती थीं कि उनके घर में या उनके सामने इन लोगों की कोई चर्चा तक न की जाये।

इन तथ्यों के आधार पर मैंने अपने बचपन में इस बात के बारे में कि येपिफ़ानोव-परिवार के लोग हमारे दुश्मन थे, जो न सिर्फ़ पापा की गर्दन काट देने या उनका गला घोंट देने को बल्कि अगर उनका बेटा भी उनकी पकड़ में आ जाता तो उसका भी यही हाल करने पर उतारू थे, और यह कि वे लोग दुष्ट लोग थे, इतना अच्छा और साफ़ चित्र बना लिया था कि जिस साल मां मरी थीं उस साल जब मैंने अव्दोत्या वसील्येव्ना येपिफ़ानोवा यानी la belle Flamande को मां की सेवा-शुश्रूषा करते देखा था तो बड़ी मुश्किल से मैं यह विश्वास कर पाया था कि वह दुष्ट लोगों के उस परिवार की एक सदस्या थी; फिर भी मेरे दिमाग़ में उस परिवार के बारे में बदतरीन राय

बनी रही थी। उस साल की गर्मियों के दौरान हालांकि हम उन लोगों से अकसर मिलते थे, फिर भी मेरे मन में उस पूरे परिवार के ख़िलाफ़ प्रवल पूर्वाग्रह वने रहे। वास्तव में, येपिफ़ानोव-परिवार यह था। उस परिवार में तीन व्यक्ति थे: विधवा मां, जो काफ़ी मस्त स्वभाव की वृद्ध महिला थीं और जिनमें पचास वर्ष की होने के वावजूद काफ़ी ताज़गी थी; उनकी सुंदर वेटी अव्दोत्या वसील्येव्ना, और उनका हुक-लानेवाला वेटा प्योत्र वसील्येविच, जो रिटायर्ड लेफ़्टिनेंट था और वहुत गंभीर स्वभाव का अविवाहित आदमी था।

आन्ना द्मित्रियेव्ना येपिफ़ानोवा अपने पति की मृत्यु से वीस साल पहले से उनसे अलग रहती थीं; कभी सेंट पीटर्सवर्ग में जहां उनके रिश्तेदार थे, लेकिन ज़्यादातर अपने गांव मितीश्ची में, जो हम लोगों से तीन वेर्स्ता की दूरी पर था। उनकी ज़िंदगी के ढर्रे के वारे में पास-पड़ोस में ऐसी-ऐसी भयानक वातें कही जाती थीं कि उनकी तुलना में मेस्सालीना* एक मासूम वच्ची मालूम होती थी। इसके ही परिणाम-स्वरूप, मां ने सवसे अनुरोध किया था कि उनके घर में येपिफ़ानोवा का नाम तक न लिया जाये; लेकिन विभिन्न प्रकार की कीचड़ उछालने-वाली वातों में से सवसे द्वेषपूर्ण देहात में पड़ोसियों के वारे में कही जाने-वाली निंदात्मक वातें होती हैं और उनके दसवें भाग पर भी विश्वास करना असंभव होता है। और जिस ज़माने में मैंने आन्ना द्मित्रियेव्ना को जाना तव उस तरह की कोई वात नहीं थी, जैसी वातों की अफ़वाहों में चर्चा की जाती रहती थी हालांकि उन दिनों उनके यहां मित्यूशा नाम का एक किसान उनका कारोवार देखने के लिए लगा हुआ था, जो हमेशा वालों में क्रीम लगाये, उनमें घूंघर डाले और सिर्कासियाई ढंग का कोट पहने खाने के वक़्त आन्ना द्मित्रियेव्ना की कुर्सी के पीछे खड़ा रहता था, और वह अकसर उसकी उपस्थिति में फ़्रांसीसी में अपने मेहमानों से उसकी ख़ूवसूरत आंखों और होंटों की तारीफ़ करने के लिए अनुरोध करती थीं। वास्तव में, लगता यह है कि पिछले दस साल से – सच पूछा जाये तो उस वक़्त से जव आन्ना द्मित्रियेव्ना ने अपने श्रद्धालु वेटे पेत्रूशा को फ़ौज से वापस वुला लिया था – उन्होंने

---

* रोमन सम्राट क्लाडियस की पत्नी जो अपने दुश्चरित्र के लिए वदनाम थी। – अनु०

अपना जिंदगी का ढर्रा बिल्कुल बदल दिया था। आन्ना द्मित्रियेव्ना की जमीन-जायदाद बहुत थोड़ी ही थी, जिस पर कुल सौ प्राणी बसे हुए थे, और अपनी मस्ती की ज़िंदगी के दौरान उनके ख़र्चे बहुत थे, यहां तक कि इससे दस साल पहले उनकी गिरवी रखी हुई और दोहरी गिरवीवाली ज़मीनों के भुगतान की तारीख़ आ गयी थी, और उनकी नीलामी अनिवार्य हो गयी थी। घोर संकट की इन परिस्थितियों में यह सोचकर कि ट्रस्टीशिप क़ायम कर दिये जाने, जमीन-जायदाद की सूची तैयार किये जाने, जज के आने, और इसी तरह की दूसरी अरुचिकर बातों की वजह यह उतनी नहीं थी कि उन्होंने सूद नहीं चुकाया था जितनी कि यह कि वह औरत थीं, आन्ना द्मित्रियेव्ना ने अपने बेटे को लिखा, जो उस वक़्त अपनी रेजिमेंट में नौकरी कर रहा था, कि वह आकर इन मुसीबतों में फंसी हुई अपनी मां को बचाये। हालांकि प्योत्र बर्मील्येविच की नौकरी इतनी अच्छी चल रही थी कि उसे जल्दी ही अपने पांवों पर खड़े हो जाने की उम्मीद थी, लेकिन उसने सब कुछ छोड़कर पेंशनयाफ़्ता लोगों की फ़ेहरिस्त में अपना नाम लिखवा लिया, और एक बाइज़्ज़त बेटे की तरह, जो अपनी मां को बुढ़ापे में तसल्ली देना अपना पहला कर्त्तव्य समझता था (जैसा कि उसने अपने पत्रों में पूरी ईमानदारी के साथ लिखा भी था), वह गांव आ गया।

प्योत्र बर्मील्येविच, अपने बदसूरत चेहरे, अपने बेढंगेपन, और अपने हकलेपन के बावजूद बहुत पक्के सिद्धांतों के आदमी थे और उनकी व्यवहारकुशलता सराहनीय थी। उन्होंने छोटे-छोटे क़र्ज़े लेकर, टाल-मटोल, ख़ुशामदें और वादे करके किसी तरह जायदाद पर अपना क़ब्ज़ा बनाये रखा। जमीन-जायदाद का इंतज़ाम अपने हाथों में लेकर प्योत्र बर्मील्येविच ने अपने बाप का पुराना फ़र का कोट पहन लिया, जिसे गोदाम में रख दिया गया था, घोड़ों और गाड़ियों से छुटकारा पा लिया, मेहमानों को मिलोंची आने से निरुत्साह किया, सिंचाई की नालियां खुदवायीं, खेती की ज़मीन का विस्तार बढ़ाया, काश्तकारों को पट्टे पर दे रखी गयी ज़मीनों में कटौती की, अपने जंगल कटवाकर उन्हें बेचा, और अपने सारे मामलात को ठीक-ठाक किया। प्योत्र बर्मील्येविच ने क़सम खायी, और उसे निभाया भी, कि जब तक सारे क़र्ज़ों का भुगतान नहीं हो जायेगा तब तक वह अपने बाप के फ़र के

कोट और ज़ीन के उस कोट के अलावा जो उन्होंने अपने लिए वनवाया था कोई और कपड़ा नहीं पहनेंगे, और यह कि वह किसी और सवारी पर नहीं बैठेंगे अलावा मामूली गाड़ी में किसानों के घोड़े जोतकर। जिस हद तक कि मां के प्रति उनके श्रद्धा के भाव ने, जिसे वह अपना कर्त्तव्य समझते थे, उन्हें इजाज़त दी उन्होंने ज़िंदगी का यही संयम का ढर्रा पूरे परिवार पर थोपने की कोशिश की। ड्राइंग-रूम में वह हकलाकर अपनी मां के साथ वेहद तावेदारी के रवैये से पेश आते थे, उनकी हर इच्छा को पूरा करते थे, और जो लोग आन्ना ध्मित्रियेव्ना का हुक्म पूरा नहीं करते थे उन्हें डांटते-फटकारते थे; लेकिन ख़ुद अपने पढ़ने के कमरे में और अपने दफ़्तर में वह सबके साथ बड़ी सख़्ती से पेश आते थे, अगर उनके हुक्म के बिना खाने की मेज़ पर बत्तख पकाकर रख दी जाती थी, या किसी पड़ोसी के स्वास्थ्य के बारे में पूछने के लिए आन्ना ध्मित्रियेव्ना के आदेश पर किसी किसान को भेज दिया जाता था, या अगर किसानों की लड़कियों को बाग़ की निराई करने के बजाय जंगल से मकोय बटोर लाने के लिए भेज दिया जाता था।

कोई चार साल के अंदर सारे क़र्ज़े अदा हो गये, और प्योत्र वसील्येविच मास्को की यात्रा से वापस लौटे तो नये कपड़े पहने हुए और नयी घोड़ागाड़ी पर। लेकिन इस संपन्नता के बावजूद उनमें आत्म-संयम की वही प्रवृत्तियां अभी तक बाक़ी थीं, जिन पर वह अपने परिवार-वालों और बाहर के लोगों के सामने बहुत उदास होकर गर्व करते हुए लगते थे; और वह अकसर हकलाकर कहा करते थे, "जो भी सचमुच मुझसे मिलना चाहता है उसे मुझसे मेरा भेड़ की खाल का कोट पहने हुए मिलकर ख़ुशी होगी, और वह मेरे यहां बंदगोभी का शोरवा और खिचड़ी खाकर ख़ुश होगा। मैं ख़ुद यही खाता हूं," वह अंत में इतना और जोड़ देते थे। उनके एक-एक शब्द और एक-एक हरकत से गर्व टपकता था, जो इस आभास पर आधारित था कि उन्होंने अपने आपको अपनी मां की ख़ातिर वलि चढ़ा दिया था और गिरवी रखी हुई जायदाद छुड़ा ली थी, और दूसरों के लिए उनके मन में तिरस्कार का भाव होता था जिन्होंने ऐसा कोई काम नहीं किया था।

मां और बेटी के चरित्र उनसे बिल्कुल भिन्न थे, और बहुत-सी

बातों में वे दोनों आपस में भी बहुत भिन्न थीं। मां बेहद प्रसन्नचित्त और मगन रहती थीं, और हमेशा इतनी ही खुशमिज़ाज रहती थीं। हर मस्ती-भरी और सुखद चीज़ में उन्हें सचमुच मज़ा आता था। उनमें चरम सीमा तक यह क्षमता भी थी कि नौजवानों को खुशी मनाते देखकर वह खुश हो सकती थीं, जो गुण बेहद नेकदिल बूढ़े लोगों में ही पाया जाता है। इसके विपरीत, उनकी बेटी अव्दोत्या वसील्येव्ना गंभीर स्वभाव की थी, या ज़्यादा सही-सही कहा जाये तो उसका उस प्रकार का उदासीन और हरदम खोये-खोये रहने-वाला स्वभाव था, जिसमें बिल्कुल निराधार दंभ होता है, जैसा कि अविवाहित सुंदरियों का आम तौर पर होता है। जब कभी वह अत्यधिक मस्त होने की कोशिश करती थी तो उसकी मस्ती में कुछ विचित्रता होती थी, मानो वह अपने आप पर हंस रही हो या उस पर जिससे वह बात कर रही होती थी, या सारी दुनिया पर, जैसा करने का शायद उसका कोई इरादा नहीं होता था। मुझे अकसर आश्चर्य होता था और मैं सोचा करता था कि इस तरह की बातें कहने में उसका क्या अभिप्राय होता था, "जी हां, मैं बला की खूबसूरत हूं," या "ज़ाहिर है, हर आदमी मेरी मुहब्बत में गिरफ़्तार है," वग़ैरह-वग़ैरह। आन्ना द्मित्रियेव्ना हमेशा कुछ न कुछ करती रहती थीं। उन्हें घरदारी और बाग़बानी का, फूलों का, केनरी पक्षियों का, और खूबसूरत चीजों का जुनून था। उनके कमरे और बाग़ न तो बहुत बड़े थे और न ही उनमें ऐश-आराम की बहुत चीज़ें थीं; लेकिन हर चीज़ इतनी साफ़, इतने सलीक़े से सजी हुई थी, और हर चीज़ पर उस सुकोमल हल्के-फुल्के उल्लास की वह आम छाप थी जिसकी अभिव्यक्ति हम सुंदर वाल्ट्ज या पोल्का नृत्य में सुनते हैं, कि शब्द "खिलौना", जिसे उनके मेहमान प्रशंसा करने के लिए अकसर इस्तेमाल करते थे, आन्ना द्मित्रियेव्ना के साफ़-सुथरे बाग़ और उनके कमरों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त मालूम होता था। और आन्ना द्मित्रियेव्ना खुद एक खिलौना थीं – छोटी-सी, दुबली-पतली, खिला हुआ चेहरा, और छोटे-छोटे सुंदर हाथ, हमेशा खुश, और हमेशा फबते हुए कपड़े पहने हुए। बस उनके छोटे-छोटे हाथों पर कुछ उभरी हुई नीली-नीली नसें इस सामान्य आकृति में विघ्न डालती थीं। इसके

विपरीत, अव्दोत्या वसील्येव्ना शायद ही कभी कुछ करती थी। न केवल यह कि उसे फूलों और नाजुक छोटी-छोटी बातों में वक़्त लगाने का कोई शौक नहीं था, बल्कि वह अपनी सज-धज का भी बहुत कम ध्यान रखती थी, और जब भी मेहमान आते थे तो वह कपड़े बदलने भागती थी। लेकिन जब वह कपड़े बदलकर कमरे में लौटती थी तो बेहद ख़ूबसूरत लगती थी, बस उसकी आंखों और मुस्कराहट में उदासीनता और नीरसता के भाव को छोड़कर जो सुंदर चेहरों की विशेषता होती है। उसका हर तरफ़ से सुडौल और बहुत ख़ूबसूरत चेहरा और उसका शानदार डीलडौल लगातार आपसे यह कहता हुआ लगता था, "अगर आप चाहें तो मुझे देखते रह सकते हैं।"

लेकिन मां की तमाम ज़िंदादिली और बेटी की उदासीन, खोयी-खोयी-सी मुद्रा के बावजूद कोई चीज़ थी जो आप से कहती थी कि मां ने न तो अब और न पहले कभी किसी ऐसी चीज़ से प्यार किया है जो सुंदर और उल्लासमयी न हो, और यह कि अव्दोत्या वसील्येव्ना का स्वभाव उन लोगों जैसा था जो एक बार किसी से प्यार हो जाने पर उसके लिए अपनी सारी ज़िंदगी क़ुर्बान कर देने को तैयार रहते हैं।

अध्याय ३४

पापा की शादी

पापा अड़तालीस साल के थे जब उन्होंने अव्दोत्या वसील्येव्ना येपिफ़ानोवा को अपनी द्वितीय पत्नी के रूप में स्वीकार किया।

मैं कल्पना कर सकता हूं कि जब पापा लड़कियों के साथ बसंत में अकेले गांव आये थे तब वह ख़ास घबरायी हुई ख़ुशी और मिलनसारी की उस मन:स्थिति में थे, जिसमें कि जुआरी लोग आम तौर पर उस वक़्त होते हैं जब उन्होंने बहुत बड़ी रक़म जीत लेने के बाद जुआ खेलना बंद कर दिया हो। वह महसूस कर रहे थे कि अभी उनके पास ख़ुशक़िस्मती का बहुत-सा भंडार बचा हुआ है, जिसे अगर वह जुआ खेलने में लुटा न दें तो वह जीवन में सफलता पाने के लिए उसे

इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके अलावा वसंत के दिन थे ; छप्पर फाड़कर उन्हें ढेरों पैसा मिल गया था ; वह बिल्कुल अकेले और बुझे-बुझे हुए थे। मैं कल्पना कर सकता हूं कि याकोव से कारोबार के मामलात पर बहस करते हुए, और येपिफ़ानोव-परिवार के साथ कभी न ख़त्म होनेवाले मुक़द्दमे और रूपवती अव्दोत्या वसील्येव्ना को याद करके, जिसे उन्होंने बहुत अरसे से नहीं देखा था, उन्होंने याकोव से कहा होगा, "जानते हो, याकोव ख़ार्लाम्पिच, मैं समझता हूं कि लंबे मुक़द्दमे में वक़्त बर्बाद करने के बजाय वह मनहूस ज़मीन उन्हें दे देना ही अच्छा होगा। क्यों? तुम्हारा क्या ख़्याल है?"

मैं कल्पना कर सकता हूं कि ऐसा सवाल सुनकर याकोव की उंगलियां किस तरह उसकी पीठ के पीछे इंकारवाले ढंग से ऐंठने लगी होंगी, और किस तरह उसने साबित किया होगा कि "बहरहाल, बात हमारी ही ठीक है, प्योत्र अलेक्सांद्रोविच।"

लेकिन पापा ने बग्घी जुतवाने का हुक्म दिया, अपना ज़ैतूनी रंग का फ़ैशनेबुल कोट पहना, अपने बचे-खुचे बालों पर ब्रुश फेरा, अपने रूमाल पर इत्र छिड़का, और अत्यंत उल्लसित मन:स्थिति में बग्घी पर बैठकर अपने पड़ोसी के घर चल दिये ; उनकी यह मन:स्थिति इस दृढ़ विश्वास से प्रेरित हुई थी कि उनका आचरण ख़ानदानी रईसों की आन-बान के अनुकूल था, और मुख्यत: इस उम्मीद से कि एक ख़ूबसूरत औरत से उनकी मुलाक़ात होगी।

मुझे बस इतना मालूम है कि पहली मुलाक़ात के दौरान पापा प्योत्र वसील्येविच से नहीं मिले थे, जो उस वक़्त खेतों पर गये हुए थे, और यह कि उन्होंने उन महिलाओं के साथ एक-दो घंटे का समय बिताया था। मैं कल्पना कर सकता हूं कि किस तरह उन्होंने उनका अभिवादन किया होगा, उन्हें लुभाने के लिए किस तरह अपने मुलायम जूते पटकते हुए बहुत ही धीमे स्वर में कुछ कहते हुए, और आंखों में मिठास भरते हुए उनका सौजन्य फूटा पड़ रहा होगा। मैं यह भी कल्पना कर सकता हूं कि उन ख़ुशमिज़ाज बड़ी-बी ने अपने दिल में अचानक किस तरह उनके लिए स्नेह की कोमल भावना पैदा कर ली होगी, और उनकी ख़ूबसूरत भावशून्य बेटी में कितनी चपलता आ गयी होगी।

जब नौकरानी हांपती हुई प्योत्र वसील्येविच को भागी-भागी यह सूचना देने गयी होगी कि बड़े इर्तेन्येव स्वयं आये थे, तो मैं कल्पना कर सकता हूं कि उन्होंने झल्लाकर जवाब दिया होगा, "तो क्या हुआ? आया था तो आने दो!" और किस तरह इसके नतीजे के तौर पर वह यथासंभव धीमी रफ़्तार से घर लौट आये होंगे और शायद अपने पढ़ने के कमरे का रुख़ करके उन्होंने जान-बूझकर अपना सबसे मैला कोट पहन लिया होगा, और बावर्ची से कहला भेजा होगा कि किसी भी हालत में वह खाने की चीज़ों में कोई चीज़ बढ़ाये नहीं, अगर औरतें उससे कहें भी तब भी नहीं।

इसके बाद मैंने पापा को अकसर प्योत्र वसील्येविच के साथ देखा, इसलिए मैं अपनी कल्पना में उस पहली मुलाक़ात का बहुत स्पष्ट चित्र बना सकता हूं। मैं कल्पना कर सकता हूं कि किस तरह इस बात के बावजूद कि पापा ने उस मुक़द्दमे को शांतिपूर्वक ख़त्म कर देने का सुझाव रखा था, प्योत्र वसील्येविच इसलिए उदास और झुंझलाये हुए थे कि उन्होंने अपनी मां की ख़ातिर अपनी ज़िंदगी क़ुर्बान कर दी थी और पापा ने ऐसा कोई काम नहीं किया था, और मैं इसकी भी कल्पना कर सकता हूं कि प्योत्र वसील्येविच को किसी बात पर ताज्जुब नहीं हुआ होगा, और किस तरह पापा ने यह जताते हुए कि जैसे उन्होंने उनकी उदासी को देखा ही न हो, हंसी-मज़ाक़ और मस्ती का रवैया अपनाया होगा, और प्योत्र वसील्येविच के साथ ऐसा बर्ताव किया होगा जैसे वह कमाल के मसख़रे हों, जो कभी-कभी उन्हें बुरा भी लगा होगा, हालांकि मजबूरन उन्हें अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ अकसर उनकी बात मान भी लेनी पड़ी होगी। किसी न किसी वजह से पापा, जिनमें हर बात का मज़ाक उड़ाने की प्रवृत्ति थी, प्योत्र वसील्येविच को कर्नल कहते थे, और इस बात के बावजूद कि एक बार मेरे सामने येपिफ़ानोव ने, जिनका चेहरा झुंझलाहट के मारे लाल हो गया था, आम तौर से भी ज़्यादा हकलाते हुए कहा था कि वह "क-क-कर्नल नहीं, ले-ले-लेफ़्टिनेंट थे," पापा ने पांच मिनट बाद ही उन्हें फिर कर्नल कहा था।

ल्यूबा ने मुझे बताया कि हम लोगों के गांव आने से पहले येपिफ़ानोव-परिवार के लोगों से रोज मुलाक़ातें होती थीं और बड़ी चहल-

पहल रहती थी। पापा में यह गुण तो था ही कि वह हर चीज़ का इंतजाम इस तरह करते थे कि उसमें मौलिकता और सूझ-बूझ की साफ़ झलक रहती थी और साथ ही सादगी और सुरुचि का पुट भी रहता था, उन्होंने जब भी शिकार पर जाने का आयोजन कराया या मछलियां पकड़ने का या आतिशबाज़ी के तमाशे करवाये, सभी में येपिफ़ानोव-परिवार ने भाग लिया। ल्यूबा ने बताया कि इससे भी ज्यादा मजा आता अगर वह प्योत्र वसील्येविच न होता, जिसे बर्दाश्त करना नामुमकिन था, जो हर दम मुंह बनाये रहता था और हकलाता रहता था और सारा मज़ा किरकिरा कर देता था।

हम लोगों के आने के बाद येपिफ़ानोव-परिवार के लोग हमारे यहा सिर्फ़ दो बार आये और हम उनके यहां एक बार गये। लेकिन सेंट पीटर के त्योहार के बाद, जिस दिन पापा का नामदिवस होता था, और जिस दिन येपिफ़ानोव-परिवार के लोग और बहुत-से दूसरे लोग आये थे, येपिफ़ानोव-परिवार के साथ हमारे संबंध बिल्कुल ख़त्म हो गये; पापा उन लोगों से मिलने अकेले जाने लगे।

उस छोटी-सी अवधि के दौरान जब मुझे पापा और दूनेच्का को, जैसा कि उनकी मां उन्हें कहती थीं, साथ देखने के अवसर मिले, तब उनके बारे में ये बातें मेरे ध्यान में आयीं। पापा निरंतर उस उल्लास-मयी मन:स्थिति में रहते थे जो अपने आने के दिन मैंने देखी थी। वह इतने मस्त और नौजवान, और ज़िंदगी और ख़ुशी से भरपूर लगते थे, कि यह ख़ुशी उनके चारों ओर के लोगों पर फैली रहती थी और अनायास ही सब लोगों में यही मनोदशा उत्पन्न कर देती थी। जब अव्दोत्या वसील्येव्ना कमरे में होती थीं तो पापा कभी उनसे एक क़दम भी दूर नहीं जाते थे, और लगातार उनकी सराहना में ऐसी मीठी-मीठी बातें कहते रहते थे कि मुझे उनकी वजह से शर्म आती थी; या फिर वह चुपचाप बैठे उन्हें एकटक देखते रहते थे, सिर्फ़ अपना कंधा बड़े कामुक और आत्म-संतुष्ट ढंग से बिचकाते रहते थे और कभी-कभी मुस्कराते हुए उनके कान में कुछ कहते थे। लेकिन ऐसा करते हुए उनका वैसा ही मज़ाक़िया अंदाज़ रहता था जैसा कि अधिकांश गंभीर समस्याओं पर बात करते समय हमेशा उनका रहता था।

ऐसा लगता था कि पापा ने अपनी ख़ुशी की छूत अव्दोत्या वसील्येव्ना को भी लगा दी थी, जो उन दिनों लगभग निरंतर ही उनकी बड़ी-बड़ी नीली आंखों में चमकती रहती थी, उन क्षणों को छोड़कर जब उन पर अचानक लजाने का ऐसा दौरा पड़ता था कि मुझे इस भावना से परिचित होने के कारण उन पर बड़ा तरस आता था, और उन्हें देखकर तकलीफ़ होती थी। ऐसे क्षणों में स्पष्टतः उन्हें हर नज़र से और हर हरकत से डर लगता था; उन्हें ऐसा लगता था जैसे हर आदमी उन्हें घूर रहा है, सिर्फ़ उनके बारे में सोच रहा है, और उनसे संबंध रखनेवाली हर चीज़ उसे बेहूदा लग रही है। वह डरी-डरी नज़रों से सबको देखती थीं; उनके चेहरे पर एक रंग आता था एक रंग जाता था, और वह बड़े साहस से और ऊंचे स्वर में बातें करने लगती थीं, जो अधिकांश बकवास होती थीं; और उन्हें इस बात का आभास रहता था, और इस बात का भी आभास रहता था कि पापा समेत सभी लोग उनकी बातें सुन रहे थे, और तब वह और भी बुरी तरह झेंप जाती थीं। ऐसी हालत में पापा उस बकवास की ओर ध्यान भी नहीं देते थे, बल्कि पहले जैसी ही कामुकता के साथ, कुछ खांसते-खांसते और हर्षातिरेक से विभोर होकर उन्हें एकटक देखते रहते थे। मैंने देखा कि अव्दोत्या वसील्येव्ना के लजीलेपन के दौरे हालांकि बिना किसी कारण के शुरू होते थे, कभी-कभी उन्हें इसका दौरा पापा की मौजूदगी में किसी नौजवान और ख़ूबसूरत औरत का नाम लिये जाने के फ़ौरन बाद पड़ता था। अकसर चिंतामग्नता से उनकी इस विचित्र, अटपटी मस्ती में संक्रमण, जिसका उल्लेख मैं पहले कर चुका हूं, पापा के प्रिय शब्दों और मुहावरों का इस्तेमाल किया जाना, पापा से शुरू की गयी बहसों को दूसरे लोगों के साथ जारी रखने का उनका ढंग – इन सब बातों से मुझे पापा और अव्दोत्या वसील्येव्ना के संबंध स्पष्ट हो जाने चाहिये थे, और फिर यह भी बात थी कि अगर उनसे संबंधित एक पात्र मेरे अपने पिता के अलावा कोई दूसरा व्यक्ति होता और मैं उम्र में थोड़ा बड़ा होता तो यह सम्भव था; लेकिन मुझे उसके बाद भी कोई शक नहीं हुआ जब पापा मेरे सामने प्योत्र वसील्येविच का पत्र पाने के बाद बहुत निराश हो गये थे और अगस्त के अंत तक येपिफ़ानोव-परिवार से मिलने नहीं गये थे।

अगस्त के अंत में पापा फिर हमारे पड़ोसियों के यहां जाने लगे; और जिस दिन वोलोद्या और मैं मास्को के लिए रवाना होनेवाले थे उससे एक दिन पहले उन्होंने हमें बताया कि वह अव्दोत्या वसील्येव्ना येपिफ़ानोवा से शादी करनेवाले हैं।

अध्याय ३५

हम लोगों पर ख़बर का असर

घोषणा से एक दिन पहले ही घर में सबको इस बात का पता चल चुका था और इसके बारे में सबके मत अलग-अलग थे। मीमी सारे दिन अपने कमरे से बाहर नहीं निकलीं और रोती रहीं। कात्या उनके पास ही बैठी रही और आहत भावनाओं की मुद्रा बनाये, जो स्पष्टतः उसने अपनी मां से सीखा था, सिर्फ़ खाने के वक़्त बाहर निकली। इसके विपरीत, ल्यूबा बहुत मगन थी और उसने खाने के वक़्त कहा कि उसे एक बहुत बढ़िया भेद की बात मालूम है जो वह किसी को बतायेगी नहीं।

"तुम्हारी भेद की बात में बढ़िया कुछ नहीं है," वोलोद्या ने कहा, जो उसकी तरह संतुष्ट नहीं था। "बल्कि उल्टी बात है, अगर तुम गंभीरता से सोच सकतीं तो तुम्हारी समझ में आ जाता कि यह बड़ी बदनसीबी की बात है।"

ल्यूबा आश्चर्य से उसे घूरती रही और कुछ बोली नहीं।

खाने के बाद वोलोद्या मेरी बांह पकड़ना चाहता था; लेकिन यह सोचकर कि ऐसा करना भावुकता जैसा होगा, उसने केवल मेरी कुहनी को छुआ और सिर से हॉल की ओर इशारा किया।

"ल्यूबा जिस भेद की चर्चा कर रही थी वह मालूम है तुम्हें?" उसने इस बात का आश्वासन कर लेने के बाद कि हम दोनों अकेले थे, मुझसे पूछा।

ऐसा कभी-कभार ही होता था कि वोलोद्या और मैं किसी गंभीर समस्या के बारे में आमने-सामने बातें करते हों, इसलिए जब भी ऐसा

होता था हम दोनों अटपटा महसूस करते थे, और, वोलोद्या के शब्दों में, हमारी आंखों में लड़के नाचने लगते थे; लेकिन इस वक़्त मेरी आंखों में परेशानी देखकर वह मेरे चेहरे को बड़ी देर तक गंभीरता से घूरता रहा मानो कह रहा हो, "परेशान होने की कोई बात नहीं है, हम दोनों बहरहाल भाई हैं, और हमें परिवार के हर गंभीर सवाल के बारे में आपस में सलाह-मशविरा करना चाहिये।" मैं उसकी बात समझ गया, और उसने अपनी बात कहना शुरू किया:

"पापा येपिफ़ानोवा से शादी करनेवाले हैं, जानते हो?"

मैंने सिर हिलाकर स्वीकृति प्रकट की क्योंकि मैं इसके बारे में सुन चुका था।

"यह क़तई अच्छा नहीं है," वोलोद्या कहता रहा।

"क्यों?"

"क्यों?" उसने झुंझलाकर जवाब दिया, "बड़ी अच्छी बात होगी न, कि हम लोगों के ऐसे हकलानेवाले मामा होंगे, कर्नल साहब, और वे सब रिश्तेदार होंगे। हां, वह बस अभी ही अच्छी लगती हैं, बुरी नहीं हैं, लेकिन कौन जाने आगे चलकर वह कैसी निकलेंगी? माना कि इससे हम लोगों को कोई फ़र्क़ पड़नेवाला नहीं है, लेकिन ल्यूबा को तो थोड़े ही दिन में सोसाइटी में क़दम रखना है। ऐसी belle-mère* के साथ उसके लिए यह बहुत सुखद नहीं होगा; वह फ़्रांसीसी भी बहुत बुरी बोलती हैं, और वह उसे कैसे तौर-तरीक़े सिखा सकती हैं! वह पुअस्सार्द** के अलावा कुछ नहीं हैं; भले ही वह अच्छी हों लेकिन हैं पुअस्सार्द ही," वोलोद्या ने अपनी बात खत्म करते हुए कहा; स्पष्टतः वह इस उपाधि "पुअस्सार्द" से बहुत खुश था।

वोलोद्या को इतने शांत भाव से पापा की पसंद के बारे में अपनी राय देते हुए सुनना मुझे कुछ अजीब तो लग रहा था, लेकिन मैंने महसूस किया कि उसका कहना ठीक था।

"पापा शादी क्यों कर रहे हैं?" मैंने पूछा।

---

* सौतेली मां। (फ़्रांसीसी)

** फ़्रांसीसी में इस शब्द का शाब्दिक अर्थ तो मछलीवाली होता है लेकिन तिरस्कार से इसका प्रयोग सामान्य वर्ग की स्त्रियों के लिए किया जाता है।

"कुछ दाल में काला है; कौन जाने? मुझे तो बस इतना मालूम है कि प्योत्र वसील्येविच ने पापा को शादी करने के लिए समझाया-बुझाया, और इसकी मांग की; पापा ऐसा नहीं करना चाहते थे; और फिर किसी तरह की शेखी में आकर उनके मन में भी अचानक यह वात समा गयी; वड़ी विचित्र कहानी है। मैंने पिताजी को अव जाकर समझना शुरू किया है," वोलोद्या कहता रहा (उन्हें "पापा" कहने के वजाय उसके "पिताजी" कहने से मुझे बहुत ठेस पहुंची), "कि वह वहुत अच्छे आदमी हैं, नेक और समझदार, लेकिन वहुत ही चंचल स्वभाव के और ढुलमुल... ताज्जुब होता है! वह किसी औरत को ठंडे दिमाग़ से देख ही नहीं सकते। आज तक किसी औरत से उनकी जान-पहचान हुई ही नहीं है जिससे वह मुहब्वत न करने लगे हों। मीमी तक से, जानते हो?"

"सचमुच?"

"यह विल्कुल सच है। मुझे हाल ही में पता चला है कि जव मीमी जवान थी तव वह उनसे प्यार करते थे, उन्हें कविताएं लिखकर भेजते थे, और उनके वीच कुछ मामला था। मीमी आज तक झेल रही है।" और यह कहकर वोलोद्या ठहाका मारकर हंस पड़ा।

"ऐसा नहीं हो सकता!" मैंने आश्चर्य से कहा।

"लेकिन मुख्य वात तो यह है," वोलोद्या फिर गंभीर होकर कहता रहा, और अचानक फ़्रांसीसी वोलने लगा, "कि हमारे सव सगे-संवंधियों के लिए यह शादी किस हद तक रुचिकर होगी। और फिर उनके वच्चे भी ज़रूर होंगे।"

वोलोद्या की समझदारी की राय और उसकी दूरदर्शिता पर मुझे इतना आश्चर्य हुआ कि मेरी समझ में नहीं आया कि क्या जवाव दूं।

तभी ल्यूवा हम लोगों के पास आयी।

"तो तुम्हें मालूम हो गया?" उसने खुश होकर पूछा।

"हां," वोलोद्या ने कहा, "लेकिन मुझे ताज्जुव होता है, ल्यूवा: तुम अव वच्ची तो हो नहीं, तुम्हें इस वात पर खुशी कैसे हो सकती है कि पापा ऐसी वाहियात औरत से शादी करने जा रहे हैं?"

ल्यूवा अचानक गंभीर दिखायी देने लगी और चिंतामग्न हो गयी।

"अरे, वोलोद्या! वाहियात औरत क्यों? अव्दोत्या वसील्येव्ना के बारे में ऐसी बात कहने का तुम्हें क्या अधिकार है? अगर पापा उनसे शादी करने जा रहे हैं, तो वह वाहियात औरत नहीं हो सकतीं।"

"अच्छा, नहीं, मैंने वैसे ही कहा, लेकिन फिर भी..."

"इस मामले के बारे में 'लेकिन फिर भी' की कोई बात मत बोलो," ल्यूबा एकदम भड़ककर बीच में बोल पड़ी। "तुमने मुझे कभी उस लड़की को, जिससे तुम प्रेम करते हो, वाहियात कहते सुना है? पापा और एक बहुत अच्छी औरत के बारे में तुम ऐसी बात कैसे कह सकते हो? तुम मेरे सबसे बड़े भाई होने के बावजूद मुझसे ऐसी बात न कहना; कभी न कहना।"

"क्या मैं अपनी राय भी नहीं ज़ाहिर कर सकता कि..."

"नहीं! हमारे पापा जैसे आदमी के बारे में नहीं," ल्यूबा ने फिर उसकी बात बीच में ही काट दी। "मीमी कर सकती हैं, लेकिन तुम नहीं, मेरे बड़े भैया।"

"अरे, तुम अभी कुछ नहीं समझतीं," वोलोद्या ने तिरस्कार से कहा। "सुनो, क्या यह अच्छी बात है कि कोई येपिफ़ानोवा अव्दो-त्या तुम्हारी स्वर्गवासी मां की जगह ले लें।"

ल्यूबा एक मिनट चुप रही, और फिर अचानक उसकी आंखों में आंसू आ गये।

"यह तो मैं जानती थी कि तुम घमंडी हो, लेकिन मैं यह नहीं जानती थी कि तुम इतने दुष्ट हो," उसने कहा और हम लोगों के पास से चली गयी।

"रोटी को!" वोलोद्या ने हास्यजनक गंभीर चेहरा बनाकर मूर्खों की तरह बुझी-बुझी नज़रों से देखते हुए कहा। "इनसे बहस करने की कोशिश तो करे कोई," वह कहता रहा, मानो अपने आपको इस बात के लिए लताड़ रहा हो कि वह अपने आपको इस हद तक कैसे भूल गया कि ल्यूबा से बात करने पर उतर आया।

अगले दिन मौसम ख़राब था, और जिस वक़्त मैं ड्राइंग-रूम में गया उस वक़्त तक न पापा चाय पीने आये थे न औरतें। रात को पतझड़ की ठंडी बारिश हो गयी थी; बचे-खुचे बादल रात को अपना सारा पानी उंडेल चुकने के बाद अभी तक आसमान पर इधर-उधर

दौड़ रहे थे और सूरज की धुंधली-धुंधली थाली, जो आसमान पर काफ़ी ऊंची चढ़ चुकी थी, बादलों के पीछे से हल्की-हल्की दिखायी दे रही थी। हवा चल रही थी, वातावरण में नमी और ठंडक थी। बाग़ की तरफ़ का दरवाजा खुला था; और बरसाती के नमी से काले पड गये तख़्तों पर रात की बारिश की वजह से जगह-जगह गढ़ों में जो पानी भर गया था वह सूख चला था। हवा खुले हुए दरवाज़े को उसके क़ब्ज़ों पर भुला रही थी; रास्तों पर सीलन और कीचड़ थी; नंगी सफ़ेद डालोंवाले बर्च के पुराने पेड़, झाड़ियां और घास, बिच्छूबूटियां, अंगूर की बेलें, एल्डर के पेड़, जिनकी पत्तियों का हल्के रंगवाला हिस्सा बाहर की ओर आ गया था, सभी अपनी-अपनी जगहों पर अपने आपको झंझोड़ रहे थे और ऐसा लग रहा था कि वे अपने आपको जड़ मे उखाड़ फेंकना चाहते थे; लाइम-वृक्षों के बीच से गुज़रनेवाले रास्ते से गोल-गोल पीली पत्तियां उड़ रही थीं, मंडरा रही थी और एक-दूसरे का पीछा कर रही थीं, और बिल्कुल भीगकर वे गीले रास्ते पर और चरागाह की नम गहरे हरे रंग की घास पर बिछी जा रही थीं। मेरे विचार पापा की शादी के बारे में उस दृष्टि से सोचने में खोये हुए थे, जिस दृष्टि से वोलोद्या ने इस समस्या को देखा था। मेरी बहन का भविष्य, हमारा भविष्य, यहां तक कि पापा का भविष्य मुझे बहुत अच्छा नहीं मालूम हो रहा था। इस विचार से मेरे अंदर क्रोध भर गया था कि एक बाहर की औरत, एक अजनबी, और सबसे बढ़कर एक **नौजवान** औरत, जिसे इसका कोई अधिकार नहीं था, अचानक कई बातों में जगह ले ले—किसकी? वह एक मामूली **नौजवान** औरत थी, और वह जगह ले रही थी मेरी स्वर्गवासी मां की! मेरा मन भारी था और मुझे पापा अधिकाधिक अपराधी लग रहे थे। इतने में ख़ानसामां की कोठरी में मुझे उनके और वोलोद्या के बात करने की आवाज़ें सुनायी दीं। मैं उस वक़्त पापा से नहीं मिलना चाहता था, इसलिए मैं दरवाज़े के पास से हट गया; लेकिन ल्यूबा ने मेरे पास आकर कहा कि पापा मुझे बुला रहे थे।

वह पियानो पर एक हाथ रखे ड्राइंग-रूम में खड़े थे और बड़ी अधीरता से, और साथ ही कुछ गंभीरता से मेरी ओर देख रहे थे। उस पूरे दौर में मैंने उनके चेहरे पर जवानी

और ख़ुशी का जो अंदाज़ देखा था वह ग़ायब हो चुका था। वह उदास थे। वोलोद्या हाथ में पाइप लिये कमरे में इधर-उधर टहल रहा था। मैंने पापा के पास जाकर उन्हें सलाम किया।

"अच्छा, मेरे दोस्तो," उन्होंने सिर उठाकर दृढ़ निश्चय के साथ उस ख़ास, चुस्त लहजे में कहा जिसमें उन बातों की चर्चा की जाती है, जो अरुचिकर भले ही हों पर जिनकी भलाई-बुराई को परखने का वक़्त निकल चुका होता है, "मैं समझता हूं कि तुम लोगों को मालूम होगा कि मैं अव्दोत्या वसील्येव्ना से शादी करने जा रहा हूं।" वह थोड़ी देर चुप रहे। "तुम्हारी मां के बाद मैं शादी नहीं करना चाहता था, लेकिन..." वह क्षण-भर के लिए रुके,–"लेकिन... लेकिन ऐसा लगता है कि क़िस्मत में यही लिखा था। अव्दोत्या बहुत अच्छी, नेक लड़की है, और वह बहुत कमसिन भी नहीं है। मुझे उम्मीद है, बच्चो, कि तुम उसे प्यार करोगे; और वह तो तुम्हें दिल से प्यार करने लगी है, वह बहुत अच्छी औरत है। तो," उन्होंने वोलोद्या को और मुझे उनकी बात काटने का कोई समय दिये बिना हम लोगों की ओर मुड़ते हुए कहा, "अब तुम लोगों के यहां से जाने का वक़्त आ गया है; मैं तो नये साल तक यहां रहूंगा, उसके बाद मैं मास्को आऊंगा,"–यहां पर वह एक बार फिर झिझके,–"अपनी बीबी और ल्यूबा के साथ।" मुझे यह देखकर बड़ा दुःख हो रहा था कि पापा हम लोगों के सामने इतने डरे-डरे और अपराधी जैसे लग रहे थे; मैं आगे बढ़कर उनके और पास आ गया; लेकिन वोलोद्या पाइप पीता रहा और सिर झुकाये कमरे में टहलता रहा।

"तो, दोस्तो, तुम्हारे बूढ़े बाप ने क्या मंसूबा तैयार किया है," पापा ने अपनी बात ख़त्म करते हुए कहा; उनका चेहरा लाल हो गया और उन्होंने कुछ खांसते हुए वोलोद्या की और मेरी ओर हाथ बढ़ाया। यह बात कहते वक़्त उनकी आंखों में आंसू थे; और मैंने देखा था कि जो हाथ उन्होंने वोलोद्या की ओर बढ़ाया था, जो उस समय कमरे के दूसरे छोर पर था, वह थोड़ा-सा कांप रहा था। इस कांपते हुए हाथ को देखकर मेरे दिल को ठेस लगी और मेरे दिमाग़ में एक अजीब बात आयी जिसने मुझे और भी बेचैन कर दिया,–मेरे मन में यह विचार आया कि पापा १८१२ में फ़ौज में रह चुके थे, और वह एक

बहादुर अफ़सर थे, जैसा कि सभी जानते हैं। मैं उनका बड़ा-सा गठीला हाथ थामे रहा और मैंने उसे चूम लिया। उन्होंने मेरा हाथ ज़ोर से दबाया; और अपने आंसुओं को पीते हुए उन्होंने ल्यूबा का काले बालोंवाला सिर अचानक अपने दोनों हाथों में थाम लिया और उसकी आंखों को चूमने लगे। वोलोद्या ने पाइप गिर जाने का ढोंग किया और उसे उठाने के लिए झुककर अपनी मुट्ठी से आंसू पोंछे और यह कोशिश करता हुआ कि कोई उसे देखने न पाये वह कमरे के बाहर चला गया।

अध्याय ३६

यूनिवर्सिटी

शादी दो हफ़्ते में होनेवाली थी; लेकिन हमारी पढ़ाई शुरू हो चुकी थी, इसलिए सितंबर के शुरू में वोलोद्या और मैं मास्को वापस चले गये। नेख़ल्यूदोव-परिवार भी गांव से वापस आ गया था। द्मित्री फ़ौरन मुझसे मिलने आया (चलते समय हमने एक-दूसरे को पत्र लिखने का वादा किया था, लेकिन ज़ाहिर है कि हमने एक बार भी नहीं लिखा), और हम लोगों ने तै किया कि अगले दिन यूनिवर्सिटी में मेरी पढ़ाई के पहले दिन वह मुझे साथ लेकर वहां जायेगा।

उस दिन हर चीज़ धूप में चमक रही थी।

ऑडिटोरियम में घुसते ही मुझे ऐसा लगा कि मेरा व्यक्तित्व मस्त नौजवान लोगों के उस समुद्र में खोकर रह गया है जो बड़ी-सी खिड़कियों से आती हुई चमकदार धूप में शोर मचाता हुआ सभी दरवाज़ों और बरामदों में ठाठें मार रहा था। यह आभास बहुत सुखद था कि मैं उस विशाल मंडली का एक सदस्य था। लेकिन उन तमाम लोगों में से बहुत थोड़े ही ऐसे थे जिन्हें मैं जानता था, और यह जान-पहचान भी सिर हिलाकर सलाम कर लेने और बस इतना कह देने तक सीमित थी, "कैसे हो, इर्तेन्येव?" लेकिन मेरे चारों ओर लोग हाथ मिला और एक-दूसरे को धक्के दे रहे थे, चारों ओर से मित्रता के शब्दों, मुस्कराहटों, सद्भावनाओं और मज़ाक़ों की बौछार हो रही

थी। हर जगह मुझे उस बंधन कर आभास हो रहा था जिसने नौ-जवानों की इस बिरादरी को एक सूत्र में बांध रखा था, और मैं दुःखी होकर महसूस कर रहा था कि किसी तरह मैं इस सूत्र की पहुंच से बाहर रह गया था। लेकिन यह केवल एक क्षणिक आभास था। इसके फलस्वरूप और इसकी वजह से पैदा होनेवाली झुंझलाहट के फलस्वरूप मुझे बहुत जल्दी यह भी पता चल गया कि, इसके विपरीत, यह बहुत अच्छी बात थी कि मैं इस समाज का अंग नहीं था, कि मेरी बहुत भले लोगों की अलग ही अपनी मंडली होनी चाहिये, और मैं तीसरी बेंच पर बैठ गया, जहां बैठे थे काउंट ब०, बैरन ज़०, प्रिंस र०, ईविन और उस वर्ग के दूसरे सज्जन, जिनमें से मैं सिर्फ़ ईविन और काउंट ब० को जानता था। लेकिन ये सज्जन मुझे इस तरह देख रहे थे कि उससे मैंने महसूस किया कि मैं उनके समाज का भी आदमी नहीं हूं। मेरे चारों ओर जो कुछ होता रहता था उसे मैं बड़े ध्यान से देखने लगा। सफ़ेद उलझे हुए बालों और सफ़ेद दांतोंवाला सेम्योनोव मुझसे थोड़ी ही दूर कोट के बटन खोले अपनी कुहनियों पर झुका बैठा था, और क़लम को कुतर रहा था। स्कूलवाला वह लड़का जो परीक्षा में प्रथम आया था, काले गुलूबंद से अभी तक अपना गाल लपेटकर पहली बेंच पर बैठा था और अपनी साटन की वास्कट पर लगी हुई चांदी की घड़ी की चाभी से खेल रहा था। इकोनिन, जो किसी तरकीब से यूनिवर्सिटी में भरती हो गया था, नीली पतलून पहने, जिसमें उसके जूते पूरी तरह छिप जाते थे, सबसे ऊंची बेंच पर बैठा हंस रहा था और चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा था कि वह पार्नासस* की चोटी पर पहुंच गया था। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इलेंका ने न केवल कुछ रुखाई से बल्कि तिरस्कारपूर्वक मुझे सलाम किया, मानो मुझे याद दिलाना चाहता हो कि यहां हम सब बराबर थे; वह मेरे सामने बैठा था और अपनी पतली-पतली टांगें एक खास बेबाकी और बेतकल्लुफ़ी से बेंच के ऊपर रखकर (मुझे लगा कि इसका लक्ष्य मैं था) दूसरे लड़के से बातें कर रहा था;

---

* पार्नासस – यूनान का वह पर्वत जिसे संगीत तथा कला के देवता अपोलो (सूर्य देवता) और कला की देवियों का निवासस्थान माना जाता है। – अनु०

बीच-बीच में वह मेरी ओर भी देखता जाता था। मेरे पास बैठी हुई ईविन की टोली फ़्रांसीसी में बातें कर रही थी। ये सभी सज्जन मुझे बेहद बेवक़ूफ़ मालूम हो रहे थे। उनकी बातचीत का जो शब्द भी मेरे कानों में पड़ता था वह मुझे न केवल अर्थहीन बल्कि ग़लत भी मालूम होता था, वह फ़्रांसीसी होती ही नहीं थी। ("Ce n'est pas Français,"* मैंने अपने मन में कहा) ; सेम्योनोव, इलेंका और दूसरों के रवैये, उनकी बातें और उनका व्यवहार मुझे नीच, असभ्य और ऐसा लग रहा था जो comme il faut नहीं था।

मैं किसी भी टोली में शामिल नहीं था और इस बात का आभास होने के कारण कि मैं सबसे अलग-थलग था और दोस्त बनाने में असमर्थ था, मुझे झुंझलाहट हो रही थी। मेरे सामनेवाली बेंच पर बैठा हुआ एक लड़का अपने नाख़ून कुतर रहा था, जो फुचड़ों की वजह से बिल्कुल लाल हो गये थे; और यह मुझे इतना घिनौना लग रहा था कि मैं उससे दूर हटकर बैठ गया। मुझे याद है कि मेरे अंतरतम में यह पहला दिन मुझे अत्यंत निराशाजनक लग रहा था।

जब प्रोफ़ेसर साहब कमरे में आये, और थोड़ी देर की आम हलचल के बाद ख़ामोशी छा गयी, तब मुझे याद है कि मैंने अपने व्यंगपूर्ण रवैये की लपेट में प्रोफ़ेसर को भी ले लिया, और मुझे इस बात पर ताज्जुब हुआ कि प्रोफ़ेसर साहब ने अपना लेक्चर शुरू करने से पहले एक ऐसा फ़िक़रा बोला था जिसका मेरी राय में कोई मतलब नहीं था। मैं चाहता था कि उनका लेक्चर शुरू से आख़िर तक इतना बुद्धिमत्तापूर्ण हो कि एक भी शब्द न उसमें से काटा जा सके न उसमें जोड़ा जा सके। इस मामले में जब मेरा भ्रम टूट गया तो ख़ूबसूरत जिल्दवाली उस नोटबुक में, जो मैं अपने साथ लाया था, 'पहला लेक्चर' शीर्षक के नीचे, मैंने फ़ौरन अपने अठारह पार्श्व-चित्र बनाकर उन्हें एक माला की तरह आपस में जोड़ दिया और रह-रहकर मैं काग़ज पर अपना हाथ चलाता रहा ताकि प्रोफ़ेसर साहब (जिनके बारे में मुझे पूरा यक़ीन था कि वह मेरी ओर बहुत ध्यान दे रहे हैं) यह समझें कि मैं लिख रहा हूं। इसी लेक्चर के दौरान यह फ़ैसला

---

* यह फ़ांसीसी नहीं है। (फ़्रांसीसी)

कर लेने के बाद कि यह ज़रूरी नहीं है कि प्रोफ़ेसर साहब जो कुछ कहें वह सभी लिख लिया जाये, और यह कि ऐसा करना बेवक़ूफ़ी भी होगी, मैंने अपनी पढ़ाई के पूरे दौरान में इस नियम का पालन किया।

उसके बाद के लेक्चरों में मुझे अपने अलगाव का इतना प्रबल आभास नहीं हुआ, कई लोगों से मेरी जान-पहचान हो गयी, हमने एक-दूसरे से हाथ मिलाये और बातें कीं; फिर भी किसी न किसी वजह से मेरे और मेरे साथियों के बीच वास्तविक घनिष्ठता नहीं पैदा हुई और मैं अकसर अपने आपको उदास पाता था और ख़ुश रहने का केवल ढोंग करता था। ईविन और दूसरे रईसज़ादों की मंडली में, जैसा कि उन्हें कहा जाता था, मैं शामिल नहीं हो सकता था, क्योंकि, जैसा कि मुझे अब याद आता है, मैं उनके साथ रुखाई और अक्खड़पन से पेश आता था, और उन्हें सलाम करने के लिए तभी झुकता था जब वे मुझे देखकर झुकते थे; और स्पष्टतः उन्हें मेरी जान-पहचान की बहुत कम ज़रूरत थी। लेकिन ज़्यादातर दूसरे लोगों के साथ यह हालत बिल्कुल ही दूसरी वजह से पैदा होती थी। ज्यों ही मुझे इस बात का आभास होता था कि किसी साथी का झुकाव मेरी ओर है, मैं फ़ौरन उस पर यह बात ज़ाहिर कर देता था कि मैं प्रिंस इवान इवानिच के यहां खाना खाता था, और यह कि मेरे पास अपनी घोड़ागाड़ी थी। यह सब कुछ मैं सिर्फ़ इसलिए कहता था कि मेरी ज़्यादा अच्छी तस्वीर उभरे और मेरा वह साथी मुझे ज़्यादा पसंद करने लगे; लेकिन, इसके विपरीत, मुझे यह देखकर आश्चर्य होता था कि लगभग हमेशा ही मेरा साथी जैसे ही प्रिंस इवान इवा-निच के साथ मेरी रिश्तेदारी की और मेरी अपनी घोड़ागाड़ी होने की बात सुनता था वैसे ही वह अचानक मेरी ओर बेरुख़ी और घमंड का रवैया अपना लेता था।

हमारे साथ एक लड़का था – ओपेरोव – जिसकी पढ़ाई का ख़र्च सरकार देती थी; वह विनम्र, अत्यंत योग्य, और मेहनती नौजवान था, जो किसी से भी हाथ मिलाने के लिए जब अपना हाथ बढ़ाता था तो वह तख़्ते की तरह सख़्त होता था; वह न अपनी उंगलियां मोड़ता था, न अपना हाथ हिलाता-डुलाता था, जिसका नतीजा यह

हुआ कि उसके साथियों में जो मसखरे थे वे भी कभी-कभी उससे इसी ढंग से हाथ मिलाते थे, और इसे हाथ मिलाने की तख़्ता-प्रणाली कहते थे। मैं लगभग हमेशा उसके पास बैठता था, और हम अकसर आपस में बातें करते थे। ओपेरोव प्रोफ़ेसरों के बारे में जिस तरह बिल्कुल खुलकर अपनी राय देता था उससे मुझे ख़ास तौर पर ख़ुशी होती थी। वह बहुत ही स्पष्ट और दो-टूक ढंग से हर प्रोफ़ेसर के पढ़ाने के ढंग के गुण-दोष की व्याख्या करता था; और वह कभी-कभी उनका मज़ाक़ तक उड़ाता था, जिसका मुझ पर ख़ास तौर पर अजीब और चौंका देनेवाला असर होता था; वह यह बात अपने बहुत ही छोटे-से मुंह से शांत स्वर में कहता था। फिर भी वह अपनी छोटे-छोटे अक्षरोंवाली लिखाई में बिला नाग़ा हर लेक्चर बड़ी सावधानी से लिख लेता था। हम दोनों के बीच दोस्ती बढ़ने लगी थी, और हमने साथ-साथ मिलकर परीक्षाओं की तैयारी करने का फ़ैसला किया था। जब मैं उसके पास अपनी हमेशावाली जगह पर जाकर बैठता था तो उसकी छोटी-छोटी, सुरमई रंग की, चुंधी आंखें ख़ुशी से मेरी ओर मुड़ने लगी थीं। लेकिन एक बार बातचीत के दौरान मैंने उसे यह बता देना ज़रूरी समझा कि मेरी मां ने मरते वक़्त पापा से यह प्रार्थना की थी कि वह मुझे किसी ऐसी संस्था में पढ़ने नहीं भेजेंगे जो सरकारी मदद से चलती हो, और मुझे यक़ीन हो चला है कि सरकारी ख़र्च से पढ़नेवाले सारे लड़के, वे भले ही बहुत विद्वान हों, बल्कि मतलब यह कि वे मेरे लिए... ठीक लोग नहीं होते, "ce ne sont pas des gens comme il faut,"* मैंने हकलाते हुए और इस आभास के साथ कहा कि किसी न किसी वजह से मैं शरमा गया था। ओपेरोव ने मुझसे कुछ नहीं कहा; लेकिन इस घटना के बाद वह कभी मुझे पहले सलाम नहीं करता था, मेरी ओर कभी अपना छोटा-सा तख़्ते जैसा हाथ नहीं बढ़ाता था, मुझे कभी सम्बोधित नहीं करता था, और जब मैं अपनी जगह पर बैठ जाता था तो वह अपना सिर इतना झुका लेता था कि वह लगभग किताबों को छूता हुआ लगता था, और वह जताता था कि वह अपनी किताबों में खोया हुआ है। अचानक ओपेरोव की इस बेरुख़ी पर मुझे ताज्जुब

* ये लोग अशिष्ट हैं। (फ़्रांसीसी)

हुआ। लेकिन मैं pour un jeune homme de bonne maison* अनुचित समझता था कि वह सरकारी खर्च पर पढ़नेवाले छात्र ओपेरोव से बातचीत में पहल करे ; इसलिए मैंने उसे उसके हाल पर छोड़ दिया, हालांकि मैं मानता हूं कि उसकी बेरुखी से मुझे तकलीफ़ हुई थी। एक बार मैं उससे पहले पहुंच गया, और चूंकि लेक्चर एक ऐसे प्रोफ़ेसर का था जिसे लड़के पसंद करते थे, और जो लड़के किसी लेक्चर में न आने के आदी थे वे भी उस लेक्चर में जमा हो गये थे, और सारी सीटें भर गयी थीं, इसलिए मैं ओपेरोव की सीट पर बैठ गया और अपनी कापियां डेस्क पर रखकर बाहर चला गया। जब मैं ऑडिटोरियम में लौटकर आया तो मुझे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि मेरी कापियां हटाकर पीछे की बेंच पर रख दी गयी हैं और ओपेरोव अपनी जगह बैठा हुआ है। मैंने कहा कि अपनी कापियां मैंने वहां रखी थीं।

"मैं कुछ नहीं जानता," उसने अचानक भड़कते हुए मेरी ओर देखे बिना ही जवाब दिया।

"मैं कहता हूं आपसे कि अपनी कापियां मैंने रखी थीं यहां," मैंने यह सोचकर कि अपनी अकड़ मे मैं उसे दबा लूंगा जान-बूझकर उत्तेजित होते हुए कहा। "सबने देखा था मुझे ऐसा करते हुए," मैंने चारों ओर लड़कों पर नज़र डालते हुए इतना और जोड़ दिया। बहुत-से लोगों ने मुझे उत्सुकता से देखा तो लेकिन जवाब किसी ने नहीं दिया।

"यहां सीटें खरीदी नहीं जाती हैं; जो पहले आता है उसी को सीट मिलती है," ओपेरोव ने गुस्से से अपनी जगह आराम से बैठते हुए और आग बरसाती हुई आंखों से मुझे घूरते हुए कहा।

"इसका मतलब है कि तुम बदतमीज़ हो," मैंने कहा।

ऐसा लगा कि ओपेरोव ने बुदबुदाकर कुछ कहा, यहां तक लगा कि जैसे उसने बुदबुदाकर कहा हो "तुम नासमझ कुत्ते के पिल्ले हो," लेकिन मैंने उसकी बात सुनी ही नहीं। और अगर मैं सुन भी लेता

---

* अच्छे घर के किसी नौजवान के लिए। (फ़्रांसीसी)

तो क्या फ़ायदा होता ? क्या मैं manants* की तरह गालियों पर उतर आता ? (मुझे यह शब्द manants बहुत पसंद था, और कितने ही पेचीदा मामलों में यह एक जवाब और एक हल की तरह मेरे काम आता था।) शायद मैं कुछ और भी कहता, लेकिन इतने में दरवाज़ा पीटने की आवाज़ सुनाई दी और प्रोफ़ेसर साहब नीला फ़ॉक-कोट पहने चारों ओर सलाम का जवाब देते कमरा पार करके अपनी मेज़ की ओर चले गये।

लेकिन इम्तहान से पहले जब मुझे कॉपियों की ज़रूरत पड़ी तो ओपेरोव ने अपना वादा याद करके मुझे अपनी कॉपियां दे दीं और मुझे अपने साथ तैयारी करने का निमंत्रण दिया।

अध्याय ३७

दिल के मामले

उस साल जाड़े में मेरा ध्यान दिल के मामलों में काफ़ी उलझा रहा। मुझे तीन बार मुहब्बत हुई। एक बार तो मुझे बहुत भारी-भरकम डीलडौल की महिला से इश्क़ हो गया, जो फ़्रैटेग राइडिंग-हॉल में घुड़सवारी सीखने आती थीं; इस इश्क़ के चक्कर में हर मंगल और शुक्र को – इन्हीं दो दिन वह घुड़सवारी करने आती थीं – मैं उन्हें नज़र भरकर देखने के लिए उस राइडिंग-हॉल में पहुंचने लगा; लेकिन हर बार मुझे इतना डर लगा रहता था कि वह कहीं मुझे देख न लें कि मैं हमेशा उनसे बहुत दूर खड़ा होता था और जहां से उन्हें गुज़रना होता था वहां से मैं जल्दी से भाग खड़ा होता था; जब वह मेरी ओर नज़र करती थीं तो मैं इतनी लापरवाही से मुंह फेर लेता था कि मैं उनकी सूरत भी ठीक से नहीं देख पाता था; आज तक मुझे यह नहीं मालूम हो सका है कि वह सचमुच ख़ूबसूरत थीं भी कि नहीं।

दुबकोव ने, जो इन महिला से परिचित थे, राइडिंग-हॉल में मुझे एक बार देख लिया; मैं अर्दलियों और जो फ़र के लबादे वे लिये

* कुजड़े-कबाड़िये। (फ़्रांसीसी)

हुए थे उनके पीछे छिपा हुआ था। उसे मेरे इस इश्क़ का पता द्मित्री से चल गया था और उसने इस औरत से मेरा परिचय करा देने का सुझाव रखकर मुझे इतना डरा दिया कि मैं वहां से भाग खड़ा हुआ, और यह सोचकर ही कि उसने उन महिला को मेरे बारे में बता दिया था, मैंने कभी उस राइडिंग-हॉल में क़दम रखने का साहस नहीं किया, वहां तक भी नहीं जहां तक नौकर-चाकर जाते थे, इस डर से कि कहीं उनसे मुलाक़ात न हो जाये।

जब मुझे ऐसी औरतों से इश्क़ हो जाता था जिन्हें मैं जानता नहीं था, या ख़ास तौर पर ब्याहता औरतों से, तो मुझ पर उससे हज़ार गुना ज़्यादा शर्मीलापन छा जाता था जितना कि मैं सोनेच्का के मामले में महसूस करता था। मुझे दुनिया में इतना डर किसी और चीज़ से नहीं लगता था जितना कि इस चीज़ से कि जिससे मैं मुहब्बत करता था उसे इस बात का, या मेरे वजूद का भी पता चल जाये। मुझे ऐसा लगता था कि एक बार जहां उसे यह मालूम हो गया तो वह इतना अपमानित महसूस करेगी कि वह मुझे कभी माफ़ नहीं कर सकेगी। और सच तो यह है कि अगर इन महिला को सारा ब्योरा पता चल जाता कि किस तरह मैं नौकरों के पीछे छिपकर उन्हें ताकता रहता था, कि मैं उन्हें पकड़कर अपने साथ गांव ले जाने के मंसूबे बनाता रहता था, और किस तरह मैं उनके साथ वहां रहने का इरादा रखता था, और मैं क्या-क्या करनेवाला था, तो उनका अपमानित महसूस करना ठीक ही होता। लेकिन यह बात साफ़-साफ़ मेरी समझ में नहीं आयी कि अगर वह मुझे जान भी गयीं तब भी उन्हें उन सब बातों का पता नहीं चलेगा जो मैं उनके बारे में सोचता था, और इसलिए उनसे सिर्फ़ जान-पहचान पैदा कर लेने में कोई शर्मनाक बात नहीं थी।

दूसरी बार मुझे सोनेच्का से मुहब्बत हो गयी जब मैंने उसको अपनी बहन के यहां देखा। उससे मेरी दूसरी मुहब्बत बहुत पहले ही धुंधली पड़ चुकी थी; लेकिन मुझे उससे तीसरी बार मुहब्बत हो गयी जब ल्यूबा ने मुझे कविताओं का एक संग्रह दिया जिसे सोनेच्का ने नक़ल किया था; उसमें लेर्मोन्तोव की कविता "दानव" के बहुत-से उदासी-भरे प्रेम-प्रसंगों के नीचे लाल स्याही से लकीरें खींच रखी गयी

थी, और उनकी पहचान के लिए उन पन्नों पर फूल रख दिये गये थे। इस बात को याद करके कि वोलोद्या ने किस तरह पिछले साल अपनी प्रेमिका के छोटे-से पर्स को चूमा था, मैंने भी वैसा ही करने की कोशिश की; और सच तो यह है कि जब मैं शाम को अपने कमरे में अकेला होता था और किताब में रखे फूल को एकटक देखते हुए सपनों में खो जाता था और उसको अपने होंठों से लगा लेता था तो मुझे एक रुचिकर अश्रुपूर्ण भावना का आभास रहता था, और एक बार फिर मैं कई दिन तक मुहब्बत में गिरफ़्तार रहता था या कम से कम मैं सोचता यही था।

आख़िर में, उस जाड़े में तीसरी बार मुझे मुहब्बत हो गयी उस लड़की से जिससे वोलोद्या प्यार करता था, और जो हमारे घर आती थी। जैसी कि मुझे अब उस लड़की की याद है, उसमें वह ख़ास ख़ूबसूरती तो ज़रा-सी भी नहीं थी जिससे मेरा जी आम तौर पर ख़ुश होता था। वह मास्को की एक मशहूर बुद्धिजीवी और विद्वान महिला की बेटी थी; छोटा-सा डीलडौल, दुबली-पतली, अंग्रेज़ी ढंग की लंबी सुनहरी घुंघराली लटें, और बग़ल से देखने पर पारदर्शी लगनेवाला चेहरा। हर आदमी कहता था कि यह लड़की अपनी मां से ज़्यादा गुणी और अधिक विद्वान थी; लेकिन उसके बारे में मैं कोई राय नहीं बना सका, क्योंकि उसकी प्रतिभा और विद्वत्ता की बात सोचकर ही मुझे ऐसा भीरु संकोच आ दबोचता था कि मैंने उससे बस एक बार ही बात की और सो भी इतना डरते-डरते कि बता नहीं सकता। लेकिन वोलोद्या के हर्षातिरेक का, जो अपने चरम उल्लास को व्यक्त करने में दूसरों के सामने कभी कोई संकोच नहीं करता था, मुझ पर इतना गहरा असर हुआ कि मैं उस लड़की के प्रेम में दीवाना हो गया। चूंकि मैंने महसूस किया कि वोलोद्या को यह ख़बर अच्छी नहीं लगेगी कि "दोनों भैयों को प्यार करने के लिए एक ही लड़की मिली", इसलिए मैंने अपनी मुहब्बत की बात उससे नहीं कही। इसके विपरीत, इस भावना में मुझे सबसे अधिक संतोष इस बात से मिलता था कि हमारा प्यार इतना शुद्ध था कि उस प्यार का लक्ष्य हालांकि एक ही आकर्षक जीव था, फिर भी हम दोनों एक-दूसरे के दोस्त थे और ज़रूरत पड़ने पर एक-दूसरे की ख़ातिर क़ुर्बान हो जाने को तैयार थे। लेकिन ऐसा

लगता था कि क़ुर्बान हो जाने को तैयार रहने के मामले में वोलोद्या में वह भावना नहीं थी जो मुझमें थी, क्योंकि उसे इतनी गहरी मुहब्बत थी कि वह एक असली कूटनीतिज्ञ को, जिसके बारे में कहा जाता था कि वह उस लड़की से शादी करनेवाला है – मुंह पर तमाचा मारने और उसे आमने-सामने लड़ने की चुनौती देने का इरादा रखता था। मेरे लिए अपनी भावनाओं को बलि चढ़ा देना बड़ा रुचिकर था, शायद इस वजह से कि मुझे इसके लिए कोई ख़ास कोशिश न करनी पड़ती, क्योंकि मैंने उस लड़की से सिर्फ़ एक बार शास्त्रीय संगीत के गुणों के बारे में एक बहुत ऊंची बात कही थी; और उस मुहब्बत को ज़िंदा रखने की मेरी तमाम कोशिशों के बावजूद वह अगले हफ़्ते ही मर गयी।

अध्याय ३८

सोसायटी

अपने भाई की नक़ल में मैं यूनिवर्सिटी में प्रवेश करने पर सोसायटी में प्रचलित जिन आमोद-प्रमोदों का शिकार हो जाने के स्वप्न देखा करता था, उनसे उस जाड़े में मुझे बहुत निराशा हुई। वोलोद्या बॉल-नृत्यों में बहुत नाचता था, पापा भी अपनी नौजवान बीवी के साथ बॉल-नृत्यों में अकसर जाते थे; लेकिन वे मुझे इस तरह की तफ़रीहों के लिए यक़ीनन बहुत कमउम्र या अयोग्य समझते होंगे, इसी लिए किसी ने उन घरों में मेरा परिचय नहीं कराया जहां बॉल-नृत्य आयोजित किये जाते थे। द्मित्री से कोई बात न छिपाने के अपने वचन के बावजूद मैंने बॉल-नृत्यों में जाने की अपनी इच्छा के बारे में किसी को नहीं बताया, उसे भी नहीं, और न यह बताया कि इस बात से मुझे कितना दुःख और कितनी झुंझलाहट होती थी कि मुझे भुला दिया जाता था और स्पष्टतः मुझे फ़लसफ़ी समझा जाता था, और नतीजा यह था कि मैं यही होने का ढोंग करता था।

लेकिन उसी जाड़े में प्रिंसेस कोर्नाकोवा के यहां शाम की एक पार्टी

हुई। उन्होंने खुद हम सब लोगों को बुलाया, बाक़ी लोगों के साथ मुझे भी; मैं पहली बार बॉल-नृत्य में जा रहा था। चलने से पहले वोलोद्या मेरे कमरे में यह देखने आया कि मैंने कपड़े कैसे पहन रखे थे। उसकी इस कार्रवाई पर मुझे बहुत ताज्जुब भी हुआ और मैं कुछ चकराया भी। मुझे ऐसा लगता था कि अच्छे कपड़े पहनने की इच्छा शर्मनाक बात थी, और उसे छिपाना ज़रूरी था; दूसरी ओर, वह इस इच्छा को इतना स्वाभाविक और अनिवार्य समझता था कि वह बिल्कुल साफ़ कहता था कि उसे डर था कि कहीं मैं अपना नाम न हंसाऊं। उसने मुझे आदेश दिया कि मैं अपने पेटेंट चमड़े के जूते पहनूं और मुझे स्वेड चमड़े के दस्ताने पहनते देखकर वह दंग रह गया; उसने मेरी घड़ी एक ख़ास अंदाज़ से लगायी, और मुझे कुज़नेत्स्की मोस्त सड़क पर हेयर-ड्रेसर के यहां ले गया। वहां मेरे बालों को घुंघराला बनाया गया; वोलोद्या ने पीछे हटकर मुझे दूर से देखा।

"हां, अब ठीक हैं; लेकिन क्या बालों के इन उठे हुए गुच्छों को थोड़ा-सा दबाया नहीं जा सकता है?" उसने हेयर-ड्रेसर से कहा।

M-r Charles ने किसी चिपचिपी चीज़ से मेरे बालों के गुच्छों को समतल करने की लाख कोशिश की, लेकिन जैसे ही मैंने हैट पहनी वे फिर पहले की तरह खड़े हो गये; और बालों में घूंघर पड़ जाने की वजह से मैं कुल मिलाकर पहले से भी भद्दा लग रहा था। मेरा उद्धार बस इसी में था कि मैं लापरवाही का ढोंग करूं। सिर्फ़ उसी से मेरा हुलिया कुछ ठीक हो सकता था।

शायद वोलोद्या की भी यही राय थी, क्योंकि उसने मुझसे घूंघरों को मिटा देने का अनुरोध किया; और जब ऐसा करने के बाद भी मेरी सूरत नहीं सुधरी तो उसने मेरी ओर देखना ही बंद कर दिया और कोर्नाकोव-परिवार के यहां जाते हुए रास्ते भर वह चुप और बुझा-सा रहा।

मैंने वोलोद्या के साथ बेझिझक कोर्नाकोव-परिवार के घर में प्रवेश किया; लेकिन जब प्रिंसेस ने मुझे नाचने के लिए बुलाया और मैंने न जाने क्यों कह दिया कि मैं नाचता नहीं हूं, इस बात के बावजूद कि मैं आया ही इस इरादे से था कि खूब नाचूंगा, मैं बिल्कुल भीगी बिल्ली बन गया; और जब मैं ऐसे लोगों के बीच अकेला रह गया

जिन्हें मैं जानता नहीं था, तो मुझे फिर उसी हमेशा जैसे क़ाबू में न आनेवाले और लगातार बढ़ते हुए शर्मीलेपन ने आ दबोचा। सारी शाम मैं चुपचाप उसी जगह जमा रहा।

वाल्ट्ज़ के दौरान एक छोटी प्रिंसेस ने मेरे पास आकर उस तरह की औपचारिक मिलनसारी से, जो उस पूरे परिवार का गुण था, मुझसे पूछा कि मैं नाच क्यों नहीं रहा था। मुझे याद है कि यह सवाल सुनकर मैं कैसा शरमा गया था, लेकिन इसके साथ ही बिल्कुल अनायास मेरे चेहरे पर आत्म-संतोष की मुस्कराहट दौड़ गयी थी, और मैं आंडबरपूर्ण फ़्रांसीसी में, जिसमें बीच-बीच में कितने ही निक्षिप्त वाक्यांश आते जाते थे, ऐसी बकवास करने लगा कि आज दर्जनों साल बीत जाने के बाद भी उसे याद करके मैं शरमा जाता हूं। यह मुझ पर संगीत का प्रभाव रहा होगा, मैं उत्तेजित हो उठा हूंगा; मैं यह भी उम्मीद कर रहा था कि मैंने जो कुछ कहा था उसमें से कम समझ में आनेवाली बातें उस संगीत में डूबकर रह गयी होंगी। मैं ऊंचे समाज के बारे में कुछ बोला था, लोगों के, ख़ास तौर पर औरतों के निरर्थक आचरण के बारे में बोला था; और आख़िरकार मैं इतनी बुरी तरह उलझ गया था कि मैं एक वाक्य के बीच में रुक गया और उसे पूरा नहीं कर पाया था।

वह शिष्ट आचरणवाली प्रिंसेस भी बौखला उठीं और उन्होंने निंदा के भाव से मुझे घूरा। मैं मुस्करा दिया। उसी नाज़ुक क्षण पर वोलोद्या, जिसने यह देख लिया था कि मैं काफ़ी जोश के साथ बोल रहा था, और शायद यह जानना चाहता था कि मैं न नाचने की कमी अपनी बातचीत से कैसे पूरी कर रहा हूं, दुबकोव के साथ हम लोगों के पास आया। मेरा मुस्कराता हुआ चेहरा और प्रिंसेस की भयभीत मुद्रा देखकर और वे भयानक बातें सुनकर जिनसे मैं अपनी बकवास ख़त्म कर रहा था, उसका चेहरा लाल हो गया और वह मुड़कर हट गया। प्रिंसेस भी उठकर मेरे पास से चली गयीं। मैं मुस्कराता रहा, लेकिन अपनी मूर्खता के आभास से मुझे इतनी पीड़ा हो रही थी कि जी चाहता था कि धरती फट जाये और मैं उसमें समा जाऊं और मैं महसूस कर रहा था कि मुझे हर क़ीमत पर कोई क़दम उठाना चाहिये, कुछ कहना चाहिये और किसी तरह अपनी स्थिति को बदलना

चाहिये। मैंने दुबकोव के पास जाकर पूछा कि क्या वह "उसके" साथ कई वाल्ट्ज नाच चुका था। यह मैंने इस तरह किया जैसे मैं मजाक़ कर रहा हूं और मैं बहुत मस्ती में हूं, लेकिन वास्तव में मैं उसी दुबकोव से सहायता की भीख मांग रहा था जिससे मैंने रेस्तोरां में खाना खाते समय उस दिन चिल्लाकर कहा था, "ज़बान संभालकर बात करो!" दुबकोव ने मेरी बात न सुनने का बहाना किया और मुंह फेर लिया। मैं वोलोद्या के पास गया और अपनी आवाज़ में मज़ाक़ का लहजा लाने की कोशिश करते हुए बड़ी मुश्किल से कहा, "अच्छा, वोलोद्या! तुम अभी तक चालू हो?" लेकिन वोलोद्या ने मुझे इस तरह देखा मानो कह रहा हो, "जब हम अकेले होते हैं तब तो तुम मुझसे इस तरह बात नहीं करते," और चुपचाप वहां से चल दिया; जाहिर है, वह डर रहा था कि मैं कहीं उसके साथ चिपका न रहूं।

"हे भगवान! मेरे भाई ने भी मेरा साथ छोड़ दिया!" मैंने सोचा।

फिर भी किसी कारण मैं वहां से चल देने की शक्ति नहीं जुटा पा रहा था। मैं जहां था वहीं शाम का कार्यक्रम पूरा होने तक उदास खड़ा रहा; और जब सब लोग ड्योढ़ी में जा रहे थे, और ख़िदमतगार ने मुझे मेरा कोट इस तरह पहनाया कि मेरी हैट ऊपर को खिसक गयी, तब जाकर मैं अपने आंसुओं के बीच खिसियायी हुई हंसी हंसा और विशेष रूप से किसी को संबोधित किये बिना मैंने कहा, "Comme c'est gracieux"*.

अध्याय ३९

शराब की महफ़िल

ख़िरी के प्रभाव की वजह से हालांकि मैं पूरी तरह छात्रों की उन आम रंगरलियों का शिकार अभी तक नहीं हुआ था, जिन्हें शराब की महफ़िलें कहा जाता था, लेकिन उस जाड़े में मुझे

* कैसा अच्छा है! (फ़्रांसीसी)

एक बार मस्ती के ऐसे आयोजन में भाग लेने का अवसर मिला, और मैं वहां से जो भावना लेकर वापस आया वह कुछ बहुत अच्छी नहीं थी। यह सारी घटना इस तरह हुई। साल के शुरू में एक दिन लेक्चर के दौरान एक लंबे क़द के सुनहरे बालोंवाले नौजवान बैरन ज़० ने, जिसकी मुद्रा गंभीर और नाक-नक़शा काफ़ी सिजल था, हम सब लोगों को मिल-बैठकर साथ शाम बिताने के लिए अपने यहां बुलाया। ज़ाहिर है हम सब लोगों से मतलब यह था कि हमारे क्लास के वे सारे लड़के जो कमोबेश comme il faut थे ; ज़ाहिर है, उनमें न ग्रैप था, न सेम्योनोव, न ओपेरोव, और न ही इस तरह का कोई और शरीफ़ज़ादा। जब वोलोद्या ने सुना कि मैं पहले साल के लड़कों की शराब की पार्टी में जा रहा हूं तो वह तिरस्कार से मुस्कराया ; लेकिन मुझे इस आयोजन से, जो मेरे लिए समय बिताने का बिल्कुल ही अनोखा ढंग था, बहुत अधिक और उल्लेखनीय आनंद मिलने की आशा थी, इसलिए मैं निश्चित समय पर ठीक आठ बजे बैरन ज़० के यहां पहुंच गया।

सफ़ेद वास्कट पहने और टेल-कोट के बटन खोले बैरन ज़० ने अपने मेहमानों का स्वागत अपने मां-बाप के उस छोटे-से घर के हॉल और ड्राइंग-रूम में किया जिनमें ख़ूब रोशनी हो रही थी ; उसके मां-बाप ने उस शाम के जश्न के लिए घर के स्वागत-कक्ष इस्तेमाल करने की इजाज़त दे दी थी। गलियारे में उत्सुक नौकरानियों के सिर और उनकी पोशाकें दिखायी दे रही थीं और बर्तनों की कोठरी में एक महिला की पोशाक की झलक दिखायी दी, जिनके बारे में मैंने अनुमान लगाया कि वह ख़ुद बैरनेस होंगी।

मेहमानों की संख्या कोई बीस थी, हेर्र फ़्रॉस्ट को छोड़कर, जो ईविन के साथ आये थे, और लाल चेहरेवाले एक लंबे-से ग़ैर-फ़ौजी सज्जन को छोड़कर जो दावत का इंतज़ाम देख रहे थे और जिनके बारे में सबको मालूम था कि वह बैरन के कोई रिश्तेदार थे और पहले देर्पट यूनिवर्सिटी में पढ़ते थे। पहले तो बेहद चमकदार रोशनी और स्वागत-कक्षों की आम औपचारिक सजावट ने नौजवानों की इस मंडली का सारा जोश ठंडा कर दिया ; इने-गिने हिम्मतवाले बहादुरों और देर्पट यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी को छोड़कर वे सभी अनायास ही

दीवारों से चिपके रहे; देर्पटवाले इन सज्जन की वास्कट के बटन अभी से खुल गये थे और एक ही समय में हर कमरे में और हर कमरे के हर कोने में उनके मौजूद रहने का आभास होता था और उनकी मधुर, गूंजती हुई और कभी खामोश न होनेवाली आवाज़ पूरे घर में सुनायी देती रहती थी। लेकिन जो लड़के आये थे वे या तो चुप थे या सकुचाये हुए प्रोफ़ेसरों की, पढ़ाई के विषयों की, परीक्षाओं की और आम तौर पर गंभीर और ग़ैर-दिलचस्प समस्याओं की बातें कर रहे थे। बिना किसी अपवाद के सभी लोग बर्तनों के कमरे के दरवाजे की ओर देख रहे थे, और अनायास ही उनके चेहरों पर ऐसा भाव आ गया था मानो वे कह रहे हों, "अरे, शुरू करने का वक़्त तो हो गया।" मैं भी महसूस कर रहा था कि शुरू करने का वक़्त हो गया है, और बड़े अधीर उल्लास से मैं शुरूआत की राह देख रहा था।

जब ख़िदमतगार सब मेहमानों को एक दौर चाय का दे गया तो देर्पट के "विद्यार्थी" ने फ़ॉस्ट से रूसी में पूछा:

"फ़ॉस्ट, तुम्हें गर्म पंच बनाना आता है?"

"O ja!" फ़ॉस्ट ने अपनी पिंडलियां फड़काते हुए जवाब दिया; लेकिन देर्पट के "विद्यार्थी" ने उन्हें फिर रूसी में संबोधित किया:

"तो फिर जुट जाओ," (वह फ़ॉस्ट को देर्पट में साथ पढ़े होने की वजह से तुम कह रहा था), और अपनी गोलाईदार और गठीली टांगों से लंबे-लंबे डग भरते हुए फ़ॉस्ट ड्राइंग-रूम और बर्तनों के कमरे के बीच चक्कर काटने लगे; और कुछ देर इस तरह चक्कर काटने के बाद उन्होंने मेज़ पर एक बड़ा-सा सूप का हंडा लाकर रख दिया, जिसमें आड़े-आड़े रखे हुए छात्रों के तीन खंजरों के सहारे शकर का एक दस पौंड का डला टिका हुआ था। इसी बीच बैरन ज़० ड्राइंग-रूम में जमा सभी मेहमानों के पास जा-जाकर अत्यंत जड़ गंभीर मुद्रा बनाकर सभी से लगभग उन्हीं शब्दों में कहते रहे थे, "आइये, सज्जनो, हम लोग असली मथियों की तरह, विद्यार्थियों के ढंग से पियें, एक-दूसरे से तुम कहने लगें। शर्म की बात है कि हमारे बीच अच्छा भाई-चारा नहीं है। अपनी वास्कट के बटन खोल लीजिये, अगर आप चाहें, या इसकी तरह इसे उतार ही दीजिये।" सचमुच देर्पटवाले सज्जन

ने अपना कोट उतारकर और अपनी सफ़ेद क़मीज़ की आस्तीनें अपनी गोरी-गोरी कुहनियों से ऊपर चढ़ाकर, और दृढ़ संकल्प के भाव से अपने पांव एक-दूसरे से दूर रखते हुए खड़े होकर सूप के हंडे में भरी हुई रम में आग लगा भी दी थी।

"मोमबत्तियां बुझा दीजिये, सज्जनो!" अचानक देर्पट का "विद्यार्थी" इतने जोर से, कोशिश करके चिल्लाया मानो हम सब लोग चिल्लाये हों। हम सब लोग चुपचाप सूप के हंडे को और देर्पट के "विद्यार्थी" की सफ़ेद क़मीज़ को एकटक देखते रहे और सभी ने महसूस किया कि वह महत्त्वपूर्ण क्षण आ गया है।
"Löschen sie die Lichter aus, Frost!"* देर्पट का "विद्यार्थी" फिर चिल्लाया पर इस बार जर्मन में – ज़ाहिर है उससे कुछ ज़्यादा ही जोश आ गया था। फ़ॉस्ट और बाक़ी हम सब लोग मोमबत्तियां बुझाने लगे। कमरे में बिल्कुल अंधेरा हो गया, सिर्फ़ सफ़ेद आस्तीनें और खंजरों पर शकर का डला टिकाये हुए हाथ नीली लौ में चमक रहे थे। देर्पट के "विद्यार्थी" की ऊंची महीन आवाज़ अब अकेली नहीं थी, क्योंकि कमरे के हर कोने से बातें करने और हंसने की आवाज़ें आ रही थीं। कई लोगों ने अपने टेल-कोट उतार दिये (ख़ास तौर पर उन लोगों ने जिनकी क़मीज़ें बहुत बढ़िया और बिल्कुल साफ़ थीं), मैंने भी ऐसा ही किया, और मैं समझ गया कि **शुरूआत हो चुकी है**। हालांकि अभी तक कोई बहुत दिलचस्प बात नहीं हुई थी, लेकिन मुझे पूरा विश्वास था कि जो पेय तैयार किया गया था उसका एक गिलास पी लेने के बाद बड़ा मज़ा आयेगा।

पेय तैयार था। देर्पट के "विद्यार्थी" ने गरम पंच गिलासों में उंडेला और ऐसा करने के दौरान काफ़ी मेज़ पर छलका भी दिया, "बस, सज्जनो, आ जाइये!" जब हम लोगों ने पेय से भरा हुआ चिपचिपा गिलास अपने हाथों में उठाया तो देर्पट का "विद्यार्थी" और फ़ॉस्ट ने एक जर्मन गाने की धुन छेड़ दी, जिसमें युखे! का विस्मयबोधक शब्द बार-बार आता था; हमने भी अपनी बेसुरी आवाज़ें उनके साथ मिला दीं, हम गिलास खनकाने लगे, कुछ चिल्लाने लगे,

---

* मोमबत्तियां बुझा दो, फ़ॉस्ट! (जर्मन)

पंच की तारीफ़ करने लगे, और उस मीठी तेज़ मदिरा को पीने लगे। अब किसी चीज का इंतजार नहीं था, शराब की महफ़िल पूरी तरह जम चुकी थी। मैं पंच का एक पूरा गिलास पी चुका था; मेरे लिए एक गिलास और भर दिया गया; मेरी कनपटियों में धमक होने लगी, आग लाल दिखायी देने लगी, मेरे चारों ओर हर आदमी चिल्ला रहा था और हंस रहा था; लेकिन अब भी न केवल यह कि मुझे वातावरण मस्ती का नहीं लग रहा था, बल्कि मुझे इस बात तक का पूरा यक़ीन था कि मैं ही नहीं बल्कि हर आदमी उकताया हुआ था, लेकिन सब लोग किसी न किसी वजह से यह जताना लाज़िमी समझ रहे थे कि बड़ा मज़ा आ रहा था। सिर्फ़ देर्पट का "विद्यार्थी" ढोंग नहीं कर रहा होगा; उसका रंग लगातार ज़्यादा लाल होता जा रहा था और वह पहले से ज़्यादा एक ही वक़्त में हर जगह दिखायी देने लगा था, वह हर ख़ाली गिलास भर देता था और शराब मेज़ पर गिरा देता था, जिस पर चारों ओर मिठास और चिपचिपाहट फैली हुई थी। मुझे यह तो याद नहीं कि सारी बातें किस क्रम से हुई, लेकिन मुझे इतना ज़रूर याद है कि उस शाम फ़ॉस्ट और देर्पट का "विद्यार्थी" मुझे बहुत अच्छे लग रहे थे, कि मैंने एक जर्मन गाना याद कर लिया था, और मैंने उन दोनों के मीठे-मीठे होंटों पर प्यार किया था। मुझे यह भी याद है कि उसी शाम मुझे देर्पट के "विद्यार्थी" से नफ़रत भी हुई थी, और मैं उस पर कुर्सी फेंकना चाहता था लेकिन मैंने अपने आपको रोक लिया था। मुझे याद है कि अपने हाथ-पांवों के बेक़ाबू हो जाने की उस चेतना के अलावा जो मैंने 'यार' रेस्तोरां में अनुभव की थी, उस शाम मेरे सिर में इतना दर्द हो रहा था और मुझे इतने चक्कर आ रहे थे कि मैं बेहद डर रहा था कि मैं से हम सब लोग फ़र्श पर बैठे अपनी बांहों को चप्पू चलाने की मुद्रा में हिला रहे थे, 'वोल्गा नदी की धारा में' गा रहे थे, और उसी बीच उसी क्षण मर जाऊंगा। मुझे यह भी याद है कि न जाने किस वजह में सोच रहा था कि ऐसा करने की कोई ज़रूरत नहीं थी। इसके बीच चला रहे थे, 'वोल्गा नदी की धारा में' गा रहे थे, और उसी अलावा, मुझे याद है कि एक टांग दूसरी टांग में फंसाते हुए फ़र्श पर लेटे-लेटे मैं बंजारों की तरह कुश्ती लड़ रहा था, और मैंने किसी

की गर्दन मरोड़ दी थी, और मैंने सोचा था कि अगर उसने शराब न पी रखी होती तो ऐसा कभी न होता। मुझे यह भी याद है कि हमने रात को खाना खाया था और कोई और शराब भी पी थी; कि मैं ताज़ा हवा खाने के लिए आंगन में गया था और मेरे सिर में सर्दी लगी थी; और वहां से चलते वक़्त मैंने देखा था कि चारों ओर भयानक अंधेरा था, कि मेरी घोड़ागाड़ी का पांवदान बहुत ऊंचा और फिसलना हो गया था, और कुज़्मा का सहारा लिये रहना नामुमकिन था क्योंकि वह कमज़ोर हो गया था, और चीथड़े की तरह लहरा रहा था। लेकिन सबसे बढ़कर मुझे यह याद है कि उस शाम के दौरान मुझे लगातार ऐसा महसूस होता रहा था कि बहुत ज्यादा मस्ती होने का और साथ ही पियक्कड़ न लगने का ढोंग करने के चक्कर में मैं बहुत बेवक़ूफ़ी की हरकतें कर रहा था, और तमाम वक़्त मैं महसूस कर रहा था कि दूसरे लोग भी यही जताने के चक्कर में बहुत बेवक़ूफ़ी की हरकतें कर रहे थे। मुझे ऐसा लग रहा था कि उनमें से भी हरेक के लिए यह सब कुछ उतना ही अरुचिकर था जितना कि मेरे लिए; लेकिन चूंकि हर एक यह मान बैठा था कि केवल उसी को यह अरुचिकर आभास हो रहा है, इसलिए वह मस्ती का बहाना करने को अपना कर्त्तव्य समझ रहा था ताकि मस्ती के आम वातावरण में विघ्न न पड़े। इसके अलावा, अजीब बात है कि मैं महसूस कर रहा था कि मुझे यह ढोंग किसी और वजह से न सही लेकिन इसलिए तो बनाये ही रखना चाहिये कि दस-दस रूबल की शैम्पेन की तीन बोतलें और चार-चार रूबल की रम की दस बोतलें सूप के उस हंडे में उंडेली गयी थीं, जो कुल मिलाकर सत्तर रूबल हुए, खाने का ख़र्च अलग। मुझे इन सब बातों का इतना पक्का विश्वास था कि अगले दिन लेक्चर में मुझे यह देखकर बहुत ताज्जुब हुआ कि मेरे जो साथी बैरन ज़० के यहां गये थे उन्हें न सिर्फ़ यह कि इस बात की चर्चा करने में कोई शर्म नहीं आ रही थी कि उन्होंने वहां क्या किया था, बल्कि वे पार्टी की बातें इस तरह कर रहे थे कि दूसरे लड़के सुन लें। वे कह रहे थे कि बहुत शानदार जश्न था; कि देर्पटवाले इन मामलों में बहुत उस्ताद होते हैं, और यह कि बीस आदमी मिलकर रम की चालीस बोतलें पी गये थे, और कुछ लोग नशे में चूर होकर मेज़ के नीचे ही पड़े

रह गये थे। मेरी समझ में नहीं आया कि वे इसकी चर्चा क्यों कर रहे थे, और उन्हें अपने बारे में झूठ तक बोलने की क्या ज़रूरत थी।

अध्याय ४०

नेख़ल्यूदोव-परिवार के साथ मेरी मित्रता

उस जाड़े के दौरान मैं न सिर्फ़ द्मित्री से, जो अकसर मेरे घर आता रहता था, बल्कि उसके पूरे परिवार से बहुत बार मिला, जिसके साथ मेरे मित्रता के संबंध बनने लगे थे।

नेख़ल्यूदोव-परिवार – मां, मौसी और बेटी – हमेशा अपनी शामें घर पर ही बिताता था; और प्रिंसेस को यह अच्छा लगता था कि नौजवान लोग शाम को उनके यहां आयें, उस तरह के लोग जिनके बारे में वह कह सकें कि वे ताश खेले बिना या नाचे बिना शाम काट सकते थे। लेकिन इस तरह के बहुत ही थोड़े लोग होंगे, क्योंकि वहां मैंने शायद ही कभी मिलने आनेवाले को देखा था, हालांकि मैं लगभग हर शाम वहां जाता था। मैं इस परिवार के सदस्यों का और उनके अलग-अलग स्वभावों का आदी हो गया था और मुझे उनके आपसी संबंधों का स्पष्ट अंदाज़ा हो चुका था। मैं उनके कमरों और उनके फ़र्नीचर का आदी हो चुका था; और जब कोई मेहमान नहीं होते थे तब मुझे किसी तरह की कोई अड़चन महसूस नहीं होती थी, उन अवसरों को छोड़कर जब मुझे कमरे में वारेंका के साथ अकेला छोड़ दिया जाता था। मैं इस विचार से अपना पीछा नहीं छुड़ा पाता था कि वह चूंकि बहुत ख़ूबसूरत लड़की नहीं है इसलिए उसे बड़ी इच्छा थी कि मैं उससे प्रेम करने लगूं लेकिन धीरे-धीरे यह अटपटापन भी मिटता गया। चाहे वह मुझसे बात कर रही हो, या अपने भाई से, या ल्युबोव सेर्गेयेव्ना से, उसके चेहरे पर स्वाभाविक रूप से एक जैसा ही भाव रहता था, कि मैं उसे ऐसा व्यक्ति समझने लगा जिसके सामने उस हर्ष का प्रदर्शन करने में, जो उसके साथ रहने पर मैं अनुभव करता था, न कोई शर्म की बात थी और न ही किसी तरह

का ख़तरा था। उसके साथ मेरी जान-पहचान जितने दिन रही उस पूरे दौरान में वह कभी मुझे बेहद बदसूरत लगती थी, और कभी इतनी ज़्यादा बदसूरत लड़की नहीं लगती थी; लेकिन उसके बारे में मैंने एक बार भी अपने आपसे यह सवाल नहीं किया, "मुझे उससे प्यार है, या नहीं?" कभी-कभी मेरी बातचीत सीधे उससे भी हो जाती थी, लेकिन ज़्यादातर मैं उससे बात इस तरह करता था कि उसकी मौजूदगी में मैं अपनी बात ल्युबोव सेर्गेयेव्ना को या द्मित्री को लक्ष्य करके कहता था, और इस आख़िरी तरीक़े से बात करके मुझे ख़ास तरह की ख़ुशी होती थी। उसके सामने बातें करके, उसे गाता हुआ सुनकर, और जिस कमरे में मैं होता था वहां उसकी मौजूदगी के आभास से मुझे बहुत संतोष मिलता था; लेकिन यह विचार कि आगे चलकर वारेंका के साथ मेरे संबंध क्या हो जायेंगे, या अगर मेरे दोस्त को मेरी बहन से प्यार हो गया तो उसकी ख़ातिर अपने प्रेम को क़ुर्बान कर देने के सपने अब मेरे दिमाग़ में कभी-कभार ही आते थे। अगर इस तरह के विचार और सपने मेरे दिमाग़ में आते भी थे तो मैं अनायास ही भविष्य के हर विचार को दूर हटा देने की कोशिश करता था क्योंकि मैं वर्तमान से संतुष्ट था।

लेकिन इस मित्रता के बावजूद अपनी असली भावनाओं और इच्छाओं को पूरी नेख़ल्यूदोव बिरादरी से, और ख़ास तौर पर वारेंका से, छिपाना मैं अपना परम कर्त्तव्य समझता रहा; मेरी कोशिश हमेशा यही रहती थी कि जैसा मैं सचमुच था उससे बिल्कुल ही अलग लगूं, इतना ही नहीं—ऐसा भी लगूं जैसा मैं कभी हो ही नहीं सकता था। मैं अपने अंदर भावावेग पैदा करने का प्रयत्न करता था; जब किसी चीज़ से मुझे बहुत ज़्यादा ख़ुशी होती थी तो मैं हर्ष-विभोर हो उठता था, इस उल्लास का परिचय देनेवाली ध्वनियां निकालता था और भावातिरेक की मुद्राएं बनाता था; और इसके साथ ही मेरी कोशिश यह भी रहती थी कि जब मैं कोई असाधारण चीज़ देखूं या मुझे किसी असाधारण चीज़ के बारे में बताया जाये तो मैं उसके प्रति बिल्कुल उदासीन लगूं। मैं कोशिश करता था कि मैं देखने में ऐसा कटु तिरस्कार करनेवाला लगूं जो किसी भी चीज़ को पुनीत नहीं मानता, और साथ ही मैं बहुत पैनी दृष्टि से अवलोकन

करनेवाला भी लगना चाहता था। मैं कोशिश करता था कि मेरे सारे काम तर्कसंगत लगें, अपने जीवन में मैं नपे-तुले और संयत आचरणवाला लगूं, और साथ ही ऐसा आदमी भी लगूं जिसे सभी भौतिक वस्तुओं से विरक्ति है। मैं बेखटके कह सकता हूं कि जैसा विचित्र जीव लगने की मैं कोशिश करता था, वास्तविक जीवन में मैं उससे कहीं अच्छा था. लेकिन मैं अपने आपको किसी भी रूप में क्यों न पेश करता, नेख़्ल्यूदोव-परिवार मुझे पसंद करता था, और मेरा सौभाग्य ही था कि वे मेरे ढोंग पर विश्वास करते नहीं लगते थे, शायद बस ल्युबोव सेर्गेयेव्ना ही, जो मुझे बहुत बड़ा अहंकारी, नास्तिक और दूसरों को तिरस्कार से देखनेवाला आदमी समझती थी, मुझे पसंद नहीं करती थी; वह अकसर मुझसे लड़ पड़ती थी, गुस्से के मारे आपे से बाहर हो जाती थी; और उसकी बेतुकी और ऊलजलूल बातें सुनकर मैं हैरान रह जाता था। लेकिन उसके साथ द्मित्री ने अभी तक वही विचित्र, मैत्री के गहरे संबंध बना रखे थे, और वह कहता था कि कोई उसे ठीक से समझता नहीं था और यह कि वह उसका बहुत भला करती रहती थी। उसके साथ द्मित्री की दोस्ती की वजह से उसका परिवार अब भी दुखी था।

एक बार वारेंका ने मुझसे इस लगाव की चर्चा करते हुए, जो उन सभी के लिए ऐसी न समझ में आनेवाली बात थी, उसे इस तरह समझाया, "द्मित्री अहंकारी है। उसमें ज़रूरत से ज़्यादा घमंड है, और अपनी सारी प्रतिभा के बावजूद उसे अपनी प्रशंसा और सराहना सुनने का बड़ा चाव है – वह हमेशा अव्वल रहना चाहता है, और मौसी, अपने भोलेपन की वजह से उसकी तारीफ़ करती रहती हैं और उनमें इतनी व्यवहारकुशलता भी नहीं है कि इस सराहना को उससे छिपायें, और इसलिए वह उसका गुणगान करती रहती हैं, लेकिन धूर्तता से नहीं, बल्कि सच्चे हृदय से।"

मुझे उसका यह फ़ैसला याद रहा, और बाद में इसकी छानबीन करने पर मैं इसी नतीजे पर पहुंचा कि वारेंका बहुत होशियार थी; और फलस्वरूप संतोष से मैंने उसे अपनी राय में अधिक ऊंचा स्थान दिया। उसके अंदर मैंने जिस बुद्धिमत्ता का पता लगाया था, उसके और दूसरे नैतिक गुणों के फलस्वरूप उसे अधिक ऊंचा स्थान देने में

मैंने काफ़ी कठोर संयम से काम लिया, हालांकि उसमें मुझे संतोष मिला; और मैं कभी भावातिरेक के प्रवाह में बह नहीं गया जो उस उत्कर्ष का चरम बिंदु होता है। इस प्रकार, जब सोफ़िया इवानोव्ना ने, जो अपनी भानजी के बारे में बातें करते कभी नहीं थकती थीं, मुझे बताया कि किस तरह वारेंका ने चार साल पहले जब वह बच्ची थी, गांव में अपने सारे कपड़े और जूते बिना किसी से पूछे किसानों के बच्चों को दे दिये थे, यहां तक कि बाद में उन्हें वापस लेना पड़ा था, तो फ़ौरन मैंने इस बात को इस लायक़ नहीं समझा था कि इसकी वजह से मैं अपनी नज़रों में वारेंका का स्थान ऊंचा कर दूं, बल्कि ऐसा अव्यावहारिक रवैया अपनाने पर मन ही मन मैंने उसका मज़ाक़ भी उड़ाया था।

जब नेख़ल्यूदोव-परिवार के यहां दूसरे मेहमान होते थे, जिनमें दूसरों के अलावा वोलोद्या और दुबकोव भी शामिल थे, तो मैं आत्म-संतुष्ट भाव से, और अपने आपको परिवार का एक सदस्य मानकर श्रेष्ठता की किंचित शांत चेतना के साथ पृष्ठभूमि में चला जाता था, ख़ुद बात नहीं करता था, और जो कुछ दूसरे लोग कहते थे बस उसे सुनता रहता था। और ये दूसरे लोग जो कुछ कहते थे वे सारी इतनी हद दर्जे की बेवक़ूफ़ी की बातें होती थीं कि मन ही मन मुझे ताज्जुब होता था कि प्रिंसेस जैसी समझदार और तर्कसंगत बातें करनेवाली औरत, और उनका उतना ही समझदार परिवार इस तरह की बकवास सुनना और उसका जवाब देना कैसे गवारा करता है। अगर उस वक़्त मुझे यह बात सूझती कि जो कुछ दूसरे लोग कहते थे उसकी तुलना मैं उन बातों से करूं जो मैं वहां अकेला होने पर कहता था, तो मुझे तनिक भी आश्चर्य न होता। मुझे इससे भी कम आश्चर्य होता अगर मैं यह विश्वास करता होता कि मेरे अपने घर की औरतें – अव्दोत्या वसील्येव्ना, ल्यूबा और कात्या – सभी दूसरी औरतों जैसी थीं, और दूसरों से किसी भी हालत में बुरी नहीं थीं, और अगर मैंने इस बात को याद किया होता कि दुबकोव, कात्या और अव्दोत्या वसील्येव्ना सारी शाम बैठे क्या-क्या बातें करते रहते थे और ख़ुश होकर हंसते रहते थे; और यह कि लगभग हर अवसर पर दुबकोव किसी न किसी चीज़ को बहाना बनाकर बड़े भावपूर्ण ढंग से कविता की ये

पंक्तियां पढ़ने लगता था, "Au banquet de la vie infortuné convive..."* या 'दानव' के उद्धरण सुनाने लगता था, और घंटों कितना खुश होकर कोई न कोई बकवास करते थे वे लोग।

जब मेहमान होते थे तब वारेंका, ज़ाहिर है, मेरी ओर उससे कम ध्यान देती थी जितना कि वह अकेले होने पर देती थी; और उन अवसरों पर पढ़ाई और संगीत भी नहीं होता था जिसे सुनना मुझे बहुत अच्छा लगता था। मेरे लिए उसका जो मुख्य आकर्षण था– उसकी शांत विचारशीलता और सादगी–वह मिलने आनेवालों से बातें करते समय ग़ायब हो जाता था। मुझे याद है कि मेरे भाई वोलोद्या के साथ थिएटर और मौसम के बारे में उसकी बातचीत मेरे लिए कैसे विचित्र आश्चर्य की बात थी। मैं जानता था कि वोलोद्या को बातचीत के घिसे-पिटे विषयों से दुनिया में सबसे ज़्यादा नफ़रत थी और वह उनसे कतराता था; वारेंका भी हमेशा मौसम वग़ैरह के बारे में मनोरंजक जतायी जानेवाली बातचीत का मज़ाक़ उड़ाती थी; फिर क्या वजह थी कि जब वे साथ होते थे तब वे लगातार अत्यंत असह्य घिसी-पिटी बातें करते थे, और सो भी इस तरह मानो वे एक-दूसरे की वजह से लज्जित हों? इस तरह की हर बातचीत के बाद मुझे वारेंका पर बहुत ग़ुस्सा आता था; अगले दिन मैं उन मेहमानों का मज़ाक़ उड़ाता था, लेकिन नेख़ल्यूदोव के परिवार-वृत्त में अकेले होने में मुझे और भी आनंद आता था।

बहरहाल, मुझे द्मित्री के साथ अकेले होने की अपेक्षा उसकी मां के ड्राइंग-रूम में उसके साथ होने में ज़्यादा आनंद आने लगा।

अध्याय ४१

नेख़ल्यूदोव के साथ मेरी दोस्ती

इन्हीं दिनों द्मित्री के साथ मेरी दोस्ती बस एक पतले-से धागे के सहारे टिकी हुई थी। मैं इतने लंबे अरसे से उसकी आलोचना करता आया था कि यह तो नामुमकिन था कि मुझे पता न चलता कि उसमें

---

* 'जीवन के भोज में अभागा अतिथि...' (फ़्रांसीसी)

कमज़ोरियां थीं; और अपनी शुरू जवानी में हम केवल जुनूनी प्यार करते हैं, और इसलिए सिर्फ़ ऐसे लोगों को जो निर्विकार होते हैं। लेकिन जैसे ही जुनून का कुहरा छंटने लगता है, और यह आवश्यक हो जाता है कि विवेक की साफ़ किरणों से उसे वेधा जाये और हमारे प्रेम का पात्र अपने वास्तविक रूप में, अपने गुणों और अपने दोषों सहित हमारे सामने आ जाये, तव अप्रत्याशित होने के कारण उसकी ख़ामियां ही साफ़ तौर पर उभरकर हमारे सामने आती हैं; नयेपन का आकर्षण और यह आशा कि किसी दूसरे आदमी का सर्वथा निर्विकार होना विल्कुल असंभव नहीं है हमें न केवल भावशून्य हो जाने के लिए प्रोत्साहित करती है वल्कि हमारे भावावेग के भूतपूर्व पात्र के प्रति घृणा भी उत्पन्न करती है, और हम विना किसी खेद के उसे त्याग देते हैं और कोई नया आदर्श खोजने के लिए लपक पड़ते हैं। अगर द्मित्री के सिलसिले में मेरे साथ ठीक ऐसा ही नहीं हुआ तो इसके लिए मैं द्मित्री का आभारी हूं – उसके अडिग, किताबी और कोमल से अधिक वुद्धिसंगत स्नेह का, जिसके प्रति सत्यनिष्ठ न रहने पर मैं लज्जित होता। इसके अलावा हम लोग स्पष्टवादिता के अपने विचित्र नियम का पालन करने के लिए भी वचनवद्ध थे। हम लोग इस वात से वहुत डरे रहते थे कि अगर हम कभी अलग हुए तो एक-दूसरे के क़ब्ज़े में हम अपने वे सारे गहरे भेद छोड़ जायेंगे जो हमने एक-दूसरे को बताये थे और जिन पर हम शर्मिंदा थे। लेकिन हमने वहुत दिन से स्पष्टवादिता के अपने नियम का पालन नहीं किया था, जैसा कि हमें स्पष्ट रूप से मालूम था; इसकी वजह से हम दोनों ही अटपटा महसूस करते थे, और हम दोनों के वीच विचित्र संवंध वन गये थे।

उस जाड़े में जव भी मैं द्मित्री के यहां गया तव लगभग हर वार ही उसके साथ मैंने उसके यूनिवर्सिटी के एक साथी को पाया; वह वेज़ोवेदोव नामक एक विद्यार्थी था जिसके साथ वह पढ़ाई की तैयारी मिलकर करता था। वेज़ोवेदोव छोटे-से डीलडौल का, दुवला-पतला चेचकरू आदमी था, जिसके वहुत ही छोटे-छोटे हाथों पर चित्तियां थीं, और सिर पर ढेरों उलझे हुए लाल रंग के वाल थे। उसके कपड़े हमेशा वहुत फटे हुए और मैले होते थे; वह जाहिल था और पढ़ाई

मे उसका मन भी नहीं लगता था। ल्युबोव सेर्गेयेव्ना के साथ द्मित्री के संबंधों की तरह ही उसके साथ भी द्मित्री के संबंध मेरी समझ के बाहर थे। यूनिवर्सिटी में अपने सारे साथियों में से उसके लिए उसे ही चुनने और उसके साथ इतनी घनिष्ठता बढ़ाने की अकेली वजह यही हो सकती थी कि पूरी यूनिवर्सिटी में कोई भी विद्यार्थी ऐसा नही था जो बेज़ोबेदोव से ज़्यादा बदसूरत हो। और शायद इसी वजह से सभी की राय के खिलाफ़ उसके प्रति मित्रता का भाव दिखाना द्मित्री को अच्छा लगता होगा। इस विद्यार्थी के साथ उसके पूरे संबंध में दंभ की यह भावना व्यक्त होती थी, "कोई भी हो, मेरे लिए इससे कोई फ़र्क़ नही पड़ता। अगर वह मुझे अच्छा लगता है तो वह ठीक है।"

मुझे इस बात पर ताज्जुब होता था कि उसे अपने आपको मजबूर करने मे कोई कठिनाई क्यों नहीं होती थी, और बेचारा बेज़ोबेदोव अपनी इस बेतुकी स्थिति को कैसे सहता रहता था। इस दोस्ती से मुझे ज़रा भी खुशी नही होती थी।

एक बार मैं द्मित्री के यहां गया कि शाम को उसकी मां के ड्राइंग-रूम में बैठकर उसके साथ बातचीत करेंगे और वारेंका का गाना सुनेंगे या वह कोई किताब पढ़कर सुनायेगी, लेकिन ऊपर बेज़ोबेदोव बैठा था। द्मित्री ने तीखी आवाज़ से मुझे जवाब दिया कि वह नीचे नहीं आ सकता था क्योंकि उसके यहां कोई मेहमान आया हुआ था, जैसा कि मैं खुद देख रहा था।

"और फिर, वहां नीचे बैठने में मज़ा भी क्या है?" उसने जोड़ दिया, "यहां बैठकर बातें करना कहीं अच्छा है।" हालांकि बेज़ोबेदोव के साथ बैठकर बातें करने का विचार मुझे अच्छा नहीं लगा, लेकिन अकेले ड्राइंग-रूम में चले जाने की हिम्मत मुझे नहीं हुई; और अपने दोस्त की सनक पर झुंझलाकर मैं एक झूलनेवाली कुर्सी पर बैठ गया और चुपचाप झोंके लेने लगा; मुझे द्मित्री और बेज़ोबेदोव पर बहुत गुस्सा आ रहा था कि उन्होंने मुझे नीचे जाकर बैठने के सुख से वंचित कर दिया था। मैं चिढ़कर चुपचाप उनकी बातें सुनता रहा और बेज़ोबेदोव के विदा होने की राह देखता रहा। "अच्छा मेहमान ढूंढा है साथ बैठने के लिए," मैं सोच ही रहा था कि इतने में नौकर चाय लेकर आ गया और द्मित्री को कम से कम पांच बार

बेज़ोबेदोव से एक गिलास उठा लेने को कहना पड़ा क्योंकि वह शर्मीला मेहमान अपने लिए यह ज़रूरी समझता था कि शुरू में वह इंकार करे और कहे, "मेरी फ़िक्र न कीजिये, आप पीजिये।" साफ़ दिखायी दे रहा था कि द्मित्री बड़ी कोशिश करके अपने मेहमान को बातचीत में लगाये हुए था, जिसमें मुझे भी घसीटने की उसने कई बार बेकार कोशिश की। मैं निरीह भाव से चुप रहा।

"ऐसी मुद्रा न बनाओ जैसे कह रहे हो कि यह सोचने की हिम्मत न करना कि मैं ऊबा हुआ हूं?" मैंने चुपचाप नियमित गति से अपनी कुर्सी पर झूलते हुए मन ही मन द्मित्री से कहा। मैं अपने अंदर अपने दोस्त के खिलाफ़ खामोश नफ़रत की आग को, कुछ हद तक खुशी से, लगातार ज़्यादा तेज़ भड़काता जा रहा था। "कैसा बेवक़ूफ़ है!" मैंने सोचा। "वह अपने प्यारे सगे-संबंधियों के साथ हंसी-खुशी शाम बिता सकता था, लेकिन वह बैठा है यहां इस हैवान के साथ; और वह यहीं बैठा भी रहेगा जब तक कि नीचे ड्राइंग-रूम में जाने के लिए बहुत देर न हो जाये"; और मैं कुर्सी की गहराई से अपने दोस्त पर रह-रहकर नज़र डालता रहा। उसके हाथ, उसकी मुद्रा, उसकी गर्दन, और खास तौर पर उसकी गुद्दी और उसके घुटने मुझे इतने घिनौने और तकलीफ़देह लगे कि उस वक़्त उसके साथ कुछ करके, कोई अत्यंत अरुचिकर बात भी करके मुझे बहुत मज़ा आता।

आखिरकार बेज़ोबेदोव उठा, लेकिन द्मित्री ऐसे सुखकर मेहमान को फ़ौरन कैसे विदा कर सकता था, इसलिए उसने रात वहीं रह जाने के लिए उससे कहा; सौभाग्यवश बेज़ोबेदोव इसके लिए राज़ी नहीं हुआ और चला गया।

द्मित्री उसे विदा करके लौट आया; और आत्म-संतुष्ट ढंग से खिलकर मुस्कराते हुए, और खुशी से अपने हाथ रगड़ते हुए, शायद इसलिए भी कि वह अपनी बात पर दृढ़ रहा था, और इसलिए भी कि आखिरकार उसने एक नीरसता से छुटकारा पा लिया था, वह कमरे में टहलने लगा; बीच-बीच में वह एक नज़र मुझ पर डाल लेता था। वह मुझे और भी घिनौना लग रहा था। "आखिर वह इस तरह टहलता और मुस्कराता कैसे रह सकता है?" मैंने सोचा।

"तुम नाराज़ क्यों हो?" उसने अचानक मेरे सामने रुककर कहा।

"मैं बिल्कुल नाराज़ नहीं हूं," मैंने जवाब दिया जिस तरह हमेशा ऐसे मौक़ों पर जवाब दिया जाता है; "मुझे तो सिर्फ़ इस बात पर झुंझलाहट हो रही है कि तुम मुझसे ढोंग करते हो, और बेज़ोवेदोव से ढोंग करते हो और अपने आपसे ढोंग करते हो।"

"क्या बकवास है! मैं कभी किसी से ढोंग नहीं करता।"

"मैं हर बात साफ़-साफ़ कह देने के अपने नियम को भूला नहीं हूं, इसलिए मैं खुलकर तुमसे बात कहता हूं। मुझे पूरा यक़ीन है कि वह बेज़ोवेदोव तुम्हारे लिये भी उतना ही बर्दाश्त के बाहर है जितना मेरे लिए, क्योंकि वह बुद्धू है, और कुछ नहीं; लेकिन तुम्हें उसकी नजरों में महान लगना पसंद है।"

"यह सच नही है, और फिर, पहली बात यह कि बेज़ोवेदोव बहुत ही अच्छा आदमी है..."

"लेकिन मैं तुमसे कहता हूं कि ऐसा है; मैं तो तुमसे यहां तक कहूंगा कि ल्युबोव सेर्गेयेव्ना के साथ भी तुम्हारी दोस्ती की बुनियाद यही है कि वह तुम्हें देवता समझती है।"

"और मैं तुमसे कहता हूं कि ऐसा नहीं है।"

"और मैं तुमसे कहता हूं कि ऐसा ही है, क्योंकि मैं ख़ुद अपने तजुर्बे से इस बात को जानता हूं," मैंने अपने बारे में दो-टूक बात कहकर उसका मुंह बंद कर देने की इच्छा से दबी हुई झुंझलाहट की उत्तेजना से जवाब दिया। "मैं तुमसे कह चुका हूं और मैं एक बार फिर दोहराता हूं कि मुझे हमेशा ऐसा मालूम होता है कि मुझे वे लोग अच्छे लगते हैं जो मुझसे अच्छी-अच्छी बातें कहते हैं; और जब मैं इस मामले की अच्छी तरह छानबीन करता हूं तो मुझे पता चलता है कि उनके साथ मेरा कोई सच्चा लगाव नहीं है।"

"नहीं," द्मित्री गुस्से से गर्दन झटककर अपनी टाई ठीक करते हुए कहता रहा, "जब मैं प्यार करता हूं तो मेरी भावनाओं को न तारीफ़ बदल सकती है, न गालियां।"

"यह सच नही है। मैं तुमसे साफ़-साफ़ मान चुका हूं कि जब पापा ने मुझे हरामख़ोर कहा था तो कुछ अरसे के लिए मुझे उनसे नफ़रत हो गयी थी और मैं चाहता था कि वह मर जायें; ठीक उसी तरह जैसे तुम..."

"तुम बस अपनी बात करो। बड़े अफ़सोस की बात है अगर तुम ऐसे हो..."

"बल्कि बात उल्टी ही है," मैं अपनी कुर्सी से उछल पड़ा और जान की बाज़ी लगाकर उसकी आंखों में आंखें डालकर देखते हुए चिल्लाकर बोला, "जो कुछ तुम कह रहे हो वह अच्छी बात नहीं है; क्या तुमने मुझसे मेरे भाई के बारे में नहीं कहा था? मैं तुम्हें उसके लिए लताड़ता नहीं क्योंकि वह शराफ़त की बात नहीं होगी। क्या तुमने मुझसे नहीं कहा था... मैं तुम्हें बताता हूं कि अब मैं तुम्हें किस तरह समझता हूं!"

और उसने मुझ पर जितनी गहरी चोट की थी उससे भी ज़्यादा तकलीफ़देह चोट उसे पहुंचाने के लिए बेचैन होकर मैं उसके सामने साबित करने लगा कि उसे किसी से प्यार नहीं था, और मैं उससे वे सारी बातें कहने लगा जिनके बारे में मेरा ख़्याल था कि उन्हें कहकर उसे लताड़ने का मुझे अधिकार था। मैं बहुत ख़ुश था कि मैंने उससे सब कुछ कह दिया था; मैं यह तो बिल्कुल भूल ही गया था कि मैंने जो कुछ कहा था उसका एकमात्र संभव उद्देश्य कि मैंने उस पर जिन कमियों का दोष लगाया था उन्हें वह स्वीकार कर ले, इस समय पूरा नहीं हो सकता था जब वह उद्विग्न था। लेकिन जब वह संतुलित मनोदशा में होता था और इस बात को मान सकता था तब मैंने कभी उससे यह नहीं कहा।

इस बात का ख़तरा पैदा हो चुका था कि यह बहस बढ़कर झगड़े का रूप धारण कर ले, लेकिन द्मित्री अचानक चुप होकर दूसरे कमरे में चला गया। मैं लगातार बोलता हुआ उसके पीछे-पीछे जानेवाला था, लेकिन उसने मेरी बात का जवाब नहीं दिया। मैं जानता था कि आपे से बाहर हो जाना उसके दुर्गुणों में से एक था, और इस समय वह उसी पर क़ाबू पाने की कोशिश कर रहा था। मैं उसके सारे नियमों को कोस रहा था।

तो यह था हमारे इस नियम का नतीजा कि **हम एक-दूसरे को अपने मन की सारी बातें बता दिया करेंगे, और एक-दूसरे के बारे में कभी कोई बात किसी तीसरे आदमी से नहीं कहेंगे।** स्पष्टवादिता के उत्साह के प्रवाह में बहकर कभी-कभी हमने एक-दूसरे के सामने बेहद शर्मनाक

बातें मान ली थीं, और, जिस पर हमें ख़ुद शर्म आती थी, धुंधले-धुंधले सपनों और मनोकामनाओं को इस तरह खोलकर रख दिया था मानो वे निश्चित इच्छाएं और भावनाएं हों, वैसी ही जैसी कि मैंने, मिमान्न के लिए अभी उसके सामने व्यक्त की थी; और हम दोनों के बीच जो बंधन था वह इन स्वीकारोक्तियों से न केवल यह कि मज़बूत नहीं होता था, बल्कि ये स्वीकारोक्तियां भावना को ही झुलसे देती थी और हमें एक-दूसरे से अलग किये देती थीं। और अब, अचानक, अहंकार की वजह से वह एक बिल्कुल मामूली-सी बात भी मानने को तैयार नहीं था; और अपनी बहस की गरमागरमी में हमने वही हथियार इस्तेमाल किये थे जो पहले हमने एक-दूसरे को स्वयं दिये थे, और जिनका आघात अत्यंत कष्टप्रद होता था।

अध्याय ४२

सौतेली मां

पापा हालांकि नये साल के बाद ही अपनी पत्नी के साथ मास्को आनेवाले थे, लेकिन वह अक्तूबर में ही पहुंच गये, जब कुत्तों के साथ बहुत बढ़िया शिकार खेला जा सकता था। पापा ने कहा कि उन्होंने अपनी योजना इसलिए बदल दी थी कि सीनेट में उनके मुक़द्दमे की सुनवाई होनेवाली थी; लेकिन मीमी ने हमें बताया कि अव्दोत्या वसील्येव्ना देहात में इतना उकता गयी थीं, इतनी बार उन्होंने मास्को की चर्चा की थी और बीमारी का बहाना किया था कि पापा ने उनकी इच्छा पूरी ही कर देने का फ़ैसला किया।

"वह उनसे कभी प्यार नहीं करती थीं, बल्कि सिर्फ़ प्यार की बातें कर-करके उन्होंने सबके कान पका दिये थे, क्योंकि वह एक अमीर आदमी से शादी करना चाहती थीं," मीमी ने आह भरकर विचारमग्न होकर कहा, मानो कह रही हों, "कोई और भी है जो उनके लिए क्या नहीं करने को तैयार था, अगर वह सिर्फ़ उसकी क़द्र करना जानते होते।"

फिर भी वह "कोई" अव्दोत्या वसील्येव्ना के साथ बेइंसाफ़ी कर

रहा था। पापा के लिए उनका प्रेम – भरपूर, सच्चा प्रेम – और आत्म-बलिदान की भावना उनके हर शब्द से, हर दृष्टि से, और उनकी हर गति से व्यक्त होती थी। लेकिन यह प्रेम उन्हें अपने पति का साथ न छोड़ने की इच्छा के अलावा एक और इच्छा को अपने मन में संजोने से तनिक भी नहीं रोकता था : मादाम ऐनेत के यहां की बनी हुई सराहनीय टोपियां, शुतुरमुर्ग़ के नायाब नीले पंख लगी हुई चौड़ी कगर की टोपियां लगाने और वेनिस के नीले मख़मल की बनी हुई फ़ाकें पहनने की इच्छा जिनमें उनकी सुडौल गोरी-गोरी बांहें और छातियां बड़े सुंदर ढंग से प्रदर्शित होती थीं, जो आज तक उन्होंने पति और नौकरानियों के अलावा और किसी को नहीं दिखायी थीं। कात्या, ज़ाहिर है, अपनी मां का पक्ष लेती थी ; जबकि हम लोगों और हमारी सौतेली मां के बीच उनके आने के पहले दिन से ही कुछ अजीब, हंसी-मज़ाक़ के संबंध स्थापित हो गये थे। जैसे ही वह गाड़ी पर से उतरी थीं, वोलोद्या झुकता हुआ और आगे-पीछे झोंके खाता हुआ बड़ी गंभीर मुद्रा और अपनी आंखें धुंधली-सी बनाकर उनका हाथ चूमने के लिए उनकी ओर बढ़ा था और उसने इस ढंग से कहा था, मानो किसी का परिचय करा रहा हो :

"प्यारी मां को यहां आने पर बधाई देने के लिए और उनका हाथ चूमने के लिए मैं सादर यहां उपस्थित हूं।"

"अरे, मेरे प्यारे बेटे!" अव्दोत्या वसील्येव्ना ने अपनी ख़ूबसूरत, एकरस मुस्कराहट के साथ कहा था।

"और अपने दूसरे प्यारे बेटे को न भूल जाइयेगा," मैंने भी हाथ चूमने के लिए उनकी ओर बढ़ते हुए और अनायास ही वोलोद्या की मुद्रा और स्वर अपनाने की कोशिश करते हुए कहा था।

अगर हमारी सौतेली मां को और हमें अपने पारस्परिक लगाव का भरोसा होता तो ये मुद्राएं स्नेह के किसी चिन्ह के प्रदर्शन के प्रति तिरस्कार की द्योतक हो सकती थीं ; अगर हम लोगों में मनमुटाव पैदा हो चुका होता, तो यह व्यंग की, या मक्कारी को तिरस्कार से देखने की, या अपने वास्तविक संबंधों को अपने बाप से, जो वहां मौजूद थे, छिपाने की इच्छा की और कई दूसरे विचारों तथा भावनाओं की द्योतक हो सकती थी ; लेकिन वर्तमान स्थिति में यह मुद्रा जो

अव्दोत्या वसील्येव्ना के स्वभाव से बेहद अच्छी तरह मेल खाती थी, किसी भी चीज की द्योतक नहीं थी, और केवल किसी भी प्रकार के संबंधों के सर्वथा अभाव की ओर संकेत करती थी। उसके बाद मैंने इस प्रकार के मिथ्या और हंसी-मज़ाक़ के संबंध उन दूसरे परिवारों में भी अक्सर देखे हैं, जिनके सदस्यों को अंदाज़ा हो जाता है कि वास्तविक संबंध काफ़ी रुचिकर नहीं होंगे; और अनायास ही हमारे और अव्दोत्या वसील्येव्ना के बीच यही संबंध स्थापित हो गये। हम शायद ही कभी इन संबंधों की लीक से डिगते थे; हम उनके प्रति हमेशा बनावटी शिष्टता बरतते थे, फ़्रांसीसी बोलते थे और उन्हें "chère maman" कहते थे, जिसका जवाब वह हमेशा उसी ढंग के किसी मज़ाक़ और अपनी सुंदर, एकरस मुस्कराहट से देती थीं। बेडौल टांगोंवाली रुअंटी ल्यूबा ही, जो भोली-भाली बातें करती रहती थी, अकेली ऐसी थी जिसे हमारी सौतेली मां बहुत पसंद आयी थीं, और वह बड़ी मासूमियत से, और कभी-कभी बेतुकेपन से उन्हें हमारे पूरे परिवार के और निकट लाने की कोशिश करती थी; और इसके बदले में, इस दुनिया में अगर किसी के लिए अव्दोत्या वसील्येव्ना के दिल में ज़रा भी मुहब्बत थी, पापा के लिए उनकी बेहद गहरी मुहब्बत को छोड़कर, तो वह थी ल्यूबा। अव्दोत्या वसील्येव्ना उसके प्रति कुछ हद तक अपार प्रशंसा और दबी-दबी आदर की भावना भी प्रकट करती थीं, जिस पर मुझे आश्चर्य होता था।

शुरू में अव्दोत्या वसील्येव्ना को अपने आपको सौतेली मां कहने का बहुत शौक़ था, और इस बात की ओर संकेत करने का कि बच्चे और घर के लोग हमेशा सौतेली मां को कितनी बुरी और बेइंसाफ़ी की नज़र से देखते हैं, और इसकी वजह से सौतेली मां की स्थिति कितनी कठिन होती है। लेकिन इस स्थिति की सारी अप्रियता को जानते हुए भी उन्होंने इससे दूर रहने के लिए इस तरह का कोई उपाय नहीं किया, जैसे, किसी का लाड़-प्यार करना, या किसी को कोई उपहार दे देना, या चिड़चिड़ाने और शिकायत करने से बचना, जो उनके लिए बहुत आसान होता, क्योंकि वह स्वभावतः बहुत स्नेहशील थीं और बहुत कठोर नहीं थीं। उन्होंने न केवल इनमें से कोई भी काम नहीं किया, बल्कि, इसके विपरीत, अपनी स्थिति की सारी अप्रियता को पहले से समझते हुए, उन्होंने हमला हुए बिना ही अपने आपको बचाव के लिए तैयार

किया। वह यह मान बैठीं कि घर के सभी लोग अपने सारे साधन इस्तेमाल करके उनका अपमान करना चाहते हैं और परिस्थितियों को उनके लिए अरुचिकर बना देना चाहते हैं, इसलिए उन्हें हर चीज़ में कोई द्वेषपूर्ण उद्देश्य दिखायी देने लगे, और वह यह सोचने लगीं कि चुपचाप सब कुछ सह लेना ही उनके लिए सबसे अच्छा तरीक़ा है; और दूसरों का प्यार पाने के मामले में निष्क्रियता के इस रवैये की वजह से उन्हें दूसरों का द्वेष ही मिला। इसके अलावा, एक-दूसरे को समझ जाने के उस गुण का, जो हमारे घर में इतने उच्च स्तर तक विकसित हो चुका था, और जिसका मैं पहले उल्लेख भी कर चुका हूं, उनमें इतना अभाव था, और उनकी आदतें हमारे घर में प्रचलित आदतों के इतना प्रतिकूल थीं कि अकेले इसी बात की वजह से लोगों के मन में उनके प्रति पूर्वाग्रह पैदा हो गये। हमारे साफ़-सुथरे, सुव्यवस्थित घर में वह हमेशा इस तरह रहती थीं जैसे अभी-अभी वहां पहुंची हों; कभी वह बहुत देर में सोती थीं और सुबह देर में उठती थीं, और कभी बहुत जल्दी; कभी वह दिन का खाना खाने के लिए आती थीं, कभी नहीं; रात का खाना वह कभी खाती थीं, कभी नहीं। जब घर में कोई मेहमान नहीं होते थे तो ज़्यादातर वक़्त वह ठीक से कपड़े पहने बिना ही घूमती रहती थीं और उन्हें सफ़ेद पेटीकोट पहने, कंधों पर शॉल डाले हम लोगों के सामने, बल्कि नौकरों तक के सामने अपनी नंगी बांहें दिखाने में कोई शर्म नहीं आती थी। शुरू में तो प्रचलित मानदंडों की इस अवहेलना से मुझे खुशी होती थी, लेकिन इसका नतीजा यह हुआ कि जल्दी ही मेरे दिल से उनकी रही-सही इज़्ज़त भी जाती रही। जो बात हम लोगों को इससे भी ज़्यादा अजीब मालूम हुई वह यह थी कि उनके अंदर दो अलग-अलग औरतें थीं जिसका फ़ैसला इस आधार पर होता था कि घर में मेहमान हैं कि नहीं: मेहमानों के सामनेवाली औरत एक स्वस्थ, शांतचित्त, नवयुवती सुंदरी थी, अत्यंत सुरुचिपूर्ण कपड़े पहने, न बहुत चालाक न बेवक़ूफ़, लेकिन चेहरे पर उल्लास; दूसरी औरत जब कोई मेहमान आस-पास नहीं होते थे, एक बुझी-बुझी, थकी हुई औरत थी, जो नौजवान नहीं रह गयी थी, जो फूहड़ थी, उदास थी और उकतायी हुई रहती थी, हालांकि स्नेहमयी थी। मैं अकसर सोचा करता था, जब मैं उन्हें उस वक़्त देखता था जब वह किसी के यहां से मुस्कराती हुई

लौटती थीं, जाड़े की सर्दी से चेहरे का गुलाबीपन निखरा हुआ, अपने रूप के आभास से प्रसन्न, और आईने के सामने चौड़ी कगर की टोपी उतारते समय अपना रूप निहारती हुई, या जब वह गहरी काट के गलेवाली अपनी बेहद बढ़िया नाच की पोशाक सरसराती हुई, नौकरों के सामने कुछ लजाती हुई फिर भी गर्व अनुभव करती हुई गाड़ी की ओर जाती थीं, या घर पर जब हमारे यहां शाम को छोटी-छोटी महफ़िलें जमती थीं, चुस्त रेशमी फ़्राक पहने, जिसमें उनकी कोमल गर्दन के किनारे-किनारे कोई नाजुक बेल लगी होती थी, वह अपनी एकरस लेकिन सुंदर मुस्कराहट के साथ हर तरफ़ ख़ुशी बिखेरती फिरती थीं – मैं अकसर सोचा करता था कि जो लोग उनके रूप को सराहते कभी नहीं थकते थे वे क्या कहते अगर वे उन्हें उस रूप में देख पाते जिस रूप में मैं उन्हें अकसर शामों को देखता था जब वह घर पर ही रहती थीं और रात को बारह बजे के बाद अपने पति का क्लब से लौटने का इंतज़ार करती हुई अपने जिस्म पर कोई चीज़ जैसे-तैसे लपेटे, बाल बिखराये धुंधली-धुंधली रोशनीवाले कमरों में परछाई की तरह घूमती फिरती थीं? कभी वह पियानो के पास जाकर वाल्ट्ज़ की हमेशा एक ही धुन बजाती थीं, जिसे वह जानती थीं, और इस प्रयास में उनके माथे पर बल पड़ जाते थे; फिर वह कोई उपन्यास उठा लेती थीं और कहीं बीच में से कुछ लाइनें पढ़ने के बाद उसे अलग रख देती थीं; फिर, नौकरों को जगाना न चाहते हुए वह ख़ुद रसोई की अल्मारी के पास जाती थीं और एक खीरा और ठंडा मांस निकालकर वहीं खड़े-खड़े खा लेती थीं; या फिर एक कमरे से दूसरे कमरे में, थकी हुई और उकतायी हुई भी, निरुद्देश्य घूमने लगती थीं। लेकिन जिस चीज़ ने सबसे बढ़कर हम लोगों के बीच दुराव पैदा किया वह थी उनमें आपसी समझ-बूझ की कमी, जो मुख्यतः उनके उस ख़ास अंदाज़ में व्यक्त होती थी जब लोग उनसे ऐसी चीज़ों के बारे में बातें करते थे जिनकी उन्हें बिल्कुल जानकारी नहीं होती थी और वह उनकी ओर इस तरह ध्यान देती थीं मानो एहसान कर रही हों। इसमें उनका कोई दोष नहीं था कि अनजाने ही उनकी यह आदत पड़ गयी थी कि वह सिर्फ़ होंटों से कुछ मुस्कराती थीं और अपना सिर हिलाती रहती थीं जब उन्हें ऐसी बातें बतायी जाती थीं जिनमें उन्हें कोई दिलचस्पी नहीं होती थी

(और दिलचस्पी तो उन्हें ख़ुद अपने और अपने पति के अलावा किसी चीज़ में थी ही नहीं) ; लेकिन उनकी वह मुस्कराहट और उनका वह सिर हिलाना, जिसे वह बार-बार दोहराती थीं, हमारे लिए असह्य रूप से अरुचिकर था। उनकी मस्ती भी, जो ख़ुद उनका, हम लोगों का और सारी दुनिया का मज़ाक़ उड़ाती हुई लगती थी, बहुत बेतुकी थी और किसी पर उसका संक्रामक प्रभाव नहीं होता था ; उनकी भावुकता में भी ज़रूरत से ज़्यादा मिठास होती थी। लेकिन सबसे ख़ास बात यह थी कि लगातार हर आदमी से पापा के लिए अपनी मुहब्बत की चर्चा करते हुए उन्हें कोई शर्म नहीं आती थी। हालांकि वह तनिक भी झूठ नहीं बोलती थीं जब वह कहती थीं कि अपने पति के लिए उनका प्रेम ही उनका सारा जीवन है, और हालांकि उन्होंने अपने सारे जीवन से इस बात को सिद्ध कर दिया, फिर भी हमारे दृष्टिकोण के अनुसार इस तरह लगातार बिना किसी संकोच के अपनी मुहब्बत का ढोल पीटना घृणास्पद बात थी, और जब वह अजनबियों के सामने इसकी चर्चा करती थीं तो हम लोगों को शर्म आती थी, उससे भी ज़्यादा जब वह फ़्रांसीसी बोलने में ग़लतियां करती थीं।

वह अपने पति को दुनिया की हर चीज़ से बढ़कर प्यार करती थीं ; और उनके पति भी उनसे प्यार करते थे, ख़ास तौर पर शुरू में, और जब वह देखते थे कि उन्हें देखकर सिर्फ़ उनको ही ख़ुशी नहीं होती थी। उनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य अपने पति का प्यार पाना था ; लेकिन ऐसा लगता था कि वह जान-बूझकर हर वह काम करती थीं जो उनके पति को नापसंद हो, और यह सब कुछ उन्हें अपने प्यार की शक्ति, और अपने आपको बलि चढ़ा देने की तत्परता दिखाने के लिए।

उन्हें बनने-संवरने का शौक़ था ; लोगों के बीच उन्हें आकर्षण का केंद्र बना देखकर, उन्हें लोगों की सराहना और प्रशंसा प्राप्त करते देखकर पापा को अच्छा लगता था ; पापा की ख़ातिर उन्होंने बनने-संवरने या अपने कपड़ों के शौक़ की क़ुर्बानी दे दी थी, और धीरे-धीरे वह एक सुरमई ब्लाउज़ पहने घर पर बैठी रहने की ज़्यादा आदी होती गयी थीं। पापा को, जो स्वतंत्रता और बराबरी को पारिवारिक जीवन की अनिवार्य शर्तें मानते थे, यह उम्मीद थी कि उनकी प्यारी ल्यूबा

और उनकी नेक नौजवान बीवी के बीच हार्दिकता और मित्रता का संबंध स्थापित हो जायेगा; अव्दोत्या वसील्येव्ना चूंकि आत्म-बलिदान कर रही थीं इसलिए वह इसे अपना कर्त्तव्य समझती थीं कि वह घर की असली मालकिन के प्रति, जैसा कि वह ल्यूबा को कहती थीं, अनुचित आदर-भाव प्रदर्शित करें, जिससे पापा को बहुत तकलीफ़ होती थी। उस साल जाड़े में पापा बहुत जुआ खेले, और अंत में बहुत बड़ी रक़म हार गये; अपनी जुए की बातें वह सारे घर से छिपाये रहे, जैसा कि वह हमेशा करते थे, क्योंकि वह अपने खेल और अपने पारिवारिक जीवन को एक में मिलाना नहीं चाहते थे। अव्दोत्या वसील्येव्ना अपने आपको क़ुर्बान करती रहीं और कभी-कभी बीमार रहने के बावजूद और जाड़े के अंत में गर्भवती तक होने के बावजूद वह इसे अपना कर्त्तव्य समझती रहीं कि सुबह के चार बजे हों या पांच जब पापा क्लब से लौटें, कभी-कभी थके हुए और अपनी हार पर शर्मिंदा, तो वह अपना सुरमई ब्लाउज़ पहने और बाल बिखराये कूल्हे मटकाती हुई पापा का स्वागत करने जायें। वह कुछ खोये-खोये अंदाज़ में पापा से पूछतीं कि खेल में क़िस्मत ने उनका साथ दिया या नहीं, और जब वह उन्हें क्लब में अपने कारनामों के बारे में बताते, और उनसे अनुरोध करते, जो पहले भी सैकड़ों बार किया जा चुका था, कि वह उनके इंतज़ार में जागती न रहा करें, तो वह अपने ख़ास अंदाज़ से, मानो एहसान कर रही हों, ध्यान देकर और सिर को थोड़ा हिलाते हुए सुनती रहतीं। हालांकि पापा की हार-जीत में, जिस पर पापा की सारी जायदाद का दारोमदार था, उन्हें तनिक भी दिलचस्पी नहीं थी, फिर भी रोज़ रात को उनके क्लब से लौटने पर वही सबसे पहले उनसे मिलती थीं। इतना ही नहीं, उनका स्वागत करने के लिए जाने को वह केवल अपने आत्म-बलिदान के भावावेग से प्रेरित नहीं होती थीं, बल्कि छिपी हुई ईर्ष्या, जिसका वह बुरी तरह शिकार थीं, उन्हें ऐसे करने के लिए उकसाती थी। दुनिया में कोई भी उन्हें यह यक़ीन नहीं दिला सकता था कि पापा इतनी रात गये अपनी किसी रखैल के यहां से नहीं बल्कि क्लब से लौटते थे। वह पापा के चेहरे से उनके प्रेम के रहस्यों का पता लगाने की कोशिश करती थीं; और जब उन्हें वहां कुछ भी नहीं मिलता था तो वह लगभग व्यथा का सुख अनुभव करते हुए आहें

भरती थीं और अपने इस दुर्भाग्य पर विचार करने में खो जाती थीं।

इन और ऐसी ही कई दूसरी लगातार क़ुर्बानियों का नतीजा यह हुआ कि उस जाड़े के आखिरी महीनों में, जब पापा काफ़ी बड़ी रक़म हारे थे और इसलिए ज़्यादातर वक़्त कुछ उखड़े-उखड़े रहते थे, अपनी बीवी की ओर पापा के रवैये में खामोश नफ़रत की भावना, अपने स्नेह के पात्र के प्रति दबी हुई घृणा की वह भावना दिखायी देने लगी जो उस पात्र के लिए हर संभव प्रकार की तुच्छ नैतिक अप्रिय परिस्थितियां पैदा करने की अनायास उत्सुकता के रूप में व्यक्त होती है।

अध्याय ४३

नये साथी

जाड़ा कब बीत गया पता ही नहीं चला; बर्फ़ पिघलने लगी थी और यूनिवर्सिटी में परीक्षा का कार्यक्रम लगा दिया गया था; तब जाकर मुझे अचानक ध्यान आया कि जिन अठारह विषयों पर मैंने लेक्चर सुने थे, जिनमें से एक भी मैंने न ध्यान से सुना था, न लिखा था, न तैयार किया था, उनके बारे में मुझे जवाब देने होंगे। ताज्जुब की बात है कि ऐसा सीधा-सादा सवाल कि "मैं इम्तहान पास कैसे करूंगा?" मेरे दिमाग़ में कभी आया ही नहीं था। लेकिन बड़े हो जाने और comme il faut बन जाने पर अपनी खुशी की वजह से उस पूरे जाड़े के दौरान मेरे दिमाग़ की हालत कुछ ऐसी धुंधली-धुंधली थी कि जब यह बात मेरे मन में उठी तो मैंने अपने साथियों से अपनी तुलना करके सोचा, "वे पास तो हो जायेंगे लेकिन उनमें से ज़्यादातर अभी तक comme il faut नहीं बन पाये हैं, इस तरह मेरा पलड़ा अब भी उनसे भारी है, और मुझे सफलता मिलनी चाहिये।" मैं लेक्चरों में सिर्फ़ इसलिए जाता रहा कि मुझे इसकी आदत पड़ गयी थी, और इसलिए कि पापा मुझे घर के बाहर भेज देते थे। इसके अलावा मेरे बहुत-से जान पहचानवाले थे, और यूनिवर्सिटी में अकसर बड़ी मौज रहतीं थी। मुझे ऑडिटोरियम का शोर, लगातार बातें

करने और हंसने की आवाजें अच्छी लगती थीं; मुझे लेक्चर के दौरान सबसे पिछली पांत में बैठना और प्रोफ़ेसर की एकसुरी आवाज़ के सहारे किसी न किसी चीज़ की कल्पना करते रहना और अपने साथियों को ध्यान से देखना बहुत अच्छा लगता था; कभी-कभी किसी के साथ सेटर्न के यहां भागकर जाना और वहां वोद्का पीना और कुछ थोड़ा-बहुत खा लेना भी मुझे पसंद था, और यह जानते हुए कि इसके लिए प्रोफ़ेसर मुझे डांट भी सकता है मैं ऑडिटोरियम में बहुत डरते-डरते चूं-चूं की आवाज़ के साथ दरवाज़ा खोलकर प्रोफ़ेसर के बाद क़दम रखता था; मुझे "एक वर्ष के छात्रों के ख़िलाफ़ दूसरे वर्ष के छात्रों" की उन टक्करों में हिस्सा लेने का बड़ा शौक़ था जिनका आयोजन बरामदों में बहुत हंसी और हुल्लड़ के बीच किया जाता था। इन सब बातों में बड़ा मज़ा आता था।

लेकिन उस वक़्त तक जब सभी ने अधिक नियमित रूप से लेक्चरों में आना शुरू कर दिया था, और भौतिकी के प्रोफ़ेसर ने अपना पाठ्यक्रम पूरा करके इम्तहान तक के लिए छुट्टी ले ली थी, लड़के अपनी कॉपियां जमा करने और तैयारी करने में व्यस्त हो गये थे। मैं भी तैयारी करने के बारे में सोचने लगा। ओपेरोव के साथ मेरी साहब-सलामत अब भी थी, लेकिन जैसा कि मैं पहले बता चुका हूं उससे मेरा और कोई संबंध नहीं रह गया था; उसने मुझे न सिर्फ़ अपनी कॉपियां दे दीं बल्कि मुझे निमंत्रण दिया कि मैं उसके और दूसरे लड़कों के साथ मिलकर इम्तहान की तैयारी कर लूं। उसे धन्यवाद देकर मैं इसके लिए राज़ी हो गया, इस उम्मीद से कि उसे यह सम्मान देकर मैं उसके साथ अपने पिछले झगड़े को पूरी तरह निबटा दूंगा; मैंने सिर्फ़ यह मांग की कि सब लोग हमेशा मेरे घर पर जमा हुआ करें क्योंकि मेरा घर बहुत बढ़िया था।

मुझसे कहा गया कि बारी-बारी से सबके यहां जमा होंगे—कभी एक के यहां, कभी दूसरे के यहां, जो सबसे नज़दीक हो। पहली बैठक जुख़ीन के यहां हुई। त्रुबनी बुलिवार के एक बड़े-से घर में उसके पास लकड़ी की आड़ के पीछे एक छोटा-सा कमरा था। पहली बैठक में मैं देर से पहुंचा; जब मैं आया तब उन लोगों ने पढ़ना शुरू कर दिया था। छोटा-सा कमरा उस घटिया तंबाकू के धुएं से भरा हुआ था जो

ज़ुख़ीन पीता था। मेज़ पर वोद्का की एक बोतल, गिलास, रोटी, नमक और भेड़ के गोश्त की एक हड्डी रखी हुई थी।

ज़ुख़ीन ने उठे विना ही मुझसे थोड़ी-सी वोद्का पी लेने और अपना कोट उतार देने को कहा।

"आपको इस तरह की ख़ातिरदारी की आदत नहीं होगी, है न?" उसने इतना और जोड़ दिया।

सभी सूती कपड़े की मैली क़मीज़ें पहने थे। उनके प्रति अपना तिरस्कार प्रकट न करने की कोशिश करते हुए मैं अपना कोट उतारकर सोफ़े पर "भाईचारे की भावना से" लेट गया। ज़ुख़ीन बीच-बीच में कभी-कभार ही कॉपी पर नज़र डालकर हमें विषय से संबंधित सामग्री वता रहा था और जब दूसरे लड़के कोई सवाल पूछने के लिए उसे टोकते थे तो वह हमेशा वहुत संक्षिप्त, समझदारी का और सही-सही जवाब देता था। थोड़ी देर तक मैं सुनता रहा, लेकिन चूंकि मेरी समझ में ज़्यादा कुछ आ नहीं रहा था, क्योंकि मुझे यह नहीं मालूम था कि पहले क्या वताया जा चुका है, इसलिए मैंने एक सवाल पूछा।

"यार, अगर तुम्हें यह भी मालूम नहीं है तो तुम्हें सुनने से कोई फ़ायदा नहीं होगा," ज़ुख़ीन ने कहा। "मैं कॉपियां तुम्हें दे दूंगा, तुम कल तक पढ़ डालना। वरना हर वात तुम्हें समझाने में तुक ही क्या है।"

मैं अपने अज्ञान पर शर्मिंदा था, और इसके साथ ही यह समझते हुए कि ज़ुख़ीन ने विल्कुल ठीक बात कही थी, मैंने सुनना बंद कर दिया और इन नये साथियों को ध्यान से देखने लगा। मनुष्यों के उस वर्गीकरण के अनुसार जिसमें कुछ लोग comme il faut होते हैं और कुछ comme il faut नहीं होते, ये स्पष्टतः दूसरी श्रेणी के लोग थे, और फलस्वरूप उनके प्रति मेरे मन में न केवल तिरस्कार की भावना जागृत होती थी वल्कि उनके लिए मैं एक तरह की ज़ाती नफ़रत भी महसूस करता था क्योंकि comme il faut न होते हुए भी ऐसा लगता था कि वे मुझे अपने वरावर का समझते थे वल्कि मेरे साथ सरपरस्ती तक का वर्ताव करते थे। मेरे अंदर यह भावना उत्पन्न होने के कारण थे उनके पांव, उनके गंदे हाथ जिनके नाख़ून जड़ तक कुतर डाले गये थे, ओपेरोव की छोटी उंगली पर एक लंबा नाख़ून, उनकी गुलावी

क़मीजें, एक-दूसरे को संबोधित करते समय वे प्यार से जिन गालियों का प्रयोग करते थे, गंदा कमरा, और ज़ुख़ीन की अपनी उंगली से एक नथुना दबाकर लगातार नाक से हवा निकालने की आदत, और ख़ास तौर पर उनका बोलने का, कुछ विशेष शब्दों को इस्तेमाल करने और उन पर ज़ोर देने का उनका ढंग जो मुझे बेहद किताबी और शर्मनाक हद तक ग़ैर-शरीफ़ाना लगता था। लेकिन जो चीज़ मेरी असली comme il faut नफ़रत को उभारती थी वह थी जिस तरह वे कुछ रूसी शब्दों का, और ख़ास तौर पर विदेशी शब्दों का उच्चारण करते थे।

लेकिन उनके बाहरी लक्षणों के बावजूद, जो मुझे उस वक़्त बेहद घृणास्पद लगते थे, मुझे इन लोगों में कुछ अच्छाई होने का पूर्वाभास होने लगता था और वे मस्ती-भरे भाईचारे के जिन बंधनों से आपस में बंधे हुए थे उन पर ईर्ष्या होने की वजह से मैं उनके प्रति एक आकर्षण महसूस करता था, और मेरे लिए यह काम काफ़ी मुश्किल होने के बावजूद मैं उनके साथ ज़्यादा अच्छी तरह परिचित हो जाना चाहता था। नेक और खरे स्वभाव के ओपेरोव को मैं पहले ही से जानता था। अब, बेहद तेज़ और प्रखर बुद्धिवाला ज़ुख़ीन, जो स्पष्टतः इस मंडली का सरदार था, मुझे बेहद अच्छा लग रहा था। वह छोटे क़द, गठे हुए बदन और काले बालोंवाला आदमी था, जिसका चेहरा कुछ-कुछ सूजा हुआ और कुछ-कुछ चमकता रहता था, लेकिन उसमे बेहद समझदारी, ज़िंदादिली और स्वतंत्रता का आभास मिलता था। उसकी यह मुद्रा ख़ास तौर पर उसके माथे, जो बहुत चौड़ा नहीं था लेकिन उसकी गहरी धंसी हुई काली आंखों पर मेहराब की तरह झुका हुआ था, उसके छोटे-छोटे, खड़े हुए सख़्त बालों, और उसकी घनी काली दाढ़ी की वजह से थी, जो हमेशा बिना मूंड़ी हुई लगती थी। ऐसा मालूम होता था कि वह अपने बारे में नहीं सोचता था (लोगों में यह गुण देखकर मुझे हमेशा बड़ी ख़ुशी होती थी), लेकिन यह भी स्पष्ट था कि उसका दिमाग़ कभी ख़ाली नहीं रहता था। उसका चेहरा उन अभिव्यंजनापूर्ण चेहरों में से था जो आपके पहली बार देखने के कुछ ही घंटे बाद आपकी नज़रों में अचानक बिल्कुल बदल जाते हैं। शाम ख़त्म होते-होते ज़ुख़ीन के साथ भी यही हुआ। उसके चेहरे पर

अचानक नयीं झुर्रियां उभर आयीं, उसकी आंखें और भी गहरी धंस गयीं, उसकी मुस्कराहट बदल गयी, और उसकी पूरी सूरत में इतना परिवर्तन हो गया कि मेरे लिए उसे पहचानना भी मुश्किल हो गया।

जब बैठक ख़त्म होनेवाली थी तो ज़ुख़ीन ने, दूसरे लड़को ने एक-एक गिलास वोद्का पी, और बोतल में लगभग कुछ भी नहीं बची। मैंने भी पी ताकि साथी होने की इच्छा का सबूत दूं। ज़ुख़ीन ने पूछा कि किसी के पास पचीस कोपेक हैं, ताकि जो बुढ़िया उसके यहां काम करती थी उससे और वोद्का मंगायी जा सके। मैं पैसे निकालकर उसे देने लगा, लेकिन ज़ुख़ीन ने मानो मेरी बात न सुनकर ओपेरोव की ओर मुंह फेर लिया और ओपेरोव ने पोत का एक छोटा-सा बटुआ निकालकर उसे ज़रूरत-भर को पैसे दे दिये।

"ज़रा ख़्याल रखना, बहुत ज़्यादा न पी जाना," ओपेरोव ने कहा, जो ख़ुद बिल्कुल नहीं पीता था।

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है," ज़ुख़ीन ने नलीदार हड्डी में से गूदा चूसते हुए जवाब दिया (मुझे याद है कि उस वक़्त मैंने यह सोचा था कि हड्डी का गूदा खाने की वजह से ही वह इतना तेज़ होगा।)

"नहीं, ऐसी कोई बात नहीं है," उसने धीरे से मुस्कराते हुए एक बार फिर कहा; उसकी मुस्कराहट ऐसी थी कि बरबस अपनी ओर ध्यान खींच लेती थी, और देखनेवाला उसके लिए उसका आभार मानता था। "और अगर पी भी लूं तो हर्ज क्या है? अब देखना है कौन किसे छकाता है – मैं उसे या वह मुझे। हर चीज़ यहां भर चुकी है," उसने बड़े गर्व से अपने सिर को उंगली से ठोंकते हुए कहा। "लेकिन सेम्योनोव ने जिस तरह पीना शुरू कर दिया है, उसके फ़ेल होने का ख़तरा पैदा हो गया है।"

सचमुच, वही सफ़ेद बालोंवाला सेम्योनोव, जिसे पहले इम्तहान में देखकर मैं इसलिए बेहद ख़ुश हुआ था कि उसका हुलिया मुझसे भी बुरा था, और जो प्रवेश-परीक्षा में दूसरा स्थान पाने के बाद पहले एक महीने के दौरान हर लेक्चर में पाबंदी से जाता रहा था, सामग्री दोहराने से ज़्यादा पहले तो बेहद शराब पीने लगा था, और जब साल की पढ़ाई ख़त्म होने को आयी थी तब उसने यूनिवर्सिटी आना बिल्कुल ही बंद कर दिया था।

"वह है कहां?" किसी ने पूछा।

"मुझे कहीं दिखायी नहीं दिया," ज़ुख़ीन कहता रहा। "पिछली बार जब हम मिले थे तब उस रात हमने 'लिस्बन' सराय का दीवाला निकाल दिया था। सब कुछ बहुत शानदार रहा था। सुना है कि बाद में उसका कोई झमेला हुआ था।... कमाल का आदमी है! क्या आग दहकती है उसके अंदर! कैसा दिमाग़ पाया है! अगर वह तबाह हो गया तो बुरा होगा; लेकिन तबाह तो वह ज़रूर होगा। वह अपने उस जुनूनी स्वभाव की वजह से चुपचाप यूनिवर्सिटी में वक़्त काट देनेवाला नहीं है।"

थोड़ी देर और बातें करने के बाद सब लोग चल देने के लिए उठ खड़े हुए और सबने आनेवाले दिनों में भी ज़ुख़ीन के यहां ही मिलने का फ़ैसला किया क्योंकि उसका फ़्लैट बाक़ी सभी के लिए सबसे नज़दीक था। जब हम बाहर निकलकर अहाते में आये तो मेरा अंतःकरण मुझे कचोटने लगा कि वे सब पैदल थे और अकेला मैं घोड़ागाड़ी पर आया था; कुछ शरमाते हुए मैंने ओपेरोव से कहा कि मैं उसे घर छोड़ दूंगा। ज़ुख़ीन भी हम लोगों के साथ बाहर आया था, और ओपेरोव से चांदी का एक रूबल उधार लेकर वह किसी के यहां रात भर के लिए चल दिया। गाड़ी पर जाते हुए ओपेरोव ने मुझे ज़ुख़ीन के चरित्र और उसके रहन-सहन के बारे में बहुत-सी बातें बतायीं; जब मैं घर पहुंचा तो बहुत देर तक मुझे नींद नहीं आयी; मैं इन नये लोगों के बारे में सोचता रहा, जिनसे मेरी जान-पहचान हुई थी। बड़ी देर तक मैं आंखें खोले लेटा रहा; मेरे मन में एक द्वंद्व मचा हुआ था: एक ओर तो मेरे अंदर उनकी विद्वता, सादगी, ईमानदारी और तरुणाई और उच्छृंखलता की काव्यमयता के प्रति सम्मान की भावना जागृत होती थी और दूसरी ओर उनके अभद्र बाहरी रूप के प्रति अरुचि पैदा होती थी। बहुत चाहते हुए भी उस समय मेरे लिए उनके साथ संबंध जोड़ना वस्तुतः असंभव था। हमारी समझ एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न थी। अनगिनत बारीकियां ऐसी थीं, जिनमें मेरे लिए जीवन का समस्त आकर्षण और अर्थ निहित था और जिनका उन्हें तनिक भी आभास नहीं था, और दूसरी ओर से भी ऐसी ही बात थी। लेकिन हम लोगों के बीच संबंधों की स्थापना संभव न होने का मुख्य कारण था मेरे

कोट का बीस रूबल मीटर का कपड़ा, मेरी अपनी घोड़ागाड़ी और मेरी बढ़िया क़मीज़। इस कारण का मेरे लिए विशेष महत्व था। मुझे ऐसा लगता था कि मैं अपनी समृद्धि के इन प्रतीकों से उनका अपमान करता था। मैं उनके सामने अपराधी-सा अनुभव करता था; और मैं किसी भी प्रकार उनके साथ बराबरी के, सचमुच मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित नहीं कर सकता था, क्योंकि मैंने पहले तो अपने को विनम्र बनाया, लेकिन अपनी इस अकारण विनम्रता के विरुद्ध मैं विद्रोह कर उठा और मैंने आत्म-विश्वास में संक्रमण किया। और जुख़ीन में मैंने उच्छृंखलता की जो प्रबल काव्यमयता महसूस की वह उस समय मेरे ऊपर इतनी बुरी तरह छा गयी कि उसके चरित्र का खुरदुरा, दूषित पक्ष मुझे तनिक भी अरुचिकर नहीं लगा।

दो हफ़्ते तक मैं लगभग रोज़ शाम को जुख़ीन के यहां पढ़ने जाता रहा। मैं पढ़ता बहुत कम था, क्योंकि, जैसा कि मैं पहले बता चुका हूं, मैं शुरू में ही बहुत पीछे रह गया था और चूंकि मुझमें इतना दृढ़ संकल्प नहीं था कि उन लोगों के बराबर पहुंच जाने के लिए अकेले पढ़ सकूं, इसलिए जो कुछ पढ़ा जाता था उसे सुनने और समझने का मैं केवल बहाना करता रहता था। मुझे लगता था कि मेरे साथियों को मेरे इस ढोंग का पता चल गया था, और मैं देखता था कि अकसर वे उन हिस्सों को छोड़कर, जो उन्हें खुद आते थे, आगे बढ़ जाते थे और वे कभी मुझसे पूछते तक नहीं थे।

दिन-ब-दिन मैं इस मंडली की अभद्रता को अधिकाधिक क्षमा करता गया; मैं उसकी जीवन-पद्धति की ओर आकर्षण महसूस करने लगा, और मुझे वह बहुत काव्यमयी दिखायी देने लगी। मैंने द्मित्री को जो वचन दिया था कि मैं उनके साथ कहीं शराब पीने नहीं जाऊंगा, उसी ने मुझे उनकी तफ़रीहों में हिस्सा लेने से रोके रखा।

एक बार मैंने साहित्य के बारे में, खास तौर पर फ़्रांसीसी साहित्य के बारे में अपनी जानकारी का रोब जमाने का इरादा किया और मैंने इसकी चर्चा छेड़ी। मुझे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि ये लोग विदेशी किताबों के नामों का उच्चारण हालांकि रूसी ढंग से करते थे, लेकिन उन्होंने मुझसे कहीं ज़्यादा पढ़ा था; कि वे अंग्रेज़ी के ही नहीं, स्पेनी के भी लेखकों को जानते थे और उन्हें बहुत पसंद करते थे, और

ये लेसाज* को भी जानते थे जिसका मैंने नाम तक नहीं सुना था। पुश्किन और जुकोव्स्की** की रचनाएं उनके लिए सच्चा साहित्य थी (मेरे लिए वे पीली जिल्दवाली छोटी-छोटी किताबें थीं जिन्हें मैंने बचपन में पढ़ा था।) उन्हें फ़ांसीसी लेखकों – द्यूमा, स्यू और फ़ेवाल – से समान रूप से अरुचि थी; और वे, खास तौर पर जुख़ीन, साहित्य की आलोचना मुझसे ज्यादा अच्छी और अधिक स्पष्ट कर सकते थे, जैसा कि मैं मानने पर मजबूर था। संगीत के बारे में अपनी जानकारी के मामले में भी मैं उनसे बेहतर नहीं था। यह जानकर मुझे और भी आश्चर्य हुआ कि ओपेरोव वायलिन बजाता था, उस मंडली का एक और लड़का सेल्लो और पियानो बजाता था; ये दोनों यूनिवर्सिटी के आर्केस्ट्रा में बजाते थे, उन्हें संगीत का बहुत अच्छा ज्ञान था, और अच्छे संगीत की समझ थी। सारांश यह कि फ़ांसीसी और जर्मन के शब्दों के ठीक उच्चारण को छोड़कर वे हर चीज़ के बारे में, जिसकी मैं उनके सामने डींग मारने की कोशिश करता था, मुझसे बेहतर जानकारी रखते थे, और उन्हें इस बात पर तनिक भी घमंड नहीं था। मैं व्यवहारकुशल होने की डींग भले ही मारता लेकिन यह गुण भी मुझमें वोलोद्या जैसा नहीं था। फिर वह कौन-सी ऊंचाई थी जहां खड़े होकर मैं उन्हें तुच्छ समझता था? – प्रिंस इवान इवानिच से मेरा परिचय? मेरा फ़ांसीसी का उच्चारण? मेरी घोड़ागाड़ी? मेरी बढ़िया कमीज? मेरे नाखून? क्या ये सारी ही चीजें बकवास नहीं हैं? मैं अपने सामने जो भाईचारा और सद्भावनापूर्ण युवा उल्लास देखता था उससे ईर्ष्या के कारण कभी-कभी यह विचार मेरे दिमाग़ में हवा के झोंके की तरह आकर गुज़र जाता था। वे सभी एक-दूसरे को तुम कहते थे। उनके आपसी व्यवहार की सादगी रुखाई की हद को छू लेती थी, लेकिन यह बाहरी खुरदुरापन भी इस बात को छिपा नहीं पाता था कि वे एक-दूसरे की भावनाओं को ज़रा भी ठेस पहुंचाने से डरते थे। वे लोग एक-दूसरे को बड़े प्यार से जिस तरह 'बदमाश' और 'सूअर' कह देते थे उसे सुनकर मैं चौंक पड़ता था और इसकी वजह

---

* लेसाज (१६६८-१७४७) – फ़ांसीसी लेखक।

** जुकोव्स्की – अठारहवीं-उन्नीसवीं शताब्दी के प्रसिद्ध रूसी कवि।
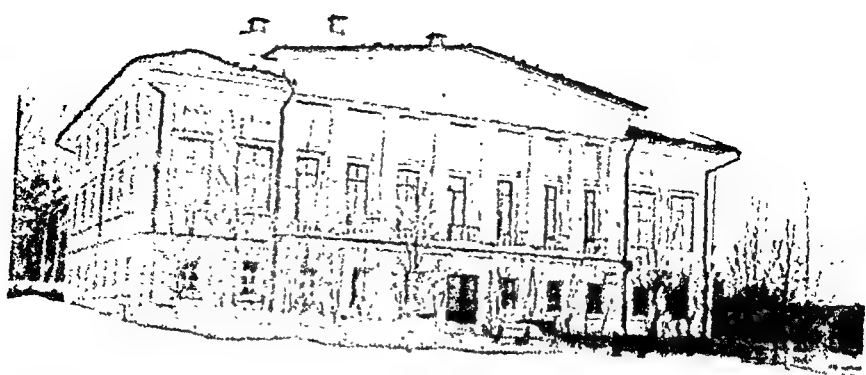
यास्नाया पोल्याना। जिस घर में ल० न० तोलस्तोय का जन्म हुआ था।
"मेरा जन्म यास्नाया पोल्याना गांव में हुआ था और वहीं मैंने अपने वचपन के शुरु के दिन विताये।"

—ल० न० तोलस्तोय, 'संस्मरण'।

चमड़े से मढ़ा हुआ वह सोफ़ा जिस पर ल० न० तोलस्तोय का जन्म हुआ था।

तोलस्तोय-परिवार की पैतृक ग्रामीण भू-संपत्ति यास्नाया पोल्याना का व्यापक दृश्य। "अपने यास्नाया पोल्याना के विना मेरे लिए रूस की और उसके प्रति अपने रवैये की कल्पना करना असंभव है।"

—ल० न० तोलस्तोय। 'गांव में १८५८ की गर्मियां।'

लेखक की मां, मरीया निकोलायेव्ना तोलस्ताया (विवाह से पहले वोल्कोंस्काया)। पार्श्व-चित्र। १८वीं शताब्दी का अंत।

लेखक के पिता, निकोलाई इल्यीच तोलस्तोय। चित्रकार अ० मोलिनारी का बनाया हुआ छविचित्र। १८१५।

'प्रिय बुआ जी के नाम' शीर्षक काव्य-रचना की पांडुलिपि, जिसे ल० न० तोलस्तोय ने अपनी सबसे चहेती दादी (बाप की बुआ) त० अ० येर्गोल्स्कया के जन्मदिवस के अवसर पर लिखा था, जिनका उनके ऊपर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा था। १८४०।

ल० न० तोलस्तोय की बुआएं अ० इ० ओस्तेन-साकेन और प० इ० यूश्कोवा, जिनका उनके लालन-पालन में बहुत बड़ा हाथ था। तोलस्तोय की मां की सफ़री संदूक़ची के ढक्कन पर बना लघु-चित्र।
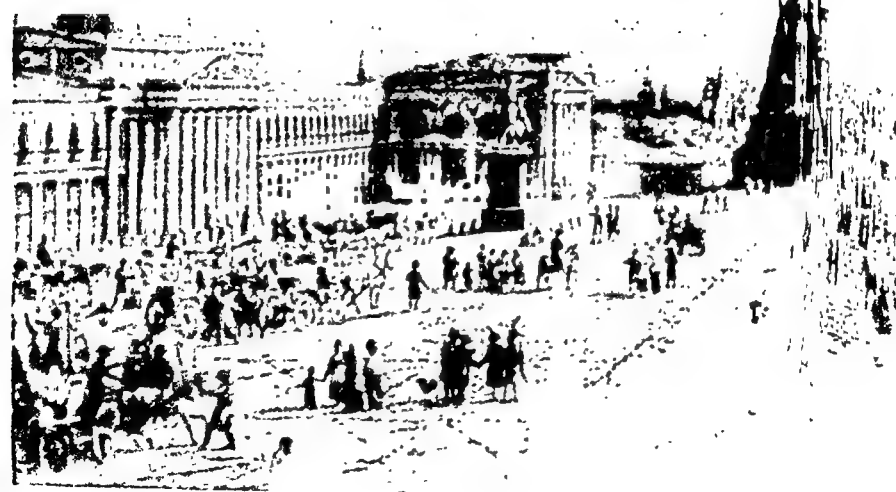
मास्को। रेड स्क्वायर। अ० कद्दोल के वनाये हुए चित्र पर आधारित लियोग्राफ़। १८२५।

"क्रेमलिन कैसा भव्य दृश्य प्रस्तुत करता है! ईवान महान के विशाल गिरजाघर के सामने दूसरे कैथीड्रल और गिरजाघर वौने लगते हैं। इसकी सफ़ेद पत्थर की दीवारों ने नेपोलियन की अपराजेय सेनाओं का गर्व चूर होते देखा है।"
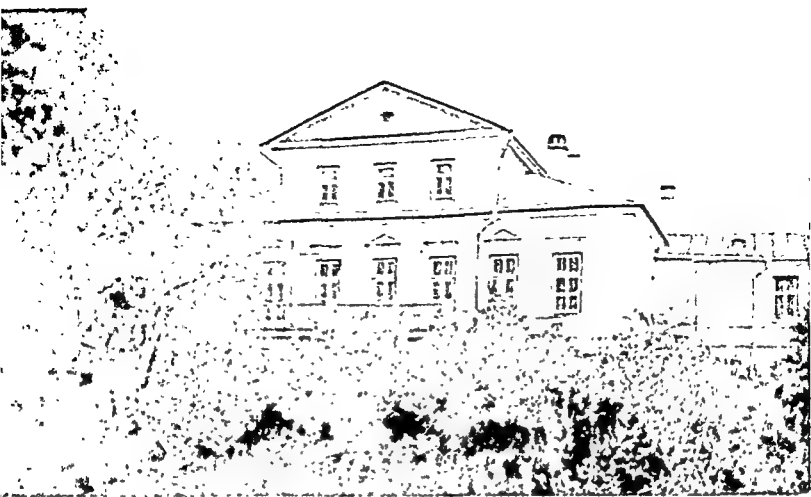
कज़ान का वह मकान जिसमें ल० न० तोलस्तोय कज़ान विश्वविद्यालय में पढ़ने के दिनों में रहते थे।

"लेव निकोलायेविच तोलस्तोय का छात्र-जीवन बहुत रोचक नहीं है।"

—स० अ० तोलस्ताया, 'ल० न० तोलस्तोय की जीवनी के लिए सामग्री और तोलस्तोय-परिवार के बारे में जानकारी।'

कज़ान में १६वीं शताब्दी के पांचवें दशक में बॉल-नृत्य। कलाकार त्युफ़्लेव का बनाया हुआ चित्र।

ल० न० तोलस्तोय, एक छात्र के रूप में, १८४७। अज्ञात कलाकार का बनाया हुआ चित्र।

१९वीं शताब्दी के पांचवें दशक में कज़ान विश्वविद्यालय। लियोग्राफ़। १९वीं शताब्दी।

यास्नाया पोल्याना के मकान का हॉल।
अपनी विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरी किये बिना ही ल० न० तोलस्तोय कज़ान से लौटकर यास्नाया पोल्याना में रहने लगे, जहां वह अपना सारा समय संगीत और किताबें पढ़ने में बिताते थे।

यास्नाया पोल्याना। पुस्तकालय।

ल० न० तोलस्तोय। फ़ोटो। पीटर्सवर्ग। १८४९।

"...अभी तक मैं यही सोच रहा था कि किस काम में लग जाऊं। पीटर्सवर्ग में सामने सभी रास्ते खुले हुए थे। मैं फ़ौज में भरती होकर हंगरी के सैनिक अभिय में भाग ले सकता था, या मैं अपनी विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरी कर सकता था।..

—आर० लेवेनफ़ेल्ड, 'तोलस्तोय से और उनके बारे में वार्त्तालाप

ल० न० तोल्स्तोय अपने चहेते बड़े भाई निकोलाई के साथ, दोनों के काकेशस के लिये प्रस्थान करने से पहले।

"मैंने काकेशस में रहकर फौज में नौकरी करते रहने का पक्का फ़ैसला कर लिया।"

—त० अ० येर्गोल्स्काया के नाम ल० न० तोल्स्तोय का २४ जून १८५१ का पत्र।

काकेशस। दर्याल खड्ड। चित्रकार इ० अयवाज़ोव्स्की।

मज़ेत पर्वत का एक दृश्य। चित्रकार ये० ये० लान्सेरे। १६२२।

कारेशम। गांव स्तारोग्लाद्कोव्स्काया, जहां ल० न० तोलस्तोय १८५१ में रहते थे। चित्रकार ये० ये० लान्सेरे।

I.

ИСТОРІЯ МОЕГО ДѢТСТВА.

ГЛАВА I

ल० न० तोलस्तोय की प्रथम प्रकाशित कृति 'बचपन' का पहला पृष्ठ। 'सोव्रेमेन्निक' (समकालीन) पत्रिका, अंक ९, १८५२।

न० अ० नेक्रासोव (१८२१–१८७८) – कवि, जनवादी, 'सोव्रेमेन्निक' पत्रिका के एक संपादक। बोरेल का बनाया हुआ लियोग्राफ़।

न० ग० चेर्नीशेव्स्की (१८२८–१८८९) – क्रांतिकारी-जनवादी, वैज्ञानिक, आलोचक। ल० न० तोलस्तोय की कृतियों 'बचपन', 'किशोरावस्था' और 'युद्ध की कहानियां' के बारे में प्रसिद्ध निबंध के लेखक ('सोव्रेमेन्निक' पत्रिका, अंक १२, १८५६)।

ल० न० तोलस्तोय की कृति 'बचपन' का एक चित्र। 'इस्लेन्येव के ड्राइंग-रूम में', चित्रकार द० कार्दोव्स्की। १९१२।
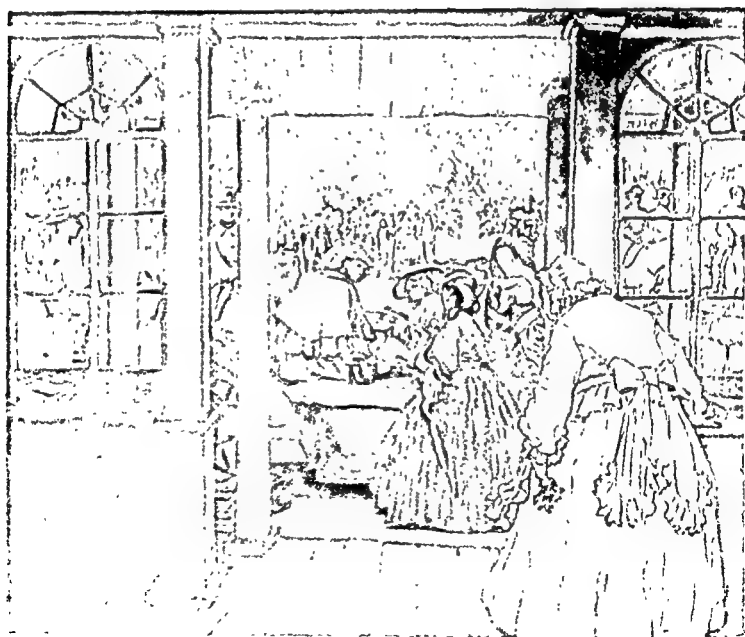
ल० न० तोलस्तोय की कृति 'बचपन' का एक चित्र। 'शिकार की तैयारियां', चित्रकार द० कार्दोव्स्की। १९१२।

ल० न० तोलस्तोय की कहानी 'कज्जाक' का एक चित्र। 'ओलेनिन जंगल में', चित्रकार ये० ये० लान्सेरे।

ल० न० तोलस्तोय की कहानी 'कज्जाक' के लिये चित्रकार ये० ये० लान्सेरे का बनाया हुआ एक चित्र।

क्रीमियाई युद्ध (१८५३–१८५६)। लियोग्राफ़। १६वीं शताब्दी।
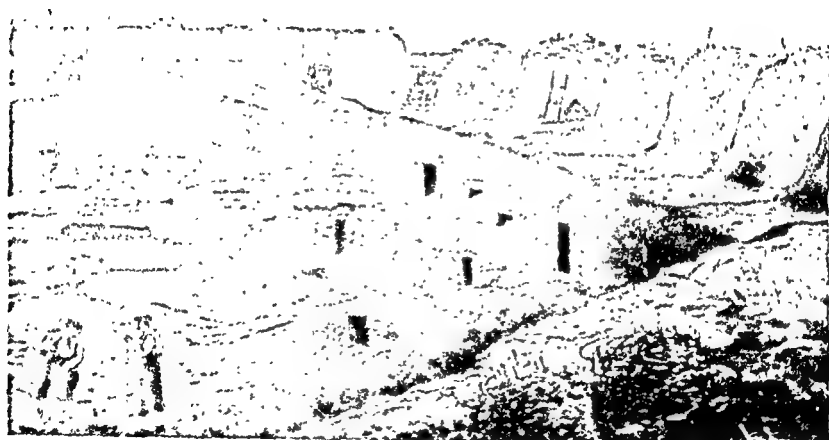
चौथा क़िला, जहां ल० न० तोलस्तोय लड़े थे – सेवास्तोपोल में बचाव की मोर्चेबंदी की एक सबसे ख़तरनाक जगह। लियोग्राफ़। १६वीं शताब्दी।

ल० न० तोलस्तोय – तोपखाने के लेफ़्टिनेंट। १८५४।

"सेवास्तोपोल की यह वीर-गाथा, जिसकी नायक रूसी जनता था, रूस पर दीर्घकाल के लिए अपनी छाप छोड़ जायेगी।..."

– लं० न० तोलस्तोय, 'दिसंबर मे सेवास्तोपोल'।

НОЧЬ

ВЕСНОЮ 1855 ГОДА ВЪ СЕВАСТОПОЛѢ.

० न० तोलस्तोय की कृति 'सेवास्तोपोल की कहानियां' का प्रकाशन 'सोव्रेमेन्निक'
रका में हुआ था। पीटर्सबर्ग, १८५६।

ास्तोपोल के वीर। फ़ोटो।

रूसी सिपाही में, सच्चे रूसी सिपाही में आप कभी डींग मारने या बिना सोचे-समझे
ड़ कर डालने की प्रवृत्ति, खतरे के समय अपने दिमाग़ पर परदा डाल लेने की इच्छा,
ध में भड़क उठने की आदत नहीं होती; इसके विपरीत, विनम्रता, सादगी और
तरा वास्तव में जो कुछ होता है उससे बिल्कुल ही दूसरी चीज उसमें देखने की क्षमता–
है उसकी लाक्षणिक विशेषताएं।"

–ल० न० तोलस्तोय, कहानी 'जंगल की कटाई'।

'सोव्रेमेन्निक' पत्रिका में अपनी रचनाएं प्रकाशित करानेवाले लेखकों के साथ ल० न० तोलस्तोय। पीटर्सबर्ग। १८५६। फ़ोटो स० लेवीत्स्की। बायें से दायें बैठे हुए: इवान गोंचारोव, इवान तुर्गेनेव, अलेक्सांद्र द्रुजीनिन, अलेक्सांद्र ओस्त्रोव्स्की। बायें से दायें खड़े हुए: लेव तोलस्तोय, द्मित्री ग्रिगोरोविच।

"छब्बीस साल की उम्र में मैं लड़ाई से पीटर्सबर्ग आया और मैंने लेखकों के साथ घनिष्ठता पैदा कर ली। वे मुझसे बिल्कुल अपनों की तरह मिले। ..."

—ल० न० तोलस्तोय, 'स्वीकारोक्तियां'।
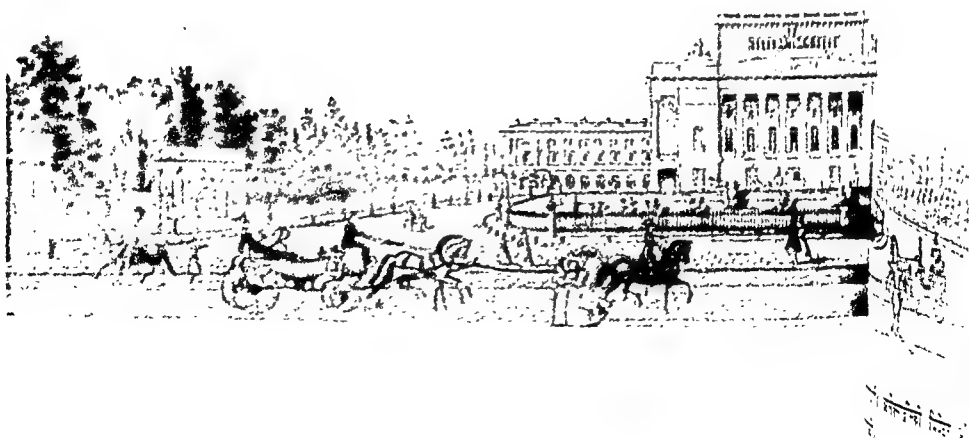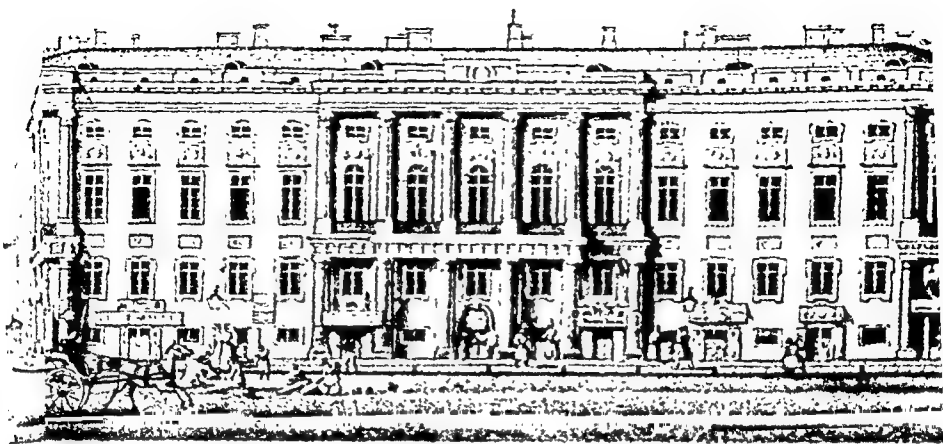
पीटर्सबर्ग। पुलिसमैन पुल के पास नेव्स्की एवेन्यू। रेखाचित्र: व० सादोवनिकोव।
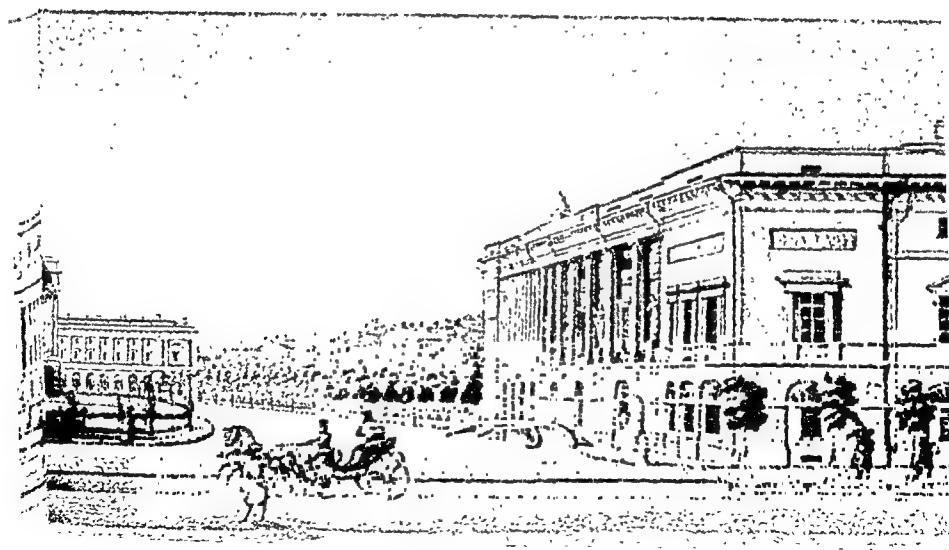
पीटर्सबर्ग। अलेक्सांद्रीस्की थियेटर और सार्वजनिक पुस्तकालय। लियोग्राफ़। १९वीं शताब्दी।
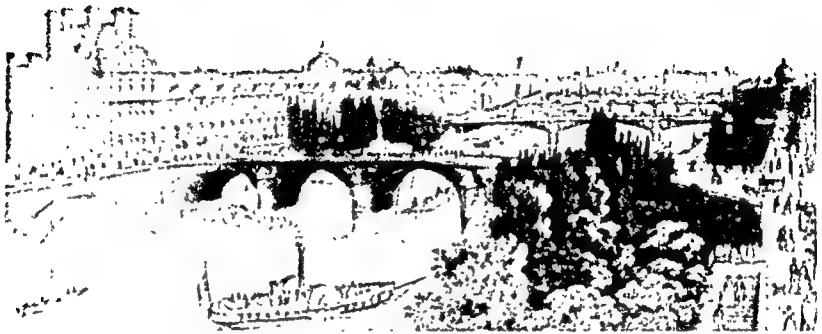
पेरिस, जहां ल० न० तोलस्तोय फ़रवरी-मार्च १८५७ में रहे थे। वहां वह इ० स० तुर्गेनेव से मिले थे।

फ्लोरेंस, जहां ल० न० तोलस्तोय जून १८५७ में रहे थे। लियोग्राफ़। १९वीं शताब्दी।

ल० न० तोलस्तोय। फ़ोटो। १८६१। ब्रसेल्स।

जेनेवा झील। चित्रकार वार्ब्ये।
स्विट्जरलैंड में १८५६ में ल० न० तोलस्तोय ने जन-शिक्षा के काम के संगठन का अध्ययन किया।

लंदन के उपनगर का वह मकान जिसमें अ० इ० हर्ज़ेन रहते थे। यहां १८५७ में ल० न० तोलस्तोय उनसे मिले थे।

अ० इ० हर्ज़ेन और न० प० ओगार्योव। फ़ोटो। १८६१।
ल० न० तोलस्तोय को भेंट किये गये इस फ़ोटो-चित्र के पीछे अ० इ० हर्ज़ेन ने अपने हाथ से लिखा था: "'Orsett House' में अपनी मुलाक़ातों की याद में, २८ मार्च १८६१।"
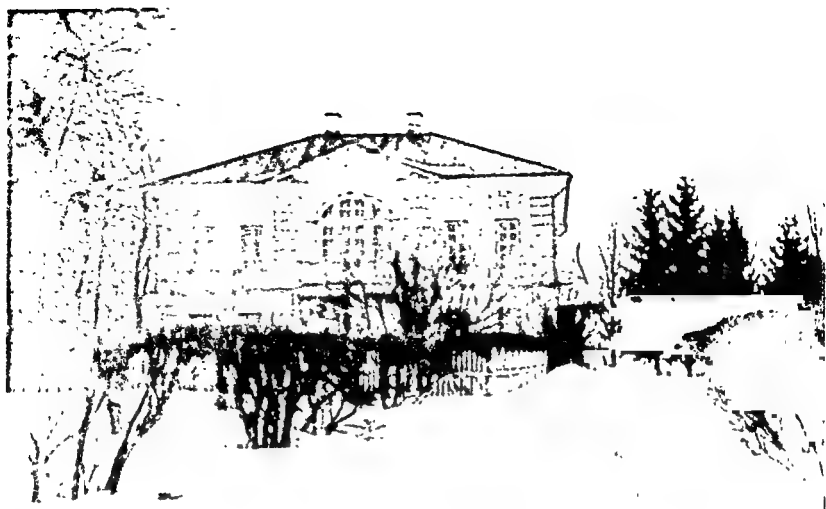
यास्नाया पोल्याना का स्कूल। स० अं० तोलस्ताया का खींचा हुआ फ़ोटो-चित्र।

"मैं जन-साधारण के लिए शिक्षा चाहता हूं ताकि पुश्किन... लोमोनोसोव जैसे लोगों को बचाया जा सके।"

– अ० अ० तोलस्ताया के नाम ल० न० तोलस्तोय का पत्र, दिसंबर १८७४।

यास्नाया पोल्याना की एक सड़क पर किसानों के बच्चे। फ़ोटो।

АЗБУКА

ГРАФА Л. Н. ТОЛСТАГО

КНИГА I.

С.-ПЕТЕРБУРГЪ.

[illegible]

1872.

ल० न० तोलस्तोय की लिखी हुई 'वर्णमाला की पुस्तक' का मुखपृष्ठ। १८७२।

तोलस्तोय की लिखी हुई 'जानवरों की कहानियां' का मुखपृष्ठ। ...
लाकार व० फ़ावोर्स्की ने बनाये थे।

ल० न० तोलस्तोय। मास्को। १८६२।
१८६२ में तोलस्तोय ने सोफ़्या अंद्रेयेव्ना बेर्स के साथ विवाह किया।
"पारिवारिक सुख में मैं पूरी तरह लीन हो गया।"

—'डायरी', ५ जनवरी, १८६३।

पत्नी सोफ़्या अंद्रेयेव्ना तोलस्ताया। १८६२।

मेरी वहुत वड़ी मददगार हैं।"

—अ० अ० फ़ेत के नाम ल० न० तोलस्तोय का पत्र, १६ मई १८६३।

यास्नाया पोल्याना का वह घर जिसमें ल० न० तोलस्तोय १८५६ के शुरू से अपने जीवन के अंत तक रहे।

यास्नाया पोल्याना। कार्नौकिन चरागाह।

ल० न० तोलस्तोय अपना उपन्यास 'युद्ध और शांति' लिखते हुए। चित्रकार इल्या रेपिन।

"साइबेरिया में सज़ा काटकर लौटनेवाले एक दिसंबरवादी के बारे में उपन्यास लिखने के इरादे से मैं पहले १४ दिसंबर के विद्रोह के दौर में वापस चला गया, फिर उन घटनाओं में भाग लेनेवाले लोगों के बचपन और जवानी के दिनों में पहुंच गया, उसके बाद मुझे १८१२ के युद्ध में दिलचस्पी हुई और चूंकि सन् १८१२ की लड़ाई का संबंध १८०५ की घटनाओं के साथ जुड़ा हुआ था इसलिए मैंने लिखने का पूरा सिलसिला इसी समय से शुरू किया।"

स० अं० तोलस्ताया द्वारा लिखे गये ल० न० तोलस्तोय के शब्द।

"मैं अपनी जनता का इतिहास लिखने की कोशिश करता हूं।"

– ल० न० तोलस्तोय, उपन्यास 'युद्ध और शांति' के कच्चे प्रारूपों से उद्धृत।

उपन्यास 'युद्ध और शांति' की पांडुलिपि का पहला पृष्ठ। बारहवां प्रारूप।

"मैं कितनी भी थकी होती थी, मनोभावों की किसी भी स्थिति में होती थी, लेकिन हर शाम को मैं लेव निकोलायेविच से सुबह उन्होंने जो कुछ लिखा होता था उसे ले जाती थी और उसकी साफ़ नक़ल तैयार कर देती थी। मैंने 'युद्ध और शांति' को कितनी बार नक़ल किया, इसकी गिनती बताना भी नामुमकिन है।"

—स० अ० तोलस्ताया, 'मेरा जीवन'। टाइप की हुई प्रतिलिपि। यास्नाया पोल्याना के संग्रहालय में रखी है।

नेपोलियन। कलाकार व० वेरेश्चागिन का बनाया हुआ छवि-चित्र।

... की लड़ाई। नादे का बनाया हुआ रेख...

म० इ० कुतूज़ोव।
"मेरे उपन्यास मे जहा भी ऐतिहासिक पात्रों ने कुछ कहा या किया है, वहां मैंने उसे अपने मन मे नही गढ़ा है, मैंने वास्तविक सामग्री का उपयोग किया है। ..."

—ल० न० तोलस्तोय।

बोरोदीनो की लड़ाई। प० गेस्से का बनाया हुआ रेखाचित्र।
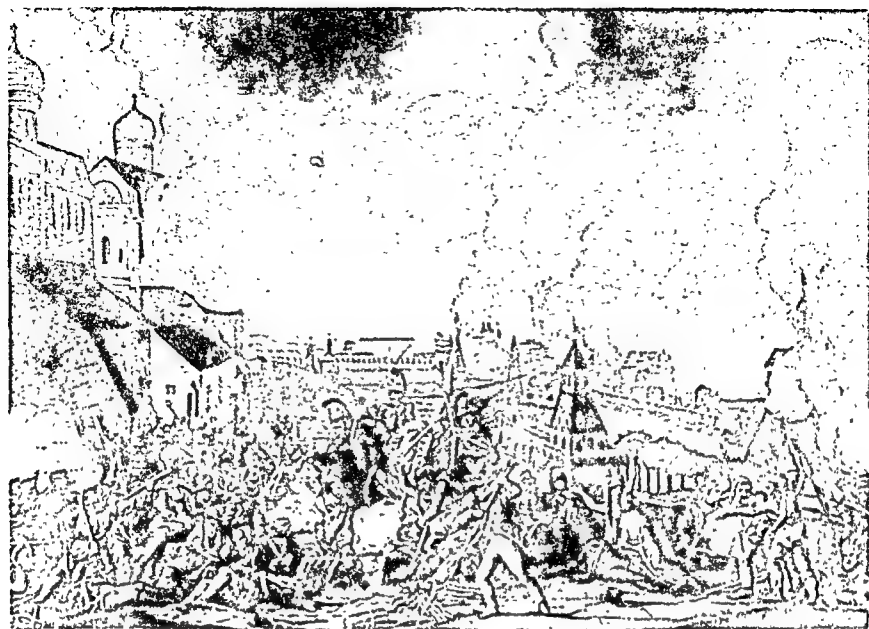
१८१२ में मास्को आग की लपटों में। कार-देल्ली का बना हुआ रेखाचित्र।

बेरेजीना के पास नेपोलियन का पलायन। प० गेस्से का बनाया हुआ रेखाचित्र।

"रूसी स्सेवोला"।
छापेमारों ने शत्रु की विशाल सेना को थोड़ा-थोड़ा करके तहस-नहस कर दिया।"
—ल० न० तोलस्तोय।

'छापेमार पकड़े गये फ़्रांसीसी सिपाहियों को अपनी निगरानी में ले जा रहे हैं'।
उपन्यास 'युद्ध और शांति' के लिए कलाकार द० श्मारिनोव का बनाया हुआ चित्र।
१९५३।

१९वीं शताब्दी के तीसरे दशक में मास्को में बॉल-नृत्य। चित्रकार द० कार्दोव्स्की।

मास्को की पोवार्स्काया स्ट्रीट का वह घर (अब ५६, वोरोव्स्की स्ट्रीट, सोवियत लेखक संघ का कार्यालय) जिसका वर्णन ल० न० तोलस्तोय ने अपने उपन्यास 'युद्ध और शांति' में रोस्तोव-परिवार के घर के रूप में किया है।

ल० न० तोलस्तोय अपना उपन्यास 'युद्ध और शांति' समाप्त करने के दिनों में। मास्को। १८६८।

किसी कृति के अच्छा होने के लिए यह जरूरी है कि लेखक उसका मूल विचार पसंद करे। 'युद्ध और शांति' में मुझे जन-साधारण का विचार पसंद था।"

– सो० अ० तोलस्ताया, ३ मार्च १८७७। 'जानकारी के लिए मेरे विभिन्न कागजात।'

सोफ़्या अंद्रेयेव्ना तोलस्ताया अपने बच्चों तान्या और सेर्गेई के साथ। फ़ोटो। १८६६।

यास्नाया पोल्याना का घर। आगे की ओर "ग़रीबों का पेड़", जिसके नीचे किसान जमा होते थे जो लेखक के पास मदद और सलाह लेने के लिए आते थे। फ़ोटो। १९०८।
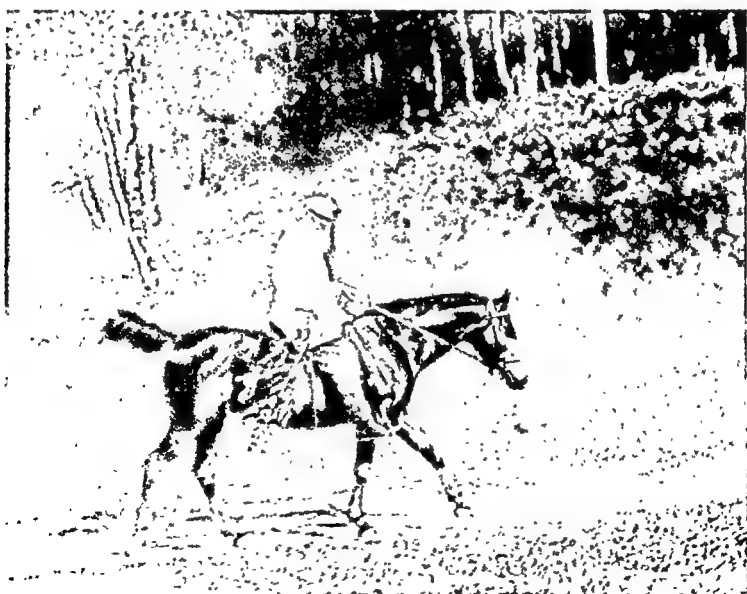
ल० न० तोलस्तोय यास्नाया पोल्याना में अपने प्रिय घोड़े देलीर पर सवार। फ़ोटो-चित्र: क० बुल्ला। १९०० के बादवाला दशक।

ल० न० तोलस्तोय खेत में। १६०० के बादवाला दशक।
तोलस्तोय को आम तौर पर अपने आपको गांव की खामोशी में बंद कर लेने के लिए शहर से चल देने की जल्दी रहती थी; वहां वह खेती के कामों में जुट जाते थे: वह हल जोतते थे, कटाई करते थे, हेंगा चलाते थे, सबसे ग़रीब किसानों की मदद करते थे।
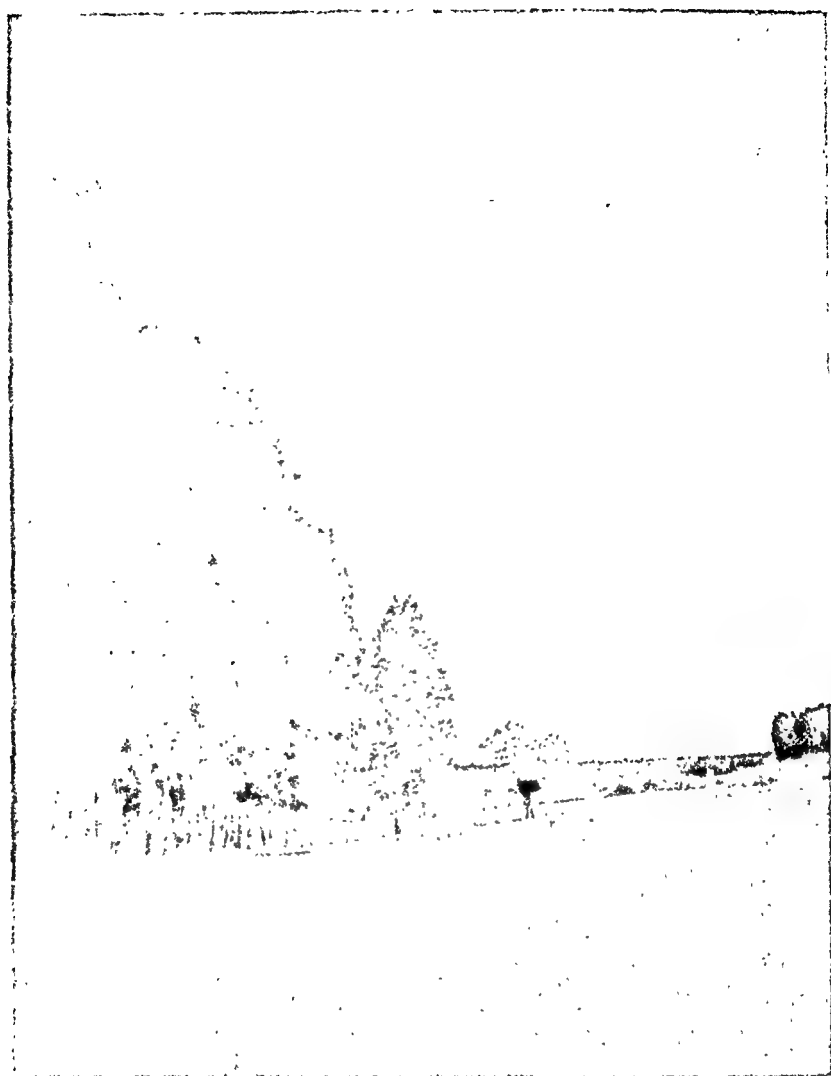
यास्नाया पोल्याना में मित्रोफ़ानोव्स्काया कुंज जिसे १८७८-१८८१ में ल० न० तोल्स्तोय ने रोपा था।
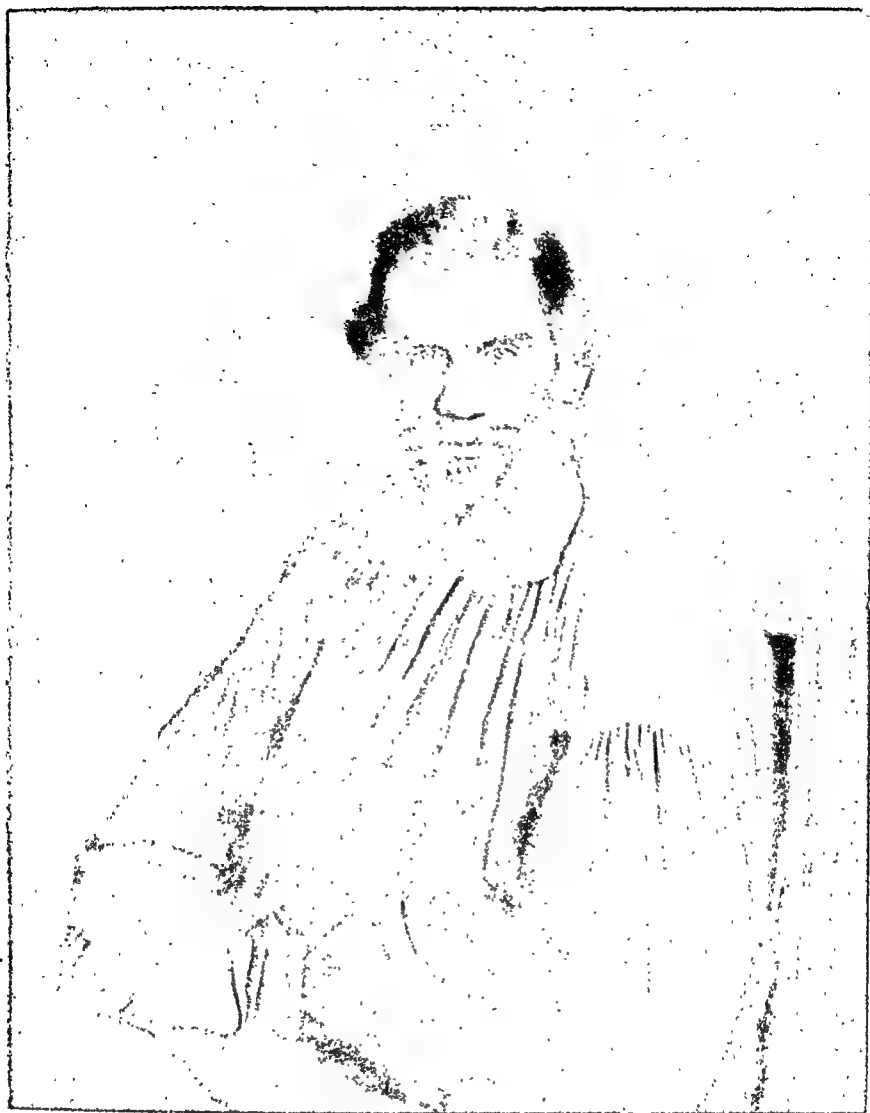
ल० न० तोलस्तोय । कलाकार इ० क्राम्सकोय का बनाया हुआ छवि-चित्र। १८७३।
इसी समय लेखक ने अपने उपन्यास 'आन्ना कारेनीना' पर काम करना शुरू किया था।
"इस उपन्यास ने, जो सही माने में मेरे जीवन का पहला उपन्यास था, मेरी आत्मा को छू लिया ... इसकी कल्पना अनायास ही और दिव्य पुश्किन की बदौलत मेरे मन में उठी। ..."

—न० न० स्त्राहोव के नाम ल० न० तोलस्तोय का पत्र, मई १८७३।

मरीया अलेक्सांद्रोव्ना गार्तुंग (विवाह से पहले पुश्किना), कवि की सबसे बड़ी बेटी। कलाकार ई० मकारोव का बनाया हुआ छवि-चित्र। १८६० के बादवाला दशक।

मरीया निकोलायेव्ना मुहोतिना। कलाकार क० लाश का बनाया हुआ छवि-चित्र। १८५६।

इन दोनों स्त्रियों को आन्ना कारेनीना के पात्र का आधार बनाया गया।

'अपने बेटे से आन्ना की भेंट'। उपन्यास के लिए कलाकार म० व्रूबेल का बनाया हुआ चित्र। १८८० के बादवाला दशक।
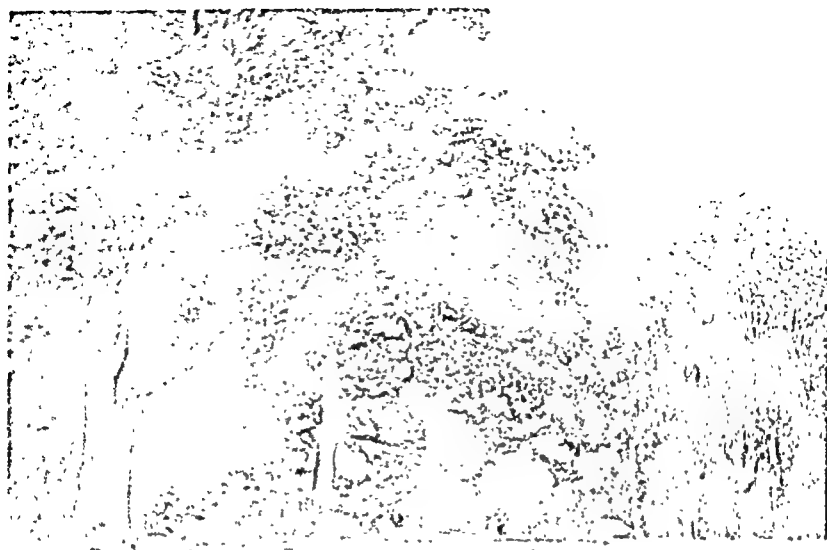
यास्नाया पोल्याना। गोरेलाया रोश्चा (भस्मीभूत कुंज)। यूश्किन वेर्ह (एक चरागाह)।
इन दृश्यों का वर्णन न० न० तोलस्तोय ने अपने उपन्यास 'आन्ना कारेनीना' में किया है।
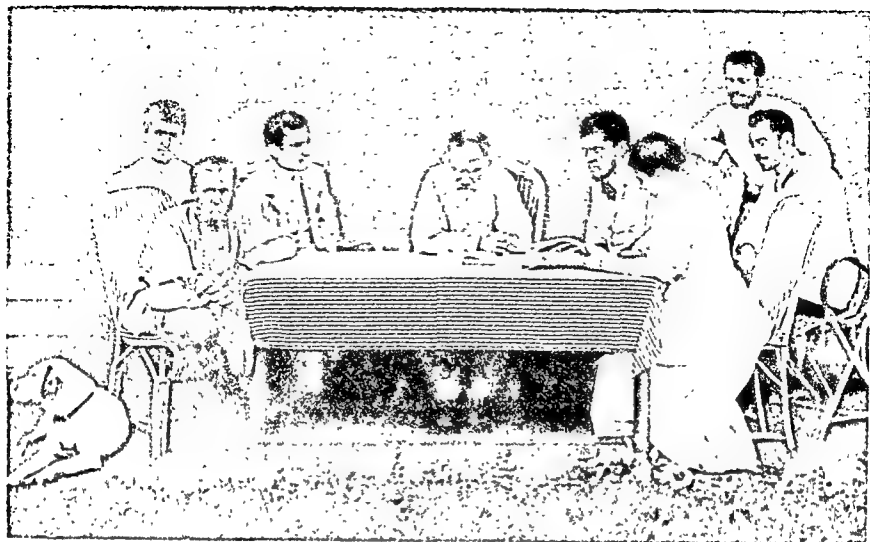
र्याज़ान प्रांत के बेगीचेव्का गांव में भुखमरी के शिकार किसानों को सहायता देने के दौरे में ल० न० तोलस्तोय अपने सहायकों के साथ। १८९२।

ल० न० तोलस्तोय और व० ग० चेर्तकोव शतरंज खेल रहे हैं।
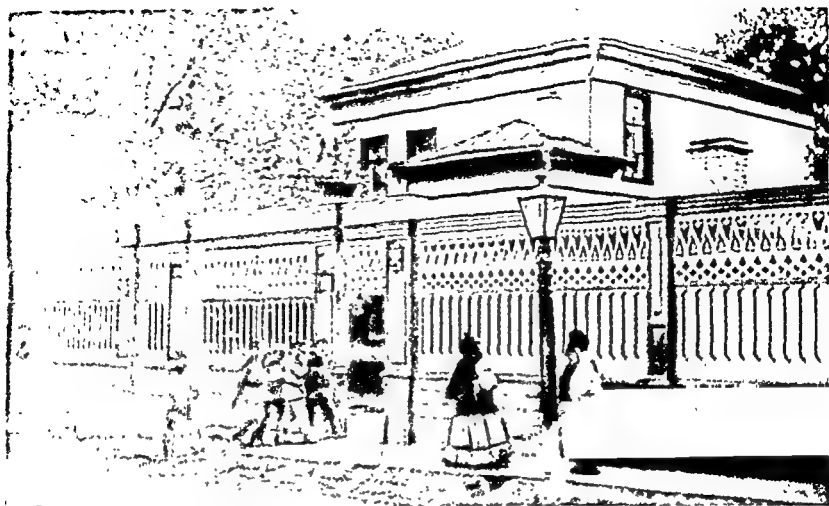
मास्को। हामोवनिकी। तोलस्तोय-परिवार का वह घर जहां ल० न० तोलस्तोय १८८० से १६०० तक रहे थे। (अब इसमें ल० न० तोलस्तोय का गृह-संग्रहालय है)।

ल० न० तोलस्तोय अपने रिश्तेदारों और मेहमानों के बीच। मास्को। १८६८। फ़ोटोचित्र प० प्रेओब्राजेंस्की।
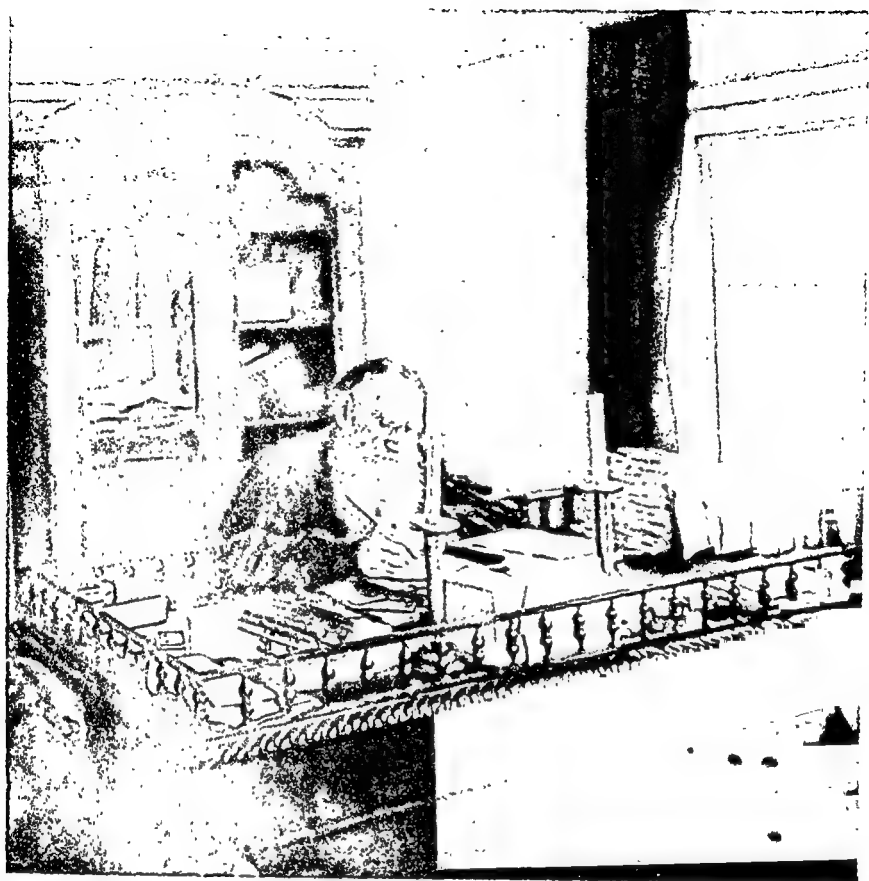
ल०न० तोलस्तोय काम करते हुए। फ़ोटो। १८९० के बादवाला दशक। मास्कोवाले घर में लेखक का काम करने का कमरा। यहीं उपन्यास 'पुनरुत्थान', नाटक 'जिंदा लाश' और कहानी 'क्रायट्ज़र सोनाटा' लिखे गये थे।

ख़ामोवनिकी। ल० न० तोलस्तोय बाग़ में स्केटिंग कर रहे हैं।

जनवरी १८८२ में मास्को में जनगणना के समय ल० न० तोलस्तोय। कलाकार इल्या रेपिन का बनाया हुआ रेखाचित्र।

ल० न० तोलस्तोय और प्रसिद्ध वकील तथा लेखक अ० फ़० कोनी। कोनी ने अपनी वकालत के दौरान की एक घटना ल० न० तोलस्तोय को सुनायी थी जो उपन्यास 'पुनरुत्थान' (१८८९–१८९९) का आधार बनी।

उपन्यास 'पुनरुत्थान' के सिलसिले में पुलिस इंसपेक्टर से ल० न० तोलस्तोय के कुछ सवालों की पांडुलिपि।

ख़ल्यूदोव की सुबह', 'कात्यूशा मास्लोवा की सुबह'। उपन्यास 'पुनरुत्थान' के लिए
ाकार ल० पास्तेरनाक के बनाये हुए चित्र।

[illegible] 1901 года.

ЦЕРКОВНЫЯ ВѢДОМОСТИ,

[illegible]

ПРИ СВЯТѢЙШЕМЪ ПРАВИТЕЛЬСТВУЮЩЕМЪ СУНОДѢ.

№ 8 | ЕЖЕНЕДѢЛЬНОЕ ИЗДАНІЕ СЪ ПРИБАВЛЕНІЯМИ. | № 8

Опредѣленіе Святѣйшаго Сунода,

отъ 20—22 февраля 1901 года № 557, съ посланіемъ вѣрнымъ чадамъ Православныя Греко-россійскія Церкви о графѣ Львѣ Толстомъ.

[illegible] Православной Церкви, [illegible] и о спасеніи заблуждающихся, [illegible] Толстомъ и его противохристіанскомъ и [illegible] благовременнымъ, въ предупрежденіе [illegible] «Церковныхъ Вѣдомостяхъ», [illegible]

БОЖІЕЮ МИЛОСТІЮ,

Святѣйшій Всероссійскій Сунодъ вѣрнымъ чадамъ Православныя Каѳолическія Греко-россійскія Церкви

о Господѣ радоватися.

«Молимъ вы, братіе, блюдитеся отъ творящихъ распри и раздоры, кромѣ ученія, емуже вы научистеся, и уклонитеся отъ нихъ» (Римл. 16, 17).

Изначала Церковь Христова терпѣла хулы и нападенія отъ многочисленныхъ еретиковъ и лжеучителей, которые стремились ниспровергнуть ее и поколебать въ существенныхъ ея основаніяхъ, утвер-

'चर्च गजट' अखबार जिसमें रूसी चर्च की धर्मसभा (साइनोड) का ल० न० तोलस्तोय को धर्म-बहिष्कृत करने का फ़ैसला प्रकाशित किया गया था, १९०१।

पीटर्सबर्ग। धर्मसभा की इमारत। लिथोग्राफ़। १९वीं शताब्दी।

ल० न० तोलस्तोय और अ० म० गोर्की यास्नाया पोल्याना में। १६००। स० अं० तोलस्ताया का खींचा हुआ फ़ोटो-चित्र।

ल० न० तोलस्तोय और अ० प० चेख़ोव गास्प्रा में। अक्तूबर १६०१। स० अं० तोलस्ताया का खींचा हुआ फ़ोटो-चित्र।

मूर्तिकार इ० गिंसबुर्ग, संगीत तथा साहित्य के आलोचक व० स्तासोव, ल० न० तोलस्तोय और स० अं० तोलस्ताया यास्नाया पोल्याना के पार्क में। फ़ोटो। १६००।

ल० न० तोलस्तोय प्रसिद्ध वलालाइका वजानेवाले व० त्रोयानोव्स्की के वादन का आनंद ले रहे हैं। फ़ोटो। १९००।

ल० न० तोलस्तोय चित्रकार इल्या रेपिन के साथ। फ़ोटो। १९०७।

ास्को में कुर्स्की रेलवे स्टेशन से यास्नाया पोल्याना के लिए ल० न० तोलस्तोय की
ादाई का दृश्य। यह मास्को में लेखक का अंतिम आगमन था।
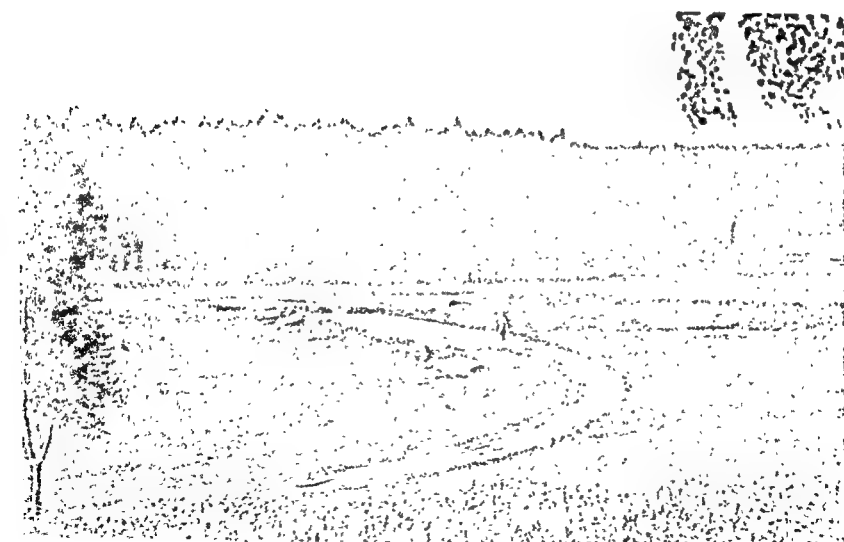
न० तोलस्तोय यास्नाया पोल्याना में टहलते हुए।

ल० न० तोलस्तोय का एक अंतिम फ़ोटो-चित्र। १९१०।

"यास्नाया पोल्याना में लेव तोलस्तोय के आस-पास की हर चीज़ में हलचल रहती थी
जो भी उनके सम्पर्क में आता था उसे वह स्वयं अपने व्यक्तित्व से, अपनी आत्मि
समृद्धि से और अपनी अपार प्रतिभा से संपन्न कर देते थे।"

—म० व० नेस्तेरोव, 'बीते हुए दिन, भेंटें और यादें, तोलस्तोय के बारे में चिट्ठियां।

यास्नाया पोल्याना में एक त्योहार के अवसर पर ल० न० तोलस्तोय किसानों के बच्चों के बीच। फ़ोटो। १९१०।

ल० न० तोलस्तोय और स० अं० तोलस्ताया अपने विवाह की ४८वीं वर्षगांठ के दिन। ल० न० तोलस्तोय का अंतिम फ़ोटो-चित्र। फ़ोटो के पीछे स० अं० तोलस्ताया के हाथ में लिखा है: "२३ सितंबर १९१०। रहूंगा नहीं!"

अस्तापोवो रेलवे स्टेशन पर, जहां ७ नवंबर १६१० को लेखक का देहांत हुआ, रूसी जनता तोलस्तोय को अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित कर रही है।
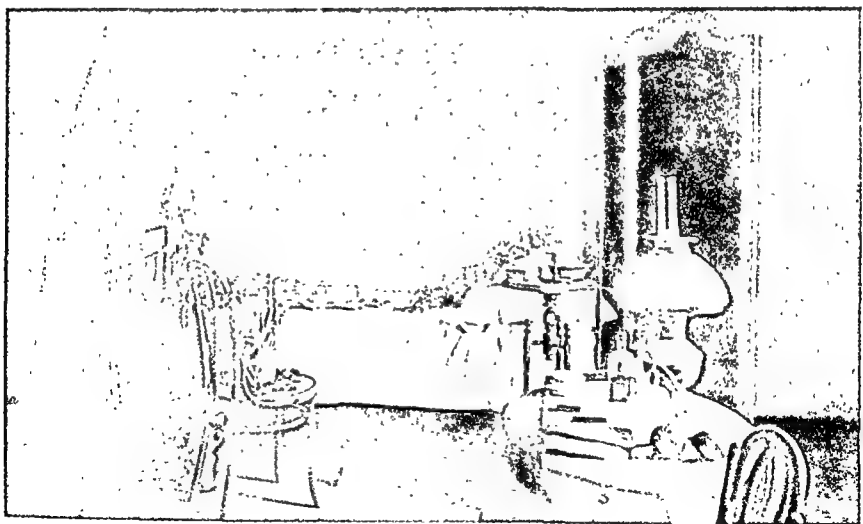
अस्तापोवो में स्मारक-कक्ष।

यास्नाया पोल्याना में ६ नवंबर १६१० को ल० न० तोलस्तोय की शव-यात्रा।

यास्नाया पोल्याना के स्तारी ज़काज़ जंगल के एक खड्ड के छोर पर ल० न० तोलस्तोय की क़ब्र।
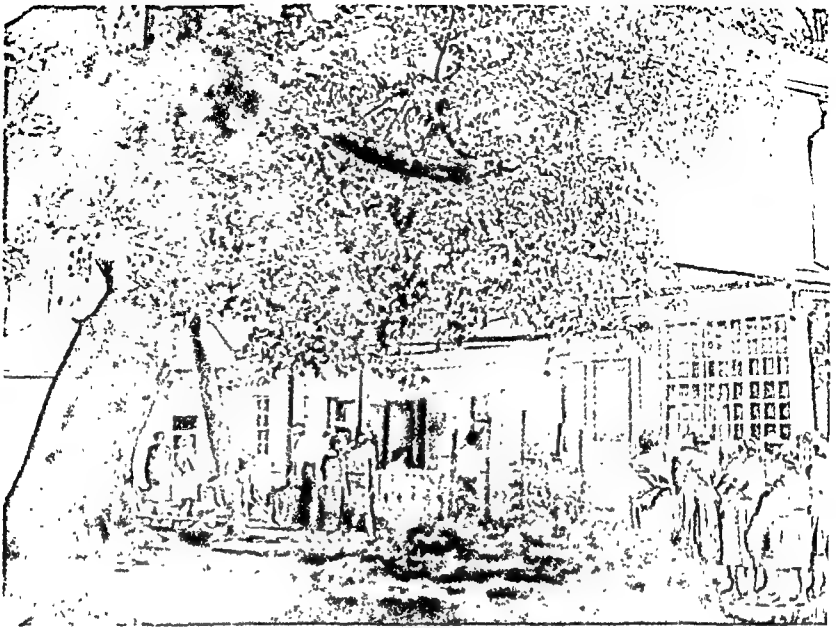
यास्नाया पोल्याना में ल० न० तोलस्तोय का स्मारक संग्रहालय।
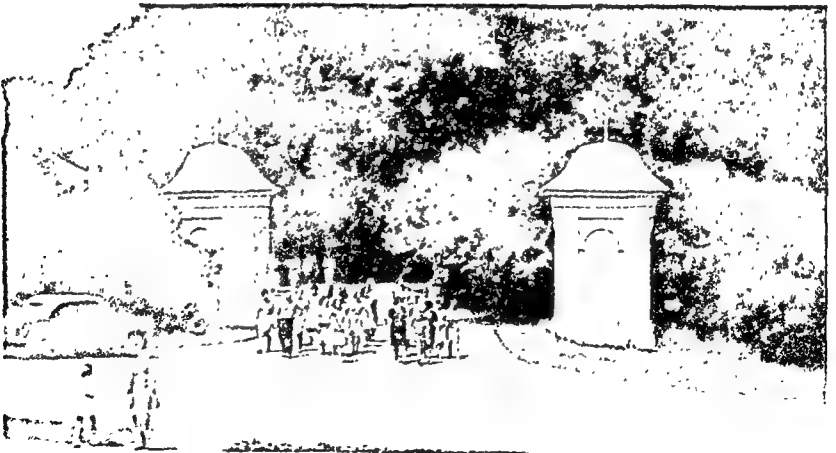
यास्नाया पोल्याना में दर्शकों का तांता बंधा रहता है, जहां विश्व संस्कृति के एक महानतम कर्मी रहते और काम करते थे।

से मैं मन ही मन उन पर व्यंग करता था; लेकिन इन शब्दों का वे ज़रा भी बुरा नहीं मानते थे और न ही इसकी वजह से उनकी बेहद गहरी दोस्ती में कोई फ़र्क़ आता था। एक-दूसरे के साथ अपने वर्ताव में वे बहुत सावधान और बहुत विवेकपूर्ण रहते थे, जैसे कि केवल बहुत ग़रीब और बहुत नौजवान लोग ही होते हैं। लेकिन मुख्य बात यह है कि मुझे ज़ुख़ीन के चरित्र में और 'लिस्बन' में उसके हंगामों में एक तरह की उच्छृंखलता और उद्दंडता की गंध मिलती थी। मुझे शक होता था कि शराब की ये महफ़िलें रम में आग लगाने और शैम्पेन के उस तमाशे से, जिसमें मैंने बैरन ज़० के यहां हिस्सा लिया था, कोई बिल्कुल ही अलग चीज़ होती होंगी।

अध्याय ४४

ज़ुख़ीन और सेम्योनोव

मुझे यह तो मालूम नहीं कि ज़ुख़ीन का संबंध समाज के किस वर्ग से था, लेकिन इतना मैं जानता हूं कि वह स० जिमनेज़ियम में पढ़ा था, उसके पास कोई पैसा नहीं था, और स्पष्टतः उसका जन्म किसी कुलीन घराने में नहीं हुआ था। उस वक़्त वह अठारह साल का था, हालांकि देखने में वह इससे बहुत बड़ा लगता था, उसका दिमाग़ कमाल का तेज़ था, और, ख़ास तौर पर, वह किसी विषय को बहुत जल्दी समझ लेता था; उसके लिए किसी बहुपक्षीय विषय को समग्र रूप में समेट लेना, उसकी सभी शाखाओं और उससे निकाले जानेवाले निष्कर्षों को पहले से देख लेना बजाय इसके कहीं आसान था कि वह समझकर उन नियमों का ज्ञान प्राप्त करे जिनकी मदद से वे निष्कर्ष निकाले गये थे। वह जानता था कि उसका दिमाग़ बहुत तेज़ था; उसे इस बात पर गर्व था और इस गर्व के फलस्वरूप वह हर एक के साथ अपने व्यवहार में समान रूप से सादगी और नेकदिली का परिचय देता था। अपने ज़ीवन के दौरान उसने बहुत कुछ झेला होगा। उसके उत्तेजनामय, संवेदनशील स्वभाव में प्रेम और मित्रता, कारोबार और

धन-दौलत की झलक मिलती थी। हालांकि एक सीमित हद तक, और समाज के निचले वर्गों में कोई चीज ऐसी नहीं थी, जिसे एक बार अनुभव कर लेने के बाद उसके प्रति वह तिरस्कार या कुछ उदासीनता और उपेक्षा न महसूस करता हो, जिनका स्रोत इस बात में था कि वह अत्यंत सुगमता से हर चीज़ को हासिल कर लेता था। देखने मे ऐसा लगता था कि वह हर नयी चीज़ पर सिर्फ़ इसलिए क़ब्ज़ा करने लगता था कि अपने उद्देश्य में सफल होने के बाद अपनी हासिल की हुई चीज़ को तिरस्कार की दृष्टि से देखे, और अपने प्रतिभाशाली स्वभाव के कारण वह हमेशा अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेता था, और उसे तिरस्कार का रवैया अपनाने का अधिकार था। विज्ञान के विषयों के मामले में भी यही बात थी: वह पढ़ता बहुत थोड़ा था, नोट कभी नही लिखता था, फिर भी उसे गणित का पूरा ज्ञान था, और उसका यह कहना कि वह प्रोफ़ेसर को भी छका सकता था, कोरी डींग नही थी। वह समझता था कि जो कुछ पढ़ाया जाता था उसमें से बहुत कुछ बकवास होता था; लेकिन अपने लाक्षणिक, अनजाने ही व्यावहारिक और धूर्त्त स्वभाव के कारण वह फ़ौरन प्रोफ़ेसर की इच्छा के अनुसार आचरण करने लगता था, और सभी प्रोफ़ेसर उसे पसद करते थे। वह अधिकारियों के मुंह पर साफ़ बात कह देता था, फिर भी अधिकारी उसकी इज़्ज़त करते थे। न केवल यह कि उसके मन में विज्ञान के विषयों के प्रति कोई आदर या प्रेम की भावना नहीं थी, बल्कि वह उन लोगों से नफ़रत भी करता था जो उन चीज़ों में इतनी गंभीरता से जुटे रहते थे जिन्हें वह इतनी आसानी से हासिल कर लेता था। विज्ञान के विषयों को जिस रूप में वह समझता था, उनके लिए उसकी प्रतिभा के दसवें भाग की भी ज़रूरत नहीं थी; एक छात्र के नाते उसका जीवन उसके सामने कोई ऐसी समस्या नहीं रखता था जिसमें वह पूरी तरह जुटा रहे; लेकिन जैसा कि वह कहता था उसका उत्तेजनामय, सक्रिय स्वभाव जीवन के लिए ललचता रहता था, और उसने अपने आपको ऐसे विघटन के हवाले कर दिया जो उसके साधनों की सीमा में संभव था, और वह पूरे उत्साह और अपनी शक्ति भर उस जीवन की आहुति देने की इच्छा से इस काम में व्यस्त हो गया। इम्तहान से पहले ओपेरोव की भविष्यवाणी पूरी हो

गयी। कुछ हफ़्तों के लिए ज़ुखीन ग़ायब हो गया, जिसका नतीजा यह हुआ कि हमें अंतिम दिनों में अपनी तैयारी एक दूसरे लड़के के कमरे में करनी पड़ी। लेकिन पहले इम्तहान के दिन ज़ुखीन हॉल में दिखायी दिया : चेहरा पीला, मरियल हालत और हाथ कांपते हुए, और वह बहुत अच्छे नंबरों से पास होकर दूसरे वर्ष में चला गया।

साल के शुरू में पियक्कड़ों की इस मंडली में आठ लड़के थे, जिनका सरग़ना था ज़ुखीन। शुरू में इकोनिन और सेम्योनोव भी इनमें शामिल थे। इकोनिन तो इस मंडली में से इसलिए निकल गया कि वह उस तूफ़ानी विघटन को बर्दाश्त नहीं कर सकता था जिसमें ये लोग साल के शुरू से ही विलीन हो गये थे; सेम्योनोव उन्हें छोड़कर इसलिए चला गया कि उनकी ये रंगरलियां उसे बहुत तुच्छ मालूम होती थीं। शुरू में हमारे क्लास के लड़के इन लोगों को देखकर दहशत खाते थे और उनकी हरकतें एक-दूसरे से बयान करते थे।

ख़ास हीरो थे ज़ुखीन, और साल के अंत में – सेम्योनोव। सेम्योनोव को इधर थोड़े दिन से लोग कुछ दहशत की नज़र से देखने लगे थे, और जब वह किसी लेक्चर में आ जाता था, जैसा कभी-कभार ही होता था, तो ऑडिटोरियम में सनसनी फैल जाती थी।

सेम्योनोव ने अपनी रंगरलियां मनाने की कार्यनीति अत्यंत मौलिक ढंग से और चुस्ती के साथ ख़त्म कर दी थी, जैसा कि मुझे ज़ुखीन के साथ अपनी जान-पहचान की बदौलत ख़ुद देखने का मौक़ा मिला। हुआ यह कि एक शाम हम अभी ज़ुखीन के यहां जमा ही हुए थे, और ओपेरोव अपने पास शमादान के अलावा एक बोतल में भी मोमबत्ती लगाकर अपनी नोटबुकों पर सिर झुकाकर छोटे-छोटे अक्षरों में लिखे हुए भौतिकी के नोट अपनी महीन आवाज़ में पढ़ना शुरू कर ही रहा था कि इतने में मकान-मालकिन ने कमरे में आकर ज़ुखीन को सूचना दी कि कोई उसके लिए एक पर्चा लेकर आया था।

ज़ुखीन उठकर कमरे से बाहर गया लेकिन थोड़ी ही देर में सिर झुकाये विचारों में खोया हुआ लौट आया। उसके हाथ में बादामी रंग के लपेटने के काग़ज़ पर लिखा हुआ एक पर्चा और दस-दस रूबल के दो नोट थे।

"दोस्तो! कुछ अजीबो-ग़रीब ख़बर आयी है," उसने अपना सिर

उठाकर हम लोगों को गंभीर और अर्थपूर्ण नज़रों से देखते हुए कहा।

"क्या हुआ? ट्यूशन के पैसे मिले हैं क्या?" ओपेरोव ने अपनी कॉपी के पन्ने उलटते हुए कहा।

"चलो, आगे पढ़ो," किसी ने सुझाव दिया।

"नहीं, दोस्तो, यह मेरे लिए नहीं है," ज़ुख़ीन उसी स्वर में कहता रहा। "मैं तुम्हें बता चुका हूं—बड़ी अजीब ख़बर है! सेम्योनोव ने एक सिपाही के हाथ ये बीस रूबल मुझे भिजवाये हैं, जो उसने एक बार मुझसे उधार लिये थे, और लिखा है कि अगर मैं उससे मिलना चाहता हूं तो फ़ौरन फ़ौजी बैरकों में आ जाऊं। तुम लोगों को कुछ अंदाजा भी है कि इसका मतलब क्या है?" उसने हममें से हर एक को बारी-बारी से देखते हुए कहा। हम कुछ नहीं बोले। "मैं इसी दम उसके पास जा रहा हूं," ज़ुख़ीन कहता रहा।

"जिसका जी चाहे चले।"

सभी लोग फ़ौरन अपने कोट पहनकर सेम्योनोव के पास जाने को तैयार हो गये।

"क्या ऐसा करना थोड़ा बेतुका नहीं होगा," ओपेरोव ने अपनी महीन आवाज में पूछा, "कि हम सब लोग जाकर उसे इस तरह घूरें जैसे वह कोई अजूबा हो।"

मैं ओपेरोव से बिल्कुल सहमत था, ख़ास तौर पर इसलिए कि सेम्योनोव से मेरा बहुत थोड़ा परिचय था, लेकिन मैं अपने आपको उस पूरी मंडली का ही एक सदस्य समझने के लिए और सेम्योनोव से मिलने के लिए इतना उत्सुक था कि मैंने उसकी इस बात पर कोई टिप्पणी नहीं की।

"बकवास है!" ज़ुख़ीन ने कहा। "अपने साथी को विदा करने के लिए हम सब लोगों के जाने में ऐसी बेतुकी क्या बात है? इससे क्या फ़र्क़ पड़ता है कि वह कहां है? कोई बात नहीं है। अगर तुम्हारा जी चाहता है तो चलो न।"

हम लोग किराये पर कुछ गाड़ियां लेकर उस सिपाही के साथ चल पड़े। ड्यूटी पर जो नॉन-कमीशंड अफ़सर था वह हम लोगों को बैरक में जाने देने के लिए तैयार नहीं था लेकिन ज़ुख़ीन ने किसी तरह

उसे समझा-बुझाकर राज़ी कर लिया और वही सिपाही जो पर्चा लेकर हमारे पास आया था हमें लेकर एक बड़े-से कमरे में गया जिसमें रात को जलायी जानेवाली कई छोटी-छोटी वत्तियों से हल्की-हल्की रोशनी हो रही थी; दोनों तरफ़ बने हुए चबूतरों पर रंगरूट अपने ख़ाकी ओवरकोट पहने बैठे या लेटे थे; उन सभी के सिर सामने से मूंड़ दिये गये थे। बैरक में घुसते ही जिस चीज़ की ओर मेरा ध्यान ख़ास तौर पर गया वह थी वहां की घुटन और सैकड़ों लोगों की आवाज़ें जो खर्राटे ले रहे थे। हम अपने मार्गदर्शक और ज़ुख़ीन के पीछे-पीछे चल रहे थे, जो चबूतरों के बीच से मजबूत क़दम बढ़ाता हुआ हम लोगों से आगे चला जा रहा था; चबूतरे पर लेटी हुई हर आकृति को मैं घबराहट के साथ देख रहा था और इस दृश्य को अपनी याद में जीवित रही सेम्योनोव की आकृति के चित्र में बिठाने की कोशिश कर रहा था – गठा हुआ, दुबला-पतला बदन, लंबे-लंबे, उलझे हुए और लगभग सारे के सारे सफ़ेद बाल, सफ़ेद दांत और चमकदार आंखों का गंभीर भाव। जब हम बैरक के दूरवाले छोर के पास पहुंचे जहां मिट्टी के आख़िरी दिये में, जिसमें काला तेल भरा हुआ था, एक भकभकाती हुई मोमबत्ती की लटकी हुई लौ टिमटिमा रही थी, तब ज़ुख़ीन ने अपनी रफ़्तार तेज़ कर दी और फिर अचानक ठिठककर खड़ा हो गया।

"कहो, सेम्योनोव," उसने एक रंगरूट से कहा जिसका सिर बाक़ी लोगों की तरह घुटा हुआ था, और जो सिपाहियों के मोटे कपड़े पहने और कंधों पर ख़ाकी ओवरकोट डाले अपने चबूतरे पर पांव ऊपर रखे बैठा था। वह एक दूसरे रंगरूट से बातें कर रहा था और कुछ खा रहा था। वही तो था, जिसके सफ़ेद बाल बहुत छोटे-छोटे काट दिये गये थे और उसके सिर का सामनेवाला भाग मूंड़ दिये जाने की वजह से कुछ नीला-नीला लग रहा था। हमेशा की तरह उसके चेहरे पर गंभीरता और चुस्ती का भाव था। मैं डर रहा था कि कहीं मुझे अपनी ओर देखता पाकर वह बुरा न मान जाये, इसलिए मैंने अपना मुंह एक तरफ़ फेर लिया। लगता था कि ओपेरोव भी ऐसा ही महसूस कर रहा था और इसलिए वह सबसे पीछे रह गया था; लेकिन जब सेम्योनोव ने हमेशा की तरह अपने झटकेदार ढंग से ज़ुख़ीन और दूसरे लोगों का अभिवादन किया तो उसकी आवाज़ से हम बिल्कुल

आश्चर्य हो गये और जल्दी-जल्दी आगे बढ़कर हमने उसकी ओर अपने हाथ बढ़ाये – मैंने अपना हाथ और ओपेरोव ने अपना "तख़्ता" – लेकिन सेम्योनोव ने हमसे पहले ही अपना बड़ा-सा काला हाथ हमारी ओर फैलाकर हमें इस अप्रिय भावना से बचा लिया था कि हम लोग उसका बहुत बड़ा सम्मान कर रहे थे। हमेशा की तरह वह शांत भाव से अनमनेपन से बोल रहा था।

"कहो, कैसे हो, जुख़ीन। आने का शुक्रिया। अरे, तुम जाओ, कुद्रयाश्का," उसने उस रंगरूट को संबोधित करके कहा जिसके साथ वह रात का खाना खा रहा था और बातें कर रहा था। "हम लोग अपनी बातें बाद में पूरी कर लेंगे। आओ, बैठो। तो? तुम्हें ताज्जुब हुआ, जुख़ीन? क्यों?"

" तुम्हारी किसी बात पर मुझे ताज्जुब नहीं होता," जुख़ीन ने चबूतरे पर उसके पास बैठते हुए कहा; उसकी मुद्रा कुछ-कुछ उस डाक्टर जैसी थी जो अपने मरीज़ के पलंग पर बैठ रहा हो। "अगर तुम इम्तहान देने पहुंच जाते तो मुझे ज़रूर ताज्जुब होता। अच्छा, यह तो बताओ कि तुम रहे कहां और यह सब हुआ कैसे?"

"कहां रहा?" उसने अपने भारी, सशक्त स्वर में कहा। "शराबख़ानों में, भट्ठियों में और ऐसी ही दूसरी जगहों में। आओ, बैठो, दोस्तो। काफ़ी जगह है सबके लिए। अपनी टांग हटाओ रास्ते में से," उसने अपने सफ़ेद दांत बिजली की तरह चमकाते हुए उस रंगरूट से डपटकर कहा जो उसके बायीं ओरवाले चबूतरे पर बांह पर अपना सिर टिकाये लेटा था और निरीह कौतूहल से हम लोगों पर अपनी नजरें जमाये हुए था। "ज़ाहिर है, मैं गुलछर्रे उड़ा रहा था। बड़ी बेहूदगी थी। लेकिन बहुत कुछ अच्छा भी था," वह कहता रहा और उसके हर छोटे-से वाक्य के बाद उसके स्फूर्तिमय चेहरे का भाव बदलता रहा। "उस व्यापारी का क़िस्सा सुना तुमने: वह बदमाश मर गया। वे लोग मुझे निकाल देना चाहते थे। मेरे पास जो भी पैसा था मैंने लुटा दिया। लेकिन सबसे बुरी बात यह नहीं थी। मैंने बेतहाशा क़र्ज़ चढ़ा लिये थे अपने ऊपर – कुछ तो बहुत बेहूदा क़र्ज़ थे। उन्हें चुकाने का मेरे पास कोई साधन ही नहीं था। बस, इतनी-सी बात है।"

"लेकिन ऐसा विचार तुम्हारे दिमाग़ में आया कैसे?" जुख़ीन ने पूछा।

"सीधी-सी बात है। मैं स्तोजेंका सड़क पर 'यारोस्लाव्ल' रेस्तोरां में गुलछर्रे उड़ा रहा था, समझे। मैं एक ऐसे आदमी के साथ था जो व्यापारियों के घराने का था। वह फ़ौजी भरती का दलाल है। मैंने उससे कहा: 'मुझे एक हज़ार रूबल दो तो मैं भरती हो जाऊं।' और मैं भरती हो गया।"

"लेकिन देखो, तुम तो भले घर के आदमी हो," जुख़ीन ने कहा।

"वह कोई बात नहीं है। किरील इवानोव ने उसका बंदोबस्त कर दिया।"

"किरील इवानोव कौन?"

"वही दलाल जिसने मुझे ख़रीदा था" (इस पर उसकी आंखें एक ख़ास अंदाज़ से चमक उठीं—जो विचित्र भी था, जिसमें मस्ती भी थी और ताना भी—और ऐसा मालूम हुआ कि यह कहते हुए वह मुस्करा रहा था)। "हमें सीनेट से इजाज़त मिल गयी। मैं एक बार फिर गुलछर्रे उड़ाने निकल पड़ा, मैंने अपने सारे क़र्ज़े चुकाये और अब यह रहा मैं। बस यह है सारा क़िस्सा। ख़ैर, कुछ बुरा नहीं है। उनको मुझे कोड़े लगाने का अधिकार नहीं है... और मेरे पास पांच रूबल बच भी गये हैं... और, कौन जाने, लड़ाई छिड़ ही जाये।..."

इसके बाद वह जुख़ीन को अपने विचित्र, अविश्वसनीय कारनामे बताता रहा, उसके स्फूर्तिमय चेहरे का भाव लगातार बदलता रहा, उसकी आंखें भीषण रूप से चमकती रहीं।

जब हम लोगों के लिए बैरक में और ज़्यादा देर ठहरना मुमकिन नहीं रह गया तो हमने उससे विदा ली। उसने हम सब लोगों से हाथ मिलाया और हमें बाहर तक पहुंचा आने के लिए उठे बिना बोला:

"कभी-कभी आते रहना, दोस्तो। सुना है कि हमें यहां से एक महीने बाद ही भेजा जायेगा," और एक बार फिर वह मानो मुस्कराया।

लेकिन जुख़ीन कई क़दम चलने के बाद फिर लौट गया। चूंकि मैं यह देखना चाहता था कि वे एक-दूसरे से कैसे विदा होते हैं इसलिए मैं भी ठहर गया। मैंने देखा कि जुख़ीन ने कुछ पैसे निकाले और

सेम्योनोव को देने लगा, लेकिन उसने उसका हाथ झटककर परे हटा दिया। फिर मैंने उन दोनों को एक-दूसरे को चूमते देखा और जुख़ीन को हम लोगों के पास पहुंचते हुए ज़रा ज़ोर से चिल्लाकर कहते सुना:

"फिर मिलेंगे, मेरे यार। मैं शर्त लगाकर कह सकता हूं कि मेरी पढ़ाई ख़त्म होने से पहले ही तुम अफ़सर बन चुके होगे।"

सेम्योनोव, जो कभी हंसता नहीं था, इसके जवाब में ठहाका मारकर तीखी आवाज़ में हंस दिया, जिसका मुझ पर बहुत पीड़ाजनक प्रभाव हुआ। हम बाहर चले आये।

हम पैदल ही घर तक गये। जुख़ीन चुप रहा और कभी एक नथुने पर और कभी दूसरे नथुने पर उंगली रखकर नाक से हवा निकालता रहा। घर पहुंचकर उसने हम लोगों का साथ छोड़ दिया और इम्तहान के दिन तक पीने में मस्त रहा।

अध्याय ४५

मैं फ़ेल हो गया

आख़िरकार पहले – डिफ़रेंशियल और इंटीग्रल कैलकुलस के – इम्तहान का दिन आ गया, लेकिन अब तक मेरे दिमाग़ पर धुंधला-धुंधला कुहरा छाया हुआ था और मुझे इस बात की कोई स्पष्ट चेतना नहीं थी कि मेरा क्या परिणाम होनेवाला है। जुख़ीन और दूसरे साथियों के बीच समय बिताने के बाद रात को मेरे दिमाग़ में यह बात आती थी कि मेरे लिए अपने सिद्धांतों में कुछ परिवर्तन करना ज़रूरी है; कि उनमें कोई ऐसी बात है जो अच्छी नहीं है, और वैसी नहीं है जैसी कि होनी चाहिये; लेकिन सवेरे सूरज की रोशनी में मैं फिर comme il faut बन जाता था, उस स्थिति से बहुत संतुष्ट रहता था, और अपने अंदर कोई परिवर्तन नहीं चाहता था।

ऐसी मनोदशा में मैं पहला इम्तहान देने गया। मैं उस तरफ़वाली एक बेंच पर बैठ गया जिधर प्रिंस, काउंट और बैरन बैठते थे और उन लोगों से फ़ांसीसी में बातें करने लगा; बात कुछ विचित्र तो ज़रूर

है लेकिन मेरे दिमाग़ में यह बात आयी ही नहीं कि मुझे अभी एक ऐसे विषय के सवालों का जवाब देने के लिए बुलाया जायेगा जिसके बारे में मुझे कुछ भी नहीं मालूम था। मैं शांत भाव से उन लोगों को एकटक देख रहा था जो इम्तहान देने जा रहे थे, और मैं उनमें से कुछ का मज़ाक़ भी उड़ाता था।

"अरे, ग्रैप ?" मैंने ग्रैप से कहा जब वह मेज़ के पास से लौटकर आया। "तुम्हें डर लगा था ?"

"देखना है तुम क्या करते हो," इलेंका ने कहा; यूनिवर्सिटी आने के पहले दिन से ही उसने मेरे असर के ख़िलाफ़ पूरी बग़ावत कर रखी थी, जब मैं उससे बोलता था तो वह मुस्कराता नहीं था, और वह मुझसे द्वेष रखता था।

इलेंका के जवाब पर मैंने उसे तिरस्कार से देखा, हालांकि उसने जो शंका व्यक्त की थी उससे मुझे क्षणिक डर-सा लगा। लेकिन कुहरे की चादर ने एक बार फिर इस भावना को ढक लिया; और मैं इतना उदासीन और खोया-खोया रहा कि मैंने इम्तहान से छुट्टी पाते ही (जैसे वह बहुत ही मामूली बात हो) बैरन ज़० के साथ मेटर्न के रेस्तोरां में जाकर दोपहर का खाना खाने का वादा कर लिया। जब इकोनिन के साथ मेरा नाम पुकारा गया तो मैं अपने यूनिफ़ार्म का दामन ठीक करके पूरे इतमीनान के साथ परीक्षा की मेज़ की ओर गया।

जब नौजवान प्रोफ़ेसर ने—उन्हींने जिन्होंने प्रवेश-परीक्षा के समय मुझसे सवाल पूछे थे—सीधे मेरे चेहरे पर नज़रें गड़ाकर मुझे देखा और मैंने उस पर्चे को छुआ जिस पर सवाल लिखे हुए थे, सिर्फ़ उस वक़्त डर के मारे मेरी पीठ पर एक हल्की-सी सिहरन ऊपर से नीचे तक दौड़ गयी। हालांकि इकोनिन ने अपना पर्चा इससे पहलेवाली परीक्षा की तरह ही झूमकर उठाया था, उसने जैसे-तैसे कुछ जवाब दिये, वह भी बहुत बुरे ढंग से। और मैंने वह किया जो उसने पहली परीक्षा में किया था; बल्कि मैंने उससे भी बुरा किया, क्योंकि मैंने एक दूसरा पर्चा निकाला और उसका भी कोई जवाब नहीं दिया। प्रोफ़ेसर ने दया के भाव से मेरा चेहरा देखा और दृढ़ पर शांत स्वर में बोले:

"आप दूसरे साल के कोर्स में नहीं पहुंचेंगे, मिस्टर इर्तेन्येव।

बेहतर यही होगा कि आप बाक़ी इम्तहानों में बैठने की तकलीफ़ न करें। इस विभाग की छंटनी करनी होगी। और यही बात मुझे आपसे भी कहनी है, मिस्टर इकोनिन," उन्होंने इतना और जोड़ दिया।

इकोनिन ने दुबारा इम्तहान देने की इजाज़त मांगी, जैसे भीख मांग रहा हो; लेकिन प्रोफ़ेसर ने कहा कि जो कुछ वह पूरे एक साल में नहीं कर पाया वह दो दिन में कैसे कर लेगा, और यह कि वह पास हो ही नहीं सकता। इकोनिन ने एक बार फिर विनम्र और करुण भाव से प्रार्थना की, लेकिन प्रोफ़ेसर ने फिर इंकार कर दिया।

"आप लोग तशरीफ़ ले जा सकते हैं," उन्होंने उसी धीमे पर दृढ़ स्वर में कहा।

तब जाकर मैं मेज़ के पास से हट आने का इरादा कर पाया; मैं इस बात पर लज्जित था कि मैंने भी चुप रहकर मानो इकोनिन की अपमानजनक याचनाओं में भाग लिया था। मुझे याद नहीं कि किस तरह मैं हॉल में बैठे हुए लड़कों के बीच से रास्ता बनाता हुआ निकला; उनके सवालों का मैंने क्या जवाब दिया; किस तरह मैं यूनिवर्सिटी से निकला और कैसे घर पहुंचा। मुझे ठेस लगी थी, मैं अपमानित महसूस कर रहा था और सचमुच दुखी था।

तीन दिन तक मैं अपने कमरे से बाहर नहीं निकला; मैं किसी से भी नहीं मिला; बचपन के दिनों की तरह मुझे आंसुओं से ही सांत्वना मिलती थी, और मैं जी भरकर रोया। मैं पिस्तौल की तलाश में था, ताकि अगर मेरा बहुत जी चाहे तो मैं अपने गोली मार लूं। मैं सोच रहा था कि इलेंका ग्रैप जब मुझसे मिलेगा तो वह मेरे मुंह पर थूक देगा और उसका ऐसा करना बिल्कुल ठीक ही होगा; कि मेरे इस दुर्भाग्य पर ओपेरोव बग़लें बजायेगा और सबसे इसकी चर्चा करेगा; कि 'यार' रेस्तोरां में मेरा अपमान करके कोल्पिकोव ने बिल्कुल ठीक ही किया था; कि प्रिंसेस कोर्नाकोवा के यहां मेरे बेवक़ूफ़ी के भाषणों का और कोई नतीजा हो ही नहीं सकता था, वग़ैरह-वग़ैरह। मेरे जीवन के वे सारे क्षण जो मेरे आत्म-गौरव के लिए कष्टप्रद और पीड़ाजनक थे, वे मेरे दिमाग़ में एक-एक करके गुज़रने लगे; और मैं अपनी बदनसीबियों का दोष किसी और के मत्थे मढ़ने की कोशिश करने लगा। मैं सोचता था कि किसी ने यह सब कुछ जान-बूझकर

किया है ; मैंने अपने ख़िलाफ़ पूरे एक षड्यंत्र का नक़शा गढ़ लिया ; मैंने प्रोफ़ेसरों की, अपने साथियों की, वोलोद्या की, द्मित्री की झिड़की की ; मैं पापा पर बड़बड़ाने लगा कि उन्होंने मुझे यूनिवर्सिटी में भेजा ही क्यों ; मैंने विधाता की शिकायत की कि उसने मुझे यह कलंक सहने के लिए इतने दिन तक ज़िंदा ही क्यों रखा। आख़िरकार, इस बात को अच्छी तरह समझते हुए कि जो भी मुझे जानता था उसकी नजरों में मैं पूरी तरह कलंकित हो चुका था, मैंने पापा से अनुरोध किया कि वह मुझे हुसारों की फ़ौज में भरती हो जाने दें, या काकेशस चला जाने दें। पापा मुझसे नाराज़ थे, लेकिन मेरी गहरी व्यथा को देखकर उन्होंने यह कहकर मुझे तसल्ली दी कि ऐसी कोई बुराई की बात नहीं हुई है ; मेरे विषय बदल देने से सब कुछ ठीक हो सकता है। वोलोद्या ने भी, जिसे मेरे इस दुर्भाग्य में कोई ऐसी भयानक बात दिखायी नहीं दी, यही कहा कि मैं दूसरे विषय के अपने सहपाठियों के सामने कम से कम लज्जित न अनुभव करूं।

घर की औरतें यह बिल्कुल समझ ही नहीं पायीं, या समझ ही नहीं सकती थीं या समझना चाहती नहीं थीं कि इम्तहान होता क्या है, फ़ेल होने का मतलब क्या होता है ; और चूंकि वे मेरी व्यथा देखती थीं इसलिए वे मुझ पर बस तरस खाती थीं।

द्मित्री रोज़ मुझसे मिलने आता था, और इस पूरे अरसे के दौरान में उसने मेरे साथ बेहद नरमी और दोस्ती का बर्ताव रखा ; लेकिन इसी वजह से मुझे ऐसा लगा कि वह मेरे प्रति भावशून्य हो गया है। मुझे हमेशा बहुत दुख होता था और मुझे बड़ा अपमानजनक लगता था जब वह मेरे कमरे में आकर चुपचाप मेरे पास बैठ जाता था, और उसके चेहरे पर कुछ-कुछ वैसा ही भाव रहता था जैसा कि बहुत ही बीमार आदमी के पलंग के पास बैठने पर डाक्टर के चेहरे पर होता है। सोफ़िया इवानोव्ना और वारेंका ने उसके साथ मेरे लिए वे किताबें भेजी थीं जो पहले कभी मैंने उनसे मांगी थीं और यह इच्छा व्यक्त की कि मैं उनसे मिलने जाऊं ; लेकिन उनके इस तरह मेरी ओर ध्यान देने में मुझे अपने प्रति, जो इतना नीचे गिर चुका था, उनका दंभपूर्ण और अपमानजनक तिरस्कार दिखायी देता था। तीन दिन बाद मेरी हालत कुछ संभली ; लेकिन गांव के लिए रवाना होने के वक़्त तक

मैं घर से बाहर नहीं निकला, और केवल अपनी व्यथा के बारे में सोचते हुए मैं एक कमरे से दूसरे कमरे में टहलता रहा, और घर के सभी लोगों से कतराने की कोशिश करता रहा।

मैं सोचता रहा, सोचता रहा; आखिरकार, एक शाम को बहुत देर से, जब मैं नीचे बैठा अव्दोत्या वसील्येव्ना को वाल्ट्ज़-संगीत बजाते सुन रहा था, मैं अचानक उछलकर ऊपर भागा, अपनी वह कॉपी निकाली जिस पर लिखा था 'जीवन के नियम', उसे खोला, और पश्चात्ताप और नैतिक उद्दीपन के क्षण ने मुझे आ दबोचा। मैं रोने लगा, लेकिन अब निराशा के आंसुओं से नहीं। जब मेरा मन कुछ स्थिर हुआ तो मैंने अपने जीवन के नियम फिर से लिखने का फ़ैसला किया; मुझे पक्का विश्वास था कि अब मैं कभी कोई बुराई नहीं करूंगा, कभी एक मिनट बेकार के कामों में नष्ट नहीं करूंगा, और कभी अपने नियमों से डिगूंगा नहीं।

यह नैतिक उद्दीपन बहुत समय तक रहा या नहीं, उसका अर्थ क्या था, और उसने मेरे नैतिक विकास पर कौन-से नये नियम लागू कर दिये, इसका उल्लेख मैं अपनी युवावस्था के अगले और अधिक सुखी उत्तरार्द्ध में करूंगा।

२८ सितंबर,
यास्नाया पोल्याना

पाठकों से

रादुगा प्रकाशन इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिजाइन के बारे में आपके विचार जानकर अनुगृहीत होगा। हमें आशा है कि आपकी भाषा में प्रकाशित रूसी और सोवियत साहित्य से आपको हमारे देश की संस्कृति और इसके लोगों की जीवन-पद्धति को अधिक अच्छी तरह जानने-समझने में मदद मिलेगी।

हमारा पता है:

रादुगा प्रकाशन,

१७, जूबोव्स्की बुलवार,

मास्को, सोवियत संघ।

प्रकाशित हो चुकी है:

रस्पूतिन व०, भुलाये न भूले। लघु उपन्यास

Распутин В. ЖИВИ И ПОМНИ. Повесть.

वालेन्तीन रस्पूतिन (जन्म १९३८) के इस लघु उपन्यास की नायिका, जो अपने प्यार की ताक़त से आदमी को ग़द्दारी के गढ़े में गिरने से बचाने की कोशिश करती है, सोवियत साहित्य का एक सबसे सशक्त नारी चरित्र है। 'भुलाये न भूले' प्यार ही नहीं, युद्ध की, फ़ासिज़्म के ख़िलाफ़ महान देशभक्तिपूर्ण युद्ध के दौरान सोवियत जनता द्वारा दिखाये गये कारनामों की भी कहानी है।

इस पुस्तक के लेखक ने छठे दशक में साहित्य के क्षेत्र में पदार्पण किया था। उसकी 'मरीया के लिये पैसे', 'मत्योरा से विदाई', आदि कई रचनाओं का विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है और उनके लिये वह राज्य पुरस्कार भी पा चुके हैं।

१३–२० से०। सजिल्द। २८० पृष्ठ।

प्रकाशित होनेवाली है :

मार्कोव ग०, साइबेरिया। उपन्यास

Марков Г. СИБИРЬ. Роман.

वर्तमान सदी का आरम्भकाल। साइबेरिया का एक दूर-दराज का इलाक़ा। पुलिस कालापानी से भागे हुए एक बहुत ही ख़तरनाक राजनीतिक अपराधी को ढूंढ़ रही है। उधर साइबेरिया के बोल्शेविकों का पार्टी केंद्र अपने गुप्त सूत्रों से संदेश भेजता है: "इवान अकीमोव भागने में कामयाब हो गये हैं... इस समय एक बहुत ही महत्वपूर्ण काम के लिए स्टाकहोम जा रहे हैं।"

जाने-माने सोवियत गद्यकार गेओर्गी मार्कोव (जन्म १९११) का यह उपन्यास पाठक के सामने क्रान्ति से पहले के साइबेरिया के जीवन का एक विहंगम दृश्य उपस्थित करता है।

११–१७ सें०। सजिल्द। ८४८ पृष्ठ।

चंगा कर देंगे। कमाल के आदमी हैं वह भी! जब मुझे बुख़ार था और मैं सरसाम की हालत में बड़बड़ा रही थी तब वह सारी रात आंख झपकाये बिना मेरे पास बैठे रहे और इस वक़्त, चूंकि उन्हें मालूम है कि मैं चिट्ठी लिख रही हूं, वह लड़कियों के पास बैठे हैं और मुझे अपने सोने के कमरे में सुनायी दे रहा है कि वह उन्हें जर्मन कहानियां सुना रहे हैं और लड़कियां उन्हें सुनकर हंसते-हंसते लोटपोट हुई जा रही हैं।

"La belle Flamande,* जैसा कि तुम उसे कहते हो, मेरे साथ पिछले दो हफ़्तों से रह रही है, क्योंकि उसकी मां किसी के यहां मिलने गयी हुई है, और वह मेरा बहुत ध्यान रखती है जो उसके लगाव का खरा प्रमाण है। वह मुझे अपने दिल के सारे भेद बता देती है। अपनी सुंदरता, नेक स्वभाव और जवानी के साथ वह आगे चलकर बहुत अच्छी लड़की निकलती, अगर कोई ढंग से उसकी देखभाल करनेवाला होता। लेकिन जैसा कि वह ख़ुद बताती है जिस तरह के लोगों के बीच वह रहती है, उनमें वह बिल्कुल तबाह हो जायेगी। कभी-कभी मैं सोचती हूं कि अगर मेरे इतने बच्चे न होते और मैं उसकी देखभाल अपने ज़िम्मे ले लेती तो यह बहुत अच्छा होता।

"ल्यूबा तुमको ख़ुद लिखना चाहती थी, लेकिन वह तीन काग़ज़ लिखकर फाड़ चुकी है और कहती है, 'मैं जानती हूं पापा कैसे हंसी उड़ानेवाले आदमी हैं: अगर एक भी ग़लती हो गयी तो वह सबको दिखाते फिरेंगे।' कात्या हमेशा जैसी ही प्यारी है, मीमी भी हमेशा जैसी नेक और जी उकता देनेवाली हैं। अब कुछ गंभीर बातों की चर्चा करें। तुमने लिखा है कि इस जाड़े में तुम्हारा कारोबार ठीक नहीं चल रहा है और तुमको ख़बारोव्का की आमदनी लेनी पड़ रही है। मुझे ताज्जुब होता है कि तुम इसके लिए मेरी रज़ामंदी चाहते हो। मानी हुई बात है कि जो कुछ मेरा है वह उतनी ही हद तक तुम्हारा भी है।

"तुम इतने नेक और अच्छे हो, मेरे दोस्त, कि इस डर से कि

---

* फ़्लैंडर्स की सुंदरी। (फ़्रांसीसी)

मुझे परेशानी न हो तुम असली हालत को छिपाये रखते हो; लेकिन मेरा अंदाज़ा है कि तुम ताश में वहुत हार गये हो और मैं तुमको यक़ीन दिलाती हूं कि मैं तुमसे नाराज़ नहीं हूं; इसलिए अगर तुम इस संकट से वाहर निकल सका तो उसके वारे में ज़्यादा सोचो भी नहीं और वेकार परेशान न हो। मैं इस वात की आदी हो चुकी हूं कि वच्चों के लिए मैं न सिर्फ़ तुम्हारी जुए की जीत के वल्कि (माफ़ करना) तुम्हारी ज़मीन-जायदाद के भी सहारे नहीं रहती। तुम्हारी जुए की जीत से मुझे खुशी भी उतनी ही कम होती है जितनी कम मुझे तुम्हारी हार से तकलीफ़ होती है; वस जिस चीज़ से मुझे तकलीफ़ होती है वह है तुम्हारा जुआ खेलने का जुनून, जिसकी वजह से मुझसे तुम्हारे प्यार-भरे लगाव का एक हिस्सा छिन जाता है, और मैं तुमसे इस तरह की कड़वी सच्चाइयां कहने पर मजवूर हो जाती हूं जैसी कि मैं इस वक़्त कह रही हूं—और भगवान जानता है कि ऐसा करके मुझे कितना दुःख होता है! मैं भगवान से वस एक वात के लिए प्रार्थना करना कभी नहीं छोड़ूंगी कि वह हमें वचाये रखे—ग़रीवी से नहीं (ग़रीवी क्या है?)—वल्कि उस भयानक हालत से जव वच्चों के हित, जिनकी रक्षा मुझे करनी ही पड़ेगी, हमारे हितों से टकरायें। अव तक भगवान मेरी प्रार्थना सुनता रहा है: तुमने वह हद नहीं पार की है जिसके आगे जाने पर हमें या तो अपनी जायदाद से हाथ धोना पड़ेगा—जो अव हम लोगों की नहीं रही, वल्कि हमारे वच्चों की है—या फिर... उसके वारे में सोचकर ही दिल दहल जाता है, फिर भी इस भयानक वदनसीवी का खतरा लगातार हमारे सिर पर मंडलाता रहता है। हां, भगवान के दिये हुए इस दंड को तो हमें भोगना ही पड़ेगा।

"तुमने वच्चों के वारे में लिखा है, और फिर हमारे पुराने झगड़े को छेड़ा है: तुम मुझसे कहते हो कि मैं उन्हें किसी शिक्षा की संस्था में भेजने के लिए राज़ी हो जाऊं। इस तरह की पढ़ाई से मेरी चिढ़ तुम अच्छी तरह जानते हो।...

"मुझे मालूम नहीं, मेरे प्यारे दोस्त, कि तुम मेरी इस वात को ठीक समझोगे या नहीं; फिर भी मैं हाथ जोड़कर प्रार्थना करती हूं कि तुम मेरी खातिर यह वादा करो कि जव तक मैं ज़िंदा हूं, और

मेरे मरने के बाद भी, अगर भगवान को हम दोनों को अलग कर देना ही मंजूर हुआ, तुम कभी ऐसा नहीं करोगे।

"तुमने लिखा है कि हमारे कुछ मामलात को निवटाने के लिए तुम्हें सेंट पीटर्सवर्ग जाना पड़ेगा। ईसा मसीह तुम्हारे साथ रहें, मेरे दोस्त, जाओ और जल्दी से जल्दी लौटकर आओ। तुम्हारे विना हम सवको वहुत सूना-सूना लगता है। वसंत वेहद ख़ूबसूरत है! वाल्कनी का दरवाज़ा उतार लिया गया है, तापघर को जानेवाला रास्ता चार दिन पहले विल्कुल सूखा था, आड़ू के पेड़ों पर भरपूर बौर आया हुआ है, वर्फ़ वस कहीं-कहीं थोड़ी-वहुत जमी रह गयी है, अवावीलें आ गयी हैं, और आज ल्यूबा मेरे लिए वसंत के पहले फूल लेकर आयी है। डाक्टर का कहना है कि मैं तीन दिन में विल्कुल ठीक हो जाऊंगी और तव मैं ताज़ा हवा में वाहर निकल सकती हूं और अप्रैल की धूप में बैठ सकती हूं। अब, अलविदा, मेरे दोस्त, मेरी प्रार्थना है कि मेरी बीमारी के वारे में परेशान न होना, और न अपनी हारी हुई रक़म के वारे में; अपना काम जल्दी से जल्दी ख़त्म करके पूरी गर्मियों के लिए वच्चों के साथ हम लोगों के पास आ जाना। मैं गर्मियों के लिए वड़े-वड़े मंसूवे वना रही हूं, और उन्हें पूरा करने के लिए वस यहां तुम्हारे मौजूद होने की कसर है।"

ख़त का वाक़ी हिस्सा काग़ज़ के एक दूसरे पुर्ज़े पर गिचपिच और टेढ़ी-मेढ़ी लिखाई में लिखा था। मैं उसका शब्दशः अनुवाद किये दे रहा हूं:

"तुम्हें मैंने अपनी बीमारी के वारे में जो कुछ लिखा है उस पर यक़ीन न कर लेना; किसी को शुवहा नहीं है कि बीमारी कितनी गंभीर है। वस मैं ही जानती हूं कि अव मैं विस्तर से कभी नहीं उठूंगी। एक पल भी गंवाये विना वच्चों को लेकर फ़ौरन आ जाओ। शायद मैं एक वार फिर तुम्हें गले लगा सकूं और उन्हें आशीर्वाद दे सकूं: यही मेरी अंतिम इच्छा है। मैं जानती हूं कि मैं तुम्हें कितनी गहरी चोट पहुंचा रही हूं; लेकिन देर-सवेर कभी न कभी तो यह वात मुझसे या दूसरों से तुम्हें मालूम होनी ही थी। हमें चाहिये कि इस विपत्ति का सामना दृढ़ता से करें और ईश्वर की दया पर भरोसा रखें। उसकी इच्छा के आगे सिर झुका दें।

"यह न समझना कि मैंने जो कुछ लिखा है वह सरसामी कल्पना की वड़ है; इसके विपरीत, इस समय मेरे विचार विल्कुल साफ़ हैं और मैं विल्कुल शांत हूं। अपने आपको इन झूठी आशाओं से भी तसल्ली न देना कि ये सव एक भीरु आत्मा के अस्पष्ट और मिथ्या पूर्वाभास हैं। नहीं, मैं महसूस करती हूं, सचमुच मैं जानती हूं और मैं इसलिए जानती हूं कि ईश्वर ने मुझ पर इस वात का रहस्योद्‌घाटन करने की कृपा की है—कि मुझे अव वहुत दिन नहीं ज़िंदा रहना है।

"क्या तुम्हारे लिए और वच्चों के लिए मेरा प्रेम इस जीवन के साथ समाप्त हो जायेगा? मैं जानती हूं कि यह असंभव है। इस समय मेरे रोम-रोम में प्यार इस तरह समाया हुआ है कि मैं सोच भी नहीं सकती कि यह भावना, जिसके विना मैं अस्तित्व की कल्पना भी नहीं कर सकती, कभी नष्ट भी हो सकती है। आपके प्रति अपने प्रेम के विना मेरी आत्मा का अस्तित्व असंभव है: और मैं जानती हूं कि वह अमर है, अकेले इस वात की वुनियाद पर ही कि मेरे जैसे प्रेम को अगर मिट जाना होता तो वह कभी पैदा ही नहीं होता।

"मैं तुम्हारे पास नहीं होऊंगी लेकिन मुझे पक्का विश्वास है कि मेरा प्रेम कभी तुम्हारा साथ नहीं छोड़ेगा; और इस विचार से मेरे मन को इतनी सांत्वना मिलती है कि मैं तेज़ी से निकट आती हुई मौत की राह वड़े शांत भाव से और निडर होकर देखती हूं।

"मैं शांत हूं, और भगवान जानता है कि मैंने मौत को हमेशा एक वेहतर जीवन में प्रवेश माना है और अव भी मानती हूं; फिर भी मैं अपने आंसुओं को क्यों नहीं रोक पाती?... मेरे वच्चों से उनकी प्यारी मां क्यों छिन जाये? तुमको इतना गहरा और इतना अप्रत्याशित आघात क्यों पहुंचे? मैं क्यों मरूं जवकि तुम लोगों ने मेरे जीवन को वेहद सुखी वना दिया है?

"जैसी उसकी पुनीत इच्छा!

"आंसुओं की वाढ़ की वजह से मैं अव और नहीं लिख सकती। शायद मैं तुमसे न मिल पाऊं। इस जीवन में तुमने मुझे जितने सुख में नहला दिया है उसके लिए, प्रियवर, मैं तुम्हें धन्यवाद देती हूं; मैं ईश्वर से वहां प्रार्थना करूंगी कि वह तुम्हें इसका फल दे। विदा, प्रियतम; जव मैं न रहूं तव भी याद रखना कि तुम कहीं भी हो,